श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

21

व्रत पर्व विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६०, शक संवत् १९२५
सन् २००३-२००४, जय हिन्द संवत् ५६-५७

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
...देवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा बुध

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक: रुचिका पब्लिकेशन्स
7/6411 देवनगर, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य
५१.००

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

साईज 24×18 सें. मी.

मिलान विषय का एक संग्रहणीय प्रकाशन, जो मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का पूरा शास्त्रीय समाधान प्रस्तुत करता है।

लेखक :- प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धांतज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक–श्रीमार्त्तण्डपंचांग)

विवाहसम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी जन्मकुण्डलियों के मिलान पर यह एक प्रामाणिक पुस्तक है । इस पुस्तक में छः अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमुहूर्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैंडर्ड अन्तर; भारत के किसी भी नगर का सूक्ष्म दैनिक लग्नसमासिकाल (भा.स्टैं.टा.) बतलाने वाली मौलिक सारणियां एवम् सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक के चन्द्रसहित सूर्यादि सभी ग्रहों के सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं.टा.) दिए गए हैं, जिनकी मदद से 1971 से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर–कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली 10–15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम और छठे अध्याय में ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक 11 निबन्ध दिए गए हैं ।

इस पुस्तक में दिए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए—

(1) **वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी 36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त जाने जा सकते हैं । इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है ।**

(2) गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक ''नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'' आदि तथा मंगलदोष के बारे में प्रचलित '' चन्द्र–मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते'' - आदि अनेक परिहारवाक्यों का सप्रमाण खण्डन–मण्डन किया गया है। ।

(3) **कुज (मंगली) दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय के लिए इस पुस्तक में 7 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़ - घटाव मात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिक मान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वर-कन्या के विवाहसंबंध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है । कुजदोष मात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।**

(4) प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन–मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूलग्रन्थों से सैंकड़ों प्रमाण वाक्य पदे–पदे उद्धृत किए गए हैं।

''क्या नाडीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है ?,'' ''कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है''?— इस प्रकार की अनेक मिलानसंबंधी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित सप्रमाण समाधान इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

381, Urban Estate , Ph-2, Jalandhar से Capt .A.P. Singh इस पुस्तक के बारे में लिखते हैं —'' **It is really an eye-opener unique book on Horoscope-matching**''

पुस्तक का डाकव्यय सहित मूल्य 385 रुपये M.O. द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए अथवा ''श्रीमती वीना चतुर्वेदी'' के नाम D.D. भेजिए । ध्यान रहे- वी.पी. नहीं की जाएगी ।M.O. के कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखिए।

मूल्य 350 रु. + डाक व्यय 35 रु.

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,
अभिजित् प्रकाशन, 59/6 (अभिजित्) , P .O पंचकूला (हरियाणा)
Pin- 134 109 Phone- 0172 — 565303

हृदन्तज्ञान तमः-वितान-निवारण पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूख 'मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु।।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

व्रत पर्व विशेषांक

विक्रम संवत् २०६०, शक संवत् १९२५
सन् २००३-२००४, जय हिन्द संवत् ५६-५७

पंचांग-प्रवर्तकः

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

मंत्री
चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रमुख वितरक : अग्रवाल बुक डिपो
460, खारी बावली दिल्ली-6 दूरभाष : 3943254, 3936116, निवास: 5721403

मूल्य
५१.००

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

- अ. - अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र)। अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
- अं. - अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
- आव. - आवश्यकता में।
- उ. - उपरान्त, उदित, उत्तर।
- उ. गो. - उत्तर गोल।
- क. - करण, कर्क, कला।
- कृ. - कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
- क्रां. सा. - क्रान्तिसाम्य (महापात)
- गोधू. - गोधूलि (लग्न)
- घ. - घड़ी।
- घं. - घण्टा।
- चौ. - चौर (बाण)
- ति. - तिथि ।
- द. - दक्षिण।
- द. गो. - दक्षिण गोल।
- दा. - दान, पूजन।
- दि. - दिन।
- दि. मा. - दिनमान ।
- दि. ल. - दिन का ह्र. न।
- न. - नक्षत्र।
- निं. - निम्बार्कों के लिए।
- ने. - नेप्च्यून।
- नृ. - नृप (बाण)।
- प. - पल, परिघ (योग), पश्चिम।
- प्र. - प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
- प्रा - प्रारम्भ।
- भ. - भद्रा, भरणी (नक्षत्र)।
- भा. - भाद्रपद।
- मा. - मार्गी।
- मि. - मिनट, मिथुन।
- मृ. - मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
- या. - यावत् (=तक)।
- रा. - रात्रि, राशि।
- रो. - रोग (बाण), रोहिणी।
- ल. - लग्न।
- व. - वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
- वा. - वार
- वि. - विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
- वि. मु. - विवाहमुहूर्त।
- वै. - वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग) वैशाख।
- व्र. स. - व्रत सबके लिए।
- शु. - शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह) शुभ, शुक्ल (योग)।
- श. - भारत सरकार द्वारा संचालित शक संवत्, तारीख-मास।
- स. - समाप्त।
- सं. - संक्रान्ति, संवत्।
- सां. का. - साम्पातिक काल।
- सा. - सायन।
- स्मा. - स्मार्तों के लिए।
- ल. - लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकासित Computer Program से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(१) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी-पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(६) चंन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा. स्टैं. टा. में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एंव सूर्यास्त में जोड़ें।

(७) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(८) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(९) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(१०) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(११) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(१२) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग, नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझें। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (. . . .) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र, योग की वृद्धि बतलाता है।

(१३) यहां दिया गया भा. स्टैं. टा. ८२°/३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(१४) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती है।

(१५) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भाग नहीं।

संक्षिप्त विषय सूची (सं. २०६० वि.)

इस वर्ष की विशेष सामग्री

*'व्रत-पर्व-विवेचन' (विशेष स्तम्भ) की विस्तृत विषयसूची के लिए पृष्ठ 64 देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद (मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म – श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र – दृग्गणितपद्धत्यनुसारि–व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष–गणितादि–विषयेषु महत्त्वाकाङ्क्ष्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड–पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवेत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः

'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.

विशेष आकर्षण एवं उपहार:- चली आ रही विशेषांक परम्परा के अनुसार ' श्री मार्त्तण्ड पंचांग' अग्रिम वर्ष (सं. 2061 वि. में) भी पाठकों को विशेष उपहार के रूप में 'मुहूर्त्त विशेषांक' पेश करेगा, जिसमें षोडश संस्कार एवं अन्य गृहारम्भादि सभी मुहूर्त्तों के निर्णयप्रकारों का विशद विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा।

ध्यान दें:- कम्पयूटर प्रोगामिंग में कुछ त्रुटि के कारण दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया चन्द्रोदयास्त-काल पंचांग के प्रथम संस्करण की कुछ प्रतियों में अशुद्ध छप गया है, जिसका हमें खेद है। पंचांग की शेष प्रतियों तथा इस प्रति में यह अशुद्धि नहीं है।

प्रमुख-प्रमुख व्रतपर्व (१ जनवरी, सन् २००३ ई. से २० मार्च, सन् २००४ ई. तक)

व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार	व्रतपर्व	तारीख	वार
(सन् 2003 ई.)			श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा	16 मई	शु.	हरितालिका चतुर्थी	31 अग.	र.	भीष्म पंचक प्रारम्भ	4 नवं.	मं.
इंग्लिश नववर्ष (2003 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	बु.	वैशाख स्नान समाप्त	16 मई	शु	ऋषि पंचमी	1 सितं.	चं.	तुलसी विवाह	5 नवं	बु.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	चं.	भद्रकाली एकादशी (पं.)	26 मई	चं.	सूर्य षष्ठी व्रत	2 सितं.	मं.	वैकुण्ठ चतुर्दशी	6 नवं.	गु.
मकर-संक्रान्ति	14 जन.	मं.	वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	30 मई	शु.	दूर्वाष्टमी, राधाष्टमी	3 सितं.	बु	कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरुनानक जयन्ती	8 नवं.	श.
माघ स्नान प्रारम्भ	18 जन.	श.	भावुका अमावस	31 मई	श	श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	3 सितं.	बु	कार्तिकस्नान समाप्त	8 नवं.	श.
संकष्ट चतुर्थी	21 जन.	मं.	खण्डग्रास सूर्य ग्रहण			श्रीचन्दनवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	4 सितं	गु.	भीष्म पंचक समाप्त,	8 नवं.	श.
मौनी अमावस	1 फर.	श.	(पश्चिमोत्तर भारत में दृश्य)	31 मई	श.	श्रवण द्वादशी, श्रीवामन जयन्ती	7 सितं.	र.	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	8 नवं.	श.
गौरी तृतीया (गोंत्तरी)	4 फर.	मं.	रम्भा तृतीया	2 जून	चं.	अनन्त चतुर्दशी	9 सितं	मं.	ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (9 नव के		
तिल-वरद-कुन्द-चतुर्थी	5 फर.	बु.	श्रीगंगा दशहरा	10 जून	मं.	प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध	10 सितं.	बु.	सूर्योदय से पहिले समस्त भारत में दृश्य)	8 नवं.	श.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	6 फर.	गु.	निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.)	10 जून	मं.	श्राद्ध-प्रारम्भ	11 सितं.	गु.	श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	17 नवं.	चं.
रथ-सप्तमी, आरोग्य-सप्तमी	8 फर.	श.	वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	14 जून	श	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	19 सितं.	शु	स्कन्द- गुह-षष्ठी	28 नवं	शु.
भीष्माष्टमी	9 फर.	र.	रथयात्रा (पुरी)	1 जुला.	मं.	श्राद्ध समाप्त	26 सितं.	शु.	चम्पा षष्ठी	29 नवं.	श.
भीष्म द्वादशी	13 फर.	गु.	कुमार षष्ठी	5 जुला.	श.	शारद नवरात्र प्रारम्भ	26 सितं.	शु.	मित्र सप्तमी	30 नवं.	र.
माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	16 फर.	र.	विवस्वत् सप्तमी	6 जुला.	र.	उपांगललिता व्रत	30 सितं.	मं.	श्रीगीता जयन्ती	4 दिस.	गु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च	श.	शिव शयनोत्सव	13 जुला.	र.	सरस्वती आवाहन	2 अक्तू.	गु.	श्रीदत्त जयन्ती	8 दिस.	चं.
होलाष्टक प्रारम्भ	11 मार्च	मं.	गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	13 जुला.	र.	सरस्वती पूजन	3 अक्तू.	शु.	(सन् 2004 ई.)		
गोविन्द द्वादशी	15 मार्च	श.	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ	13 जुला	र.	श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी	3 अक्तू.	शु	इंग्लिश नववर्ष (2004 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	गु.
होलिका दहन,	17 मार्च	चं.	हरियाली अमावस	29 जुला.	मं	सरस्वती बलिदान, नवरात्र समाप्त	4 अक्तू.	श.	माघ स्नान प्रारम्भ	7 जन.	बु.
होली, होलाष्टक समाप्त	18 मार्च	मं.	मधुश्रवा तृतीया, सधारा तीज	1 अग.	शु	सरस्वती विसर्जन,	5 अक्तू.	र.	संकष्ट चतुर्थी	11 जन.	र.
वसन्तोत्सव	19 मार्च	बु.	नागपंचमी	2 अग.	श.	विजयादशमी (दशहरा)	5 अक्तू.	र.	लोहड़ी (पं.)	13 जन.	मं.
वारुणी पर्व	30 मार्च	र.	श्रीदुर्गाष्टमी	5 अग.	मं.	भरत मिलाप	6 अक्तू.	चं.	मकर-संक्रान्ति	14 जन.	बु.
चान्द्र-संवत् 2059 वि. पूर्ण	1 अप्रै.	मं.	ऋक्-शुक्ल-यजु उपाकर्म	11 अग.	चं.	शरत्पूर्णिमा, कोजागर व्रत	9 अक्तू.	गु	मौनी अमावस	21 जन.	बु.
वि. संवत् 2060 प्रारम्भ,	2 अप्रै.	बु.	कृष्ण-यजु- अथर्व उपाकर्म	12 अग.	मं.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	10 अक्तू.	शु.	गौरी तृतीया (गोंत्तरी)	24 जन.	श.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	2 अप्रै.	बु	रक्षाबन्धन (राखी)	12 अग.	मं.	कार्तिकस्नान प्रारम्भ	10 अक्तू.	शु.	तिल-वरद-कुन्द-चतुर्थी	25 जन.	र.
गौरी तृतीया(गणगौर)	4 अप्रै.	शु.	बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	15 अग.	शु	करक चतुर्थी (करवा चौथ)	14 अक्तू.	मं.	श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	26 जन.	चं.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	6 अप्रै.	र.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत			अहोई अष्टमी (पं.)	18 अक्तू.	श.	रथ-सप्तमी, आरोग्य-सप्तमी	28 जन.	बु
नाग पंचमी, स्कन्द षष्ठी	7 अप्रै.	चं.	(स्मार्त-गृहस्थियों के लिए)	19 अग.	मं.	गोवत्स द्वादशी	22 अक्तू.	बु	भीष्माष्टमी	29 जन.	गु
श्रीदुर्गाष्टमी	10 अप्रै.	गु.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत			धन त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी	23 अक्तू.	गु.	भीष्म द्वादशी	2 फर.	चं.
श्रीराम नवमी	11 अप्रै.	शु.	(वैष्णव-सन्यासियों के लिए)	20 अग.	बु	श्रीहनुमान् जयन्ती	24 अक्तू.	शु	माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा	6 फर.	शु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	11 अप्रै.	शु.	श्रीगुग्गा नवमी	21 अग.	गु	दीपावली	25 अक्तू.	श.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर.	बु.
अनंग त्रयोदशी	14 अप्रै.	चं.	कुशोत्पाटिनी अमावस	27 अग.	बु	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	26 अक्तू.	र.	होलाष्टक प्रारम्भ	28 फर.	श.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	16 अप्रै.	बु.	पिठोरी अमावस	27 अग.	बु	यमद्वितीया	26 अक्तू.	र.	गोविन्द द्वादशी	3 मार्च	बु.
श्रीपरशुराम जयन्ती	4 मई	र.	कुम्भ महापर्व (नासिक)	27 अग.	बु.	विश्कर्मा पूजा, भाई दूज	27 अक्तू.	चं.	होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त	6 मार्च	श.
अक्षय तृतीया	4 मई	र.	हरितालिका , गौरी तृतीया	30 अग.	श.	सूर्यषष्ठी	30 अक्तू.	गु.	वसन्तोत्सव	7 मार्च	र.
श्रीगंगा जन्म	8 मई	गु.	कलंक चतुर्थी	30 अग.	श.	गोपाष्टमी	1 नवं.	श.	महाविषुव दिन	20 मार्च	श.
श्रीजानकी जयन्ती	10 मई	श.	सिद्धिविनायक व्रत	31 अग.	र.	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी	2 नवं.	र.	चान्द्र-संवत् 2060 वि. पूर्ण	20 मार्च	श.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2003 ई.)	
पौष शुक्ल	14 जन.
माघ कृष्ण	28 जन.
माघ शुक्ल	13 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	26 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च
चैत्र शुक्ल	13 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	27 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	12 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	26 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (स्मा.)	10 जून
आषाढ़ कृष्ण	25 जून
आषाढ़ शुक्ल	10 जुला.
श्रावण कृष्ण	25 जुला.
श्रावण शुक्ल	8 अग.
भाद्रपद कृष्ण	23 अग.
भाद्रपद शुक्ल	6 सितं.
आश्विन कृष्ण	22 सितं.
आश्विन शुक्ल	6 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण (स्मा.)	21 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	4 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	20 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	4 दिसं.
पौष कृष्ण (स्मा.)	19 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
पौष शुक्ल	3 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	2 फर.
फाल्गुन कृष्ण	16 फर.
फाल्गुन शुक्ल	2 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	16 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत) वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है वह व्रत तिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2003 ई.)	
पौष शुक्ल	3 जन.
माघ कृष्ण	19 जन.
माघ शुक्ल	2 फर.
फाल्गुन कृष्ण	17 फर.
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	19 मार्च
चैत्र शुक्ल	2 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	17 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	2 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	17 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	1 जून
आषाढ़ कृष्ण	15 जून
आषाढ़ शुक्ल	30 जून
श्रावण कृष्ण	14 जुला.
श्रावण शुक्ल	30 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	13 अग.
भाद्रपद शुक्ल	28 अग.
आश्विन कृष्ण	11 सितं.
आश्विन शुक्ल	26 सितं.
कार्तिक कृष्ण	11 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	9 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	24 नवं.
पौष कृष्ण	9 दिसं.
पौष शुक्ल	24 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
माघ कृष्ण	8 जन.
माघ शुक्ल	22 जन.
फाल्गुन कृष्ण	7 फर.
फाल्गुन शुक्ल	21 फर.
चैत्र कृष्ण	7 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्री सत्यनारायण व्रत

(सन् 2003 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	16 फर.
फाल्गुन	17 मार्च
चैत्र	16 अप्रै.
वैशाख	15 मई
ज्येष्ठ	14 जून
आषाढ़	13 जुला.
श्रावण	11 अग.
भाद्रपद	10 सितं.
आश्विन	9 अक्तू.
कार्तिक	8 नवं.
मार्गशीर्ष	8 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
पौष	7 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	6 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ) (2003 ई.)

पौष	2 जन.
माघ (शनैश्चरी)	1 फर.
फाल्गुन (सोम.)	3 मार्च
चैत्र (भौम.)	1 अप्रै.
वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	31 मई
आषाढ़	29 जून
श्रावण (भौम.)	29 जुला.
भाद्रपद	27 अग.
आश्विन	26 सितं.
कार्तिक (शनैश्चरी)	25 अक्तू.
मार्गशीर्ष	23 नवं.
पौष (भौम.)	23 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
माघ	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र (शनैश्चरी)	20 मार्च

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

(सन् 2003 ई.)	
माघ	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र	21 मार्च
वैशाख	19 अप्रै.
ज्येष्ठ	19 मई
आषाढ़	17 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	15 अग.
आश्विन	14 सितं.
कार्तिक	14 अक्तू.
मार्गशीर्ष	12 नवं.
पौष	12 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
माघ	11 जन.
फाल्गुन	9 फर.
चैत्र	10 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2003 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2003 ई.)	
श्रीमत्स्य जयन्ती	4 अप्रै.
श्रीरामनवमी	11 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	4 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	14 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	15 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	16 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	3 अग.
*श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	19 अग.
श्रीवराह जयन्ती	30 अग.
श्रीवामन जयन्ती	7 सितं.

* अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद् भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

(सन् 2003 ई.)	
पूर्णिमा	10 सितं.
प्रतिपदा	11 सितं.
द्वितीया	12 सितं.
तृतीया	13 सितं.
चतुर्थी	14 सितं.
पंचमी	15 सितं.
षष्ठी	16 सितं.
सप्तमी	17 सितं.
अष्टमी	18 सितं.
नवमी	19 सितं.
दशमी	21 सितं.
एकादशी	22 सितं.
द्वादशी	23 सितं.
त्रयोदशी	23 सितं.
चतुर्दशी	25 सितं.
अमावस	25 सितं.
सर्वपितृश्राद्ध	25 सितं.

प्रदोष व्रत

(सन् 2003 ई.)	
पौष शुक्ल	15 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	16 मार्च
चैत्र कृष्ण	30 मार्च
चैत्र शुक्ल(सोम.)	14 अप्रै.
वैशाख कृष्ण (सोम.)	28 अप्रै.
वैशाख शुक्ल(भौम.)	13 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	28 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	12 जून
आषाढ़ कृष्ण	26 जून
आषाढ़ शुक्ल	11 जुला.
श्रावण कृष्ण (शनि)	26 जुला.
श्रावण शुक्ल (शनि)	9 अग.
भाद्रपद कृष्ण (सोम.)	25 अग.
भाद्रपद शुक्ल (सोम.)	8 सित.
आश्विन कृष्ण (भौम.)	23 सितं.
आश्विन शुक्ल (भौम.)	7 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	23 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	6 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	21 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (शनि)	6 दिसं.
पौष कृष्ण	21 दिसं.

(सन् 2004 ई.)	
पौष शुक्ल	4 जन.
माघ कृष्ण (सोम.)	19 जन
माघ शुक्ल (भौम.)	3 फर.
फाल्गुन कृष्ण	18 फर
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च

सोम. = सोम प्रदोष व्रत
भौम. = भौम प्रदोष व्रत
शनि = शनि प्रदोष व्रत

वर्गीकृत व्रतपर्व (1 जनवरी, सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

सिक्ख पर्व अवतार दिन (प्राचीन परम्परा के अनुसार)

(सन् 2003 ई.)	
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	9 जन.
श्री गुरु हरराय जी	15 फर.
श्री गुरु तेगबहादुर जी	21 अप्रै.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	23 अप्रै.
श्री गुरु अंगददेव जी	2 मई
श्री गुरु अमरदास जी	15 मई
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	15 जून
श्री गुरु हरकिशन जी	22 जुला.
श्री गुरु रामदास जी	12 अक्तू.
श्री गुरु नानकदेव जी	8 नवं.
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	29 दिसं.
(सन् 2004 ई.)	
श्री गुरु हरराय जी	4 फर.

गुरयाई मिली (सन् 2003 ई.)

श्री गुरु हरराय जी	30 मार्च
श्री गुरु अमरदास जी	2 अप्रै.
श्री गुरु तेगबहादुर जी	15 अप्रै.
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	23 मई
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	29 अग.
श्री गुरु रामदास जी	8 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	15 सितं.
श्री गुरु हरकिशन जी	20 अक्तू.
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	25 नवं.
(सन् 2004 ई.)	
श्री गुरु हरराय जी	18 मार्च

जोती जोत समाए (सन् 2003 ई.)

श्री गुरु अंगददेव जी	6 अप्रै.
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	7 अप्रै.
श्री गुरु हरकिशन जी	15 अप्रै.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	4 जून
श्री गुरु रामदास जी	30 अग.
श्री गुरु अमरदास जी	10 सितं.
श्री गुरु नानकदेव जी	21 सितं.
श्री गुरु हरराय जी	20 अक्तू.
श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	29 अक्तू.
श्री गुरु तेगबहादुर जी	28 नवं.

जैन व्रतपर्व (सन् 2003 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	30 जन.
मर्यादा महोत्सव	8 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	11 अप्रै.
श्रीजैन महावीर जयन्ती	15 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	11 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	5 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	13 जुला.
चातुर्मास्य प्रारम्भ	13 जुला.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	24 अग.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	24 अग.
संवत्सरी महापर्व	31 अग.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	2 सितं.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	4 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	8 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	25 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	27 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	29 अक्तू.
चतुर्मास्य समाप्त	8 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	19 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	14 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	19 दिसं.
(सन् 2004 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	20 जन.
मर्यादा महोत्सव	28 जन.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2003 ई.)

नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	18 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	20 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2004 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2003 ई.)

पौष	1 जन.
माघ	30 जन.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च
वैशाख	29 अप्रै.
ज्येष्ठ	29 मई
आषाढ़	27 जून
श्रावण	27 जुला.
भाद्रपद	26 अग.
आश्विन	24 सितं.
कार्तिक	24 अक्तू.
मार्गशीर्ष	22 नवं.
पौष	21 दिसं.
(सन् 2004 ई.)	
माघ	20 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	19 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2003 ई.)

माघ	25 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र	25 मार्च
वैशाख	23 अप्रै.
ज्येष्ठ	23 मई
आषाढ़	21 जून
श्रावण	21 जुला.
भाद्रपद	20 अग.
आश्विन	18 सितं.
कार्तिक	18 अक्तू.
मार्गशीर्ष	17 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2004 ई.)	
माघ	15 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	[illegible]

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2003 ई.)

श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
स्वामी विवेकानन्द	24 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	24 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगीराज बा. श्रीलालदयाल जी	3 फर.
श्री गुरु रविदास जी	16 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	26 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	5 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	18 मार्च
डा. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	27 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी जयन्ती	3 मई
आद्य जगद्‌गुरु श्रीशंकराचार्य	6 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीरामानुजाचार्य	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	3 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	4 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराज अग्रसेन जयन्ती	26 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	5 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	6 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2004 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	14 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	14 जन.
श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल जी	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्री गुरु रविदास जी	6 फर.
महर्षिदयानन्द सरस्वती	15 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	22 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	6 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2003 ई.)

इदुलज्जुहा	12 फर.
मुहर्रम (ताज़िया)	14 मार्च
चेहलम	22 अप्रै.
आखिरी चहार शम्बा	30 अप्रै.
शहादत–ए–इमाम हसन	1 मई
ईद–ए–मिलाद	15 मई
ईद–ए–मौलाद	20 मई
फतिहायज़दहुम	12 जून
जन्म श्री हज़रत अली	11 सितं.
शब–ए–मिराज	25 सितं.
शब–ए–बरात	12 अक्तू.
रमज़ान का पहला दिन	28 अक्तू.
शहादत–ए–हज़रत अली	17 नवं.
जमतुल विदा	21 नवं.
शब–ए–कद्र	23 नवं.
ईद–उल–फित्र	26 नवं.
(सन् 2004 ई.)	
इदुलज्जुहा	2 फर.
मुहर्रम (ताज़िया)	2 मार्च

सूचना

सभी मुस्लिम–त्योहार चन्द्र–दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे–पीछे हो जाने पर, इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी , सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

						(सन् 2004 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2003 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	विशु (केरल)	15 अप्रैल	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तूबर	इंग्लिश नववर्ष (2004 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	9 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती	15 अप्रैल	श्रीदुर्गाष्टमी	3 अक्तूबर	मकर संक्रान्ति	14 जन.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	गुड फ्राई डे	18 अप्रैल	दशहरा	5 अक्तूबर	पोंगल	15 जन.
पोंगल	14 जन.	ईद–ए–मिलाद	15 मई	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	10 अक्तूबर	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	16 मई	दीपावली	25 अक्तूबर	इदुलज्जुहा	2 फर.
इदुलज्जुहा	12 फर.	रथयात्रा (पुरी)	1 जुला.	भाई दूज	27 अक्तूबर	जन्म श्री गुरु रविदास जी	6 फर.
जन्म श्री गुरु रविदास जी	16 फर.	रक्षाबन्धन (राखी)	12 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	8 नवंबर	श्री महाशिवरात्रि व्रत	18 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	जमतुलविदा	21 नवंबर	मुहर्रम	2 मार्च
मुहर्रम	14 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	19 अग.	इदुलफित्र	26 नवंबर		
गुड़ी पड़वा	2 अप्रैल	श्रीगणेश चतुर्थी	31 अग.	बलि. दिवस श्री गुरु तेगबहादुर जी	28 नवंबर		
श्रीराम नवमी	11 अप्रैल	ओणम (केरल)	8 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसंबर		
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रैल	जन्म श्रीहजरत अली	11 सितं.	अवतार दिन श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	29 दिसंबर		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी , सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

(सन् 2003 ई.)							
		पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रैल	श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	5 अग.	श्रीपुष्करराज (राज.)	8 नवं.
लोहड़ी (दाऊं, बिंदरख) रोपड़ (पं.)	13 जन.	पिंजौर (हरि.)	1 मई	श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	12 अग.	बाल मेला	14 नवं.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.	आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई	ब. सन्त बाबा हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.	पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)	23 नवं.
माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	18 जन.	समागम (8 दिन) हरिद्वार मणिकर्ण, (कुल्लू) प्रा	10 मई	कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	25 अग.	ब. बा. वैशाखा सिंह, दुदेहर सा. (अमृतसर)	5 दिसं.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.	डूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	15 मई	श्रीगुसाईंआणा, कुराली (पंजाब)	29 अग.	ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ साहिब	23 दिसं.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी मस्तुआणा (पं.)	1 फर.	बजार (कुल्लू) प्रा.	15 मई	श्रीगणेशोत्सव (मण्डी) हि.प्र. प्रारम्भ	31 अग.	जोड़मेला फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रा.	26 दिसं.
वसन्त पंचमी	6 फर.	जदिसं बा तेजा सिंह जी, बदरीपुर पाऊंटा सा.	15 मई	मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	1 सितं.	संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर).प्रा.	28 दिसं.
ज.दि.गु. हरि राय जी, सिंहपुरा (कुराली)	25 फर.	साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	19 मई	श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला,पटियाला)	7 सितं.	(सन् 2004 ई.)	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	1 मार्च	खीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	8 जून	बाबा सोढल (जालन्धर)	9 सितं.	माणकपुर शरीफ (रोपड़) प्रारम्भ	7 जन.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी, गढ़वाल)	1 मार्च	श्रीगंगा दशहरा	10 जून	छपार (पं.)	9 सितं.	लोहड़ी (दाऊं,बिदरख) रोपड़, पंजाब	13 जन.
जन्म बाबा अतर सिंह जी (नानकसर चीमा)	15–17 मार्च	सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	10 जून	श्रीगोईंदवाल साहिब, (अमृतसर), पं.	10 सितं.	मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	19 मार्च	नमाणी एकादशी, नौवें गुरु बरहे (बठि.), पं.	10 जून	श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	25 सितं.	वसन्त पंचमी	26 जन.
श्रीगुरु रामराय (देहरादून)	22 मार्च	पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	10 जून	श्रीज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.)	3 अक्तू.	ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	25 मार्च	शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	14 जून	ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर), पं.	3 अक्तू.	ब.सन्त बाबा अतर सिंह जी मस्तुआणां (पं.)	1 फर.
ब.सं.बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च	पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन,	15 जून	दशहरा (कुल्लू) प्रा.	5 अक्तू.	ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा– कुराली	4 फर.
शीतला माता (कुराली) पं.	27 मार्च	भुन्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून	मेला पीरमीखनशाह (घड़ाम) पटियाला–प्रा.	8 अक्तू.	श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	18 फर.
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	31 मार्च	याद दिवस बी. शरण कौर जी, चमकौर साहिब	29 जून	श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	9 अक्तू.	नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	18 फर.
माईसर खाना (पं.)	8 अप्रैल	शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	8 जुला.	देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	9 अक्तू.	होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	7 मार्च
श्रीमनसादेवी (हरि.)	10 अप्रैल	ब.बा. सन्तोख सिंह जी, नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.	दीपावली (अमृतसर)	25 अक्तू.	श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	9 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	10 अप्रैल	गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली)	13 जुला.	बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	4 नवं.	श्री गुरु रामराय (देहरादून)	11 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	10 अप्रैल	ब.सं.बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.	रेणुका (नाहन) हि.प्र.	4 नवं.	शीतला माता (कुराली) पं.	11 मार्च
माता कांसादेवी (कांसल, रोपड़) प्रारम्भ	15 अप्रैल	बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी,		जन्मदिन श्रीवीर वैरागी (नकोदर–पं.)	6 नवं.	जन्म बाबा अतर सिंहजी (नानकसर चीमा)	15–17 मार्च
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	15 अप्रैल	(झाड़साहिबवाले) चमकौर साहिब, प्रा.	5 अग.	श्रीरामतीर्थ (अमृतसर पं.)	8 नवं.	पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	19 मार्च
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रैल	श्रीनैना देवी (हि. प्र.)	5 अग.	कपालमोचन (हरि.)	8 नवं.	ब.सं.बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

सन् 2003 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2003 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2003–04ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003–04ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.
— —	— . —	2 जन.	17 36	9 मई	2 58	11 मई	2 40	12 सितं.	18 02	14 सितं.	22 51	9 जन.	19 27	11 जन.	21 35
9 जन.	23 55	12 जन.	5 58	17 मई	10 03	19 मई	5 33	22 सितं.	15 02	24 सितं.	14 04	18 जन.	16 15	20 जन.	11 39
19 जन.	14 32	21 जन.	12 21	26 मई	10 39	28 मई	16 46	1 अक्तू.	0 01	2 अक्तू.	21 18	27 जन.	4 29	29 जन.	8 43
28 जन.	3 09	30 जन.	1 42	5 जून	8 45	7 जून	9 18	10 अक्तू.	1 10	12 अक्तू.	6 06	6 फर.	2 26	8 फर.	3 47
6 फर.	8 14	8 फर.	14 11	13 जून	20 42	15 जून	16 00	20 अक्तू.	0 10	22 अक्तू.	0 16	14 फर.	23 02	16 फर.	19 52
15 फर.	23 58	17 फर.	20 53	22 जून	17 32	24 जून	23 29	28 अक्तू.	8 23	30 अक्तू.	4 11	23 फर.	13 51	25 फर.	17 14
24 फर.	8 30	26 फर.	7 35	2 जुला.	14 21	4 जुला.	14 44	6 नवं.	7 17	8 नवं.	12 34	4 मार्च	10 55	6 मार्च	11 52
5 मार्च	15 57	7 मार्च	21 48	11 जुला.	5 46	13 जुला.	1 51	16 नवं.	7 43	18 नवं.	9 16	13 मार्च	4 23	15 मार्च	1 42
15 मार्च	10 16	17 मार्च	7 21	20 जुला.	1 28	22 जुला.	6 58	24 नवं.	19 12	26 नवं.	13 41	21 मार्च	22 38	24 मार्च	1 47
23 मार्च	14 47	25 मार्च	13 04	29 जुला.	21 08	31 जुला.	20 42	3 दिसं.	13 10	5 दिसं.	18 39	31 मार्च	20 01	2 अप्रै.	21 23
1 अप्रै.	22 38	4 अप्रै.	4 32	7 अग.	12 36	9 अग.	9 51	13 दिसं.	13 42	15 दिसं.	16 05				
11 अप्रै.	19 37	13 अप्रै.	17 51	16 अग.	9 54	18 अग.	14 57	22 दिसं.	6 37	24 दिसं.	0 57				
19 अप्रै.	23 29	21 अप्रै.	20 13	26 अग.	5 34	28 अग.	4 28	30 दिसं.	20 01	2 जन.	1 09				
29 अप्रै.	4 36	1 मई	10 39	3 सितं.	18 00	5 सितं.	15 53								

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

सन् 2003 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2003 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003 ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2003–04ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2003–04ई.	समाप्त घं. मि.	सन् 2004 ई.	प्रारम्भ घं. मि.	सन् 2004 ई.	समाप्त घं. मि.
6 जन.	4 59	11 जन	2 54	22 मई	15 45	27 मई	13 38	6 अक्तू.	8 34	11 अक्तू.	3 27	20 फर.	2 27	24 फर.	15 12
2 फर.	13 59	7 फर.	11 06	19 जून	0 18	23 जून	20 23	2 नवं.	14 06	7 नवं.	9 46	18 मार्च	10 13	22 मार्च	23 55
1 मार्च	21 23	6 मार्च	18 45	16 जुला.	9 47	21 जुला.	4 01	29 नवं.	20 55	4 दिसं.	15 44				
29 मार्च	3 14	3 अप्रै.	1 29	12 अग.	18 52	17 अग.	12 11	27 दिसं.	6 01	31 दिसं.	22 20				
25 अप्रै.	8 53	30 अप्रै.	7 33	9 सितं.	2 31	13 सितं.	20 12	23 जन..	16 33	28 जन.	6 16				

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

2003 ई.	रविवार की तारीखें					2003 ई.	रविवार की तारीखें					2003 ई.	रविवार की तारीखें					2004 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	5	12	19	26	—	मई	4	11	18	25	—	सितंबर	7	14	21	28	—	जनवरी	4	11	18	25	—
फरवरी	2	9	16	23	—	जून	1	8	15	22	29	अक्तूबर	5	12	19	26	—	फरवरी	1	8	15	22	29
मार्च	2	9	16	23	30	जुलाई	6	13	20	27	—	नवंबर	2	9	16	23	30	मार्च	7	14	21	28	—
अप्रैल	6	13	20	27	—	अगस्त	3	10	17	24	31	दिसंबर	7	14	21	28	—	अप्रैल	4	11	18	25	—

कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व नासिक (त्र्यम्बक)

भाद्रपद अमा, बुधवार सं. २०६० वि. (२७ अग., २००३ ई.) - (कुम्भपर्व का उद्गम, माहात्म्य एवम् स्नान-तिथियां)

लेखक -प्रियव्रत शर्मा

हिन्दुओं के सभी प्राचीन उत्सव धार्मिक आधार लिए हुए हैं। वे मनोरंजन के साथ-साथ मानव के चरित्र को आवश्यक विधियों की ओर प्रवृत्त और निषेधों से निवृत्त कर एक ऐसे अनुशासन में निबद्ध करते हैं, जिससे मानव ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस प्राप्त करता है। वे शारीरक स्वास्थ्य और आत्मिक शुद्धि पर समानरूपेण बल देते हैं। इन उत्सवों में चार कुम्भपर्वों का स्थान विशालता और अलौकिक-माहात्म्य की दृष्टि से वस्तुतः मूर्धन्य है। ये धार्मिक पर्व अपने अद्वितीय माहात्म्य के कारण प्रत्येक द्वादशाब्दी में एक-एक बार हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक में अपार जनसमूह को आकृष्ट करने के लिए भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में विख्यात हैं । यदि हम इन्हें विश्व के सबसे बडे 'जनसंगम' कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्य सभी हिन्दु पर्वोत्सवों की भांति ये कुम्भपर्व भी ग्रहों की राशि-नक्षत्रों में विशेष स्थितियों से सम्बद्ध हैं। इन कुम्भपर्वों की तिथियों का निर्धारण सूर्य, गुरु और चन्द्र की विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है।

कुम्भपर्व क्यों मनाए जाते हैं ?

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृत-प्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक (त्र्यम्बक)में छुपाया गया। इसलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक-एक बार कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की एवम् चन्द्रमा ने भी राक्षसों को इससे वंचित रखने के लिए पूरा प्रयास किया । यही कारण है कि इन तीनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि- दैत्य-देवों की छीना-झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि इन चार तीर्थस्थलों में गिरीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं।

इस गाथा के अतिरिक्त एक और गाथा भी है। कश्यप ऋषि की दो पत्नियां कद्रु एवं विनता थीं। इन दोनों में आपसी द्वेष बहुत था। एक बार इन दोनों में शर्त लगी। कद्रु का कहना था कि सूर्य के घोड़े काले हैं और वनिता का कहना था, घोड़े सफेद हैं। कद्रु का पुत्र नागराज था और विनता का पुत्र गरुड़। नागराज ने अपनी माता को जिताने के लिए सूर्यलोक में जाकर घोड़ों को अपने काले शरीर से ढक लिया। इस प्रकार उसने अपनी माता को विजयी बना दिया। विनता को शर्त के अनुसार कद्रु की दासी बनना पड़ा। गरुड़ अपनी मां के दासीभाव से बहुत क्षुब्ध रहते थे। उन्होंने अपनी माता के दासीभाव से मुक्ति के लिए नागलोक में जाकर अमृतकुम्भ लाने का प्रयत्न किया । रास्ते मे हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा दिव्य त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) में अमृतकुम्भ को रखकर, उन्हें वहां इन्द्र के साथ युद्ध करना पड़ा। १२ दिव्य दिनों तक युद्ध चलता रहा। इस युद्ध के दौरान इन स्थानों पर अमृत गिरने से इनका धार्मिक महत्त्व बना। इसी कारण इन चारों स्थानों पर कुम्भपर्व प्रारम्भ हुए। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं। परन्तु सभी में अमृत का पात्र इन्हीं चार स्थानों पर रखने अथवा अमृत के बूंद इन्हीं स्थानों पर गिरने आदि का आख्यान एक सा है, भले ही किसी ने किसी के साथ लड़ने के लिए पात्र वहां रक्खा अथवा अमृत का पात्र वहां छिपा दिया। धर्मशास्त्र भी एक से वाक्यों से कुम्भपर्व के स्थानों का महत्त्व बखानते हैं कि वहां स्नान करने से अमृतत्व की प्राप्ति होती है, इत्यादि। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं, जिनका सम्बन्ध कुम्भपर्वों से है।

इस वर्ष (सं. २०६० वि. में) नासिक (त्र्यम्बक) में कुम्भ महापर्व का योग बन रहा है। जब भाद्रपद अमा के समय सूर्य और गुरु दोनों सिंह राशि में स्थित हों, तब नासिक (त्र्यम्बक) में गोदावरी के तट पर कुम्भ महापर्व (जिसे सिंहस्थ महापर्व भी कहा जाता है) मनाया जाता है - जैसा कि ये पुराणवाक्य बतलाते हैं -

" सिंह-राशिगते सूर्ये सिंह-राशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्यां भवेत् कुम्भः पुनरावृत्ति-वर्जनः।। "

तथा;–

" सिंहे गुरुस्तथा भानुः चन्द्रः चन्द्रक्षयस्तथा।
गोदावर्यां तदा कुम्भो जायतेऽवनिमण्डले।। "

इस वर्ष (सं.२०६० वि. में २७ अग. २००३ ई. को भाद्रपद अमा के दिन सूर्य, गुरु और चन्द्र तीनों सिंह राशि में उपलब्ध होंगे, अतः इस दिन नासिक (त्र्यम्बक) में गोदावरी की पावनधारा में देश-विदेश के साधु सन्त पधारकर स्नान करेंगे। इन पुण्यात्मा महात्माओं के दर्शन तथा कुम्भपर्व पर गोदावरी में स्नान द्वारा पुण्य एवं मोक्षप्राप्ति हेतु लाखों धार्मिक लोग नासिक में एकत्र होंगे।

इस महापर्व की मुख्य स्नानतिथियां इस प्रकार हैं–

(१) **भाद्र. कृ. ५, रवि (१७ अग., सन् २००३ ई.)** :– इस दिन सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा। सिंह संक्रान्ति के पुण्यकाल में गोदावरी में स्नानकर दान -जप करने का माहात्म्य होगा। संक्रान्ति का पुण्यकाल इस दिन सूर्योदय से लेकर शाम के ५ बजकर २ मि. तक रहेगा। लेकिन स्नान सूर्योदय से पूर्व अरुणोदयकाल में करना चाहिए, ऐसा शास्त्रनिर्देश है। दान-जप सूर्योदयानन्तर भी किए जा सकते हैं।

(२) **भाद्रपद अमा, बुधवार (२७ अग., सन् २००३ ई.)**:– यह कुम्भपर्व की प्रमुख स्नान तिथि है। साधु महात्माओं की प्रमुख शाहीयात्रा (शोभायात्रा) भी आज ही निकलेगी। इसदिन अमा पूरादिन विद्यमान है। यहां भी अरुणोदयकाल में स्नान करके दान-जप करना चाहिए। यदि अरुणोदयकाल में अधिक जनसम्मर्द के कारण गोदावरी-स्नान सम्भव न हो तो इस दिन सूर्योदय से सूर्यास्तकाल तक (किसी भी समय) गोदावरी में स्नान से पूर्ण पुण्य प्राप्त होगा ; क्योंकि यह पूरा दिन कुम्भ के योग वाला है।

(३) **भाद्र. शुक्ल पंचमी, चन्द्रवार (१ सितं., सन् २००३ ई.)** – यह भी कुम्भपर्व की स्नानतिथि है। इसदिन **'ऋषिपंचमी'** नामक विशेष पर्व है। ऋषिपंचमी के दिन इस महापर्व का अन्तिम स्नान होगा।

स्नान का काल

जैसा कि ऊपर भी लिख चुके हैं :- तीर्थ आदि पर स्नान का मुख्यकाल अरुणोदयकाल है। सूर्योदय के बाद किए गए स्नान का माहत्म्य कम है। लेकिन यह नियम सामान्य तिथिस्नान के लिए है। कुम्भपर्व आदि की स्नानतिथियों में स्नान सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त कभी भी किया जा सकता है। जिसका माहात्म्य (पुण्य) पूर्ण माना गया है । अतः कुम्भपर्व की स्नानतिथियों के दिन अरुणोदयकाल में ही गोदावरी आदि में स्नान करना है, ऐसा ज्यादा आग्रह नहीं होना चाहिए ।

नासिक कुम्भपर्व का माहात्म्य

नासिक **श्रीराम** भगवान् की वासभूमि रहा है। १४ वर्ष के वनवासकाल में उनके और श्री सीता माता के पावन चरणरज से यह धरा नितान्त परिपूत है। अतः इस भूमि पर घटित होने वाले कुम्भपर्व को विशेष माहात्म्य वाला माना जाता है। स्कन्दपुराण में लिखा है कि महामुनि कश्यप ऋषि के निर्देशानुसार **भगवान् श्री राम** ने अपने पिता दशरथ का श्राद्ध नासिक में गोदावरी के तट पर ही किया था। अतः मर्यादा पुरुषोत्तम **भगवान् श्री राम** के संचार से परम पावन इस तीर्थस्थल पर इस विशेष पर्वयोग में किया गया स्नान-दान-जप निश्चय ही अनन्तफलदायक है।

इस महापर्व पर पधारे धार्मिक लोगों को चाहिए कि वे इस पुण्य धार्मिक पुण्यसलिला गोदावरी के तट पर अपने प्रिय पूर्वजों को पिण्डदान करना न भूलें।

जो लोग नासिक न जा सकें

जो श्रद्धालु लोग अस्वास्थ्य या अन्य किसी अपरिहार्य विवशतावश नासिक जाने में असमर्थ हों, उन्हें कुम्भ महापर्व की केवल प्रमुख स्नानतिथि (२७ अग., २००३ ई.) के दिन समीपस्थ किसी समुद्र, महानदी, नदी, तालाब, बावड़ी अथवा अपने स्नानागार में ही नासिक, गोदावरी का ध्यान करते हुए स्नान करना चाहिए। शास्त्रों का कहना है इससे भी वे लोग कुम्भपर्व स्नान का माहात्म्य प्राप्त कर लेंगे।

पुण्य एवं मोक्ष के इच्छुक धार्मिक लोग कटिबद्ध रहें

अगले वर्ष (सं. २०६१ वि. में) भी निम्नलिखित कुम्भपर्व आ रहे हैं।

(१) अर्धकुम्भ, हरिद्वार (१३ अप्रै., सन् २००४ ई.)
(२) कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन (४ मई,२००४ ई.)

इनकी स्नानतिथियों का विस्तृत विवरण अगले वर्ष (सं.२०६१ वि.) के पंचांग मे दिया जाएगा।

ग्रहण विवरण (सं. २०६० वि.)

प्रियव्रत शर्मा

इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) भूगोल पर ये चार ग्रहण होंगे :-

(१) खग्रास चन्द्रग्रहण (वैशा. पूर्णिमा शुक्रवार- १६ मई, २००३ ई.),
(२) कंकण सूर्यग्रहण (ज्येष्ठ अमा शनिवार- ३१ मई, २००३ ई.),
(३) खग्रास चन्द्रग्रहण (कार्तिक पूर्णिमा शनिवार- ६ नवं., २००३ ई.),
(४) खग्रास सूर्यग्रहण (मार्ग. अमा रविवार- २३/२४ नवं., २००३ ई.),

इन ग्रहणों में से (१) और (४) नम्बर वाले ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे। भारत में अदृश्य इन ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

-: भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण :-

(i) **खग्रास चन्द्रग्रहण (वैशा. पूर्णिमा, शुक्रवार- १६ मई, २००३ ई.)-** यह ग्रहण भा. स्टैं.टा. के अनुसार १६ मई '०३ ई. को प्रातः ७ घं. ३३ मि. पर प्रारम्भ होकर १० घं. ४८ मि. पर समाप्त होगा। इसका खग्रासरूप इसी दिन ८ घं. ४४ मि. से ६ घं. ३६ मि. तक रहेगा। ग्रहण प्रारम्भ होने से काफी पहिले ही भारत में चन्द्र अस्त हो चुका होगा, अतः यहां यह दिखाई नहीं देगा। अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, कनाडा एवं द. अमेरिका में इसे देखा जा सकेगा।

(ii) **खग्रास सूर्यग्रहण (मार्ग. अमा, रविवार- २३/२४ नवं., २००३ ई.)-** यह ग्रहण २३ नवम्बर की मध्यरात्रि के बाद २४ नवम्बर को भा.स्टैं. टा. के अनुसार भूगोल पर २ घं. १६ मि. से ६ घं. २२ मि. के मध्य घटित होगा। यह ऐन्टार्क्टिका, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया एवं द. अमेरिका आदि में दिखाई पड़ेगा।

-: भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण :-

(i) **कंकण सूर्यग्रहण (ज्येष्ठ अमा, शनिवार- ३१ मई, २००३ ई.):-** इस ग्रहण की कंकण आकृति भारत में दिखाई नहीं पड़ेगी, यह केवल इंगलैण्ड और ग्रीनलैण्ड के कुछ भाग में ही देखी जा सकेगी। **भारत में तो इस ग्रहण की अत्यल्प ग्रास वाली खण्डग्रास आकृति ही दिखाई पड़ेगी,** जो केवल पश्चिमोत्तरी भारत के जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली, राजस्थान एवं गुजरात प्रान्तों में ही प्रातः सूर्योदय के बाद देखी जा सकेगी। उ. प्र. तथा म. प्र. के पश्चिमी और उत्तरी कुछ भाग में भी इसे देखा जा सकेगा। **ग्रहणचित्र (१) में दी गई (A)-(B)** रेखा से बाईं ओर स्थित प्रदेशों में ही यह ग्रहण दिखाई पड़ेगा, इससे दाईं ओर स्थित प्रदेशभागों एवम् प्रदेशों में यह ग्रहण नहीं दीखेगा। **ग्रहणचित्र (२) में** दी गई (A)-(B) रेखा के दोनों ओर बसे पार्श्ववर्त्ती नगरों को विस्तार से प्रदर्शित किया गया है। इससे अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है कि यह रेखा कहां से गुजरती है।

ग्रहणचित्र (१) में इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) और मोक्ष (समाप्ति) बतलाने वाली वक्र (टेढी) रेखाएं अंकित की गई हैं। इन रेखाओं के छोर पर लिखे घं. मि. बतलाते हैं कि उन स्थलों पर जहां से ये रेखाएं गुजर रही हैं, इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल (भा.स्टैं.टा.) क्या है। इन रेखाओं से इधर-उधर स्थित अभीष्ट स्थलों पर ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल पार्श्वस्थित दो रेखाओं से उस स्थल की दूरी के अनुसार जाना जा सकता है।

भारत के इन प्रदेशों में इस ग्रहण का ग्रास काफी कम रहेगा। यह २२ प्रतिशत से अधिक कहीं नहीं होगा। पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, में इसका ग्रास १५ प्रतिशत से कम ही रहेगा। **ग्रहणचित्र (३)** में इस ग्रहण का परमग्रासमान बतलाने वाली रेखाएं अंकित हैं। जो नगर इस चित्र में दी गई (A)-(B) रेखा के जितना अधिक समीप स्थित होगा, वहां ग्रहण का ग्रासमान उतना ही कम होगा। दिल्ली, हरिद्वार, मेरठ, आगरा, मथुरा, अलवर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, ग्वालियर, अहमदाबाद, गांधीनगर, राजकोट, जूनागढ़ नगरों में तो इस ग्रहण का ग्रासमान एक अंगुल (तीन कला अर्थात् १० प्रतिशत) एवं इससे भी कम होगा। चण्डीगढ़ में भी इसका मान ११ प्रतिशत ही होगा। कुछ धर्मशास्त्रकारों एवं ज्योतिषसिद्धान्तकारों ने एक अंगुल से अल्प ग्रास वाले ग्रहण को अनादेश्य (जनसाधारण को न बतलाने योग्य) लिखा है; क्योंकि ऐसे ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल (कब ग्रहण प्रारम्भ हुआ और कब समाप्त हुआ यह) जनसाधारण के लिए जान सकना कठिन रहता है। **अपिच** इतने अल्प ग्रास को नंगी आंखों से देख पाना भी सम्भव नहीं होता। **ध्यान रहे-** प्राचीन सिद्धान्तग्रन्थों (सूर्यसिद्धान्त आदि में तो ऐसे ग्रहण को 'अनादेश्य' न कहकर 'अलक्ष्य' (दृष्टि से अग्राह्य) ही लिखा है। लेकिन आजकल नवीन वैज्ञानिक दूरबीन आदि यन्त्रों द्वारा इसे जान पाना अत्यन्त सरल है। अब तो कम से कम ग्रास को भी T.V. के माध्यम से जनता को स्पष्टता से दिखा दिया जाता है।

15 पृष्ठ पर पंजाब, जम्मू-काश्मीर आदि उन प्रान्तों के प्रसिद्ध नगरों में, जहां यह ग्रहण दृश्य होगा, इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष का समय, पर्वकाल एवम् परमग्रासमान दिया गया है।

ग्रहण का सूतक (वेध)- इस ग्रहण का सूतक ३० मई, सन् २००३ ई. की शाम को ७ बजकर २० मि. (भा.स्टैं.टा.) पर ही प्रारम्भ हो जाएगा। जहां यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा,वहां इसका सूतक भी नहीं होगा।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (३१ मई, २००३ ई.)

[(A) (B) रेखा का लंघन-मार्ग]

(A) (B) रेखा, जिससे बाईं ओर ही यह ग्रहण दीखेगा, किन-किन नगरों के पास से गुजरती है- इसका स्पष्ट निर्देश इस चित्र में किया गया है।

ग्रहण चित्र (२)

पाकिस्तान, पंजाब, हरि., हि.प्र., देहरा., दिल्ली, नेपाल, राजस्थान, मथुरा, आगरा, जय., अज., टोंक, ग्वालि., लख., उ. प्र., कान., इला., रीवां, वारा., झांसी, कोटा, बीना, उदय., गुजरात, गान्धी., इन्दौर, म. प्र., बिलास., खंडवा, राज., महाराष्ट्र, (A), (B)
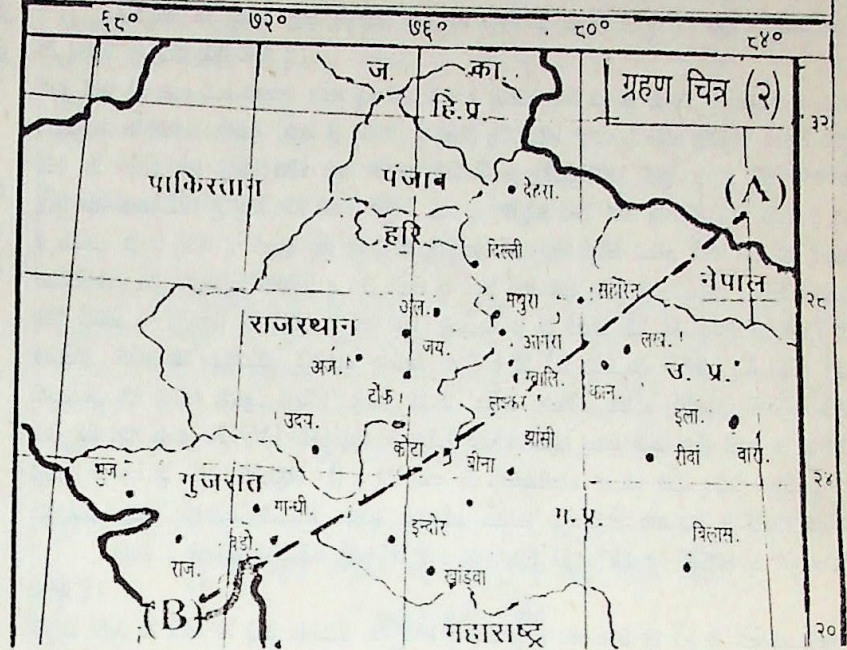
ग्रहण का राशिफल- यह ग्रहण **रोहिणी नक्षत्र एवम् वृष राशि** में हो रहा है। अतः यह **रोहिणी नक्षत्र व वृष राशि वाले** जातकों के लिए विशेष कष्टकारक होगा। **मेष आदि सभी राशियों वाले जातकों के लिए इस ग्रहण का शुभाशुभ फल इस प्रकार होगा;-**

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	हानि	घात (चोट) दुर्घटना	हानि	लाभ	सुख	अपमान	दुर्घटना	स्त्री/पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	अर्थ-लाभ
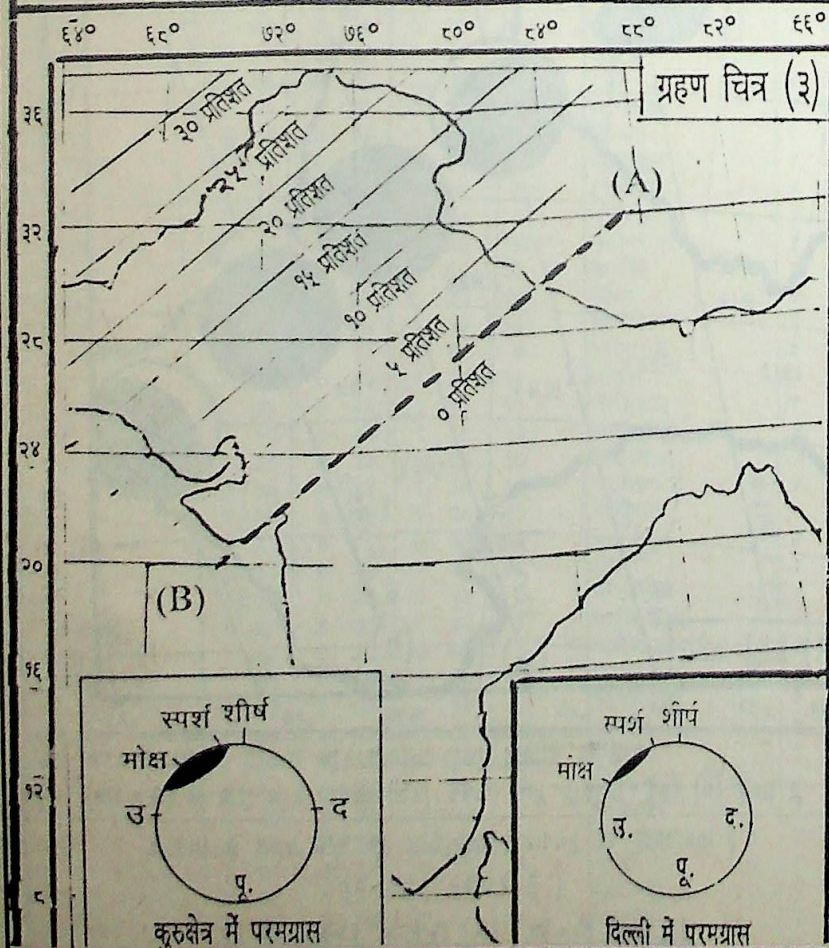
ग्रहण का अन्यफल– यह ग्रहण वृष राशि में होने से पशुपालक, पशु, एवं वरिष्ठ व्यक्तियों के लिए विशेष कष्टप्रद है:- **"वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः। महान्तो मनुजा ये च तेषां पीड़ा गरीयसी।।"** **किञ्च–** यह ग्रहण **रोहिणी नक्षत्र** में घटित हो रहा है, अतः सूत, कपास का संग्रह करने से आगे उत्तम लाभ मिले, ज्येष्ठ मास में कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो।

(ii) **ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (कार्त्तिक पूर्णिमा, शनिवार- ९ नवं., २००३ ई.):-** यह ग्रहण कार्त्ति. पूर्णिमा में प्रातः ९ नवम्बर के सूर्योदय से पहिले समस्त भारत में ग्रस्तास्त के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण के प्रारम्भ आदि का काल इस प्रकार है:-

	घं. मि.	
ग्रहण प्रारम्भ	**५/०२**	**९ नवं. २००३ ई. (प्रातः) (भा.स्टैं. टा.)**
खग्रास प्रारम्भ	**६/३६**	
ग्रहण मध्य	**६/४८**	
खग्रास समाप्त	**७/००**	
ग्रहण समाप्त	**८/३५**	
ग्रहण का कुल काल	**३/३३**	

इस ग्रहण की खग्रास आकृति जम्मू-काश्मीर, हि. प्र., पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात में दीखेगी। प. मध्यप्रदेश एवं प.महाराष्ट्र में भी इसका खग्रासरूप दिखाई पड़ेगा। भारत के शेष प्रान्तों में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में ही नज़र आएगा। **ग्रहण चित्र (४)** में (क)-(ख) रेखा अंकित है। इस रेखा से बाईं ओर वाले भाग में इस ग्रहण की खग्रास आकृति दिखाई पड़ेगी, दाईं ओर वाले भाग में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में ही दीखेगा। इस (क)-(ख) रेखा पर स्थित नगरों में खग्रास प्रारम्भ होते समय चन्द्रमा पश्चिम क्षितिज में अस्त हो रहा होगा। इसी चित्र में (च)-(छ) रेखा भी दी गई है। इस रेखा पर स्थित नगरों में खग्रासमोक्ष (पूर्ण ग्रहण की समाप्ति) के समय चन्द्रास्त होगा। इन दोनों [(क)-(ख) और (च)-(छ)] रेखाओं के मध्यवर्त्ती प्रदेशों में रहने वालों को खग्रास का आरम्भ तो दिखाई पड़ेगा, परन्तु खग्रास की समाप्ति वे नहीं देख पाएंगे, क्योंकि यहां खग्रास की समाप्ति से पहिले ही चन्द्रास्त हो जाएगा। (च)-(छ) रेखा से बाईं ओर खग्रास का प्रारम्भ और समाप्ति दोनों दिखाई पड़ेंगे। सारे भारत में ग्रस्त चन्द्रमा ही अस्त होगा।

चित्र (४) में ही २४-२४ मिनटों के अन्तर पर आड़ी (ऊर्ध्वाधर) रेखाएं अंकित हैं। ये रेखाएं जहां से गुजर रही हैं, वहां ९ नवं. '०३ ई. को चन्द्रास्त जिस समय होगा वह काल (भा.स्टैं.टा.) लिखा गया है। चन्द्रास्त के समय ग्रस्त चन्द्रमा की आकृतियां भी इन रेखाओं पर प्रदर्शित की गई हैं। इनसे आप जान सकते हैं कि चन्द्रास्त के समय अमुक जगह पर चन्द्रमा का विम्ब किस दिशा में

ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण

(९ नवं. २००३ ई.)

चन्द्रमा के समय ग्रास की आकृतियां (भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(क) (ख) रेखा से दाईं ओर खग्रास (पूर्ण ग्रहण) नहीं दीखेगा। (च) (छ) रेखा से बाईं ओर खग्रास का प्रारम्भ और समाप्ति-दोनों दिखाई पड़ेंगे।
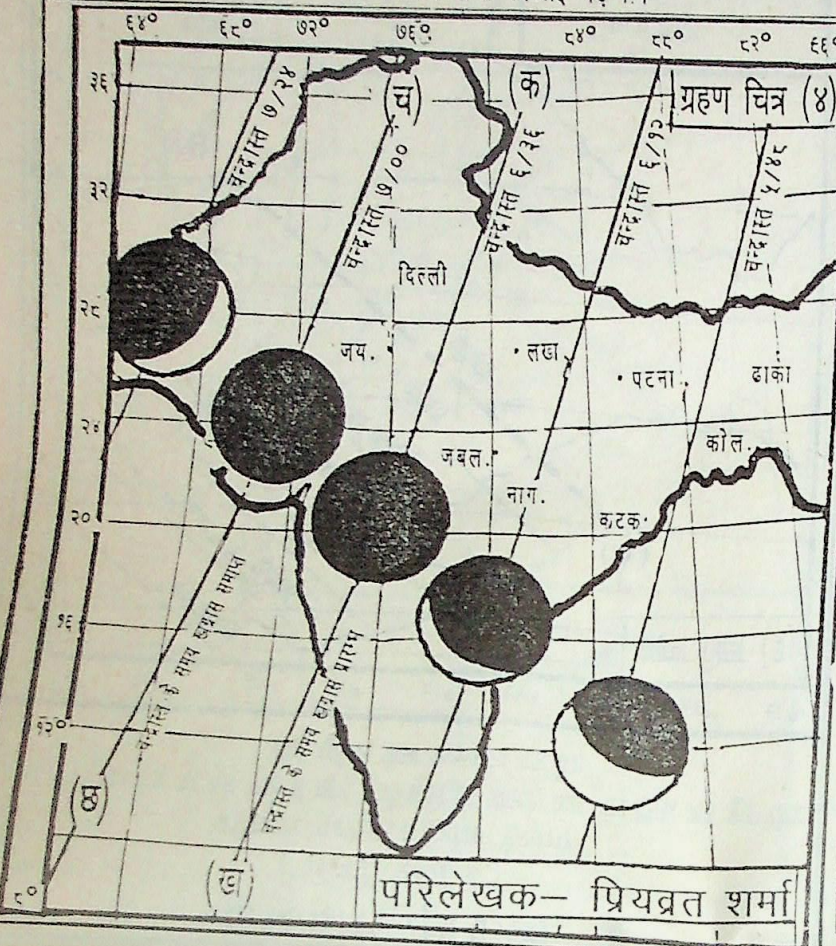
कितना ग्रस्त होगा।

आगे पृष्ठ **16** पर भारत के २१६ नगरों में ९ नवम्बर '०३ ई. को चन्द्रास्तकाल (भा.स्टैं.टा.) और पर्वकाल दिया गया है। **ध्यान रहे**- ग्रस्तास्त सूर्य/चन्द्रग्रहण का पर्वकाल ग्रहण के प्रारम्भ से सूर्य/चन्द्र के अस्तकाल तक ही माना जाता है। अतः सूर्य/चन्द्र के अस्त हो जाने पर वहां स्नान कर लेना चाहिए।

ग्रहण का सूतक (वेध) – इस ग्रहण का सूतक ८ नवं. '०३ ई. को सूर्यास्तकाल से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल- यह ग्रहण **भरणी नक्षत्र व मेषराशि** में होगा, अतः भरणी नक्षत्र व मेषराशि में जन्मे लोगों के लिए यह विशेष अशुभ फलप्रद होगा। **मेषादि राशियों में जन्मे लोगों के लिए इसका शुभाशुभ फल नीचे कोष्ठक में देखें:-**

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	महान् कष्ट	हानि	लाभ	सुख	अपमान	दुर्घटना	स्त्री/ पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धन-लाभ	हानि

ग्रहण का अन्यफल- यह ग्रहण **भरणी नक्षत्र** में घटित होगा;- वस्त्रों के व्यापारी एवं चीनी, चांदी के विक्रेता लाभान्वित होंगे। **किञ्च– मेषराशि** में ग्रहण होने से चीन, अफगानिस्तान एवं भारत के कुछ प्रान्तों में प्राकृतिक आपदा से जनजीवन क्षुब्ध हो।

"उपरागो यदा मेषे पीड्यन्ते ये तदा जनाः।
काम्बोजान्ध्र-किराताश्च पाञ्चालाश्च तिलंगकाः।।"

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (31 मई 2003 ई.)

[विभिन्न नगरों में ग्रहण का प्रारम्भ-समाप्तिकाल(भा.स्टैं.टा.), पर्वकाल और परमग्रासमान]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	परमग्रासमान* (प्रतिशत) लगभग	नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	परमग्रासमान* (प्रतिशत) लगभग	नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	परमग्रासमान* (प्रतिशत) लगभग
अजमेर	7 34	8 24	0 50	6	ज्वालाजी (हि.प्र.)	7 32	8 48	1 16	14	भिवानी	7 35	8 34	0 59	6½
अमृतसर	7 30	8 49	1 11	15	झुंझुनू	7 34	8 30	0 56	7½	भीनमाल	7 30	8 22	0 52	7
अम्बाला	7 35	8 40	1 05	10	टोंक	7 37	8 20	0 43	4	भुज	7 28	8 17	0 49	6
अलवर	7 37	8 26	0 49	5	थानेसर	7 35	8 39	1 04	7	मण्डी(हि.प्र.)	7 34	8 48	1 14	13
अलीगढ़	7 41	8 24	0 43	4	दिल्ली	7 37	8 31	0 54	6	मथुरा	7 40	8 23	0 43	3½
अहमदाबाद	7 37	8 07	0 30	2½	देहरादून	7 37	8 38	1 01	8	महेन्द्रगढ़	7 35	8 30	0 55	7
आगरा	7 43	8 18	0 35	2½	द्वारिका	7 29	8 13	0 44	5	मालेरकोटला	7 32	8 43	1 11	12
उदयपुर	7 35	8 15	0 40	4	धूरी	7 32	8 38	1 06	12	मुजफ्फर नगर	7 37	8 35	0 58	7½
ऊधमपुर (का.)	7 30	8 55	1 25	17	नवलगढ़	7 34	8 30	0 56	7½	मुरादाबाद	7 40	8 29	0 49	4
ऊना	7 33	8 48	1 15	13	नागौर	7 31	8 30	0 59	8	मेरठ	7 37	8 31	0 54	6½
कठुआ	7 31	8 51	1 20	16	नाभा	7 33	8 42	1 09	12½	रतनगढ़	7 32	8 33	1 01	8
कपूरथला	7 31	8 50	1 19	14	नारनौल	7 36	8 29	0 53	6	राजकोट	7 34	8 08	0 34	3
करनाल	7 35	8 37	1 02	9	नालागढ़	7 36	8 29	0 53	12	रामपुर बुशहर	7 35	8 45	1 10	12
कांगड़ा	7 33	8 49	1 16	14	नाहन	7 35	8 39	1 04	10	रिवाड़ी	7 36	8 30	0 54	6
कालका	7 34	8 45	1 11	11	नैनीताल	7 42	8 30	0 48	5	रोपड़	7 33	8 45	1 12	12½
कुराली	7 33	8 45	1 12	12	पंचकूला	7 35	8 43	1 08	10	रोहतक	7 35	8 34	1 01	8
कुरुक्षेत्र	7 35	8 39	1 04	10	पटियाला	7 34	8 42	1 08	10½	लुधियाना	7 32	8 45	1 13	13
कुल्लू	7 34	8 48	1 14	13	पठानकोट	7 32	8 50	1 18	14	वडोदरा	7 48	7 54	0 06	1/10
कैथल	7 34	8 38	1 04	10	पानीपत	7 35	8 37	1 02	8	शाहदरा	7 37	8 30	0 53	6½
कोटा	7 41	8 11	0 30	2	पालमपुर	7 33	8 48	1 15	13½	शिमला	7 34	8 44	1 10	12
खन्ना	7 34	8 44	1 10	12	पुंछ	7 31	8 59	1 28	20	श्रीनगर (का.)	7 30	9 00	1 30	19
खुर्जा	7 39	8 26	0 47	5	पोरबन्दर	7 32	8 08	0 36	3½	संगरूर	7 32	8 41	1 09	11½
गाजियाबाद	7 37	8 30	0 53	7	फरीदकोट	7 30	8 45	1 15	14	सरहिन्द	7 34	8 43	1 09	11½
गुड़गांव	7 37	8 29	0 52	7	फरीदाबाद	7 37	8 30	0 53	6	सहारनपुर	7 36	8 39	1 03	8½
गुरदासपुर	7 31	8 50	1 19	15	फाजिल्का	7 29	8 45	1 16	14	सांगानेर	7 36	8 23	0 47	5
ग्वालियर	7 49	8 08	0 19	1	फिरोजपुर	7 30	8 46	1 16	14	सिरसा	7 31	8 40	1 09	10½
चण्डीगढ़	7 34	8 43	1 09	11	बरेली	7 45	8 22	0 37	3	सीकर	7 34	8 28	0 54	7
चम्बा	7 33	8 51	1 18	15	बाड़मेर	7 27	8 28	1 01	10	सूरतगढ़	7 29	8 40	1 11	14
चूरू	7 33	8 33	1 00	9	बिलासपुर (हि.प्र)	7 34	8 45	1 11	12	सोलन	7 33	8 45	1 12	12½
जम्मू	7 30	8 52	1 22	17	बीकानेर	7 29	8 35	1 06	10	हमीरपुर (हि. प्र.)	7 33	8 48	1 15	13½
जयपुर	7 36	8 24	0 48	5	बुलन्दशहर	7 39	8 27	0 48	5	हरिद्वार	7 37	8 38	1 01	8
जालन्धर	7 31	8 47	1 16	14	बून्दी	7 39	8 15	0 36	2½	हापुड़	7 38	8 29	0 51	6½
जीन्द	7 35	8 35	1 00	8	बठिण्डा	7 31	8 42	1 11	12½	हांसी	7 33	8 35	1 02	8½
जैसलमेर	7 25	8 36	1 11	12	भरतपुर	7 41	8 21	0 40	3	हिसार	7 32	8 36	1 04	10
जोधपुर	7 30	8 26	0 56	7½	भावनगर	7 43	7 57	0 14	1/2	होशियारपुर	7 32	8 48	1 16	13½

* सूर्यबिम्ब = 100

ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (९ नवं. सन् २००३ ई.)

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में चन्द्रास्तकाल (भा.स्टैं. टा.) और ग्रहणपर्वकाल*

नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रास्त घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.
अकोला	६ ३०	१ २८	कटक	५ ५४	० ५२	गोरखपुर	६ १२	१ १०	त्रिवेन्द्रम् (के.)	६ १५	१ १३	पानीपत	६ ४२	१ ४०	भागलपुर	५ ५६	० ५४	रोपड़	६ ४७	१ ४५
अगरतला	५ ३६	० ३४	कटनी	६ २०	१ १८	ग्वालियर	६ ३३	१ ३१	थानेसर	६ ४३	१ ४१	पालमपुर	६ ४८	१ ४६	भिवानी	६ ४४	१ ४२	रोहतक	६ ४३	१ ४१
अजमेर	६ ४७	१ ४५	कठुआ (का.)	६ ५२	१ ५०	चण्डीगढ़	६ ४५	१ ४३	दतिया	६ ३०	१ २८	पाली	६ ५१	१ ४६	भीनमाल	६ ५४	१ ५२	लखनऊ	६ २३	१ २१
अनन्तनाग (का.)	६ ५६	१ ५४	कन्नौज	६ २७	१ २५	चम्बा	६ ५०	१ ४८	दरभंगा	६ ०२	१ ००	पिलानी	६ ४६	१ ४४	भुज(गु.)	७ ०२	२ ००	लुधियाना	६ ४६	१ ४७
अनूपशहर (उ.प्र.)	६ ३६	१ ३४	कपूरथला	६ ५२	१ ५०	चित्तौड़गढ़	६ ४५	१ ४३	दार्जिलिंग	५ ५३	० ५१	पुंछ	७ ०१	१ ५६	भुवनेश्वर	५ ५४	० ५२	वड़ोदरा (गु.)	६ ४७	१ ४५
अमरावती (म.)	६ २७	१ २५	करनाल	६ ४२	१ ४०	चूरू	६ ४६	१ ४७	दिल्ली	६ ४०	१ ३८	पुणे	६ ३६	१ ३७	भोपाल	६ ३२	१ ३०	विजयवाड़ा	६ १०	१ ०८
अमरोहा (उ.प्र.)	६ ३५	१ ३३	कलकत्ता	५ ४७	० ४५	चीरापूंजी	५ ३७	० ३५	देवबन्द	६ ४०	१ ३८	पुरनिया	५ ५५	० ५३	मण्डी (हि.प्र.)	६ ४६	१ ४४	विशाखापत्तनम्	६ ००	० ५८
अमृतसर	६ ५४	१ ५२	कांगड़ा	६ ४६	१ ४७	चेन्नई	६ ०७	१ ०५	देवरिया	६ ११	१ ०६	पुरी	५ ५४	० ५२	मथुरा	६ ३७	१ ३५	शिमला	६ ४४	१ ४२
अमेठी (उ.प्र.)	६ १८	१ १६	कांचीपुरम्	६ ०६	१ ०७	छतरपुर	६ २५	१ २३	देवास (म.प्र.)	६ ३७	१ ३५	पोरबन्दर	७ ००	१ ५८	मदुरै	६ १२	१ १०	शिलांग	५ ३७	० ३५
अम्बाला	६ ४४	१ ४२	काठियावाड़	६ ५६	१ ५४	छपरा	६ ०६	१ ०४	देवप्रयाग	६ ३७	१ ३५	पोर्टब्लेयर	५ १५	० १३	मन्दसोर	६ ४२	१ ४०	श्रीनगर (का.)	६ ५८	१ ५६
अयोध्या	६ १८	१ १६	कानपुर	६ २४	१ २२	जबलपुर	६ २१	१ १६	देहरादून	६ ३६	१ ३७	प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	६ १७	१ १५	मसूरी	६ ३६	१ ३७	संगरूर	६ ४८	१ ४६
अर्की (हि.प्र.)	६ ४५	१ ४३	कारगिल	६ ५३	१ ५१	जम्मू	६ ५६	१ ५४	द्वारिका	७ ०४	२ ०२	प्रयाग	६ १७	१ १५	महेन्द्रगढ़	६ ४३	१ ४१	सरहिन्द	६ ४६	१ ४४
अलवर	६ ४१	१ ३६	कालका	६ ४४	१ ४२	जयपुर	६ ४३	१ ४१	धनबाद	५ ५७	० ५५	फरीदकोट	६ ५३	१ ५१	मारवाड़ जं.	६ ५०	१ ४८	सहारनपुर	६ ४१	१ ३६
अलीगढ़	६ ३६	१ ३४	काशी	६ १२	१ १०	जामनगर	७ ००	१ ५८	धर्मशाला	६ ५०	१ ४८	फरीदाबाद	६ ४०	१ ३८	मालेरकोटला	६ ४८	१ ४६	सागर	६ २७	१ २५
अल्मोड़ा	६ ३२	१ ३०	किशनगढ़ (रा.)	७ ०५	२ ०३	जालन्धर	६ ५१	१ ४६	नवलगढ़	६ ४७	१ ४५	फ़ाज़िल्का	६ ५६	१ ५४	मिर्ज़ापुर	६ १४	१ १२	सांगानेर	६ ४३	१ ४१
अहमदाबाद	६ ५०	१ ४८	कुराली (पं.)	६ ४६	१ ४४	जालोर	६ ५४	१ ५२	नागपुर	६ २२	१ २०	फिरोज़पुर	६ ५४	१ ५२	मुंगेर	५ ५८	० ५६	सिरसा	६ ५०	१ ४८
आगरा	६ ३४	१ ३२	कुरुक्षेत्र	६ ४४	१ ४२	जोरहाट	५ ३०	० २८	नागौर	६ ५२	१ ५०	बंगलोर	६ १७	१ १५	मुजफ्फर नगर	६ ३६	१ ३७	सीकर	६ ४७	१ ४५
आजमगढ़	६ १२	१ १०	कुल्लू	६ ४६	१ ४४	जींद	६ ४४	१ ४२	नाथद्वारा	६ ३६	१ ३४	बदायूं	६ ३१	१ २६	मुम्बई	६ ४४	१ ४२	सूरत	६ ५७	१ ४५
आबू	६ ५२	१ ५०	कैथल	६ ४५	१ ४३	जैसलमेर	७ ०३	२ ०१	नाभा	६ ४७	१ ४५	बलिया	६ ०८	१ ०६	मुरादाबाद	६ ३४	१ ३२	सूरतगढ़	६ ५४	१ ५२
आरा (बि.)	६ ०६	१ ०४	कोटखाई	६ ४२	१ ४०	जोधपुर	६ ५३	१ ५१	नारनौल	६ ४३	१ ४१	बाड़मेर	६ ५६	१ ५७	मेरठ	६ ३६	१ ३७	सोलन	६ ४४	१ ४२
इटानगर	५ ३२	० ३०	कोटा	६ ४०	१ ३८	ज्वालाजी	६ ४६	१ ४७	नालागढ़	६ ४६	१ ४४	बांसवाड़ा	६ ४४	१ ४२	मैसूर	६ २१	१ १६	हमीरपुर (उ. प्र.)	६ २४	१ २२
इटारसी	६ २६	१ २७	कोयम्बटूर	६ १६	१ १४	झरिया	५ ५६	० ५४	नाहन	६ ४३	१ ४१	बिजनौर	६ ३७	१ ३५	मोगा	६ ५२	१ ५०	हमीरपुर (हि. प्र.)	६ ४७	१ ४५
इटावा	६ ३०	१ २८	कोहिमा	५ २८	० २६	झांसी	६ ३०	१ २८	नासिक	६ ४१	१ ३६	बिलासपुर (म.प्र.)	६ ११	१ ०६	रतनगढ़	६ ४६	१ ४७	हरिद्वार	६ ३८	१ ३६
इन्दौर	६ ३७	१ ३५	खन्ना	६ ४७	१ ४५	झालरापाटन	६ ३८	१ ३६	नीमच	६ ४३	१ ४१	बिलासपुर (हि.प्र.)	६ ४६	१ ४४	रतलाम	६ ४१	१ ३६	हायरस	६ ३५	१ ३३
इम्फाल	५ २७	० २५	खुर्जा	६ ३७	१ ३५	झालावाड़	६ ४६	१ ४४	नैनीताल	६ ३२	१ ३०	बीकानेर	६ ५५	१ ५३	राजकोट	६ ५७	१ ५५	हापुड़	६ ३८	१ ३६
उज्जैन	६ ३८	१ ३६	गंगटोक	५ ५२	० ५०	झुंझुनु	६ ४६	१ ४४	पंचकूला	६ ४५	१ ४३	बीजापुर	६ ३०	१ २८	रांची	६ ००	० ५८	हांसी	६ ४६	१ ४४
उदयपुर (रा.)	६ ४८	१ ४६	गया	६ ०३	१ ०१	टोंक	६ ४२	१ ४०	पंजिम	६ ३६	१ ३४	बुलन्दशहर	६ ३७	१ ३५	रामपुरबुशहर	६ ४३	१ ४१	हिसार	६ ४७	१ ४५
उन्नाव	६ २४	१ २२	गाजियाबाद	६ ३६	१ ३७	डिब्रूगढ़	५ २८	० २६	पटना	६ ०४	१ ०२	बून्दी	६ ४२	१ ४०	रामेश्वरम्	६ ०६	१ ०४	हैदराबाद	६ १६	१ १७
ऊधमपुर (का.)	६ ५५	१ ५३	गुड़गांव	६ ४०	१ ३८	डीडवाना	६ ४६	१ ४७	पटियाला	६ ४६	१ ४४	बृन्दावन	६ ३६	१ ३४	रायपुर (म.प्र.)	६ १२	१ १०	होशंगाबाद	६ ३०	१ २८
...ना	६ ४८	१ ४६	गुरदासपुर	६ ५२	१ ५०	डूंगरपुर	६ ४७	१ ४५	पठानकोट	६ ५२	१ ५०	बठिण्डा	६ ५१	१ ४६	रिवाड़ी	६ ४१	१ ३६	होशियारपुर	६ ५०	१ ४८
...टा	६ ३३	१ ३१	गुआहाटी	५ ३८	० ३६	तिरुपति	६ १२	१ १०	पाण्डिचेरी	६ ०७	१ ०५	भरतपुर	६ ३७	१ ३५	रीवां	६ १८	१ १६			

सूर्यविम्ब में बुध का प्रवेश

(७ मई, सन् २००३ ई. को एक अद्भुत आकाशीय दृश्य)

लेखक - प्रियव्रत शर्मा

हमारे ग्रहों में से सूर्य और चन्द्रमा को तो बच्चे भी पहिचानते हैं। अन्य भौमादि पांच ताराग्रहों (तारों की भान्ति लगने वाले ग्रहों) में से मंगल, गुरु, शुक्र और शनि को भी आकाश-दर्शन या ग्रहदर्शन में रुचि रखने वाले व्यक्ति आसानी से पहचान लेते हैं, लेकिन बुध ग्रह को आकाश में पहले तो देख पाना ही कठिन है ; इसे पहिचानना तो बाद की बात है। यह ग्रह सभी ग्रहों में लघुतम होने तथा सर्वदा सूर्य के आसन्न रहने के कारण सर्वसाधारण की दृष्टि में आसानी से नहीं आ पाता । यह बालग्रह सूर्य से केवल २८ अंश तक ही इधर-उधर जा पाता है, इससे अधिक नहीं। जिसके कारण इसे हम प्रातः सूर्य उदय होने से पहिले या सायं सूर्यास्त के बाद कुछ ही देर के लिए देख सकते हैं। उस समय भी सूर्य की उज्ज्वल सान्ध्यप्रभा में इसका नन्हा सा विम्ब काफी कुछ निष्प्रभ सा रहने के कारण केन्द्रित दृष्टि द्वारा ही ग्राह्य हो पाता है। नगर-महानगरों में रहने वालों को तो प्रदूषित वातवरण के कारण इसे देख पाना सम्भव ही नहीं है। इसकी सर्वदा सूर्य के आसन्न स्थिति, प्रदूषित वातावरण तथा पूर्वी, पश्चिमी क्षितिज में स्थित टीले, पर्वत, वृक्ष आदि बाधाओं के कारण ऐसे बहुत ही कम लोग हैं, जिन्हें इस शिशुग्रह के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो । कहा जाता है कोपर्निकस प्रयत्न करने पर भी उम्र भर इसे देख न पाया ।

इस प्रकार सामान्य जन की दृष्टि से दुर्ग्राह्य इस दुर्लभदर्शन बुध ग्रह को साधारणजन दिन के समय भी देख पाएंगे, ऐसी स्थिति ७ मई २००३ ई. को घटित हो रही है- यह हर्ष की बात है।

७ मई सन् '०३ ई. को बुधग्रह सूर्य के दीप्तिमान् विम्ब के भीतर पूर्व दिशा से प्रवेश करके उसके पश्चिमी प्रान्त से बाहिर निकलेगा। सूर्यविम्ब में उसके प्रवेश से निर्गम तक का काल लगभग ६ घं. ४ मिनट होगा। अर्थात् सूर्यविम्ब में प्रविष्ट होकर वह (बुध) धीरे-धीरे चलते हुए ६ घं. ४ मिनट में उसे पार करेगा। सूर्यविम्ब में बुध के इस प्रवेश-निर्गम को नक्षत्रवेत्ता लोग बुध-रविवेधयुति अथवा रविबुध -संक्रम कहते है। English में इसे Transit of Mercury कहा जाता है।

यहां तारीख ७ मई २००३ ई. को घटित होने वाले इस रविबुधसंक्रम का एक चित्र दिया गया है। इसे देखिए - सूर्यविम्ब के पूर्वोत्तरी प्रान्त से बुध सूर्यविम्ब में भा.स्टैं.टा. के अनुसार लगभग १० बजकर १७ मिनट पर प्रवेश और १६ बजकर २१ मिनट पर पश्चिमोत्तरी प्रान्त से वह निर्गम (बहिर्गमन) करेगा। अलग-अलग समय में बुध सूर्यविम्ब के किस भाग पर स्थित होगा- यह इस चित्र में दर्शाया गया है । **ध्यान रहे**- इस युति के समय बुध वक्री (पूर्व से पश्चिम की ओर गतिशील) होगा।

सूर्य के परमदीप्तिमान् विम्ब में इस छोटे से ग्रहविम्ब को देख पाना थोड़ा कठिन है। वेल्डिंग में प्रयुक्त होने वाले काले शीशे या गहरी काली फोटो फिल्म अथवा दीपक/मोमबत्ती के धुएं से अच्छी तरह काले किए गए कांच में से इस घटना को देखना चाहिए। साधारण दूरबीन की सहायता से भी इसे आसानी से देखा जा सकता है। **लेकिन ध्यान रहे- बिना फिल्टर की दूरबीन से सूर्य को देखने से आप तुरन्त अन्धे हो सकते हैं।** बुध को देखते समय

सूर्यविम्ब पर बुध का संक्रमण

(७ मई सन् २००३ ई.)

(भा. स्टैं. टा.दिया गया है।)

सूर्यविम्ब में उसी जगह दृष्टि केन्द्रित कर देखिए जहां चित्र में उस समय उसे स्थित दिखाया गया है। एकाग्रता से देखने पर विशाल सूर्यविम्ब में छोटा सा बुधविम्ब इस भान्ति लगेगा, जैसे चान्दी के स्वच्छ थाल में कोई छोटा सा सिक्का पड़ा हो।
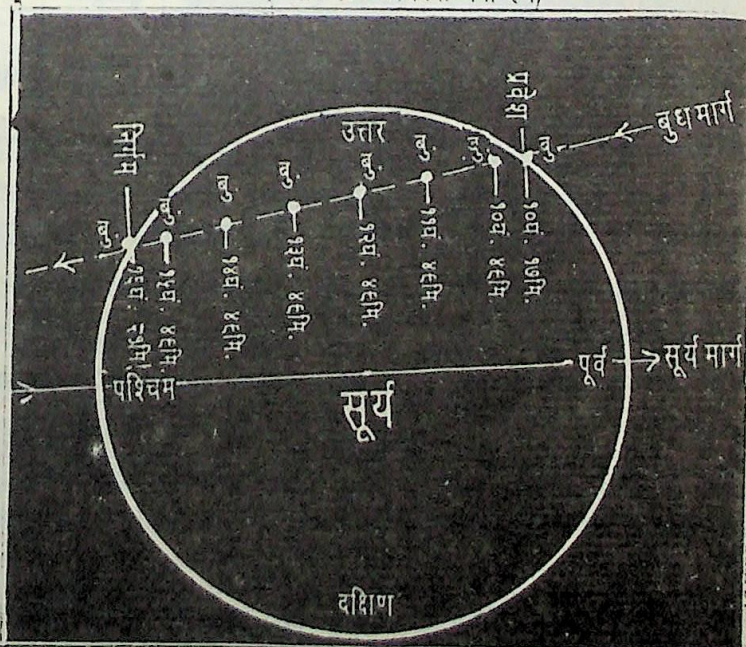
ऐसी बुधरविवेधयुति सामान्यतः ७ या १३ वर्ष बाद घटित हुआ करती है। बुधरविवेधयुति का फल-संहिताओं में कृषिनाश, वर्षा की कमी तथा राजनैतिक दलों में आपसी फूट लिखा है।

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैया (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2060 वि.)

जन्मकुण्डली मे शनैश्चर का शुभग्रह से संबध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैया, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग मे अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। **शान्त्यर्थ**–सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त्त में बना हुआ शनियंत्र धारण करना विशेष शांतिप्रद है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अंत के पांच वर्ष, विशेषतः अंत के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अंत के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

सं. 2059 वि. में 8 जनवरी सन् 2003 ई. को दिन में 13 घं. 52 मि. पर पू.भा. नक्षत्र एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय शनि (वक्र स्थिति में) पुनः वृषराशि में प्रविष्ट हुआ था, जो सं. 2060 वि. में 6 अप्रैल सन् 2003 ई. तक वृषराशि में ही स्थित रहेगा।

वृषराशिस्थ शनि की साढेसाती–ढैया का फल आगे कोष्ठक में दिया जा रहा है।

नोटः–कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश नहीं है; उन राशि वाले व्यक्तियों के लिए वृष/मिथुन–राशिस्थ शनि की कालावधि में साढेसाती–ढैया नहीं है ;– यह जान लें।

संवत् 2060 वि. में 7 अप्रैल सन् 2003 ई. मृगशिरा नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्र के समय शनि 20 घं. 07 मि. पर मिथुन राशि में प्रवेश करेगा, जो संवत के अंत तक मिथुनराशि में ही रहेगा।

मिथुनराशिस्थ शनि की साढेसाती और ढैया का फल, नीचे कोष्ठक में दिया गया है।

वृष राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया
(संवत् के प्रारम्भ से 6 अप्रैल 2003 ई. तक के लिए)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मेष	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	निजीजन एवं कुटुम्ब में विरोध, क्लेश–रोगभय धननाश हो।
वृष	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– – –	धनलाभ, कार्यक्षेत्र में प्रगति, स्त्री–पुत्रसुख, सम्पत्ति–लाभ, शारीरिक सुख रहे।
मिथुन	साढेसाती	रजत	मस्तक	चढ़ती	व्यापार वृद्धि, धन–धान्य–सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, मान बढे, मंगल कार्य हों।
तुला	ढैया	रजत	– –	– – –	व्यापार वृद्धि, धनधान्य सम्पत्तिलाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, मान सम्मान मिले, मंगल कार्य हों।
कुम्भ	ढैया	सुवर्ण	– –	– – –	निजीजन एवं कुटुम्बजन विरोध, क्लेश, रोगभय, धननाश हो।

मिथुन राशिस्थ शनि की साढेसाती, ढैया
(7 अप्रैल 2003 ई. से संवत् 2060 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती-		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	साढेसाती	लौह	पाद	उतरती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, पशुधनहानि, स्त्री–पुत्र कष्ट, व्यापारहानि, राजभय।
मिथुन	साढेसाती	ताम्र	हृदय	– –	सुख–सम्पत्ति,व्यापार अच्छा, शारीरिक सुख एवं संतानपक्ष से सुख मिले।
कर्क	साढेसाती	सुवर्ण	मस्तक	चढ़ती	निजीजनों से विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, रोग से परेशानी, व्यर्थ में खर्च, धनहानि हो।
वृश्चिक	ढैया	रजत	– –	– –	व्यापार बढ़े, धन–धान्य–सम्पत्तिलाभ, प्रभाव बढ़े, राजनीति व राजा से लाभ।
मीन	ढैया	ताम्र	– –	– –	सुख–सम्पत्तिलाभ, व्यापार बढ़े, शारीरिक सुख, सन्तति सुख।

गुरु के संचार का फल

सं. 2059 वि. में 5 जुलाई (सन् 2002 ई.) को 12 घं. 26 मि. पर भरणी नक्षण एवं मेष राशिस्थ चन्द्र के समय गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण एवं कर्क (अपनी उच्चराशि)में प्रवेश करके संवत् 2060 वि. में 29 जुलाई '03 ई. तक कर्क राशि में ही रहेगा।

संवत् 2060 वि. में 30 जुलाई '03 ई. को आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव 11 घं 51 मि. पर सिंह राशि में प्रविष्ट होंगे और संवत् के अन्त तक सिंह राशि में ही रहेंगे।

कर्क/सिंह राशिस्थ–गुरु का फल भिन्न–भिन्न राशि वालों के लिए निम्नांकित कोष्ठकों में पढ़ें ;–

कर्क राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(संवत् 2060 वि. के प्रारम्भ से 29 जुलाई, सन् 2003 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धन

सिंहराशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(30 जुलाई '03 ई. से संवत् के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग

राहु के संचार का फल

संवत् 2058 वि. में 16/17 फर. (सन् 2002 ई.) को 24 घं. 36 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर राहु वृष राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2060 वि. में 5 सितं. '03 ई. तक वृष राशि में ही रहेगा।

वृष राशि के राहु का शुभाशुभ फल

(संवत् के प्रारम्भ से 5 सितम्बर ' 03 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य

संवत् 2060 वि. में 5 सितम्बर की मध्यरात्रि के उपरान्त 6 सितम्बर को पू. षा. नक्षत्र एवं धनुस्थ चन्द्र के समय राहु 3 घं. 38 मि. पर मेष राशि में आता है, जोकि संवत् के अन्त तक मेष राशि में ही रहेगा।

मेष राशि के राहु का शुभाशुभ फल

(6 सितम्बर ' 03 ई. से संवत् के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	
फल	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं [illegible]माम्यहम् ।।
प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन–सन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
हिमकुन्द -- मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर–नारी–नृपाणां च भवेत् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र -- देहाय नमस्ते चांतकाय च । नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्द -- संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैया की दुःखद, पीड़ा नहीं होती, अनुभूत है।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. २०६० वि.)

संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के आधार पर सर्वेक्षण

- इस 'दुर्मुख' नामक संवत् में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा(भूकम्प, ज्वालामुखी-विस्फोट, तूफान किंवा दुर्भिक्ष से) भारी हानि का योग बनता है।
- कुछ देशे नीतिभेद के कारण युद्ध के लिए सन्नद्ध, मुस्लिम राष्ट्राध्यक्षों के लिए समय भयावह, कहीं प्रधान नेता के अपदस्थ किंवा हत्या का षडयन्त्र, किसी बड़े राष्ट्र के प्रधान व्यक्ति के लिए समय नाजुक।
- २ जून से ४ दिसम्बर के मध्य शनि-मंगल का षडष्टक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक, सीमा-प्रान्तों के सन्निकट उग्रवादजन्य भीषण-बम विस्फोट एवं यानदुर्घटना में जनधन-हानि।
- इस वर्ष के मध्य किन्हीं दो बहुचर्चित नेताओं की आकस्मिक मृत्यु या पदत्याग से राजनीतिक उथल-पुथल।
- मिथुनस्थ शनि में; शनि-मंगल का षडष्टक एवं राहु-मंगल का दशम-चतुर्थ सम्बन्ध आसाम, त्रिपुरा, काश्मीर आदि संवेदनशील क्षेत्रों में विदेश-प्रेरित उग्रवाद से अशान्ति।
- २६ जुलाई से ५ सितम्बर तक मुस्लिमराष्ट्र में कहीं सत्तापरिवर्तन, कहीं युद्ध का वातावरण किंवा आन्तरिक अशान्ति।
- ५ दिसम्बर से २३ जनवरी २००४ ई. तक कहीं कठिन राजनीतिक परिस्थिति का सामना करना पड़े। भारतीय राजनीतिक पार्टियों में नए ध्रुवीकरण एवं अग्रिमवर्ष में राजनीतिक समर के लिए तैयारी।
- इस संवत् में चार बार **खप्परयोग** घटित होगा। जोकि प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के समक्ष राजनीतिक-धार्मिक एवं विशेष प्राकृतिक आपदा से परेशानी पैदा करे। केन्द्रस्थ-राजनीतिक दल धार्मिक समस्या को लेकर शासन को संकटापन्न स्थिति में लाकर खड़ा करें।

"यद्भासा भासते सर्वं भूनीर-गगनस्थितम्।
शिवाय सिद्धरूपाय तस्मै ज्योतिष्मते नमः।।"

प्रागैतिहासिक-चिन्तन से यह बात स्पष्टतः सामने आती है, कि -प्राणीमात्र, विशेषतः मनुष्य की प्राकृतिक- वस्तुओं के अन्वेषण, चिन्तन एवं उत्काण्ठाजन्य प्रवृत्ति से ही ग्रह-नक्षत्र आदि अनन्त रहस्यमय पिण्डों के बारे में रहस्योद्घाटन की जिज्ञासा पैदा हुई और परिणामतः **'ज्योतिषशास्त्र'** का उद्गम हुआ है।

मनुष्य की सर्वप्रथम दृष्टि सूर्य एवं चन्द्र पर ही पड़ी। जिससे प्रभावित होकर इन्हें देवत्व प्रदान कर दिया गया । ज्योतिषशास्त्र में कालात्मा सूर्य सभी ग्रहों का प्रधान माना गया है। क्योंकि विश्व में स्थावर एवं जंगम सभी सूर्य से ही भासमान एवं जीवन्त हैं। ग्रह, पृथ्वी, जलवायु, आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद सूर्य को ही ज्ञात है। ऋग्वेद की निम्नांकित ऋचा भी इसी रहस्य का उद्घाटन करती है:-

" चित्रं देवानामुदागदनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य-आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।"

अतः यह बात भी नितांत सत्य है कि- सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि **आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक-विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।** बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भौतिक ज्योतिष की अनेक शाखाओं का विकास हुआ है, जिनके आधार पर फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में प्रमाण मिलते ही जा रहे हैं। सूर्य-कलंकचक्रों, चन्द्रमा एवं ज्वारभाटा सम्बन्धी सिद्धान्तों के परिशीलन तथा ग्रहों के आकर्षणसिद्धांत की प्रक्रिया के आधार पर विवेचन करने से प्राणीशास्त्र-वनस्पतिशास्त्र एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलु पर ग्रहों का प्रभाव सत्य सिद्ध हो चुका है। यही कारण है, कि - आजकल के वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य एवं पूर्वीय सभी देशों में इस शास्त्र के प्रति आस्था प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस विषय में **मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका)** (University of Minnesota) में डॉ. मार्कग्रोबार्ड (Dr. Mark Graubard) के तत्त्वावान में हुए फलितशास्त्र सम्बन्धी शोध के परिणाम महत्वपूर्ण हैं। भारत सरकार ने वेदांग-ज्योतिषशास्त्र के विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन में रुचि प्रदर्शित की लेकिन कुछ सांसदों ने इसे

विवाद का विषय बना दिया और मामला सुप्रीम कोर्ट तक चला गया। यथार्थ बात तो यह है कि ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित विषय भी। उपेक्षित इसलिए कि फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षा भाव लिए हैं। **मनुष्यजाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकी है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था जबकि ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।**

विज्ञान 'कार्य-कारण के सिद्धांत पर' ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य-सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

ऋग्वेद में पचानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु-शिष्य परम्परया चिंतन व संशोधन-संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गतिस्थिति में अंतर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगणितजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्तण्डपंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का ७६वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् २०६० की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्-प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार ७५ वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज ७६वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर **भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद** एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित-ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। **आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के** कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग-गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

भारत-पाक विभाजन, बंगलादेश का अस्तित्व में आना, श्री जवाहरलाल नेहरु, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना, भारत-पाक युद्ध, भारत-चीन युद्ध, विदेश में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र, समय-समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना एवं ऐतिहासिक भूकम्प आदि की अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. २०६० वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व स्पष्ट कर देना उचित है, कि संवत् १६८४ से लेकर आजतक सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। लेकिन गत तीन-चार वर्षों की सफल कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

सं. २०५४ वि. के पंचांग में जो भविष्यवाणियां आश्चर्यचकित कर देने वाली थीं,सभी की चर्चा करना तो सम्भव नहीं, लेकिन उनमें से कुछ प्रमुख भविष्यवाणियों की चर्चा कर देना युक्तिसंगत समझते हैं-

(१) प्रधानमंत्री देवगौड़ा जी के अपदस्थ होने की भविष्यवाणी- सं. २०५४ वि. के पंचांग के पृ. १६, कॉलम २ पर प्रकाशित पंक्तियां पढ़ें,-

" ध्यान दें - कि ५ फरवरी सन् १६६७ ई. को मंगल वक्री भी हो जाता है और १३ मार्च को शनि अस्त हो रहा है। यह ग्रहस्थिति सत्तारूढ़ मोर्चा सरकार के लिए पेचीदा है, इस अवधि में प्रधान नेता को विषम चक्रव्यूह से निकलना कठिन होगा, वैसे तो संवत् २०५४ वि. के प्रारम्भ के लगभग केन्द्र सरकार में विशेष परिवर्तन के योग हैं। "

पाठक जानते हैं कि ११ अप्रैल को देवगौड़ा सरकार भंग हो गई थी। २१ अप्रैल को श्री इन्द्रकुमार गुजराल जी नए प्रधानमंत्री बने।

(२) कांग्रेस पार्टी में श्रीमती सोनिया गांधी के प्रवेश का संकेत सं. २०५४ वि. के ही पंचांग में पृ. २०, कॉलम २ पर, **कांग्रेस शीर्षक** के अन्तर्गत स्पष्टरूप से निम्नांकित शब्दों में किया गया था, पढ़ें,-

" कर्मक्षेत्र (कन्याराशि) का स्वामी बुध होने से मीन के गुरु में किसी पुराने कांग्रेसी नेतृत्व-परिवार की मदद मिलने से पार्टी को पुनः चेतना मिलने का योग है।"

पाठक जानते हैं, कि ८ मई को श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस में सम्मिलित हो गई।

(३) 'केन्द्रीय-सरकार' से कांग्रेस ने समर्थन वापिस लिया' परिणामस्वरूप शक्तिपरीक्षण असफल एवं पुनः देश राजनैतिक असंतुलन की ओर। पढ़ें - सं. २०५५ वि. के पंचांग में पृ. २५, कॉलम २, स्टैंजा १ की अन्तिम चार पंक्तियां -

"कांग्रेस आदि कुछ राजनैतिक दलों के अग्रणी नेता अपनी महत्त्वाकांक्षा किंवा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण केन्द्रीय-शासनसत्ता से कभी भी अलगाव की स्थिति पैदा करके देश में राजनैतिक संतुलन को बिगाड़ सकते हैं।"

इस भविष्यवाणी को और स्पष्ट करते हुए आगे लिखा था (पृ. २६, कॉलम १. स्टैंजा ४), -

"सत्ता से अलग प्रभावी पार्टी अपना हाथ खींच लेगी, परिणामस्वरूप प्रधानशासक ऐसे चक्रव्यूह में फंस जाएंगे, जहां से निकलना संभव न होगा और भारत का केन्द्रीय मंत्रिमण्डल शक्तिपरीक्षण में असफल

सिद्ध होगा।" और पढ़ें,- पृ. २६, कॉलम २, पंक्ति ७ से - " १५ मई १९९८ ई. से पूर्व ही कोई प्रभावी पार्टी जनहित के नाम पर कांग्रेस ' संयुक्त मोर्चा' से समर्थन वापिस ले लेगी। " - ठीक इसी प्रकार घटित हुआ और 'संयुक्त मोर्चा सरकार' गिर गई।

(४) आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र में भयंकर बाढ़ की भविष्यवाणी, पढ़ें - सं.२०५५ वि. में पृ. २६, कॉलम २, अंतिम स्टैंजा-

"इसी मध्य २७ जून से १० अगस्त तक मिथुनराशि के मंगल पर नीच शनि की विशेष दृष्टि है। इस अवधि में गुजरात, आसाम आदि प्रान्तों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि, कहीं बाढ़, उत्तरी भारत में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड व तूफान, भयंकर बाढ़ से हानि का योग है। आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र में भी भयंकर बाढ़ से हानि होगी।"

सं. २०५५ वि. के मार्त्तण्ड पंचांग पृ. २७, कॉलम २ पर निम्नांकित पंक्तियां पढ़ें:-

(५) गुजराल सरकार के गिर जाने की भविष्यवाणी -

"संयुक्त मोर्चा की कुण्डली के अनुसार इस वर्ष सत्तारूढदल (संयुक्त मोर्चा) में संवत् के पूर्वार्ध में ही विशेष परिवर्तन आने के योग हैं। नवम्बर '९७ से संयुक्त मोर्चा पर अन्य प्रभावीदलों के प्रहार प्रारम्भ होंगे। घटकदलों में एकता कमजोर होगी और कांग्रेस द्वारा समर्थन छलावा सिद्ध होगा। संवत् २०५५ वि. के प्रारम्भिक मास गुजराल सरकार के लिए ऐतिहासिक घटना वाले सिद्ध होंगे।"

"श्री गुजराल जी की शपथ ग्रहणकालीन कुण्डली में शनि-मंगल का षडष्टकयोग एवं कर्मेश गुरु की नीच राशि में स्थिति ७ जनवरी १९९८ ई. से पूर्व इनके लिए विषम परिस्थितियों को जन्म देने वाली है। इस अवधि में संयुक्त मोर्चा सरकार की गतिविधि पर विशेष आक्षेप होंगे। कुछ पार्टियां अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए स्वंतत्र सिद्धांतों के कारण विमुख होने लगेंगी। कांग्रेस अपनी कई शर्तें समक्ष रखेगी और इस प्रकार संवत् के पूर्वार्ध से भी पहिले ही गुजराल सरकार संकट को पार करने में असमर्थ अनुभव करेगी। कदाचित् शनि के मीन में आने पर (७ जनवरी के बाद) यह सरकार चलती है तो ४ अप्रैल से १४ मई तक तथा १६ नवम्बर से संवत् के अंत तक का समय सत्तारूढ़ पार्टी के लिए तथा प्रधाननेताओं के लिए विशेष घटनापूर्ण किंवा सत्ता से विलग होने वाला सिद्ध होगा।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर हमें देश-विदेश से अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं और आज फलितज्योतिष पर आस्था न रखने वाले व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र की प्रामाणिकता को स्वीकार करने लगे हैं। यह 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' के लिए गौरव की ही बात है।

(६) सं. २०५५ वि. के पृ. २७ पर सत्तारूढ़ पार्टी 'भाजपा' के बारे में स्पष्ट लिखा था- पढ़ें अन्तिम पंक्तियां-

" राजनैतिक क्षितिज पर भाजपा का विस्तार होता नजर आएगा। आगामी निर्वाचनों में भाजपा पुनः एक सशक्त-प्रबल पार्टी के रूप में उभरेगी, लेकिन सत्ताप्राप्त करना एक प्रबल चुनौती होगी।"

भारत की राजनीतिक पार्टियों के प्रबल विरोध के बावजूद चुनौतीपूर्ण स्थिति में भाजपा सत्ता में आई एवं सशक्त-प्रबल पार्टी के रूप में भाजपा निर्वाचन में उभरी है ; यह सर्वविदित ही है।

सं. २०५६ वि. की अनेकों सफल भविष्यवाणियों में से कुछ अंश प्रस्तुत हैं -

(७) "काश्मीर-कारगिल में भयंकर युद्ध में हजारों वीर जवानों को शहीद होना पड़ा-" सं. २०५६ वि. में पढ़ें, पृ. २७ :-

"कुछ राष्ट्रों में युद्धभय व्याप्त होगा, जिससे पड़ौसी देश अनिवार्यतः उलझन में आ सकेंगे। लेकिन गुरु के राजा होने से अन्तर्राष्ट्रीय किंवा क्षेत्रीय हस्तक्षेप से स्थिति नियंत्रण में आ सकेगी।"

ठीक, कारगिल की लड़ाई में अमेरिका के हस्तक्षेप से पाकिस्तान का मनोबल कमजोर हुआ और भारत को यश प्राप्त हुआ।

(८) १७ अगस्त १९९९ को तुर्की में भूकम्प से १७ हजार व्यक्ति मरे एवं ४० हजार मरने की आशंका व्यक्त की गई -

सं. २०५६ वि., पृ. २६ पर "आर्षमान विचार" में कॉलम २ पर स्पष्ट लिखा था, कि-

"टर्की, लंका, जापान, अमेरिका व किसी मुस्लिमराष्ट्र में तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट किंवा कहीं भयंकर प्राकृतिक विनाशलीला का दृश्य उपस्थित होगा।"

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार २ मई को अमेरिका में भयंकर तूफान से भारी जनधनहानि हुई। ८ मई को इरान में भयंकर भूकम्प से विनाश एवं १७ अगस्त को तुर्की में प्रलयंकारी भूकम्प ने जो विनाशलीला उपस्थित की है, वह ऐतिहासिक है।

ध्यान दें,- हमारी उर्दू जन्त्री में अगस्त मास के संक्रान्ति फलादेश में तुर्की में भयंकर भूकम्प से विनाश की भविष्यवाणी ठीक १७ अगस्त को ही की गई थी। इस भविष्यवाणी पर राजनेता किंवा अन्य पाठक अवाक् रह गए।

इस आशय को स्पष्ट करते हुए संवत् २०५६ वि. के पंचांग में पृ. ३० पर, कॉलम २ की अंतिम पंक्तियों में लिखा था -

"संवत् के आरम्भ से २२ अगस्त तक कहीं अकाल की स्थिति बने। कहीं युद्धाग्नि से अशान्ति....कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी होगी।"

पाठक जानते हैं, इसवर्ष अनेक प्रान्तों में वर्षा की कमी से किसान चिन्तित रहे। काश्मीरक्षेत्र कारगिल में भयंकर युद्धाग्नि से अशांति रही एवं अमेरिका, इरान एवं तुर्की में तूफान, भयंकर भूकम्पों से अत्यधिक जनधनहानि हुई है, जोकि उल्लिखित भविष्यवाणी की सफलता का निदर्शन है।

(९) सं. २०५६ वि. में पृ. ३०, कॉलम १ में 'मुस्लिमदेश' शीर्षक में जो लिखा गया है, अक्षरशः सत्य घटित हो चुका है ; पढ़ें -

भविष्यवाणी :- " पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति उत्तरोत्तर विषम होती जाएगी, आतंकवाद बढ़ेगा। शासनसत्ता में परिवर्तन किंवा यहां लोकतांत्रिक सरकार के खतरे में पड़ जाने के योग हैं। पाकिस्तान के लिए यह संवत् भयंकर समस्याओं को लेकर आ रहा है। सिन्धप्रान्त में गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनेगी- यह पुनः एक और विभाजन की तरफ बढ़ने लगेगा और पाकिस्तान में सैनिकशासन की संभावनाएं ग्रहगति के अनुसार प्रबल हो रही मालूम देती हैं।"

पाठको ! पाक की स्थिति इसी प्रकार है। पाक में सैनिकशासन चल रहा है।

(१०) ५ सितम्बर १९९८ ई. को लेखनीबद्ध की गई इन भविष्यवाणियों में से एक और आश्चर्यचकित कर देने वाली भारतीय राजनीति में सत्ता हथियाने की होड़ की भविष्यवाणी इस प्रकार की गई थी -

पढ़ें- सं. २०५६ वि., पृ. ३२, कॉलम २ की अन्तिम पंक्तियां -

भविष्यवाणी :-"गोचरग्रहस्थिति के अनुसार २६ मई १९९९ ई. से पूर्व, राजनीतिक-परिस्थितियां कुछ इस प्रकार पेचीदा हो जाएंगी, कि सहयोगीदल (सत्तारूढ़दल का) साथ न देंगे, तब विपक्ष के प्रधाननेताओं की सत्तालिप्सा विभिन्न सिद्धान्तों वाली पार्टियों से भी तालमेल करके सत्ता हथियाने को आतुर रहेगी, जिनमें कांग्रेस प्रमुख होगी। यह खेल २८ अगस्त सन् १९९९ ई. तक चल सकता है।"

यह आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य उतरी है। श्रीमती सोनिया जी ने सत्ता कांग्रेस को प्राप्त करने की नीति से भाजपा सरकार को अविश्वास प्रस्ताव से गिराया। विभिन्न सिद्धांतों वाली पार्टियां भी १६ अप्रैल के बाद सत्तालिप्सा में कांग्रेस के साथ हो गईं, परन्तु सफलता हाथ न लगी। अन्ततः ५ सितम्बर को नए लोकसभा निर्वाचन कराने पड़े।

(११) १६ अप्रैल सन् १९९९ ई. को भाजपा सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित,- भारत में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन की भविष्यवाणी, पढ़ें - सं. २०५६ वि. में पृ. ३१, कॉलम १, पंक्ति २ के बाद -

भविष्यवाणी :- "गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के आरम्भ में ही संवत् का रक्षामंत्री (क्रूरग्रह मंगल) वक्र हो रहा है और गुरु (शुभग्रह) संवत् के शुरू में ही अतिचारी हो रहा है। संवत् के प्रारम्भ से ही शनि-मंगल का समसप्तकयोग २२ अगस्त तक चलेगा,- यह समय केन्द्रीय शासनसत्ता के सामने विशेष समस्याओं को लाकर खड़ा कर देगा और सरकार को १६ अप्रैल १९९९ ई. तक इन समस्याओं को सुलझाना कठिन हो जाएगा, भारत की राजनीति में अचिन्तित घटनाचक्र चलेगा। राजनीतिक पार्टियों में नएसमीकरण बनेंगे। तोड़-फोड़-जोड़ की नीती प्रबल होगीऔर सत्तारूढ़दल के घटक (सहायक) दल छिटकने लगेंगे, कोई आश्चर्य नहीं यदि इस अवधि में कोई विशेष राजनीतिक परिवर्तन हो जाए।"

भारत की जनता १६/१७ अप्रैल को भाजपा सरकार के गिर जाने से आवाक् रह गई। इस प्रकार भारत में एक विशेष राजनैतिक परिवर्तन आया। इस भविष्यवाणी की सफलता पर देश-विदेश से जिन महानुभावों एवं राजनीतिज्ञों ने प्रशंसापत्र भेजे हैं, हम उनके आभारी हैं।

(१२) सं. २०५६ वि. के पंचांग में पृ. ३१, कॉलम २, संदर्भ ३ में अगस्त से अक्तूबर तक राजनैतिकदलों में शक्तिपरीक्षण (निर्वाचन) की भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं -

भविष्यवाणी :- "२३ अगस्त को मंगल वृश्चिक राशि में आकर शनि-गुरु के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। अगस्त से अक्तूबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार केन्द्रीय शासन पुनः शक्तिपरीक्षण की ओर बढ़ने लगेगा, राजनैतिक अस्थिरता अनुभव होगी और विभिन्न राजनैतिक दल निर्वाचनसंग्राम में कूदने का मन बना लेंगे।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार ५ सितम्बर को लोकसभा निर्वाचन की घोषणा कर दी गई और तदनुसार निर्वाचन हुए।

११-१२-९९ ई. को क्रोशिया के राष्ट्रपति का निधन, १२-१२-९९ ई. को रोमानिया का प्रीमियर अपदस्थ, १४-१२-९९ ई. को सूडान की पार्लियामेंट भंग, १९-१२-९९ ई. को इटली के प्रधानमंत्री का त्यागपत्र।

भविष्यवाणी :-"मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष ८ से २२ दिसम्बर के मध्य कुछ राष्ट्रों की शासनसत्ता में परिवर्तन हो।" (पढ़ें- सं. २०५६ वि. पृ. ११७),

(१३) २६ जुलाई (२००० ई.) को फिजी में सत्ता पलट, आन्तरिक हिंसा -

भविष्यवाणी :- " इसवर्ष सं. २०५७ वि. का राजा बुधग्रह अतिचारी होकर कुछ क्रूरग्रहों के साथ सम्बन्ध करेगा, संवत् का मंत्री भी मेषराशि में शनि-मंगल एवं आगे सारासाल अपने शत्रुग्रह शुक्र की राशि वृष में शनि के साथ ही मौजूद रहेगा, अतः बुध शुभ होकर भी विश्व के कुछराष्ट्रों को भयानक एवं अशान्तिप्रद निर्णय लेने को मजबूर करेगा, गुरुग्रह शत्रुक्षेत्र में क्रूरशनि के साथ होने से अपना दायित्व ठीक ढंग से नहीं निभा सकेगा।... कहीं आन्तरिक अशांति व क्रांति से सत्तापरिवर्तन होगा व कहीं सेना द्वारा सत्ता का हथियाना संभव है।" (पढ़ें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५६ वि., पृ. २२, कॉलम १)

(१४) १२-१०-९९ ई. को नवाज़शरीफ का तख्ता पलट-

भविष्यवाणी :-" पाकिस्तान में नवाज़शरीफ जी के खिलाफ बगावत होकर संवत् २०५७ वि. के प्रारम्भ से पूर्व ही सत्ता से च्युत हो जाने का योग है। आगे सिन्धप्रान्त में स्थिति विकट होती जायेगी, जो कि आन्तरिक क्रान्ति का रूप आगामी वर्षों में धारण करके पृथक् तंत्र की मांग करेगी। लोकतंत्र खतरे में पड़ेगा, सेना का अधिक दबदबा संभव है।" (पढ़ें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५७ वि., पृ. २४ कॉलम २)।

(१५) १४-०८-२००० ई. को रूसी पनडुब्बी समुद्र में डूबी, ११८ अधिकारी मरे, २३-०८-२००० ई. को गल्फ एअर लाईन्स का हवाई जहाज ध्वस्त। १-०८-२००० ई. को हि.प्र. में वर्षा व बादल फटने की घटना से १५० व्यक्ति मारे गए। महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश एवं गुजरात में भी जुलाई/अगस्त में बाढ़ से जन-धनहानि के समाचार प्रकाशित हुए हैं।

भविष्यवाणी :- "२२ जुलाई से सितम्बर के प्रथम सप्ताह के लगभग यानदुर्घटना किंवा भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के समाचार मिलेंगे।" (सं. २०५७ वि., पृ. २३, कॉलम २)।

(१६) भूतपूर्व यूनियन मिनिस्टर श्री राजेशपायलट की दुर्घटना में ११ जून २००० ई. को मृत्यु।

भविष्यवाणी :- "नववर्षप्रवेश कुण्डली में भारत की प्रभावराशि-मकर में केतु एवं प्रभावराशीश शनि-मंगल एवं गुरु के साथ अपनी नीचराशि मेष में स्थित है। नववर्षेश-कुण्डली 'कालसर्प योग' से प्रभावित है। दक्षिण में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। भारत के प्रतिष्ठित नेताओं को अपनी सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ कर लेना चाहिए, अन्यथा अकस्मात् दुर्घटना किंवा राजनैतिक दृष्टिकोण से जीवन को खतरा बनेगा।" - पढ़ें-(सं. २०५७, पृ. २५, कॉलम १)।

सब जानते हैं, कि श्री राजेश पायलट जी की Z प्लस सुरक्षा कुछ सप्ताह पूर्व ही उठाई गई थी। यदि सुरक्षा पंक्ति रहती तो इस दुर्घटना में बचने की संभावना थी।

(१७) आन्ध्रप्रदेश में अगस्त २००० ई. में बाढ़ से भारी विनाश हुआ एवं अगस्त में **'अमरनाथ यात्रा '** के समय उत्तराखण्ड के पर्वतीय भूभाग पर भूस्खलन-जलप्लाव से हानि भी हुई।

भविष्यवाणी :- " जून से अगस्त तक कहीं भयंकर बाढ़, उत्तराखण्ड व पर्वतीय भूभाग पर किंवा उत्तरी भारत में जलप्लाव से भयंकर जनधनहानि के संकेत मिलते हैं।" (सं. २०५७ वि., पृ. २७, कॉलम २)।

(१८) गतवर्ष अक्तूबर में लोकसभा निर्वाचन में राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा को सरकार बनाने का अवसर मिला।

भविष्यवाणी :- "निर्वाचनकालीन गोचरग्रहस्थिति के अनुसार 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा' सरकार बनाने की स्थिति में आ सकेगी।" (सं. २०५७ वि., पृ. २८, कॉलम १)।

(१९) काश्मीर में उग्रवादियों की गतिविधियां तीव्र -

भविष्यवाणी :- "यहां (काश्मीर में) स्थिति गंभीर बनेगी। पाक की कुनीति से सीमाप्रान्तों पर अशान्ति रहे। कुपवाड़ा, अनन्तनाग एवं श्रीनगर में उग्रवादियों की गतिविधियां तीव्र होंगी।" (सं.२०५७ वि., पृ. २८, कॉलम २)।

(२०) सं. २०५७ वि. के पंचांग में की गई भविष्यवाणियों के आकलन करने पर **२६ जनवरी २००१ ई. को गुजरात में आने वाले भूकम्प का उल्लेख** आश्चर्य चकित कर देने वाला था;-

भविष्यवाणी :- "१३ दिसम्बर को मंगल तुला में आकर २ फरवरी सन् २००१ ई. तक शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। उसके बाद ३ फरवरी से संवत् के अंत तक शनि-मंगल का समसप्तकयोग बना रहता है। यह ग्रहस्थिति विश्व में अघटित घटनाचक्र का आभास कराती है। किसी राष्ट्रविशेष में भूकम्प, जलप्लाव आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि होगी। " (देखें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५७ वि., पृ. २४, कालम १)।

भुज, अहमदाबाद आदि गुजरात के गांवों में भूकम्प से बहुमंजली बिल्डिंगें धाराशायी हो गईं, लाखों लोग बेघर हुए, लाखों कालकवलित हो गए। रुक-रुक कर फरवरी २००१ ई. तक भूकम्प के झटके आते रहे।

(२१) भाजपा की वरिष्ठ सदस्या 'श्रीमती विजयराजे सिन्धिया' के निधन से शोक व्याप्त-

भविष्यवाणी : - " माघकृष्ण चतुर्थी शनिवार की होने से ... किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।" - (*श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५७ वि., पृ. १३०, लोकभविष्य*)।

माघमास में १३ प्रविष्टे (२५ जनवरी २००१ ई.) को राजमाता जी के स्वर्गवास से सारे देश में शोक व्याप्त रहा।

(२२) 'तहलका धमाका' ने भारतीय शासनतन्त्र को हिला दिया।

भविष्यवाणी :- "स्वतंत्र भारत के ५४ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश मंगल की भाग्यस्थान में नीच स्थिति एवं व्ययेश शुक्र की कर्मस्थान में स्थिति, शनि-मंगल की चतुर्थभाव पर एक साथ दृष्टि भारत की केन्द्रीय शासनसत्ता को अजीब स्थिति में लाकर खड़ा कर देगी। जिससे हमारी धर्मनिरपेक्षता एवं सशक्त-शासनसत्ता को गहरी चोट पहुंचेगी।" - (संवत् २०५८ वि.)

उल्लिखित भविष्यवाणी के आधार पर जून में ही **'तहलका धमाका'** ने सशक्त शासनसत्ता को गहरी चोट पहुंचाई, परिणामस्वरूप **रक्षामन्त्री श्री जार्ज फर्नाण्डीज और भाजपा प्रधान श्रीलक्ष्मण जी को पदत्याग के लिए बाधित होना पड़ा।**

(२३) प्रधानमन्त्री 'श्री अटलबिहारी बाजपेयी जी' द्वारा इस्तीफे की पेशकश की :-

भविष्यवाणी :- " १० जून को मंगल वक्री पोजीशन में रहता हुआ फिर से वृश्चिकराशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना लेगा; २५ अगस्त तक यह योग अघटित-घटनाओं को जन्म देगा।.....यदि केन्द्रीय शासनसत्ता ने दूरदर्शिता किंवा कूटनीति से काम न लिया तो आगे हालात विघटक व कोई भी करवट ले सकते हैं। २४ दलों के आश्रित खड़ी इस सरकार के लिए यह समय अग्निपरीक्षा का ही होगा।" (सं.२०५८ वि.)

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने प्रधानमन्त्री पद से ICICI के शेयर घोटाले में मिथ्या ही कुछ सांसदों द्वारा नाम उछालने के कारण त्यागपत्र की पेशकश की, लेकिन केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की दूरदर्शिता एवं प्रधानमन्त्री जी की कूटनीति के परिणामस्वरूप स्थिति पुनः संभल गई; वस्तुतः यह समय सरकार के लिए अग्निपरीक्षा का ही था।

(२४) काश्मीर, आसाम, बिहार आदि में आतंकवादियों द्वारा विध्वंसक कारवाई सरकार के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बनी :-

भविष्यवाणी :- " पाक द्वारा पोषित आतंकवादियों को (इस संवत् २०५८ में) भारत को अपनी सशक्तता का भान कराने को मजबूर होना ही पड़ेगा। भारत की प्रभावराशि मकर का अतिक्रमण करके यूरेनस का कुम्भराशि में पदार्पण भारत के लिए आर्थिक दृष्टि से शुभ है। लेकिन राहु-मंगल का परस्पर समसप्तकयोग कुछ आन्तरिक समस्याओं को जन्म देगा। इस समय सीमा पार से घुसपैठियों, आतंकवादियों व विध्वंसक तत्त्वों से निपटने के लिए भारत की गुप्तचर व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखना होगा, अन्यथा राजस्थान के बाड़मेर-जैसलमेर क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर एवं बिहार के साथ ही केरल तथा पश्चिमी बंगाल में तथा काश्मीर, आसाम में शत्रुदेश की कुनीति से अनेक प्रकार के विस्फोट आदि से जनधनहानि सरकार के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बनेगी।" (देखें-श्रीमार्त्तण्डपंचांग , सं. २०५८ वि., पृ. २८, कॉलम २ , अन्तिम पहरा)।

ठीक इस भविष्यवाणी के मुताबिक पाक द्वारा पोषित तालिबानी उग्रवादियों का संहार करने एवं अपनी सशक्तता का भान कराने के लिए अन्ततः अमेरीका के साथ मिलकर सक्रिय पग उठाना ही पड़ा।

काश्मीर एवं सीमाप्रान्तों पर आतंक (उग्र) वादियों ने हजारों निरपराध लोगों की हत्या कर दी और कर रहे हैं; यह सब जानते ही हैं।

(२५) ताइवान में भूकम्प, फिलीपाइन के होटल में आग एवं उड़ीसा में बाढ़ :-

भविष्यवाणी :- " आषाढ़ चान्द्रमास में (७ जून से ५ जुलाई तक) पांच गुरुवार हैं, साथ ही १० जून को मंगल वक्री पोजीशन में (उल्टा चलता हुआ) फिर से वृश्चिकराशि में दाखिल होकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। २५ अगस्त तक इस योग का प्रभाव नेष्ट रहेगा। विश्व के कुछ राष्ट्रों में अघटित घटनाचक्र चलेगा। मुस्लिमराष्ट्रों एवं यूरोप के कुछ राष्ट्रों में कहीं आन्तरिक संघर्ष, भयंकरबाढ़, भूकम्प-प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर जनधनहानि के योग हैं। एशिया के कुछ देशों में भयंकर बाढ़ आदि से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। (देखें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग संवत् २०५८ वि., पृ. २५, कॉलम २, लाईन ४ से ६ तक)।

पाठक जानते हैं, कि ३१ अगस्त को ताइवान में भूकम्प, १६ अगस्त को फिलिपीन्स के होटल में आग एवं २० अगस्त को उड़ीसा में भारी बाढ़ से कितनी तबाही हुई है।

(२६) सांसद श्रीमती फूलन देवी का निधन :-

भविष्यवाणी :- "१० जून को मंगल वक्री पोजीशन में रहता हुआ, फिर से वृश्चिक-राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना लेगा। २५ अगस्त तक यह योग अघटित घटनाओं को जन्म देगा। अगस्त तक कहीं यान-दुर्घटना से हानि, किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की आकस्मिक हत्या व निधन से शोक व्याप्त होगा।"- (श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि., पृ. २६, कॉलम १ पर पढ़ें)।

पाठक जानते हैं, कि - २६ जुलाई को किसी अज्ञात व्यक्ति ने भारतीय महिला **सांसद फूलन देवी** की नृशंस हत्या कर दी थी एवं सर्वत्र शोकमय वातावरण बन गया था।

(२७) भारत के प्रबुद्ध सांसद, कांग्रेस के वरिष्ठनेता, एवं ग्वालियर के राजा श्री माधवराव सिन्धिया का वायुयान दुर्घटना में निधन :-

भविष्यवाणी :- " २६ अगस्त को मंगल धनुराशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाता है। यह योग १७ अक्तूबर तक प्रभावी रहेगा। अगस्त-सितम्बर में यानदुर्घटना में जनधनहानि, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं किसी नेता का पद रिक्त होने का योग है।"

ठीक ३० सितम्बर २००१ ई.को वायुयान दुर्घटना में भारत के जनप्रियनेता श्रीमाधवरावसिंधिया के निधन के समाचार ने सभी राजनीतिज्ञों-नेताओं को एवं जनता को शोकसन्तप्त कर दिया।

इसी भविष्यवाणी के अनुसार ठीक २ सितम्बर को श्री लंका, रूस एवं हिन्दमहासागर-क्षेत्र में भूकम्प भी आया था :- इन सभी भविष्यवाणियों को पढ़कर, फलितज्योतिष पर जनता की आस्था सुदृढ़ हुई है।

(२८) " आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा अमेरिका पर 'विश्व का सबसे बड़ा हवाई हमला -विश्व स्तब्ध"

भविष्यवाणी :- "वर्षेश चन्द्र का शुक्र के साथ समभाव है, लेकिन वर्ष के मंत्री शुक्र का वर्षेश चन्द्र के साथ शत्रुभाव होने से संकेत मिलता है, विश्व के राष्ट्रसमुदाय में से किसी देश का कोई राजनीतिज्ञ अपनी हठधर्मिता एवं अविमृश्यकारिता से विश्व के किसी देश-विशेष की शान्ति को भंग करेगा, जिससे विश्व का घटनाचक्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। इसवर्ष मुस्लिम- समुदाय का कोई राष्ट्र अपनी कुनीति के कारण .... देशों में युद्ध का सूत्रपात करेगा; अपने उग्रवादी-समुदाय द्वारा मुस्लिमराष्ट्र प्रच्छन्नरूप से कुछ राष्ट्रों में वातावरण को अशांत करेंगे।"- (श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि. पृ., २४, कॉलम १, लाईन १२ से १८ तक); साथ ही श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि. के पृ. २४ पर और भी स्पष्ट किया गया था :-

"इसवर्ष गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के कुछ मुस्लिमराष्ट्रों में आन्तरिक क्रान्ति, अशांति एवं युद्ध की संभावना भी बनती है। जगत् लग्न कुण्डली में केन्द्र में क्रूरग्रह होने से मेष, वृष, मिथुन, कन्या, कुम्भ, मीन प्रभावराशि वाले देश विशेष प्राकृतिक प्रकोप एवं राजनैतिक घटनाक्रम किंवा हत्याकाण्ड, विस्फोट, ज्वालामुखी विस्फोट आदि की घटनाओं के लिए विशेष चर्चित रहेंगे। पाक, जापान, चीन, रूस, अफगानिस्तान, अमेरीका, कम्बोडिया, ईराक, इरान, साइप्रस, पोलैण्ड, आयरलैण्ड, नॉर्वे आदि राष्ट्रों में विशेष घटनाएं घटित होंगी।"

ठीक, उपरोक्त भविष्यवाणी के अनुसार अफगानिस्तानी लाडेन आदि उग्रवादियों के संकेत पर आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा विमानों से अमेरिका के **दो टावर (वल्ड ट्रेड सैंटर) एवं पैंटागन (सैनिक-मुख्यालय)** पर हमला कर देने से अरबों रुपए की सम्पत्ति का नाश एवं लगभग २५ हजार से भी अधिक व्यक्ति कालकवलित हो गए।

(२९) 'मुस्लिम-देश' - शीर्षक में पाकिस्तान आदि मुस्लिमराष्ट्रों की जो स्थिति ग्रहस्थिति के अनुसार लिखी थी, तदनुसार ही घटनाचक्र चल रहा है;-(पढ़ें- श्रीमार्त्तण्डपंचांग सं. २०५८ वि., पृ. २६, कॉलम २ पर) ।

भविष्यवाणी:- **"२६ अगस्त से १७ अक्तूबर तक मंगल-शनि का षडष्टकयोग एवं ४ अप्रैल २००२ ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति मुस्लिमराष्ट्रों के लिए विशेष भयावह प्रतीत होती है। ग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान में उदारवादी लोकतंत्र की स्थापना शीघ्र संभव नहीं है। पाकिस्तान सर्वाधिक असहिष्णु कट्टर-पन्थी, धर्मान्धदेश के रूप में जाना जाएगा। कट्टरपन्थी- मुल्लाओं से वर्तमान शासक स्वतः तंग आ जाएंगे, इसका दुष्परिणाम पाकिस्तान की आम जनता को भी भोगना होगा।। पाक की आर्थिक स्थिति बहुत ही चिन्तनीय हो जाएगी, जनता का आक्रोश सेना प्रमुख वर्तमान शासक के लिए गंभीर समस्या बन जाएगा। पाक स्वयं आतंकवाद की आग से झुलसने लगेगा। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान को १३ दिसम्बर २००१ ई. से २३ जून २००२ ई. तक भारी दुर्घटनाओं, राजनीतिक उलझनों एवं प्रशासनिक दिक्कतों का सामना**

करना पड़ेगा। इसके बाद यहां प्रशासनिक परिवर्तन होंगे। अफगानिस्तान ...... में आतंकवाद पनपेगा एवं पड़ौसी देशों के लिए भी संकट पैदा होगा।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पाठक स्वयं अनुभव कर रहे हैं, आगे भी उल्लिखित भविष्यवाणी के अनुसार ठीक इसी प्रकार घटित होता अनुभव हो रहा है।

संवत् २०५९ वि. के पंचांग में की गई अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की संक्षिप्त चर्चा नीचे की गई है:-

(१) '२७ मई को भारत-पाक में जंगी वातावरण बना, पाक की भारी तबाही २३० सैनिक हताहत' - (पंजाब केसरी- २८ मई)

(२) 'फ़िदायीन का कहर ३४ मरे ५७ घायल' - (पंजाब केसरी- १५ मई)

(३) 'अहमदाबाद में ४ बसों में विस्फोट'- - (पंजाब केसरी-३० मई)

उल्लिखित तीनों घटनाओं की सूचक **'श्रीमार्तण्डपंचांग'** की निम्नांकित पंक्तियां सं. २०५९ वि., कॉलम १, अन्तिम पंक्ति में पढ़ें-

" ४ मई २००२ को मंगल-बुध-शुक्र एवं शनि एक नक्षत्र में ही हैं। इस समय से एक मास के अन्दर भूकम्प, अग्निकाण्ड, बम्ब विस्फोट या युद्धमय वातावरण में भयंकर शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं:- सर्वज्ञ तो भगवान् ही हैं"

(४) 'रामजन्मभूमि शिलान्यास' की समस्या, धार्मिक असहिष्णुता किंवा विवादास्पद धार्मिकस्थलों पर निर्माण लोकतन्त्र के लिए चिन्ता का विषय बने।"

भविष्यवाणी- "समाधानार्थ शासन को कठोर पग उठाने पड़ें। सर्वधर्म सहिष्णुता ही धर्मनिरपेक्ष छवि को दृढ़ करेगी, लेकिन ग्रहस्थिति कुछ और संकेत देती है, जिससे अनेक समस्याएं सामने आएंगी। संवत् के प्रारम्भिक ३/४ मासों में किसी प्रान्त में धार्मिकस्थल विवाद का कारण बनेंगे, जिससे कुछ सम्प्रदायों में मतभेद होने से उपद्रवों की आशंका बनेगी। केन्द्रीय शासनतन्त्र से जुड़े गठबन्धन शिथिल होने लगेंगे, जिससे केन्द्रीय सरकार खतरे में आ जाएगी।" ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार संवत् २०५९ वि. के प्रारम्भिक मासों में अयोध्या में **'रामजन्मभूमि शिलान्यास'** की समस्या केन्द्र एवं प्रान्तीय सरकार के लिए चिन्ता का कारण बनी। अयोध्या सैनिक छावनी में परिवर्तित कर दिया गया, हिन्दु-मुस्लिम संप्रदायों में तनाव चिन्तनीय हो उठा था। केन्द्रीय सरकार के घटक दल सरकार के लिए परेशानी बन गए थे। इस भविष्यवाणी की सत्यता पर हजारों पत्र हमे उपलब्ध हुए हैं।

(५) 'उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त जी का आकस्मिक निधन'

भविष्यवाणी-" श्राव. कृष्ण. ६ को शनिवार होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन व पदत्याग से राजनैतिक उथल-पुथल हो।"- (पाक्षिक फलादेश- सं. २०५९ वि.-पृ. १४०)

इस भविष्यवाणी के अनुसार श्रावणकृष्ण पक्ष में ही २७ जुलाई को महामहिम श्री कृष्णकान्त जी के निधन से राष्ट्र में शोक व्याप्त हो गया।

(६) ' जम्मू की श्रमिक बस्ती पर उग्रवादी कहर, ३० मरे २० घायल, सेना ने मोर्चा संभाला' - (पंजाब केसरी - १५ जुलाई)

भविष्यवाणी :- " अगस्त-सितम्बर २००२ ई. एवं ७ जनवरी '०३ ई. से संवत् के अन्त तक का समय इस प्रान्त (जम्मू-काश्मीर) के लिए विशेष भयावह है।" - (सं. २०५९ वि., कालम २, 'जम्मू-काश्मीर' शीर्षक, पष्ठ ४८)

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार अगस्त से सितम्बर के मध्य जम्मू-काश्मीर में निर्वाचनों के मध्य भयंकर हत्याकाण्डों का सिलसला जारी है।

(७) 'बिहार मे भयंकर बाढ़ की स्थिति' एवं भारत के कुछ प्रान्त सूखा ग्रस्त रहें।

भविष्यवाणी:- " २६ जून से २२ जुलाई तक कहीं भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि होगी। इसवर्ष कहीं भारी सूखा पड़ने से भीषण अकाल की स्थिति भी बनेगी। २३ जुलाई को शनि मिथुनराशि में आकर... कृषकों के लिए कठिन परिस्थिति पैदा करेगा।"- (सं. २०५९ वि; कालम १, पृ. ४६)

जनता जानती है, अनेकत्र बाढ़ से जनधन-फसल की हानि हुई। किसानवर्ग परेशान रहा।

(८) 'राजधानी ऐक्सप्रैस दुर्घटना ग्रस्त'- ' वर्ष की भीषणतम दुर्घटना'- (पंजाब केसरी- १० सितं.)

भविष्यवाणी:-" शनि-शुक्र दोनों १०/११ अक्तूबर से २० नवम्बर तक एक साथ वक्री चलते रहते हैं। जुलाई से १४ नवम्बर तक सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य ही संचरण कर रहे हैं। इस प्रकार चल रहा 'कालसर्पयोग' राजनीतिज्ञों में वैमनस्य, पश्चिम भूभाग पर अशान्ति, यानदुर्घटना में भारी जनधनहानि के योग बनाएगा। "

ठीक ६ सितं. की रात्रि में हावड़ा से दिल्ली जा रही राजधानी एक्सप्रैस दुर्घटना ग्रस्त हो गई; १२५ मरे और २०० से अधिक घायल हुए। इन दिनों अमेरिका-ईराक में संघर्ष से पश्चिमी भूभाग अशान्त भी रहा।

इस प्रकार प्रतिवर्ष अनेकों आश्चर्यचकित कर देने वाली अव्यभिचरित भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय ७५ वर्षों से आपके इस लोकप्रिय पंचांग को प्राप्त होता आ रहा है। सभी सफल भविष्यवाणियों का उल्लेख/चर्चा स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं।

पाठको! श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिशशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् २०६० वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

" संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता । एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।"

ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रियाकलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रहनक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्णब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते- यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धांत है। ग्रहों की प्रभाव प्रक्रिया में ही विश्व का क्रियाकलाप अहर्निश चलता रहता है - **" ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छाया पतनानि च।"**

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों पर पड़ता है, इसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्य ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं होती हैं, उन्हें अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ देवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के अनुसार वि. सं. २०६० के घटनाचक्र के बारे में कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं ।

इसवर्ष (सं. २०६० वि.) की ग्रहपरिषद् में ६ पद (अधिकार) शुभ ग्रहों को एवं ४ पद अशुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। संवत् के वर्षेश बुध को सस्येश-नीरसेश एवं धनेश के पद भी उपलब्ध हैं। इस प्रकार बुध को चार पद प्राप्त होना वर्ष के लिए शुभ नहीं; क्योंकि बुध बालग्रह है एवं बालग्रह बुध का प्रधान सलाहकार मन्त्री चन्द्र स्त्रीग्रह होने से कमजोर है। प्रजा के कल्याण हेतु अनेक योजनाएं बनेंगी; सुधारात्मक योजनाओं को कार्यान्वित करना सहज संभव न होगा, क्योंकि धनेश बुध स्वयं सशक्त न होकर अन्याश्रित रहेगा। ध्यान देने योग्य बात तो यह है, कि - इसवर्ष की आकाशी कौंसिल के दस पद पांच ग्रहों में ही सिमट कर रह गए हैं। जिनमें से वर्षेश, धनेश ये दो महत्त्वपूर्ण पद एवं अन्य दो (सस्येश-नीरसेश) बुध को प्राप्त हैं। बुध के क्षेत्र (मिथुनराशि) में शनि का संचार वर्षभर चलेगा। अमेरिका, रूस, चीन, जापान, पाक, अफगानिस्तान, इजराइल में अघटित घटनाचक्र चलेगा। अमेरिका को कई गंभीर समस्याओं का सामना करना होगा। मुस्लिम राष्ट्रों में किसी विशिष्टव्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। सूर्य, जो कि इसवर्ष सेना का मालिक है जब मिथुनराशि में संचार करेगा या जब शनि-सूर्य का समसप्तक या दृष्टि-सम्बन्ध बनेगा उस समय विश्व की राजनीति में विशेष हलचल होगी। बमविस्फोट राजनीतिक-हत्याकाण्ड एवं कहीं घोर युद्ध का बिगुल बज जाएगा। विमानदुर्घटना या भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी होगी। इस अवधि में ईराक, ईरान, अफगानिस्तान,कुवैत एवं पाकिस्तान, अमेरिका आदि विशेष रूप से प्रभावित होंगे।

सं. २०६० वि. के चार स्तम्भों के अनुसार वर्ष में जलस्तम्भ ६३ प्रतिशत होने से कुछ भूभाग पर भयंकर बाढ़ आदि से जनधनहानि के समाचार मिलेंगे। अनाज, तृण, धान्यादि की फसल ठीक रहेगी।

जगत्लग्न कुण्डली के अनुसार घटनाचक्र

जगत्लग्न कुण्डली में गुरु-सूर्य उच्च हैं। अमेरिका, बर्तानिया एवं कुछ अन्य राष्ट्र मिलकर कुछ शस्त्र-भण्डारण एवं उग्रवादादि विषयों को लेकर छोटे मुस्लिम राष्ट्रों के साथ उलझने की चेष्टा करेंगे। लेकिन यह बड़े राष्ट्रों की मनोवृत्ति अन्ततः अहितकर सिद्ध होगी। किसी मुस्लिम-राष्ट्र विशेष में अचानक वरिष्ठ नेता (शासक) के अपदस्थ व मृत्यु से सत्तापरिवर्तन का योग इस वर्ष के मध्य में बनता है।

यह वर्ष 'दुर्मुख' नामक है। विश्व के किसी राष्ट्र में प्राकृतिक आपदा (ज्वालामुखी विस्फोट, भूकम्प, समुद्री तूफान आदि) से भारी जनधन की हानि होगी। पर्वती भूभाग इस घटना में विशेष प्रभावित होगा। भयंकर रोगों से जनता परेशान रहेगी। कार्तिक आदि चार मासों में कहीं भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति बने । सीमाप्रान्तों पर कुछ देश सैन्यसंघर्ष पर उतारू हों। विभिन्न विरोधीराष्ट्रों के अध्यक्षों में नीतिविरोध से वातावरण अशान्त एवं युद्धभय की स्थिति बने। 'दुर्मुख' नामक संवत् का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;-

"दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीति चौराकुला धरा।
महावैरा महीनाथा वीर-वारण-वाजिभिः।।"

संक्षेप - जगत्लग्न कुण्डली के अनुसार ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष एवं पौषमास विश्व के प्रधाननेताओं एवं समृद्धदेशों के लिए विशेष भयावह किंवा घटनापूर्ण सिद्ध होंगे।

संवत् २०६० वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व का घटनाचक्र

संवत् २०६० वि. का राजा बालग्रह बुध है एवं मन्त्री स्त्रीग्रह चन्द्र है। अतः विश्व में प्रधान देशों के नेता भी अविमृश्यकारिता से काम लेंगे जिससे विश्व के देशों की शान्तिभंग होगी। इस साल सेनापति सूर्य किसी प्रमुख देश के प्रधाननेता से युद्धप्रक्रिया को प्रेरित करके कुछ मुस्लिमराष्ट्रों में जनधनहानि का कारण बने। इसवर्ष ग्रह परिषद् में केवल बुध, चन्द्र एंव सूर्य- ये तीनों प्रमुख हैं। इनमें भी सूर्य अधिक प्रभावी है। यूरोपीय-राष्ट्रों का जन्मलग्न कन्या होने से लग्नेश बुध हुआ, जो कि संवत् का राजा भी है। चन्द्र वर्ष का मन्त्री होने से एड्स, कैंसर, रुधिर एवं हैपेटाइटस -विकृतिजन्य अनेक प्रकार के रोगों से जनता में परेशानी बनेगी।

गत संवत् में २३ फरवरी सन् २००३ से शनि-राहु एवं मंगल का षडष्टक चल रहा है। सन् २००३ के प्रांरभिक मास अमेरिका के लिए गंभीर समस्याएं लेकर आ रहे हैं। प्रधान नेतृत्व को अपनी सुरक्षा के विशेष प्रबन्ध रखने ही होंगे, विशेष नेताओं के जीवन को खतरा है। चीन में प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। विस्फोट, बाढ़, तूफान से इसवर्ष विशेष हानि के योग हैं।

७ अप्रैल को शनि मिथुनराशि में आ रहा है, जो कि कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि किंवा युद्धभय से वातावरण अशान्त करेगा। ईराक, ईरान, पाक एवं कुछ युद्धोन्माद से मत्त देश अपना वर्चस्व बढ़ाने की नीति रखेंगे।

ध्यान दें- गत ४ दिसम्बर २००२ से ३ अप्रैल तक बृहस्पति कर्कराशि में वक्रगति से चलता रहेगा। यह समय विश्व के प्रमुख देशों एवं कुछ मुस्लिमराष्ट्रों, राजनीतिज्ञों एवं राष्ट्राध्यक्षों के लिए भयावह है। इस अवधि में कहीं युद्धभय व्याप्त होगा, जनधनहानि हो। कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, बमविस्फोट

आदि से जनधनहानि का योग है।

११ अप्रैल को मंगल उच्चक्षेत्र (शनि की राशि) में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। इस अवधि में अजीबोगरीब राजनीतिक-ध्रुवीकरण नजर आएंगे। ईराक-इरान, कुवैत में मुस्लिम भावना काम करेंगी। तुर्की अमेरिका से पीछे हट जाएगा। लेकिन १६ अप्रैल को शुक्र के मीन में होने पर शनि की नजर होने से तुर्की में आन्तरिक उलझनें बढेंगी, कुर्द लोग बगावत करके शासनतन्त्र को खतरे में डाल देंगे। तुर्की एवं कजाकिस्तान के मध्य, मध्य एशिया के समृद्धतम क्षेत्र पर सभी देशों की नजर रहेगी और अमेरिका वहां अपना वर्चस्व कायम करने की ताक में रहेगा।

२६ अप्रैल को बुध, जो कि इसवर्ष का राजा भी है, वक्रगति से चलना शुरू करता है। बुध उच्चस्थ मित्रग्रह सूर्य के साथ है। इस समय किसी प्रभावी देश के विरुद्ध सोमालिया, चीन, फलिस्तीन एवं रूस के किसी एक वर्ग द्वारा विरोध की आवाज बुलन्द होगी। संभव है, कि इसवर्ष के पूर्वार्ध में फ्रांस, चीन रूस द्वारा अमेरिकी प्रस्ताव के विरुद्ध वीटो पावर का प्रयोग करना पड़ेगा। संवत्मध्य से पूर्व ही इसवर्ष फलिस्तीन में नेतृत्व परिवर्तन के लिए विभिन्न राजनैतिक-शक्तियां सक्रिय हो जाएंगी और अराफात जी का तख्ता पलट दिया जाए तो आश्चर्य नहीं। अराफात के जीवन को भी खतरा है। ग्रहगति का कुछ ऐसा ही संकेत है।

७ मई को बुध सूर्य के बिम्ब का भेदन कर सूर्य बिम्ब में से निकलता मालूम देगा। यह बुध-सूर्य भेदयुति कहीं राजनैतिक उलटफेर करेगी एवं कहीं युद्धमय वातावरण से हालात नाजुक होंगे।

मईमध्य में (१६ मई के लगभग) कहीं भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप व दुर्घटना में जानी माली नुक्सान किंवा किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। चान्द्रमास ज्येष्ठ में पांच शनिवार होने से कहीं अग्निकाण्ड, बमविस्फोट, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, पूर्वोत्तर के मध्यवर्ती देशों में कहीं भारी हानि के योग हैं।

३१ मई को शनैश्चरी अमावस वाले दिन (भारत के पश्चिमोत्तरी भाग में दृश्य) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण घटित होगा।** शनिवार को सूर्यग्रहण समुद्री तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट किंवा अन्यविध आपदाओं-बिमारियों से जनमानस के लिए परेशानी का कारण बने।

२ जून तक शनि-मंगल का षडष्टक बना रहेगा। राहु एवं मंगल का नवपंचम भी चल रहा है। इस अवधि में किसी विशेष मुद्दे को लेकर अमेरिका और इंगलैण्ड के संयुक्तराष्ट्र की अन्य महाशक्तियों के साथ मतभेद गहरा सकते हैं। इस समय फारस की खाड़ी में तनाव बढ़ेगा। अलकायदा-समर्थित-आंतकवाद दक्षिणपूर्व एशिया में जड़ें मजबूत करने को उद्यत रहेगा।

३ जून २००३ ई. को मंगल कुम्भराशि में आकर ४ दिसम्बर सन् २००३ ई. तक कुम्भराशि में ही रहेगा। ६ मास तक लगातार मंगल का कुम्भराशि में ही रहना एवं शनि के साथ षडष्टकयोग बनाए रखना अघटित घटनाचक्र को जन्म देगा। कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। किसी बहुचर्चित व्यक्ति का अकस्मात् निधन व कहीं सत्त-हस्तान्तरण से नाटकीय परिवर्तन होगा।

२६ जून को बुध मिथुन में आकार सूर्य एवं शनि के साथ मेल करेगा। बुध वर्षेश है, बुध अतिचारी हो गया है, साथ ही शनि भी अतिचारी है। पाकिस्तान से लगने वाली अफगानिस्तान की सीमा पर अलकायदा व तालिबान की गतिविधियां तेज हो जाएंगी। पाक समर्थित आई.एस.आई. गतिविधियां अफगानिस्तान में पुनः अशान्ति का कारण बनेंगी। अफगानिस्तान में अमरीकी सेना को अलकायदा-तालिबानी गतिविधियों से छद्मयुद्ध की सी स्थिति का सामना करना पड़ेगा। आतंकवाद आगे दक्षिण-पूर्व एशिया की तरफ मूंहबांए खड़ा रहेगा, सावधानी अभी से आवश्यक है। अमेरिका में मुस्लिमशक्ति बढ़ेगी; आगे अमरीकी निर्वाचनों में इस तथ्य का आभास होगा।

३० जुलाई को गुरु सिंहराशि में आकर सुभिक्षकारक है, वर्षा खूब होगी, फसलें अच्छी हों। ७ अगस्त को गुरु अस्त हो रहा है, कहीं राजनीतिक उलटफेर एवं कहीं बाढ़ आदि से हानि हो।

३१ जुलाई से १६ सितम्बर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार कहीं उपद्रव, बमविस्फोट एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के योग बनते हैं। जुलाई से सितम्बर के मध्य किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु हो व कहीं सत्ताहस्तान्तरण होगा। किसी यानदुर्घटना में वरिष्ठ व्यक्ति के निधन का समाचार भी मिलेगा।

अक्तूबर में चतुर्ग्रहीयोग एवं शनिवारी दीपावली व्यापारीवर्ग के लिए कठिन परिस्थिति की सूचना देती है। विश्वस्तर की आर्थिक एवं औद्योगिक-व्यवसायिक नीति का प्रभाव समस्त विश्व व्यापार पर होगा।

नवम्बर में कार्तिकी-पूर्णिमा वाले दिन चन्द्रग्रहण शनिवार को घटित हो रहा है। कहीं यान-दुर्घटना, भूचाल से हानि कहीं ज्वालामुखी विस्फोट, कहीं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से हानि का योग समझें। शनि-शुक्र का समसप्तकयोग किसी वरिष्ठ व्यक्ति के पदरिक्त होने का संकेत देता है।

५ दिसम्बर को मंगल मीनराशि में आकर २३ जनवरी सन् २००४ ई. तक शनि के साथ परस्पर दशम-चतुर्थ (विशेष दृष्टि) सम्बन्ध बनाए रखेगा। यह समय राजनीतिज्ञों के लिए नेष्ट एवं विश्व के विशिष्ट देशों एवं कुछ मुस्लिमदेशों के लिए नेष्ट है। किसी देश की सत्ता में परविर्तन एवं कहीं किसी नेता के अपदस्थ होने से सेना का दबदबा बने। राजनीतिक व्यक्तियों के लिए भयावह समय है। हत्याकाण्ड, यानदुर्घटनाएं हों। विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

२४ जनवरी को मंगल मेषराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। मंगल-राहु पर गुरु की विशेष दृष्टि होगी। कहीं अग्निकाण्ड से हानि, कहीं विस्फोट व यानदुर्घटना से जनधनहानि का समाचार मिले। लेकिन गुरु की दृष्टि होने से राजनीतिक संकट टलते मालूम देंगे।

यूरोप के देश

३१ दिसं. (सन् २००२ ई.) मध्यरात्रि २४ घं. ० मि.

यूरोपीय देशों की वर्ष कुण्डली नं. (१) में राहु-मंगल का षडष्टक, सूर्य-शनि का समसप्तकयोग है। राहु-शनि आदि यावन सम्प्रदाय के प्रतिनिधि ग्रहों की स्थिति से संकेत मिलता है, कि- यूरोप के कुछ देशों को अशान्ति, युद्ध किंवा आर्थिक उलझनों का लम्बे समय तक सामना करना पड़ेगा। इस वर्ष में यूरोप एवं मुस्लिमदेशों में कहीं हत्याकाण्ड, बम्बार्डमेण्ट, कहीं गृहयुद्ध से अशान्ति का वातावरण बनेगा।

गोचरग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष यूरोप के प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था भी कुछ चर्चा का विषय बनेगी। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष संवत् के आरम्भ से १८ मई तक, ४ जुलाई से २२ जुलाई तक, १६ अगस्त से ५ अक्तूबर तक, ७ जनवरी (सन् २००३ ई.) से २२ फरवरी (२००३ ई.) तक की ग्रहस्थिति एवं २३ फरवरी (२००३ ई.) से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का षडष्टकयोग यूरोपीय देशों के लिए अनेक अघटित घटनाओं को लेकर उपस्थित होगा। कहीं युद्ध विभीषिका से वातावरण क्षुब्ध हो । किसी मुस्लिमदेश विशेष की समस्या को लेकर कुछ यूरोपीय देशों में आपसी वैमत्य नजर आएगा। इस अवधि में कहीं प्रमुख नेता की हत्या के षडयन्त्र एवं हत्याकाण्डों से स्थिति नाजुक होगी; उपरोक्त समयावधियां यूरोप के कुछ देशों के लिए ऐतिहासिक घटनापूर्व रहेंगी।

३१ दिसं. (सन् २००३ ई.) मध्यरात्रि २४ घं. ० मि.

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (२) में शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ (परस्पर दृष्टि) सम्बन्ध यूरोपीय देशों के सामने जटिल समस्याओं को उपस्थित करेगा। कुछ बड़े देश सुरक्षापरिषद् में आपसी विरोधी विचारधारा के कारण **'वीटो'** अधिकार प्रयोग करने पर विवश होंगे। ईराक किंवा अन्य कुछ मुस्लिमराष्ट्रों के प्रति नीति-निर्धारण एक समस्या बनेगी। अन्ततः राहु-चन्द्र पर गुरु की दृष्टि किसी विशिष्ट किंवा अधिकृत संस्था के प्रतिनिध्य से समस्या-समाधान होकर शान्ति हो। इसवर्ष की ग्रहगति के अनुसार जटिल-युद्धात्मक समस्याओं के उपस्थित होने पर **मुस्लिम-लाबी** एवं यूरोप के राष्ट्र विपरीत विचारधारा वाले रहेंगे। इस प्रकार कुछ महाशक्तियों की विपरीत विचारधारा से एक अन्य ध्रुवीकरण बने, जिसके कुपरिणाम सन् २००५ के बाद सामने आएंगे। कुण्डली नं २ के अनुसार ब्रिटेन, स्कॉटलैण्ड जापान रूस आदि में भारी परिवर्तन संभावित हैं। कहीं सीमाओं में परिवर्तन-संवर्धन भी संभव हैं। यूरोप में किसी विशिष्ट प्रशासक किंवा विशिष्ट गण्यमान्य व्यक्तिविशेष की मृत्यु व हत्या से शोक व्याप्त होने का योग है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश की यथालब्ध कुण्डली के अनुसार शनि में राहु का अवान्तर विशेष चिन्ताजनक है। क्योंकि शनि **मारकेश** होकर लग्नस्थ है एवं शनि लग्न में अपने मित्र शुक्र-बुध के साथ है। स्पष्ट है, कि- सुरक्षा प्रबन्ध बेहतरीन होने पर भी शत्रुजन्य भय बना रहेगा। सन् २००३ ई. का समय किसी भी खतरे का संकेत देता है। सुरक्षाप्रबन्ध और दृढ़ करने होंगे। लग्नस्थ शनि की दशमभाव (कर्मस्थान) पर नीचदृष्टि होने से, मारकेश (द्वितीयेश) के व्ययस्थान में एवं **मारकस्थान** में दशमेश मंगल की स्थिति जार्ज बुश के कार्यकाल में किसी ऐतिहासिक घटना का संकेत देती है। देश की प्रतिष्ठा दांव पर लग जाने से नीति में बदलाव हो या कोई गलत पग उठ जाने से आगामी समय में देश की प्रतिष्ठा में कमी हो।

मुस्लिम देश

१ मुहर्रम से एक दिन पूर्व (चन्द्रदर्शन के दिन) ५ मार्च सन् २००३ ई. दिन मंगलवार को सूर्यास्त के समय १८ घं.१६ मि. पर सिंहलग्न में इसवर्ष मुस्लिम नववर्ष का उदय हुआ है।

क्योंकि ५ मार्च बुधवार को १ मुहर्रम हिजरी सन् १४२४ की शुरुआत है। हिजरी सन् का बादशाह बुध है। मुस्लिम वर्षकुण्डली में लग्नेश -सूर्य शत्रुक्षेत्र में **सप्तमस्थ** है। संकेत मिलता है, कि समृद्ध-शक्तिशाली देशों की नीति अपना वर्चस्व स्थापित करने की रहेगी। क्योंकि वृषराशिस्थ-शनि की सूर्य एवं कन्याराशि के स्वामी बुध पर विशेष दृष्टि है। सूर्य शनि परमशत्रु ग्रह हैं। वृषनामराशि वाले मुस्लिम-राष्ट्र ईराक-ईरान एवं कन्यानामराशि वाले पाकिस्तान आदि राष्ट्रों के लिए यह वर्ष विशेष कठिन प्रतीत होता है। इससे पहले शनि मिथुनराशि में भी रहा है, अब फिर से ७ अप्रैल को मिथुनराशि में आकर मिथुनराशि-प्रधान मुस्लिमराष्ट्रों के लिए भयावह स्थिति बनाएगा। मुस्लिमराष्ट्रों के किसी प्रतिष्ठित देश के प्रधान-नायक के अकस्मात् अपदस्थ किंवा मृत्यु का समाचार मिलेगा। पाकिस्तान में संसदीय चुनाव ढकोसलामात्र (प्रदर्शनमात्र) होंगे। आतंकवादी भस्मासुर पाक में ही बगावत का कारण बनेगा। हथियारबन्द विद्रोहियों का सामना करना यहां के शासक के लिए मुश्किल हो जाएगा। प्रधाननेता को पदत्याग करने को विवश होना पड़ेगा। राजनीतिक-हत्याकाण्ड होंगे एवं सेना शासन में सक्रिय रहेगी। अफगानिस्तान के कुछ भाग में पुनः अशान्ति पनपेगी। इसवर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार मुस्लिम-राष्ट्रों धर्म के नाम पर एकता बढ़ने के आसार हैं।

सं. २०६० वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का सर्वेक्षण

नववर्ष प्रवेश कुण्डली	स्वतन्त्र भारत की कुण्डली	स्वतन्त्र भारत का ५६ वां वर्ष	स्वतन्त्र भारत का ५७ वां वर्ष	भारत का ५४ वां गणतन्त्र वर्ष
१०; ८ के.; ११ शु.; ९ मं.; ७; १२ चं. सू.; ६; बु.; १; ३; ५; श. २ रा.; ४ गु.	३ मं.; १; सू.बु.श. शु.चं.४; रा. २; १२; ५; ११; ६; ८ के.; १०; ७ गु.; ९	सू. गु. मं. ४; २ रा.; ५ बु.; ३ श.; १; ६ शु.; १२; ७ चं.; ९ मुं.; ११; ८ के.; १०	७; बु. ५ गु.; ८ के.; ६; ४ सू. शु.; ९; श. ३; १० मुं.; १२ चं.; २ रा.; मं. ११; १	चं. मं. के. शु.; ६; बु. ८; ९; ७; ५ मुं.; १० सू.; ४ गु.; ११; १; ३; १२; श. २ रा.
२ अप्रै. २००३ ई.(० घं. ४६ मि.)	१५ अग. १९४७. (मध्यरात्रि ०/०)	१५ अग. २००२ ई. (२ घं. २४ मि. रात्रि)	१५ अग. २००३ ई.	२६ जन. २००३ ई.(० घं. ३६ मि.रात्रि)

संवत् २०५९ वि. के अन्तिम मासों पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि - भाजपा गठबंधन सरकार अनेक कठिनाईओं के बावजूद भी अपना कार्यकाल पूरे करने की ओर अग्रेसर रहेगी।

१/२ अप्रैल सन् २००३ ई. को मध्यरात्रि के बाद २४ घं. ४६ मि. पर नववर्ष का उदय हो रहा है। इस समय **धनुलग्नस्थ** मंगल-उच्च गुरु को देख रहा है। मंगल भी उच्चाकांक्षी है। पूर्व में जनजीवन सुखमय रहे। मध्यभारत में कहीं भारी वर्षा से हानि हो, सार्वजनिक तौर पर सुभिक्ष रहे। दक्षिण में सुख लेकिन पशुओं में रोगभय से परेशानी बने।

नववर्ष-प्रवेश कुण्डली में लग्नेश गुरु अष्टमभाव में उच्च है। उच्च-गुरु की सुख स्थानस्थ सूर्य-चन्द्र एवं बुध पर विशेष दृष्टि है। सूर्य-बुध नवमेश एवं दशमेश हैं। प्रधानशासक की गरिमा-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अन्तर्राष्ट्रीय-दृष्टि से प्रधान-नेतृत्व के सम्मानित होने के योग से देश का सम्मान बढ़ेगा। सरकार की गिरी हुई साख में सुधार होगा। देश उन्नत देशों की कोटि में पदार्पण करने को प्रगतिपथ पर रहेगा। वैशाख, श्रावण आश्विन एवं चैत्रमास भारत एवं भारत सरकार के वरिष्ठ सदस्यों के लिए कुछ कठिन प्रतीत होते हैं। किसी वरिष्ठव्यक्ति के दुर्घटनाग्रस्त किंवा निधन से शोक व्याप्त हो।

इस वर्ष का राजा बालग्रह बुध है एवं **मन्त्री स्त्रीग्रह चन्द्र** होने से संकेत मिलता है, कि- आर्थिक संकट की स्थिति में समृद्धिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करना संभव न होगा। शासनतन्त्र विदेशी ऋण का भार अनुभव करेगा। भ्रष्टाचार बढ़ेगा, विकृत राजनीति के दांवपेचों का प्रयोग विभिन्नदल करते रहेंगे। बाल नेता बुध स्वस्थ-राजनीतिक-आचार-संहिता का पालन नहीं करा पायगा। [illegible]

राजनीति में ऐसे व्यक्तियों का प्रवेश अधिक होगा, जिनकी पृष्ठभूमि गर्हित है एवं अपनी आपराधिक-छविमय से पदप्राप्ति करके राजनीति में निश्शंक पदाधिकारी वन वैठेंगे। क्योंकि इसवर्ष के राजा-मन्त्री दोनों प्रभावशाली ग्रह नहीं हैं।

इसवर्ष मेघेश-फलेश एवं दुर्गेश ये तीन पद एकमात्र सूर्य को प्राप्त हैं। सूर्य क्रूरग्रह है। अतः वर्षा समय पर न हो, फसलों को हानि पहुंचे। सूर्य प्रतापी ग्रह होने से शक्ति-सम्पन्न अमेरिका-ब्रिटेन आदि सूर्यपुत्र किंवा सूर्य के शत्रुग्रह शनि से प्रभावित-मुस्लिमराष्ट्रों पर अपनी सैन्यशक्ति का प्रयोग करने में न चूकेंगे। संघर्षपरक स्थिति बनी रहेगी।

धान्येश मंगल कृषि प्रधान वर्ग के लिए समस्याएं खड़ा करेगा। मंहगाई बढ़ेगी। किसानों को उचित दाम न मिलने से परेशानी बढ़ेगी, जिससे प्रान्तीय/क्षेत्रीय सरकारों को भी परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

स्वन्तन्त्र-भारत के जन्माङ्ग में तृतीय भावस्थ पंचग्रही योग भारतीय-परम्परागत विश्वशान्ति के मिशन को सर्वोच्च समझता हुआ अपनी प्रगति एवं आत्मनिर्भरता की ओर अग्रेसर रहेगा। उच्च का गुरु इस देश की सीमाओं पर शान्ति को भंग करने वाले **प्रछन्नयुद्ध** का संचालन करने वाले देश के लिए भारी प्रहार सिद्ध होगा। आगामी वर्षों में भारत को आंतकवाद के दलनार्थ स्वयं निपटना होगा। दोहरी नीति सम्पन्न अमेरिका आदि देश भारत के सीमाप्रान्तीय सैन्यसंघर्ष, काश्मीर आदि में प्रचारित आतंकवाद को समाप्त करने में विशेष सक्रिय भूमिका न निभायेंगें। आगामी [illegible] वर्षों में भारत महान राष्ट्र के रूप में उदित होगा। यद्यपि शनि की व्ययस्थान पर नीचदृष्टि एवं

व्ययेश मंगल की धनस्थान में स्थिति औद्यौगिक एवं आर्थिक सम्पन्नता में बाधाएं उपस्थित करेगी; लेकिन समर्थ नेतृत्व नानाविध नई योजनाओं से सभी समस्याओं का समाधान ढूंढ लेंगे। स्वतन्त्रभारत के जन्माङ्ग में **'कालसर्प योग'** है अतः देश का प्रगतिपथ प्रशस्त करने के लिए समर्थ-नेतृत्व एवं सभी पार्टियों की देशभक्ति-परक भावना जरूरी है।

स्वतन्त्र भारत के ५६ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नस्थ शनि भाग्येश होकर कर्मस्थान को एवं कर्मेश गुरु भी द्वितीयस्थान में उच्च का होकर कर्मस्थान को देख रहा है;- यह ग्रहस्थिति प्रधान राजनीतिज्ञों की प्रतिष्ठा एवं कर्मक्षेत्र में पूर्णस्थायीत्व प्रदान करती है। ५६ वें वर्ष की राजनीति, पिछड़े वर्ग के विकास, औद्यौगिक प्रगति, विश्व-व्यापारजन्य कुप्रभावों का अपाकरण आदि जनहितार्थ उपायों से पुनः चेतना प्राप्त कराएगी। **विकृत-राजनीतिक दाव-पेचों को व्यवस्थित करने के लिए स्वस्थ आचारसंहिता बनाने के लिए केन्द्र को आगामी निर्वाचन के लिए सचेष्ट हो जाना पड़ेगा।** वर्षलग्न में मुंथेश गुरु उच्च है, लेकिन नीच मंगल एवं सूर्य की सन्निधि में होने से सत्तारूढ़ केन्द्रीय शासकों की आलोचना का कारण कोई प्रमुख विषय बनेगा, जिससे उन्हें आगे सत्ता में आ पाना सन्दिग्ध मालूम देगा।

स्वतन्त्र भारत के ५७ वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश बुध (जो कि २०६० वि. का राजा भी है) व्ययस्थान में बृहस्पति के सन्निकर्ष में है। बुध पर मंगल एवं शनि की दृष्टि भी है। भारत को आजाद हुए ५६ वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन ग्रहगति के अनुसार भ्रष्टाचार एवं दूषित कार्यसंस्कृति (Work culture) ने भारत की विशाल जनसंख्या को ग्रसित कर रखा है। सरकारी तन्त्र में भ्रष्टाचार इस प्रकार व्याप्त है मानो यह भारतीय जीवन का अंग बन गया हो- उल्लिखित ग्रहस्थिति इस वातावरण का अभी अपवाद नहीं है। ५७ वें वर्ष के कर्मस्थान में शनि जो कि मुंथेश है- प्रगति के लिए नए कायदे-कानून बनाने की प्रेरणा देगा। एतदर्थ सर्वोच्च सत्ता सम्पन्न- वरिष्ठ व्यक्ति को कठोर पग उठाने होंगे, निर्वाचन संग्राम में केवल योग्य निरपराधवृत्ति के ही लोगों को प्राथमिकता मिले तभी देश का कल्याण होगा। देश में औद्यौगिक-प्रगति विशेष होगी। तृतीयेश एवं अष्टमेश मंगल पर गुरु की दृष्टि शुभ है, शत्रुदेश सैन्य की संघर्ष की स्थिति में मुंह की खाएंगे।

भारत का ५४ वां गणतन्त्र वर्ष - २६ जनवरी सन् २००३ ई. को भारत ५४ वें गणतन्त्रवर्ष में प्रवेश करेगा। वर्षकुण्डली में मुंथेश सूर्य शत्रुक्षेत्र में है। राष्ट्रीय सुख-समृद्धि एवं योजनास्थान का स्वामी शनि अष्टमभाव में राहु के साथ मंगल-केतु-शुक्र एवं नीच चन्द्र से दृष्ट है। ग्रहस्थिति राजनीतिक-समाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से कुछ चिन्तनीय चित्र प्रस्तुत कर रही है । लेकिन धनस्थान पर उच्च गुरु की दृष्टि भारत की अस्मिता एवं सम्मान को कठिन परिस्थिति में भी ठीक रखेगी। ग्रहस्थिति संकेत देती है, कि हमारा केन्द्रीय-नेतृत्व साम्प्रदायिक गतिविधियों से होने वाले जघन्य अपराधों, बम्बविस्फोट आदि काण्डों से परेशान रहेगा। कुछ प्रान्तीय किंवा राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टियां साम्प्रदायिकता, जातिवाद को तूल देकर गणतन्त्र की छवि को धूमिल करेंगी। धार्मिक असहिष्णुता किंवा विवादास्पद धार्मिक स्थलों पर निर्माण लोकतन्त्र के लिए चिन्ता का विषय बने,- समाधानार्थ शासन को कठोर पग उठाने पड़ें।

भारतीय गणतन्त्र के प्रधान (राष्ट्रपति) महामहिम श्री अब्दुल कलाम महाभाग ने २५ जुलाई सन् २००२ ई. को दिन में लगभग १० घं.३० मि. पर देहली में राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की। इस समय की ग्रहस्थिति इस प्रकार थी,-

राष्ट्रपति जी की शपथकालीन कुण्डली

७ | ५ शु. | ४मं. | ८ के. | ६ | बु. सू. गु. | ६ | ३ श. | १० चं. | १२ | २ रा. | ११ | १

शपथकालीन कुण्डली में बृहस्पति उच्च होकर योजनास्थानस्थ चन्द्र को देख रहा है, चन्द्र आयेश होकर आयस्थान को देख रहा है। भारत में नई-नई प्रगतिप्रद योजनाओं का निर्माण होगा। भारत की शिक्षापद्धति को नई दिशा मिले। भारत के सामाजिक एवं शैक्षणिकस्तर को ऊंचा उठाने के लिए भरसक प्रयास होंगे। तृतीयेश-मंगल नीच हैं एवं कर्मस्थान में शनि राजनीतिक सुधारों के लिए किए गए प्रयासों में गतिरोध पैदा करे। गोचरग्रहस्थिति के अनुसार राष्ट्रपति पद की गरिमा बढ़ेगी एवं अपने कार्यकाल में श्री कलाम को श्रेय एवं यश मिलेगा।

उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत के यथालब्ध जन्माङ्ग के अनुसार शनि भाग्येश-कर्मेश है, गुरु अष्टमेश एवं आयेश होकर सप्तम भाव में है। इस समय गुरु की महादशा में शनि का अन्तर लगभग प्रथम सप्ताह दिसम्बर २००३ तक चलेगा। १२ अगस्त २००२ को उच्चगुरु की भाग्यस्थान पर दृष्टि के परिणामस्वरूप उपराष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। आगे २७ सितम्बर २००५ के बाद इनकी ग्रहस्थिति विशेषरूप से **प्रगत्याधायक** है। २००६ सितम्बर के लगभग इन्हें भारत का सर्वोच्चपद प्राप्त होने का योग है। शारीरिक स्वास्थ्य रक्षार्थ इन्हें सूर्यदेव की उपासना एवं माणिक्य धारण करना शुभ रहेगा।

संवत् २०६० वि. की गोचरग्रहस्थिति के अनुसार भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी ग्रह शनि ७ अप्रैल को पुनः मिथुनराशि में आ रहा है। प्रभावराशि से छठे भाव में शनि विरोधी किंवा शत्रु

देश की नेष्ट गतिविधि को विफल करने वाला है। इस समय **११ अप्रैल के लगभग से** गुरु-मंगल दोनों अपनी उच्च-राशि में हैं। बृहस्पति लगभग ३ मास (४ दिसम्बर २००२ ई.) से वक्री पोजीशन में था, जो कि ४ अप्रैल को मार्गी हो जाता है। विश्व की, विशेषतः मुस्लिम-राष्ट्रों की विक्षुब्ध राजनीति से कुछ राहत मिलेगी। लेकिन मिथुनराशि का शनि एवं शनि-मंगल का षडष्टक कहीं किसी सीमाप्रान्त पर आतंकवादजन्य **छद्मयुद्ध** से वातावरण अशान्त रखता है।

" कन्यायां-मिथुने-मीने-वृषे-धनुषि वा स्थितः। शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्।।"

शनि-मंगल के षडष्टक के साथ राहु-मंगल का दशम-चतुर्थ सम्बन्ध २ जून तक चलेगा। संवेदनशील क्षेत्रों (आसाम, त्रिपुरा, आदि) में तथा अशान्त सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को तैनात करना ही पड़ेगा, कड़ी सुरक्षा व्यवस्था जारी रखनी अनिवार्य होगी, राजनीतिक दलों किंवा संगठनों को देशहित को प्रमुख रखते हुए भारतीय अस्मिता की रक्षा हेतु **एकस्वर** कर लेना ही उपाय है, अन्यथा आतंकवाद का मनोबल प्रबल होता जाएगा।

इसी बीच ७ मई को **'बुध-रविभेष-युति'** राजनीतिक पार्टियों में अनेकता की सूचना देती है। पूर्वी एवं पश्चिमी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। आतंकवाद से काश्मीर की स्थिति बदतर होती जाएगी। १६ मई के लगभग यान-दुर्घटना, विस्फोट व भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि का योग है।

३१ मई को शनैश्चरी अमावस वाले दिन **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** घटित होगा। वरिष्ठ व्यक्तियों के लिए समय कठिन रहेगा। शनिवारी सूर्यग्रहण एवं ज्येष्ठ चान्द्रमास में ५ शनिवारों का होना इस मास में कहीं अग्निकाण्ड से हानि, कहीं मुस्लिमदेश में शासनसत्ता में परिवर्तन का संकेत देता है :-

" शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।"

पर्वोत्तर के मध्यवर्ती (ईशान) देशों में कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप एवं **राजनायिक** हत्याकाण्ड से अशान्ति रहे। ३ जून को मंगल कुम्भराशि में आकर ६ मास आगे तक अर्थात् ४ दिसम्बर २००३ ई. तक कुम्भराशि में ही चलेगा। शनि-मंगल का यह नवपंचम सम्बन्ध इस अवधि में अनेकविध अघटित घटनाचक्र को जन्म देगा। पूर्वोत्तरक्षेत्र में केन्द्र का विशेष ध्यान न होने से आसाम-त्रिपुरा आदि की स्थिति भंयकररूप धारण करेगी। बोडो समस्या को भारतविरोधी तत्व बल देंगे। बोडोलैण्ड का नारा उभरकर संघर्षमयस्थिति बनेगी। भारतविरोधी शक्तियां नागालैण्ड बोडोलैण्ड आदि का नारा देकर देश को कमजोर करने की ताक में रहेंगी। केन्द्र को ज्योतिषदृष्ट्या हम सावधान कर देना उचित समझते है। आसाम-त्रिपुरा भयंकररूप से अशान्तक्षेत्र घोषित करने होंगे। यहां हिंसक घटनाओं में तेजी होने का अंदेशा है, विखण्डित कर देने की विदेशीय तत्त्वों की नीति पर अगर ध्यान न दिया गया तो इसके परिणाम घातक व दूरगामी होंगे।

३ जून से ४ दिसम्बर के मध्य अनेकत्र सीमाप्रान्तीय भारत में बमविस्फोट, घुसपैंठ, भूकम्प, यान-दुर्घटना से हानि आदि की वारदात होगी। वरिष्ठ कुछ केन्द्रीय नेताओं के जीवन को भी इन दिनों खतरा है; सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा, अन्यथा अवकृत घात से हानि संभव है।

१५ जून से १५ जुलाई तक सूर्य-शनि का एक साथ रहना प्रतिष्ठित नेताओं के लिए भयंकर समस्याओं को लेकर उपस्थित होगा। इस आषाढ़मास (१५ जून से १५ जुलाई तक) किंवा आगे २६ जुलाई तक के समय में शनि अतिचारी रहता है; बीच में बुध भी अतिचारी हो जाता है। यह समय राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का पदस्कि वा निधन हो। सीमाप्रान्तों पर सेना को **सन्नद्ध** रहना होगा। नेपाल में माओवादियों व आई.एस.आई. के बढ़ते सहयोग से भारत के सीमाप्रान्त प्रभावित होंगे। उधर चीन, बंगलादेश, पाकिस्तान की गतिविधि पर भी ध्यान रखना पड़ेगा। पाक-चीन एवं बंगलादेश का गठजोड़ पूर्वोत्तर भारत में विद्रोही गतिविधियों को बल देगा। इसवर्ष की गोचरग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान व कुछ अन्य मुस्लिम अरबदेश पूर्वोत्तरी भारत में **इस्लामीकरण** की मनोवृत्ति को प्रेरित करके यहां **उपद्रव** करा सकते हैं;- केन्द्र को असम-त्रिपुरा की तरफ विशेष ध्यान देना होगा। असम, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा आदि बंगलादेशी बहुल प्रदेश पश्चिमोत्तरी बंगाल एवं विहार के सीमावर्ती इलाकों में वातावरण अशान्त हो जाने के योग हैं।

२६ जुलाई को मंगल वक्री होकर २७ सितम्बर तक वक्री ही चलेगा। ३० जुलाई को गुरु मघा नक्षत्र एवं सिंहराशि में प्रवेश करके शनि एवं मंगल की दृष्टि में आ जाता है। सिंहस्थ गुरु का फल इस प्रकार लिखा है :-

" मलेच्छदेशे महायुद्धं छत्रभंगश्च विड्वरम्।
उद्वसः क्रियते लोकाः पश्चिमोत्तर-वायुषु।।"

कुछ मुस्लिम-राष्ट्रों में कहीं भयंकरयुद्ध के समाचार मिलेंगे, कहीं राजनीतिक हत्याकाण्ड, किंवां सत्ता हस्तान्तरण, अराजकता हो। कहीं वायुवेग से किंवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से जनता स्थानान्तरण के लिए विवश हो। १७ अगस्त को शुक्र सिंहराशि में आकर गुरु के साथ राशिसम्बन्ध बना लेगा। यह योग भी विरोधीराष्ट्रों किंवा सीमाप्रान्तों पर अशान्त-युद्धमय वातावरण का संकेत देता है-

" गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।।"

५ सितम्बर को राहु मेष में संचार करने लगेगा । सीमावर्ती जम्मू-काश्मीर समस्या पर विशेष ध्यान देना होगा अन्यथा जम्मूक्षेत्रीय लोगों की हताशा निराशा विकटरूप ले ले तो कोई आश्चर्य नहीं। जम्मू- लद्दाख को इस वर्ष केन्द्रीय प्रणाली में लाने का प्रस्ताव भी सामने आएगा।

सितम्बर मास में यानदुर्घटना, किसी व्यक्तिविशेष के निधन से शोक व्याप्त होगा। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का सामाचार मिलेगा।

३ अक्तूबर को बुध कन्या में आएगा। ४ अक्तूबर को शुक्र तुला में आकर ६ अक्तूबर को उदय होगा। १७ अक्तूबर को सूर्य भी अपनी नीचराशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समयावधि में नए-नए सरकारी घोटाले प्रकाश में आएंगे। कुछ वरिष्ठ व्यक्ति समस्याओं में घिरेंगे।

२५ अक्तूबर को शनि वक्री हो जाता है और शनिवारी अमावस वाले दिन दीपावली पर्व वरिष्ठ नेताओं के लिए कष्टप्रद है- **"शनि-भौमयुतौ वापि सर्वलोक-भयप्रदौ"**। अक्तूबर-मध्य के बाद नवम्बर के प्रथम

सप्ताह तक कहीं यानदुर्घटना से, कहीं सीमाप्रान्तों पर बमविस्फोट आदि से जनधनहानि हो। कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो। किसी प्रतिष्ठित नेता के निधन से शोक व्याप्त होगा।

८/९ नवम्बर को **ग्रस्तास्त खग्रासचन्द्रग्रहण** शनिवार को मेष राशि में घटित होगा। कार्तिक मास में चीन-जापान, अफगानिस्तान एवं भारत के उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में प्राकृतिक आपदा भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट किंवा अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से भंयकर जनधनहानि का संकेत मिलता है:-

"यदा कार्तिक-मासे तु ग्रहणं सूर्य-चन्द्रयोः। निर्घातो भूमिकम्पश्च तारकापतनं तथा।।

उल्कापातो रजः पातो ह्यनभ्रे जलवर्षणम् एते चान्ये तथोत्पाता प्रभवन्ति पुरोदिताः।।"

१६ नवम्बर को वृश्चिक-संक्रान्ति रविवारी है एवं अमावस भी रविवारी होने से खप्पर योग बन रहा है। इसवर्ष आर्थिक मोर्चे पर देश कठिनाइयों में से गुजरेगा। सरकार पूरी तरह विदेशी एजेंसियों पर निर्भर मालूम देगी। परिणाम दूरगामी दुःखद ही होंगे। अर्थव्यवस्था की धीमी विकासदर तथा बढ़ रही बेरोजगारी भारतीय राजनीतिक दलों-संगठनों तथा नेताओं को आर्थिक सुधारों के बारे में अपने आत्मनिर्भरतापरक पुराने प्रोग्रामों के बारे में सोचने को बाध्य कर देंगे। स्वदेशी स्वावलम्बन की नीति को पुनः लागू करना ही होगा। अथवा श्रम-कानूनों और अपने अधिकारों में कटौती किंवा बेरोजगारी को लेकर मजदूरवर्ग एवं किसानों को सरकार संघर्ष से रोक नहीं सकेगी। खप्परयोग कुछ इसी प्रकार का संकेत देता है।

५ दिसम्बर को मंगल मीन में आकर शनि को विशेष दृष्टि से देखेगा एवं शनि की मंगल पर दशम (विशेष) दृष्टि होगी। २३ जनवरी २००४ ई. तक यह ग्रहस्थिति कठिन राजनीतिक परिस्थिति का संकेत देती है। इस समय शत्रुदेशों की गतिविधि को विशेष ध्यान में रखना होगा। सीमाप्रान्तों पर चीन, पाकिस्तान, लद्दाख , कश्मीर आदि में अशान्ति का कारण बन सकता है। भारत को अमेरिका एवं उसके साथी देशों पर विशेष विश्वास नहीं करना चाहिए। पाक के साथ तो अमेरिका के विशेष हित जुड़े हुए हैं। अतः वह पाक को आर्थिक एवं सामरिक सहायता प्रछन्नरूप से देता ही रहेगा। भारत को अपनी सीमाओं पर हमेशा अपने आप अलर्ट रहना होगा। सुरक्षा में आत्मनिर्भरता से ही अपने गौरव की रक्षा कर सकेगा। चीन उत्तरांचल एवं लद्दाख के कुछ इलाकों में घुसपैठ करके कुछ क्षेत्रों पर अपना अधिकार जताने की नीति लिए मालूम देता है- ऐसा ग्रहस्थिति का संकेत है। भारत को सावधान रहना चाहिए।

१६ दिसंबर मंगलवार को पौषसंक्रान्ति मंगलवारी है एवं अमावस भी (२३ दिसं. को) मंगलवारी ही है। यह भी **खप्परयोग** बन रहा है, जनवरी के प्रथम सप्ताह तक सीमाप्रान्तों पर अशान्ति, वायुयान किंवा रेल दुर्घटना में जनधनहानि, बमविस्फोट एवं उग्रवादजन्य अशान्ति से सरकार चिन्तित रहेगी। कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा की ग्रहस्थिति है।

३ जनवरी को गुरु वक्री हो रहा है। शुक्र पहले ही वक्री है। दो विरोधी देश संघर्ष की स्थिति में मालूम देंगे। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा। ९ जनवरी को शुक्र कुम्भराशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक-योग बनाएगा- यह योग प्रतिष्ठित-राजनीतिज्ञों के समक्ष विशेषतः केन्द्र सरकार के समक्ष कई समस्याओं को लेकर आएगा, जिसका हल सहज संभव न होगा। आगामी निर्वाचन-संग्राम की राजनीति का प्रभाव राजनीतिक पार्टियों पर दिखाई देने लगेगा। पुराने बोफोर्स आदि मसले उभरने लगेंगे। सत्तारूढ़ दल अपनी छवि सुधारने के लिए चिन्तित दिखाई देगा।

मकरसंक्रान्ति (१४ जनवरी) एवं अमावस (२१ जनवरी २००४ ई.) को बुधवार होने से यह तीसरा *खप्परयोग* बन रहा है। इसवर्ष बन रहे *खप्परयोग* पुनः रामजन्मभूमि की समस्या को उजागर करते मालूम देते हैं। सत्तारूढ़दल विशेष विषम परिस्थिति में आ फंसेगा। हल सहज संभव न होगा। परिणामस्वरूप सत्तारूढ़ नेता चिन्ताग्रस्त मालूम देंगे- परिणाम दूरगामी एवं कठोर होंगे। २४ जनवरी को मंगल मेषराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि है। राजनीतिक समीकरण बदलेंगे। राजनीति में उलटफेर किंवा कुछ उथलपुथल होगी।

१३ फरवरी को फाल्गुन संक्रान्ति एवं २० फरवरी को अमावस दोनों शुक्रवारी हैं:- इस प्रकार यह चौथा ***खप्परयोग*** इसवर्ष बन रहा है। २२ फरवरी को रविवारी महुर्रम एवं ६ मार्च को शनिवारी होलिकादहन होगा। कहीं अग्निकाण्ड व विस्फोट आदि से हानि हो। यौनरोगों एवं अन्यविध कई प्रकार के रोगों से जनता में परेशानी बढ़े।

मार्च के पहले सप्ताह में शनि वक्री चल रहा है एवं बुध अतिचारी है- राजनीतिक-दलों मे परस्पर वैमत्य बढ़ेगा। कहीं प्राकृतिक प्रकोप, दुर्भिक्ष व कहीं सीमाप्रान्तों पर अशान्ति से वातावरण क्षुब्ध रहे।

" यदा क्रूरग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः।

तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्।।"

भारतीय राजनीतिक दल विशेष ध्रुवीकरण की ओर बढ़ेंगे- राजनीतिक वातावरण गर्म होने लगेगा। २० मार्च को शनिवारी अमावस कहीं भूकम्प, यानदुर्घटना किंवा विस्फोट आदि से हानि का संकेत देता है।

भारत के प्रमुख राजनीतिक दल

भाजपा जन्माङ्ग क्रमेश गुरु एवं भाग्येश शनि दोनों पराक्रम स्थान में हैं। राहु केन्द्रेश गुरु एवं त्रिकोणेश शनि के साथ स्थित है। शनि-मंगल-राहु ये-महाक्रूरत्रय एकत्र हैं, जो कि भारतीय जनता पार्टी के लिए किसी गंभीर धर्मिक-राजनीतिक एवं आर्थिक समस्या के रूप मे सरदर्द खड़ा करेंगे। लेकिन ३० जुलाई २००३ ई. तक गोचर में गुरु उच्चराशि में रहकर भाजपा का कर्मक्षेत्रेश होकर कर्मक्षेत्र को देखता रहेगा। परिणामस्वरूप भाजपा अपनी छवि को सुधारने के लिए समय निकाल लेगी एवं पुनः एक प्रबल पार्टी के रूप में अपनी छवि बना लेगी। लेकिन

भाजपा के निजी घटकतत्त्व कुछ सिद्धान्त किंवा नीतिवैविध्य के कारण विखरते मालूम देंगे जो कि समय पर संभल जाएंगे। अप्रैल २००५ तक भाजपा एक सशक्त पार्टी के रूप में राजनीतिक पटल पर पुनः उपस्थित होगी।

कांग्रेस की यथालब्ध कुण्डली के अनुसार भरणी नक्षत्र में कांग्रेस का गठन हुआ है । इस प्रकार गठित राजनैतिक दल प्रधान-नेतृत्व की सफलता पर अधिकतर आश्रित रहता है। प्रधान नेता ही विशेष सूत्रधार होता है। दशमेश बुध व्ययस्थान में एवं दशमस्थान में हर्षल-प्लूटो राजनीति में विशेष मोड़ देंगे। कर्क के गुरु (जो कि ५ जुलाई से ३० जुलाई २००३ ई. तक कर्क में रहेगा) में कांग्रेसपार्टी के सदस्यों का मनोबल प्रबल होगा और यह पार्टी प्रमुख पार्टी के रूप में भारतीय राजनीति पर छा जाएगी। आगामी दो वर्षों में यह पार्टी भारतीय जनतापार्टी के विकल्प के रूप में केंन्द्रीय सत्ता की दावेदार मानी जाएगी।

सन् २००३ ई. के प्रारम्भिक कुछ मासों में कांग्रेस पार्टी में कोई नवोदित राजनीतिज्ञ महिला के हस्तक्षेप से इस पार्टी को विशेष बल मिलेगा।

संयुक्त मोर्चा- ग्रहगोचर के अनुसार संयुक्तमोर्चा अपने अस्तित्व को बना तो रखेगा, लेकिन संयुक्त मोर्चे का विघटन एवं नए ध्रुवीकरणों से इसका बलक्षीण रहेगा।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन- राष्ट्रीय जन्तान्त्रिक गठबंधन का उदय वृश्चिकलग्न में होने से लग्न पर गोचरस्थ गुरु की दृष्टि है, जो कि आगे भी सक्रिय गठबन्धन के तौर पर राजनीति में पुनः सक्रियता लावेगी। लेकिन गठबन्धन के सदस्य सिद्धान्त वैमत्य के कारण अलग होकर गठबन्धन को शिथिल अवश्य कर देंगे। भाजपा पुनरपि गठबन्धन का नेतृत्व करेगी।

श्री अटल विहारी वाजपेयी :- जन्माङ्ग में कर्मेश चन्द्र नीच है, परन्तु गोचर में उच्चगुरु से दृष्ट होने से प्रधानमन्त्रित्व के कार्यकाल को पूर्णता प्रदान करेगा। मिथुन का शनि, जन्मकालिक गुरु की दृष्टि में है एवं अष्टमस्थ मंगल को देखता है, जो कि विरोधी दल किंवा पार्टी में विरोधियों को हतप्रभ कर देगा। कर्क का बृहस्पति इस वर्ष इन्हें अन्तराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कराएगा- ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही है।

श्रीमती सोनिया गान्धी- यथालब्ध कुण्डली के अनुसार लग्नस्थ शनि वक्र है। दशमभाव पर शनि की नीच-दृष्टि होने से राजनीति में कुछ उलझनें आई हैं, लेकिन भाग्येश गुरु कर्मस्थान को पूर्णदृष्टि से देख रहा है, जो कि इन्हें राज्यपदाप्ति सुख का संकेत अवश्य देता है। जुलाई २००३ ई. से सिंहस्थ गुरु इनके लिए विशेष योग कारक है, क्योंकि सिंह का गुरु इनका भाग्येश होकर भाग्यस्थान को एवं कर्मेश मंगल को भी देखेगा, मंगल भाग्यस्थान को जन्माङ्ग में देख ही रहा है। राजनीति में अभी बहुत समस्याएं आएंगी, लेकिन कांग्रेस काफी हद तक जनबल को साथ लेकर सामने आएगी।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार यह बात स्पष्ट है, कि भारतीय राजनीति के दोनों बड़े दल अकेले ही सत्ता में नहीं आ सकेंगे। यह भी सत्य है, कि गठबन्धन में कोई भी प्रमुख दल निजीनीति को लेकर शासन नहीं कर सकेगा। आगे समन्वय की नीति को लेकर गठबन्धन से सत्ता प्राप्त होगी।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब- प्रभावराशि मीन का स्वामी गुरु कर्कराशि में आकर शासनसत्ता को दुरुस्त करेगा। मुख्यमन्त्री अपनी छवि को उभारेंगे और शासनतन्त्र में यश के भागी होंगे। अगस्त से संवत् के अन्त तक का समय यहां के प्रधान नेताओं के लिए कठिन एवं चुनौतिपूर्ण है। यहां उग्रवाद तत्त्वों पर निगरानी रखनी होगी, अन्यथा शासनतन्त्र को कठिन स्थिति का सामना करना पड़ेगा।

हरियाणा- प्रभावराशि मीन है। नामराशि मिथुन है। नामराशि पर शनि का संचार अप्रैल में हो रहा है जो कि प्रभावराशि पर दृष्टिपात कर रहा है, प्रभावराशि का स्वामी गुरु भी मीनराशि पर दृष्टि बनाए हुए है। प्रधान नेता श्री चौटाला साहब को अपना कार्यकाल पूरा करने में कोई पेरशानी नहीं आएगी। प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। प्रगतिप्रद योजनाएं कार्यान्वित होंगी। लेकिन २००४ ई. में गोचरग्रहस्थिति के अनुसार सत्तारूढ़दल का समय अनुकूल नहीं रहेगा। कांग्रेस पार्टी का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। आगे २००५ ई. के लगभग राजनीतिक मानदण्ड ग्रहस्थित्यनुसार सहसा बदलते मालूम देते हैं।

हिमाचल प्रदेश- प्रभावराशि मीन है। ७ अप्रैल को मिथुन का शनि प्रधानशासक के लिए कुछ समस्याओं को उपस्थित करेगा। ३ जून को मंगल कुम्भराशि में आकर बुध-सूर्य पर दृष्टि डालेगा एवं शनि के साथ नवपंचम सम्बन्ध बनाएगा। समय प्रधाननेता के लिए कठिन है। विरोधी पार्टियां विशेषतः कांग्रेस का सम्बन्ध किसी अन्य पार्टी से बने एवं सत्ता की प्रमुख दावेदारी के रूप में उभरे। राजनीतिक दृष्टि से समय सत्तारूढ़दल के विशेष अनुकूल नहीं है।

जम्मू-काश्मीर- प्रभावराशि तुला है। इस वर्ष में शनि-मंगल एवं गुरु और अन्य गोचरग्रहस्थिति के अनुसार राजनीतिक कार्यकर्ता उग्रवाद के शिकार बनेंगे। संवत् के प्रारम्भ में किंवा कुछ पहले ही राजनीतिक-हत्याकाण्डों से केन्द्रीय शासन चिन्तित हो जाएगा। इस समस्या का स्थायी हल ढूंढने के प्रयास होंगे। जम्मू-लद्दाख का पृथक्करण किंवा केन्द्रीयशासन का सुझाव सामने आ सकता है। इस संवत् में **४ खप्परयोग** सीमाप्रान्तों पर युद्ध का योग बना रहे हैं किंवा उग्रवाद से विशेष जनधनहानि का संकेत भी देते हैं।

पाठको ! आतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता तो इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिष विज्ञानदृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्पविषया मति में प्रस्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी हैं। आगे **कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम्** समर्थ भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रवल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्यलेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है:-

"तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

शुभचिन्तक-
इन्दुशेखर शर्मा,
श्री मार्तण्ड भवन,
मु.पो. कुराली, रोपड़ (पंजाब)।

(लेख पूर्ण होने की तिथि ११ सितम्बर सन् २००२ ई.)

卐 卐 卐 卐 卐

व्यापार-विमर्श

(संवत् 2060 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेजी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं, ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तु में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटा-बढ़ी होती है, जिसे हम ' तेजी-मंदी ' कहते हैं। व्यापारी 'तेजी-मन्दी' इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है, कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है, कभी नीचे गिराता है- " चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा-यह धारणा भ्रामक है । व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार-चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें,विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं।

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह निःसन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं " यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्" अर्थात् जो मेरा है, वह मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता । अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से संबंधित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे।

हाजर एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक-जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां व्यापार-विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी-मन्दी का मशवरा देते हैं, व्यापारियो ! निराश न हों । हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् २०६० में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति-प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि इससाल व्यापार जगत् में विशेष लम्बे तेजी एवं मन्दे के रिऐक्शन आऐंगे । इसवर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवं रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा। कहने का तात्पर्य है कि **इसवर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं** । अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय-समय पर, ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। व्यापार-विमर्श लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं , वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहे । 'व्यापार-विमर्श ' लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाजारों के उतार-चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं ।

सं. २०४६ वि. में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं । सरसों, तेल, तिलहन में तेजी से सं. २०४८ वि. में तो जो व्यापारी हमारे संपर्क में रहे, लाखों का लाभ उठा गए। हमने तेल, सरसों, बिनौला, अलसी, सूरजमुखी, मूंगफली एवं रुई में अपने व्यापारियों को भयंकर तेजी बताई थी, उससाल व्यापारियों को हमारे परामर्श से छः गुणित लाभ प्राप्त हुआ। सं. २०४६ वि. में तेल, घी, एवं शेयरों के बाजार में जो उथल-पुथल हुई,- उसका खुलासा हम निजी व्यापारियों को देते रहे हैं । सं. २०५२-५३ वि. में रुई एवं दालवाना के व्यापारी हमारे साथ मशवरा करके लाखों रुपये का लाभ प्राप्त कर चुके हैं ।

सं. २०५४ वि. में सरसों के व्यापारी हमारे ताजा मशवरे से भारी हानि से बचे एवं गुड़ के व्यापारी लाखों कमा गए। सं. २०५५ वि. में तेल के व्यापारी २४ अगस्त तक ५४५०/- तेल के भाव में सौदा सैटल करके पूरा लाभ ले गए । सं. २०५६-५७ वि. में तेल, गुड़, सरसों, सोना-चांदी एवं अनाजों के व्यापारी हमारे मशवरे से विशेषलाभ प्राप्त कर चुके हैं । व्यापारियों से अनुरोध है कि व्यक्तिगतरूप से आकर व्यापारिक जानकारी लेने में भारी लाभ ले सकेंगे । दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या एक मास की फीस ५०० रु. भेजकर टेलीफोन से ही तेजी-मन्दी जान सकेंगे ।

सं. २०६० वि. में ग्रहों के वक्रमार्ग, युति, गति के अनुसार हम इसवर्ष तेजी-मन्दी की विशेष लाइनों का संकेत देंगे, साथ ही सामयिक तेजी-मंदी का विवेचन भी करेंगे ।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखकर, अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे ।

नोटः- वायदा व्यापार या हाजर सौदा के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरंत सौदा काटकर नुकसान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताजा मशवरा हासिल करें। फिर भी किसी प्रकार के नुक्सान(हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते । अर्थात्- व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

वायदा-व्यापारियों के लिए हिदायतें

(१) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव याद रखो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांधकर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुक्सान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे- कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रह-गति के आधार पर निर्णय कर लें कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का ? मन में यह धारणा बांधकर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दे के मोटे कारण भी दिखाई देने लगें एवम् व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो, तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बचाव करते रहिए, थोड़ा सौदा काटकर नफा से सुलटते रहिए। (५) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की, यह जानने के लिए खास वस्तु के भावों को देखनां चाहिए। यदि उस वस्तु में हर तीसरे-चौथे-आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नए-नए भाव आते चले जाएं, जैसे-तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उछाल में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए-नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मान लो, आपने तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही मन्दे की लहर चल रही है, तो किसी भी समय तेजी का उछाल आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुक्सान से बच जाओगे।

हमेशा ग्रहयोग को आधार मानकर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभदशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध खोटी ग्रहस्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए। भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

इसवर्ष की मासिक तेजी-मन्दी का विचार करने से पूर्व सं. २०६० वि. के **'दुर्मुख'** नामक संवत् के शुभाशुभफल विचार के साथ वर्षेश-वर्षमन्त्री, धान्येश-सस्येश एवं रसेश का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा; यह संक्षिप्तरूप से जान लेना आवश्यक है। संवत् का नाम दुर्मुख है।

"दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीति चौराकुला-धरा।
महावैरा महीनाथा वीर-वारण-वाजिभिः।।"

सं. २०६० वि. में वर्षा मध्यम हो, पृथ्वी पर ईति (प्राकृतिक-आपदाओं) चोरी (घुसपैठ) आदि घटनाओं से जनता अशान्त रहे। सीमाप्रान्तों पर स्थिति की नाजुकता देखते हुए सेना को सुसन्नद्ध रहना पड़ेगा। विभिन्न विरोधी राष्ट्राध्यक्षों में नीतिविरोध से वातावरण क्षुब्ध रहे।

सं. २०६० वि. का **राजा बुध** है। फलस्वरूप वर्षा पर्याप्त, सुभिक्ष रहे, धन-धान्य समृद्धि भी रहे। इसवर्ष का **मंत्री चन्द्र** है; वर्षा काफी हो, धन-धान्य समृद्धि रहे। इससाल की चौमासी फसलों के स्वामी **(सस्येश) बुध है,** फलस्वरूप वर्षा काफी हो। सुख-समृद्धि भी रहे। इसवर्ष का **धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) मंगल हैं। मूंग, मोठ, बाजरा आदि मंहगे हों। चावल, ईख, घी, एवं खाद्य तेल भी तेज रहें।** इसवर्ष वर्षा पानी के स्वामी **मेघेश** सूर्य होने से जौ, चना, ईख, चावल आदि की फसल उत्तम होगी। **रसेश शुक्र** पर्याप्त वर्षा का संकेत देता है। **नीरसेश बुध** वस्त्र, शंख, चन्दनादि में मंहगाई बनाए। **इसवर्ष का फलेश सूर्य एवं धनेश बुध होने से वर्षा कहीं अधिक, कहीं थोड़ी,** अनाज एवं घी के संग्रह से आगे लाभ का संकेत देते हैं।

गतवर्ष सं. २०५९ वि. के 'श्रीमार्त्तण्डपञ्चाङ्ग' में 'व्यापार विमर्श' शीर्षक के अन्तर्गत हमने पृ. ५१, कालम २ , पंक्ति ८, पर स्पष्ट घोषणा की थी कि -**"इसवर्ष का राजा एवं मन्त्री दोनों शनि हैं; अग्निकाण्ड से कई स्थानों पर खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। सुण्डी आदि बीमारियों से नरमा, कपास एवं तिलहन को नुक्सान पहुंचेगा। कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से खड़ी फसलों को हानि व अकाल कि स्थिति से जनता को परेशानी उठानी पड़ेगी। स्थिति कुछ चिन्तनीय होगी, जिसका प्रभाव व्यापारक्षेत्र पर अनुभव होगा।"**

ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार अनेक प्रान्तों में अकाल की स्थिति बनी; एवं सरकार को अकालग्रस्त क्षेत्रों में राहतकार्य करना पड़ा।

गत संवत् २०५९ वि. में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति के अनुसार ग्वार, सरसों, तेल, गुड़, सोना, चांदी के व्यापारी भारी लाभ ले सके हैं।

सं. २०६० वि. में शरत्सस्यजातक कुण्डली मे शीतकालीन फसलों के स्वामी मंगल अष्टमभाव में उच्च हैं एवं उच्च-गुरु की मंगल पर पूर्णदृष्टि भी है। शीतकालीन फसलों की उपज अच्छी होगी। मूंग, मोठ, बाजरा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे। कुछ क्षेत्रों में शरत्सस्य कुण्डली में वृश्चिकस्थ केतु, तुलास्थ नीचाकांक्षी चन्द्र एवं वृषराशि में सूर्य-राहु की स्थिति खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचाएगी। अतिवर्षणादि प्राकृतिक आपदा से फसलें क्षतिग्रस्त होंगी; कुछ स्थानों पर समयानुसार वर्षा न होने से खड़ी फसलें सूखेंगी; जिससे व्यापारक्षेत्र प्रभावित होगा।

'ग्रीष्मसस्यजातक कुण्डली' के अनुसार वृश्चिकराशि में सू. शु. बु. शुभदृष्ट नहीं। खड़ी फसलें कहीं सूखेंगी। गेहूं, जौ, चना, दालवाना की फसल उत्तम होने पर भी ग्रीष्मान्नों की फसल के लिए ग्रहस्थिति अनुकूल नहीं।

*ग्रहों के वक्रमार्ग, युति-प्रतियुति के अनुसार इसवर्ष चावल, गेहूं, चना दालवाना, रुई, नरमा, सोना-चान्दी एवं तेल, तिलहन में तेजी-मन्दी के भयंकर रिऐक्शन आएंगे। हमारा व्यापारियों से अनुरोध है, कि- **टेलीफोन नं. (01888) 641277** पर समय निश्चित करके प्रत्यक्ष मिलें या पांच सौ रु. (Rs-500/-) प्रतिमास के हिसाब से फीस जमा कराकर टेलीफोन से तेजी-मन्दी के बारे में चांस प्राप्त करें।*

सं. २०६० वि. की तेजी का विवरण देने से पूर्व गत संवत २०५९ वि. के अन्तिम मासों पर विहंगम दृष्टि डालना उचित समझते हैं। ८ जनवरी सन् २००३ ई. को शनि वक्री स्थिति में फिर से वृषराशि में आकर राहु (जोकि हमेशा वक्री रहता है) के साथ मेल करेगा। २२ फरवरी तक शनि-राहु का मंगल-केतु के साथदृष्टि सम्बन्ध बना रहेगा। शनिग्रह की मंगल पर पूर्ण दृष्टि होने से कहीं राजनीतिक स्थिति विषम होने से किंवा कहीं युद्धमय वातावरण बन जाने से व्यापार प्रभावित होगा ।

चावल, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, मशीनरी, सोना, चांदी, गुड़, तेल, तिलहन में तेजी बनेगी।

२३ फरवरी सन् २००३ ई. को शनि-राहु का मंगल के साथ षडष्टकयोग बनेगा, जोकि संवत् के अन्त तक चलेगा। मार्चमध्य के बाद बुध अतिचारी हो जाता है और मार्च के अन्त तक अतिचारी ही रहता है। यह योग तेजीकारक ही है। राजनैतिक-गतिविधि की विषमता का व्यापार पर प्रभाव होगा। व्यापारी लोग बाजार के रुख को देखकर व्यापार करें। **वायदा व्यापारी ताजा मशवरा प्राप्त करें।**

अप्रैल

१ अप्रैल को भौमवती अमावस है, सूर्य, चन्द्र एवं बुध ये तीनों ग्रह रेवती नक्षत्र में हैं; " इन पर बृहस्पति एवं मंगल की विशेषदृष्टि भी है"। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, जौ, चना, चावल में तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, तिल, सरसों, घी, एवं चांदी में मन्दा रहे।

२ अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में आ जाता है। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग-मोठ में सामान्य तेजी बने। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में एक सप्ताह में मन्दे का योग बनेगा । इस समय चांदी में खास मन्दे का रिऐक्शन आए। सोना, मूंगा, मोती, तेल-तिलहन, घी में अचानक मन्दा बनेगा ।

३ अप्रैल गुरुवार को अश्विनी नक्षत्र में एवं मेषराशि में चन्द्रदर्शन अनाजों में मन्दा; घी, सरसों, अलसी में तेजी का वातावरण बनाता है।

४ अप्रैल को गुरु मार्गी होगा। गुरु अपनी उच्च राशि कर्क में है। रुई में मन्दे के बाद तेजी चांदी में मन्दे का झटका आए। ८ दिन में चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तमाखु में तेजी बने। ६ अप्रैल को उ.षा. का मंगल रुई में एवं एकाएक वायदा बाजार में तेजी करेगा।

७ अप्रैल को शनिग्रह मृगशिरनक्षत्र के तीसरे चरण एवं मिथुनराशि में प्रवेश करेगा। **व्यापारी नोट करें, कि - शनि मिथुनराशि में मित्रक्षेत्री है। शनि मार्गी है। इस समय शनि की मंगल पर एवं मंगल की शनि पर पूर्ण दृष्टि है। - यह योग जोरदार तेजी बनाएगा।** रुई मे जबरदस्त तेजी बनेगी। तिल, तेल, तिलहन, खाण्ड, गेहूं, लोहा-मशीनरी में एवं करयाणा में तेजी प्रधान रहेगी। मजीठ, सोना में भी तेजी-मन्दी के झटके आएंगे। तिलहन बाजार, शेयर बाजार, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास, सरसों एवं अन्य खाद्यतेल शनि के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। शनि का सीधा प्रभाव कच्ची चीजों की पैदावार पर अनुभव किया है, शनि का कुप्रभाव खेती को नुकसान पहुंचाता है, जिससे बाजारों में तेजी की लहर आती है। मिथुन के शनि में शास्त्रकार घी, कपास, लोहा, नमक, तिल, गुड़ में अच्छी तेजी कहते हैं:- **" आज्यं-कार्पास-लौह-लवण-तिलगुड़ाः सर्वदेशे महर्घाः।"** १, ४, ७, ८ अप्रैल को तिलहन, चांदी-सोना, गुड़, घी में तेजी का व्यापार करके वायदा व्यापारी लाभ लें।

८ अप्रैल को पू.भा. का शुक्र चांदी, रुई, में तेजी एवं अनाजों में मन्दा करेगा।

९ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का बुध चावल, गेहूं आदि अनाजों में ८ दिन में तेजी करेगा।

११ अप्रैल को मंगल अपनी उच्च (मकर) राशि में आकर उच्च गुरु के साथ 'सप्तकयोग' बनाएगा। यह योग महत्वपूर्ण है। मंगल, रुई, कपास, तेलवाना, जूट, चांदी, सोना तथा शेयर बाजारों पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। **मंगल को 'भौम' या भूमिपुत्र कहा जाता है। जमीन से उपजने वाली प्रत्येक जिन्स का सम्बन्ध इस ग्रह से है। जब-जब मंगल बृहस्पति जैसे उच्चग्रह के साथ दृष्टिसम्बन्ध या राशि-सम्बन्ध बनाता है तब बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दी बनाता है; - समझ से बाजार का रुख देखकर काम करें।** मंगल ग्रह का प्रभाव मौसम पर विशेष है। कभी-कभी मंगलग्रह के योग से वर्षा की कमी से बाजारों में तूफानी तेजी आती है। मकर का मंगल विशेष महत्व रखता है। रुई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी एवं ऊन में तेजी बनेगी। अनाजों में विशेष मन्दा बन जाने के योग हैं। **१४ अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में आकर मंगल की नजर में आ जाता है। मेषराशि भी मंगल की ही है।**

यह भी तेजी का ही चांस है। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सोना में तेजी रहेगी। मेषराशि का सूर्य उच्च का माना गया है। मंगल एवं सूर्य का असर तकरीबन बाजारों पर एकसा ही अनुभव किया गया है। भूमिपुत्र-मंगल का जिन्सों पर जो प्रभाव है, वही सूरज जिन्सों में परिपक्वता लाता है, वायदा व्यापारी इस मेषसंक्रान्ति को तेजी कारक ही समझें।

१६ अप्रैल को शुक्र भी अपनी उच्चराशि मीन में प्रवेश करेगा। इस प्रकार सू.गु.मं एवं शुक्र ये चारों ग्रह इस समय अपनी अपनी उच्चराशि में स्थित हैं। इस समय मीनराशि में स्थित शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि है। हर सफेद जिन्स पर इसका प्रभाव देखा गया है। रुई, चांदी, सूत, कपास पर इस ग्रह का विशेष-वर्चस्व है। शुक्र व्यापारियों की मनोवृत्ति का द्योतक है। **जब शुक्र, गुरु की नजर में होता है तो फसलों की पैदावार अच्छी होने की अफवाह से बाजार मन्दे की तरफ बढ़ते हैं।**

मीनराशि में अकेला ही शुक्र चांदी में पहले साधारण मन्दी के बाद तेजी करता है। अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी एवं एरण्ड, गुड़, खाण्ड में मन्दा बनेगा। रुई में तेजी बने। **गुरुदृष्टि होने से यहां बाजारों का रुख मन्दे की तरफ रहेगा।**

१६ अप्रैल को उ.भा. का शुक्र चावल, मोती, चांदी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दा ही करेगा।

(११ से १५ अप्रैल तक रुई, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड के वायदा व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे। आगे १६ से २५ अप्रैल तक वायदा व्यापारी मन्दे का विचार रखकर काम करें।)

२६ अप्रैल को अचानक बाजार का रुख बदल सकता है, बाजार का रुख देखकर काम करें। इस दिन सट्टा बाजार को प्रभावित करने वाला बुधग्रह वक्री हो जाता है। २४ दिन में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी आए। **ध्यान दें:-** इस समय बुध उच्च सूर्य के साथ मंगल की नजर में है। मंगल शनि के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। गेहूं, जौ, चना आदि में भी कुछ तेजी रहे।

२७ अप्रैल को भरणी नक्षत्र का सूर्य सोना, तांबा, चांदी, मूंगा, पीतल के बर्तन, गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंग, मोठ अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी कारक नजर आता है।

२८ अप्रैल को बुध पश्चिम में अस्त हो रहा है, बुध वक्री पोजीशन में भरणी नक्षत्र में एवं उसी दिन मंगल भी श्रवणनक्षत्र में प्रवेश करेगा। रुई में अचानक धमाके की मन्दी का योग है। शेयर बाजारों में जोरदार उथल-पुथल से मन्दा बने। चावल, गेहूं आदि अनाजों में ८ दिन में तेजी बने। सोना-चांदी में जोरदार तेजी हो।

३० अप्रैल को रेवती नक्षत्र का शुक्र रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदा करे। [२६ अप्रैल को तेजी, २७ से ३० अप्रैल तक तेजी-मन्दी के रिऐक्शन से लाभ लें। मंदी में खरीदें, तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।]

मई

१ मई को शनि-मंगल का षडष्टक चल रहा है। गुरु-मंगल-सूर्य एवं शुक्र- ये चारग्रह उच्चस्थ हैं। मकर-राशि भारत की प्रभाव राशि है, अतः भारत की प्रगतिप्रद योजनाएं कार्यान्वित होंगी। जिसका प्रभाव भारत के व्यापार पर पड़ेगा, - बाजार के रुख को देखकर काम करें। वायदा बाजार मन्दे रहेंगे।

३ मई को राहु कृत्तिका नक्षत्र के तीसरे चरण में एवं केतु अनुराधा के प्रथम चरण में आएगा। सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में तेजी का रुख रहे। तेल एवं तिलहन में भी तेजी का रुख रहेगा। अनाजों, दालवाना में कुछ मन्दा रहे। ३ मई शनिवार को चन्द्रदर्शन सरसों, तेल, मूंगफली, रुई, सूत, वस्त्र, सोना एवं चांदी में तेजी का संकेत देता है। सब धान्य, मूंग, मोठ भी तेज रहें।

[३ मई से १० मई तक वायदा बाजारों में तेजी का ही संकेत है, फिर भी बाजार का रुख देखकर ही व्यापार बढ़ावें।]

११ मई को सूर्य कृत्तिका में दाखल होगा, इसी दिन शुक्र, अश्विनी/ मेष में भी आ जाता है। हमारा अपना अनुभव है, कि शुक्र का राशि व नक्षत्र चार का प्रभाव चांदी व सोने के व्यापार को विशेषतः प्रभावित करता है। शुक्र मेषराशि मे आकर वक्री बुध एवम् सूर्य के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। इन पर उच्च मंगल की इस वक्त खास नजर है। जब शुक्र का मेल सूर्य, बुध के साथ होता है तो बाजारों में जो लाइन चली आ रही होती है, उसमें वृद्धि कर देता है, अर्थात् जोरदार मन्दी या जोरदार तेजी ला देता है; क्योंकि बुध का मंगल की राशि में होना तेजीकार्क माना जाता है, अतः यहां शुक्र तेजी को बढ़ावा देगा। बाजार अफवाहों से तेजी की तरफ बढेंगे। घी, रुई, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, दालवाना, राई, सरसों में तेजी रहेगी। इस समय सोना, चांदी में खास तेजी का झटका आएगा, लाभ लें। गुड़, शक्कर, वारदाना, पाट आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ऊन, तेल, तिलहन में मन्दी रहे।

ध्यान दें :- ७ मई को बुधग्रह सूर्य के बिम्ब को वेधकर निकलता मालूम देगा, इस 'बुध-रविवेध-युति' का प्रभाव विश्व की राजनीति पर होगा, जिससे कुछ देशों में प्राकृतिक-प्रकोप से हानि या राजनीतिक उथल-पुथल से, व्यापारक्षेत्र प्रभावित होगा, सावधानी से कार्य करें।

१२ मई को मृगशिर के चतुर्थचरण में शनि के आने पर रुई, सोना-चांदी में घटाबढ़ी; गुड़, तेल, नमक में तेजी एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे।

(ध्यान दें- १२ से १४ मई तक बाजार अस्थिर रहेंगे।)

१५ मई को आश्लेषा के प्रथमचरण में गुरु के आने पर घी, तेल तेज एवं सभी व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा। **१५ मई को ही सूर्य वृषराशि में दाखल होगा। वृषराशि का सूर्य राहु के साथ मेल करके बाजारों में जोरदार** तेजी का संचार कर सकता है; - बाजार का रुख देखकर लाभ

तें। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों में तेजी ही रहे। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल में मन्दे का रिएैक्शन आकर तेजी का रुख रहे।

१६ मई को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। बुध-शुक्र मेषराशि में एकत्र हैं, मंगल की इन पर नजर है। रुई में पहले मन्दी, कुछ दिनों बाद अच्छी तेजी बने। गेहूं, चना आदि में ४० दिनों में तेजी हो। तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेजी रहेगी।

[१५, १६ मई से १९ मई तक बाजारों में जोरदार तेजी के रिएंक्शन आएंगे- मन्दे मे खरीदें, तेजी में स्टॉक निकालें-लाभ मिलेगा।]

२० मई को बुध मार्गी हो जाएगा। बाजारों का रुख अचानक बदलेगा; - सावधानी से काम करें। रुई में मन्दे के बाद तेजी एवम् चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। ८ दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में तेजी बने । रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ मन्दे रहें। रसकस मन्दे एवम् सोना तेज रहे।

२१ मई को धनिष्ठानक्षत्र का मंगल २० दिन में रुई, जौ, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा तेज करे। गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, रुई, जूत एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे।

२२ मई को शुक्र भरणी नक्षत्र में आकर १२ दिन में सोना, चांदी, अफीम, सरसों, तेल, अलसी, चावल, जौ, गेहूं, तिल, उडद, मूंग, तूअर, मोठ, चना, लाख, ऊन, एवं चमडे में तेजी बनाए।

२५ मई को रोहिणी नक्षत्र में सूर्य आएगा। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सण, सुपारी, मिर्च एवं राई में तेजी रहे। इस समय चांदी में मन्दा रहे।

३१ मई (शनिवारी अमावस) को रोहिणी नक्षत्र में सूर्य ग्रहण होगा। गेहूं , दालवाना आदि अनाज तेज रहेंगे; संग्रह करें। घी, गुड़, बारदाना, नमक, तिल, तेल, एवं करयाणा के स्टॉक से लाभ होगा। रुई-सूत के स्टॉक से १० मास में अच्छा लाभ मिलेगा। कहने का तात्पर्य है, कि- व्यापारिक वस्तुओं में तेजी रहेगी।

[२० मई से २४ मई तक बाजारों में मन्दा तेजी की प्रतिक्रिया रहेगी। २५ मई को तेजी रहे एवं मासान्त तक कुछ तेजी ही प्रधान रहेगी।]

जून

१ जून का रविवारी चन्द्रदर्शन वृषराशि में होगा। गुड़, सोना, चांदी, गेहूं जौ, चना, रुई एवं सूत में तेजी रहे। २ जून को कृत्तिका नक्षत्र में शुक्र आएगा। जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दी आए।

३ जून को मंगल अपनी शत्रुराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा। इस तरह गुरु एवं मंगल का षडष्टक-योग बन जाएगा। मंगल सोना, चांदी, गुड़, घी, तेलवाना, रुई, कपास एवं शेयर बाजारों को प्रभावित करता है। कुम्भराशि का मंगल बाजारों में पहले अच्छी तेजी के बाद मन्दी, अन्त में पुनः तेजी करेगा। रुई, चांदी में काफी घटाबढ़ी, गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी बने। अनाज एवं दालवाना में भी तेजी का रुख रहे।

५ जून को कृत्तिका नक्षत्र का बुध ८ दिन में चांदी एवं अफीम में खास घटाबढ़ी करे। अनाजों में पहले कुछ तेजी, रुई में भी तेजी ही रहे।

६ जून को शनि अस्त हो जाएगा। वस्त्र, रुई, शेयर एवं सोना में मन्दा, अनाजों में तेजी बने।
७ जून को मेदिनी ग्रह यूरेनस वक्री हो रहा है। यूरेनस कुम्भराशि में मंगल के साथ ही है। सोना, चांदी एवं शेयर बाजारों पर इसका विशेष प्रभाव अनुभव किया गया है। सोना, चांदी के बाजारों में विशेष तेजी का विचार है।

८ जून को मृगशिर नक्षत्र में सूर्य, आश्लेषा नक्षत्र के दूसरे चरण में गुरु एवम् आर्द्रा के प्रथम-चरण में शनि का प्रवेश होगा। इसीदिन (८ जून को ही) बुध वृषराशि में प्रवेश करके सूर्य-राहु एवं शुक्र के साथ राशिसम्बन्ध भी बनाएगा। कुम्भराशि में स्थित मंगल की सू.रा.शु.बु. पर विशेष दृष्टि है। यद्यपि वृषराशि में मंगल मन्दा करता है, लेकिन अन्य ग्रहसन्निधि के कारण यहां मन्दे की जगह तेजी ही बनेगी। कपास, रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, मटर, चना, चावल, बाजरा, अलसी, नारियल तेज रहें। अनाज, अलसी, सरसों, तिल, तेल में अचानक मन्दे एवं तेजी के रिऐक्शन आएं। घी, तेल एवं तिलहन में अन्ततः रुख तेजी का रहे।

[मासारम्भ से १२ जून तक बाजारों में मन्दे के छोटे-मोटे रिऐक्शन आएंगे, लेकिन बाजार तेजी प्रधान रहेंगे।]

१३ जून को रोहिणी नक्षत्र में शुक्र दाखिल होगा। १२ दिन में चांदी-सोना आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दा रहे। अफीम तेज रहे।

१५ जून को मिथुन में सूर्य दाखल होगा। इस राशि में सूर्य का पुत्रग्रह लेकिन सूर्य का शत्रुग्रह शनि अतिचारी होकर पहले ही बैठा है। सूर्यसंक्रान्ति रविवारी है एवं अमावस भी रविवारी होने से 'खप्पर-योग' बन गया है। राजनैतिक गतिविधि का व्यापार पर प्रभाव पड़ेगा । सूझबूझ से काम करें। विशेषरूप से सूर्यग्रह का असर रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, कपास, अनाज, सोना, चांदी, शेयर, हल्दी तथा कालीमिर्च के बाजारों पर पड़ता है। प्रत्येक वायदा/ हाजर बाजारों पर सूर्य का प्रभाव स्पष्ट अनुभव किया गया है। पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेंहू, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाजों में तेजी बनेगी। सोना-चांदी में तेजी का रुख रहेगा।

ठीक १५ जून को ही रोहिणी नक्षत्र का बुध भी रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी की प्रधानता का संकेत देता है। राई, तूअर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दी, रुई में पहले तेजी फिर मन्दी रहे।

[१३ से १७ जून तक वायदा व्यापारी तेजी से लाभ ले सकेंगे। १५ जून के लगभग अच्छी तेजी बनेगी।]

१८ जून को शतभिषा नक्षत्र का मंगल दालवाना एवं अनाजों में मन्दा करे। चांदी में मन्दी के बाद तेजी रहे। २२ जून को आर्द्रानक्षत्र में सूर्य का संचार होने से रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी एवं जल में पैदा होने वाले नारियल आदि में तेजी बनेगी। २३ जून को अतिचारी बुध मृगशिर नक्षत्र में दाखल होगा। ८ दिन में रुई में तेजी; चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी; गेहूं, तिल, सरसों मे भी मन्दा बने।

[१८ से २३ जून तक वायदा बाजारों का रुख नर्म ही रहेगा।]

२४ जून को शुक्र मृगशिरनक्षत्र में आएगा। साथ ही (**२४ जून को ही) बुध पूर्व में अस्त हो जाता है।** गेहूं, जौ, चना, ज्वार, घी में मन्दा बने। रुई, चांदी में घटाबढ़ी, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। **२६ जून को बुध अपनी राशि मिथुन में दाखल होकर शनि-सूर्य के साथ मेल करेगा। ध्यान दें:- इस समय बुध अतिचारी भी है।** तिलहन बाजार विशेषरूप से प्रभावित होंगे। बाजारों में अफवाहों या पब्लिसिटी से बाजार प्रभावित होंगे। सरसों, तारामीरा, सोयाबीन, मूंगफली, सूरजमुखी आदि तिलहनों मे जोरदार तेजी बनेगी। रुई, सोना, चांदी में मन्दे के रिऐक्शन आएंगे।

२७ जून को गुरु आश्लेषा नक्षत्र में दाखल होगा। घी, तेल में तेजी, प्रत्येक व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनेगा।

२८ जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता हैं एवं इसी दिन **शुक्र मिथुनराशि में आकर सू., बु. एवं शनि के साथ मेल करेगा। बुध एवं शनि दोनों अतिचारी हैं। जोरदार तेजी एवं मन्दे के झटके आएंगे- सावधानी से काम करें।** तिल, उड़द, मूंग, मोठ, रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दा बन सकता है। **व्यापारी ध्यान दें;- यदि तेजी बनने लगे तो जोरदार तेजी भी बन सकती है; सावधानी से काम करें।** अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी चले। गेहूं, जौ, चना एवं चावलों में तेजी रहे।

जुलाई

१ जुलाई मंगलवार को व्याघातयोग में चन्द्रदर्शन होगा। पुष्यनक्षत्र एवं कर्कस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन वर्षा में अवरोध पैदा करता है। अनाज एवं सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहे। रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। सरसों, मूंगफली का रुख भी तेजी की तरफ रहे।

४ जुलाई को आर्द्रा के दूसरे चरण में शनि प्रवेश करेगा। शनि अतिचारी है। मूंग, मोठ, जौ, कपास में तेजी रहे। **इस समय शनि का राशि सम्बन्ध शुक्र, बुध एवं सूर्य के साथ है। शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आने ही वाला है।** इस समय मैंथा-आयल में तेजी आएगी। मैंथा के व्यापारी लाभ में रहेंगे। अनाजों के [illegible] मास के अन्दर तेजी से अच्छा लाभ ले सकेंगे।

५ जुलाई को राहु कृत्तिका २ में, बुध पुनर्वसु एवं शुक्र आर्द्रा में दाखल होगा। चना, चावल, गेहूं आदि अनाजों में अचानक मन्दा आए। चांदी, रुई, सूत, कपास, सण में अच्छी मन्दी आने का योग है। तेल-तिलहन के व्यापारी इस समय तेजी से लाभ ले सकेंगे।

६ जुलाई को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में दाखिल होगा। वुध भी पुनर्वसु नक्षत्र में ही चल रहा है। सूर्य-शनि-बुध एवं शुक्र मिथुनराशि में ही हैं। रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, विनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर, मजीठ, नील, सोंठ एवं सभी प्रकार के करयाणा में तेजी ही रहेगी।

१० जुलाई को बुध कर्कराशि में आकर उच्चगुरु के साथ मेल करेगा। यह मन्दा करने वाला योग है। रुई में झटके के साथ मन्दी आए। चांदी में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी, घी, गुड़, खाण्ड, तेल, मूंगफली, सरसों एवं सोने में पहले तेजी-पीछे मन्दा बने। सूत-कपास मन्दे रहें।

१२ जुलाई को शनि उदित होगा। शनि अपने पिता किंवा शत्रुग्रह सूर्य के साथ है। ८ दिनों में रुई, अलसी, सरसों, एरण्ड, विनौला, मूंगफली में मन्दा आए। सज्जी, लोहा, जस्ता, सीसा, रंग आदि काले पदार्थ, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। ठीक १२ जुलाई को ही बुध पुष्य में प्रवेश करेगा। सोना-चांदी में मन्दा, रुई में घटाबढ़ी से १०/१२ टका मन्दी वने; ऊनी कपड़ों मे तेजी आए।

१३ जुलाई रविवार आषाढ़ी पूर्णिमा वाले दिन पू.षा. नक्षत्र प्रजा में सुभिक्ष एवं धन-धान्यसमृद्धि का संकेत देता है- मंहगाई कम, जनजीवनोपयोगी चीजें मन्दी रहें-

" आषाढ्यां पूर्वकाषाढ़ा वर्षं यावत् शुभंकरा।
आवर्ष धान्य-निष्पत्तिः प्रजा सौख्यमविग्रहत्।।"

१४ जुलाई को आश्लेषा के ४ चरण में गुरु आएगा। घी-तेल एवं प्रत्येक व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी आएगी।

(१ से ४ जुलाई तक वायदा बाजार तेज रहें; ५ जुलाई के लगभग मन्दा; ६ से ६ जुलाई तक तेजी एवं १० से १२ जुलाई तक बाजार अस्थिर रहें।)

१६ जुलाई बुधवार को कर्कराशि में सूर्य, गुरु के साथ मेल करेगा। साथ ही इसी दिन शुक्र पुनर्वसु में भी आएगा। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, विनौला, चांदी एवं सोने में तेजी बने। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग चावल में मन्दा बने।

१७ जुलाई को कर्कराशि में बुध के उदय होने पर वायदा व्यापरी सावधानी से काम करें, बाजारों का रुख देखकर ही व्यापार बढ़ाएं। रुई, चांदी, घी एवं शेयर बाजार में तेजी का रुख होने पर भी अचानक मन्दा आ जाने का योग है।

१८ जुलाई को आश्लेषा का बुध एवं २० जुलाई को पुष्यनक्षत्र का सूर्य तेल, तिलहन, गुड़, [illegible] सोना, चांदी में तेजी करे। रुई में पहले तेजी, बाद में मन्दी बने।

२४ जुलाई को शुक्र कर्कराशि में आकर गुरु एवं सूर्य के साथ मेल करेगा। जब शुक्र सूर्य के साथ राशिसम्बन्ध बनाता है तो व्यापारियों में खरीदारी की प्रवृत्ति प्रबल हो जाती है। कपड़ा व सूत ऐक्रिलिक का उठाव बहुत हो जाता है। निर्यात (Export) के लिए सरकार कोटा ऐलान करती है; रुई, चांदी के व्यापार में एकदम तेजी आती है। लेकिन यहां ग्रहों की पोजीशन में कुछ फर्क है। शुक्र का गुरु के साथ भी मेल हो रहा है। अतः यहां फसल व पैदावार अच्छी होने की अफवाहों से बाजार टूट जाने का भय भी है। हम व्यापारियों को सावधान कर देना चाहते हैं कि- सरकार की व्यापारिक नीति एवं बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। हमारे विचार से शुक्र कर्कराशि में रहता हुआ रुई में पहले अच्छी मन्दी, बाद में अच्छी तेजी करेगा। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर एवं अरहर में मन्दा आए।

२६ जुलाई को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंहराशि में आकर मंगल एवं शनि की दृष्टि में आ जाता है। इसी दिन शुक्र पुष्यनक्षत्र में दाखल होगा। चावल, गेहूं, चना, जौ, सूत, रुई, वस्त्र, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्र, देवदार लकड़ी एवं खट्टे पदार्थ तेज होंगे। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दें हों ।

ध्यान दें;- २६ जुलाई को कर्कराशिस्थ शुक्र भी अस्त हो रहा है। बाजारों में अचानक मन्दे का रुख बने। रुई में वायदा व्यापारी मन्दे से लाभ लें। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी अनाज एकमास में तेज होकर मन्दे हों। सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग एवं केसर में तेजी बने।

[जुलाई १६, १७, २४ को बाजार ऊपर-नीचे रहें; २६ से २८ जुलाई तक मन्दे रहें- वायदा व्यापारी लाभ लें।]

२९ जुलाई को भौमवती अमावस बाजारों में तेजी का संकेत देती है। २९ जुलाई को मन्दगति मंगल कुम्भराशि में वक्री हो रहा है- तेजी का योग है। वायदा / हाजर के व्यापारी तेजी से लाभ लें। शनि के क्षेत्र में मंगल के वक्री होने से शनि के अधिकारक्षेत्र की चीजों मे तेजी आएगी। रुई, सोना, चांदी, अलसी, गुड़, खाण्ड, लालमिर्च, कालीमिर्च में अच्छी तेजी बनेगी। गेहूं, चना, दालवाना में भी तेजी संभावित है। वर्षाकाल में मंगल का वक्री होना कहीं अनावृष्टि किंवा अतिवृष्टि से दुर्भिक्ष की स्थिति बनाता है। मैंथा के व्यापारी इस समय तेजी से लाभ लें।

३० जुलाई को गुरु मघा नक्षत्र एवं सिंहराशि में दाखिल होगा, इसी दिन सिंहराशि में चन्द्रदर्शन भी हो रहा है । सिंहराशि में स्थित गुरु-बुध पर मंगल एवं शनि की दृष्टि है। सुभिक्ष होने पर भी गेंहू, तिल, सरसों, उड़द, घी, चावल, सोना, तांबा, चांदी में तेजी बनेगी। रुई में ४ मास तक घटाबढ़ी के बाद अन्त में अच्छी तेजी बनेगी। इस समय लालरंग की चीजों का स्टॉक करके ६/ ७ मास बाद दोगुना लाभ मिले। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, लालमिर्च का स्टॉक करें, ४ महीने में आगे उत्तम लाभ होगा। समय पर ताजा मशवरा प्राप्त करें।

३१ जुलाई को शनि के आर्द्रा के तीसरे चरण में आने पर यदि अनाज-दालवाना मन्दे हैं तो स्टॉक करें, तीन मास में अच्छा लाभ मिलेगा। गुड़-धान्यादि में तेजी रहेगी।

अगस्त

१ अगस्त को बाजार कुछ मन्दे रहें । ३ अगस्त को आश्लेषा नक्षत्र का सूर्य १४ दिन में सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ एवं नील का भाव तेज करे।

४ अगस्त को पू.फा. नक्षत्र में बुध का प्रवेश होगा। १० दिन में गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज मन्दे होंगे। ६ अगस्त को आश्लेषा नक्षत्र का शुक्र रुई में कुछ मन्दा करेगा, तूअर-चावल में भी मन्दा बनाएगा।

७ अगस्त को गुरु सिंहराशि में अस्त हो जाता है। गुरु पर शनि-मंगल की दृष्टि भी है। रुई एवं शेयरों में तेजी बने। सोना, चांदी एवं अनाजों में मन्दा बने।

७ अगस्त से गुरु-शुक्र दोनों अस्त हो गए हैं। अतः जोरदार तेजी-मन्दी बनेगी, बाजार का रुख देखकर काम करें। हमारा विचार मन्दे का है।

सिंह के गुरु में आने से पहले कोई फसल हानियोग से कम हुई हो तो आगे सिंह के गुरु में वह फसल अत्युत्तम होती है-यह अनुभव है। व्यापारी विचारपूर्वक काम करें।

(७ अगस्त से रुई, शेयरों के व्यापारी तेजी से १३ तक लाभ ले सकेंगे, सोना-चांदी के वायदा व्यापारी मन्दे से लाभ लें।)

१४ अगस्त को मघा २ में गुरु आता है। गुड़, खाण्ड, सब तरह के अनाज, सोना, चांदी, लोहा में मन्दे का रुख रहेगा। अलसी में मन्दी या बहुत घटाबढ़ी चले। १६ अगस्त को बुध उ.फा. में आएगा। ७ दिन में उड़द, मूंग, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनेगी। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, चांदी भी मन्दी रहे।

१७ अगस्त रविवार को सूर्य एवं शुक्र सिंहराशि में गुरु के साथ मेल करेंगे। इन पर शनि, मंगल की दृष्टि है। सोना, तांबा, चांदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि लालरंग की चीजें तेज हों। शेयर बाजार एवं जौ, चना, गेहूं, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च एवं घी में तेजी हो। चांदी में पहले ४ दिन में झटके की मन्दी आए। रुई में पहले ८/१० दिन मन्दी आकर बाद में तेजी बने।

(१४ से १७ अगस्त तक बाजार अस्थिर रहें, लेकिन तेल, तिलहन, चांदी, सोना में कुछ बाजार ठीक रहें।)

२१ अगस्त को बुध कन्या में अपनी ही (उच्च) राशि में दाखिल होगा। रुई, चांदी में मन्दा, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड और हल्दी मे तेजी आएगी।

२५ अगस्त को वक्री प्लूटो ज्येष्ठा २ में आकर गुड़, तेल, तिलहन में कुछ तेजी करेगा। प्लूटो

वृश्चिकराशि में केतु के साथ मेल करने से जलवायु में खेंच करेगा, जिससे बाजार तेज होंगे।

२७ अगस्त को **'नासिक में कुम्भ'** का योग बन रहा है। गुरु-शुक्र दोनों सिंह में अस्त हैं। घी, गुड़, चीनी एवं वस्त्रादिक के व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे।

२८ अगस्त को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में प्रवेश करेगा ; उसी दिन बुध कन्याराशि में वक्री हो रहा है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा बने।

२६ अगस्त को प्लूटो मार्गी हो जाता है; इसी दिन गुरु मघा ३ में पदार्पण करेगा। प्लूटो वृश्चिक-राशि का मालिक है; बाजारों में राजनीतिक-प्रक्रिया तेजी-मन्दी का कारण बनेगी। गुड़, खाण्ड, अनाज, सोना, चांदी, लोहे मन्दे हों। अलसी में जोरदार घटाबढ़ी के बाद मन्दा रहे।

सितम्बर

१ सितम्बर को प्लूटो ज्येष्ठा ३ में दाखल होगा। चांदी में मन्दी; रुई में घटाबढ़ी; गुड़, लालमिर्च में तेजी रहे। २ सितम्बर मंगलवार को गुरु उदित हो जाता है। गुरु का मेल सूर्य-शुक्र के साथ है। शुक्र अस्त ही है। चांदी एवं धान्य तेज रहें, सोने में मन्दा बने। ४ सितम्बर को बुध पश्चिम में अस्त होकर वक्री पोजीशन में दूसरी बार फिर सिंहराशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं गुरु के साथ मेल करेगा। चांदी, सोना, सूत व ऊनी वस्त्र, देवदारु व खट्टे पदार्थों में तेजी रहे। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि पदार्थों में मन्दी बने। अनाज का भाव सम रहे। रुई में मन्दी का जोरदार झटका आएगा, हैसियन एवं शेयर बाजार तेज होंगे।

५ सितम्बर को राहु कृत्तिका १ मेष में एवम् केतु विशाखा ३ तुला में दाखिल होगा। मेषराशि में स्थित राहु पर गुरु की विशेषदृष्टि भी है। गेहूं, जौ, चना एवं दालवाना में तेजी आएगी, कहीं अकाल की पोजीशन से परेशानी भी हो । खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। **जो भी जिन्स कृषिकर्म द्वारा बजारों में आती है, उसको खराब करने में सबसे बड़ा हाथ राहु और शनि का होता है, मेषराशि मंगल की है, मंगल भूमि का पुत्र है। मेषराशि में ही राहु का संचार लगभग १८ वर्ष के बाद हुआ है। फसल खराब होने से पैदावार की कमी हो जाने का भय है, जिससे तेजी का तूफान आने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता ।** लेकिन गुरु की विशेषदृष्टि राहु पर होने से राहु विशेष बुरा फल नहीं कर सकेगा- ऐसा हमारा विचार है।

८ सितम्बर को बुध पू.फा. नक्षत्र के चतुर्थचरण में एवं शुक्र उ.फा. में दाखल होगा। बुध-शुक्र दोनों सिंह-राशि में गुरु-सूर्य के साथ हैं; इन पर मंगल, शनि की दृष्टि भी है। गुड़, खाण्ड मन्दे हों, सोना-चांदी में घटाबढ़ी चले। गेहूं आदि अनाज व रुई में तेजी बने।

१० सितम्बर को शुक्र कन्या में आएगा । कन्या में स्थित शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बने। गेहूं, चावल, चना, दालवाना, गुड़, खाण्ड, ऊनी व रेशमी वस्त्र तेज हों। इस समय चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा।

१३ सितम्बर को सूर्य उ.फा. में आएगा। १४ दिन में रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस एवं नील में तेजी बनेगी।

१४ सितंबर को गुरु मघा नक्षत्र के चतुर्थचरण में आकर गुड़, खाण्ड, चना, चावल, जौ, बाजरा, मटर एवं दालवाना में मन्दे का ही रुख बनाएगा। अलसी में मन्दी की प्रधानता के साथ अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। इस समय सोना, चांदी, लोहा में भी मन्दे का ही विचार है।

१७ सितम्बर बुधवार को सूर्य कन्या में आकर नीच शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य-बुध पर मंगल की विशेष दृष्टि है। सूर्य वायदा एवं हाजर बाजारों को प्रभावित करता है। रुई, एरण्ड, मूंगफली, अलसी, सोयाबीन, सूरजमुखी, खाद्यतेल, अनाज, दालवाना, हल्दी, सोना, चांदी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजार को सूर्य प्रभावित करता है। कन्यासंक्राति की मुहूर्ती ४५ है। **व्यापारी अपने अनुभव के अनुसार ४५ मुहूर्ती वाली संक्रान्ति को मन्दीकारक मानते हैं। लेकिन संक्रान्ति वाले दिन सूर्य पर मंगल की दृष्टि तेजी कारक है। परन्तु किसी बड़ी तेजी की कल्पना न करें; साधारणरूप से बाजार तेज होंगे। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ एवं लाल चीजों में तेजी बने। चांदी व शेयरों में कुछ मन्दा बने।**

१८ सितम्बर को बुध का उदय पूर्व में होगा एवं शुक्र हस्त में दाखल होगा। रुई में झटके से मन्दी आकर एकमास में जोरदार तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि में पहले खूब मन्दा, सवामास के बाद अच्छी तेजी बनेगी। तिल, घी, पाट, हैसियन, एवं लालमिर्च में तेजी रहेगी। बुध का उदय आश्विनमास में होने से कपास की उपज अधिक एवम् धान्य मन्दे होंगे। कपास, रुई, चावल में जोरदार मन्दा आ जाए तो आश्चर्य नहीं। **ध्यान दें-** यदि अनाजों में इस समय मन्दा है तो स्टॉक करें, आगे अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। सोना, चांदी, में कुछ तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चले।

१६ सितम्बर को मंगल वक्री होकर धनिष्ठा नक्षत्र के ४ चरण में दाखल होगा। २० दिन में राई, जौ, चावल, पीतल, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा, में तेजी बने। गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, रुई, सूत, अनाजों में मन्दा रहे।

२० सितम्बर शनिवार को बुध मार्गी हो जाता है। बुध पर मंगल एवं शनि की विशेषदृष्टि है। रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी हो । चांदी मे घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ८ दिन में गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज हों। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, शक्कर, विनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन एवं अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दी बनेगी। सोने में तेजी बने।

२७ सितं. शनिवार को चित्रा नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होगा । इसी दिन सूर्य हस्त में एवं वक्री नेपच्यून श्रवण के दूसरे चरण में दाखल होगा। ठीक **२७ सितं को ही मंगल मार्गी भी हो रहा है। मंगल पर बृहस्पति की नजर है।** गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, गेहूं, जौ, चना, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी

तेज हों। सरसों, तिल एवं अनाजों में मन्दें की प्रतिक्रिया रहे। अलसी तेज रहे। **नोट करें- मंगल के मार्गी होने पर जो वस्तु वायदा बाजार में पहले तेज थी, वह मन्दी हो जाएगी, जो मन्दी थी वह तेज हो सकती है:- सावधानी से काम करें।** रुई में काफी मन्दे की संभावना है, तेल, पीतल, चांदी में तेजी बने। २६ सितम्बर को शुक्र चित्रा में एवं ३० सितम्बर को गुरु पू.फा. में दाखल होगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा गेहूं आदि अनाजों में मन्दा बने। रुई में घटावढ़ी से मन्दा आए।

अक्तूबर

१ अक्तूबर को बुध उ.फा. में दाखल होगा। ७ दिन में उड़द, मूंग, मोठ, मसूर एवं अरहर में कुछ तेजी बने। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने, चांदी में भी मन्दी आए।

३ अक्तूबर को बुध कन्या में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। अपनी ही राशि कन्या में बुध उच्च माना गया है। बुध-सूर्य पर इस समय मंगल की विशेष नजर है। रुई, चांदी में मन्दे के बाद तेजी बने। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनती है। वायदा बाजार में विशेष घटावढ़ी चले। बुध में एक विशेष गुण है- कि वह अफवाहों से जोरदार तेजी-मन्दी का वातावरण बनाता है। सूर्य के साथ बुध का मेल होने से बुध क्रूर एवं तेजीकारक बन जाता है; - यह अनुभव में आया है। यहां कन्याराशि में सूर्य-बुध पर मंगल की दृष्टि होने से तेजीकारक ही है - यह विचारकर ही काम करें। घी, तेल, तिलहन एवं दालवाना में विशेष तेजी के चांस मिलेंगे।

४ अक्तूबर को शुक्र तुलाराशि में दाखल होकर केतु के साथ मेल करेगा। रुई, चांदी में पहले तेजी होकर पीछे मन्दा बने। सोनें में तेजी, चांदी में घटावढ़ी, गुड़, खाण्ड, में कुछ तेजी का वातावरण बन सकता है। ५ अक्तूवर को मंगल शतभिषक् में आएगा। अनाजों में मन्दे का रुख रहे; रुई, सोना, चांदी में मन्दे के बाद तेजी हो।

६ अक्तूबर को शुक्र पश्चिम में उदित होगा। घी, खाण्ड में मन्दी, रुई, वस्त्र, सूत, सण, सोना, चांदी, तिल एवं चावलों में तेजी हो। ७ अक्तू. को बुध पूर्व में अस्त हो जाता है,- ३३ दिन में अनाज, घी मन्दे होंगे; रुई में घटावढ़ी चले, पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज हो। सोने मे घटाबढ़ी के बाद तेजी हो ।

९ अक्तूबर को बुध हस्तनक्षत्र में दाखल होगा। गेहूं आदि अनाजों में मन्दा बनेगा। १० अक्तूबर को सूर्य चित्रा में एवं शुक्र स्वाती में दाखल होगा। १५ दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी का रुख रहेगा।

१६ अक्तूबर को बुध भी सूर्य के साथ चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। इस समय अनाजों में भी कुछ तेजी का ही रुख रहेगा।

१७ अक्तूबर को सूर्य अपनी नीचराशि तुला में आकर शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। सूर्य-शुक्र का राहु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांवा में तेजी, लालचन्दन, श्रीफल एवं सुपारी में भी तेजी बनेगी। **इस समय तुलासंक्रान्ति ४५ मुहूर्ती है, जिसे व्यापारी मन्दीकारक ही मानते हैं। सूर्य जब-जब राहु या क्रूरग्रह के साथ मेल करता है तब बाजारों में निश्चित घटाबढ़ी चलती है।** एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सोना, चांदी, हल्दी, कालीमिर्च, अनाजों एवं शेयर बाजार के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर काम करें ; अच्छी तेजी या मन्दी संभव है। हमारे विचार से साधारणतया तेजी ही रहेगी।

२० अक्तूबर को बुध तुला में एवं शुक्र विशाखा में आ जाते हैं । **तुलाराशि में सूर्य-शुक्र एवं केतु पहले ही बैठे हैं। बुध का इनके साथ मेल तेजीकारक ही रहेगा- ऐसा ख्याल है। सूर्य-केतु के साथ बुध तेजी को बढ़ाता है।** रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम में तेजी बनेगी। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, विनौला, मूंगफली, तेल, तिलहन में कुछ मन्दा आकर तेजी बनेगी।

२३ अक्तूबर को मकरराशि में नेपच्यून मार्गी हो रहा है। २४ अक्तूबर को सूर्य एवं बुध दोनों स्वाती नक्षत्र में दाखल होंगे। सण, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग एवं गुग्गुल में तेजी का रुख रहेगा। रुई, सूत में कुछ मन्दी रहे।

२५ अक्तूबर शनिवार को 'दीपावली' होगी। इसदिन शनि वक्री होकर उल्टी चाल से चलने लगता है। शनि मिथुनराशि में है। शनिवारी दीपावली तेल-तिलहन में भारी तेजी का संकेत देती है। गेहूं, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, सोयाबीन, सूरजमुखी, तारामीरा एवं खाद्यतेलों में तेजी बनेगी। सिक्का, कली, गेहूं में तेजी बने।

२८ अक्तूबर को वृश्चिकराशि में शुक्र प्रवेश करेगा। यहां प्लूटो ग्रह पहले ही मौजूद है। रुई, शेयर, चांदी में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी हो; गुड़ में घटाबढ़ी चले, अलसी तेज हो। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में भी तेजी ही रहे।

३१ अक्तूबर को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। २२ दिन में गुड़, चावल, खाण्ड एवं नमक आदि में मन्दा बने।

नवम्बर

१ नवंबर को बुध विशाखा में दाखिल होगा। रुई में झटके से जोरदार मन्दा आने का योग है। अनाजों का भाव राजस्थान, महाराष्ट्र में तेज, उत्तरी भारत में कुछ मन्दा रहे ।

६ नवम्बर को सूर्य विशाखा में एवं गुरु पू.फा. के तीसरे चरण में दाखल होगा। १४ दिन में जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल एवं एरण्ड में तेजी बने। अलसी, रुई एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

७ नवम्बर को राहु भरणी ४ में एवं केतु विशाखा २ में दाखल होगा। कपास, गुड़, खाण्ड, घी, तेल में तेजी आती है। गेहूं, चावल में तेजी का रुख रहे। **८ नवम्बर को बुध वृश्चिकराशि में आकर शुक्र के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन यूरनेस कुम्भराशि में अपनी मार्गी पोजीसन में आ जाता है। ८ नवम्बर को ही कार्तिकी पूर्णिमा वाले दिन (शनिवार को) ग्रस्तास्त- खग्रास दृश्य चन्द्रग्रहण ९ नवं. को सूर्योदय से पूर्व समस्त भारत में घटित होगा। घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी बने। अनाजों-दालवाना में यदि इस समय मन्दा है तो स्टॅाक करें, आगे ४/५ मास में उत्तम लाभ मिलेगा।**

"यदि कार्त्तिके मासे तु ग्रहणं सूर्य-चन्द्रयोः।
संग्रहः सर्वधान्यानां कर्तव्यो धनकांक्षिभिः।
विक्रीते पंचमे मासि लाभश्च द्विगुणो भवेत्।।"

१० नवम्बर को बुध अनुराधा में दाखल होगा। सूत, सण, रुई, सोना, चांदी मन्दे रहें। ११ नवम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का शुक्र अनाजों में कुछ तेजी, सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल एवं हींग में मन्दा करे।

१६ नवम्बर को वृश्चिकसंक्रान्ति रविवारी एवं आश्लेषा नक्षत्र में लगेगी। मुहूर्ती १५ है। ध्यान दें,- संक्रान्ति एवं अमावस दोनों रविवार को ही होने से 'खप्पर' योग बन रहा है। वृश्चिकराशि में बुध-शुक्र पहले ही विद्यमान हैं। इस समय हाजर एवं वायदा बाजार तेज रहेंगे। रुई, तांबा, सोना, चांदी एवं ऊनी वस्त्र तेज होंगे। लालचीजों में कुछ मन्दे का प्रभाव भी रह सकता है,- सावधानी से काम करें। तेल, तिलहन, दालवाना, गेहूं, चना आदि में भी तेजी ही बने।

१६ नवम्बर को संक्रान्ति के ही दिन मंगल पू.भा. एवं नेपच्यून श्रवण ३ में प्रवेश करेगा। तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास एवं सोना-चांदी में तेजी बनेगी। गेहूं में भी तेजी रहे।

१७ नवम्बर को बुध पश्चिम में उदित होगा। वस्त्र, रुई एवं शेयरों में १५ दिन में मन्दा बने। बुध का उदय मार्गशीर्ष में होने से रुई में मन्दे की जगह तेजी आएगी- ऐसा अनुभव में आया है। अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें।

१९ नवम्बर को सूर्य अनुराधा में एवं बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। जौ, चना, चावल आदि धान्यों में तथा ऊन व सोना-चान्दी में तेजी बनेगी। गेहूं, अलसी, मिर्च में तेजी होकर मन्दा बने।

२२ नवम्बर को शुक्र मूलनक्षत्र एवं धनुराशि में प्रवेश करेगा। धनुराशि में स्थित शुक्र पर शनि की पूर्णदृष्टि है। तेल एवं तिलहन में तेजी बने। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चांदी, सोना, ताम्बा आदि धातु एवं शेयर बाजार में तेजी बने। रुई, कपास, सूत पहले मन्दे होकर बाद में तेज हों।

२५ नवम्बर को मंगलवारी चन्द्रदर्शन अनाजों तथा वायदा व्यापार में तेजी बनाए। सरसों, मूंगफली व अन्य तिलहन में तेजी बने। रुई में मन्दे के बाद तेजी, चांदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेज ही रहे।

२८ नवम्बर को बुध मूलनक्षत्र एवं धनुराशि में प्रवेश करेगा। धनुराशि में शुक्र पहले ही मौजूद है। **जब बुध का मेल शुक्र के साथ होता है तब जोरदार तेजी या मन्दे की मौजूदा लाईन को बढ़ावा देता है। यदि मन्दे की लाइन चल रही हो तो मन्दा, यदि तेजी की लाइन चल रही हो तो तेजी को खूब बढ़ावा मिलता है; - इसलिए बाजार के रुख को देखकर व्यापार वढ़ावें। लाभ में रहेंगे। रुई, कपास, वस्त्र, जूट, चांदी में मन्दा सम्भव है। तिलहन, दलहन एवं खाद्यतेलों में भी अच्छी तेजी या मन्दा बनेगा; बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ावें।**

दिसम्बर

२ दिसम्बर को गुरु पू.फा. के चतुर्थ चरण में एवं शुक्र पू.षा. में प्रवेश करेगा। मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, क्षारद्रव्य नमक आदि मन्दे हों। गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी एवं अनाज मन्दे हों। रुई में मन्दे के बाद तेजी, यदि रुई में पहले तेजी हो तो बाद में मन्दी आए।

३ दिसम्बर को जयेष्ठा नक्षत्र का सूर्य सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड एवं गुड़, खाण्ड में तेजी हो। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी हो। ५ दिसम्बर को मंगल मीनराशि में आकर शनि की नजर में आ जाता है। सोना, रुई में तेजी, लकडी के फर्नीचर में भी तेजी बने। चांदी में घटाबढ़ी से पहले मन्दी, फिर तेजी हो। ८ दिसम्बर को पू.षा. नक्षत्र का बुध बिनौला में तेजी, अनाजों में मन्दी करे। इस समय सोना-चांदी में खासी मन्दी आने का योग है।

११ दिसम्बर को मंगल उ.भा. में एवं १३ दिसम्बर को शुक्र उ.षा में पदार्पण करेगा। गुड़, खाण्ड में मन्दा आए। अनाजों में तेजी, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी आए। तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास, सोना-चांदी में तेजी बनेगी।

१६ दिसम्बर को धनु संक्रान्ति मंगलवारी है। अमावस भी मंगलवारी होने से 'खप्परयोग' बन गया है। धनुराशिस्थ सूर्य पर शनि की पूर्णदृष्टि है, साथ ही गुरु की विशेषदृष्टि भी है। धनु राशि में बुध पहले ही स्थित है। सूर्य-बुध के राशिसम्बन्ध के कारण यह योग तेजीकारक ही रहेगा। तेल, तिलहन, दालवाना, चना, चावल, सोना, चांदी, अलसी, रुई, कपास में तेजी से लाभ मिलेगा।

१६ दिसम्बर को शुक्र मकरराशि में आकर नेपच्यून के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। शेयर बाजार तेज रहें, गुड़, खाण्ड, घी एवं गेहूं, चना आदि सब अनाजों में तेजी रहे। रुई-चांदी में घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी ही बनेगी।

१७ दिसम्बर को बुध वक्री हो जाता है। शनि पहले ही वक्री है। शनि-बुध का समसप्तकयोग चल रहा है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल-तिलहन में तेजी से लाभ मिले। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे हों। रुई में जोरदार मन्दी के बाद तेजी बनेगी।

२० दिसम्बर को वक्री बुध पश्चिम में अस्त हो जाता है। रुई में जल्दी ही झटके से मन्दा बने। चांदी तेज, पाट-हैसियन एवं शेयर मन्दे रहें।

२१ दिसम्बर को वक्री शनि आर्द्रा की तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। गुड़-धान्य में तेजी हो। सारे अनाज, अलसी, सरसों, तिल, तेल व रुई में मन्दे का वातावरण बने। यदि अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें - आगे लाभ होगा। २३ दिसम्बर को भौमवती अमावस भी वायदा बाजारों में तेजी का ही संकेत देती है।

२४ दिसम्बर को बुधवारी चन्द्रदर्शन तथा इसी दिन शुक्र श्रवण में दाखल होगा। चांदी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, सण, बारदाना, जूट, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द, अनाज में मन्दा बनेगा। तेल, घी, रुई में मन्दे के बाद तेजी बने।

२५ दिसम्बर को वक्री बुध मूल के चतुर्थचरण में आएगा। अनाज, सोना-चांदी में मन्दी, रुई में घटाबढ़ी चले।

२६ दिसम्बर को सूर्य पू. षा. नक्षत्र में दाखल होगा। १४ दिन में तिल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण एवं चांदी में तेजी हो।

जनवरी (सन् 2004 ई.)

१ जनवरी को धनुराशि में बुध का उदय पौषमास में दशमी तिथि में हो रहा है। इस समय बुध पर गुरु-शनि की दृष्टि भी है। रुई में पहले मन्दी होकर २५ दिन के अन्दर झटके की तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि में ४० दिन में अच्छी तेजी बनेगी। तिल, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च में भी तेजी बनेगी।

३ जनवरी को मंगल रेवती में, प्लूटो ज्येष्ठा ४ में दाखल होगा। इसी दिन गुरु भी वक्री होगा। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, चावल आदि अनाज अलसी व घी में मन्दा बने। सोना आदि धातु व ऊनी वस्त्र मे तेजी हो। चांदी मे विशेष तेजी बने। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

४ जनवरी को शुक्र धनिष्ठा में आकर चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, एवं कपास में तेजी का रुख बनाएगा। गेहूं में कुछ मन्दा ही रहे।

६ जनवरी को बुध मार्गी हो जाएगा। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। चांदी, चावल में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। प्लाई एवं इमारती लकड़ी तेज हो। ८ दिन में गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज हों, रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली एवं अन्य तिलहन में अचानक मन्दा बनने का योग है।

(मासारम्भ में बाजार तेज, ३ से ५ जन. तक वायदा बाजार मन्दे एवम् ६ से ८ जनवरी तक वायदा बाजार तेज रहेंगे।)

९ जनवरी को शुक्र कुम्भ में आकर तेलवाना में घटाबढ़ी से बाजार मन्दे की तरफ जाएंगे। **व्यापारी नोट करें- शुक्र जब अकेला किसी राशि में संचार करता है, तो बाजारों में अच्छी मन्दी ला देता है।** शुक्र विशेषतः रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, तिलहन एवं दालवाना के बाजारों को विशेषतः प्रभावित करता है। रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा, चीनी, चावल में अच्छी मन्दी आने का योग है। **ठीक ९ जनवरी को ही** राहु भरणी के तीसरे चरण में एवं विशाखा के प्रथम चरण में केतु का संचार कपास, गुड़, खाण्ड, घी, तेल मे तेजी बनाएगा। इस प्रकार ९ जनवरी को तेजी मन्दी के दोनों योग कुछ चीजों में बन रहे हैं; इसलिए सावधानी से व्यापार करें। लेकिन हमारा विचार ज्यादातर मन्दे का ही है।

११ जनवरी को सूर्य के उ.षा. में आने पर १४ दिन में उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़-खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों, मूंज, पट्टसूत्र तेज हों।

१२ जनवरी को यूरेनस शतभिषा १ में आएगा; शुक्र कुम्भ में यूरेनस के साथ बैठा है। शुक्र भी शतभिषा, में जल्द ही आने वाला है। शुक्र कुम्भराशि में मन्दी कारक है, अतः यूरनेस शुक्र के साथ मन्दी को बल देगा;- ऐसा विचार है । फिर भी बाजार के रुख को देखकर काम करें।

१४ जनवरी को सूर्य मकरराशि में आकर नेपच्यून के साथ मेल करेगा। मकरसंक्रान्ति बुधवारी है एवं अमावस भी बुधवारी होने से **खप्परयोग** बन गया है। मकरसंक्रान्ति मुहूर्ती ३० है। यह योग घटाबढ़ी के बाद तेजी का सूचक है। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं रुई मे तेजी ही बनेगी। गेहूं आदि अनाजों एवं वारदाना में रुख मन्दे की ओर रहता है।

१५ जनवरी को शुक्र शतभिषा में आएगा। गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी में तेजी बने। २१ जनवरी को बुध पू.षा. में आकर बिनौला में तेजी, अनाजों में मन्दी एवं सोना-चांदी में विशेषरूप से मन्दा करेगा; दैनिक तेजी-मन्दी के व्यापारी लें।

[९ जनवरी से २३ जनवरी तक उत्तम-मध्यमरूप से बाजार मन्दे की तरफ ही रहेंगे ।]

२३ जनवरी शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होगा। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी-वस्त्र व ऊन में मन्दा बने। रुई, चांदी, सोना, में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी रहे।

२४ जनवरी को मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में दाखल होगा। मेषराशि मंगल की निजी राशि है। मंगल मेषराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। मंगल राहु पर गुरु की विशेष दृष्टि है। तेजी-मन्दे की अच्छी प्रतिक्रिया अनुभव होगी। गेहूं आदि अनाजों एवं दालवाना में मन्दे के बाद तेजी का रुख

रहेगा। सोना, चांदी आदि धातुएं, मूंगा, मोती आदि रत्न, ऊन, रूई, कपास, पाट तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। राजनैतिक- विक्षुब्ध वातावरण का प्रभाव व्यापार पर अनुभव होगा ; सावधानी से काम करें।

२६ जनवरी को शुक्र पू.भा. में एवं ३१ जनवरी को बुध उ.षा. में दाखल होगा। परिणामस्वरूप रुई में तेजी एवं अनाजों में मन्दी आएगी।

फरवरी

२ फरवरी को बुध मकरराशि मे आकर सूर्य के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा। इस समय वायदा एवं हाजर के बाजारों में विशेष उथल-पुथल होगी। विशेषरूप से रुई, एरण्ड, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, चांदी, शेयर, हल्दी, काली-मिर्च के व्यापारी सावधानी से काम करें। सूर्य के साथ जब बुध का मेल होता है तो बुध क्रूर बन जाता है, इसस्थिति में बुध की तेजी की पावर बढ़ जाती है। **बुध बालग्रह है, अफवाहों को फैलाकर बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी करता है। बाजारों पर स्थायी प्रभाव न पड़कर ५/७ दिन की तेजी मन्दी ही बना करती है। नोट करे :- जब बुध मकरराशि में होता है तो कभी जोरदार मन्दा भी करता है। अतः बहुत सूझबूझ मे काम करें। हमारे विचार से रुई, सोना, चांदी में तेजी बनेगी, तेल, तिलहन में भी तेजी ही बनेगी।**

३ फरवरी को शुक्र मीन में आकर शनि की नजर में आ जाता है। **मीनराशि में शुक्र उच्च माना गया है। रुई, गुड़, खाण्ड, तिलहन, और चांदी के बाजारों पर शुक्र विशेष तेजी-मन्दी करता है। मीनराशि का शुक्र चांदी में साधारण मन्दी करके फिर तेजी करता है।** अनाज, सरसों, अलसी, एरण्ड, तेल, तिलहन, एवं गुड़-खाण्ड में भी मन्दा करेगा। रुई में तेजी का रुख रहेगा।

४ फरवरी को वक्री शनि आर्द्रा के दूसरे चरण में एवं ५ फरवरी को वक्री गुरु पू. फा. ३ में दाखल होगा। मूंग, मोठ, कोदा, जौ, कपास में तेजी बने। गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा, रुई में घटावढ़ी के बाद मन्दा बने।

६ फरवरी को बुध श्रवण में आकर १० दिन में गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में तेजी करेगा। **१३ फरवरी को सूर्य कुम्भराशि में आकर-गुरु की नजर में आ जाएगा। कुम्भराशि का मालिक-शनि है, जोकि सूर्य का शत्रु है।** घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली एवं राई में तेजी रहे। रुई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में मन्दे का रुख बने।

१४ फरवरी को मंगल भरणी में आकर गेहूं आदि अनाजों एवं सोना-चांदी-रुई में तेजी करे। १५ फरवरी को बुध पूर्व में अस्त हो रहा है। बुध शनि की राशि में है। बुध भी मार्गी है। अनाज, घी आदि मन्दे हों। रुई में घटाबढ़ी; पहले तेज, बीच में मन्दी और अंत में रुई फिर तेज हो। सोने में घटाबढ़ी होकर तेजी हो।

१७ फरवरी को शुक्र रेवती में आकर रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर और जवाहरत आदि में मन्दा करे। १८ फरवरी को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में दाखल होगा। चावल एवं सोंफा (स्वांक) में तेजी बने। सोना-चांदी मन्दे हों, रुई में घटावढ़ी हो । १६ फरवरी को सूर्य शतभिषा में आकर १४ दिन में सोना, चांदी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, लाख, छुहारा, मोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ के भाव में तेजी बनाएगा।

नोट :- कुम्भसंक्रान्ति एवं अमावस दोनों शुक्रवारी होने से 'खप्परयोग' बनाते हैं। यह योग बाजारों में राजनीतिक गहमागहमी या अन्तर्देशीय अशान्ति से व्यापार को प्रभावति करेगा, सावधानी से काम करें।

२१ फरवरी को बुध कुम्भ में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। बुध अस्त है। गुरु की इन पर पूरी नजर है। अलसी, रुई, में मन्दी हो; चांदी में मन्दी होकर पीछे कुछ तेजी हो; घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे; अनाजों के भाव यथावत् बने रहें।

२५ फरवरी को बुध शतभिषा में दाखल होगा। चांदी-सोना मन्दे एवं अनाज कुछ तेज रहें।

२६ फरवरी को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में दाखल होगा। मेषराशि में मंगल एवं राहु पहले ही मौजूद हैं। लेकिन इन पर गुरु की विशेष नजर है। जौ, चना-गेहूं आदि अनाज तेज हों, सोना-चांदी में खास तेजी हो। गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट आदि में खास घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। ऊन, तिल, सरसों, अलसी एवं एरण्ड में कुछ मन्दी रहे।

मार्च

१ मार्च को नेपच्यून श्रवण ४ में दाखल होगा। तेल, तिल, लाख में कुछ तेजी बने। **४ मार्च को बुध एवं सूर्य पू.भा. में एवम् वक्री गुरु पू.फा. २ में दाखल होगा।** चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं एवं खाद्यतेल तेज होंगे। चांदी में घटाबढ़ी चले। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

६ मार्च को मंगल कृत्तिका नक्षत्र में दाखल होगा। गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत, वस्त्र तेज होंगे। रुई में तेजी के बाद मन्दा बने। **६ मार्च को शनिवारी होलिकादहन भी वायदा-हाजर बाजारों में तेजी का ही संकेत देता है।**

७ मार्च रविवार को मिथुनराशि में शनि मार्गी हो रहा है। ६ दिन में रुई मन्दी होकर तेज हो । दो मास में तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च में तेजी का ही वातावरण बनेगा। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, कहीं सरकारी नीति का व्यापारक्षेत्र पर प्रभाव पड़ने से तेजी का वातावरण बनेगा।

६ मार्च को बुध मीनराशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा, इस समय मीनराशि में स्थित सूर्य-बुध पर शनि की विशेष दृष्टि भी होगी- सूर्य एवं अतिचारी बुध एकत्र होकर तेजी को बल देते हैं। यहां

खास बात यह है, कि जब भी बुध अतिचारी होकर सूर्य के साथ मेल करता है तो अफवाहों से जोरदार तेजी या मन्दा बनता है। यद्यपि मिथुनराशि का बुध मन्दीकारक है, लेकिन सूर्य का साथ एवं शनि की दृष्टि एवं बुध का अतिचारी होना यहां तेजीकारक ही रहेगा। सबसे अधिक असर तिलहन बाजारों पर होगा। तेल, बिनौला, सरसों, एरण्ड, अलसी, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, रुई, गुड़, खाण्ड में तेजी हो। चांदी में घटाबढ़ी के बाद अस्थाई तेजी हो।

१० मार्च को बुध के उ.भा. में आने पर चांदी में घटाबढ़ी; रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाज का भाव सम रहता है।

११ मार्च को मंगल वृषराशि में आकर एक महीने में सभी अनाजों, लालमिर्च, लालचन्दन, रुई-सूत-कपास, कपूर, केसर, तेल, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता आदि धातु एवं शेयरों में तेजी बनाएगा। वायदा व्यापारी तेजी से निकल जाएं।

१२ मार्च को शुक्र भरणी में, राहु भरणी के दूसरे चरण में एवं यूरनेस शतभिषा के दूसरे चरण में दाखल होगा। जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी-सोना, हीरा-मणि-मोती आदि जवाहरात में मन्दे का वातावरण बनेगा।

१४ मार्च को सूर्य मीनराशि में दाखल होगा, मुहूर्ती ३० है। इस समय अतिचारी बुध मीन में ही है; इन दोनों पर शनि की नजर भी है । तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई एवं सोना में तेजी अच्छी बनेगी। प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दे की तरफ झुकाव होता है। चांदी में मन्दा नजर आएगा।

१७ मार्च को सूर्य उ.भा में एवं बुध रेवती में दाखल होगा। इसी दिन बुध पश्चिम मे उदित होगा । चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल तेज हों, केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, गेरु, लालमिर्च में भी तेजी रहे। घी एवं चांदी में मन्दा रहेगा। शेयर बाजारों में १५ दिन में मन्दा बने। २० मार्च को शनिवारी अमावस भी बाजारों में तेजी का ही इशारा करती है।

शुभ संवत् २०६१ वि. का राजा सूर्य है। २१ मार्च को शुभ संवत का प्रारंभ है । व्यापारियों के लिए यह वर्ष सरकारी नई योजनाओं से कुछ उलझनपूर्ण है।

२४ मार्च को शुक्र कृत्तिका में आएगा। शुक्र मेष में राहु के साथ है। जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, चांदी, सोना, में मन्दा बनने का योग है।

२५ मार्च को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेषराशि में शुक्र-राहु के साथ मेल करेगा। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, चना, अलसी, मूंग, मोठ में तेजी व दूध, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, में मन्दा बनेगा। इस समय चांदी में अच्छी मन्दी का झटका आएगा।

२७ मार्च को रोहिणी नक्षत्र में मंगल दाखल होगा। रुई, कपास, सूत, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग और शेयरों में एकदम तेजी बनेगी।

२८ मार्च को शुक्र वृषराशि में दाखल होकर मंगल के साथ मेल करेगा। रुई, कपास में अच्छी मन्दी या तेजी बनेगी, बाजार के मुताबिक चलें । सोना-चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। अनाजों में कुछ मन्दा रहे। घी, गुड़, खाण्ड, चावल कुछ तेज रहें।

३० मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना एवं चावल में तेजी करेगा।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी सन् 2003 ई. से 20 मार्च, सन् 2004 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगल कृत्य करना तो वर्जित है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी सन् 2003 ई. से 20 मार्च सन् 2004 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रो के निर्माण से एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

ग्रहणों के पर्वकाल को भी साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व, वारुणीपर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय आदि योग कमी–कमी आते हैं। इसवर्ष अर्धोदय आदि योगों में से कोई भी योग नहीं बना है।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2003 ई.)			
20 जन.	11 23	20 जन.	23 33
19 फर.	1 31	19 फर.	13 31
21 मार्च	0 31	21 मार्च	12 31
20 अप्रै.	11 33	20 अप्रै.	23 33
21 मई	10 42	21 मई	22 42
21 जून	18 40	22 जून	6 40
23 जुला.	5 34	23 जुला.	17 34
23 अग.	12 38	24 अग.	0 38
23 सितं.	10 17	23 सितं.	22 17
23 अक्तू.	19 38	24 अक्तू.	7 38
22 नवं.	17 13	23 नवं.	5 13
22 दिसं.	6 34	22 दिसं.	18 34
सन् 2004 ई.			
20 जन.	17 12	21 जन.	5 12
19 फर.	7 20	19 फर.	19 20
20 मार्च	6 19	20 मार्च	18 19

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल, इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2003 ई.)			
14 जन.	13 06	14 जन.	20 47
27 जन.	1 04	27 जन.	6 34
9 फर.	4 22	[illegible] फर.	9 53
21 फर.	16 42	2[illegible] फर.	20 50
6 मार्च	13 33	6 मार्च	18 11
19 मार्च	6 14	19 मार्च	10 21
19 मार्च	11 39	19 मार्च	15 17
31 मार्च	22 38	1 अप्रै.	3 09
14 अप्रै.	9 45	14 अप्रै.	13 42
26 अप्रै.	9 21	26 अप्रै.	14 20
10 मई	5 54	10 मई	11 08
22 मई	2 17	22 मई	8 33
5 जून	3 54	5 जून	11 41
17 जून	12 34	17 जून	20 54
27 जून	16 50	28 जून	2 15
10 जुला.	20 35	11 जुला.	3 14
23 जुला.	23 39	24 जुला.	6 20
5 अग.	22 01	6 अग.	2 50
18 अग.	15 44	18 अग.	20 48
31 अग.	16 [illegible]	[illegible]	[illegible]

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2003ई.)			
13 सितं.	4 36	13 सितं.	8 59
8 अक्तू.	17 07	8 अक्तू.	21 26
22 अक्तू.	9 10	22 अक्तू.	13 17
3 नवं.	5 57	3 नवं.	10 49
17 नवं.	4 16	17 नवं.	9 51
29 नवं.	1 51	29 नवं.	7 59
13 दिसं.	4 58	13 दिसं.	13 06
सन् 2004ई.			
4 जन	7 55	4 जन.	16 04
17 जन.	17 53	17 जन.	23 26
30 जन.	6 36	30 जन.	12 19
12 फर.	14 09	12 फर.	18 29
24 फर.	20 58	25 फर.	1 24
9 मार्च	6 29	9 मार्च	10 17

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
(सन् 2003ई.)			
10 जन.	13 17	11 जन.	1 17
6 अप्रै.	2 24	6 अप्रै.	14 24
4 जुला.	5 47	4 जुला.	17 47
1 अक्तू.	11 35	1 अक्तू.	23 35
सन् 2004ई.			
10 जन.	19 26	11 जन.	7 26

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है;-यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म [illegible] गया है।

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभमुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन-संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़ निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके, सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे-** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्वपूर्ण रात्रियों में किंवा उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,-**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्तशब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र में शून्य-महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होता है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रछन्नशक्ति होती है।

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिकप्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्ति-सम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुतशक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव वाले हैं;- **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। नोटः- मन्त्र का पुरश्चरण करते समय गुप्त रखें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है;- **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

बालरक्षा विधि (अनुभूत प्रयोग)

यदि दृष्टिदोष या नजर-टोना आदि के कारण बालक के शरीर में कोई परेशानी हो तो निम्नलिखित चार मन्त्रों से देसी गाय के गोबर की शुद्ध भस्म या त्रिशक्ति (गुग्गुल, लौंग, लोवान) की धूप-जन्य विभूति से अभिमन्त्रित करके बालक के मस्तक-कण्ठ या हृदयादि अंगों पर लगाने से बालक का कष्ट तुरंत दूर हो जाता है; अनुभव करें।

मन्त्र :- " ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनावर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।
कृष्ण ! रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृ-ग्रहानपि।।
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।।"

सर्वविध कष्ट हरण मन्त्र

"ॐ श्री हरिः ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नम : ॐ श्री हरिः ॐ।।"

विधि- गुग्गुल, लौंग, लोवान की धूप घर में करते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें; एवं जो इनसे विभूति प्राप्त होगी उसको थोड़ा जल में डालकर घर को धो दें, स्नान करें; सभी संकट दूर हो जाएंगे।

शिशु-रक्षक कवच

निम्नलिखित कवचमन्त्रों को दीपावली या शिवरात्रि की रात्रि में लिखकर रखें। शिशु-रक्षा के लिए इसे लाल कपड़े में बांध कर गर्भिणी स्त्री के गले में डालें, या प्रसूति के बाद शिशु के गले में डालें। शिशु चिरंजीव रहेगा, कोई कष्ट नहीं आएगा। इस कवच को **'कार्तिकेयाक्षय कवच'** भी कहते हैं।

सर्वप्रथम इस कवच को जागृत करने के लिए पूर्णरूप से बारंबार पढ़ें, तथा विनियोगपूर्वक पाठ करें। **जब इसका प्रयोग करना हो तो केवल " ॐ बाहुलेयः शिरः पायातु स्कन्दः शंकर नन्दनः।"** यहां से प्रारम्भ करके **" राधिकायास्तथा पुत्रो निर्जरैरपि दुर्जयम्"** तक हल्दी या चन्दन से लिखकर चार तहों में लाल कपड़े से बांधकर गले में डालें, प्रसूति के बाद धूप देकर बच्चे के गले में डालें, बच्चा निरोग, चिरंजीव रहे।

रक्षाकवच पाठ

देव्युवाच

ये ये मम सुता जातास्ते ते कंसनिषूदिताः। कथं मे सन्ततिस्तिष्ठेद्ब्रूहि मे मुनिपुंगव।।

नारद उवाच

येनोपायेन लोकेऽस्मिन् सन्ततिश्चिरंजीविका । तत् ते सर्वं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय।।

ॐ अस्य स्कन्दाक्षयकवचस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दःसेनानीर्देवता। वत्सरक्षणे विनियोगः।- (यहां जल का त्याग करें।)

ॐ बाहुलेयः शिरः पायात्स्कन्दः शंकरनन्दनः। मुण्डं मे पार्वती-पुत्रो हृदयं शिखिवाहनः ।।
कटिं पायात् शक्तिहन्ता जंघे द्वे तारकान्तकः। गुहो मे रक्षतां पादौ सेनानीर्वत्समुत्तमम्।।
स्कन्दो मे रक्षतामंगं दशदिग्वह्निभूमय :। षाण्मातुरो भये घोरे कुमारोऽव्यात् श्मशानके।।

इति ते कथितं भद्रे कवचं परमाद्भुतम्। धृत्वा पुत्रमवाप्नोति सुभव्यं चिरंजीविनम्।।
नारदस्य वचः श्रुत्वा कवचं विधृतं तया। कवचस्य प्रसादेन तस्याः पुत्रो जनार्दनः।।
राधिकायास्तथा पुत्रो निर्जरैरपि दुर्जयम्।।
।। उमयामले कार्तिकेयाक्ष-कवचं संपूर्णम्।।

रोग शान्ति एवं आरोग्य लाभार्थ

"ॐ मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देव देव नमोऽस्तुते ॐ।।"

उल्लिखित मन्त्र को ग्रहण के समय या दीपावली की रात्रि में सिद्ध कर लें । तत्पश्चात् बर्तन में शुद्ध जल लेकर बर्तन को हाथ से ढककर सात बार इसमन्त्र का जप विश्वास पूर्वक करके रोगी को पिलावें। प्रतिदिन ऐसा करने से रोगी रोग से शीघ्र ही मुक्त हो जायेगा।

नेत्ररोग शान्त्यर्थ शाबर मंत्र

"ॐ नमो श्री राम की धनुही लक्ष्मण का बाण। आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।।"

इसमन्त्र का उच्चारण करते हुए नीम की डाली से २१ बार झाड़ना चाहिए। इस प्रक्रिया को क्रमशः तीन दिन करें तो नेत्ररोग शान्त हो।

चेचकरोग शान्त्यर्थ मंत्र

" ॐ श्रीं श्रां श्रूं श्रौं श्रं ॐ खरस्थां दिगम्बरां विकटनयनां, तोयस्थितां भजामि स्वाहा, स्वाङ्गस्थां प्रचण्डरूपां नमाम्यात्मविभूतये।"

मिट्टी के पात्र में पवित्र जल को उपरोक्त मन्त्र से ग्यारह बार अभिमन्त्रित करें, और रोगी को पिला दें एवं शरीर के समस्त अंगों पर उस जल से छींटे दें। साथ ही उल्लिखत मन्त्र का जाप करते हुए मयूरपंख से रोगी को ११ बार झाड़ें। रोग शान्त होने लगता है। रोगशान्ति तक प्रतिदिन प्रातः एवं सायं दोनों बार यह प्रयोग करता रहे। चेचकरोग के दुःखद भयंकर प्रकोप से शीघ्र ही मुक्ति मिल जाती है।

सिद्ध नृसिंह मन्त्र

" ॐ नमो भगवते वीर नृसिंहाय, ज्वालामालिने दीप्तदन्ताय, अग्निनेत्राय, सर्वरक्षोघ्नाय, सर्वभूत- विनाशनाय, सर्वज्वरविनाशनाय, हन हन, दह दह, पच पच, बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, हुं फट् स्वाहा।"

विधान- उपरोक्त मन्त्र कृष्ण चतुर्दशी को प्रारम्भ करके पांच हजार जाप करके सिद्ध कर लें। फिर इसमन्त्र को ११ बार पढ़कर झाड़ने या जल अभिमन्त्रित करके देने से भूत-प्रेत, नजर, ज्वररोग तथा ग्रहजन्य-पीड़ा से तुरन्त मुक्ति मिलती है ।

(मिरगी) मृगी रोग शान्त्यर्थ साबर मन्त्र

"ॐ हलाहल सरगत मढ़िया पुरिया श्री राम जी फूंके मृगी बाई सूखे सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।"

इसमन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांध देना चाहिए, मृगी का दौरा नहीं पड़ेगा।

भूतप्रेत-बाधा शान्त्यर्थ अनुभूत मन्त्र

" ॐ क्लीम् दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् क्लीम् ॐ।। "

विधि- त्रिशक्ति (गुग्गुल, लौंग, लोवान) धूप को इसमन्त्र से अभिमन्त्रित करके भूत-प्रेत से पीड़ित-व्यक्ति के घर में धूप देने से निश्चित रूप से पीड़ित व्यक्ति को लाभ एवं घर में सुखशान्ति हो जाती है। प्रेतबाधा से मुक्ति सुनिश्चित है।

प्रज्ञावर्धन स्तोत्र

(विद्यार्थियों की बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाने एवं विद्या में सफलता हेतु अनुभूत पाठ)

प्रज्ञावर्धन स्तोत्र का पाठ प्रातः (सूर्योदय के लगभग) रविपुष्य या गुरुपुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करके आगामी पुष्यनक्षत्र तक **शिवपुत्र स्कन्द जी** का ध्यान करके पीपल वृक्ष की जड़ में आसन लगाकर प्रतिदिन १० बार पढ़ें । २७ दिन में एक पुरश्चरण पूर्ण होगा। फिर प्रतिदिन श्रद्धानुसार पाठ करते रहें। पाठक प्रतिभा-सम्पन्न एवं विद्या-बुद्धि का धनी होकर सफलता की तरफ अग्रेसर हो जाता है। दाएं हाथ में जल लेकर विनियोग के बाद जलत्याग करके, स्तोत्रपाठ का प्रारम्भ करें।

विनियोगः – ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धन–स्तोत्रस्य भगवान् शिव–ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्द–कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः। -(यहां जल का त्याग करें।)

स्तोत्र

ॐ योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः। स्कन्दः कुमार : सेनानी स्वामी शंकरसंभव :।।१।।
गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः। तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः ।।२।।
शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुह :। सनत्कुमारो भगवान् भोग–मोक्षप्रदः प्रभुः ।। ३।।

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्। सर्वागम–प्रणेता च वांछितार्थप्रदर्शकः ।। ४।।
अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्। प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्।। ५।।
महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत् । महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।। ६।।
पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च । अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत्।। ७।।
।। सप्तविंश–दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत्।।
।। प्रज्ञावर्धनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

धनधान्य-समृद्ध्यर्थ लक्ष्मीप्राप्ति मन्त्र

निम्नांकित लक्ष्मी प्राप्ति 'मन्त्र-सिद्धि' के लिए विनियोगपूर्वक प्रतिदिन ऋष्यादि न्यासपूर्वक पाठ करें। शीघ्र ही आर्थिकलाभ के साधन बनेंगे; घर में लक्ष्मी माता की अपार कृपा अनुभव होने लगेगी।

लक्ष्मी-प्राप्ति का मंत्र

" ॐ अस्य श्रीसप्तविंशत्यक्षर सर्वसमृद्धिकरण रमामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः लक्ष्मी-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।"-(यहां जल का त्याग करें।)

ऋष्यादिन्यासः- " ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदि। ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः।। (मूलेन करौ प्रमृज्य)। ततः कर- पञ्चांगन्यासौ- ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वौषट्)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। (कवचाय हुम्)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं करतल पृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)। (करन्यास पूर्ण करके पीछे उपरोक्त इन्हीं मन्त्रों से हृदयादि न्यास करें)- (मानसोपचारैः सम्पूज्य)।

ध्यानम्- " सिन्दूरारुण- कान्तिमब्जवसतिं सौंदर्य-वारांनिधाम्। कोटी-राङ्गद-हार-कुण्डल-कटि सूत्रादिभिर्भूषिताम्। हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्ज युगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शार्ङ्गिणः।"

मूल मंत्रः- "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद, प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।"

इसमंत्र का पहले १,२५,००० जप एवं तदनन्तर दशांश हवनादि करे । इसमंत्र की सिद्धि से व्यापारादि में अतुल धन-राशि की प्राप्ति होती है।

ऋणनिवृत्ति व धन-प्राप्त्यर्थ विशेष मंत्र

मन्त्र-"ॐ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रियः पतिः श्रीः परमः श्रीः निकेतनः श्रीधराय नमः ॐ। "

विधान- शुक्लपक्ष के पुष्यनक्षत्र में उपरोक्त मन्त्र की १०८ माला जाप करके मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर प्रतिदिन एक माला जाप करता रहे। निश्चितरूप से कर्जा दूर होकर परिवार में धनधान्य-समृद्धि आती है। यह सिद्धमन्त्र अग्निपुराण में मिलता है।

अनुभूत सिद्ध लक्ष्मीमन्त्र

श्रीसूक्त से उद्धृत इसमन्त्र को विल्वत्रृक्ष के नीचे बैठकर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक विधिवत् जाप करने से सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है। इसमन्त्र का अनुष्ठान प्रकार नारायण विहार, दिल्ली निवासी श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा के सौहार्द से जनहितार्थ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

विधिः- श्री महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर उसकी षोडशोपचार पूजा करके अंगन्यास, करन्यास, ध्यान, मुद्रा आदि करके नियमपूर्वक मन्त्र का जाप किया जाता है। एकान्त स्थान में धूप-दीप जलाकर पवित्र आसन पर बैठकर लक्ष्मी मन्त्र की ३१,००० आवृत्ति ४० दिन के अन्दर करके हवन, तर्पण, ब्राह्मणभोजन आदि कराके उसे सिद्ध किया जाता है। सात्विक आहार, ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन के साथ-साथ सभी यमनियमों का पालन करते हुए नित्य नियम से निश्चित संख्या का जाप किया जाता है। शुद्ध घृत का अखण्ड दीपक जलाया जाता है। एकाग्रचित और श्रद्धा विश्वास के साथ विधिपूर्वक साधना करने से ३१००० जप से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है और कोई न कोई अलौकिक अनुभव होता है। जैसे दीपक की लौ पर ध्यान करते हुए मन्त्रजाप कर रहे हो तो वह ज्योति शरीर में प्रवेश करती हुई प्रतीत होती है, या महालक्ष्मी की मूर्ति अथवा चित्र-प्रकाश व तेज से पूर्ण हो जाता है, उसमें से तेज निकल कर तुम्हारे शरीर मे प्रवेश करता हुआ प्रतीत होगा आदि-आदि। महालक्ष्मी का सिद्धमन्त्र निम्न प्रकार हैः-

" ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॐ।"

उपरोक्त मन्त्र श्रीसूक्त के १६ मन्त्रों में से एक प्रमुख है। इसके सिद्ध करने से न केवल दरिद्रता का नाश अपितु सुख-समृद्धि, उत्तम-बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की भी वृद्धि होती है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसका नित्य जाप करते रहना चाहिए और होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के अवसर पर भी जप, हवन आदि करते रहना चाहिए। इससे आपको धन की कमी कभी नहीं होगी। आवश्यकता के अनुसार धनार्जन के साधन बनते रहेंगे, आपकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति निर्विघ्न होती रहेगी। जब भी कभी आपको अपने किसी उचित कार्य के लिए विशेष द्रव्य की आवश्यकता पडे, इसमन्त्र की कुछ मालाएं जपें, आप देखेंगे कि किस प्रकार दैवी सहायता

प्राप्त होती है; अनुभूत है।

यशोलाभार्थ वैदिक मन्त्र

मन्त्र-" ॐ ह्रीं मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ह्रीं ॐ।।"

विधि- इसमन्त्र का ग्रहणवेला या दीपवली की रात्रि में निष्ठापूर्वक मन्त्रजाप करने से यशलाभ, वाहनसुख, मनोकामना सिद्धि प्राप्त होती है।

स्वप्न में सिद्धि-असिद्धि ज्ञानार्थ चामत्कारिक मन्त्र

मन्त्र-"ॐ ऐं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थ-साधिके।

मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ऐं ॐ।।"

विधि- साधक को नवरात्रदिनों, ग्रहणवेला, मन्त्रसाधनाकाल व दीपावली के पर्व पर **'निशीथकाल'** में इसमन्त्र की साधना कर, सिद्ध कर लेना चाहिए। इसमन्त्र के साथ **'देव्यथर्वशीर्ष'** का सद्यः पाठ करने से पूर्णलाभ होता है। सिद्धि के बाद रात्रि सोते समय इसमन्त्र को जपकर सोने से स्वप्न में सोचे हुए कार्य की सिद्धि/असिद्धि का ज्ञान होने लगता है- अनुभव करें।

शत्रुभय मुक्त्यर्थ किंवा अभियोग (मुकद्दमे) में विजयार्थ अनुभूत मन्त्र

" ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुँ क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॐ। "

विधि- उल्लिखित मन्त्र का जाप श्रद्धापूर्वक श्रीभगवती माता का ध्यान करके प्रतिदिन करें। इसमन्त्र के जाप से पूर्व **' सिद्धकुञ्जिका स्तोत्र '** का पाठ करें; ततपश्चात् इसमन्त्र की एक माला प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करें- ततपश्चात् पुनः **सिद्धकुञ्जिका स्तोत्र** का पाठ करके भगवती के समक्ष समर्पण भावनया, शत्रुभय-मुक्त्यर्थ किंवा अभियोग में विजयार्थ विनम्र प्रार्थना करें; अवश्य लाभ होगा;- अनुभूत है।

वश्यमुखी मन्त्रप्रयोग

निम्नांकित मन्त्र को दीपमाला की रात्रि में सिद्ध कर लें। जब किसी को अपने अनुकूल (वश में) करना हो तो बाएं हाथ की हथेली में तेल लेकर अनामिका अंगुली (Ring-Finger) से उस तेल को तीन बार अभिमन्त्रित करके सिर एवं चेहरे पर लगा लें, तो सभी लोग वशंवद हो जाते हैं।

मन्त्र- "ॐ राजमुखि वश्यमुखि स्वाहा।"

चूहा भगाने का साबर मन्त्र

चूहों द्वारा खेतों में फसलों एवं घर में प्रायः अनेक चीजों का नुक्सान होता रहता है। दीपावली या ग्रहण में पहले इसमन्त्र को जपकर सिद्ध कर लें। फिर इस मंत्रप्रयोग से निस्सन्देह आप फसल की रक्षा, घरेलु सामान की सुरक्षा कर सकेंगे। चूहों द्वारा की जा रही हानि से मुक्ति मिलने लगेगी।

मन्त्रः- "ॐ पीत पीताम्बर मूसा गांधी ले जाई हुं हनुमन्त तू बांधी।

ए हनुमन्त लंका के राऊ एहि कोणे पैसेहु एहि कोणे जाऊ ॐ।।"

विधिः- स्नान करके हल्दी की ५ गांठ और अक्षत (चावल)लेकर इसमन्त्र को ७ बार पढ़कर घर में जहां चुहे उपद्रव करते हों वहां पर या खेत में गिरा दें;- चुहे भाग जायेंगे। निश्चय ही फसल या चीजें सुरक्षित रहेंगी।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सम्बंध चिकित्साशास्त्रादि के साथ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है; चरक-संहितादि में चिकित्सापद्धति के साथ-साथ मन्त्रविज्ञान का भी अनेकत्र अनेक प्रकार के रोगनिदान में स्पष्ट निर्देश है;- चिकित्साशास्त्र में 'ज्योतिष' का क्या योगदान रहा है ? - निम्नांकित लेख में संकेतित है :-

चिकित्साप्रणाली में ज्योतिषशास्त्र की भूमिका

ज्योतिष एवं आयुर्वेद का निकटतम सम्बन्ध है;- ऐसा आयुर्वेदग्रन्थों से स्पष्ट है। चिकित्सा करते समय ज्योतिष का अवश्य ही सहारा लेना चाहिये। भारतीय ज्योतिष में जन्मनक्षत्र / जन्मलग्न से पाद विचार बताया गया है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ पण्डितों का कहना है कि- **"आर्द्रादिकं दशकं रूपं विशाखादि युगललोहकम्। पूर्वादि सप्तताम्रश्च एवं रेवती षष्ठस्वर्णकम्।।"** ज्योतिषशास्त्र में भी धातुवाद का उल्लेख है। ज्योतिषशास्त्र के मनीषी लोग कहते हैं कि- आर्द्रा से दशनक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा और स्वाती) तक चांदी का पाद; विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल में लौहपाद; पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा तक ताम्रपाद और रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा पर्यन्त स्वर्णपाद;- जन्म लेने वाले जातकों का जानना चाहिए।

स्वर्ण-पर्पटी

स्वर्णपाद में जन्मे जातक को स्वर्णपर्पटी का सेवन हितकर है। पर्पटी के निर्माण की विधि इस प्रकार है:-

" रसोत्तम-पलं शुद्धं हेम-तोसक-संयुतम्। शिलायां मर्दयेत्तावद्यावदेकलमागतम्।।
गन्धकस्य पञ्चैक मयः पात्रे ततो ददे। मर्दयेत् दृढ़पाणिभ्यां यावत्कज्जलवां व्रजेत्।।
ततः पाकविधानज्ञः पर्पटीं कारयेत् सुधीः। रक्तिकादिक मे पौणै योजयेदनुपानता।।
ग्रहणी विविधा हन्ति यक्ष्माणञ्च विशेषतः। शूलमष्टविधं हन्ति वृष्या सर्वरुजाऽपहा।।"

विशुद्ध पारद ५० ग्राम लेकर उसमें चतुर्थांश साढे बारह ग्राम स्वर्णभस्म लेकर दोनों को खरल में खूब मर्दन करना चाहिए। जिससे दोनों एक जीव हो जाएं। फिर लोहे की खरल में स्वर्णपारद की पिष्टी को डालकर विशुद्ध गंधक ५० ग्राम, पारद के समानभाग डालकर खूब मर्दन करें। कज्जली जब बन जाए तो पर्पटी का निर्माण कर लें। इस प्रकार रोगी को पर्पटी का निःसन्देह सेवन कराना चाहिए।

गुणधर्मविवेचन

यह पर्पटी पित्तनाशक होने के साथ-साथ कीटाणुनाशक एवं बल-आयुवर्द्धक भी है। यह जठराग्नि को प्रदीप्त करती है। जब रोगी कृश (दुर्बल) हो जाता है, कमजोरी के कारण बोल नहीं सकता, उस अवस्था में स्वर्ण-पर्पटी अपना विलक्षण प्रभाव दिखलाती है; उस व्यक्ति के प्राणों की रक्षा करती है तथा जीवनशक्ति (Life Energy) देती है। स्वर्ण विश्व का बहुमूल्य पदार्थ होने के अतिरिक्त विशेष प्रभावशाली व गुणकारी औषधि भी है।

विधि- स्वर्णपर्पटी को पीपल और मधु (शहद) के साथ सेवन करना चाहिए। **मात्रा-१ माशा- समय-प्रातः एवं सायं।** इस पर्पटी के सवेन से संग्रहणी, अतिसार, शोष, वमन आदि रोग दूर होते हैं। अब विविध रोगों पर इसका सेवन बताते हैं। इससे आशातीत लाभ होता है।

ज्वर- पीपल, मधु के साथ प्रातः/सायं। **अतिसार-** भुने हुए जीरे के साथ विशेषहितकर है। **संग्रहणी-** प्रवाल पंचामृत २-२ रत्ती, त्रिकुटा चूर्ण ४ रत्ती एवं ३ माशा मधु के साथ देने से संग्रहणी रोग दूर हो। **ध्यान दें-** स्वर्णपर्पटी निर्माणविधि यहां दे दी गई है, जो स्वर्णपाद में जन्मे व्यक्तियों के लिए विशेष हितकर है। रजत, ताम्र, लौहपाद में जन्में प्राणियों को सम्बद्ध पर्पटी का निर्माण विज्ञ वैद्य से करवाकर वैद्य के परामर्श के अनुसार सेवन करना चाहिए।

वैद्यरत्न—कविराज पं. ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य शंकरलाल गौड़,
'शंभूकवि' व्रजबाबापथ, दूरा, (आगरा)—(उ. प्र.)।

पतिवशीकरण यंत्र

कईबार पति अपनी पत्नी से किसी भी कारण से दूर हो जाते हैं, ऐसी स्थिति में सामने दिए गए यंत्र का प्रयोग लाभकारी रहेगा।

इसयन्त्र को ७ सोमवार रोटी पर लिखकर काले कुत्ते को खिलावें- अनुभव करें,- पति का झुकाव पत्नी की तरफ हो जाएगा। अनुचित प्रयोग हानिकारक हो सकता है।

३३	४०	२	८
७	६	३६	३७
३६	३४	६	१
४	६	३५	३८
पति का नाम लिखें			

मनोकामना पूर्ति यंत्रः- सफेद कागज पर केशर, चन्दन, कपूर, गंगाजल व खस की रोशनाई बनाकर अनार की कलम से शुक्लपक्ष की दूज से प्रारम्भ करके प्रतिदिन २४ बार लिखकर, आटे की २४-२४ गोलियां, २४ दिन तक बनाएं । यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिखो; अन्तिम रोज ५७६ गोलियां लेकर एक-एक करके नदी में बहा देने से जिस उद्देश्य से यंत्र लिखा होगा, ईश्वर की कृपा से पूर्ण होगा । यह सब कामों का सिद्धिदायक यंत्र है, जैसे नौकरी मिलना, परीक्षा में सफलता; मुकद्दमे में विजय/ निवारण आदि।

१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	६	१६	३
१५	४	५	१०

परीक्षा में सफलता का यंत्रः- जिस विद्यार्थी को परीक्षा में सफलता प्राप्त करनी हो; वह इसयंत्र को परीक्षा के १५ दिन पूर्व केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १०१ यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करे। सोलहवें दिन एक यंत्र को पूजा करके तावीज में मढ़वाकर अपनी दाहिनी भुजा या गले में धारण कर ले। पढ़ाई में मन लगेगा एवं परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

२	६	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

सिद्ध सन्तों के अनुभूत टोटके

(१) **दिमाग की कमजोरी को दूर करने के लिए** दस गिरी बादाम रात को पानी में भिगोकर वारीक करके एक तोला मक्खन एवं मिसरी मिलाकर एक मास तक प्रतिदिन सेवन करें। बुद्धि में धारणाशक्ति पैदा होगी, भूलने की बीमारी न रहेगी, स्वास्थ्य भी सुन्दर होगा।

(२) **बुखार के लिए** तुलसी के पत्तो का पानी १० तोला, छोटी इलायची के दाने १ तोला- दोनों को खरल में बारीक करके २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। बुखार की हालत में २ गोली एक साथ, १-१ घण्टे के अन्तर पर पानी के साथ लें। हर प्रकार का बुखार शांत हो जाता है।

सिंहस्थ गुरु के काल में मङ्गलकृत्य

(एक शोधपूर्ण लेख)

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजत्), पंचकूला-134109

[शुभकृत्यों के लिए सिंहस्थ गुरु के काल को अग्राह्य बतलाया गया है। सिंह राशि में गुरु लगभग एक वर्ष तक रहता है। कुछ शास्त्रवाक्य एकवर्ष की पूरी अवधि को सर्वत्र और कुछ वाक्य इसके कुछ भाग को कुछ प्रदेश-विशेषों में ही वर्जित बतलाते हैं। इस विषय में शास्त्रवाक्यों में अनेकत्र अस्पष्टताएं तथा विरोधाभास दिखाई पड़ता है। इस बारे में शास्त्रप्रमाणों से तर्क-वितर्क द्वारा सिद्धान्त का निर्धारण इस लेख में किया गया है]

जाति, धर्म एवं देश/प्रदेश विशेषों की विविध परम्पराओं से सम्बद्ध मुहूर्तों के ऐसे नियम/सिद्धान्त हमारी संहिताओं पुराणों एवं मुहूर्त्तग्रन्थों में भरे पड़े हैं, जिनके विश्लेषण में ज्योतिषी लोगों का उलझ जाना स्वाभाविक है। देश-प्रदेशीय परम्परानुसारी सिद्धान्तों के निर्णय में यद्यपि शास्त्रकारों ने स्थानीय-परम्परा के अनुसार ही मुहूर्तों का निर्णय करने (**'दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्'**) का परामर्श देकर दैवज्ञों की दुविधा दूर करने का प्रयास किया है; तथापि शास्त्रनिर्दिष्ट कई परम्परानुगत नियमों में भी पारस्परिक मतभेद तथा अस्पष्टताएं दैवज्ञ को किसी एक परिणाम तक पहुंचने में बाधक दिखाई पड़ती हैं। यहां हम एक ऐसी ही मुहूर्त्त-समस्या का विश्लेषण करेंगे जो प्रत्येक द्वादशाब्दी में देश के विभिन्न प्रदेशों में मंगल-कृत्यों की कर्त्तव्याकर्तव्यता के बारे में ज्योतिषियों को किंकर्तव्यविमूढ़ बनाती चली आ रही है। **वह समस्या है- 'सिंहस्थ गुरु की'** ।

सिंहस्थ गुरु के काल में विवाहादि मंगलकार्यों की कर्त्तव्याकर्त्तव्यता का निर्णय मुहूर्तविदों ने प्रान्तभेद तथा गुरु के नवांशों (नक्षत्रचरणों) के आधार पर किया है। उनके निर्णयवाक्यों में अनेक विरोधाभास एवं अस्पष्टताएं लक्षित होती हैं। यद्यपि सिंहस्थ गुरु का सामान्यतः सम्पूर्णकाल मंगलकृत्यों में सर्वत्र वर्जित बतलाया है। तथापि एतद्विषयक अनेक विशेष शास्त्रवाक्यों में इसका कुछभाग ही प्रदेश-विशेषों में वर्ज्य लिखा है। ये वाक्य अनेकत्र परस्पर विरोधी होने के कारण समन्वयन में समस्या उपस्थित करते हैं। इनकी हम यहां समीक्षापूर्वक व्यवस्था करेंगे। इस विषय में दीर्घकाल से चली आ रही स्थानीय परम्पराओं को भी हम यहां अपेक्षा होने पर यत्र तत्र प्रामाणिकता देंगे। इसके बिना अनेक शास्त्रवाक्यों में विरोध का परिहार सम्भव भी नहीं होगा। इस सम्बन्ध में शास्त्रकारों की अनुमति भी हमें प्राप्त है।

सिंहस्थगुरु-काल की एकवर्षावधि के कौन-कौन से भाग एवं किस-किस प्रदेश में विवाहादि मंगल-कृत्य विहित या अविहित हैं- इस विषय में मुख्यतः **६ मत** मुहूर्त-साहित्य में हमें उपलब्ध हैं। इनकाविश्लेषणपूर्वक समन्वयात्मक विवेचन नीचे दिया जा रहा है -

(१) **प्रथम मत** सिंहस्थ गुरु को सामान्यरूप से वर्जित बतलाता है। **देवी पुराण** का वाक्य हैः-

सिंहसंस्थे गुरौ यत्नात् सर्वारम्भान् विवर्जयेत्।
प्रारब्धं च न सिध्येत महाभयकरं भवेत्।।

वराहमिहिर भी सिहंस्थ गुरुकाल में सभी शुभकर्मों को न करने का निर्देश करते हैंः-

उद्यान-चूडा-व्रतबन्ध-दीक्षा-विवाह-यात्रादि-वधूप्रवेश-।
तड़ागकूप-त्रिदशप्रतिष्ठा बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात् ।।

गरुड़पुराण भी सिंहस्थ गुरु के समय मंगलकृत्यों का निषेध करता है-

यदा सिंहगतो जीवो नैव कल्याणमाचरेत्।

ये वाक्य सिंहस्थ गुरु को सामान्यतः वर्ज्य बतला रहे हैं। "इसे अमुक प्रदेश ये वर्जित करना चाहिए, अमुक में नहीं; इसका अमुक भाग वर्ज्य है, अमुक नहीं"- ऐसा कोई विशेष निर्देश यहां नहीं है। अतः इस मत का अभिप्राय यही लक्षित होता है, कि सिंहस्थ गुरु का सम्पूर्ण काल सर्वत्र वर्ज्य है।

(२) **द्वितीय मत** कहता है, कि सिंहस्थगुरु केवल गंगा के दक्षिणी एवं गोदावरी के उत्तरी भाग में (अर्थात् गंगा-गोदावरी-मध्यवर्त्ती प्रदेश में) वर्जित है। वसिष्ठ का वचन है, कि गंगा-गोदामध्यवर्त्ती प्रदेश में सिंहस्थ गुरु के काल में विवाहआदि मंगल कर्म न किए जाएं -

गोदावर्युत्तरे तीरे भागीरथ्याश्च दक्षिणे।
विवाहादि न कुर्वीत सिंहसंस्थे च गवप्तौ।।

पराशर कहते हैं, कि गंगा-गोदावरी के मध्य सिंहस्थ गुरु के समय में विवाह नहीं करना चाहिए-

गोदा-भागीरथीमध्ये नोद्वाहः सिंहगे गुरौ।

'मुहूर्त्तमाला' कार भी कहता है कि सिंहस्थ गुरु गंगा-गोदामध्यवर्त्ती प्रदेश में वर्ज्य है-

गंगा-गोदावरीमध्ये वर्ज्यः सिंहगतो गुरुः।

इसप्रकार के अनेक वाक्य सिंहस्थ गुरु के समस्त काल को केवल गंगा-गोदावरी-मध्यगत प्रदेशमात्र में मंगलकृत्यों के लिए वर्जित कहते हैं। स्पष्ट है, यह (द्वितीय) मत प्रथममत का अपवादक है; जो प्रथममत के प्रवृत्तिक्षेत्र को संकुचित करता है। यह विशेष निर्देश करता है कि सिंहस्थ गुरु सर्वत्र नहीं, अपितु केवल गंगा-गोदा-मध्यगत प्रदेश में ही वर्जित है। दूसरे शब्दों में यह मत (यहां दाईं ओर दिया गया भारत मानचित्र देखिए) गंगा-गोदावरी के मध्यगत प्रदेश (ACDB) को छोड़कर अन्य गंगोत्तरवर्त्ती (AB से उत्तरवर्त्ती), गोदावरी से दक्षिणवर्त्ती (CD से दक्षिणवर्त्ती) तथा AC से पश्चिमवर्त्ती सभी प्रदेशों में सिंहस्थ गुरु के सम्पूर्ण काल को ग्राह्य (शुभ) बतला रहा है।

(३) **तीसरा मत** स्पष्ट शब्दों में कहता है कि सिंहस्थ गुरु को गंगोत्तरवर्त्ती तथा गोदा-दक्षिणवर्त्ती प्रदेशों में वर्जित नहीं करना चाहिए। इस बारे में गर्ग का कहना है कि गंगा के उत्तर तथा गोदावरी के दक्षिण में सिंहस्थ गुरु के समय उपनयन, विवाह आदि शुभकृत्य दूषित नहीं होते -

भागीरथ्युत्तरे तीरे गोदावर्याश्च दक्षिणे।
व्रतोद्वाहादिकं कर्म सिंहस्थेज्ये न दुष्यति।।

'मुहूर्त्तगणपति' कार भी सिंहस्थ गुरु-काल में गंगा के उत्तर एवं गोदा के दक्षिणस्थ प्रदेशों में विवाहादि सभी शुभकृत्यों के लिए अनुमति देता है-

गोदाया याम्यदिग्भागे भागीरथ्यास्तथोत्तरे।
विवाहाद्यखिलं कर्म सिंहस्थेऽपि बृहस्पतौ।

यहां यह प्रश्न उठता है कि जब द्वितीय मत में उद्धृत **"गंगा-गोदावरी मध्ये वर्ज्यः सिंहगतो गुरुः"** आदि वाक्यों द्वारा ही स्पष्ट है (अर्थात् अनुवृत्त है) कि गंगा-गोदावरी-मध्यवर्त्ती प्रदेश के अलावा शेष सभी प्रदेशों में सर्वत्र सिंहस्थ गुरु ग्राह्य है, तब गंगा और गोदा के क्रमशः उत्तरी और दक्षिणी भाग
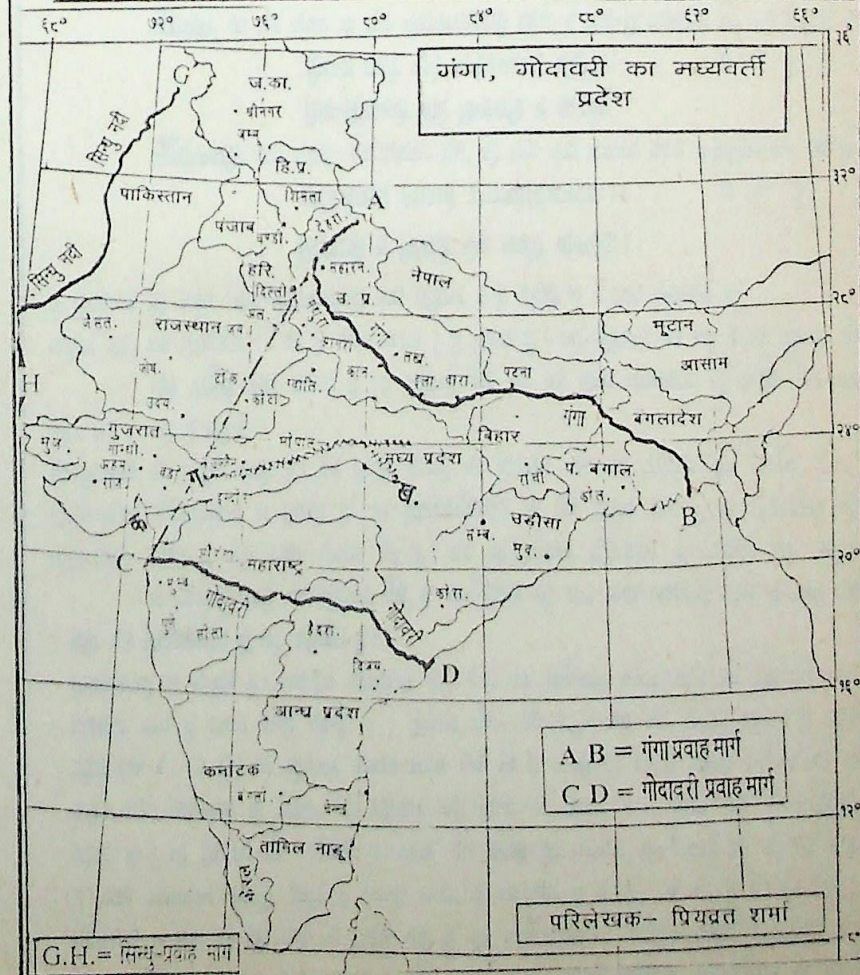
में सिंहस्थ गुरु को पृथक् से ग्राह्य बतलाने वाले इन वाक्यों की क्या आवश्यकता थी ? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है- गंगा-गोदावरी के क्रमशः दक्षिणी एवं उत्तरी तटवर्ती प्रदेशों मे सिंहस्थ गुरु की अग्राह्यता की चर्चा के साथ ही इन नदियों के दूसरे सन्निहित तटवर्ती प्रदेशों में इसकी ग्राह्यता के निर्देश को प्रासङ्गिक समझकर गर्ग आदि ने **"भागीरथ्युत्तरे तीरे....**" आदि वाक्य प्रपञ्चरूप में लिखे हैं। इन वाक्यों का यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि केवल इन्हीं प्रदेशों में सिंहस्थ गुरु ग्राह्य है, क्योंकि इन वाक्यों में 'केवल' या 'ही' शब्द का प्रयोग नहीं है। (अर्थात्- "केवल गंगा के उत्तर तथा गोदा के दक्षिण में सिंहस्थ गुरु ग्राह्य है" अथवा "गंगा के उत्तर एवं गोदा के दक्षिण में ही सिंहस्थ गुरु ग्राह्य हैं"- ऐसा गर्ग आदि ने नहीं लिखा है)। अतः स्पष्ट है-

मुहूर्त्त-शास्त्रियों ने गंगा-गोदा मध्यवर्त्ती प्रदेश को छोड़कर शेष पूरे भारत या विश्व में सिंहस्थ गुरु को ग्राह्य माना है। इस बात को स्पष्ट शब्दों में 'मुहूर्त्तचिन्तामणि' कार ने लिखा है, कि सिंहस्थ गुरु का दोष केवल गंगा-गोदावरी के मध्यगत प्रदेश में ही माना गया है, अन्यत्र कहीं नहीं;-

.... अथ गोदोत्तरतश्च यावत्।

भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो, नान्यत्र देशे..........॥ - (*मुहूर्त्तचिन्तामणि*)

अपिच यदि कोई **"भागीरथ्युत्तरे तीरे गोदावर्याश्च दक्षिणे..."** आदि वाक्यों के शाब्दिक अर्थ के ही अनुसार केवल गंगा गोदा. के क्रमशः उत्तर-दक्षिणवर्त्ती प्रदेशों में अर्थात् (भारत-मानचित्र देखिए) AB से उत्तर एवं CD से दक्षिणवर्त्ती प्रदेशों में ही सिंहस्थ गुरु को ग्राह्य मानने का आग्रह करे, तव तो उसके मतानुसार AC से पश्चिमवर्ती (पंजाव, चण्डीगढ, हरियाणा, दिल्ली, हि.प्र., राजस्थान, जम्मू-काश्मीर) प्रदेशों में, जो न तो गंगा-गोदा मध्यवर्ती हैं और न ही इनके उत्तर-दक्षिणवर्त्ती है, सिंहस्थ गुरु की ग्राह्याग्राह्यता का निर्णय नहीं हो पाएगा।

इस प्रसंग में ज्योतिर्विदाभरणकार का यह वाक्य कुछ भिन्न मत व्यक्त करता है कि गोदावरी के उत्तरी और गंगा के दक्षिणी तट के मध्यवर्त्ती प्रदेश में तथा सिंधुनदी के तटपर्यन्त अर्थात् (भारत मानचित्र देखें) *ACDB* और *AC* से *GH* (सिन्धुतट) तक स्थित प्रदेशों में सिंहस्थ गुरु के काल में विवाह नहीं करना चाहिए-

गोदावरी-सौम्यतटप्रवेशाद् भागीरथीयाम्यतटं हि यावत्।

सिन्धु-प्रपातं सचिवे सलेये नोद्वाहमाहुः परतो मघायाम्॥ - (*ज्योतिर्विदाभरण*)

ज्योतिर्विदाभरण के इस वाक्य का मूल अन्वेष्टव्य है। क्योंकि किसी भी संहितापुराण या अन्य मुहूर्त्तग्रन्थ में कहीं भी इस बात का निर्देश नहीं है, कि जम्मू-काश्मीर, आधुनिक पंजाव, हरियाणा, हि. प्र. तथा राजस्थान, दिल्ली आदि में (यानी भारत के मानचित्र में प्रदर्शित A C से G H पर्यन्त प्रदेशों में) भी सिंहस्थ गुरु अग्राह्य है। किंच, इन प्रदेशों की परम्परा भी इसमत को मान्यता नहीं देती। अतः कालिदास के इसमत को स्वीकार नहीं किया जा सकता । " केवल गंगा गोदामध्यवर्त्ती प्रदेश (A C D B) को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र (A B से उत्तरी C D से दक्षिणी एवं A C से पश्चिमी भाग में स्थित सभी प्रदेशों में) सिंहस्थ गुरु ग्राह्य है" -यही मत पुराणों संहिताओं और निवन्धग्रन्थों में चर्चित है। स्थानीय परम्पराएं भी इसी का अनुसरण करती चली आ रही हैं। अतः **यही मत सिद्धान्तरूप में हमें स्वीकृत है।**

ये उपरोक्त तीनों मत सिंहस्थ गुरु के सम्पूर्णकाल को गंगा-गोदा-मध्यवर्त्ती प्रदेश में वर्ज्य एवं तदितरवर्त्ती प्रदेशों में इसे ग्राह्य बतला रहे हैं। यह भी समान्य प्रतिपादन है। क्योंकि ऐसे अनेक विशेष-वाक्य मुहूर्त्तसाहित्य में मिलते हैं, जो सिंहस्थगुरुकाल के एक विशेष भाग में ही मंगलकृत्यों की वर्ज्यावर्ज्यता का निर्देश करते हैं। इन विशेष वाक्यों का विवचेन अव हम परवर्त्ती तीन (चतुर्थ, पंचम, और छठे) मतों में करेंगे-

(४) चतुर्थ मत कहता है कि सिंहस्थ गुरु का वह काल मंगलकार्यों में वर्जित कर देना चाहिए ,जहां वह सिंहांशक (पू.फा.के प्रथम चरण) में स्थित हो। ज्योतिर्निबन्ध का यह वाक्य सिंहस्थ गुरु के सिंहांशक को सर्वत्र (गंगा-गोदामध्यवर्त्ती तथा तदितर सभी प्रदेशों में) वर्ज्य बतलाता है-

सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।

सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥

'मुहूर्त्तगणपति' कार 'सिंह- सिंहांशकस्थ गुरु' को गंगा-गोदा मध्यस्थ प्रदेश में वर्जित कह रहा है-

सिंह-सिंहाशके जीवे विवाहादि न कारयेत्

गोदाया उत्तरे भागे भागीरथ्याश्च दक्षिणे॥

'चूडामणि' का यह वाक्य भी गंगा-गोदान्तरालवर्त्ती प्रदेश में सिंह-सिंहाशकगत गुरु की वर्ज्यता का निर्देश करता है-

गोदावरीसौम्यतटाच्च यावत् भागीरथीयाम्यतटं न शस्तम्।

विवाहकृत्यं च गुरौ हरिस्थे हरेः लवस्थे क्रियगेऽर्के इष्टम्॥

इन उपरोक्त वाक्यों से स्पष्ट है, कि सिंह-सिंहांशकस्थ गुरु निरपवादरूप से सर्वत्र वर्ज्य माना गया है। गंगा-गोदामध्यवर्त्ती प्रदेश में, जहां सिंहस्थ गुरु को सभी मुहूर्त्तविदों ने पूर्णतः वर्जित लिखा है, वहां भी इसे (सिंहांशक को) वर्जित बतलाया गया है। इससे इसकी अशुभता की उग्रता प्रकट होती है। इन उपरोक्त वाक्यों का सारांश यह है कि देश का गंगा-गोदामध्यगत भाग, जहां सिंहस्थ गुरु को सभी ने वर्जित घोषित किया है एवं देश का तदितर भाग जहां सिंहस्थ गुरु को वर्ज्य नहीं माना गया है, देश के इन दोनों भागों में सिंहस्थ गुरु के सिंहांशक स्थितिकाल को समानरूप से वर्जित करना चाहिए।

इस प्रसंग में कुछ वाक्य ऐसे भी उपलब्ध हैं जो सिंह-सिंहाशक में गुरु की स्थिति की भान्ति अन्यराशियों के सिहांशक में भी गुरु की स्थिति को शुभकृत्यों में वर्ज्य बतलाते हैं। गर्ग का ऐसा यह एक वाक्य देखिए-

न गुरौ सिंह-राशिस्थे सिंहांशकगतेऽपि वा।
क्षौरमन्नं च कुर्वीत विवाहं गृहकर्म च।।

नारद भी सिंहस्थ तथा सिंहांशकस्थ गुरु के काल में विवाहादि का निषेध करता है-

विवाहं देवतानां च प्रतिष्ठां चोपनायनम्।
नास्तंगते सिते जीवे न तयोर्बाल-वृद्धयोः।।
न गुरौ सिंहराशिस्थे सिंहांशकगतेऽपि वा।

इसी अभिप्राय का एक यह वाक्य भी उपलब्ध है, जिसका वक्ता अज्ञात है-

सिंहेऽन्यराशिसिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशे शुभं त्याज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्।।

" सिंहराशि के अतिरिक्त अन्य राशि के सिंहांशक में गुरु के स्थितिकाल में मंगलकार्य वर्ज्य हैं"- इसप्रकार का निर्देश अन्य किसी प्रामाणिक मुहूर्त्तग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है, लगभग प्रतिवर्ष किसी न किसी राशि के सिंहांशक में गुरु लगभग ४० दिनों तक रहता ही है। इन दिनों में देश के किसी भी भाग में शुभकृत्यों को छोड़ने की परम्परा भी नहीं है। अतः इन वाक्यों को हमें उपेक्षित करना होगा।

यहां यह ध्यातव्य है कि प्रत्येक सिंहांशक में स्थित गुरु को वर्ज्य बतलाने वाले ये वाक्य सिंह के सिंहाशक में स्थित गुरु की परम अशुभता की ओर अवश्य संकेत करते हैं।

ध्यान दें- इन वाक्यों द्वारा प्रतिपादित प्रत्येक सिंहांशकगत गुरु की परम अशुभता से प्रभावित अनेक प्रान्तों के ज्योतिर्विद् सिंहस्थ गुरु के सिंहांशक को ही विवाहादि कृत्यों में वर्जित करने की परम्परा लिए हुए है। " सिंहे सिंहांशकः त्याज्यः"- वाक्य उनमें बहुत प्रचलित है। पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर आदि अनेक प्रान्तों के पंचांगकार इसी परम्परा का पालन करते चले आ रहे हैं। वे सिंहस्थ गुरु के एकमात्र उसी काल को मंगलकृत्यों में वर्जित करते हैं जहां गुरु सिंहांशकस्थ हो।

'मुहूर्त्तचिन्तामणि' कार भी सिंहांशकगत सिंहस्थ गुरु के काल में विवाह को विशेषरूप से अशुभ मानता है - (**" सिंह गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टः"**- मुहूर्तचिन्तामणि)।

(५) पञ्चम मत मघास्थ गुरु को वर्जित करने की बात करता है, बालभूषा का यह वाक्य मघास्थ गुरु को सर्वत्र वर्ज्य कहता है- **'निन्द्यो मघास्थः सर्वत्र।'**

'ज्योतिर्निबन्ध' का यह वाक्य देखिए, जो सिंहस्थ गुरु के केवल उसीकाल को शुभकृत्यों में वर्जित करने की बात कर रहा है जब वह मघास्थ हो। सिंहस्थ गुरु के शेषकाल को वह विवाहादि के लिए शुभ बतला रहा है-

सिंहस्थेऽपि मघासंस्थं गुरुं यत्नेन वर्जयेत्।
अन्यत्र सिंहभागेषु विवाहादि विधीयते।।

'माण्डव्य' का एक और ऐसा ही वाक्य हैं जो सिंहस्थ गुरु के केवल मघास्थितिकाल को ही वर्जनार्ह कहता है-

मघा-ऋक्षं परित्यज्य यदा सिंहे गुरुर्भवेत्।
तत्राब्दे कन्यका चोढा सुभगा सुप्रिया भवेत्।।

'ज्योतिर्विदाभरण' की भावमुनिकृत टीका में उद्धृत वाक्य भी यह बात कह रहा है-

मघां त्यक्त्वा यदा गच्छेत् फाल्गुनीं च बृहस्पतिः।
पुत्रिणी धनिनी कन्या सौभाग्यफलमश्नुते।।

क्योंकि ये वाक्य सामान्यरूपेण सिंहस्थ गुरुकाल में मघास्थितिकाल को वर्ज्य कह रहे हैं, अतः स्पष्ट है- इन वाक्यों का प्रवृत्तिक्षेत्र गंगा-गोदामध्यवर्त्ती तथा तदितर- ये दोनों प्रदेश हैं।

ये सभी वाक्य स्पष्ट कर रहे हैं कि सिंहस्थ गुरु का केवल वही काल वर्ज्य है जहां वह मघास्थ हो। दूसरे शब्दों में ये वाक्य उपरोक्त चतुर्थमत में प्रतिपादित सिंह-सिंहांशक की वर्ज्यता का प्रतिवाद करते हैं। लेकिन सिंह-सिंहांशक की वर्ज्यता के प्रतिपादक ऊपर उद्घृत प्रचुर शास्त्रवाक्यों की भी हम उपेक्षा नहीं कर सकते। अतः सिंहस्थ गुरु में मघा और सिंह-सिंहांशक (पू.फा. प्रथमपाद)- दोनों के ही (अर्थात् मघादि पांच पादों को ही) वर्जित करने का निर्णय एक शास्त्रीय समन्वय के रूप में अनेक मौहूर्त्तिकों ने स्वीकार किया है। यह समन्वय मुहूर्त्तचिन्तामणि के इस वाक्य में स्पष्ट है:-

मघादि-पंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः।
गंगा-गोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्।।

इसका अभिप्राय है- मघा आदि पांचपादों (मघा के चार, पू.फा. के प्रथमपाद) में गुरु की स्थिति का काल सर्वत्र (गंगा-गोदामध्यवर्त्ती तथा तदितर प्रदेशों में) त्याज्य है। सिंहस्थ गुरु का शेषकाल केवल गंगा-गोदान्तरालवर्त्ती प्रदेश से इतर प्रदेशों में ही ग्राह्य है। गंगा-गोदान्तरालवर्त्ती प्रदेश में तो वह भी वर्जित है।

'ज्योतिर्निबन्ध' का यह वचन भी सिंहस्थगुरु के सिंहांशकोर्ध्ववर्त्ती काल को ही च्यवन-मतानुसार विवाहोपयोगी कहता है-

सिंहे गुरौ सिंह-नवांशकोर्ध्वं गोदावरी-दक्षिण-कूल-जातैः।
उद्वाह्कालात्यय-दोषभीतैःकार्यो विवाहश्च्यवनो ब्रवीति।।

'मुहूर्तमार्त्तण्ड' कार ने भी गुरु की मघादि पंचपादपर्यन्त स्थितिके काल को शुभ-कर्मोपयोगी नहीं माना -

सिंहेज्ये न शुभं हितं हरिलवोर्ध्वं गौतमीदक्षिणे।
जाह्नव्युत्तरतः क्वचिद्धितमजेऽर्केऽन्त्योऽसुर-भीत्यादिषु।।

इससे यह स्पष्ट है, कि- गंग-गोदामध्येतर प्रदेशों में भले ही उपरोक्त सामान्य वाक्य सिंहस्थगुरु के समय शुभकृत्यों के विधान की अनुमति देते हैं तथापि मघादिपांच पादों में इसका स्थितिकाल यहां भी शुभकृत्य योग्य नही हैं।

इस उपरोक्त विवेचन का निष्कर्ष है, कि मघा के चारों और पू.फा. का प्रथम, इन पांच चरणों में गुरुकी स्थिति का काल शुभकृत्यों के लिए गंगा-गोदामध्यवर्त्ती एवं तदितर प्रदेशों में भी सर्वथा वर्ज्य हैं। इसकाल में कहीं भी शुभकृत्यों का विधान किसी भी स्थिति में (आपत स्थिति में भी) शास्त्रों द्वारा अनुमत नहीं है। इसकाल के अतिरिक्त शेष सिंहस्थ गुरु के काल में (सिंहांशकोर्ध्ववर्ती काल में) गंगा-गोदा मध्येतरवर्त्ती प्रदेशों में शुभकृत्य यथेच्छ किए जा सकते हैं, लेकिन इस अवधि के अन्तर्गत गंगा-गोदा मध्यवर्ती प्रदेशों में इनका विधान किसी अपरिहार्य (आपात) स्थिति में ही किया जाना चाहिए।

इस प्रसंग में 'मुहूर्तमार्त्तण्ड' कार एवं 'ज्योतिर्निबन्ध' कार के एतद्विषयक कुछ प्रतिपादनों की यहां समीक्षा करना आवश्यक है। यहां 'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड' कार कहते हैं कि मघादि पंचपादों को छोड़कर (हरिलवोर्ध्वम्) शेष सिंहस्थगुरु के काल में आपात स्थिति होने पर (क्वचित्) ही गंगा और गोदा के क्रमशः उत्तरी और दक्षिणी प्रदेशों में विवाहादि किए जा सकते हैं, ('मुहूर्तमार्त्तण्ड' का ऊपर उद्धृत श्लोक **'सिंहेज्ये न शुभं हितम्'**...... देखें)।

लगभग यही बात **'ज्योतिर्निबन्धकार'** ने ऊपर उद्धृत **"सिंहे गुरौ सिंहनवांशकोर्ध्वम्....'** में च्यवन के नाम से कही है।

'इन दोनों आचार्यों का यह मत संगत नहीं है' इसका स्पष्टीकरण नीचे किया जा रहा है-

यहां, जैसाकि ऊपर प्रतिपादित किया जा चुका है, यह तो निर्विवाद है कि मघादि पंचपादों में गुरु सर्वत्र (गंगा-गोदामध्यस्थ एवं तदितर सभी प्रदेशों में) गर्हित है। यह भी उपरोक्त विस्तृत विवेचन से स्पष्ट है कि मघादिपंचपादों को छोड़कर शेष सिंहस्थ गुरु का काल गंगा-गोदामध्येतरवर्त्ती प्रदेशों में ग्राह्य और गंगा-गोदा-मध्यवर्त्ती प्रदेशों में त्याज्य है। (**"मघादिपंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्।।"**- *मुहूर्तचिन्तामणि*)। इसका स्पष्ट निषकर्ष यह है कि गंगा-गोदामध्येतरवर्त्ती प्रदेशों में मघादिपंच- पादोत्तरवर्ती पादों में गुरुस्थिति का काल उन्मुक्तरूप से विवाहादिकृत्यों के लिए समर्थित है, और गंगा-गोदा- मध्यवर्त्ती प्रदेशों में इस अवधि में शुभकृत्य आपात स्थिति में ही विहित हैं। यदि मुहूर्तमार्तण्ड एव ज्योतिर्निबन्ध के इस उपरोक्तमत को स्वीकार कर गंगा-गोदामध्येतरवर्त्ती प्रदेशों में भी आपात स्थिति के समय ही गुरु के सिंहांशकोर्ध्वकाल को ग्राह्य माना जाए तो उपरोक्त शास्त्रवाक्यों द्वारा प्रतिपादित इन प्रदेशों में सिंहस्थगुरु की ग्राह्यता निरस्त हो जाएगी।

किञ्च- यदि देश के दोनों भागों (गंगा-गोदामध्यवर्त्ती एवं तदितरवर्त्ती प्रदेशों में) सिंहस्थ गुरु के समय समानरूप से आपात स्थिति में ही मंगलकृत्यों का विधान अभिप्रेत होता तो उपरोक्त विभिन्न वाक्यों द्वारा एक भाग में उसे (सिंहस्थ गुरु के काल को) ग्राह्य और दूसरे भाग में अग्राह्य कहने का कोई प्रयोजन ही नहीं था।

अपि च- यदि यह कहा जाए कि गंगा-गोदामध्यवर्त्ती प्रदेश में पूरा सिंहस्थ गुरु आपातस्थिति में भी अग्राह्य है, तो मघादिपंचपादों में स्थित गुरु को वहां वर्जित करने का निर्देश कोई अर्थ नहीं रखेगा।

" मघादि पंचपादस्थगुरु गंगागोदोमध्यवर्त्ती प्रदेशों में भी वर्जित है"- इस शास्त्रादेश का यही अभिप्राय है, कि इन पांचपादों में गुरु-स्थिति के समय वहां शुभकृत्य आपातस्थिति में भी अनुमत नहीं है। शेष चार पादों में गुरु स्थिति के समय इन्हें वहां अपात स्थिति में सम्पन्न किया जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है - मुहूर्तमार्त्तण्डकार तथा ज्योतिर्निबन्धकार (अथवा च्यवन) का उपरोक्त निर्धारण संगत नहीं है।

(६) **छठा मत** कहता है, कि मेषस्थ सूर्य होने पर सिंहस्थ गुरु के काल में शुभकृत्य सर्वत्र किए जा सकते हैं।

इसमत के समर्थन में शौनक का यह वाक्य है जो इस विषय पर नारद और पराशर की सहमति व्यक्त करता है-

सिंहस्थे देवगुरौ मेषस्थो यदि भवेत् सहस्रांशुः।
मंगलकार्यं कुर्यादिति नारद-पराशरौ वदतः।।

इस सम्बन्ध में ' मुहूर्तगणपति ' कार का कहना है कि सिंहस्थ गुरु के काल में मेषस्थ सूर्य के समय आवश्यकता (आपात) की स्थिति में सर्वत्र विवाहादि किए जा सकते हैं-

सिंहराशिगते जीवे मेषेऽर्के तु न दूषणम्।
आवश्यके विवाहादौ सर्वदेशेष्वपि स्मृतम्।।

'मुहूर्तमार्त्तण्ड' कार भी मेषस्थ सूर्य में सिंहस्थ गुरु की ग्राह्यता के लिए आपातस्थिति का प्रतिबन्ध लगाता है-'**... क्वचिद् हितमजेऽर्के ऽन्तोसुर-भीत्यादिषु**।'- (इसका अर्थ है- रजोदर्शन आदि का भय हो तो सिंहस्थगुरु के काल में भी मेषस्थ सूर्य के समय कन्या का विवाह किया जा सकता है।)

यहां 'मुहूर्त्तचिन्तामणि' कार का कहना है कि सिंहस्थ गुरु के समय जब मेषस्थ सूर्य हो तब गंगा-गोदामध्यगत प्रदेश में भी उपनयन और विवाह किए जा सकते हैं।

"मेषेऽर्के सद्व्रतोद्वाहौ गंगागोदान्तरेऽपि च।" स्पष्ट है यहां **रामदैवज्ञ** ने आपातस्थिति की अपेक्षा नहीं समझी।

'मेषस्थ सूर्य के काल में सिंहस्थ गुरु की ग्राह्यता के लिए आपातस्थिति का प्रतिबन्ध सर्वत्र अनावश्यक है'- यह नीचे स्पष्ट किया गया है-

मघादि-पंचपादोत्तरवर्त्ती गुरु का काल गंगा-गोदामध्येतरवर्त्ती प्रदेशों में, जैसा कि पहिले सिद्ध किया जा चुका है, शुभकृत्यों के लिए आपातस्थिति की अपेक्षा नहीं रखता। वहां तो आपातस्थिति के बिना भी शुभकृत्य विहित हैं। अतः वहां मेषस्थ सूर्य के समय सिंहस्थ गुरु की शुभता के लिए आपातस्थिति की अपेक्षा का प्रतिबन्ध व्यर्थ है। हां, यदि सिंहस्थ गुरु के काल में मेषस्थ सूर्य उपलब्ध हो तो वहां शुभकृत्य पर्याप्त कल्याणप्रद माने जाएंगे।

किञ्च- गंगा-गोदामध्यवर्त्ती प्रदेशों में मघादिपंचपादोत्तरवर्त्ती गुरु के काल में, जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है, शुभकृत्यों के लिए आपात स्थिति तो सर्वदा अपेक्षित होती ही है। अतः वहां मेषार्क के समय में भी आपातस्थिति भी अनिवार्यता की बात असंगत है। वहां यदि मेषार्क प्राप्त हो जाए तब तो — आपात स्थिति के बिना भी शुभकृत्य विहित होंगे; यह स्पष्ट है।

अपि च- गंगा-गोदामध्यवर्त्ती तथा तदितर प्रदेशों में मघादिपंचपादान्तर्गत गुरु की स्थिति की कालावधि, जैसाकि पहिले बतला चुके हैं; आपातकाल में भी शुभकृत्य योग्य नहीं मानी जाती । मेषार्क काल में शुभकृत्यों के विधान का अनुमोदन विशेषेण इसी कालावधि के लिए उपरोक्त शास्त्रवाक्य करते हैं- यह निश्चित है । अतः यह निष्कर्ष है कि मेषार्क प्राप्त हो तो मघादि पंचपादगत गुरु के काल में भी शुभकृत्य वर्ज्य नहीं होंगे। हां, इस स्थिति में आपातकाल का प्रतिबन्ध लगाना उचित है। क्योंकि मघादिपंचपादगत गुरु को सर्वोपरि दोषावह माना गया है, और इसलिए मेषार्क द्वारा इसके महादोष का सर्वथा मार्जन सम्भावित नहीं है।

एतद्विषयक अन्य प्रकीर्णक समीक्ष्य/विचार्य मत

ऊपर सप्रपञ्च चर्चित छः मतों के अलावा कुछ छोटे-मोटे कई अन्य मत भी, जो विभिन्न काल-प्रदेशों में सिंहस्थ गुरु की ग्राह्याग्राह्यता का अन्यथा निर्देश करते हैं, उपलब्ध हैं। इनमें से अधिकतर मत प्रामाणिक मुहूर्त्तसाहित्य से समन्वय नहीं रखते। पाठकों की भ्रान्ति-निवारणार्थ इनका विश्लेषणपुरस्सर यहां निर्देश कर देना उचित है-

(i) मुहूर्त्तचिन्तामणिकार ने सिंह-सिंहांशकस्थ गुरु के काल में केवल विवाह को वर्जनार्ह बतलाया है;- (**"सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टः"- मुहूर्त्तचिन्तामणि**)। इस निर्णय का मूल पीयूषधाराकार ने ज्योतिर्निबन्ध- कार और वशिष्ठ के इन वाक्यों को बतलाया है, जहां सिंहांशकगत सिंहस्थ गुरु के काल में विवाह को दम्पती की मृत्यु का कारण कहा गया है -

सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः।।- *(ज्योतिर्निबन्ध)*

सिंहे सिंहांशके जीवे कलिंगे गौडगुर्जरे।
कालमृत्युरयं योगो दम्पत्योर्निधनप्रदः।। -*(वशिष्ठः)*

ज्योतिर्निबन्धकार और वसिष्ठ के इन वाक्यों में विवाह निर्विवादरूपेण शुभकृत्यों का भी उपलक्षण है। देखिए,- ऊपर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय मतों के विवेचन में उद्धृत वाक्य पूरे सिंहस्थ गुरु के समय सभी शुभकृत्यों के वर्जन की बात करते हैं। "चतुर्थमत" में उद्धृत वाक्यों में भी सिंहांशकस्थ गुरु को स्पष्टतः सभी शुभकृत्यों के लिए गर्हित कहा गया है। अतःसिंहाशकस्थ सिंहगत गुरु केवल विवाह के लिए अशुभ है- यह रामदैवज्ञ का

निर्धारण भ्रामक है। **ध्यान रहे - ज्योतिर्निबन्धकार, वशिष्ठ तथा कुछ अन्य मुहूर्त्तकारों के ऐसे ही वचनों से भ्रान्त अनेक दैवज्ञ सिंहस्थ गुरु के केवल सिंहांशक काल को ही विवाह तथा तदितर शुभकृत्यों में भी वर्जित करने की परम्परा बना बैठे हैं,** जो शास्त्रीय नहीं हैं। शास्त्र तो**मघादिपंचपादस्थ गुरु को ही सर्वत्रसर्वथा वर्जित करने का निर्देश देते हैं।**

(ii) " गंगा-गोदामध्यस्थ प्रदेश में सिंहस्थ गुरु के समय केवल व्रतबन्ध (उपनयन) और विवाह ही वर्जित हैः अन्य शुभकृत्य नहीं" - मुहूर्त्तचिन्तामणिकार का यह मत भी दोषपूर्ण है, क्योंकि गरुड़पुराण, देवीपुराण, वराह, वसिष्ठ आदि के ऊपर उद्धृत अनेक वाक्य इसकाल में सभी शुभकृत्यों का स्पष्ट निषेध करते हैं। जिन वाक्यों को आधार मानकार पीयूषधाराकार ने मुहूर्त्तचिन्तामणिकार के इसमत की पुष्टि की है ; उन वाक्यों में प्रयुक्त 'व्रतबन्ध' और 'विवाह' शब्द सभी शुभकृत्यों के उपलक्षण हैं।

(iii) वशिष्ठ का एक वाक्य, जो सिंहस्थ गुरु को नर्मदा के उत्तरी एवं विंध्याचल के दक्षिणी (अर्थात् नर्मदा-विध्याचल मध्यगत) प्रदेश में शुभकृत्यों के लिए वर्जित बतलाता है, कई संग्रहग्रन्थों में उद्धृत है-

सिंहस्थितः सुरगुरुः यदि नर्मदायाः तद्वर्जयेत्सकल-कर्मसु सौम्यभागे।।
विन्ध्यस्य दक्षिणदिशि प्रवदन्ति चार्याः सिंहांशके मृगपतावपि* वर्जनीयम्।।

*मृगपतावपि (सुरगुरावपि)

इस वाक्य के अनुसार विन्ध्याचल की अमर-कण्टक शाखा से निकलकर खम्भात खाड़ी में गिरने वाली नर्मदा **'क-ख'** (भारत मानचित्र देखें) तथा विन्ध्याचल **'ग-ख'** के मध्यवर्त्ती (**'क-ख-ग'**) प्रदेश में सिंहस्थ गुरु वर्ज्य बतलाया गया है। भारत का मानचित्र देखिए- यह छोटा सा प्रदेश गंगा-गोदावरी-मध्यवर्त्ती उस विशाल-भूभाग का ही खण्ड है, जहां सिंहस्थ गुरु को सभी मुहूर्त्तविदों ने पहिले ही एकस्वर से वर्जित कहा है। अतः इसका यह पृथक् निर्देश अनपेक्षित है।

(iv) **'सर्वः सिंहगुरुः वर्ज्यः कलिंगे गौड़-गुजरे'** तथा **' कलिंग-बगेष्वथ मागधे च दोषः प्रपुष्ट्यो न तथाऽन्यदेशे'** - आदि वाक्यों में निर्दिष्ट **कलिंग** (लगभग वर्तमान उड़ीसा), **गौड़** (मध्य बंगाल), **बंग** (वर्तमान बंगाल), **मगध** (आधुनिक विहार का दक्षिणभाग) ये सभी प्रदेश लगभग पूरे के पूरे गंगा-गोदामध्यस्थ हैं (देखिए-भारत मानचित्र)। अतः इन्हें पार्थक्येन सिंहस्थगुरुकाल में वर्जित करने का निर्देश पुनरुक्तिमात्र ही है। हां, गुर्जर (गुजरात) का लगभग पूरा भूभाग गंगां-गोदामध्यगत प्रदेश से बहिर्गत है। अतः इसे यहां सिंहस्थ गुरु को वर्ज्य कहने में पुनरुक्ति नहीं ही है। इस वाक्य के अनुसार तो गुजरात में सिंहस्थ गुरु का सम्पूर्णकाल शुभकृत्यों में वर्जित होना चाहिए। लेकिन मेरे मतानुसार तो **'समान-न्यायेन'** यहां भी मघादिपंचपादस्थ गुरु के काल को छोड़कर शेषकाल में दूसरे प्रदेशों की भांति शुभकृत्य करना अहितकर नहीं होना चाहिए। बालभूषाकार **"निन्द्यो मघास्थः सर्वत्र विशेषाद् गौड-गुजरे"** और वसिष्ठ का **"सिंह-सिंहांशेके जीवे कलिंगे गौड-गुजरे। कालमृत्युररयं योगो दम्पत्योर्निधनप्रदः।।"**- ये वाक्य भी मेरे मत की पुष्टि करते हैं।

(v) " **मघागतो मालवके निषिद्धः पूर्वागतः पूर्वदिशि प्रदुष्टः। बृहस्पतिश्चोत्तरपादसंस्थः देशेष्वशेष्वपि नर्मदः स्यात्।।"** भृगु के नाम से उद्धृत किया जाने वाला यह वाक्य सिंहस्थ गुरु की शुभाशुभता से सम्बद्ध अन्य सभी शास्त्रवाक्यों से कोई समन्वय नहीं रखता। अतः यह पूर्णतः उपेक्षार्ह है।

(vi) इसी प्रकार **"माघमासे पूर्णमासी मघायुक्ता यदा भवेत्। सिंहस्थस्य गुरोर्दोषः तस्मिन्वर्षे न चान्यथा।।"**- *मुहूर्त्तमाला* का यह वाक्य भी सिंहस्थ गुरु के काल की ग्राह्याग्राह्यता के विवेचक पुराण, संहिता आदि के अन्य किसी भी वाक्य से सामञ्जस्य नहीं रखता। अतः इसे इस प्रसंग में विचार-विमर्श योग्य नहीं माना जा सकता।

इसप्रकार सिंहस्थगुरु की नवांशभेद तथा प्रदेशभेद से शुभाशुभता के प्रतिपादक परस्पर उलझे शास्त्रवाक्यों का मीमांसा पुरस्सर समन्वय किया गया है। मुझे विश्वास है, कि- दैवज्ञों की एतद्विषयक समस्या को यह दूर करेगा। इस विस्तृत विवेचन का व्यवस्थित सारांश नीचे दिया जा रहा है, जो प्रतिपादित विषय को पूरी तरह स्पष्ट करता है।

उपरोक्त विवेचन का सारांश

-ःगंगा-गोदा मध्यवर्त्ती प्रदेशों के लिएः -

(i) मघादिपंचपादान्तर्गत गुरु के स्थितिकाल में शुभकृत्य आपातस्थिति में भी निषिद्ध हैं। यदि यहां मेषस्थ सूर्य प्राप्त हो जाए तो उस समय आपातस्थिति में शुभकृत्य किए जा सकते हैं।

(ii) मघादिपंचपादोत्तरवर्ती (पू.फा के अन्तिम तीन और उ.फा. के प्रथम चरण में वर्तमान) गुरु के स्थितिकाल में शुभकृत्य आपातस्थिति में ही किए जा सकते हैं। यदि यहां मेषस्थ सूर्य प्राप्त हो जाए तो उस समय बिना आपातस्थिति के भी शुभकृत्यों का विधान शास्त्रानुमत है।

-: गंगा-गोदा-मध्येतरवर्त्ती प्रदेशों के लिए :-

(i) मघादिपंचपादान्तर्गत गुरु के स्थितिकाल में शुभकृत्य आपातस्थिति में भी नहीं किए जा सकते। यदि यहां मेषार्क प्राप्त हो जाए तो आपातकालस्थिति में

शुभकृत्य करने की अनुमति है।

(ii) मघादिपंचपादोत्तरवर्त्ती गुरु के स्थिति-काल में शुभकृत्य यथेच्छ (विना आपातस्थिति के भी) किए जा सकते हैं । यदि इस कालावधि में मेषार्क प्राप्त हो जाए तो उसके काल में शुभकृत्य करना अधिक कल्याणप्रद होगा।

स्थानीय परम्पराओं से जुड़े ये मुहूर्त्त

सिंहस्थ गुरु की ही भान्ति अन्य अनेक स्थानीय परम्पराएं हमारे विवाहादि मुहूर्तों के निर्धारण में उन्मुक्त रूप से प्रयुक्त होती हैं। इन परम्पराओं का शास्त्रादेशवत् पालन करने के लिए हमारे मुहूर्त्तशास्त्र भी दैवज्ञों को परामर्श देते हैं। अंग, बंग, कलिंग, हूण, उत्कल, मगध, गुर्ज्जर, मालव, महाराष्ट्र, काश्मीर एवं मध्यदेश आदि प्रान्तों तथा शतद्रु, विपाशा, वितस्ता, गोदावरी, गंगा, यमुना, गण्डकी आदि नदियों के मध्यवर्ती या तटवर्ती प्रदेशों, किञ्च- विन्ध्य, हिमाचल आदि पर्वतों के मध्य एवं पार्श्ववर्ती स्थलों के लिए संहिता, पुराण तथा अन्य मुहूर्त्तग्रन्थों में मंगलकृत्यों के मुहूर्तों के निर्णायक भिन्न-भिन्न नियम, जो अनेकत्र परस्पर अक्षम्य विरोध भी रखते हैं, पदे-पदे उपलब्ध हैं। ऐसी स्थानीय परम्पराओं से पालित-पोषित इन मुहूर्तों द्वारा निर्धारित शुभाशुभकाल के शुभाशुभ परिणामों का आधार वैज्ञानिक कैसे हो सकता है?- यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है।

नक्षत्र चरण एवं नवांश-राशि -बोधक कोष्ठक

—प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण (नवांश) में विद्यमान है- यह इस कोष्ठक से ग्रह एवं लग्न के राश्यादि द्वारा आसानी से जाना जा सकता है। ध्यान रहे— यहां दिए गए राश्यादि वे हैं जहाँ राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे - स्पष्ट सूर्य ५रा.२७ अं. २० कला हो तो कोष्ठक से ज्ञात हो जाता है कि सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र-द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के कन्या के ही नवांश में है, अत: यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोत्तम नवांश के साथ स्टार (*) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है— यह भी कोष्ठक में निर्दिष्ट है।

इस कोष्ठक की मदद से नवांश कुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
० ०० ००	मेष अश्वि. १	* मेष	मं.
० ३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
० ६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
० १० ००	,, ,, ४	कर्क	चं.
० १३ २०	,, भर. १	सिंह	सू.
० १६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
० २० ००	,, ,, ३	तुला	शु.
० २३. २०	,, ,, ४	वृश्चि.	मं.
० २६ ४०	,, कृति. १	धनु	गु.
१ ०० ००	वृष ,, २	मकर	श.
१ ०३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
१ ०६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
१ १० ००	,, रोहि १	मेष	मं.
१ १३ २०	,, ,, २	*वृष	शु.
१ १६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
१ २० ००	,, ,, ४	कर्क	चं.
१ २३ २०	,, मृग. १	सिंह	सू.
१ २६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
२ ०० ००	मिथुन ,, ३	तुला	शु.
२ ०३ २०	,, ,, ४	वृश्चिक	मं.
२. ०६ ४०	,, आर्द्रा १	धनु	गु.
२ १० ००	,, ,, २	मकर	श.
२ १३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
२ १६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
२ २० ००	,, पुन. १	मेष	मं.
२ २३ ००	,, ,, २	वृष	शु.
२ २६ ४०	,, ,, ३	*मिथुन	[illegible]

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
३ ०० ००	कर्क पुन. ४	*कर्क	चं.
३ ०३ २०	,, पुष्य १	सिंह	सू.
३ ०६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
३ १० ००	,, ,, ३	तुला	शु.
३ १३ २०	,, ,, ४	वृश्चिक	मं.
३ १६ ४०	,, आश्ले. १	धनु	गु.
३ २० ००	,, ,, २	मकर	श.
३ २३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
३ २६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
४ ०० ००	सिंह मघा १	मेष	मं.
४ ०३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
४ ०६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
४ १० ००	,, ,, ४	कर्क	चं.
४ १३ २०	,, पू.फा. १	*सिंह	सू.
४ १६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
४ २० ००	,, ,, ३	तुला	शु.
४ २३ २०	,, ,, ४	वृश्चिक	मं.
४ २६ ४०	,, उ.फा. १	धनु	गु.
५ ०० ००	कन्या ,, २	मकर	श.
५ ०३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
५ ०६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
५ १० ००	,, हस्त १	मेष	मं.
५ १३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
५ १६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
५ २० ००	,, ,, ४	कर्क	चं.
५ २३ २०	,, चित्रा १	सिंह	सू.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
६ ०० ००	तुला चित्रा ३	*तुला	शु.
६ ०३ २०	,, ,, ४	वृश्चिक	मं.
६ ०६ ४०	,, स्वाती १	धनु	गु.
६ १० ००	,, ,, २	मकर	श.
६ १३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
६ १६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
६ २० ००	,, विशा. १	मेष	मं.
६ २३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
६ २६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
७ ०० ००	वृश्चिक ,, ४	कर्क	चं.
७ ०३ २०	,, अनु. १	सिंह	सू.
७ ०६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
७ १० ००	,, ,, ३	तुला	शु.
७ १३ २०	,, ,, ४	*वृश्चि.	मं.
७ १६ ४०	,, ज्येष्ठा १	धनु	गु.
७ २० ००	,, ,, २	मकर	श.
७ २३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
७ २६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
८ ०० ००	धनु मूल १	मेष	मं.
८ ०३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
८ ०६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
८ १० ००	,, ,, ४	कर्क	चं.
८ १३ २०	,, पू.षा. १	सिंह	सू.
८ १६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
८ २० ००	,, ,, ३	तुला	शु.
[illegible]	[illegible] ४	वृश्चिक	मं.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी
९ ०० ००	मकर उ.षा. २	*मकर	श.
९ ०३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
९ ०६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
९ १० ००	,, श्रव. १	मेष	मं.
९ १३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
९ १६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
९ २० ००	,, ,, ४	कर्क	चं.
९ २३ २०	,, धनि. १	सिंह	सू.
९ २६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
१० ०० ००	कुम्भ ,, ३	तुला	शु.
१० ०३ २०	,, ,, ४	वृश्चिक	मं.
१० ०६ ४०	,, शत. १	धनु	गु.
१० १० ००	,, ,, २	मकर	श.
१० १३ २०	,, ,, ३	*कुम्भ	श.
१० १६ ४०	,, ,, ४	मीन	गु.
१० २० ००	,, पू.भा. १	मेष	मं.
१० २३ २०	,, ,, २	वृष	शु.
१० २६ ४०	,, ,, ३	मिथुन	बु.
११ ०० ००	मीन ,, ४	कर्क	चं.
११ ०३ २०	,, उ.भा. १	सिंह	सू.
११ ०६ ४०	,, ,, २	कन्या	बु.
११ १० ००	,, ,, ३	तुला	शु.
११ १३ २०	,, ,, ४	वृश्चिक	मं.
११ १६ ४०	,, रेव. १	धनु	गु.
११ २० ००	,, ,, २	मकर	श.
११ २३ २०	,, ,, ३	कुम्भ	श.
[illegible]	,, ,, ४	*मीन	[illegible]

व्रत-पर्व-विवेचन

(इस वर्ष का विशेष स्तम्भ)

(व्रत-पर्वों के निर्णायक सिद्धान्तों का सरलतम शैली में आमूलचूड़ विवेचन)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला- 134109

'श्रीमार्त्तण्डपञ्चाङ्ग' के पाठकों के लिए इस वर्ष हम 37 पृष्ठों के इस **"व्रत–पर्व विवेचन"** नाम के विशेष स्तम्भ द्वारा लगभग सभी चान्द्र (तिथियों से सम्बद्ध) एवं सौर (सूर्य की राश्यादि से सम्बद्ध) व्रत–पर्व की तिथियों के निर्णायक–प्रकार सविस्तर दे रहे हैं। **'कालमाधव', 'पुरुषार्थचिन्तामणि', ' निर्णयसिन्धु '** आदि निबन्धग्रन्थों तथा संहिता, पुराणों में उपलब्ध व्रत–पर्व–निर्णायक सिद्धान्तों का यह सारगर्भ ऐसा संकलन है, जो नवरात्र, रामनवमी, प्रदोष, एकादशी आदि हमारे सभी व्रतोत्सवों को निर्धारित करने वाले विविध उलझे प्रकारों तथा एतत्सम्बद्ध अपेक्षित अन्य गम्भीर महत्त्वपूर्ण विषयों से सरलतम सुबोध शैली में आपको अवगत कराएगा। पृष्ठ 65 पर दिए गए " **व्रत–पर्व शास्त्र के मूलतत्त्व** " लेख को पहले सावधानी से पढ़ जाइए। इससे आगे दिए गए व्रत–पर्व निर्णायक सभी सिद्धान्तों को आप आसानी से समझ जाएंगे।

इस " **व्रत–पर्व–विवेचन** " स्तम्भ में दिए गए विषयों की संक्षिप्त सूची अग्रिम पृष्ठ पर अंकित है।

नोटः- *इस विशेषांक में चर्चित किसी भी व्रत-पर्व के तिथिनिर्णय बारे यदि किसी को संदेह/शंका हो तो वह पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग सकता है - प्रियव्रत शर्मा ।*

'व्रत-पर्व-विवेचन' की विषय सूची

इस 'व्रत-पर्व-विवेचन' स्तम्भ में दी गई यह पूरी सामग्री मैंने अपनी पुस्तक 'व्रत-पर्व-विवेक' से संक्षिप्त कर उद्धृत की है। इस पुस्तक में व्रत-पर्वों के प्रयोजक (निर्धारक) तत्त्वों का इससे कहीं अधिक विस्तृत एवं स्पष्ट विवेचन है। इस पुस्तक का विज्ञापन इसी पंचांग में अन्यत्र दिया गया है, वहां देखें- *प्रियव्रत शर्मा।*

व्रत-पर्व-शास्त्र के मूलतत्त्व

हिन्दु व्रत-पर्वों के दिन का निर्णय करने के लिए जिन मूलभूत तत्त्वों (बातों) का ज्ञान होना आवश्यक है, उनका हम यहां विवेचन करेंगे। व्रत-पर्व निर्णायक शास्त्रों में स्थान-स्थान पर जिन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है, यदि पाठक उन्हें अच्छी तरह समझ ले तो वह पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार व्रत-पर्वों के दिन का निर्णय स्वयं कर सकता है। लीजिए, इन आवश्यक पारिभाषिक पदों एवं व्रत-पर्व शास्त्रीय सिद्धान्तों की विशद व्याख्या हम यहां दे रहे हैं :-

वार

वार का दूसरा नाम 'दिन' है। वार सात हैं- रविवार, चन्द्रवार आदि। इन वारों का प्रारम्भ पाश्चात्य-पद्धति के अनुसार रात के ठीक १२ बजे (० घं. ० मि. पर) हुआ करता है। लेकिन भारतीय ज्योतिष के अनुसार इनका प्रारम्भ सभी नगरों के स्थानीय (अपने-अपने) सूर्योदय के समय होता है। इसके अनुसार वाराणसी में वार चण्डीगढ़ से पहिले ही शुरू हो जाता है, क्योंकि वहां सूर्योदय चण्डीगढ़ से पहिले हो जाता है। यहां व्रतपर्व के निर्णय के प्रसंग में वार या दिन से हमारा अभिप्राय सर्वत्र इसी (स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होने वाले) वार/दिन से ही होगा- **यह ध्यान रखें।**

मुहूर्त्त

दिन और रात्रि में पृथक् - पृथक् १५-१५ मुहूर्त्त होते हैं। अपने स्थान (नगर-ग्राम) के दिनमान और रात्रिमान के घड़ी-पलों को अलग-अलग १५ से भाग देने पर क्रमशः दिन और रात्रि के एक मुहूर्त्त का मान ज्ञात हो जाता है। क्योंकि स्थानभेद से दिनमान,रात्रिमान भिन्न-भिन्न होते हैं, और इनका मान प्रतिदिन बदलता रहता है, अतः स्पष्ट है- अलग-अलग स्थलों पर मुहूर्त का मान प्रतिदिन भिन्न-भिन्न होगा। यदि दिनमान ३० घड़ी है, तो वहां दिन और रात्रि के १ मुहूर्त्त का मान २ घड़ी होगा। यदि दिनमान ३६ घड़ी है तो उसदिन के एक मुहूर्त्त का मान २ घ. २४ प. और रात्रि के एक मुहूर्त्त का मान १ घ. ३६ प. होगा।

मध्यममान से एक मुहूर्त्त दो घड़ी का होता है। दिन और रात्रि के मुहूर्त्तों के नाम अलग-अलग हैं। दिन के १५ मुहूर्त्तों के नाम क्रमशः रौद्र, श्वेत, मैत्र आदि और रात्रि के १५ मुहूर्त्तों के नाम क्रमशः शंकर, अजपाद, अहिर्बुध्न्य आदि हैं। इनके नामों में काफी मतभेद है। व्रत-पर्व-निर्णय में इनके नामों की आवश्यकता नहीं पड़ती।

पूर्णा तिथि

जिसदिन कोई तिथि सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक अथवा सूर्योदय से पहले प्रारम्भ होकर दूसरे सूर्योदय के बाद तक विद्यमान हो वह तिथि उसदिन पूर्णा कहलाती है। **उदाहरणार्थ** -मान लीजिए- आज मंगलवार के सूर्योदय से ३ घड़ी पहिले (चन्द्रवार में) नवमी प्रारम्भ होकर दूसरे दिन बुधवार को सूर्योदय के बाद ४ घड़ी पर समाप्त होती है तो इस नवमी को मंगलवार के दिन पूर्णा तिथि कहा जाएगा। इसवर्ष (सं. २०६० वि.में) चैत्रशुक्ल तृतीया शुक्रवार को पूर्णा है।

सखण्डा तिथि

जिसदिन तिथि सूर्योदय से (या सूर्योदय से पहिले) प्रारम्भ होकर दूसरे सूर्योदय से पहिले समाप्त हो जाती है, वह तिथि उसदिन **'सखण्डा'** या **खण्डा** तिथि कहलाती है। सूर्योदय के बाद प्रारम्भ होकर दूसरे सूर्योदय से पहले ही समाप्त होने वाली तिथि भी सखण्डा होती है। दूसरे शब्दों में हम ऐसा कह सकते हैं- **कि जो तिथि पूर्णा नहीं है, वह 'सखण्डा' या खण्डा है।**

शुद्धा तिथि

जिसदिन कोई तिथि सूर्योदय से सूर्यास्त तक विद्यमान हो (अर्थात्-सूर्योदय से सूर्यास्त तक कोई दूसरी तिथि उसे स्पर्श न करें) वह तिथि उसदिन शुद्धा कहलाती है। **उदाहरणार्थः-** इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) वैशाख शुक्ल प्रतिपदा से द्वादशी तक की तिथियां शुक्र से मंगल तक के १२ दिनों में शुद्धा हैं।

परविद्धा तिथि

जिस दिन कोई तिथि सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त तक विद्यमान हो तो वह तिथि उस दिन परविद्धा (परवर्त्ती तिथि से विद्धा) मानी जाएगी, बशर्ते कि परवर्ती तिथि

उस दिन सूर्यास्त से कम से कम तीन मुहूर्त्त पहिले अवश्य प्रारम्भ हो रही हो। **उदाहरणार्थ:-** यदि मंगलवार को सप्तमी तिथि ५ मुहूर्त्त हो तो वह उसदिन (मंगलवार को) परविद्धा (परवर्ती तिथि अष्टमी से विद्धा) होगी। यदि उसदिन सप्तमी तिथि केवल दो मुहूर्त्त हो या वह १३ मुहूर्त्त हो तो (इन दोनों स्थितियों में) वह सप्तमी परविद्धा (अष्टमी विद्धा) नहीं मानी जाएगी। अर्थात् वेध्यतिथि (वह तिथि जिसे वेधा जा रहा है) और वेधकतिथि (वह तिथि जो वेधने जा रही है) - ये दोनों तिथियां क्रमशः सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहिले कम से कम ३-३ मुहूर्त्तों —— वाली (३-३ मुहूर्त्तों—— को व्याप्त करने वाली) अवश्य होनी चाहिएं। जैसे देखिए- इसवर्ष (सं. २०६० में) चैत्रशुक्ल चतुर्थी, पंचमी और षष्ठी तिथियां क्रमशः रवि, चन्द्र व मंगलवार को परविद्धा (क्रमशः पंचमी, षष्ठी और सप्तमी से विद्धा) हैं। 'परविद्धा' के लिए 'परयुता' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।

पूर्वविद्धा तिथि

जिसदिन कोई तिथि सूर्यास्त से कम से कम तीन मुहूर्त्त पहिले प्रारम्भ हो रही हो तो वह तिथि उसदिन पूर्वविद्धा (पूर्ववर्त्ती तिथि से विद्धा) होगी, वशर्ते कि उससे पूर्ववर्ती (वेधने वाली) तिथि भी उसी दिन सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त्त तक अवश्य विद्यमान हो।

उदाहरणार्थ-यदि रविवार को चतुर्थी तिथि सूर्यास्त से ५ मुहूर्त्त पहिले प्रारम्भ हो रही हो तो वह चतुर्थी उसदिन (रविवार को) पूर्वविद्धा (तृतीया विद्धा) मानी जाएगी। यदि वह चतुर्थी इसदिन सूर्यास्त से दो मुहूर्त्त या १३ मुहूर्त्त पहिले प्रारम्भ हो रही हो तो (इन दोनों स्थितियों में) वह चतुर्थी इसदिन पूर्वविद्धा (तृतीया विद्धा) नहीं होगी।

स्पष्टता के लिए इसवर्ष का पंचांग देखिए - इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) चैत्रशुक्ल *पंचमी, षष्ठी और सप्तमी तिथियां क्रमशः रवि, चन्द्र एवं मंगलवार को पूर्वविद्धा (क्रमशः चतुर्थी, पंचमी और षष्ठी से विद्धा) हैं। 'पूर्वविद्धा' के लिए 'पूर्वयुता' शब्द भी प्रयोग में आता है।*

संक्षेप में हम पूर्वविद्धा -परविद्धा के सिद्धान्त को इस प्रकार कह सकते हैं-यदि कोई तिथि सूर्योदय के बाद कम से कम ३ मुहूर्त्त और अधिक से अधिक १२ मुहूर्त्त तक विद्यमान हो तो यह तिथि परवर्त्ती तिथि को और परवर्ती तिथि उस तिथि को अवश्य विद्ध करेगी। व्रत-पर्व की तिथि के निर्णय में दुविधा उत्पन्न होने की स्थिति में परविद्धा-पूर्वविद्धा तिथि के आधार पर यथार्थ निर्णय सम्भव होता है, यह पाठक आगे चलकर समझ जाएंगे।

कर्मकाल

व्रतपर्व के दिन जिस समय (प्रदोष, मध्याह्न, अपराह्न, चन्द्रोदय आदि काल) में स्नान-दान-जप-पूजा आदि कर्म करने का विधान है, उस समय को **'कर्मकाल'** कहते हैं। **जैसे-** गणेशचतुर्थी व्रत के दिन प्रदोष के समय चन्द्रमा को अर्घ्यदान एवं गणेश-पूजा का विधान है, अतः गणेशचतुर्थी व्रत का कर्मकाल चन्द्रोदयकाल माना गया है। इसी प्रकार श्रीकृष्णजन्माष्टमी के दिन अर्धरात्रि में चन्द्रोदय के समय (श्रीकृष्ण के जन्म के समय) कृष्णपूजा का विधान है, अतः वहां कर्मकाल अर्धरात्रि (चन्द्रोदयकाल) है।

व्रतपर्वों के प्रमुख कर्मकाल (वे कर्मकाल जो हमारे अधिकतर व्रतपर्वों के जप-पूजा आदि अनुष्ठान के लिए निर्धारित हैं) ये हैं:-

(१) प्रातःकाल, (२) संगवकाल, (३) मध्याह्नकाल, (४) अपराह्नकाल,
(५) सायाह्नकाल, (६) प्रदोषकाल, (७) अरुणोदयकाल, (८) निशीथकाल,
(९) सूर्योदयकाल, (१०) सूर्यास्तकाल, (११) चन्द्रोदयकाल।

इनमें से पहिले पांचकाल (प्रातः से सायाह्न तक) " दिन के पांच भाग" कहलाते हैं। सूर्योदयकाल, सूर्यास्तकाल और चन्द्रोदयकाल तीनों स्पष्ट हैं, इनकी व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है। शेष सभी कालों की व्याख्या यहां नीचे दी जा रही है:-

दिन के पांच भाग

दिनमान के पांच समान भाग किए गए है, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:-

(१) प्रातःकाल, (२) संगवकाल, (३) मध्याह्नकाल,
(४) अपराह्नकाल (५) सायाह्नकाल।

अपने स्थान (नगर-ग्राम) के दिनमान के घड़ी-पलों को ५ से भाग देने पर पहला पंचमांश प्रातःकाल, दूसरा संगवकाल, तीसरा मध्याह्नकाल, चौथा अपराह्नकाल और पांचवां पंचमांश सायाह्नकाल होता है।

उदाहरणार्थ- यदि हम चण्डीगढ़ में २० अप्रै. को प्रातः आदि कालों के प्रारम्भ और समाप्तिकाल जानना चाहते हैं तो हमें इसदिन चण्डीगढ़ के दिनमान ३२ घ. १५ प. को ५ का भाग देकर, इनका निर्णय इसप्रकार करना होगा। *यहां दिनमान का पंचमांश ६ घ. २७ प. हुआ।*

इसका अर्थ हुआ, कि इसदिन चण्डीगढ़ में सूर्योदय के बाद ६ घ. २७ प. तक प्रातःकाल, ६ घ. २७ प. के बाद १२ घ. ५४ प. तक संगवकाल, १२ घ. ५४ प. से १६ घ. २१ प. तक मध्याह्नकाल, १६ घ. २१ प. से २५ घ. ४८ प. तक अपराह्नकाल और २५ घ. ४८ प. से ३२ घ. १५ प. तक सायाह्नकाल होगा। प्रातः, संगव आदि के इन प्रारम्भ-समाप्तिकालों के घ. प. को घं. मि. बनाकर २० अप्रै. के चण्डीगढ़ के सूर्योदयकाल (भा.स्टैं.टा.) में जोड़ देने पर, ये सभी काल भा.स्टैं.टा. में बदल जाएंगे- यह तो स्पष्ट ही है।

जिसदिन मध्याह्न के समय चैत्रशुक्ल नवमी हो उसदिन रामनवमी व्रत होता है, जिसदिन मृत्युतिथि अपराह्नकाल में विद्यमान हो उसदिन उसी तिथि में दिवंगत व्यक्ति का श्राद्ध किया जाता है;- इत्यादि निर्णयों में प्रयुक्त मध्याह्न, अपराह्न आदि कालों का निर्धारण उपरोक्त प्रकार से ही किया जाता है।

प्रदोषकाल

सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त्त का समय प्रदोषकाल कहलाता है। **ध्यान रहे-** यहां रात्रिमान के घड़ी पलों को १५ से भाग देकर लब्धि को तिगुना करके तीन मुहूर्त्त ज्ञात होंगे (अथवा रात्रिमान को पांच से भाग देकर भी रात्रि के पांच मुहूर्त्त ज्ञात किए जा सकते हैं)।

उदाहरणार्थः- २३ अप्रै. को चण्डीगढ़ में प्रदोषकाल जानना है। इसदिन चण्डीगढ़ में दिनमान ३२ घ. ३० प. है, अतः रात्रिमान २७ घ. ३० प. हुआ। रात्रिमान का पंचमांश ५ घ. ३० प. हुआ। यह इसदिन रात्रि के तीनमुहूर्तों — का मान है। इसका अर्थ हुआ कि २३ अप्रै. को चण्डीगढ़ में सूर्यास्त (६ घं. ५१ मि.) के बाद ५ घ. ३० प. (२ घं. १२ मि.) तक (अर्थात् ९ घं. ३ मि. रात्रि तक) प्रदोषकाल रहेगा।

" जिसदिन प्रदोष के समय त्रयोदशी हो उसदिन प्रदोषव्रत होता है, जिसदिन प्रदोष के समय फाल्गुन पूर्णिमा हो उसदिन होलिकादहन होता है," इत्यादि प्रंसंगो में प्रयुक्त होने वाले प्रदोषकाल का निर्णय उपरोक्त प्रकार से ही किया जाता है।

अरुणोदयकाल

सूर्योदय से चार घड़ी पहिले तक का काल 'अरुणोदय काल' कहलाता है। एकादशी व्रत के निर्णय तथा स्नान आदि के लिए अरुणोदयकाल का विचार किया जाता है।

निशीथकाल

सामान्यतया अर्धरात्रि को '**निशीथ**' कहा जाता है, लेकिन व्रतपर्व-निर्णय के प्रसंग में रात्रि का आठवां मुहूर्त्त निशीथ कहलाता है। निशीथकाल का प्रयोग शिवरात्रि, होलिकादहन आदि व्रतपर्वो के निर्णय में होता है।

प्रदोष आदि व्यापिनी तिथि

प्रदोषव्यापिनी, मध्याह्नव्यापिनी, अपराह्नव्यापिनी, आदि तिथियों की चर्चा तो प्रत्येक व्रतपर्व के निर्णय के प्रसंग में अक्सर होती ही है। यहां व्यापिनी का अर्थ है," व्याप्त (विद्यमान) रहने वाली"। इस प्रकार "**प्रदोषव्यापिनी तिथि**" का अर्थ है- वह तिथि जो प्रदोषकाल में व्याप्त (विद्यमान) हो और 'मध्याह्नव्यापिनी तिथि' का अर्थ है- वह तिथि जो मध्याह्नकाल में व्याप्त (विद्यमान) हो। किसी व्रत-पर्व के लिए प्रदोषव्यापिनी, किसी के लिए मध्याह्नव्यापिनी, किसी के लिए अपराह्नव्यापिनी और किसी के लिए चन्द्रोदयव्यापिनी आदि तिथि ली जाती है। **जैसे- प्रदोषव्रत** उसदिन किया जाता है, जिसदिन त्रयोदशी प्रदोषव्यापिनी हो। **श्रीरामनवमी** व्रत उसदिन किया जाता है, जिसदिन चैत्रशुक्ल नवमी मध्याह्नव्यापिनी हो ...... आदि आदि।

यहां एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है- प्रदोषव्यापिनी, मध्याह्नव्यापिनी, अपराह्नव्यापिनी आदि तिथि का यह अर्थ कदापि नहीं है, कि वह तिथि प्रदोष, मध्याह्न या अपराह्न आदि के पूरे काल (पूरे तीन मुहूर्त्तों में) विद्यमान हो। यदि तिथि प्रदोष आदि काल के थोड़े से भाग (एक पलमात्र) को भी व्याप्त करती हो तब भी उस तिथि को प्रदोषव्यापिनी आदि माना जाता है।

ध्यान दें- व्रतपर्व की तिथि अपने कर्मकाल (प्रदोष, अपराह्न आदि) को कई बार केवल एक ही दिन (पहिले या दूसरे दिन), कई बार दो दिन (एक दिन अधिक, दूसरे दिन कम अथवा दोनों दिन समान रूप से) व्याप्त करती है और कई बार वह उसे दोनों दिन बिल्कुल भी व्याप्त नहीं करती। ऐसी स्थितियों में जब वह कर्मकाल को केवल एक ही दिन व्याप्त कर रही हो तब अधिकतर उसी दिन (जिसदिन वह कर्मकाल को व्याप्त कर रही है उसी दिन) उसका व्रतपर्व मनाया जाता है। शेष स्थितियों में उस तिथि का व्रत-पर्व या तो उसदिन मनाया जाएगा जिसदिन वह पूर्वविद्धा होगी, अथवा उसे उसदिन मनाना होगा, जिसदिन वह परविद्धा हो। " किस तिथि का व्रत-पर्व पूर्वविद्धा वाले दिन मनाया जाए, किसका परविद्धा वाले दिन "- इसका निर्णय **"युग्मवाक्य"** द्वारा किया जाता है। युग्मवाक्य का विवेचन नीचे किया जा रहा है।

युग्मवाक्य

जैसा कि पहिले भी लिख चुके हैं- प्रत्येक व्रतपर्व का कर्मकाल निश्चित है। व्रतपर्व की तिथि जिसदिन 'कर्मकाल' को व्याप्त करती है उसी दिन वह व्रतपर्व मनाया जाता है। **जैसे-** गणेशचतुर्थी व्रत का कर्मकाल चन्द्रोदयकाल है। कृष्ण चतुर्थी जिसदिन चन्द्रोदयव्यापिनी

होगी, उसी दिन गणेशचतुर्थी व्रत होगा। लेकिन कई बार व्रत-पर्व की तिथि दो दिन **"कर्मकाल-व्यापिनी"** हो जाती है और कई बार वह दोनों दिन कर्मकाल का स्पर्श भी नहीं कर पाती - इन दोनों स्थितियों में व्रत-पर्व के दिन का निर्णय करने के लिए युग्मवाक्यों का सहारा लिया जाता है। ये युग्मवाक्य यह बतलाते हैं, कि - इन उपरोक्त दो स्थितियों में (जबकि व्रत-पर्व की तिथि दो दिन कर्मकाल व्यापिनी हो या दोनों दिन वह कर्मकाल व्यापिनी हो न हो तब) उसदिन वह व्रत-पर्व मनाया जाए, जिसदिन वह तिथि पूर्वविद्धा हो या परविद्धा। सामान्यरूप से प्रयोग में आने वाला युग्मवाक्य यह है-

युग्माग्नि-युग-भूतानां षण्मुन्योः वसुरन्ध्रयोः।
रुद्रेण द्वादशीयुक्ता चतुर्दश्या च पूर्णिमा।।
प्रतिपद्यमावस्या तिथ्योर्युग्मं महाफलम्।

इस युग्मवाक्य का अर्थ है- द्वितीया और तृतीया, चतुर्थी और पंचमी, षष्ठी और सप्तमी, अष्टमी और नवमी, एकादशी और द्वादशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा तथा प्रतिपदा और अमावस्या तिथियों के ये युग्म (जोड़े) शुभ माने गए हैं। अर्थात् जिसदिन ऊपर लिखे तिथियों के ये युगल एक दूसरे का वेध कर रहे हों। उसीदिन उन तिथियों से सम्बद्ध व्रत-पर्व मनाने चाहिएं। **जैसे**-ऊपर दिए गए युग्म वाक्य में द्वितीया और तृतीया तिथियों के युगल को शुभ लिखा है। इसका अर्थ यह है, कि- द्वितीया और तृतीया तिथियों से सम्बद्ध व्रतपर्व उसी दिन मनाए जाएं जिसदिन ये दोनों तिथियां एक-दूसरे को विद्ध कर रही हों। अर्थात् जहां द्वितीया तृतीयाविद्धा (परविद्धा) हो और तृतीया द्वितीयाविद्धा (पूर्वविद्धा)।

यहां यह ध्यान में रखना चाहिए, जैसाकि हम पहले भी बतला चुके हैं, कि- यह युग्मवाक्य तभी प्रयोग में लाया जा सकेगा जबकि व्रतपर्व की तिथि कर्मकाल को या तो दोनों दिन व्याप्त कर रही हो या वह वहां दोनों दिन कर्मकाल को व्याप्त न करे। यदि व्रत-पर्व की तिथि एक ही दिन कर्मकाल को व्याप्त कर रही हो तब तो वह व्रतपर्व लगभग सर्वदा उसी दिन मनाया जाता है, इसस्थिति में वहां युग्मवाक्य का प्रयोग नहीं किया जाता है ।

उपरोक्त युग्मवाक्य सामान्य (अधिकतर व्रतपर्वों की तिथियों के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला) है। लेकिन अनेक व्रतपर्व ऐसे भी हैं, जिनके लिए इससे भिन्न विशेष युग्मवाक्य व्रतपर्व शास्त्र में निर्दिष्ट हैं। **जैसे-** चतुर्थी और पंचमी का युग्म, ऊपर दिए गए सामान्य युग्मवाक्य में शुभ लिखा है। लेकिन गणेशचतुर्थी व्रत के लिए यह प्रयोग में नहीं लाया जाता। क्योंकि इसके लिए **" चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते"-** यह विशेष युग्मवाक्य है, जिसका अर्थ है- गणेशचतुर्थी व्रत के लिए तृतीयाविद्धा चतुर्थी लेनी चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि चन्द्रोदयव्यापिनी कृष्णचतुर्थी में गणेशचतुर्थी व्रत किया जाता है, यदि चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो गणेशचतुर्थी व्रत उसदिन किया जाए जिसदिन चतुर्थी तृतीयाविद्धा हो । इसप्रकार कई और भी व्रतपर्व हैं, जिनके लिए विशेष युग्मवाक्य मिलते हैं, जो उपरोक्त सामान्य युग्मवाक्य के अपवाद हैं। उनका निर्देश हम आगे चलकर उन व्रत-पर्वों के निर्णय के प्रसंग में करेंगे।

ध्यान रहे - पूर्णातिथि के लिए युग्मवाक्यों का प्रयोग अधिकतर नहीं होता। यदि तिथि पूर्णा है तो उस तिथि का व्रत-पर्व अक्सर उसीदिन (पूर्णातिथि वाले दिन ही) मनाया जाता है।

किसी भी तिथि से सम्बद्ध व्रत-पर्व के निर्णय हेतु उसतिथि के **'कर्मकाल'** में उसतिथि का अभाव होने पर व्रतपर्व के निर्णयार्थ कई स्थलों पर **साकल्यापादिता तिथि** का भी प्रयोग किया जाता है, जिसका विवेचन नीचे दे रहे हैं:-

साकल्यापादिता तिथि

यदि किसी दिन कोई तिथि सूर्यास्त से पहिले ही समाप्त हो रही है, तो उसे पूरा दिन (दिन के प्रत्येक संगव, मध्याह्न, अपराह्न एवं सायह्न भाग में) विद्यमान किया जाता है, बशर्ते कि वह उस दिन सूर्योदयानन्तर कम से कम तीन मुहूर्त्त तक (दिनके पूरे प्रथम पंचमभाग 'प्रातः' में) अवश्य विद्यमान हो। इसी प्रकार यदि किसी दिन कोई तिथि सूर्यास्त से पहिले प्रारम्भ हो रही है तो उसे भी पूरादिन (दिन के प्रत्येक भाग प्रातः, संगव, मध्याह्न एवं अपराह्न में) विद्यमान माना जाता है, बशर्ते कि वह उसदिन सूर्यास्त से पहिले कम से कम तीन मुहूर्त्त तक (दिन के पूरे अन्तिम पंचम भाग 'सायाह्न' में) अवश्य विद्यमान हो। ऐसी काल्पनिक तिथि को (जो गणितागत यानी पंचांग में दी गई तिथि से भिन्न है) **"साकल्यापादिता"** या **'आपाद्या'** तिथि कहा जाता है। इस 'आपाद्या' तिथि का आश्रय ऐसे व्रतपर्व का दिन निर्धारित करने के लिए लिया जाता है, जहां गणितागत तिथि उस व्रत-पर्व के कर्मकाल में विद्यमान न हो। इसका विशेष स्पष्टीकरण ऐसे व्रतपर्वों के निर्धारण के प्रसंग में हम आगे चल कर इसी लेख में यथास्थान करेंगे।

ये व्रतपर्व निर्णय के मूलसिद्धान्त हैं। इनके अतिरिक्त और भी छोट-मोटे अनेक नियम-सिद्धान्त हैं, जिनका प्रयोग व्रतपर्व निर्णायक ग्रन्थों में यत्र-तत्र किया गया है। उनका विवेचन भी हम प्रसंग आने पर करेंगे।

*****

छात्रदिनचर्या

प्रातः	04.00–05.00	प्रातःस्मरण, शौचस्नान,सन्ध्योपासना
"	05.00–05.30	योगासन
"	05.30–07.30	स्वाध्याय
पूर्वाह्न	07.30–08.00	प्रातराश
"	08.00–12.00	वेदाध्ययन
मध्याह्न	12.00–12.30	मध्याह्न सन्ध्या
"	12.30–14.00	भोजन,विश्राम
अपराह्न	14.00–17.00	वेदाभ्यास
"	17.00–18.30	संस्कृत शिक्षण
"	18.00–19.30	क्रीडासन्ध्या आरार्तिक्यं
"	19.30–20.30	भोजन व विराम
सायम्	20.30–22.00	लेखन व पठन
	22.00	रात्रि विश्राम

चैत्रादि बारह मासों के चान्द्र व्रत-पर्व

आगे 17 पृष्ठों पर चैत्रादि बारह चान्द्रमासों में घटित होने वाले लगभग सभी चान्द्र व्रत-पर्वों की तिथियों के निर्णयप्रकार दिए गए हैं। यहां प्रतिपक्ष एवं प्रतिमास घटित होने वाले चान्द्र व्रत-पर्वों को समाविष्ट नहीं किया गया है। सौर व्रत-पर्व भी यहां समाविष्ट नहीं हैं। इनके निर्णय के लिए पृष्ठ 87 से 92 तक देखना चाहिए।

65 से 68 पृष्ठ तक दिए गए 'व्रत-पर्व शास्त्र के मूलतत्त्व' लेख को भलीभान्ति समझ लेने के बाद पाठक को यहां आगे दिए गए व्रत-पर्व-निर्णय के नियम-सिद्धान्तों को समझने में तनिक भी कठिनाई नहीं होगी,- ऐसा हमारा विश्वास है। व्रत-पर्व-निर्णय के इन नियम-सिद्धान्तों को समझने के लिए यद्यपि वह लेख पर्याप्त है, फिर भी स्पष्टता के लिए निम्नलिखित ये कुछेक अन्य बातें भी, जो उस लेख में शायद पूरी तरह स्पष्ट न हुई हों; पाठक को समझ लेनी चाहिएं-

(1) " तिथि यदि व्रतोत्सव के कर्मकाल में दो दिन व्याप्त या अव्याप्त हो तो युग्मवाक्यानुसार पूर्वविद्धा या उत्तरविद्धा तिथि में वह व्रतोत्सव करना चाहिए" - यह पहिले बतला चुके हैं। आगे दिए जा रहे व्रतोत्सवों की तिथियों के निर्णय में लगभग सर्वत्र यह निर्देश किया गया है कि यहां पूर्वविद्धा तिथि ली जाए या परविद्धा। लेकिन कई व्रतोत्सवों के निर्णय में केवल मात्र यही कहा गया है कि वहां अमुक (मध्याह्न/अपराह्णादि) कर्मकाल में व्याप्त तिथि ली जाए। वहां पूर्वविद्धा, परविद्धा के ग्रहण का निर्देश नहीं है। (जैसा, कि भाद्र. शुक्ल तृतीया को मनाई जाने वाली 'वराह जयन्ती' में)। ऐसे स्थानों पर पाठक को स्वयं युग्मवाक्यानुसार पूर्वविद्धा या परविद्धा तिथि की ग्राह्यता का निर्णय कर लेना चाहिए।

ध्यान रहे- यहां कई व्रतोत्सवों की तिथियों के निर्धारण में पूर्वविद्धा या परविद्धा तिथि की ग्राह्यता का निर्णय युग्मवाक्यानुसार नहीं, अपितु कुछ अन्य विशेष वेधवाक्यों के अनुसार भी किया गया है।

(2) यहां कुछ व्रतोपवास ऐसे भी हैं, जिनकी तिथि के निर्णय में केवलमात्र यही लिखा है कि अमुक व्रतोपवास की तिथि पूर्वविद्धा लेनी चाहिए, अथवा परविद्धा। ऐसे व्रतोपवास के कर्मकाल का निर्देश वहां बिल्कुल नहीं है। (इसका उदाहरण भाद्र. शुक्ल षष्ठी को किया जाने वाला 'सूर्यषष्ठी' व्रत है)। ऐसे व्रतों की तिथि के निर्णय के लिए निम्नांकित ये कुछ बातें समझ लेनी चाहिएं।

(क) यदि व्रततिथि पूर्वविद्धा लेने का निर्देश हो तो वहां व्रतोपवास की तिथि का निर्णय इस प्रकार करना होगा:-

(i) दूसरे दिन यदि वह तिथि शुद्धा (सूर्योदय से सूर्यास्तपर्यन्त विद्यमान) हो तो व्रत प्रत्येक स्थिति में दूसरे दिन (शुद्धा वाले दिन) ही होगा।

(ii) पहले दिन यदि वह तिथि सूर्योदय से तीन मुहूर्त्त बाद और सूर्यास्त से तीन मुहूर्त्त पहले तक की अवधि में प्रारम्भ हो तो व्रत पहले दिन होगा।

(iii) यदि पहले दिन तिथि सूर्यास्त से पहले तीन मुहूर्त्त से कम हो तो व्रत दूसरे दिन होता है।

(iv) यदि पहले दिन तिथि सूर्योदयानन्तर तीन मुहूर्त्त के भीतर प्रारम्भ हो तो व्रत पहले ही दिन होगा।

(v) यदि तिथि का क्षय हो तो व्रत उसी दिन(जिस दिन वह तिथि विद्यमान है) होगा।

(ख) यदि व्रत तिथि परविद्धा लेने का निर्देश हो तो वहां व्रतोपवास की तिथि का निर्णय इस प्रकार किया जाएगाः–

(i) यदि वह तिथि पहले दिन पूर्णा (सूर्योदय से सूर्योदयपर्यन्त) हो तो व्रत प्रत्येक स्थिति में पहले दिन ही किया जाएगा।

(ii) यदि दूसरे दिन वह तिथि सूर्योदयानन्तर तीन मुहूर्त्त या इससे अधिक हो तो व्रतोपवास दूसरे दिन होगा।

(iii) यदि दूसरे दिन वह तिथि सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्त से कम हो तो व्रतोपवास पहले दिन होगा।

(iv) यदि तिथिक्षय हो तो व्रतोपवास उसी दिन (जिस दिन वह तिथि विद्यमान है) होगा।

(३) जहां व्रत–पर्व की तिथि सूर्योदयव्यापिनी लेने का निर्देश हो (जैसे– 'वाल्मीकि जयन्ती' आदि में है), वहां ये निम्नांकित बातें ध्यान में रखनी चाहिएंः–

(i) यदि तिथि दो दिन उदयव्यापिनी हो तो व्रत–पर्व पहले दिन, अन्यथा दूसरे दिन ही होगा।

(ii) यदि तिथिक्षय हो तो सम्बद्ध व्रत–पर्व उसी दिन होगा, जिस दिन वह तिथि विद्यमान है।

अब लीजिए – चैत्र आदि २४ पक्षों के व्रत–पर्वों की तिथियों के निर्णयप्रकार नीचे दिए जा रहे हैं–

चैत्र शुक्ल के व्रत-पर्व

नव-संवत्सर का प्रारम्भ

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही संवत्सर प्रारम्भ होता है। संवत्सर का आरम्भ उदयकालिक प्रतिपदा के दिन किया जाता है। यदि प्रतिपदा की वृद्धि हो (अर्थात् प्रतिपदा दो दिन उदयकाल में व्याप्त हो) तो पहिले दिन, यदि वह प्रतिपदा क्षीण हो, अर्थात् प्रतिपदा दोनों दिन सूर्योदयकाल में व्याप्त न हो तो नवसंवत्सर उसी दिन प्रारम्भ होगा, जिसदिन वह तिथि प्रारम्भ व समाप्त हो रही है, (अर्थात् जिसदिन में वह तिथि विद्यमान है।) इस स्थिति में नववर्षारम्भ उसी दिन होगा, जिस दिन प्रतिपदा समाप्त हो रही हो- यह स्पष्ट है। इस विषय में 'धर्मसिन्धुकार' का वचन है- **"तत्र चैत्र-शुक्ल प्रतिपदि वत्सरारम्भः। तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा।"**

नवसंवत्सरारम्भ वाले दिन वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण आदि कृत्य किए जाते हैं।

नवसंवत्सर का राजा

चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा जिस वार को उदयव्यापिनी होती है, उस वार का स्वामी ग्रह ही वर्षेश होता है, यदि प्रतिपदा दो दिन उदयव्यापिनी हो (अर्थात् प्रतिपदा की वृद्धि हो) तो पहले दिन के वार के स्वामी ग्रह को ही वर्षेश माना जाता है। यदि प्रतिपदा दोनों दिन उदयव्यापिनी न हो (अर्थात् प्रतिपदा

का क्षय हो) तो भी पहले दिन (उदयव्यापिनी चैत्र-कृष्ण अमा) के वार के स्वामी को ही वर्षेश मानने का विधान है। "ज्योतिर्निबन्ध" का वाक्य है:-

" चैत्रे सितप्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये सः वर्षेशः। उदय द्वितये पूर्वः, नोदय युगलेऽपि पूर्वः स्यात् ।"

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि नव-वत्सरारम्भ के वार का स्वामी (वारेश) ही उस नए संवत्सर का राजा होता है।

वासन्त नवरात्रारम्भ

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में **वासन्त नवरात्रारम्भ, कलशस्थापन** किया जाता है। यदि सूर्योदयानन्तर एक मुहूर्त्त के लिए भी प्रतिपदा प्राप्त हो तो नवरात्रारम्भ, कलशस्थापन उसी दिन प्रातः करने का शास्त्र-निर्देश है। एक मुहूर्त से कम यदि प्रतिपदा हो, तब शास्त्रकारों ने नवरात्रारम्भ के लिए अमायुक्ता प्रतिपदा को ग्राह्य लिखा है। अन्यथा अमायुक्ता प्रतिपदा में चण्डिकार्चन (नवरात्रारम्भ) का निषेध है । देवीपुराण का वाक्य है- **'अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्तमात्रा कर्त्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।।'**- *(देवीपुराण)*। **किञ्च-** यदि प्रतिपदा का क्षय हो जाए तो भी पहले ही दिन अमायुक्ता प्रतिपदा में ही नवरात्रारम्भ करने का शास्त्रनिर्देश है। " **निर्णयसिन्धु**" में यही बात स्पष्ट रूप से लिखी है :- **" परदिने प्रतिपदोऽत्यन्तासत्त्वे तु दर्शयुता पूर्वैव ग्राह्या।"**

यदि प्रतिपदा की वृद्धि हो (अर्थात् वह दो दिन सूर्योदय का स्पर्श करे) तब पहले दिन (षष्टिघट्यात्मक प्रतिपदा के दिन) ही नवरात्रारम्भ करना चाहिए;- ऐसा निबन्धकारों का निर्णय है। शुद्धा या पूर्णा (षष्टि-घटीव्यापिनी) प्रतिपदा को छोड़कर दूसरे दिन द्वितीयाविद्धा में नवरात्रारम्भ करना सर्वथा शास्त्र-विरुद्ध है। शुद्धातिथि के अभाव में ही युग्मवाक्य (पूर्वविद्धा या परविद्धा की ग्राह्याग्राह्यता का निर्णय करने वाले वाक्य) स्वीकार किए जाते हैं;- यह ध्यान रखना चाहिए ।

गौरीतृतीया

चैत्र, भाद्रपद और माघ मासों की शुक्ल तृतीयाएं " **गौरीतृतीया**" कहलाती हैं। गौरी-तृतीया का व्रत परविद्धा (चतुर्थीविद्धा) तृतीया में करने का निर्देश है। यदि तृतीया दूसरे दिन एक मुहूर्त्त भी हो तो उसी दिन (दूसरे ही दिन) यह व्रत करना चाहिए। " **पुरुषार्थचिन्तामणि**" कार का वचन है- **" चैत्र-भाद्रपद-माघशुक्ल-तृतीयासु गौरीव्रतं विहितम्। तत्र मुहूर्तमात्राऽप्युत्तरैव।"**- *(पुरुषार्थचिन्तामणिः)* ।

'कालमाधव' कार का कहना है, कि- तृतीया की वृद्धि होने पर यदि दूसरे दिन तृतीया एक मुहूर्त्त भी हो तब पहिली षष्टि घटिकात्मक शुद्धा तृतीया को भी छोड़कर दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि गौरीतृतीया का गणेश की तिथि (चतुर्थी) से सम्पर्क का माहात्म्य है-

मुहूर्त्तमात्र सत्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे।
शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोग-प्रशंसनात्।।- *(कालमाधव)*

धर्मसिन्धुकार का तो मत है, कि यदि दूसरे दिन तृतीया यत्किंचित्काल (घड़ी से भी कम काल) के लिए क्यों न हो तब भी दूसरे ही दिन गौरीव्रत करना चाहिए ।

चैत्रशुक्ल तृतीया वाली गौरी तृतीया को राजस्थान आदि में **"गणगौर"** भाद्र. शुक्ल वाली तृतीया को **"हरितालिका तृतीया"** और माघशुक्ल वाली तृतीया को **गौरीतृतीया** कहते हैं। हि.प्र., पंजाब आदि में इसे गोंत्री या गोंतरी कहा जाता है। यह सौभाग्यवती महिलाओं का व्रत है।

श्री मत्स्यजयन्ती

अपराह्णव्यापिनी चैत्रशुक्ल तृतीया के दिन मत्स्यजयन्ती मनाई जाती है :-

चैत्रशुक्ल तृतीयायामपराह्ने मत्स्योत्पत्तिः। - *(धर्मसिन्धु)* ।

श्री (लक्ष्मी) पंचमी

यह व्रत चतुर्थीविद्धा चैत्रशुक्ल पंचमी को किया जाता है। धर्मशास्त्र का निर्णय है कि स्कन्दव्रत के अतिरिक्त सभी व्रतों में पंचमी चतुर्थी विद्धा ली जाए,- पुरुषार्थचिन्तामणि का वाक्य है-

" सा (पंचमी) च स्कन्दोपवासातिरिक्तोपवासे पूर्व (चतुर्थी) विद्धा ग्राह्या।"

नाग पञ्चमी

परविद्धा चैत्रशुक्ल पंचमी में नागव्रत (नागपंचमी व्रत) किया जाता है । यदि दूसरे दिन पंचमी त्रिमुहूर्त्तन्यूना (तीन मुहूर्तों से कम) हो और पहिले दिन तीन मुहूर्त से कम चतुर्थी से वह विद्ध हो तो पहिले दिन ही यह व्रत किया जाता है। यदि पंचमी को त्रिमुहूर्त्ताधिक चतुर्थी विद्ध कर रही हो तो दूसरे दिन द्विमुहूर्त्ता पंचमी में भी यह व्रत करना चाहिए- यह धर्मशास्त्र का निर्देश है-

"नागव्रते पञ्चमी परविद्धा ग्राह्या, परेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यूना पञ्चमी पूर्वेद्युः त्रिमुहूर्त्तन्यून-चतुर्थ्या विद्धा तदा पूर्वैव। त्रिमुहूर्ताधिक -चतुर्थी- वेधे द्विमहुर्ताऽपि परैव।"- *(धर्मसिन्धुः)*।

यहां **'पुरुषार्थचिंतामणि'** कार का भी यही कहना है, कि- नागव्रत पहिले दिन तभी करना चाहिए जबकि परविद्धा पंचमी न मिले। परविद्धा पंचमी मिलने पर तो दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए-

"अत्र उत्तर-विद्धाया अलाभ एव पूर्वा, तल्लाभे तूत्तरैव"- *(पुरुषार्थचिन्तामणिः)*।

परम्परानुसार अनेक प्रदेशों में श्रावणशुक्ल और भाद्र. शुक्ल पंचमी के दिन भी नागपंचमी मनाई जाती है। इनका निर्णय भी चैत्रशुक्ल नागपंचमी की भांति ही पूर्वोक्त नियमानुसार किया जाता है।

स्कन्दषष्ठी

पंचमीविद्धा चैत्रशुक्ल षष्ठी के दिन यह व्रत किया जाता है। **ध्यान रहे-** यहां पंचमी तीन मुहूर्त से नहीं, अपितु छः मुहूर्त्त से वेध करती है। इसलिए यदि छः मुहूर्त्त से कम पंचमी पहिले दिन हो तो उससे षष्ठी का वेध नहीं माना जाएगा।

दुर्गाष्टमी व्रत

नवमी विद्धा-चैत्रशुक्ल अष्टमी वाले दिन यह व्रत किया जाता है। इसी दिन भगवती दुर्गा का आविर्भाव माना जाता है। धर्मसिन्धु का वाक्य है:-

चैत्र शुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः, तत्र नवमीयुता अष्टमी ग्राह्या।

श्रीराम-नवमी व्रत

श्रीराम का जन्म मध्याह्नव्यापिनी चैत्रशुक्ल नवमी में हुआ था, जिस दिन चैत्रशुक्ल नवमी मध्यह्नव्यापिनी होती है उसी दिन श्रीरामनवमी व्रत किया जाता है। यदि नवमी दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो या मध्याह्नव्यापिनी न हो तब दशमीविद्धा नवमी वाले दिन ही यह व्रत करना चाहिए;- ऐसा धर्मशास्त्रकारों का निर्णय है- **"दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ अव्याप्तौ वा परा, अष्टमीविद्धाया निषेधात्।।"** - *(धर्मसिन्धु)*। [(अर्थात् यदि नवमी दो दिन मध्याह्न में व्याप्त हो या दोनों दिन मध्याह्न में अव्याप्त हो तो दूसरे दिन (परविद्धा नवमी वाले दिन) ही व्रत करना चाहिए, क्योंकि यहां अष्टमीविद्धा नवमी को *स्वीकार नहीं किया जाता।)]*

यदि नवमी दूसरे दिन सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त्त तक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय *वाले लोग उसी दिन रामनवमी व्रत करते हैं।।* इस स्थिति में वे पहले दिन मध्याह्नव्यापिनी नवमी को भी *छोड़ देते हैं। 'धर्मसिन्धु' कार का वचन है-* **" वैष्णवै : त्रिमुहूर्त्तयुता परैवोपोष्या।"** मध्याह्न के समय *नवमी और पुनर्वसु का योग इस व्रत के लिए* विशेष माहात्म्य रखता है।

अनङ्ग त्रयोदशी

पूर्वविद्धाचैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन अनङ्ग त्रयोदशी मनाई जाती है। यदि दो दिन त्रयोदशी हो तो द्वादशीविद्धा त्रयोदशी के दिन ही यह पर्व मनाया जाता है। **"तत्र त्रयोदशी पूर्वविद्धा ग्राह्या"** -*(धर्मसिन्धु)*।

वैशाखस्नान प्रारम्भ

उदयव्यापिनी चैत्र पूर्णिमा से वैशाखस्नान-नियमादि प्रारम्भ होता है। इसकी पूर्णता एकमास बाद उदयव्यापिनी वैशाखपूर्णिमा के दिन होती है। कुछ प्रान्तों में स्थानीय परम्परा के अनुसार वैशाखस्नान चैत्रशुक्ल एकादशी अथवा मेषसंक्रान्ति से प्रारम्भ होकर क्रमशः वैशाखशुक्ल एकादशी एवं वृष-संक्रान्ति वाले दिन भी सम्पन्न (पूर्ण) होता है।

श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन यह **'जयन्ती'** मनाई जाती है।

वैशाख कृष्ण के व्रत-पर्व

श्री वल्लभाचार्य जयन्ती

वैशाख कृष्ण एकादशी को **श्रीवल्लभाचार्य** जयन्ती मनाई जाती है।

वैशाख शुक्ल के व्रत-पर्व

श्रीपरशुराम जयन्ती

वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन प्रदोष या रात्रि प्रथमयाम को व्याप्त करे उस दिन श्री परशुराम जयन्ती मनाई जाती है- **" इयं रात्रिप्रथमयाम व्यापिनी ग्राह्या।"** - *(धर्मसिन्धु)*।

" सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या" - *(पुरुषार्थचिन्तामणि)*।

'रात्रि का प्रथमयाम' और 'प्रदोष' शब्द सामान्यतः समानार्थक हैं।

ध्यान रहे- कुछ लोगों को भ्रान्ति है, कि **'अक्षयतृतीया'** वाले दिन ही **'परशुराम जयन्ती'** होती है। अक्षयतृतीया और परशुराम जयन्ती दोनों सर्वथा भिन्न-भिन्न पर्व हैं। इसलिए इनके निर्णायक तत्त्व भी एक दूसरे से भिन्न हैं।

अक्षय तृतीया

वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया मनाई जाती है। यह युगादि तिथि है। इस दिन पितृश्राद्ध करने का विधान है । शास्त्रनिर्णय है, कि- कृष्णपक्ष की युगादि तिथियों का अनुष्ठान (श्राद्ध) *अपराह्न में और शुक्लपक्षीय युगादि तिथियों का पूर्वाह्न में किया जाता है। इसके अनुसार वैशाखतृतीया*

पूर्वाह्णव्यापिनी जिस दिन होगी उसी दिन अक्षयतृतीया मनाई जाएगी। यदि द्वेधा विभक्त 'दो से विभाजित' दिन के पूर्वार्ध (पूर्वाह्ण) को तृतीया दो दिन व्याप्त करती हो तो अक्षयतृतीया को उस स्थिति में दूसरे ही दिन मनाने का शास्त्रादेश है, जबकि वह दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्त या इससे अधिक समय को व्याप्त करे। यदि इससे (तीन मुहूर्त्त से) कम काल को वह व्याप्त करे तो पहले दिन ही अक्षयतृतीया मनाई जाती है। 'धर्मसिन्धुकार' का वचन है-

"द्वेधाविभक्त-दिन-पूर्वार्धैक-देश-व्यापिनी दिनद्वये चेत्, त्रिमुहूर्त्ताधिक व्याप्तिसत्त्वे परा, त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वा"।

श्री गंगाजन्म

मध्याह्नव्यापिनी वैशाखशुक्ल सप्तमी में यह पर्व मनाया जाता है। *'धर्मसिन्धु'* का यह वाक्य है-

वैशाखशुक्ल सप्तम्यां गंगोत्पत्तिः। तस्यां मध्याह्नव्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्।।

श्री जानकी जयन्ती

निर्णयसिन्धुकार ने फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को श्री सीता जी का जन्म माना है, परन्तु यह भ्रान्तिपूर्ण है। क्योंकि वैशाख शुक्ल नवमी को श्रीसीता जी के जन्म के प्रतिपादक वचनों से इसका विरोध है। सीताजी का आविर्भाव वैशाख शुक्ल नवमी मंगलवार को मध्याह्न में हुआ था। श्री रामानन्दाचार्य जी ने **'वैष्णव मताब्ज भास्कर'** में लिखा है- **"पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्री माधवे मासि सिते हलाग्रतः। भवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीताविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्।।"**

श्रीनृसिंह जयन्ती

सूर्यास्तकालव्यापिनी वैशाख-शुक्ल चतुर्दशी के दिन **'नृसिंह जयन्ती'** मनाई जाती है-" **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी नृसिंह जयन्ती। सा सूर्यास्तमयकालव्यापिनी ग्राह्या**"।- *(धर्मसिन्धु)*।

'नृसिंहपुराण' के अनुसार यह पर्व प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशी में मनाया जाना चाहिए। लेकिन श्रीमद्भागवत के अनुसार श्रीभगवान् नृसिंह का आविर्भाव ठीक सूर्यास्त के समय हुआ था, अतः 'धर्मसिन्धुकार' का मत ही यहां संगत है।

श्रीकूर्म-जयन्ती

सायंव्यापिनी वैशाख-पूर्णिमा के दिन यह जयन्ती मनाई जाती है। यदि पूर्णिमा दोनों दिन सायं- व्यापिनी हो तो इसे पहले दिन मनाया जाए यदि दोनों दिन पूर्णिमा सायं-व्यापिनी न हो तो दूसरे दिन यह पर्व होगा; क्योंकि वहां सायंकाल में पूर्णिमा आपाद्या तिथि होगी। धर्मसिन्धु का वाक्य है-

पूर्णिमामावस्ये तु सावित्रीव्रतं विना परे ग्राह्ये।

श्री बुद्ध जयन्ती

उदयव्यापिनी वैशाखशुक्ल पूर्णिमा को बुद्धजयन्ती मनाई जाती है। यदि पूर्णिमा दोनों दिन उदयव्यापिनी हो तो पहले दिन एवं दोनों दिन उदयव्यापिनी न हो तो जिस दिन वह प्रारम्भ व समाप्त हो रही हो (अर्थात् जिस दिन वह विद्यमान हो), उसी दिन बुद्धजयन्ती मनाई जाती है।

वैशाखस्नान समाप्त

उदयव्यापिनी वैशा. पूर्णिमा को उन लोगों का वैशाखस्नान समाप्त हो जाता है, जिन्होंने चैत्र पूर्णिमा को इसे प्रारम्भ किया हो।

श्री शिवाजी जयन्ती

उदयकालिक वैशा. शुक्ल द्वितीया के दिन इस वीर महापुरुष की जयन्ती मनाई जाती है।

आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती

उदयव्यापिनी वैशाखशुक्ल पंचमी में यह जयन्ती मनाई जाती है।

श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.)

उदयव्यापिनी वैशा. शुक्ल षष्ठी के दिन इस जयन्ती को उत्तरभारत में मनाने की परम्परा है।

ज्येष्ठ कृष्ण के व्रत-पर्व

वटसावित्री व्रत (अमा-पूर्णिमापक्ष)

वटसावित्री व्रत के अनुष्ठान में दो परम्पराएं (पक्ष) हैं । एक परम्परा के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ अमा को और दूसरी परम्परानुसार ज्येष्ठ पूर्णिमा को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमा या पूर्णिमा के दिन ही किया जाता है-

भूतविद्धा न कर्त्तव्या दर्शः पूर्णा कदाचन।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम्।। - *(ब्रह्मवैवर्त्त)*।

जैसा कि पहले " **व्रत-पर्व-शास्त्र के मूलतत्त्व**" लेख में स्पष्ट कर चुके हैं; कि वेध करने वाली और विद्ध होने वाली तिथियां त्रिमुहूर्त्तव्याप्ति की अपेक्षा रखती हैं। तदनुसार यहां ज्येष्ठ अमा चतुर्दशी से तभी विद्ध मानी जाएगी, जबकि वह (चतुर्दशी) सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त्त तक व्याप्त हो। **ध्यान रहे**- एक विशेष नियमानुसार (**"भूतोऽष्टादश नाड़ीभिः दूषयत्युत्तरां तिथिम्।"**) चतुर्दशीतिथि अमा/पूर्णिमा को तभी विद्ध करती है जबकि वह सूर्योदयानन्तर कम से कम अठारह घड़ी

(नौ मुहूर्त) तक विद्यमान हो। लेकिन यह विशेष नियम उसी स्थिति में प्रवृत्त होता है, जहां चतुर्दशी का वेध वर्जित हो। जहां चतुर्दशी का वेध विहित (ग्राह्य) है, वहां यह वाक्य प्रवृत्त नहीं होता। **"कालमाधव"** कार ने वटसावित्री व्रत के निर्णय में इस वाक्य की जो प्रवृत्ति दर्साई है, वह सर्वथा भ्रामक है। **"पुरुषार्थ चिन्तामणि और धर्मसिन्धु"** आदि के रचयिता आचार्यों ने कालमाधवकार के इस भ्रामक निर्णय का प्रतिवाद किया है। **"पुरुषार्थ चिन्तामणिकार"** का इस बारे यह वचन है,- **" यद्द् भूत उत्तरां तिथिं दूषयति, तदष्यदश-नाडीभिरिति यत्र पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा निषिद्धा, तत्रैवायं विशेष विधिः।"** धर्मसिन्धु कार ने भी स्पष्ट लिखा है -**" भूतोऽष्यदश नाडीभिः दूषयत्युत्तरां तिथिम्" इति वचनं सावित्रीव्रतातिरिक्ते ज्ञेयम्।**

भावुका अमा

ज्येष्ठअमा **भावुका अमा** कहलाती है।

ज्येष्ठ शुक्ल के व्रत-पर्व

रम्भातृतीया

द्वितीयाविद्धा ज्येष्ठशुक्ल तृतीया को **रम्भातृतीया** मनाई जाती है ।

"ज्येष्ठशुक्ल तृतीयायां रम्भाव्रतम्। सा पूर्वविद्धा ग्राह्या।" - (धर्मसिन्धु)।

श्री महाराणा प्रताप जयन्ती

उदयव्यापिनी ज्येष्ठशुक्ल तृतीया को **श्री महाराणाप्रताप** का जन्मोत्सव मनाया जाता है।

अरण्य षष्ठी

ज्येष्ठशुक्ल षष्ठी के दिन **'अरण्य षष्ठी'** मनाई जाती है।

गंगादशहरा

पूर्वाह्णव्यापिनी ज्येष्ठशुक्ल दशमी को पृथ्वी पर गंगावतरण हुआ था। इसीलिए पूर्वाह्णव्यापिनी दशमी के दिन **'गंगादशहरा'** मनाया जाता है। यदि दशमी दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी हो तब निम्नांकित दसयोगों (पदार्थों) में से अधिकतर योगों का संयोग जिस दिन दशमी से हो, उसी दिन यह पर्व होता है। ये दसयोग इस प्रकार हैं:-

(१) ज्येष्ठमास, (२) शुक्लपक्ष, (३) दशमी तिथि, (४) बुधवार, (५) हस्तनक्षत्र, (६) व्यातिपात योग, (७) गरकरण, (८) आनन्द योग (बुध और हस्त के संयोग से उत्पन्न योग), (९) कन्यास्थ चन्द्र और (१०) वृषस्थ रवि।

ज्येष्ठ अधिकमास होने पर गंगादशहरा उसी अधिकमास में मनाया जाता है, शुद्ध में नहीं;- (**"दशहरासु नोत्कर्षः चतुर्ष्वपि युगादिषु"**- *ऋष्यश्रृंग*)। लेकिन कुछ तीर्थस्थलों पर ज्येष्ठ मलमास होने पर गंगादशहरा शुद्ध ज्येष्ठ में मनाया जाता है;- जो सर्वथा शास्त्रविरुद्ध है।

वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)

इस व्रत के निर्णयार्थ ज्येष्ठकृष्ण में दिया गया **'वटसावित्री व्रत'** (अमापक्ष) देखें।

आषाढ़ कृष्ण के व्रत-पर्व

श्री गणेशचतुर्थी, श्री भैरवाष्टमी, प्रदोष तथा श्रीसत्यनारायण व्रतों के अलावा अन्य कोई महत्वपूर्ण व्रत-पर्व इस पक्ष में घटित नहीं होते। श्री गणेशचतुर्थी आदि इन पाक्षिक/मासिक व्रतों के लिए पृष्ठ 87 देखें।

आषाढ़ शुक्ल के व्रत-पर्व

जगदीश-रथोत्सव

पुष्यनक्षत्र युक्त अथवा केवल आषा. शुक्ल द्वितीया में यह पर्व मनाया जाता है:-

"आषाढ़स्य सिते पक्षे द्वितीया पुष्यसंयुता। तस्यां रथे समारोप्य रामं वै भद्रया सह ।।
यात्रोत्सवं प्रवर्त्याथ प्रीणयेच्च द्विजान् बहून्। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या यात्राऽसौ प्रीतये मम।।"

- *(स्कन्दपुराण)*

कुमारषष्ठी

आषाढ़शुक्ल षष्ठी जिस दिन पूर्व (पंचमी) विद्धा हो उसी दिन **कुमारषष्ठी** मनाई जाती है। **'वसिष्ठ'** का वचन है:-

"कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एताः पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।"

विवस्वत् सप्तमी

पूर्वविद्धा आषाढ़शुक्ल सप्तमी में यह पर्व मनाया जाता है। **'ब्रह्मपुराण'** का वाक्य है:-

"पूर्वविद्धा द्विजश्रेष्ठ कर्त्तव्या सप्तमी तिथिः।"

गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)

गुरुपूजा (गुरुपूर्णिमा) और श्री व्यासपूजा के लिए सूर्योदय के अनन्तर त्रिमुहूर्तव्यापिनी आषाढ़ पूर्णिमा होना आवश्यक है। पूर्णिमा यदि तीन मुहूर्त से कम हो तो ये दोनों पर्व पहले दिन मनाए जाते हैं-

" **अस्यां पौर्णमास्यां संन्यासिनां चातुर्मास्यावाससंकल्पांगत्वेन क्षौरव्यास-पूजादिकं विहितम्। अत्र कर्मणि औदयिकी त्रिमुहूर्ता पौर्णमासी ग्राह्या**",- (*धर्मसिन्धु*) । यहां **'निर्णयसिन्धु'** कार भी यही लिखते हैं-"**अत्रैव (आषाढ़शुक्ल-पौर्णमास्यां) व्यासपूजोक्ता। तत्र त्रिमुहूर्ता चेत्परैवेति संन्यासपद्धतौ।।**"-

(*निर्णयसिन्धुः*)।

चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ

इस व्रत का आरम्भ स्थानीय परम्परा के अनुसार कहीं आषाढ़ी एकादशी से, कहीं आषाढ़ी द्वादशी से और कहीं आषाढ़ी पूर्णिमा एवं कहीं कर्कसंक्रान्ति के दिन से किया जाता है। इसकी समाप्ति प्रत्येक परम्परा में कार्ति. शुक्ल द्वादशी को ही होती है। ब्रह्मवैवर्तपुराण का वचन है :-

एकादश्यां तु गृह्णीयात् संक्रान्तौ कर्कटस्य वा।
आषाढ्यां वा नरो भक्त्या चातुर्मास्यव्रत-क्रियाम्।।

यहां **'वराह'** वचन देखिए-

आषाढ़शुक्ल द्वादश्यां पौर्णमास्यामथापि वा।
चातुर्मास्यव्रतारम्भं कुर्यात् कर्कट संगमे।।

इसकी समाप्ति के बारे में **'भारत'** का वचन है;-

चतुर्षा गृह्य वै चीर्णं चातुर्मास्यव्रतं नरः। कार्त्तिके शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तत् समापयेत्।।

कोकिला व्रत

सायाह्नव्यापिनी आषाढ़ी पूर्णिमा को यह व्रत होता है।

श्रावण कृष्ण के व्रत-पर्व

हरियाली अमा

उदयकालव्यापिनी श्राव. कृष्ण अमा **'हरियाली अमावस'** होती है।

श्रावण शुक्ल के व्रत-पर्व

मधुश्रवा तृतीया

चतुर्थी विद्धा श्रावणशुक्ल तृतीया को यह पर्व मनाया जाता है।

नाग पंचमी

श्रावणशुक्ल पञ्चमी के दिन **'नाग पञ्चमी'** मनाई जाती है। यह परविद्धा ली जाती है। यदि दूसरे दिन पञ्चमी तीन मुहूर्तों से कम और पहिले दिन चतुर्थी भी तीन मुहूर्त्तों से कम हो तो पहले दिन नागपञ्चमी मनाई जाती है -

श्रावणशुक्लपंचमी नागपंचमी इयमुदये त्रिमुहूर्तव्यापिनी परविद्धा ग्राह्या,
परेद्युस्त्रिमुहूर्तन्यूना पञ्चमी पूर्वेद्युस्त्रिमुहूर्तन्यून-चतुर्थ्या विद्धा तदा पूर्वैव।"-

(*धर्मसिन्धु*)।

गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती

उदयव्यापिनी श्राव. शुक्ल सप्तमी में यह **'जयन्ती'** मनाई जाती है।

श्री दुर्गाष्टमी

सूर्योदयानन्तर कम से कम त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी श्राव. शुक्ल अष्टमी में यह पर्व मनाया जाता है।

ऋग्वेदियों का उपाकर्म

ऋक् उपाकर्म के तीन काल हैं;- श्रावणशुक्ल में श्रवण नक्षत्र, श्रावणशुक्ल पंचमी, श्रावणशुक्ल में हस्त नक्षत्र। इनमें श्रवण मुख्य है। यदि ग्रहण, संक्रान्ति आदि के कारण श्रवण में उपाकर्म संभव न हो तो पंचमीयुक्त या केवल हस्त में ही उपाकर्म करना चाहिए;-"**पर्वणि ग्रहणे कार्यं ग्रहसंक्रान्त्यदूषिते। अध्वर्युभिर्बह्वृचैश्च कथंचित्तदसंभवे। तत्रैव हस्तपंचम्यां तयोः केवलयोरपि।**"- (*कालतत्त्व विवेचन*)। श्रावणशुक्ल में जो श्रवण नक्षत्र आता है, वह ऋग्वेदियों के लिए उपाकर्म का मुख्यकाल है।

यदि श्रवण दो दिन हो और दूसरे दिन वह सूर्योदय के बाद तीन मुहूर्त्त तक हो तो दूसरे ही दिन उपाकर्म किया जाता है। यदि पहले दिन श्रवण पूरा दिन व्याप्त हो तो पहले दिन ही उपाकर्म किया जाता है। यदि श्रवण दूसरे दिन त्रिमुहूर्त हो और पहले दिन सूर्योदय के समय वह न हो तो भी दूसरे दिन ही उपाकर्म करने का विधान है, क्योंकि उ.षा. विद्ध श्रवण को यहां वर्जित किया जाता है। यदि

पहले दिन श्रवण उत्तराषाढ़ाविद्ध हो और दूसरे दिन वह त्रिमुहूर्त्त से न्यून हो तब श्रावण शुक्लपंचमी या हस्त नक्षत्र में उपाकर्म किया जाता है।

शुक्ल-कृष्ण यजु-उपाकर्म

सभी यजुर्वेदियों के उपाकर्म के लिए श्रावण पूर्णिमा को मुख्यकाल माना जाता है। यदि खण्डा तिथि होने पर पूर्णिमा पहले दिन कुछ मुहूर्त्त बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन छः मुहूर्त्तव्यापिनी हो तो सभी (शुक्ल एवं कृष्ण) यजुर्वेदियों का उपाकर्म दूसरे ही दिन होता है। जब पूर्णिमा शुद्धाधिका होकर दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी हो तो सभी यजुर्वेदी पहले ही दिन उपाकर्म करते हैं। यदि पूर्णिमा पहले दिन एक मुहूर्त्त या इससे अधिक काल बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन छः मुहूर्त्तों से कम हो तो कृष्ण यजुर्वेदियों का उपाकर्म दूसरे दिन और शुक्ल यजुर्वेदियों का पहले दिन होता है। यदि पहले दिन कुछ मुहूर्त्त बाद पूर्णिमा प्रारम्भ होकर दूसरे दिन दो मुहूर्त्त से कम हो अथवा क्षय हो जाने पर दूसरे दिन को स्पर्श ही न करे तो सभी यजुर्वेदियों का उपाकर्म पहले ही दिन होता है;- यह **'धर्मसिन्धुकार'** का विवेचन है। इस व्यवस्था के साथ धर्मशास्त्रकारों ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि उपाकर्म के दिन (पूर्ववर्ती मध्यरात्रि के बाद और उत्तरवर्त्ती मध्यरात्रि से पहले) ग्रहण या संक्रांति हो तो उस स्थिति में उपाकर्म हस्त-नक्षत्रयुता पूर्वाह्न-व्यापिनी श्रावण शुक्ल पञ्चमी या केवल पञ्चमी में करना चाहिए ।

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन अपराह्नव्यापिनी श्राव. पूर्णिमा में मनाया जाता है। भद्रा मे यह निषिद्ध है; **"भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा"**। जब पहिले दिन अपराह्न में भद्रा हो, दूसरे दिन पूर्णिमा मुहर्तत्रय-व्यापिनी हो और वह अपराह्न से पूर्व ही समाप्त हो जाए, तब दूसरे दिन अपराह्न में रक्षाबन्धन करना चाहिए;- क्योंकि उस समय साकल्यापादित पूर्णिमा का अस्तित्व होगा। **'पुरुषार्थ चिन्तामणि'** कार का वचन है,- **"यदा द्वितीयापराह्णात् पूर्वं समाप्ता, तदापि 'भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये..... ......' इति भद्रायां निषेधादुत्तरैव। तत्र तिथ्यनुरोधेन अपराह्णत्पूर्वं अनुष्ठाने अपराह्णस्य सर्वथा बाधापत्तेः, अपराह्णे ज्योतिश्शास्त्रप्रसिद्ध-तिथ्यभावेऽपि साकल्य- बोधित-तिथि-सत्त्वात्तत्रैव अनुष्ठानम्।"** *जब दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्तत्रयव्यापिनी न हो तब अपराह्न में साकाल्यापादित पूर्णिमा भी नहीं होगी- ऐसी स्थिति में पहिले दिन भद्रा समाप्त होने पर प्रदोष के प्रहर में रक्षाबन्धन करना चाहिए।* **पुरुषार्थ-चिन्तामणि** *का ही वाक्य है-*"यदा तूत्तरत्र मुहूर्त्तद्वय (त्रय) मध्ये किं चित् न्यूना पौर्णमासी तदापराह्णे सर्वथा तदभावात् " प्रदोष-पश्चिमौ यामौ दिनवत्कर्म चाचरेत् इति पराशरात् भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठानम्।"

'धर्मसिन्धुकार' आदि कुछ आचार्य तिथि के त्रिमुहूर्त्तव्यापित्व को ही साकल्यप्रयोजक मानते हैं और **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** कार आदि आचार्यों के मत में साकल्यप्रयोजकत्व द्विमूहर्त्तव्यापिनी तिथि में है।

पंजाब आदि अनेक प्रान्तों मे परम्परा के अनुसार रक्षाबन्धन के लिए अपराह्नकाल को स्वीकार नहीं किया जाता और मध्याह्न से पूर्व (विशेषतया प्रातःकाल में) ही रक्षाबन्धन कर लिया जाता है। लेकिन भद्रा में तो रक्षाबन्धन शास्त्रों द्वारा सर्वथा वर्जित है।

भाद्रपद कृष्ण के व्रत-पर्व

संकष्ट (गणेश) चतुर्थी

चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्र. कृष्णचतुर्थी के दिन **'संकष्ट चतुर्थी'** व्रत किया जाता है। यदि दो दिन चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन ही यह व्रत किया जाता है, क्योंकि गणेशचतुर्थी हमेशा तृतीया विद्धा लेनी चाहिए- ऐसा शास्त्रों का निर्देश है- **"चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।"** दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी यदि न हो तो दूसरे दिन यह व्रत करना चाहिए। **'धर्मसिन्धु'** का वाक्य है-

"उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीया-युतैव ग्राह्या। दिनद्वये चन्द्रोदय-व्याप्त्यभावे परैव।।"

ध्यान रहे- संकष्टचतुर्थी गणेशचतुर्थी का ही विशेषरूप है।

बहुला चतुर्थी

सायाह्नव्यापिनी भाद्र.कृष्ण चतुर्थी में **'बहुलाचतुर्थी'** व्रत किया जाता है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत

स्मार्त (गृहस्थी) और वैष्णव (संन्यासी) सम्प्रदाय के अनुयायियों के निर्णायक तत्त्व इस व्रत के लिए भिन्न-भिन्न हैं। स्मार्त लोग अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के ही दिन यह व्रत करते हैं। **"श्रीमद्भागवत"** के अनुसार यह स्मार्त्तमत युक्तियुक्त भी है, क्योंकि इसके अनुसार श्रीकृष्ण का जन्म अर्धरात्रि के समय (चन्द्रोदय होने पर) अष्टमी तिथि में हुआ था। लेकिन वैष्णव सम्प्रदाय के लोग अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी की भी उपेक्षा करके पर (नवमी) विद्धा अष्टमी में ही उपवास करने की परम्परा रखते हैं। वे सप्तमीविद्धा अष्टमी में व्रत नहीं करते । **श्री नागोजिभट्ट** अपने **"तिथिनिर्णय"** में लिखते हैं-

वैष्णवास्तु "अर्धरात्रिव्यापिनीमपि रोहिणीयुतामपि सप्तमीविद्धां परित्यज्य नवमीयुतैव ग्राह्या"- इति नृसिंहपरिचर्याद्यनुयायिनः।

यहां यह भी आश्चर्य है कि वैष्णव लोग रोहिणीनक्षत्रयुक्त सप्तमीविद्धा अष्टमी को भी, भले ही वह अर्धरात्रिव्यापिनी हो, छोड़कर दूसरी (नवमीविद्धा) अष्टमी को ही इस व्रत के लिए अपनाते हैं। जबकि भागवत आदि ग्रन्थों में श्रीकृष्ण के जन्म के समय रोहिणी नक्षत्र से युक्त अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी का स्पष्ट निर्देश है। स्मार्त्त सम्प्रदाय के लोग तो इस व्रत के निर्णय के लिए रोहिणी नक्षत्र के अष्टमी से सम्पर्क को महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

स्मार्त सम्प्रदाय के अनुसार अष्टमी की विभिन्न स्थितियों में जन्माष्टमी-व्रत का निर्णय इस प्रकार है-

(i) अष्टमी पहले ही दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो तो जन्माष्टमी व्रत पहले दिन।

(ii) अष्टमी केवल दूसरे ही दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन।

(iii) अष्टमी दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो और अर्धरात्रि में दोनों दिन रोहिणीनक्षत्र का योग न हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन।

(iv) अष्टमी दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो और अर्धरात्रि में रोहिणी का योग एक ही दिन हो तो जन्माष्टमी व्रत रोहिणीयोग वाले दिन।

(v) दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी हो और दोनों दिन अर्धरात्रि में रोहिणी का योग हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन।

(vi) यदि दोनों दिन अष्टमी अर्धरात्रिव्यापिनी न हो तो प्रत्येक स्थिति में जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन।

श्री गुग्गा नवमी

उदयव्यापिनी भाद्र.कृष्ण नवमी **'श्री गुग्गा नवमी'** कहलाती है; जो पंजाब आदि प्रान्तों में मनाई जाती है।

कुशोत्पाटिनी अमा

भाद्रपद अमा में दर्भोच्चय (कुशोत्पाटन) का विधान है। इस दिन संगृहीत कुशा वर्षभर शुद्ध रहती है;- (**" अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनःपुनः"**)। क्योंकि समिधा, पुष्प और कुशा के संचय के लिए दिन का द्वितीय प्रहर उपयुक्तकाल माना गया है- (**" समित्पुष्प-कुशादीनां द्वितीयः प्रहरो मतः"**)। अतः द्वितीय प्रहर-व्यापिनी अमा में ही कुशोत्पाटन किया जाता है। कुछ आचार्य आश्विनअमा में कुशोत्पाटन मानते हैं।

पिठोरी अमा

भाद्र. कृष्ण अमा के दिन यह पर्व मनाया जाता है ।

भाद्रपद शुक्ल के व्रत-पर्व

वराह जयन्ती

अपराह्णव्यापिनी भाद्र. शुक्लतृतीया के दिन **'वराह जयन्ती'** मनाई जाती है।

गौरी तृतीया (हरितालिका तृतीया)

परविद्धा (चतुर्थी विद्धा) तृतीया के दिन **'गौरी तृतीया'** का व्रत किया जाता है;- इसकी तिथि के निर्णय बारे विशेष विवेचन चैत्र शुक्ल पक्ष की -**'गौरी तृतीया'** के निर्णय मे पढ़ें।

ध्यान रहे- भाद्र. शुक्ल वाली गौरी तृतीया को **'हरितालिका तृतीया'** भी कहा जाता है।

साम उपाकर्म

सामवेदी लोग भाद्रपद शुक्लपक्ष मे अपराह्णव्यापी हस्तनक्षत्र के काल मे उपाकर्म करते हैं। यदि दोनों दिन हस्तनक्षत्र अपराह्ण में हो तो शास्त्रों का निर्देश है कि उसी दिन उपाकर्म करना चाहिए जिस दिन हस्तनक्षत्र सम्पूर्ण अपराह्ण को व्याप्त करे। यदि वह दोनों दिन अपराह्ण के एकदेश को ही स्पर्श करता हो तो उपाकर्म दूसरे दिन होता है। **किञ्च** -यदि वह पहले दिन अपराह्ण के एकदेश को स्पर्श करे, अथवा दोनों दिन वह अपराह्ण का स्पर्श न करे तो भी उपाकर्म दूसरे ही दिन होगा। सामवेदियों के उपाकर्म के लिए भाद्र. शुक्ल का हस्तनक्षत्र मुख्यकाल है। यदि संक्रान्ति आदि दोष के कारण यहां उपाकर्म संभव न हो तो उसे श्रावणमास के हस्तनक्षत्र में करना चाहिए, ऐसा कुछ निबन्धकारों का मत है। कुछ आचार्यों का तो यह मत है कि भाद्र. के हस्त में संक्रान्ति आदि दोष होने पर श्रावणी पूर्णिमा के दिन उपाकर्म करके भाद्रपद के हस्तनक्षत्र पर्यन्त वेदाध्ययन नहीं करना चाहिए, यह अध्ययन उसके बाद ही करने का निर्देश है।

सिद्धि विनायक व्रत

मध्याह्नव्यापिनी भाद्र. शुक्ल चतुर्थी के दिन यह व्रत किया जाता है। यदि चतुर्थी दोनों दिन सम्पूर्ण मध्याह्न को व्याप्त करे या न करे तो यह व्रत पहले दिन; यदि दोनों दिन समान या असमानरूप से मध्याह्न के एकदेश को व्याप्त करे तो भी पहले दिन; यदि वह पहले दिन मध्याह्न का सर्वथा स्पर्श न करे एवं दूसरे दिन ही उसे स्पर्श करे तो दूसरे दिन, यदि पहले दिन मध्याह्न के एकभाग को स्पर्श करे और दूसरे दिन सम्पूर्ण मध्याह्न को, तब भी दूसरे ही दिन यह व्रत किया जाता है। इस व्रत के दिन यदि रवि/मंगलवार हो तो इसका अधिक माहात्म्य माना गया है।

कलंक चतुर्थी

भाद्र. शुक्ल चतुर्थी को **'चन्द्रदर्शन'** से मिथ्याकलंक लगता है;- ऐसा शास्त्रकथन है। कुछ आचार्यों का मत है कि चतुर्थी के समय उदित चन्द्रमा को पंचमी तिथि में भी शाम को नहीं देखना चाहिए। कुछ वाक्य मिलते हैं; जिनके अनुसार चतुर्थी में उदित चन्द्रमा का पंचमी तिथि में दर्शन **'विनायक व्रत'** वाले दिन दोषकारक नहीं माना जाता। लेकिन आजकल परम्परा के अनुसार विनायक व्रत के दिन ही चन्द्रदर्शन में दोष माना जाता है, भले ही उस समय पचंमी हो।

ऋषि पंचमी

मध्याह्नव्यापिनी भाद्र. शुक्ल पंचमी के दिन **'ऋषि पंचमी'** होती है। **"भाद्रशुक्ल पंचमी ऋषिपंचमी, सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या"** - *(धर्मसिन्धुः)*।

सूर्यषष्ठी व्रत

सप्तमीविद्धा भाद्र. शुक्ल षष्ठी के दिन यह व्रत किया जाता है।

दूर्वाष्टमी व्रत

यह व्रत स्त्रियों द्वारा भाद्र. शुक्ल अष्टमी को किया जाता है। इसे **'रौहिण'** मुहूर्त्तव्यापिनी अष्टमी में करने का निर्देश है। रौहिण मुहूर्त्त के समय ज्येष्ठा, मूलनक्षत्र न हों,- यह भी शास्त्र-निर्देश है। यदि ये नक्षत्र किसी स्थिति में वर्जित करने असम्भव हों तो इनके सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य) हो जाने पर इस व्रत का सर्वथा निषेध है। (अगस्त्य तारा वर्षा ऋतु की लगभग समाप्ति के दिनों में रात्रि के समय दक्षिण की ओर दिखाई देने लगता है)। **ध्यान रहे-**कन्यार्क भी इस व्रत में वर्जित है। सिंहस्थ सूर्य के काल मे इस व्रत के अनुष्ठान को महत्व *दिया गया है। यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य दृश्य हो जाए (रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने लगे) तो शास्त्रकारों का कहना है, कि- ऐसी स्थिति में भाद्रपद शुक्ल अष्टमी से पूर्ववर्ती किसी ऐसे अन्य मास की किसी भी अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अस्त (अदृश्य) हो। भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को अगस्त्य के दृश्य होने की स्थिति अधिकतर तब पैदा होती है, जबकि भाद्रपद मास अधिक हो जाए।*

ध्यान दें- *'अगस्त्य तारा'* के उदयास्त की तारीखें अक्षांशभेद से भिन्न-भिन्न स्थलों के लिए भिन्न-भिन्न होती हैं। पंजाब एवं उसके पार्श्ववर्त्ती प्रान्तों में आजकल अगस्त्य का उदय लगभग ३ सितम्बर को होता है।

श्री राधाष्टमी

सप्तमीविद्धा भाद्र. शुक्ल अष्टमी में **'राधाष्टमी व्रत'** किया जाता है।

श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ

यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्र. शुक्ल अष्टमी में किया जाता है। यदि अष्टमी पहले दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन और यदि दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी अथवा अव्यापिनी हो तो दूसरे दिन यह व्रत करना होगा। यह व्रत एकपक्ष पर्यन्त चलने वाला है। इस व्रत की समाप्ति चन्द्रोदयव्यापिनी आश्वि. कृष्ण अष्टमी के दिन होती है।

श्रीचन्द नवमी जन्मोत्सव (उदासीन सम्प्रदाय)

उदासीन सम्प्रदाय के अनुयायी लोग उदयव्यापिनी भाद्र. शुक्ल नवमी को अपने सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक **'श्रीचन्द जी'** का जन्मोत्सव **'श्रीचन्द नवमी'** के रूप में मनाते हैं।

वामन द्वादशी

श्रवणयुता भाद्र. शुक्ल द्वादशी में मध्याह्न के समय श्री वामन का अवतार माना गया है; अतः मध्याह्नव्यापिनी द्वादशी के दिन मध्याह्न या अन्यकाल में द्वादशी और श्रवणनक्षत्र का योग होने पर उसी दिन **'वामन द्वादशी'** मनानी चाहिए;- **" अतो मध्याह्नव्यापिनी द्वादशी मध्याह्ने ततोऽन्यत्र वा काले श्रवणयुता ग्राह्या"**- *(धर्मसिन्धुः)*।

शास्त्रकार कहते हैं कि यदि द्वादशी का श्रवणनक्षत्र से बिल्कुल योग न हो, एकादशी ही श्रवणयुता हो तो दूसरे दिन मध्याह्नव्यापिनी द्वादशी को भी छोड़कर एकादशी में ही यह व्रत करना चाहिए। ***'धर्मसिन्धु'*** में लिखा है- **" सर्वथा द्वादश्याः श्रवणयोगाभावे एकादश्यामेव श्रवणसत्त्वे मध्याह्नव्यापिनीमपि द्वादशीं विहाय एकादश्यामेव व्रतं कार्यम् ।"**

श्रवण द्वादशी

जिस दिन एक मुहूर्त या इससे अधिक द्वादशी का भाद्र. शुक्लपक्ष में श्रवण से योग हो, उस दिन **'श्रवणद्वादशी व्रत'** किया जाता है। जब पहले दिन एकादशी विद्धा द्वादशी दूसरे दिन विद्यमान हो और दोनों दिन उसका श्रवण से सम्पर्क हो, तब वहां पहले दिन एकादशी, द्वादशी और श्रवण- इन तीनों के योग से **'विष्णुशृंखल'** नामक योग बनने के कारण पहले दिन ही **'श्रवणद्वादशी'** का व्रत किया जाता है।

ध्यान रहे- यह योग दिन में ही घटित होना चाहिए, रात्रि में नहीं- ऐसा **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** का वाक्य है। रात्रि में अर्द्धरात्रि के बाद भी यह योग स्वीकारना चाहिए- यह निर्णयसिन्धुकार कहते हैं। कुछ आचार्यों का यह मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर पर्यन्त ही एकादशी, द्वादशी और श्रवण का योग इस व्रत में स्वीकार किया जाए। यहां अन्तिम मत को ही अधिकतर मान्यता प्राप्त है।

श्री अनन्त चतुर्दशी

भाद्र. शुक्ल चतुर्दशी के दिन यह व्रत किया जाता है। इसके लिए सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी चतुर्दशी ली जाती है। स्कन्दपुराण के अनुसार द्विमुहूर्त्तव्यापिनी तिथि भी यहां ले लेनी चाहिए, कुछ धर्मशास्त्रियों का मत है कि इस व्रत के लिए मध्याह्नव्यापिनी चतुर्दशी लेनी चाहिए। लेकिन प्रथम (त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी वाला) मत ही यहां मुख्य माना जाता है।

प्रोष्ठपदी श्राद्ध

यह पार्वण श्राद्ध है। भाद्र. शुक्ल अपराह्णव्यापिनी पूर्णिमा में यह श्राद्ध किया जाता है। इसमें पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, मातामह, वृद्धप्रमातामह का पार्वणश्राद्ध करना चाहिए। इस दिन उन लोगों का महालय श्राद्ध भी किया जाता है- जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो।

आश्वि. कृष्ण के व्रत-पर्व

श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त

चन्द्रोदयव्यपिनी आश्वि. कृष्ण अष्टमी के दिन **'श्री महालक्ष्मी व्रत'** सम्पन्न (पूर्ण) होता है। इस पाक्षिक व्रत का प्रारम्भ भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन होता है।

महालय श्राद्ध

आश्वि.कृष्णपक्ष **'श्राद्धपक्ष'** अथवा **'महालयपक्ष'** कहलाता है। इसपक्ष में दिवंगत व्यक्तियों की मृत्युतिथि के दिन उनका श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध दो प्रकार है- (१) पार्वण और (२) एकोद्दिष्ट।

पार्वणश्राद्ध आपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किया जाता है, जबकि **एकोद्दिष्ट श्राद्ध** मध्याह्न-व्यापिनी में। पिता, पितामह, प्रपितामह, मातामह तथा इनकी पत्नियों (माता, पितामही, प्रपितामही, मातामही) का श्राद्ध पार्वणपद्धति से किया जाता है। उपाध्याय, गुरु, ससुर, चाचा, मामा, भाई, बहनोई, भतीजा, शिष्य, जामाता, भानजा, फूफड़, मासड़, पुत्र, मित्र, विमाता के पिता एवं इन सभी की पत्नियों का श्राद्ध एकोद्दिष्ट पद्धति से किया जाता है।

अन्तिम श्वास-परित्याग के समय विद्यमान तिथि को ही मृत्युतिथि माना जाता है। **ध्यान रहे-** यहां मृत्युतिथि से हमारा अभिप्राय सर्वत्र इसी (अन्तिमश्वास त्याग वाली) तिथि से ही रहेगा।

पार्वणश्राद्ध-तिथि-निर्णय

पार्वणश्राद्ध, जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं; अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि में किया जाता है। यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण में न व्याप्त हो तो पहले दिन श्राद्ध किया जाता है। यदि दोनों दिन मृत्युतिथि अपराह्ण के एकदेश को असमानता से (एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम) व्याप्त करे, तो वहां अधिक व्याप्ति वाले दिन श्राद्ध होता है। यदि दोनों दिन अपराह्ण को समानरूप से व्याप्त करे तब श्राद्धतिथि का निर्णय निम्नप्रकार से होगा;-

(क) यदि श्राद्धतिथि का मान ६० घटी हो तो दूसरे दिन श्राद्ध होता है।

(ख) यदि श्राद्धतिथि का मान ६० घटी से अधिक हो तो भी श्राद्ध दूसरे दिन होता है।

(ग) यदि तिथि ६० घटी से कम हो तब वहां श्राद्ध पहले ही दिन किया जाएगा।

एकोद्दिष्ट श्राद्ध- तिथि-निर्णय

एकोद्दिष्ट श्राद्धतिथि का निर्णय भी उपरोक्त **'पार्वण श्राद्धतिथि- निर्णय'** के समान ही है। अन्तर केवल इतना है कि अपराह्णव्यापिनी तिथि की जगह यहां श्राद्धतिथि मध्याह्नव्यापिनी ली जाती है।

संन्यासियों का महालयश्राद्ध

संन्यासियों का महालयश्राद्ध पार्वणपद्धति से द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

सौभाग्यवती श्राद्ध

सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध (पार्वण/एकोद्दिष्ट श्राद्ध) नवमी तिथि में ही किया जाता है।

अपमृत्यु वालों का श्राद्ध

यानदुर्घटना, सर्पदंश, विष, शस्त्रप्रहार आदि से मृतों का श्राद्ध एकोद्दिष्ट विधि से चतुर्दशी को करना चाहिए। पिता, पितामह आदि यदि दो पूर्वज अपमृत्यु को प्राप्त हुए हों, उनके दो श्राद्ध एकोद्दिष्ट विधि से करें। यदि पिता, पितामह आदि तीन पूर्वज अपमृत्यु को प्राप्त हों तो उनका श्राद्ध पार्वणविधि से करने की शास्त्राज्ञा है। **ध्यान रहे-** अपमृतों का यह श्राद्ध महालय की चतुर्दशी तिथि को ही किया जाता है। यह भी विशेषतः ध्यातव्य है- कि इस (चतुर्दशी) तिथि में प्राकृतिक मृत्यु से मरने वालों का महालयश्राद्ध चतुर्दशी तिथि में कदापि नहीं होता। उनका श्राद्ध महालय की त्रयोदशी अथवा अमावस के दिन करना चाहिए।

पूर्णिमा का महालयश्राद्ध

पूर्णिमा जिन लोगों की मृत्युतिथि हो उनका महालयश्राद्ध भाद्र. पूर्णिमा अथवा आश्वि. अमा को करना चाहिए।

मातामह/मातामही का महालयश्राद्ध

मातामह, मातामही का महालयश्राद्ध पार्वणपद्धति से आश्वि. शुक्ल प्रतिपदा के दिन किया जाता है।

गजच्छाया पर्व

आश्वि. कृष्ण अमा के दिन सूर्य और चन्द्र (दोनों) हस्तनक्षत्र में विद्यमान हों तो **'गजच्छाया'** पर्व होता है। इस पर्व में श्राद्ध- दानादि का अत्यधिक माहात्म्य है।

आश्वि. शुक्ल के व्रत-पर्व

शारद नवरात्र प्रारम्भ

सूर्योदय के बाद जिस दिन त्रिमुहूर्तव्यापिनी प्रतिपदा हो उस दिन नवरात्र प्रारम्भ, कलशस्थापन किया जाता है। प्रतिपदा त्रिमुहूर्तव्यापिनी न हो तो कुछ आचार्यों का मत है कि दो या एक मुहूर्तव्यापिनी प्रतिपदा में भी नवरात्रारम्भ कर लेना चाहिए। अमावस्या के दिन नवरात्रारम्भ का निषेध है। यदि प्रतिपदा एक मुहूर्त से कम हो या वह सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो (अर्थात् प्रतिपदा का क्षय हो गया हो) तो सभी शास्त्र अमावस्या के दिन ही नवरात्रारम्भ करने का आदेश देते हैं- (**" मुहूर्त्तन्यूनव्याप्तौ सूर्योदयाऽस्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या"**- धर्मसिन्धु)।

यदि प्रतिपदा की वृद्धि हो तो षष्टिघट्यात्मक (पूर्णा) प्रतिपदा के दिन ही नवरात्रारम्भ किया जाता है।

ध्यान रहे- *यद्यपि चित्रानक्षत्र में घटस्थापन सामान्यरूप से निषिद्ध है, लेकिन शास्त्रकारों का निर्णय है कि यदि चित्रा का पूर्वार्ध पूर्वाह्ण से पहले ही समाप्त हो जाए तो उसके (चित्रा-पूर्वार्ध के) बाद ही घटस्थापन करना चाहिए, अन्यथा चित्रा के पूर्वार्ध में भी पूर्वाह्ण में घटनास्थापन करने में कोई दोष नहीं है। सूर्योदयानन्तर १० घटी के मध्य अथवा मध्याह्न (अभिजित् मुहूर्त) में कलशस्थापन करना चाहिए।*

श्री उपाङ्गललिता व्रत

यह व्रत अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है-

"अत्र पंचमी अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या, अपराह्णस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः।"- *(धर्मसिन्धु)*

सरस्वती आवाहन-पूजन-बलिदान-विसर्जन

सरस्वती का आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्लपक्ष में क्रमशः मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद में किया जाता है। आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन क्रमशः मूल, पू.षा, उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद में दिन के समय ही किए जाते हैं। रात्रि में अवाहन आदि नहीं होते। यदि मूल आदि नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त से कम हों या उनका प्रथम पाद रात्रि के समय विद्यमान हो तो आवाहन आदि दूसरे दिन मूल आदि के द्वितीय आदि किसी भी चरण में (दिन के समय ही) करने चाहिएं।

"तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनि सरस्वत्यावाहनम्। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेष- वचनं विना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिन एवावाहनम्, एवं पूर्वाषाढ़ादि-नक्षत्रं पूजादौ दिनव्याप्येव ग्राह्यम्।-" *(धर्मसिन्धु)*।

ध्यान दें- यहां विशेष बात यह है कि केवल विसर्जन श्रवणनक्षत्र के प्रथमपाद में रात्रि के प्रथमप्रहर में भी किया जा सकता है,-**"विसर्जनन्तु श्रवण-प्रथमपादे रात्रिभागगतेऽपिकार्यम् , विशेष-वचनात्। तच्च रात्रेः प्रथमप्रहर-पर्यन्तमेव इति भाति"** - *(धर्मसिन्धु)*।

महाष्टमी

उदयव्यापिनी नवमीयुता आश्वि. शुक्ल अष्टमी **'महाष्टमी'** कहलाती है। यह अष्टमी सूर्योदयानन्तर कम से कम एक घड़ी को अवश्य व्याप्त करती हो। यह सप्तमीयुता ग्राह्य नहीं है। यदि पहले दिन सप्तमीयुता अष्टमी दूसरे दिन एक घड़ी से कम हो, तब यह सप्तमीयुता भी ग्राह्य है। यदि पहिले दिन अष्टमी षष्टिघटिकात्मिका (पूर्णा) हो तब दूसरे दिन नवमीयुता को भी छोड़कर पहिले ही दिन इसे ग्रहण करना चाहिए। यदि नवमी का क्षय हो तब नवमीयुता को भी छोड़कर पहिले ही दिन सप्तमीयुता अष्टमी में महाष्टमी मनानी चाहिए। मंगलवार को इसका विशेष माहात्म्य है। इस **'महाष्टमी'** को पंजाब आदि प्रान्तों में **'दुर्गाष्टमी'** भी कहा जाता है।

महानवमी (पूजा एवम् बलिदान के लिए)

सायंव्यापिनी आश्वि. शुक्ल नवमी के दिन **'महानवमी'** *मनाई जाती है। यदि यह सायाह्न को*

पूरी तरह व्याप्त न करे तो दूसरे दिन **'महानवमी'** पर्व मनाया जाता है। यह नवमी पूजा के लिए है। बलिदान के लिए दशमीविद्धा महानवमी ली जाती है।

नवरात्र समाप्त

महानवमी (बलिदान वाली) के दिन नवरात्र-समाप्ति होती है।

विजयादशमी

अपराह्णव्यापिनी आश्वि. शुक्ल दशमी के दिन **'विजयादशमी'** मनाई जाती है। अनेकत्र अपराह्ण में श्रवणनक्षत्र भी इसकी तिथि के निर्णय का प्रयोजक है। **विजयादशमी** का निर्णय श्रवण एवं दशमी की विभिन्न स्थितियों में इस प्रकार होगाः-

(क) केवल दूसरे ही दिन दशमी अपराह्णव्यापिनी हो तो विजयादशमी दूसरे दिन।

(ख) दोनों दिन दशमी अपराह्णव्याप्त हो और दोनों दिन इस समय श्रवणनक्षत्र विद्यमान या अविद्यमान हो तो विजयादशमी पहले दिन।

(ग) दोनों दिन दशमी अपराह्ण में अविद्यमान हो और दोनों दिन श्रवण अपराह्ण में विद्यमान या अविद्यमान हो तो विजयादशमी पहले दिन।

(घ) दोनों दिन दशमी अपराह्ण में विद्यमान या अविद्यमान हो और श्रवणनक्षत्र पहले ही दिन अपराह्ण में विद्यमान हो तो विजयादशमी पहिले दिन।

(च) दोनों दिन दशमी अपराह्ण में विद्यमान या अविद्यमान हो और श्रवणनक्षत्र दूसरे ही दिन अपराह्ण में विद्यमान हो तो विजयादशमी दूसरे दिन।

(छ) यदि केवल पहले ही दिन दशमी अपराह्ण में हो और श्रवणनक्षत्र दूसरे दिन अपराह्ण में न हो तो विजयादशमी पहले दिन।

(ज) यदि दशमी पहले दिन ही अपराह्णव्यापिनी हो तथा दूसरे दिन वह कम से कम तीन मुहूर्त्त तक व्याप्त हो और केवल दूसरे दिन ही श्रवण अपराह्ण में हो तो विजयादशमी दूसरे दिन।

(झ) यदि दशमी पहले दिन अपराह्णव्यापिनी होकर दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तन्यून हो, तब श्रवण की प्रत्येक स्थिति में विजयादशमी पहले दिन।

शरत्पूर्णिमा

प्रदोषव्यापिनी आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन **'शरत् पूर्णिमा'** पर्व होता है।

कोजागरव्रत

आश्विन पूर्णमासी में कोजागर व्रत किया जाता है। यह निशीथ (अर्द्धरात्रि) व्यापिनी पूर्णमासी के दिन होता है। यदि पूर्णमासी पहले दिन केवल निशीथव्यापिनी और दूसरे दिन केवल प्रदोषव्यापिनी ही हो तो कुछेक धर्मशास्त्रकार दूसरे दिन ही **'कोजागरव्रत'** करने के पक्ष में हैं।

श्री वाल्मीकि जयन्ती

उदयव्यापिनी आश्वि. शुक्ल पूर्णिमा के दिन यह पर्व (जयन्ती) मनाया जाता है।

कार्तिक-स्नान प्रारम्भ

कार्तिक-स्नानारम्भ की तीन विकल्प तिथियां हैं- (१) तुला संक्रान्ति दिवस, (२) आश्वि. शुक्ल एकादशी और (३) आश्वि. पूर्णिमा। मास पर्यन्त चलने वाले इस कार्तिकस्नान का प्रारम्भ अपनी-अपनी (स्थानीय) परम्पराओं के अनुसार धार्मिक लोग उपरोक्त तिथियों में करते हैं। यह स्नान एकमास बाद कार्तिक पूर्णिमा को सम्पन्न होता है। **ध्यान रहे-** इसके प्रारम्भ और समाप्ति (दोनों) में उदयव्यापिनी तिथियां लेनी चाहिएं।

कार्तिक कृष्ण के व्रत-पर्व

करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत

यह व्रत सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा चन्द्रोदयव्यापिनी कार्ति. कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। विविध स्थितियों में इस व्रत की तिथि का निर्णय **श्री गणेश चतुर्थी व्रत की तिथि** की भांति किया जाता है। (देखें-पृष्ठ 87)

अहोई अष्टमी

प्रदोषव्यापिनी कार्ति. कृष्ण अष्टमी के दिन पंजाब प्रान्त में **' अहोई अष्टमी पूजन'** (कालिका **पूजन**) किया जाता है।

गोवत्स द्वादशी

प्रदोषव्यापिनी कार्ति. कृष्ण द्वादशी को **'गोवत्स द्वादशी'** मनाई जाती है। दोनों दिन द्वादशी प्रदोषव्यापिनी न हो तो सायंकाल (गौणकाल) में तिथिसत्ता के कारण दूसरे दिन इसे मनाया जाता है। दोनों दिन यदि प्रदोषव्यापिनी हो तो अधिकतर लोग पहले दिन और कुछेक लोग इसे दूसरे दिन मनाते हैं।

धनत्रयोदशी

कार्त्तिककृष्ण त्रयोदशी **'धनत्रयोदशी'** कहलाती है।

यम प्रीत्यर्थ दीपदान

प्रदोषव्यापिनी कार्त्ति. कृष्ण त्रयोदशी के दिन यम को **'दीपदान'** किया जाता है।

श्री हनुमान् जयन्ती

कार्त्ति. कृष्ण चतुर्दशी को यह **'जयन्ती'** मनाने की परम्परा है।

नरक चतुर्दशी

चन्द्रोदयव्यापिनी कार्त्ति.कृष्ण चतुर्दशी के दिन **'नरक चतुर्दशी'** मनाई जाती है। इस दिन सूर्योदय से पहले चन्द्रोदय होने पर **तैलाभ्यंग** करने की परम्परा है।

दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन)

प्रदोष (सूर्यास्तोत्तर त्रिमुहूर्त) व्यापिनी कार्तिक अमावस्या के दिन **'दीपावली' (महालक्ष्मीपूजन)** मनाने के शास्त्राज्ञा है। धर्मसिन्धुकार दोनों दिन प्रदोष में अमा के अभाव की स्थिति में पहले दिन ही लक्ष्मीपूजन का समर्थन करते हैं- **"पूर्वत्रैव प्रदोषव्याप्तौ लक्ष्मीपूजादौ पूर्वा,अभ्यङ्गस्नानादौ परा, एवमुभयत्र प्रदोषव्याप्त्यभावेऽपि।"** जय सिंह **कल्पद्रुमकार** भी इसी बात का समर्थन करते हैं- **"उभये दिने प्रदोषव्याप्त्यभावेऽर्द्धरात्रिव्यापिनी (पूर्वदिवसीया) ग्राह्या, तस्या लक्ष्म्यागमन-कालत्वाभिधानात्।"**

लेकिन **पुरुषार्थचिन्तामणि, तिथिनिर्णय** (भट्टोजिदीक्षितकृत) आदि का मत है कि दोनों दिन अमा प्रदोष का स्पर्श न करे तो दूसरे दिन ही लक्ष्मीपूजन करना चाहिए। **" इयं प्रदोष-व्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये सत्त्वाऽसत्त्वे परा"**- *(तिथिनिर्णयः)*। **किञ्च-** दीपावली के दिन निशीथकाल में लक्ष्मी का आगमन शास्त्रों में अवश्य वर्णित है, लेकिन- कर्मकाल (लक्ष्मीपूजन, दीपदान आदि का काल) तो प्रदोष ही माना जाता है। लक्ष्मीपूजन, दीपदान के लिए प्रदोषकाल ही शास्त्र प्रतिपादित है-

प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा यथाक्रमम्।
दीपवृक्षास्तथा कार्याः शक्त्या देव-गृहेषु च ।।

कार्त्तिक शुक्ल के व्रत-पर्व

गोक्रीड़ा, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, अन्नकूट

कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा के दिन **'गोक्रीड़ा'** एवम् इससे सम्बद्ध **'गोवर्धनपूजा', 'बलिपूजा'** तथा **'अन्नकूटपर्व'** मनाए जाते हैं। पुराणकारों की यह चेतावनी है कि उसी दिन ये पर्व मनाए जाएं, जिस दिन शाम को चन्द्रदर्शन न हो। अन्यथा अनिष्ट होगा- **("गवां क्रीड़ादिने यत्र रात्रौ दृश्येत चन्द्रमाः। सोमो राजा पशून् हन्ति सुरभिः पूजकांस्तथा।।"**- *पुराण समुच्चय)* । इसलिए यदि शाम को सूर्यास्त के समय कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा के दिन चन्द्रदर्शन होने वाला हो तब गोक्रीड़ा, गोवर्धनपूजादि- ये पर्व पूर्वयुता (अमायुता) प्रतिपदा के दिन ही करने चाहिएं। लेकिन चन्द्रदर्शन आज शाम को होगा या नहीं इसका प्रतिज्ञापूर्वक निर्णय कर सकना गणित द्वारा भी कई बार दूषित वातावरणादि के कारण सम्भव नहीं होता, अतः ऐसे स्थलों पर गोक्रीड़ा आदि इन पर्वों का निर्णय कर सकना सचमुच समस्यापूर्ण है। अतः धर्मशास्त्रकारों ने इसका समाधान 'स्थूल- चन्द्रदर्शन' द्वारा किया है। उनका निर्णय है कि उदयव्यापिनी प्रतिपदा के दिन यदि 'स्थूलचन्द्रदर्शन' का अभाव हो, उस दिन गोकीड़ा आदि मनाने चाहिएं, अन्यथा इन्हें पूर्वयुता (अमायुता) प्रतिपदा के दिन मनाया जाए। उनका निर्देश है कि यदि प्रतिपदा सूर्योदयानन्तर कम से कम ६ मुहूर्त तक विद्यमान हो तब उस दिन भले ही सूक्ष्म (वास्तविक) चन्द्रदर्शन शाम को हो जाए, लेकिन वहां 'स्थूलचन्द्रदर्शन' का अभाव माना जाए और तदनुसार गोक्रीड़ा आदि उसी दिन मनाए जाएं। यदि प्रतिपदा ६ मुहूर्त से कम हो तो उस दिन, भले ही सूक्ष्म चन्द्रदर्शन न हो, 'स्थूलचन्द्रदर्शन' मानकर इन पर्वों को पहिले दिन (अमायुता प्रतिपदा को) ही मनाना चाहिए।

श्री विश्वकर्मा पूजा

कार्त्ति. शुक्ल द्वितीया (दूज) को **' श्री विश्वकर्मा पूजन'** होता है।

यमद्वितीया/ भाईदूज

कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमुना ने अपने भाई यम को अपने घर भोजन खिलाया था, अतः यह तिथि भ्रातृद्वितीया (भाईदूज) या यमद्वितीया नाम से प्रसिद्ध है। शास्त्रानुसार अपराह्णव्यापिनी कार्तिकशुक्ल द्वितीया के दिन ही भाईदूज (यमद्वितीया) मनाई जाती है। इस दिन अपराह्ण में यमपूजन भी होता है;- **" ऊर्जे शुक्लद्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद् यमम् :"**- *(स्कन्दपुराण)* । **'तिथिनिर्णय'** में 'भट्टोजिदीक्षित' ने लिखा है- **" कार्तिकशुक्लद्वितीया यमद्वितीया, सा पूर्वविद्धा अपराह्ण-व्यापिनी ग्राह्या। इयं (द्वितीया)पूर्वेद्युरेवापराह्णव्याप्तौ पूर्वा, उभयत्र व्याप्त्यव्याप्त्यादि-पक्षान्तरेषु परैव"**- *(धर्मसिन्धु)*। 'हेमाद्रि'

का मत है कि यहां प्रतिपदा मध्याह्न-व्यापिनी लेनी चाहिए। **पुरुषार्थचिन्तामणिकार** का भी कहना है कि - भाईदूज के लिए मध्याह्न-व्यापिनी प्रतिपदा लेनी चाहिए; क्योंकि भोजनकाल मध्याह्न ही है और यमपूजन के लिए अपराह्न- व्यापिनी द्वितीया ठीक है। लेकिन यमद्वितीया के लिए अपराह्णव्यापिनी प्रतिपदा के ही समर्थक पुराणवाक्य उपलब्ध हैं, मध्याह्नव्यापिनी प्रतिपदा के समर्थक पुराणवाक्य नहीं मिलते। भाईदूज और यमद्वितीया दोनों भिन्न-भिन्न त्योहार नहीं हैं- यह भी स्कन्द, ब्रह्माण्ड, भविष्योत्तर आदि पुराणवाक्यों से स्पष्ट है। देखिए- भविष्योत्तर का यह वचन यमद्वितीया और भ्रातृद्वितीया दोनों पर्वों को अभिन्न बतलाता है:-

कार्त्तिके शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां युधिष्ठिर। यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहे स्वयम्।।
अतो यमद्वितीया सा प्रोक्ता लोके युधिष्ठिर। अस्यां निजगृहे पार्थ न भोक्तव्यमतो बुधैः।।
यत्नेन भगिनीहस्ताद् भोक्तव्यं पुष्टिवर्धनम्। दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विशेषतः।।

इसलिए यह स्पष्ट है, शास्त्रानुसार भाईदूज (जो यमद्वितीया से अलग नहीं है) भी अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में ही मनाई जानी चाहिए।

उपरोक्त शास्त्रीय विवेचन से स्पष्ट है, कि शास्त्र के अनुसार तो अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में ही यमद्वितीया की तरह भाईदूज भी मनाई जाए। फिर भी उत्तरभारत में उदयव्यापिनी द्वितीया के दिन ही भाईदूज मनाने की परम्परा चली आ रही है। यहां साधारण जनता ने **हेमाद्रि** आदि द्वारा समर्थित मध्याह्न- काल को भी इस पर्व के लिए स्वीकार नहीं किया। उदयव्यापिनी कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन भाईदूज मनाने की यह परम्परा किसी भी शास्त्रवाक्य से अनुमोदित नहीं है।

गोपाष्टमी

कार्त्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन **'गोपाष्टमी'** मनाई जाती है।

अक्षय/ कूष्माण्ड नवमी

कार्त्तिकशुक्ल नवमी युगादि तिथि है। कृष्णपक्ष की मनु-युगादि तिथियां अपराह्णव्यापिनी और शुक्लपक्ष की पूर्वाह्णव्यापिनी ली जाती हैं। इस नियम के अनुसार यहां कार्त्तिक शुक्ल नवमी पूर्वाह्ण-व्यापिनी ली जाएगी। यहां दिनमान के दो समान-समान खण्ड करने पर पहिले खण्ड को पूर्वाह्ण माना है। यदि दोनों दिन तिथि पूर्वाह्ण के एकदेश में व्याप्त हो तो उस स्थिति में युगादितिथि सम्बन्धी श्राद्ध के लिए पहिला दिन ही स्वीकार किया जाता है, जबकि दूसरे दिन वह तिथि तीन मुहूर्त्त से कम काल को व्याप्त करे,-**"द्वेधा विभक्त-दिनपूर्वार्धैकदेशव्यापिनी दिनद्वये चेत् त्रिमुहूर्त्ताधिक-व्याप्तिसत्वे परा, त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वा"** -(*धर्मसिन्धु*)।

ध्यान रहे- **'कूष्माण्ड'** नवमी की तिथि भी यही है।

भीष्म पचंक प्रारम्भ/समाप्त

शास्त्रों में **भीष्मपंचक** व्रत का अनुष्ठान (जैसा कि **'पंचक'** शब्द से ही स्पष्ट है) केवल पांच दिन (कार्त्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) का ही लिखा है। "यदि एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथिक्षय हो जाने से एकादशी से पूर्णिमा तक की दिन संख्या चार ही रह जाए तब दशमी विद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (चतुर्दशी से अविद्ध) औदयिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए । **तथा च-** यदि इन पांच तिथियों में से किसी एक की वृद्धि हो जाने से व्रत के दिन ६ बनते हों, तो शुद्ध (दशमी से अविद्ध) एकादशी के दिन प्रारम्भ करके चतुर्दशी-विद्धा पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त करना चाहिए"- ऐसा धर्मशास्त्र का प्रतिपादन है। इस बारे में *'धर्मसिन्धु'* का वचन है,-

"एकादश्यादिदिनपचंके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिकपौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारभ्य क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रतसमाप्तिर्न घटते, तदा विद्धैकादश्यामपि आरम्भः। शुद्धैकादश्यामारम्भेऽपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापनेन षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धपूर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।"

तुलसी-विवाह

कार्तिक शुक्ल एकादशी (प्रबोधिनी एकादशी) के दिन प्रबोधोत्सव मनाया जाता है। **" इस दिन अथवा इससे अग्रिम चार (द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा वाले) दिनों में से किसी भी दिन विवाहनक्षत्र में तुलसीविवाह किया जा सकता है"** - ऐसा शास्त्रनिर्देश है। लेकिन प्रबोधोत्सव के साथ एकादशी व्रत-पारणा वाले दिन पूर्वरात्रि में (अर्धरात्रि से पहिले ही रात्रिकाल में) तुलसीविवाह करने की परम्परा है- ऐसा **'धर्मसिन्धुकार'** का निर्देश है।

वैकुण्ठ चतुर्दशी

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को **'वैकुण्ठ चतुर्दशी'** मनाई जाती है। इसे मनाने की दो परम्पराएं हैं:-

(१) कुछ श्रद्धालु इस दिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण करके विष्णुपूजा करते हैं:- ये लोग निशीथव्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते हैं। इनके लिए निशीथव्यापिनी चतुर्दशी में इस पर्व को मनाने का विधान है। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष और निशीथ दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्याप्त हो, उसी दिन विष्णुपूजक- भक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं- **" केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तद्व्याप्तौ निशीथ-प्रदोषोभय-व्यापिनी ग्राह्येत्याहुः।।"**- (*धर्मसिंधुः*)।

(२) दूसरी परम्परा यह है कि पहले दिन उपवास करके अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा करके बाद में प्रातः पारणा की जाती है। इस मत के अनुयायी लोग अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो , उसदिन उपवास करते हैं। वे उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। यहां धर्मसिन्धु का वचन है-

" पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा अरुणोदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यां शिवं सम्पूज्य प्रातः पारणं कार्यम्। तथा च- चतुर्दशीयुक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपवासः फलितः। उभयत्रारुणोदयव्याप्तौ परत्रारुणोदये पूजा, पूर्वत्र उपवासः। उभयत्राव्याप्तौ चतुर्दशीयुक्ताहोरात्रे एव अरुणोदये पूजा पूर्वत्रोपवासश्च।"

श्री गुरु नानक जयन्ती

उदयव्यापिनी कार्ति. शुक्ल पूर्णिमा में सिक्खधर्म के प्रवर्तक **'श्री गुरु नानक देव जी'** की जयन्ती मनाई जाती है।

कार्तिकस्नान/चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त

औदयिकी (उदयव्यापिनी) कार्ति. शुक्ल पूर्णिमा के दिन पूर्ववर्ती एकमास से चला आ रहा **'कार्तिकस्नान'** तथा विगत चार मास से चला आ रहा **'चातुर्मास्य व्रत-नियमादि'** पूर्ण होता है।

पद्मक योग

विशाखा में सूर्य की स्थिति के समय जब चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में हो तब **'पद्मक योग'** होता है। किसी तीर्थस्थान, विशेषतः तीर्थराज पुष्कर (राजस्थान) पर इस योग में स्नान-दान का विशेष माहात्म्य माना गया है।

" विशाखास्थे सूर्ये सति यद्दिने चन्द्रनक्षत्रं कृत्तिका, तत्र 'पद्मक योग':, अयं पुष्करेऽति प्रशस्तः।"-*(धर्मसिन्धुः)*

मार्गशीर्ष कृष्ण के व्रत-पर्व

श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी)

श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी) की तिथि के निर्णायक दो मत हैं। एक मत मध्याह्नव्यापिनी *और दूसरा प्रदोषव्यापिनी मार्ग.* कृष्ण अष्टमी के दिन **'कालाष्टमी'** मानता है। अधिकतर सम्प्रदाय प्रदोषव्यापिनी में इसे मान्यता देते हैं। यदि अष्टमी पहिले दिन उभय (मध्याह्न-प्रदोष) व्यापिनी और दूसरे दिन केवल मध्याह्न- व्यापिनी हो तो पहले (उभयव्यापिनी वाले) दिन कालाष्टमी मनाई जाती है। यदि अष्टमी पहिले दिन केवल प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन उभयव्यापिनी हो तो दूसरे दिन यह पर्व होता है। यदि अष्टमी पहले दिन केवल प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो पहले दिन (प्रदोषव्यापिनी वाले दिन) ही यह पर्व मनाना चाहिए, ऐसा धर्मसिन्धुकार आदि धर्मशास्त्रियों का निर्णय है- **"यदा पूर्वत्र प्रदोषव्याप्तिरेव, परत्र मध्याह्नव्याप्तिरेव तदा बहुशिष्टाचारानुरोधात् प्रदोषव्याप्त्यैव निर्णयो न मध्याह्नव्याप्त्या- इति भाति"** *(धर्मसिन्धु)*।

मार्गशीर्ष शुक्ल के व्रत-पर्व

चम्पाषष्ठी

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी का जिस दिन रविवार, भौमवार, शतभिषक् एवं वैधृति में से अधिक का योग हो, उसी दिन **यह पर्व 'महाराष्ट्र'** मे मनाया जाता है। यह तिथि (षष्ठी) पहले या दूसरे दिन मुहूर्तत्रय- व्यापिनी होनी चाहिए। यदि दोनों दिन उपरोक्त रविवारादि में से किसी का भी योग षष्ठी से न हो तो दूसरे दिन त्रिमुहूर्तव्यापिनी षष्ठी में यह व्रत करना चाहिए।

गुह (स्कन्द) षष्ठी

पूर्व (पंचमी) विद्धा मार्ग. शुक्ल षष्ठी **'गुहषष्ठी'** कहलाती है।

मित्र सप्तमी

षष्ठीविद्धा मार्ग.शुक्ल सप्तमी के दिन **'मित्रसप्तमी'** मनाने का शास्त्रनिर्देश है।

श्री गीता जयन्ती

मार्ग. शुक्ल एकादशी (मोक्षदा एकादशी) व्रत के दिन यह **'जयन्ती'** मनाने की परम्परा है । इसके निर्णयार्थ **'एकादशीव्रत निर्णय'** पृष्ठ ३७ पर देखें।

श्री दत्त जयन्ती

प्रदोषव्यापिनी मार्ग. शुक्ल पूर्णिमा के दिन महाराष्ट्र में **'दत्तात्रेय (श्रीदत्त)'** जयन्ती मनाई जाती है।

पौष कृष्ण के व्रत-पर्व

इस पक्ष में श्रीगणेश चतुर्थी, भैरवाष्टमी, प्रदोष तथा श्री सत्यनारायण व्रत के अलावा अन्य कोई भी महत्वपूर्ण व्रत-पर्व नहीं होता। उपरोक्त श्रीगणेश चतुर्थी आदि व्रतपर्वों के लिए पृष्ठ ८७ देखें।

पौष शुक्ल के व्रत-पर्व

अवतार दिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी

उदयकालव्यापिनी पौषशुक्ल सप्तमी में सिक्ख सम्प्रदाय के दसवें गुरु **श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी** का अवतार दिन मनाया जाता है।

माघस्नान प्रारम्भ

उदयव्यापिनी पौषी पूर्णिमा अथवा मकरसंक्रान्ति के दिन से माघ-स्नान प्रारम्भ होता है; जिसकी पूर्णता माघी पूर्णिमा को होती है।

माघ कृष्ण के व्रत-पर्व

श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत

यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी माघ कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। इसके निर्णय के लिए देखें- **'श्रीगणेश चतुर्थी व्रत' निर्णय;** पृष्ठ ८७ पर ।

अर्द्धोदय/महोदय योग

माघी अमा का रविवार, व्यतिपात योग और श्रवणनक्षत्र (तीनों) से योग होने पर **'अर्द्धोदय- योग'** बनता है; जो करोड़ों सूर्यग्रहणों का माहात्म्य रखता है। यदि यह अमा रविवार, व्यतीपात और श्रवण में से किन्हीं दो से ही युता हो तो **'महोदय योग'** कहलाता है। इसका भी अनेकों सूर्यग्रहणों के समान महत्त्व माना गया है। ये दोनों योग दिन के समय ही मान्य हैं।

मौनी अमावस

उदयव्यापिनी माघी अमा **'मौनी अमावस'** कहलाती है।

माघ शुक्ल के व्रत-पर्व

गौरी तृतीया व्रत

चतुर्थीविद्धा माघशुक्ल तृतीया में यह व्रत किया जाता है । इसके निर्णय के लिए चैत्रशुक्ल में दी गई **'गौरी तृतीया'** का निर्णय पढ़ें।

वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी व्रत

प्रदोषव्यापिनी माघशुक्ल चतुर्थी के दिन ये व्रत किए जाते हैं।

वसन्त (श्री) पञ्चमी

माघशुक्ल पंचमी **'वसन्तपंचमी'** एवं **'श्रीपंचमी'** कहलाती है। इस दिन पूर्वाह्ण में रति एवं कामदेव की पूजा का विधान है। अतः पूर्वाह्णव्यापिनी पंचमी के दिन ही यह पर्व मनाया जाता है। दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी होने पर इसे पहिले दिन ही मनाने का शास्त्रविधान है। यदि केवल दूसरे ही दिन पूर्वाह्णव्यापिनी पंचमी हो तभी यह व्रत दूसरे दिन होता है, अन्यथा प्रत्येक स्थिति में पहिले ही दिन यह मनाया जाता है,-

'इयं परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा' - (धर्मसिन्धु) ।

रथ/ आरोग्य सप्तमी

अरुणोदयव्यापिनी माघशुक्ल सप्तमी के दिन **'रथ सप्तमी'** मनाई जाती है। दोनों दिन अरुणोदय- व्यापिनी सप्तमी होने पर पहले दिन यह पर्व होता है। जब षष्ठी सूर्योदय के बाद घड़ी-दो घड़ी हो और सप्तमी का क्षय होने से अरुणोदय से पहले ही वह समाप्त हो जाए। तब वहां सप्तमी षष्ठीयुता लेनी चाहिए। रथ सप्तमी **'आरोग्य सप्तमी'** ही है।

भीष्माष्टमी

माघशुक्ल अष्टमी को भीष्म पितामह का एकोद्दिष्ट श्राद्ध किया जाता है, इसे ही **'भीष्माष्टमी'** की संज्ञा दी गई है। क्योंकि एकोद्दिष्टश्राद्ध मध्याह्न में किया जाता है, इसलिए मध्याह्नव्यापिनी माघशुक्ल अष्टमी

के दिन भीष्माष्टमी मनाई जाती है (" **अत्र श्राद्धादेः एकोद्दिष्टत्वात् मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या"** -*पुरुषार्थचिन्तामणि*)।

भीष्म द्वादशी

माघशुक्ल द्वादशी को **'भीष्मद्वादशी'** मनाई जाती है। युग्मवाक्य के अनुसार यह द्वादशी एकादशी-विद्धा ही ली जाती है। **" माघ शुक्ल-द्वादशी 'भीष्मद्वादशी'। इयं पूर्वयुता युग्मवाक्यात्"** ।

-*(भट्टोजिदीक्षित कृत-'तिथिनिर्णय')*

श्री रविदास जयन्ती

उदयव्यापिनी माघ पूर्णिमा के दिन यह जयन्ती मनाई जाती है।

माघस्नान समाप्त

मकरसंक्रान्ति अथवा पौषी पूर्णिमा से प्रारम्भ होने वाला माघस्नान एकमास के बाद माघी पूर्णिमा के दिन सम्पन्न (समाप्त) होता है।

फाल्गुन कृष्ण के व्रत-पर्व

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत

निशीथव्यापिनी फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी के दिन यह व्रत किया जाता है। इसका निर्णय **'मासिक शिवरात्रि व्रत'** शीर्षक के अन्तर्गत **88** पृष्ठ पर देखिए ।

फाल्गुन शुक्ल के व्रत-पर्व

होलाष्टक

फाल्गु. शुक्ल अष्टमी से फाल्गु. पूर्णिमा पर्यन्त **'होलाष्टक'** माना जाता है।

होलिकादहन

भद्रा रहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा में **'होलिकादहन'** किया जाता है। यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी हो और दूसरे दिन वह प्रदोष के एकदेश को व्याप्त करे तो पहिले दिन, भद्रादोष के कारण होलिकादहन दूसरे दिन किया जाता है। यदि दूसरे दिन प्रदोष का स्पर्श वह न करे और पहिले दिन प्रदोष में भद्रा हो, **किञ्च** - दूसरे दिन पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर तक अथवा उससे ज्यादा हो एवं अगले दिन प्रतिपदा वृद्धिगामिनी हो तब दूसरे दिन ही प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में **'होलिकादहन'** होता है। यदि यहां प्रतिपदा का ह्रास हो तब पहिले दिन भद्रा के मुख को छोड़कर भद्रापुच्छ में ही **'होलिकादहन'** किया जाता है। दूसरे दिन प्रदोष को पूर्णिमा स्पर्श न करे और पहिले दिन निशीथ से पहिले ही भद्रा समाप्त हो जाए, तो वहां भद्रासमाप्ति पर होलिकादहन किया जाए। यदि यहां भद्रा निशीथ के बाद समाप्त हो रही हो तो भद्रामुख को छोड़कर भद्रा में ही होलिकादीपन होना चाहिए। यदि प्रदोष में भद्रामुख हो तो भद्रा के बाद अथवा प्रदोष के बाद होलिकादहन किया जाए । यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श न करे तो पहिले ही दिन भद्रापुच्छ में होली जलाई जाए । यदि भद्रापुच्छ भी न मिले तो भद्रा में ही प्रदोष के अनन्तर होलिकादीपन करे।

चैत्र कृष्ण के व्रत-पर्व

वारुणी, महावारुणी, महामहावारुणी पर्व

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का शतभिषक् नक्षत्र से योग होने पर **'वारुणी'**, शतभिषक् और शनिवार से योग होने पर **'महावारुणी'** और शुभयोग, शतभिषक् एवं शनिवार से योग होने पर **'महामहावारुणी'** पर्व मनाया जाता है। स्नान-दान और जपादि के लिए इन पर्वों का माहात्म्य अनेक ग्रहणों के तुल्य माना जाता है।

चान्द्र संवत्सर पूर्ण

प्रतिपदा (पर) युता चैत्रकृष्ण अमा के दिन **'चान्द्र संवत्सर'** का समापन होता है।

※※※※※※※

पाक्षिक एवम् मासिक चान्द्र व्रत-पर्व

(चैत्रादि चान्द्रमासों में प्रत्येक पक्ष एवम् मास में घटित होने वाले चान्द्र व्रत-पर्वों के निर्णायक सिद्धान्त)

श्री गणेशचतुर्थी व्रत

यह व्रत प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। यदि चतुर्थी दूसरे दिन ही चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन, यदि यह दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो इसे पहले दिन (तृतीयायुता तिथि में) मनाया जाता है। चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन ही होता है।

श्री भैरवाष्टमी (कालाष्टमी)

यह व्रत प्रत्येक मास में कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन होता है। **'निर्णयसिन्धु'** कार का मत है, कि यह व्रत मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी को किया जाए। यदि दोनों दिन यह मध्याह्नव्यापिनी हो तो व्रत पहले ही दिन किया जाए, ऐसा उनका अभिमत है। **'कौस्तुभ'** कार का कथन है, कि यह व्रत प्रदोषव्यापिनी तिथि में ही किया जाए। यदि दोनों दिन तिथि प्रदोषकालव्यापिनी हो अथवा दोनों दिन वह प्रदोष को आंशिकरूप से स्पर्श करे तब दूसरे दिन यह व्रत करना चाहिए। जब पहले दिन यह तिथि प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन केवल मध्याह्न-व्यापिनी हो तब बहुशिष्टाचार के अनुसार प्रदोषव्यापिनी तिथि के आधार पर ही इस व्रत का निर्णय किया जाए, मध्याह्नव्यापिनी के अनुसार **नहीं- 'कौस्तुभकार'** का यह मत ही अधिकतर निबन्धकारों को अभिमत है।

मार्ग. कृष्ण पक्ष की अष्टमी वाली **'कालाष्टमी'** का माहात्म्य अधिक माना गया है।

एकादशी व्रत

यह व्रत प्रत्येक पक्ष की एकादशी के दिन **'स्मार्त एवं वैष्णव'** सम्प्रदाय के लोगों द्वारा अपने-अपने सम्प्रदायानुसारी नियम-सिद्धान्तों के आधार पर निर्णीत तिथि में किया जाता है। प्रत्येक पक्ष की **'एकादशी'** के नाम भिन्न-भिन्न हैं, जिन्हें नीचे दर्शाया जा रहा है:-

२४ पक्षों की एकादशियों के नाम			
चैत्र शु. - कामदा	आषा. शु.- हरिशयनी	आश्वि.शु.-पापां(पाशां) कुशा	पौष शु. - पुत्रदा
वैशा. कृ. - वरूथिनी	श्राव. कृ.-कामदा(कामिका)	कार्त्ति. कृ. - रमा	माघ कृ. - षट्तिला
वैशा. शु.- मोहिनी	श्राव. शु.- पवित्रा	कार्त्ति. शु. - देवप्रबोधिनी	माघ शु. - जया
ज्ये. कृ.- अपरा	भाद्र. कृ.- अजा	मार्ग. कृ. - उत्पन्ना	फाल्गु. कृ. - विजया
ज्ये. शु.- निर्जला	भाद्र. शु.- पद्मा	मार्ग. शु. - मोक्षदा	फाल्गु. शु.- आमला (आमलकी)
आषा.कृ.- योगिनी	आश्वि. कृ.- इन्दिरा	पौष कृ. - सफला	चैत्र कृ. - पापमोचिनी

अधिक मास के दोनों (शुक्ल/कृष्ण) पक्षों की एकादशियों का नाम **'पुरुषोत्तमा'** होता है।

स्मार्त एवम् वैष्णव एकादशी व्रत-निर्णय

स्मार्त एवं वैष्णव एकादशी व्रत-निर्णय के नियम नीचे दिए जा रहे हैं:-

(१) सूर्योदय से पहले अरुणोदयकाल में दशमी का पलमात्र भी प्रवेश होने पर वैष्णव लोग दूसरे दिन एकादशी व्रत करते हैं और स्मार्त उसी दिन।

(२) सूर्योदयानन्तर दशमी का अस्तित्व पलमात्र (थोड़ा सा) भी यदि हो तो स्मार्त और वैष्णव दोनों ही उस दिन को छोड़कर दूसरे दिन एकादशी का व्रत करते हैं।

(३) यदि एकादशी की वृद्धि हो और वह दूसरे दिन भी सूर्योदयानन्तर कुछ काल के लिए विद्यमान हो एवं आगामी (द्वादशी) तिथि का क्षय न हुआ हो तो दोनों स्मार्त्त-वैष्णव सम्प्रदायों के लोग दूसरे दिन द्वादशी में यह व्रत करते हैं। अर्थात् वे पूर्णा एकादशी के दिन व्रत नहीं करते- यह नारद एवं गरुड़पुराण का मत है, लेकिन प्रचेता एवं स्कन्दपुराण के अनुसार इस स्थिति में स्मार्तों को पहले और वैष्णवों को दूसरे दिन व्रत करना चाहिए।

(४) यदि द्वादशी की वृद्धि हो और वह दूसरे दिन भी सूर्योदय के बाद कुछ देर के लिए विद्यमान हो तो दोनों सम्प्रदायों के लोग पहले दिन (एकादशी में) ही व्रत करते हैं।

(५) यदि सूर्योदय के बाद थोड़ी देर के लिए एकादशी हो तदनन्तर द्वादशीक्षय हो जाए अर्थात् अग्रिम सूर्योदय से पहले ही त्रयोदशी लग जाए तब **'वैष्णव'** लोग उसी दिन यह व्रत करते हैं और **'स्मार्त'** पहले दिन।

(६) यदि सूर्योदय के बाद कुछ देर के लिए दशमी हो तदनन्तर एकादशी तिथि और अग्रिम सूर्योदय से पहले ही द्वादशी आरम्भ हो जाए (अर्थात् उस दिन एकादशी का क्षय हो) तो दोनों सम्प्रदायों के लोगों को दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए।

एकादशी व्रत के अधिकारी

आठ वर्ष की अवस्था से लेकर अस्सी वर्ष की अवस्था तक व्यक्ति को एकादशी का व्रत अनिवार्यतः करना चाहिए। अस्सी वर्ष की आयु हो जाने पर दौर्बल्य की स्थिति में एकादशीव्रत का उद्यापन कर देना चाहिए। कूर्मपुराण का वाक्य है, कि- वानप्रस्थ और संन्यासियों को भी दोनों (शुक्ल/कृष्ण) पक्षों की एकादशियों का व्रत करने का अधिकार है, जबकि गृहस्थी केवल शुक्लपक्ष की **'एकादशी'** के ही व्रत का अधिकारी है;-

एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि।
वानप्रस्थो यतिश्चैव शुक्लामेव सदा गृही।। - *(कूर्म पुराण)*

गौतम भी यही कहते हैं :-

आदित्येऽहनि संक्रान्त्यामसितैकादशीषु च।
व्यतीपाते कृते श्राद्धे पुत्री नोपवसेद् गृही।।

इन वाक्यों के आधार पर कुछ लोग कहते हैं, कि गृहस्थी अथवा पुत्रवान् गृहस्थी को कृष्णपक्ष की एकादशी का व्रत नहीं करना चाहिए। लेकिन यहां सभी निबन्धकार आचार्यों का मत है, कि- कृष्णपक्ष का नित्य एकादशीव्रत गृहस्थी को नहीं करना चाहिए। काम्य एवं नैमित्तिक कृष्ण एकादशी व्रत गृहस्थी के लिए वर्जित नहीं है। जो गृहस्थी पुत्र, आयु, समृद्धि आदि के लिए यह व्रत करता है, उसके लिए यहां निषेध नहीं है। **'मत्स्यपुराण'** का वाक्य है :-

एकादश्यां तु कृष्णायामुपोष्य विधिवन्नरः।
पुत्रानायुः समृद्धिञ्च सायुज्यं स च गच्छति।।

'स्कन्दपुराण' का वाक्य है कि पितरों की सद्गति चाहने वाले को कृष्णपक्ष की एकादशी का व्रत करना चाहिए:-

पितृणां गतिमन्विच्छन् कृष्णायां समुपोषयेत्।

प्रदोष व्रत

प्रत्येक पक्ष की **'प्रदोषव्यापिनी'** त्रयोदशी में यह व्रत किया जाता है। त्रयोदशी की विभिन्न स्थितियों में इस व्रत का निर्णय इस प्रकार करना चाहिए:-

(१) दोनों दिन त्रयोदशी पूर्णरूप से प्रदोष को व्याप्त करे अथवा वह दोनों दिन समानरूप से प्रदोष के एकदेश को स्पर्श करे तो यह व्रत दूसरे दिन करना चाहिए।

(२) त्रयोदशी दोनों दिन असमान रूप से प्रदोष को व्याप्त करे तो यह व्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन तिथि प्रदोष को अधिक व्याप्त करती है, वशर्ते कि देवपूजा, भोजन आदि के लिए वहां समय पर्याप्त हो। यदि वहां इसके लिए समय पर्याप्त न हो तो दूसरे ही दिन व्रत किया जाए।

(३) यदि त्रयोदशी दोनों दिन प्रदोष को सर्वथा स्पर्श न करे तब भी व्रत दूसरे दिन ही होगा।

शिवरात्रि

प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की **' निशीथव्यापिनी '** चतुर्दशी में यह व्रत किया जाता है। **ध्यान रहे-** यहां **'निशीथ'** शब्द से रात्रि का **अष्टममुहूर्त** ग्रहण करना चाहिए।

चतुर्दशी की पृथक्-पृथक् स्थितियों में इस व्रत का निर्णय इस प्रकार किया जाता है:-

(१) चतुर्दशी दूसरे दिन निशीथव्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन।

(२) पहले दिन यह तिथि **'निशीथ'** व्यापिनी हो तब यह व्रत पहले दिन।

(३) दोनों दिन तिथि **'निशीथ'** व्यापिनी न हो तब यह व्रत दूसरे दिन ।

(४) दोनों दिन तिथि **'निशीथ'** को पूरी तरह अथवा आंशिकरूप से स्पर्श करे तो भी यह व्रत दूसरे दिन।

(५) दूसरे दिन यह तिथि **'निशीथ'** के एकदेश को और पहले दिन सम्पूर्णभाग को व्याप्त करे तो व्रत पहले दिन।

(६) पहले दिन तिथि **'निशीथ'** के एकदेश को और दूसरे दिन सम्पूर्णभाग को व्याप्त करे तो व्रत दूसरे दिन होगा।

फाल्गुन कृष्णपक्ष वाली **'शिवरात्रि'** का विशेष माहात्म्य है। इसे **'श्रीमहाशिवरात्रि'** भी कहा जाता है।

पूर्णिमा व्रत

प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की पूर्णिमा में यह व्रत करने का शास्त्रादेश है। इसे उदयव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है। यदि दोनों दिन वह उदयव्यापिनी हो तो यह व्रत पहले दिन किया जाता है। यदि पूर्णिमा का क्षय हो तो इस व्रत को उसी दिन किया जाए, जिस दिन पूर्णिमा प्रारम्भ व समाप्त हो रही हो। इस व्रत का स्नान-दान-जप आदि के लिए विशेष माहात्म्य माना जाता है।

श्री सत्यनारायण व्रत

यह व्रत प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा मे किया जाता है। कोई भी व्यक्ति स्वेच्छया इसे अन्य किसी भी दिन, किसी भी अन्य प्रदोषव्यापिनी तिथि में कर सकता है, ऐसा भी पुराण-वाक्य है। लेकिन अधिकतर लोग इस व्रत को परम्परया पूर्णिमा वाले दिन ही करते हैं।

पूर्णिमा की अलग-अलग स्थितियों में इस व्रत का निर्णय इस प्रकार है:-

(१) दोनों दिन पूर्णिमा पूर्णरूप से प्रदोष को व्याप्त करे अथवा वह तिथि दोनों दिन समानरूप से प्रदोष के एकदेश को स्पर्श करे तो यह व्रत दूसरे दिन करना चाहिए।

(२) पूर्णिमा दोनों दिन असमान रूप से प्रदोष को व्याप्त करे तो यह व्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन तिथि प्रदोष को अधिक व्याप्त करती है, वशर्ते कि देवपूजा, भोजन आदि के लिए वहां समय पर्याप्त हो, यदि वहां इसके लिए समय पर्याप्त न हो तो दूसरे *ही दिन व्रत किया जाए।*

(३) यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोष को सर्वथा स्पर्श न करे तब भी व्रत दूसरे दिन ही होगा।

ज्ञातव्य है कि- श्री सत्यनारायणव्रत की चर्चा निर्णयसिन्धु, कालमाधव आदि किसी भी व्रत-पर्व- निर्णायक निबन्धग्रन्थ में नहीं है।

अमावस्या

प्रत्येक मास की उदयव्यापिनी अमा को स्नान-दान-जपादि के लिए महत्त्वपूर्ण पर्व माना जाता है। अमा की वृद्धि में पहले दिन और क्षय में उसी दिन यह पर्व स्वीकार किया जाता है। सोमवती, भौमवती ओर शनैश्चरी अमावस्याओं का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य वर्णित है।

-:कुछ अन्य चान्द्र व्रत-पर्वः-

सूर्य-चन्द्रग्रहण पर्व

चन्द्रमा एवं राहु की विशेषस्थितिवश किसी-किसी अमावस्या को सूर्यग्रहण और पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण घटित होता है।

सूर्य एवं चन्द्र के ग्रहणकाल विशेष महत्त्वपूर्ण धार्मिक पर्व माने जाते हैं। ग्रहणकाल में किसी भी तीर्थ पर स्नान-दान-जपादि का सर्वाधिक माहात्म्य शास्त्रों में वर्णित है। इन ग्रहणों के समय हिन्दू तीर्थस्थलों पर धार्मिकजनों का अपार जनसमूह स्नानादि के लिए उमड़ पड़ता है। ग्रहण का दिन मंगलकृत्यों के लिए सर्वथा वर्जित है।

सूर्यग्रहण के प्रारम्भ से चार प्रहर और चन्द्रग्रहण के प्रारम्भ से तीन प्रहर पहले ग्रहण-वेध (सूतक) प्रारम्भ हो जाता है। इस वेध एवं ग्रहणकाल में खान-पानादि करना सर्वथा वर्जित है।

एकभक्त व्रत

मध्याह्नव्यापिनी तिथि में एकभक्त व्रत किया जा सकता है। यह तीन प्रकार का है-

(१) स्वतन्त्रभक्त, (२) अन्यांग एकभक्त और (३) प्रतिनिधि एकभक्त।

स्वतन्त्र एकभक्त की तिथि का निर्णयप्रकार

यह एकभक्त किसी भी मास की किसी भी तिथि को किया जा सकता है। कुछ लोग इसे मासपर्यन्त या वर्षपर्यन्त भी करते हैं। इसकी तिथि का निर्णय इस प्रकार है-

(i) यदि तिथि पहले दिन ही मध्याह्नव्यापिनी हो तो उसका एकभक्त पहले दिन।

(ii) यदि तिथि दूसरे दिन ही मध्याह्नव्यापिनी हो तो उसका एकभक्त दूसरे दिन।

(iii) यदि तिथि दोनों दिन मध्याह्न को व्याप्त न करे तो उसका एकभक्त उसी दिन जिस दिन वह तिथि विद्यमान है।

(iv) यदि तिथि दोनों दिन मध्याह्न को पूर्णतया व्याप्त करे तो युग्मवाक्यानुसार पूर्वविद्धा या परविद्धा तिथि का निर्णय करके व्रततिथि का निर्णय करें।

(v) यदि तिथि दोनों दिन मध्याह्न को सामानरूप से व्याप्त करे तो व्रत पहले दिन।

(vi) यदि तिथि दोनों दिन असमानरूप से मध्याह्न को व्याप्त करे तो 'एकभक्त' उसदिन होगा जिस दिन उसकी मध्याह्न में अधिक व्याप्ति हो।

एकभक्तव्रत में मध्याह्नकाल के उत्तरार्द्ध में केवल एक ही समय भोजन किया जाता है। यहां 'मध्याह्नकाल' पंचधा विभक्त दिनमान का तृतीयभाग है।

एकभक्त भोजन में मुनि को आठ ग्रास और गृहस्थी को ३२ (बतीस) ग्रास खाने चाहिएं।

अन्यांग एकभक्त व्रत

ऐसा कोई भी व्रत जिसमें मध्याह्न में भोजन किया जाता है, **'अन्यांग एकभक्त व्रत'** कहलाता है। इस व्रत की तिथि का निर्णय उस व्रत से सम्बद्ध तिथिनिर्णय की पद्धति के अनुसार ही किया जाता है।

प्रतिनिधि एकभक्त व्रत

'प्रतिनिधि एकभक्त व्रत' किसी विशेष व्रत (एकादशी व्रत आदि) के लिए किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति दौर्बल्य आदि या अन्य कारण से एकादशीव्रत आदि में २४ घण्टे का उपवास न रख सके, उसे वहां एकभक्तव्रत की तरह मध्याह्नापरभाग में भोजन करने की शास्त्रों द्वारा अनुमति है। तदनुसार किए जाने वाले एकादशी आदि व्रतोपवास 'प्रतिनिधि एकभक्त व्रत' कहलाते हैं। ऐसे 'प्रतिनिधि एकभक्त व्रत' की तिथि का निर्णय उस व्रत से सम्बद्ध व्रततिथि के निर्णय-प्रकार से ही किया जाता है। स्पष्टता के लिए यूं समझिए, एकादशी का 'प्रतिनिधि एकभक्त व्रत' उसी दिन किया जाता है, जिस दिन एकादशी का व्रत रखा हो।

नक्तव्रत

प्रदोषव्यापिनी तिथि में नक्तव्रत किया जाता है। यह व्रत किसी भी मास की किसी भी तिथि को किया जा सकता है।

नक्तव्रत भी एकभक्त व्रत की तरह तीन प्रकार का है-

(१) स्वतन्त्र नक्तव्रत, (२) अन्याङ्ग नक्तव्रत, (३) प्रतिनिधि नक्तव्रत।

('नक्त' शब्द का अर्थ 'रात्रि' है।)

स्वतन्त्र नक्तव्रत की तिथि का निर्णयप्रकार

स्वतन्त्र नक्तव्रत की तिथि का निर्णय इस प्रकार किया जाता है-

(i) पहिले ही दिन तिथि प्रदोषव्यापिनी हो तो उसका नक्तव्रत पहिले दिन।

(ii) दूसरे ही दिन तिथि प्रदोषव्यापिनी हो तो उसका नक्तव्रत दूसरे दिन।

(iii) दोनों दिन तिथि प्रदोष को समानरूप से व्याप्त करे तो उस तिथि का नक्तव्रत भी दूसरे दिन।

(iv) यदि तिथि दोनों दिन प्रदोष को असमानरूप से व्याप्त करे तो उसका नक्तव्रत उस दिन किया जाएगा जिस दिन तिथि प्रदोष को अधिक व्याप्त कर रही हो।

(v) तिथि दोनों दिन प्रदोष को व्याप्त न करे तो उसका नक्तव्रत दूसरे दिन किया जाता है।

नक्तव्रत वाले दिन भोजन सूर्यास्त के बाद डेढ मुहूर्त छोड़कर प्रदोषकाल में किया जाता है। यति, विधवा और अपुत्र विधुरों को नक्तभोजन सायाह्न में सूर्यास्त से पहिले एक मुहूर्त्त के भीतर कर लेना चाहिए। उन्हें सूर्यास्त के बाद प्रदोष में भोजन करने का निषेध है। नक्त में बारह, पन्द्रह अथवा बाईस ग्रास ही व्रती को खाने चाहिएं।

अन्याङ्ग नक्तव्रत

वे सभी कालाष्टमी, सत्यनारायण, प्रदोष आदि व्रत **'अन्याङ्ग नक्तव्रत'** कहलाते हैं, जिनमें प्रदोष के समय भोजन किया जाता है। इन **अन्याङ्ग नक्तव्रतों** की तिथि का निर्णय तो इनके अपने-अपने निर्णायक नियमों के अनुसार ही किया जाता है।

प्रतिनिधि नक्तव्रत

जो लोग शारीरक दुर्बलता आदि के कारण एकादशी आदि व्रत के दिन अहोरात्रोपवास (२४ घंटे का उपवास) रखने में असमर्थ हों उन्हें नक्तव्रत की भांति प्रदोषकाल में भोजन करने की अनुमति शास्त्र देते हैं। इसे ही 'प्रतिनिधि नक्तव्रत' कहा जाता है। प्रतिनिधि नक्तव्रत के अनुसार प्रदोष में भोजन करने से व्रतभंग नहीं माना जाता।

चार कुम्भ महापर्व

भारतवर्ष के चार महातीर्थों (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक) में सूर्य एवं बृहस्पति की विशेषराशियों में स्थिति के समय प्रत्येक लगभग द्वादश वर्ष में **'कुम्भ'** नाम के महापर्व घटित होते हैं। इन पर्वों का सम्बन्ध **'समुद्र मन्थन'** के बाद प्राप्त अमृत के बंटवारे हेतु हुए सुरासुर-संग्राम से माना जाता है।

ये महापर्व सूर्य-गुरु की किन स्थितियों में कौन से तीर्थस्थल पर कब मनाए जाते हैं:- इसका विवेचन नीचे किया जा रहा है:-

प्रयागराज कुम्भ महापर्व प्रयागराज में माघी अमा के दिन तब मनाया जाता है, जब सूर्य मकर में और गुरु वृषराशि में हो।

हरिद्वार कुम्भ महापर्व हरिद्वार में मेष संक्रान्ति के दिन गुरु की कुम्भ में स्थिति के समय होता है।

उज्जैन कुम्भ महापर्व उज्जैन में वैशाखी पूर्णिमा को मेष में सूर्य एवं सिंह में गुरु की स्थिति के समय होता है।

नासिक कुम्भ महापर्व नासिक में भाद्र. अमा को सूर्य एवं गुरु (दोनों) की सिंहराशि में स्थिति के समय होता है।

इन महापर्वों के दिन इनसे सम्बद्ध तीर्थों पर स्नान-दान आदि का निरतिशय अनन्त फल हमारे पुराणों एवं अन्य धर्मग्रन्थों में विस्तार से लिखा गया है।

-: सौर व्रत-पर्व :-

निरयण एवं सायन सूर्य संक्रान्तियों से सम्बद्ध व्रत-पर्व **सौर व्रत-पर्व** कहलाते हैं।

निरयण संक्रान्तियों से सम्बद्ध व्रत-पर्व

सूर्य जिस दिन किसी मेषादि निरयण राशि में प्रवेश करता है उस दिन को **'संक्रान्तिदिन'** कहते हैं। यद्यपि पूरा संक्रान्तिदिन पवित्र माना जाता है, फिर भी संक्रान्तिकाल से पहले व बाद में लगभग १६-१६ घटीकाल 'पुण्यकाल' माना जाता है। यह पुण्यकाल स्नान-दान-जपादि के लिए विशेष महत्त्व रखता है।

मेष, कर्क, तुला और मकर की संक्रान्तियों का विशेष माहात्म्य माना जाता है। संक्रान्ति के दिन उपवास रखना चाहिए और उपरोक्त पुण्यकाल में स्नान-दानादि करना चाहिए- ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

जैमिनि का मत है कि पुत्रवान् गृहस्थी को संक्रान्ति के दिन 'उपवास' नहीं करना चाहिए-

आदित्येऽहनि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्र-सूर्ययोः।
उपवासो न कर्त्तव्यः पुत्रिणा गृहिणा तथा।।

सूर्य जिस दिन **'मेष'** में प्रविष्ट होता है उस दिन पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. आदि में **'वैशाखी'** नामक पर्व विशेष उल्लास से मनाया जाता है। **'मकर'** संक्रान्ति का दिन समस्त भारत में विशेष पर्वरूप में स्वीकारा गया है। मकरसंक्रान्ति से ठीक एक दिन पहले पंजाब आदि में **'लोहड़ी'** नाम का विशेष उत्सव होता है।

सायन संक्रान्तियों से सम्बद्ध व्रत-पर्व

सूर्य जिस दिन किसी सायन मेषादि राशि में प्रविष्ट होता है, उस दिन को **'सायन संक्रान्तिदिन'** कहा जाता है।

धार्मिक दृष्टि से भारतीय धार्मिक परम्परा में यद्यपि इन्हें विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता, फिर भी कुछ सायन संक्रान्तियां हमारे धार्मिक कृत्यानुष्ठाननादि में महत्वपूर्ण हैं। जिनका विवरण इस प्रकार है:-

सायन मेष संक्रान्ति दिनः- यह सायन संक्रान्तिदिन **'महाविषुवदिन'** कहलाता है । इस दिन विश्व में सर्वत्र रात-दिन बराबर होते हैं। यह दिन २२ मार्च के लगभग घटित होता है।

सायन कर्क संक्रान्ति दिनः-सायन कर्कसंक्रान्ति के दिन **'दक्षिणायन'** प्रारम्भ होता है। यह दिन २१ जून के लगभग घटित होता है।

सायन तुला संक्रान्ति दिन :- यह **'विषुव'** दिन है। इस दिन भी विश्वभर में रात-दिन बराबर होते हैं। यह दिन २२ सितम्बर के लगभग पड़ता है।

सायन मकर संक्रान्ति दिन :- इस दिन **'उत्तरायण'** प्रारम्भ होता है। यह दिन २१ दिसंबर के लगभग आता है।

यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है, कि - वशिष्ठ ने सायन सूर्यसंक्रान्तियों को ही वास्तविक संक्रान्ति कहा है, निरयण संक्रान्तियों को उसने संक्रान्तिरूप में नहीं स्वीकारा है।

-: व्रत-पर्वों के बारे मे आवश्यक कुछेक निर्देश :-

पिछले पृष्ठों पर लगभग सभी चान्द्र एवम् सौर व्रत-पर्वों का निर्णयप्रकार हमने विस्तार से दिया है । उन व्रत-पर्वों के बारे में प्रायशः उत्पन्न होने वाले प्रश्नों का उत्तर सर्वसाधारण के ज्ञानार्थ यहां आगे दिया जा रहा है।

उपवास एवम् व्रत में अन्तर

अहोरात्र में अनशन (भोजन का त्याग) **'उपवास'** है। पूजादि अनुष्ठान और संयम आदि का पूर्ण पालन **'व्रत'** कहलाता है।

उपवास के दिन व्रतनियमों का पालन करना आवश्यक है। इसलिए उपवास और व्रत दोनों साथ-साथ चलते हैं। इन दोनों का परस्पर इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिससे **'उपवास'** को **व्रत** भी कहा जाता है।

उपवास से पूर्व कर्त्तव्य एवम् वर्ज्य

उपवास से पहले दिन तामसिक मद्य आदि पदार्थों का सेवन तथा मैथुन आदि का निषेध है। उस दिन हो सके तो केवल एकभक्त (मध्याह्नापरभाग में भोजन) करें।

व्रती के लिए नियम (कर्त्तव्य एवम् अकर्त्तव्य)

उपोषित (व्रती) व्यक्ति को दिन में शयन, परान्नभक्षण, पुनर्भोजन, मैथुन, असकृत् (बार-बार) जलपान, धूम्रपान, ताम्बूलचर्वण, दन्तधावन-भक्षण (दातुन चबाना), मांस-मदिरादि सेवन, चर्मस्थ जल, गो-भिन्न महिषी आदि का दूध, मसूर, नींबू, शुक्तिचूर्ण, मनसा भोजन (मन से भोजन करना), भोजन की गन्ध का इच्छापूर्वक आघ्राण, भोज्य पदार्थों का तृष्णापूर्वक दर्शन, तैलाभ्यंग, व्यायाम, अश्रुपात, कलह, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, मिथ्याभाषण, विश्वासघात, चोरी, अंजनादि अंगरागों का प्रयोग, पुष्पमाला, सुगन्धितद्रव्य प्रयोग एवं द्यूत आदि का सर्वथा त्याग करना चाहिए। ऐसा (इनका त्याग) न करने से व्रतभंग होता है। क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, अग्निहवन आदि सद्भाव एवं सत्कर्म व्रत के विशेष अंग माने गए हैं।

सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए पुष्पमाला, सुगन्धित द्रव्य, अंजनादि अंगरागों का प्रयोग व्रत के समय करना शास्त्रनिषिद्ध नहीं है।

पानी, कन्दमूल, फल, दूध, हविष्य, औषध- इन पदार्थों के सेवन से व्रतभंग नहीं होता। ब्राह्मण एवं गुरु की अनुमति से सेवित पदार्थ भी व्रतभंग का कारण नहीं बनते-

अष्टैतान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः।
हविः ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्।।

व्रत के दिन अन्त्यज, प्रसूता स्त्री, रजस्वला, पतित व्यक्ति को व्रती न तो देखे और न ही इनसे बात करे। अबोधपूर्व स्पर्श एवं बातचीत यदि इनसे हो जाए तो तुलसीपत्र, आमला, अलसी के पत्ते खाने, स्नान करने एवं सूर्यबिम्ब को देखने से शुद्धि हो जाती है। **'विष्णुस्मरण'** मात्र से भी धर्मशास्त्रों में इस दोषजन्य अपवित्रता की निवृत्ति लिखी है।

व्रत करने का संकल्प

उपवास वाले दिन प्रातः शौच, स्नानादि से निवृत्त होकर, निराहार व्यक्ति उत्तराभिमुख होकर, ताम्रपात्र में जल लेकर,यह संकल्प करे, कि **" मैं आज 'अमुक' मास, पक्ष और तिथि में 'अमुक' देवता की प्रीत्यर्थ 'अमुक' व्रत करुंगा।"** इस संकल्प को संस्कृत में भी कर सकते हैं।

ध्यान रहे;- इस संकल्प में 'अमुक' तिथि की जगह उसी तिथि का उच्चारण करे, जिस तिथि का वह व्रत करने जा रहा है, भले ही संकल्पकाल में वह तिथि विद्यमान न भी हो।

व्रत में प्रतिनिधि

दौर्बल्य, रोग अथवा अन्य किसी अपरिहार्य कारण से यदि व्यक्ति स्वयं व्रत न कर सके तो वह अपने स्थान पर प्रतिनिधि-रूप में निर्वाचित धर्मपत्नी, आज्ञाकारी पुत्र, भ्राता, बहन, पिता, माता, पति, पुरोहित, मित्र, शिष्य आदि द्वारा अपना अभीष्ट व्रत करवा सकता है।

प्रारम्भ किए गए व्रत के मध्य ज्वर, सूतक (जननाशौच), पातक (मरणाशौच) आ पड़े तो प्रारम्भ किए गए व्रत का शारीरिक कर्म (भगवत् प्रणामादि) स्वयं करे, अर्चनादि गन्ध-माल्यार्पण-दीपादानादि कर्म दूसरे (प्रतिनिधि) से करवाए। दान आशौच के अन्त में पवित्र होकर स्वयं करे। यही नियम व्रत के मध्य रजोदर्शन वाली (रजस्वला) स्त्रियों के लिए भी है-

पूर्वसंकल्पितं यच्च व्रतं सुनियत-व्रतैः।
तत्कर्त्तव्यं नरैः शुद्धं दानार्चनवर्जितम्।। - *(मदनरत्न)*

शास्त्रकारों का कथन है, कि- व्रत के प्रतिनिधि को भी व्रत का फल मिलता है। **ध्यान रहे-** नित्य, नैमित्तिक व्रत हेतु ही प्रतिनिधि चयन किया जा सकता है, काम्यव्रत के लिए नहीं। यदि काम्यव्रत प्रारम्भ करने के बाद किसी भी असामर्थ्य आदि के कारण उसका आचरण असम्भव हो जाए तो वहां भी उस व्रत के लिए प्रतिनिधि का चयन किया जा सकता है। कभी भी काम्यव्रत का प्रारम्भ प्रतिनिधि द्वारा नहीं करवाया जा सकता-

काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्ये-नैमित्तिके च सः।
काम्येऽप्युपक्रमादूर्ध्वं केचित् प्रतिनिधिं विदुः।।

व्रत सन्निपात (दो व्रतों का मिश्रण)

यदि किसी दिन दो भिन्न-भिन्न व्रत करने की स्थिति आ पड़े तो दान, होमादि ऐसे अनुष्ठान कर्म जो उन दोनों व्रतों में परस्पर अविरुद्ध हों, उन्हें एकैकशः स्वयं करे। जो अनुष्ठान कर्म परस्पर विरुद्ध हों (अर्थात् एक ही व्यक्ति द्वारा कर सकना जिन्हें संभव न हो) उन्हें अपने किसी प्रतिनिधि द्वारा करवाए।

यदि किसी व्रत की पारणा के दिन दूसरा व्रत भी आ पड़े, वहां व्रतान्तभोजन के पदार्थों को सूंघ कर छोड़ देना चाहिए। ऐसा करने से पहिले व्रत की पारणा भी सम्पन्न हो जाती है और अग्रिम व्रतोपवास भी भंग नहीं होता, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार अन्न का आघ्राण (सूंघना) भक्षण एवम् अभक्षण दोनों रूप में माना जाता है। यह जान लेना चाहिए कि बिना पारणा किए व्रत सम्पन्न नहीं होता। केवल जलसेवन कर लेने से भी व्रतपारणा मानी जाती है।

व्रतभंग का प्रायश्चित्त

क्रोध, प्रमाद, लोभ आदि के कारण उद्वेग में यदि कोई व्रतभंग कर लेता है तो प्रायश्चित्त के रूप में वह तीन दिन अनशन करे एवम् शिरोमुण्डन करवाए। कुछ आचार्यों का कथन है कि इन दोनों (अनशन, शिरोमुण्डन) में से केवल एक ही प्रायश्चित्त पर्याप्त है । यह भी कुछ धर्मशास्त्रविदों का मत है कि प्रमाद से उपवास भंग हो जाने पर कोई प्रायश्चित्त अपेक्षित नहीं। 'अग्निपुराण' का वाक्य है:-

क्रोधात्प्रमादाल्लोभाद् वा व्रतभंगो भवेद्यदि।
दिनत्रयं न भुञ्जीत* मुण्डनं शिरसस्तथा।।

* *('मुण्डनं शिरसोऽथवा'- पाठान्तर)*

पारणा

व्रत के अन्त में किया जाने वाला भोजन **पारणा** कहलाता है। व्रत के अन्त में पारणा करना आवश्यक है। इसके बिना व्रत सम्पन्न नहीं माना जाता।

जिस तिथि का व्रत रखा हो उस तिथि के अन्त में पारणा करनी चाहिए। यदि तिथि उपवास वाले दिन ही समाप्त हो रही हो तो पारणा दूसरे ही दिन पूर्वाह्ण में करनी होगी।

यदि तिथि दूसरे दिन समाप्त हो रही हो तो तिथि की समाप्ति के बाद ही पारणा की जाती है। यदि दूसरे दिन तिथि की समाप्ति ३ प्रहर के बाद हो रही हो तो पारणा प्रातःकाल उस तिथि के भीतर ही कर लेनी चाहिए। पारणा रात्रि में नहीं की जाती।

एकभक्त व्रत, नक्तव्रत एवं इनके प्रतिनिधि एकादशी आदि व्रतों की भी दूसरे दिन पारणा करना आवश्यक है।

यदि किसी व्रत की पारणा के दिन दूसरा कोई व्रत आ पड़े तब जलपान से ही पहिले व्रत की पारणा हो जाती है;- ऐसा शास्त्रवचन है।

व्रतारम्भ और उद्यापन

अनेक मास एवं वर्षों तक चलने वाले प्रदोष, महालक्ष्मी आदि व्रतों का प्रथम प्रारम्भ एवं उद्यापन (समापन) गुरु-शुक्रास्त, गुरु-शुक्र के बाल्य-वार्द्धक्यकाल, मलमास, क्षयमास, सिंहस्थ गुरुकाल, अमा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृतियोग, रवि, मंगल एवं शनिवार में नहीं करना चाहिए। यहां यह विशेषतः ध्यातव्य है, कि- ऐसे दीर्घकाल पर्यन्त चलने वाले व्रतों का आरम्भ एवं उद्यापन (दोनों) ऐसी उदयव्यापिनी तिथि में ही किए जाएं, जो दिनार्ध से पूर्व समाप्त न हो रही हो-

उदयस्था तिथिर्याहि न भवेद् दिनमध्यगा।
सा खण्डा न व्रतानां स्यात्तत्रारम्भ-समापनम्।। - *(तत्वज्ञ)*

हिन्दु व्रत-पर्वों की तिथियों में मतभेद और उसका प्रतीकार

(एक अनुसन्धानपूर्ण निबन्ध)

हिन्दुओं के प्राचीन परम्परागत व्रतपर्वोत्सवों की तिथियों के निर्धारण में वैमत्य एक ऐसी समस्या है जिसका शतप्रतिशत समाधान भारतीय पंचांगकार आज तक नहीं कर पाए, अथवा ऐसा कहना अधिक उपयुक्त होगा कि इस समस्या के समाधान के लिए आजतक कोई ठोस कदम उन्होंने उठाया ही नहीं । भारत में पर्वोत्सवों के तिथियों से सम्बद्ध मतभेद के अपाकरण के लिए अनेकों ज्योतिष-सम्मेलन आयोजित किए गए, जिनका परिणाम सन्तोषजनक नहीं रहा। नवम्बर १६६८ ई. में भारतसरकार द्वारा विज्ञानभवन दिल्ली में आयोजित ज्योतिष-सम्मेलन में भी व्रत-पर्वों की तिथियों में उत्पन्न होने वाले वैषम्य के निराकरण के लिए कुछ प्रस्ताव पारित किए गए, जो अनेक त्रुटियों के कारण इस क्षेत्र में प्रभावशून्य ही रहे। इन सभी सम्मेलनों की विफलता का एकमात्र कारण यही रहा है कि- वैमत्य पैदा करने वाले सभी तत्त्वों का सुस्पष्ट विश्लेषण तथा उनका निवारण करने वाले उपायों पर एकैकशः गम्भीरता से विचार किया ही नहीं गया । यहां हम इस मतवैषम्य के सभी कारणों एवं उनके अपाकरण के उपायों पर विस्तारपूर्वक विचार करेंगे।

हमारे व्रतोत्सवों में उत्पन्न होने वाले इस अनैकमत्य के निम्नांकित पाँच कारण हैं :-

(१) पञ्चाङ्गीय गणितों में मतभेद।
(१) भूपृष्ठीय भेद।
(३) ऋषि-आचार्यों के वचनों में एकता का अभाव।
(४) सम्प्रदायादि भेद ।
(५) स्थानीय परम्पराएं।

इन पाँचों कारणों का प्रतीकारसहित विशद विवेचन इस प्रकार हैं-

(१) पञ्चाङ्गीय गणितों मे मतभेद

आजकल दृक्पक्षपाती पंचांगकार चित्रापक्षीय निरयण गणना को ही बहुमत से मान्यता दे रहे हैं, अतः इनके पंचांगों में गणितभेद से उत्पन्न होने वाला व्रतपर्वादि में मतभेद लगभग समाप्त ही है। अब भारतमें प्रकाशित होने वाले लगभग शत-प्रतिशत पञ्चाङ्ग चित्रापक्षीय ही हैं । कुछेक (पांच-सात) दृक्पक्षानुयायी पंचांगकार आज भी रैवतपक्ष को प्रामाणिक मानकर तदनुसार अपने पञ्चांग बना रहे है। **किञ्च-** बनारस के तीन-चार पञ्चाङ्गकार अब भी सूर्य-ब्रह्म-मकरन्दादि पक्षों का अनुसरण करते चले आ रहे हैं, जिससे इन पचाङ्गों द्वारा निर्णीत व्रतोत्सवों की तिथियां चित्रापक्षीय पञ्चाङ्गों द्वारा निर्णीत तिथियों से अनेकदा मेल नहीं खाती * । इस भेद को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि- शेष बचे ५-७ ये भारतीय पञ्चाङ्गकार भी बहुमत से स्वीकृत चित्रापक्षीय निरयण दृक्तुल्य गणना को ही आधार मानकर अपने-अपने पञ्चाङ्गों की रचना करें, अन्यथा ये पंचांग व्रतादि की तिथियों में यदा कदा मतभेद का कारण बनते रहेंगे।

क्योंकि भारत सरकार द्वारा नियुक्त Calendar Reform Committee के विद्वान् सदस्यों तथा केतकर, दीक्षित आदि अन्य भारतीय ज्योतिर्विदों ने चित्रापक्षीय निरयण दृग्गणना को ही स्वीकार्य घोषित किया है, और भारत के लगभग सभी दृक्सिद्धपञ्चाङ्गकारों ने इसे मान्यता भी दी है। अतः आवश्यक है कि इसपक्ष से विमुख चलने वाले परिगणित इन पञ्चाङ्गकारों को भी इसी पक्ष को ऐकमत्य की दृष्टि से स्वीकार कर लेना चाहिए, जिससे गणितभेद से पैदा होने वाला व्रत-पर्वों में मतभेद समाप्त हो।

यह हर्ष की बात है कि अब भारत के लगभग सभी चित्रापक्षीय पंचांगों की गणना

***ध्यान रहे -** *ब्राह्म-सौर-आर्य-मकरन्द आदि लगभग सभी प्राचीन पक्षों द्वारा साधित तिथ्यादि एवं संक्रान्तिकाल आदि में भी परस्पर कुछ न कुछ अन्तर अवश्य रहता है, जिससे इन पक्षों के पंचांगों द्वारा निर्णीत व्रतपर्वादि की तिथियों में भी कभी कभी मतभेद का प्रसंग उपस्थित हो जाता है। ब्रह्मपक्ष और सूर्यसिद्धान्तपक्ष की सूर्यसंक्रान्ति के कालों में कई घड़ियों का अन्तर रहता है, जिससे इन पक्षों के पंचांगों में कई बार अधिकमास के बारे में भी मतभेद देखा गया है। वि. सं. २०३६ के क्षयमास के उत्तरवर्त्ती अधिकमास के बारे में भी इन पक्षों में मतभेद रहा है। वहां सूर्यसिद्धान्त द्वारा फाल्गुन तथा ब्रह्म द्वारा चैत्र अधिकमास था, जिससे इन मासों से सम्बद्ध व्रत-पर्वों में इन पक्षों के पंचांगकार एकमत नहीं रहे।*

आधुनिक सूक्ष्म संस्कारों पर आधारित Computer Programming द्वारा की जा रही है, जिससे इन पंचांगों के तिथ्यादि सूर्य-चन्द्रोदयास्त, ग्रह-राशिनक्षत्रचार, ग्रहभोगांश आदि में परस्पर कोई अक्षम्य अन्तर नही पाया जाता। तथापि कुछ छोटे-मोटे संस्कारों की उपेक्षा करने वाले Programmes के आधार पर बनने वाले कुछ पंचांगों में कई स्थलों पर तिथ्यादि, ग्रहराशिचार, चन्द्र-सूर्योदयास्त आदि कालों में १-२ मिनटों का तथा ग्रहभोगांशों में भी कुछ विकलाओं का नगण्य अन्तर अवश्य पाया जाता है। लेकिन इस थोड़े से नगण्य अन्तर के कारण भी अनेक सन्धिगत स्थलों पर व्रतादि की तारीखों में एकता पैदा करना कठिन हो जाता है। सन् १९९८ ई. की १९-२० नवम्बर को विज्ञानभवन, दिल्ली में आयोजित पंचांग गोष्ठी में पारित प्रस्ताव के अनुसार सूर्य में ५ विकला तथा चन्द्रमा में ३० विकलाओं की स्थूलता को भारतीय पंचांगों के लिएं क्षम्य ठहराया गया है। इस प्रस्ताव के अनुसार विभिन्न दृक्पक्षानुयायी चित्रापक्षीय पंचांगों की तिथ्यादि में २-३ पलों तक का परस्पर अन्तर रहने पर भी सभी पंचांगों को समानरूप से मान्यता मिलनी चाहिए। तिथ्यादि में २-३ पलों का थोड़ा सा पारस्परिक अन्तर होने पर इन पर पंचांगों से ऐसे व्रत-पर्व को तारीख का निर्णय असम्भव हो जाएगा, जहां व्रत-पर्व के नियामक तत्त्व (प्रदोष, निशीथ, मध्याह्न आदि) को समाप्ति या प्रारम्भ के काल से अभीष्ट तिथ्यादि का संयोग या अन्तर २-३ पलों के लगभग या इससे कम होग। सूर्यभोग में ५ विकला की अशुद्धि से संक्रान्तिकाल में तो २ मिनट की अशुद्धि होगी, जिससे सूर्योदय (वारप्रवृत्ति) से दो मिनट तक आगे -पीछे घटित होने वाली संक्रान्ति के वार में अन्तर निश्चित रूप में आ जाएगा। जिस वार में संक्रान्ति घटित होती है, पंजाब आदि प्रदेशों में उसी दिन उसराशि को संक्रान्ति से सम्बद्ध सौरमास प्रारम्भ होता है, और संक्रान्तिपर्व भी उसी दिन मनाया जाता है। ऐसे स्थलों पर उपरोक्त पंचांगगोष्ठी द्वारा पारित प्रस्ताव कोई समाधान नहीं देता। अतः स्पष्ट है इस पंचांगगोष्ठी द्वारा समर्थित यह प्रस्ताव व्रतादि ऐकमत्य की दृष्टि में दोषमुक्त नहीं है। उपरोक्त स्थूलता को भारतीय पंचांगों के लिए स्वल्पान्तरत्वेन सह्य घोषित करनान्याय संगत एवं आवश्यक तो है, परन्तु इस सह्य स्थूलता से व्रतादि में कभी-कभी उत्पन्न होने वाले मतभेद को दूर करने के लिए भारत के सभी पंचांगकारों को मिलकर एक अखित भारतीय स्तर की ऐसी साधिकार विद्वत्समिति बनानी होगी, जो प्रतिवर्ष आगामी वर्ष के सभी व्रत-पर्वों की तिथियों (दिनों) का निर्णय कम से कम १२ मास पहिले ही घोषित कर दे। इस समिति का निर्णय सभी पंचांगकारों को अनिवार्यरूपेण मान्य होना चाहिए। वैसे इस प्रस्तावित समिति का कार्य भारतसरकार के Positional Astronomy Centre (P.A.C.) Calcutta को भी सौंपा जा सकता है । यह Centre प्रतिवर्ष संस्कृत, इंग्लिश, उर्दू एवं भारत की बारह प्रान्तीय भाषाओं में चित्रापक्षीय गणना पर आधारित 'राष्ट्रीयपंचांग' तथा इंग्लिश में 'The Indian Ephemeris And Nautical Almanac' प्रकाशित करता है, जिनमें सभी व्रत-पर्वों का निर्णय दिया रहता है। इस Centre (P.A.C.) को चाहिए कि वह अपनी व्रत-पर्व निर्णायिका समिति द्वारा (जिसका मैं भी सदस्य हूँ) वर्षारम्भ से कम से कम एकवर्ष पूर्व ही सभी व्रत-पर्वों की तिथियों की सूची प्रस्तुत करवाकर उसे सभी पंचांगकारों में प्रसारित किया करे। इन तिथियों को सभी पंचांगकार मानने के लिए बाधित हों। ऐसा कोई प्रावधान होना भी नितान्त अपेक्षित है।

ध्यान रहे - व्रतपर्व-निर्णायिका समिति, चाहे वह P.A.C. द्वारा गठित हो या भारतीय पंचांगकारों द्वारा, उसे मेरे इस लेख में दिए गए व्रत-पर्व-तिथियों में वैमत्य के उपरोक्त सभी (पाँचों) कारणों को अनिवार्यतः दृष्टि में रखना होगा। इन कारणों के समाधान, जिन्हें मैं इस लेख में विश्लेषणपूर्वक उपस्थापित कर रहा हूँ, व्रतपर्वों की तिथियों में इस वैमत्य के अपाकरण में समिति के विद्वानों की पर्याप्त सहायता करेंगे- ऐसा मेरा विश्वास है। इन्हें वे अपने एतद्विषयक विचारविमर्श में अवश्य समाविष्ट करें।

अपि च- यहां पंचांगकारों को सूर्य-चन्द्र के उदयास्तकाल को भी पूरी तरह स्पष्टतापूर्वक परिभाषित करना होगा। कुछ पंचांगकार वारप्रवृत्ति आदि के निर्णयार्थ सूर्य-चन्द्र के गणितागत उदयास्तकाल (किरणवक्रीभवनसंस्कार-रहित बिम्बकेन्द्रोदयकाल) को और कुछ पंचांगकार क्षितिज के साथ बिम्बशीर्ष के दृश्य (किरणवक्रीभवनसंस्कार-संस्कृत) सम्पर्क को ही स्वीकार करते हैं卐 किरणवक्रीभवनसंस्कार-संस्कृत बिम्बकेन्द्रोदय को भी कुछ पंचांगकार वारादि की प्रवृत्ति के लिए ग्राह्य समझते हैं। यद्यपि भारत में इन तीनों प्रकार के उदयास्तकालों में अधिक से अधिक ४½ मिनट का तथा दिनमान में ९ मिनट का ही अन्तर रहता है, तथापि अनेकदा कुछ स्थलों पर इतने थोड़े से अन्तर से ही व्रत-पर्वों की तारीख में एक दिन का अन्तर आने का प्रसङ्ग उपस्थित हो जाता है। **उदाहरणार्थ मान लीजिए-** सूर्य का मेष संक्रमणकाल १४ अप्रैल मंगलवार को प्रातः ६ घं. १० मि. (भा. स्टैं. टा.) पर है। इसी दिन पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. के कुछ नगरों में दृश्य सूर्यशीर्षोदय ६ घं. ८ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर और गणितागत

卐 *Positional Astronomy Centre द्वारा प्रकाशित 'राष्ट्रीयपंचांगों' तथा 'The Indian Ephemeris And Nautical Almanac' में इसी (किरणवक्रीभवनसंस्कार-संस्कृत बिम्बशीर्ष के उदय) को ही स्वीकार किया गया*

सूर्यकेन्द्रोदय ६ घं. १२ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर हो रहा है। **स्पष्ट है**- यहां दृश्य सूर्यशीर्षोदय से वारप्रवृत्ति मानने पर पंजाब आदि प्रदेशों के इन नगरों में सौर वैशाख का पहिला प्रविष्टा (सौर-वैशाखारम्भ) १४ अप्रैल मंगलवार को होगा। यदि गणितागत सूर्यकेन्द्रोदय से वारप्रवृत्ति मानी जाए, तब वैशाख का प्रारम्भ १३ अप्रैल चन्द्रवार को होगा। इस स्थिति में इन दो विभिन्न पद्धतियों से वे सभी वैशाखी आदि सौर पर्व-त्यौहार इन प्रदेशों में दो-दो तारीखों में पड़ेगें, जो इस सौर-वैशाख के भीतर आते हैं।

हमारे लगभग सभी व्रत-पर्वों के निर्णायक सिद्धान्त ऐसे असहिष्णु (Sensitive) हैं, जिनके द्वारा निर्णय करते समय अनेक स्थलों पर तिथ्यादि समाप्तिकाल, सूर्यचन्द्रोदयास्त तथा दिनमान आदि में एक पल की कमी वेशी से भी व्रत-पर्वोत्सव की तारीख-वार में अन्तर आने का प्रसङ्ग आ ही टपकता है। ऐसा प्रसङ्ग भारत में ही १-२ वर्ष में एक-आध बार तो उपस्थित हो ही जाता है। यहां हम सन् १६७८ ई. के एक ऐसे ही प्रसंग को उदाहरण के रूप में रख देना उचित समझते हैं-

सन् १६७८ ई. की १४ जनवरी को चित्रापक्षीय निरयण मकर-संक्रान्ति का काल (I.S.T.) ७ घं. ३३ मि. था। अमृतसर (पंजाब) में इस दिन वारप्रवृत्ति किरणवक्रीभवनसंस्कृत सूर्यबिम्बशीर्षोदयकाल के अनुसार ७ घं. ३१ मि. (I.S.T.) पर और गणितागत सूर्योदय के अनुसार ७ घं. ३५ मि. पर हुई । इन दोनों के अनुसार यहां मकरसंक्रान्ति का पर्व (उत्सव) दो भिन्न-भिन्न तारीखों (१३ और १४ जन.) को होना चाहिए था। अपि च यहाँ यदि अमृतसर से प्रकाशित होने वाले दो विभिन्न पंचांगों में से एक का सूर्यस्पष्ट सर्वथा शुद्ध तथा दूसरे के सूर्यस्पष्ट में केवल ५ विकला की ही अशुद्धि होती तब इन दोनों पंचांगों के अनुसार भी इस मकरसंक्रान्ति का दिन भिन्न-भिन्न (एक के अनुसार १३ और दूसरे के अनुसार १४ जन.) होना चाहिए था। विज्ञानभवन में पारित उपरोक्त प्रस्ताव में तो सूर्य में ५ विकला की अशुद्धि को क्षम्य ठहराया है, जिससे इस प्रस्ताव की मान्यता के अनुसार इस मकरसंक्राति को १३ और १४ जन. दोनों दिन शुद्ध मानना चाहिए। इससे सर्वसाधारण में बुद्धिभेद पैदा होता है। पश्चिमी सौराष्ट्र में भी जहाँ-जहाँ सूर्योदय इसदिन ७ घं. ३३ मि. के आसन्न था, वहां भी इस पर्व में इस प्रकार के मतभेद का प्रसंग उपस्थित हुआ था।

यदि स्थानीय पंचांग के अनुसार ही व्रतादि की तारीख का निर्णय करने की परम्परा स्वीकार की जाए, तब तिथ्यादि, सूर्य-चन्द्रोदयास्त, दिनमान आदि में परस्पर थोड़ा सा भी अन्तर रखने वाले विभिन्न पंचांगों द्वारा किसी भी भारतीय व्रत-पर्व की तिथि का निर्णय विश्व के किसी न किसी भाग में प्रतिवर्ष अनैकमत्य उपस्थित करेगा ही। अतः हमें व्रतादि निर्णयोपयोगी प्रत्येक तत्त्व को स्पष्टरूप से पूरी तरह परिभाषित करना ही होगा।

(२) भूपृष्ठीय भेद

भले ही हम पञ्चाङ्गगणित के आधारभूत पक्ष (दृक्, सौर आदि), अयनांश तथा सूर्यचन्द्रोदयास्तकाल आदि तत्त्वों पर पूरी तरह एकमत होकर अपने पंचांगों का निर्माण करें, तथापि हमें अनेक स्थानों पर भूपृष्ठीय (अक्षांश, रेखांश से सम्बद्ध) भिन्नता के कारण व्रत-पर्वों की तिथियों में अनैकमत्य की समस्या से मुक्ति नहीं मिल सकती । हमारी भारतीय ज्योतिष-पद्धति के अुनसार वारप्रवृति, तिथि आदि के घट्यादि समाप्तिकाल आदि तत्त्व सूर्योदय से सम्बद्ध हैं, जो अक्षांश-रेखांश भेद से सभी स्थानों पर एकरूप नहीं रहते। चण्डीगढ़, बनारस, दिल्ली आदि विभिन्न नगरों से प्रकाशित होने वाले पंचांगों में दिए जाने वाले वार, घटी-पलात्मक तिथ्यादिकाल, तथा सूर्यचन्द्रोदयास्त आदि उनके अपने-अपने नगरों के ही होते हैं, जिससे इन सभी पंचांगों में दिए जाने वाले व्रत-पर्वादि की तिथियों में सहमति अनेकदा सम्भव नहीं होती। इस असहमति को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि **सभी पंचांगकार किसी एक ही केन्द्रस्थल के अक्षांश-रेखांश के आधार पर ही अपने पंचांगों का निर्माण करें। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीयपंचागों तथा 'The Indian Ephemeis And Nautical Almanac' में ८२°। ३०' (पू.) रेखांश, तथा २३°। ११' (उ.) अक्षांश वाले स्थल को केन्द्र मानकर, इसी केन्द्रस्थल के सूर्यचन्द्रोदयास्त तथा तिथ्यादि के अनुसार व्रत-पर्वों का निर्णय किया जाता है। मैं समझता हूं-सभी भारतीय पंचांगकारों को इसी स्थल को अपनी गणना का आधार बना लेना चाहिए, अन्यथा मतभेद की समाप्ति कदापि सम्भव नहीं है ।**

ध्यान रहे -विभिन्न नगरों के अक्षांश-रेखाशों के आधार पर बनाए गए पंचांग व्रत-पर्वों की तिथियों में मतभेद का प्रमुख कारण हैं।

एक ही केन्द्रस्थल के वार, सूर्योदयास्त आदि से समस्त भारत के लिए व्रतादि का निर्णय करने में धर्मशास्त्र का उल्लंघन नहीं समझना चाहिए, क्योंकि व्यवहार-लाघव की दृष्टि से हम लोग पहले से ही परम्परया व्रतादि धर्मिककृत्यों के लिए एक ही स्थल के पंचांग को समीप एवं दूरवर्ती पर्याप्त विस्तृत प्रदेश तथा प्रदेशों में विना पंचांग-परिवर्तन (बिना चरान्तर, देशान्तर संस्कार) के ही प्रयोग में लाते आ रहे हैं। बम्बई, अहमदावाद, चण्डीगढ़, दिल्ली, बनारस आदि के स्थानीय पंचांगों को आज भी अपने-अपने प्रदेशों तथा दूर के प्रदेशों में भी धार्मिक लोगों द्वारा धर्म-कृत्यों के लिए यथावस्थित रूप में

ही स्वीकार करने की परम्परा है। इससे स्पष्ट है, कि- लाघव और सुविधा की दृष्टि से किसी एक ही स्थल के पंचांग को अन्य स्थलों के लिए भी हमने पहले से ही ग्राह्य माना हुआ है। यदि हम स्थानीय पंचांगगणना को मान्यता देने का आग्रह न छोड़ना चाहें, तब तो हमें भारत के विभिन्न प्रान्तों, जिलों तथा नगरों के लिए व्रतादि का निर्णय करते समय तत्तत्स्थानों के सूर्योदयास्तादि को दृष्टि में रखना होगा। जिसका परिणाम यह होगा कि अनेक सन्धिगत स्थलों पर हमें एक ही प्रदेश, जिला, तहसील और कभी-कभी एक ही नगर में एक ही व्रत-पर्व को दो भिन्न-भिन्न (आगे-पीछे वाली) तारीखों में मनाने के लिए बाधित होना पड़ेगा। कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली जैसे महानगरों में इस प्रकार कि स्थिति अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक उत्पन्न होगी। ऐसी स्थिति में दीपावली, विजयादशमी के लिए एक ही नगर में दो-दो दिन अवकाश करने होंगे। नगर के एक भाग में आज दीवाली होगी और दूसरे भाग में कल। क्या भारतीय पर्वों की यह व्यवस्था व्यावहारिक दृष्टि से दोषमुक्त कही जा सकती है ? कदापि नहीं। **ध्यान रहे**-पर्वों की तिथियों में इस प्रकार की समस्या (दिन-भेद) उत्पन्न होने के अवसर जिला, प्रदेश तथा देश में उत्तरोत्तर अधिक होंगे। भारत के पंचांगकार भी अपने केन्द्रस्थल के लिए निर्णीत व्रत-पर्वों को अपने पूरे प्रभावक्षेत्र में प्रचारित करने की परम्परा को बहुत पहले से ही अपनाए हुए हैं। पर्वों में स्थानभेद से उत्पन्न वारभेद की चर्चा वे अपने पंचांगों में अक्सर करते ही नहीं हैं। किसी भी पंचांग से विगत वर्षों के ऐसे असंख्य प्रसंग उद्धृत किए जा सकते हैं, जहां स्थानभेद से किसी व्रत-पर्व के वार में भेद उपस्थित हुआ, लेकिन उस पंचांगकार ने उस व्रत-पर्व को अपने स्थानीय सूर्यचन्द्रोदयास्त एवं तिथ्यादि के काल के अनुसार निर्णीत वार के दिन ही लिखा, एवं उस पंचांग के भक्त धार्मिक लोगों ने स्थानभेद से उत्पन्न वारभेद को न जानते हुए अथवा वारभेद की उपेक्षा करते हुए, वह व्रत पर्व उसी वार को मान लिया, जिस वार को वह उस पंचांग में लिखा गया था, जबकि उनके अपने स्थानों के सूर्यचन्द्रोदयास्त-तिथ्यादिकाल के अनुसार वह व्रत-पर्व उस (पंचांग मे निर्दिष्ट) वार से एक दिन आगे या पीछे मनाया जाना चाहिए। *

यदि स्थानीय पंचांग को ही व्रतादि की तिथियों के निर्णय के लिए अनिवार्य माना जाए तो प्रतिवर्ष अनेक स्थलों पर भारत के मानचित्र पर रेखाएं खींचकर यह बतलाना अनिवार्य होगा कि यह पर्व इस रेखा से पूर्व में स्थित स्थानों पर अमुक तारीख को और पश्चिम में स्थित स्थानों पर अमुक तारीख को मनाना होगा। परन्तु ऐसा करना व्यवहारोचित नहीं है। क्योंकिं ये रेखाएं प्रदेशों, जिलों, तहसीलों, यहां तक कि कभी-कभी कुछ नगरों को भी दो भागों में विभाजित करेंगी। ऐसी रेखाएं किसी भी पंचांग में नहीं दी होती, जिससे हमें इन पंचांगकारों द्वारा भी एक केन्द्र-स्थलीय पंचांग को सर्वत्र स्वीकार करने की स्वीकृति परम्परया स्पष्ट रूप में मिलती है।

जब हम स्थानीय सूर्योदयास्तादि की उपेक्षा करके किसी एक ही स्थल के सूर्योदयास्तादि से ही सैकड़ों मील विस्तृत प्रदेश-प्रदेशों में व्रतादि का निर्णय सुविधार्थ पहिले से ही परम्परया करते आ रहे हैं, तब उसीसे विश्व के अन्य सभी देशों के लिए भी व्रतादि का निर्णय क्यों न करें ? विश्व के सभी देशों में धार्मिक हिन्दु रहते हैं। यदि स्थानीय पंचांग के प्रयोग का आग्रह हम नहीं छोड़ेंगे, तब तो हमें विश्व के सभी देशों तथा उनके प्रदेशों के लिए सैकड़ों पंचांग प्रतिवर्ष बनाने पड़ेंगे, क्योंकि स्थानीय पंचांग को प्रयोग में लाने पर प्रतिवर्ष लगभग प्रत्येक व्रत-पर्व भूगोल के अलग-अलग स्थलों पर अनिवार्यरूप से दो-दो तारीखों में (एकदिन आगे-पीछे) पड़ेगा। **ध्यान रहे - लगभग आधे भूगोल पर लगभग प्रत्येक हिन्दु व्रत-पर्व की तारीख शेष आधे भूगोल से भिन्न हुआ करती है।** यदि हम सैंकड़ों पंचांग न भी बनाना चाहें, तो भी हमें प्रतिवर्ष सभी देश-प्रदेशों के लिए प्रत्येक पर्व की भिन्न-भिन्न तारीखों की सूची तैयार करनी होगी । इसके लिए हमें प्रत्येक व्रत-पर्व की दो तारीखों का क्षेत्र (Area) स्पष्ट करने के लिए अक्षांश-रेखांशों द्वारा विश्व मानचित्र पर सीमारेखाओं का निर्देश करना होगा। परन्तु ऐसा कर सकना भले ही जैसे-तैसे सम्भव हो भी जाए, तथापि इसे व्यावहारिक रूप देना असम्भव एवं हास्यास्पद होगा। **अतः सारे विश्व के लिए एक ही केन्द्रस्थल के पंचांग को निर्णायक के रूप में स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प है ही नही। भारतीय केन्द्रस्थल के पंचांग द्वारा निर्णीत व्रतादि की Gregorian date को ही समस्त विश्व में मान्यता देनी होगी ✗ । इससे हमारे व्रत-पर्वों की तारीखों में भारत तो क्या, विश्व के किसी भी कोने में दो मत नही होंगे।**

---

* *ध्यान रहे - लगभग प्रतिवर्ष एक-दो ऐसे व्रत-पर्व अवश्य उपस्थित होते हैं जो स्थानीय सूर्य-चन्द्रोदयास्त आदि में भिन्नता के कारण भारत के दो भिन्न-भिन्न भागों में दो अलग-अलग तारीखों में मनाए जाने चाहिएं। लेकिन अमृतसर, चण्डीगढ़, दिल्ली, वाराणसी आदि से प्रकाशित होने वाले ये सभी पंचांग अपने स्थानीय सूर्यचन्द्रोयास्तादि के अनुसार निर्णीत तारीख वाले दिन ही इन व्रत-पर्वों का निर्देश करते हैं।*

✗ *उदाहरणार्थ मान लीजिए- भारतीय केन्द्रस्थल के अनुसार यदि दीपावली २२ अक्तूबर (भारतीय तारीख) को पड़ती है, तब विश्व के सभी देशों में वहां की स्थानीय तारीख २२ अक्तूबर को ही दीपावली मनानी होगी, भले ही भारत में उस समय २३ या २१ अक्तूबर हो, (क्योंकि पूर्व के देशों में तारीख पहिले और पश्चिम देशों मे बाद में बदला करती है)।*

ध्यान रहे - कनाडा, U.K., अमेरिका आदि देशों मे बसे हुए अधिकतर हिन्दु लोग भारतीय पंचांगों अथवा " भारतीय नाटिकल आल्मनाक" द्वारा निर्धारित **Gregorian dates** के अनुसार ही दीपावली आदि त्योहार पहले से ही मनाते चले आ रहे हैं । उन्होंने कभी अपने निवासस्थान के सूर्योदयादि द्वारा इन पर्वों की तारीख का निर्णय करने की बात सोची भी नहीं। विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों में भी दीपावली,जन्माष्टमी आदि हिन्दु पर्वोत्सवों का आयोजन **Positional Astronomy Centre** द्वारा निर्णीत व्रतपर्व तिथियों के अनुसार ही किया जाता है। इस प्रकार विश्वभर के लिए भारतीय केन्द्रस्थल के पंचांग के प्रयोग का समर्थन परम्परया हमें स्पष्ट रूप में प्राप्त है।

किञ्च- यदि स्थानीय पंचांग के प्रयोग पर ही हम अड़े रहें तो धर्मशास्त्र के अनेक व्रत-पर्व निर्णायक सिद्धान्त सुदूर विदेशों में पंगु हो जाएंगे। उदाहरणार्थ- स्कॉटलैंड, अलास्का, नार्वे, स्वीडन, फिन्लैण्ड आदि देशों में, जहां परमाल्प दिनमान १५ घटी से भी कम हो जाता है, पार्वणश्राद्ध को अनेक बार धर्मशास्त्रीय निर्णायक वचनों से मनाना असम्भव हो जाएगा। स्त्रियों के लिए नित्य दूर्वाव्रत को अगस्त्योदय में न करने की शास्त्राज्ञा है, लेकिन द. आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड तथा दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी प्रदेश में अगस्त्य कभी अस्त (लुप्त) होता ही नहीं है। वह प्रतिदिन वर्ष भर रात्रि में दिखाई देता रहता है। वहां इस नित्यव्रत का लोप हो जाएगा, क्योंकि इन देशों में जहाँ भी दक्षिणी ध्रुव की उंचाई अगस्त्य तारा के द्युज्याचापांश (३७ अंश) से अधिक है, वहां यह तारा क्षितिज से कभी नीचे जाता ही नहीं है।

एक और भी बात है- जहां परमाल्प दिनमान १० घटी या इससे भी कम होगा, वहां तिथि की दशक्षयस्थिति में (जब तिथि का भोगकाल केवल ५० घड़ी होगा तब) अनेकत्र पूर्वविद्धा एवं परविद्धा तिथि का निर्णय नहीं हो सकेगा, और आपाद्या (साकल्यापादित) तिथि का अस्तित्व भी अनेक स्थलों पर लुप्त हो जाएगा, जिससे अनेक व्रत-पर्वो के लोप का प्रसंग उपस्थित होगा । ग्रीनलैण्ड, बैफिनआईलैण्ड, आइसुलैण्ड, नार्वे, स्वीडन्, फिनलैण्ड आदि देशों में अनेकत्र परमचर १२ घटी से भी अधिक हो जाने से परमाल्पदिनमान ६ घटी से भी कम तथा परमाधिक दिनमान ५४ घटी से भी ज्यादा हो जाता है। ऐसे स्थलों पर तो अनेकदा हमारे इन धर्मशास्त्रों सें श्राद्ध-व्रतादि का निर्णय सम्भव नहीं होगा। इन देशों में स्थानीय अक्षांश से चन्द्रमा का द्युज्याचापांश कम होने पर चन्द्रमा कभी कई दिनों तक अस्त ओर कभी उदित ही रहता है। ऐसे स्थलों पर श्री गणेशचतुर्थी, करकचतुर्थी एवं श्री कृष्णजन्माष्टमी आदि व्रतों का निर्णय करना असम्भव होगा। इन्हीं प्रदेशों में ६६°।३३' से अधिक अक्षांश वाले प्रदेशों में कई-कई दिन सूर्य उदय या अस्त ही रहता है, वहां प्रदोष आदि घटित नहीं होंगे। अतः प्रदोषव्रत आदि की तिथि का निर्णय वहाँ सम्भव नहीं होगा। ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए हमें या तो लगभग प्रत्येक व्रत-पर्व के निर्णायक आर्षवाक्यों में संशोधन करने होंगे या भारत के केन्द्रस्थलीय निर्णय को मान्यता देनी होगी। धर्मशास्त्र के नियमों-सिद्धान्तों को संशोधित-परिवर्त्तित करने का अधिकार हमारे शास्त्र हमें नहीं देते, किंच, वैसेभी धर्मशास्त्र के अंग-प्रत्यंग को विकृत करने की अपेक्षा द्वितीय विकल्प उत्तम है- **" अर्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत्"**। ऐसा करने से हमारे पर्वोत्सव हमारे अपने देश से पूरी तरह बद्ध भी हो जाएंगे। कुछ कट्टरवादी धर्माचर्योंका मत है, कि- विदेश में रहने वाले हिन्दुओं को व्रतादि के अनुष्ठान का अधिकार नही हैं। लेकिन इसे आज के प्रगतिशील युग में स्वीकार नहीं किया जा सकता । इससे हिन्दुधर्म का स्वाभाविक प्रचार भी रुक जाएगा। **अपि च, हमारे पुराण भी साक्षी हैं - मान्धाता राजा विश्वविजय के लिए घूमते-घूमते उत्तरी ध्रुव के पास गए थे, जहाँ उन्होंने एकादशी आदि व्रतों का अनुष्ठान किया था। उत्तरी ध्रुवस्थान पर तो छः महीने का दिन और इतनी ही रात्रि होती है, जिसके कारण हमारे धर्मशास्त्रों के सभी नियम वहां खण्डित हो जाते हैं। अतः भारत के केन्द्रस्थलीय तिथ्यादि को ही इस विषय में मान्यता देनी होगी। इसी में लाघव एवं व्यावहारिकता भी निहित है। इससे हमारे परम्पराप्राप्त आर्षग्रन्थ भी विकृत होने से बच सकेंगे।**

व्रतादि की व्यवस्था में धर्मशास्त्रकारों का लक्ष्य भी लाघव एवं व्यावहारिकता का ही रहा है। अनेक स्थलों पर भूपृष्ठीय भेद से उत्पन्न गणनाभेद की उपेक्षा करते हुए धर्मशास्त्रकारों ने धर्मकृत्य आदि की व्यवस्था की है। जैसे- प्रदोष एवं अरुणोदयकाल यद्यपि अक्षांश एवं सूर्यक्रान्ति के भेद से प्रतिस्थल एवं प्रतिदिन बदलते रहते है, **(देखें- 'पुरुषार्थचिन्तामणि' आदि में प्रदोष, अरुणोदय सम्बन्धी विवेचन)** तथापि लाघवार्थ इनके मान कई ऋषियों-आचार्यों ने स्थिर ही मान लिए हैं। व्यवहारलाघव के लिए ही संक्रान्तियों के पुण्यकाल भी स्थूल ही स्वीकार किए गए हैं*, जबकि सूर्य के तात्कालिक स्पष्टविम्ब तथा स्पष्टगति से ही इन कालों का मान निकालना चाहिए । संक्रान्ति के दिन उपवास और पुण्यकाल में दानादि करने का शास्त्रीय विधान है, परन्तु कुछ लोग विधिलाघव के लिए उपवास और दानादि दोनों का अनुष्ठान पुण्यकाल में ही करते हैं ✦। इत्यादि उदाहरणों से भी निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि व्रतादि-निर्णय में

---

* संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडशषोडशोष्णगोः। - *(मुहूर्तचिन्तामणिः)*

✦ अत्रोपवासः संक्रमदिने, दानादि तु पुण्यकालदिन-इत्याचार्यचूडामणिः।
विधिलाघवात् पुण्यकालदिन एवोभयम् इति वृद्धाः। -*(निर्णयसिन्धु)*

व्यवहार-लाघव का अनुमोदन परम्पराप्राप्त है। एक केन्द्रस्थल के पंचांग को समस्त भूगोल के लिए प्रयोग में लाने का हमारा आग्रह भी लाघव पर ही आधारित है।

विज्ञानभवन की पूर्वोक्त पंचांगगोष्ठी में केवल श्रीकृष्णजन्माष्टमी और रामनवमी की तिथि के निर्णय के लिए यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि- इन दोनों पर्वों का निर्णय क्रमशः मथुरा (श्रीकृष्णजन्मभूमि) तथा अयोध्या (श्रीरामजन्मभूमि) के अक्षांश-रेखांशों द्वारा ही किया जाए और उन्हें समस्त भारत में मान्यता दी जाए। यह निर्णय जहां इन दो पर्वों के विषय में भूपृष्ठीय मतभेद को दूर करता है वहां अन्य महापुरुषों और अवतारों की जयन्तियों के निर्णय के लिए उनके जन्मस्थानों के अक्षांश-रेखांश का विचार करने के बारे में मूक होन से अपूर्ण है। **हमारा मत है- सभी पर्वों के लिए गणना-स्थल हमें एक ही मानना चाहिए, अन्यथा अव्यवस्था हो सकती है ।**

(३) ऋषि-आचार्यों के वचनों में एकता का अभाव

पंचांगगणित और भूपृष्ठीय भेद से उत्पन्न भेद को समाप्त कर देने पर भी हमारे व्रत-पर्वों में ऐकमत्य का अभाव समाप्त नहीं हो सकता,क्योंकि संहिता, पुराण तथा निबन्धग्रन्थों में उपलब्ध व्रत-पर्व के निर्णायक वाक्यों में पारस्परिक विरोध पर्याप्त मात्रा में मिलता है, जिसके कारण अनेक व्रत-पर्वों की तिथियों का निर्धारण अन्तिम रूप से अनेकदा सम्भव नहीं होता। संहिता, पुराणों में प्राप्त होने वाले मिथः विरोधी वाक्यों का समन्वय करने में हमारे माधव आदि उद्भट मीमांसकों ने अपनी सुदक्ष प्रौढ़ तार्किक शैली का पूरा प्रयोग किया है। परस्पर विरोधी वाक्यों की व्यवस्था के लिए किया गया इन तार्किकों का प्रयास अनेकत्र सफल और अनेकत्र विफल भी रहा है। एक ऋषि द्वारा कहे गए वाक्य की दूसरे ऋषि द्वारा कहे गए सुस्पष्ट रूप से विरुद्ध वाक्य से एकवाक्यता सिद्ध करने के लिए कटिबद्ध ये मीमांसक लोग अनेकत्र शुद्ध तर्क का अवलम्ब लेकर, हमारे मत से तो, तथ्य का अपलाप करते हैं। " अलग-अलग ऋषि भी किसी एक विषय पर दो विरोधी मत नहीं रख सकते, परस्पर विरोधी प्रतीत **होने वाले भिन्न-भिन्न ऋषियों के सभी वाक्य मूलरूप से एकार्थपरक ही हैं " - इस प्रकार का तर्कहीन पूर्वाग्रह लेकर ही ये तर्कजीवी मीमांसक व्यवस्था के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाते हैं। परन्तु ऋषियों के अनेक वचन परस्पर विरुद्ध एवं स्वच्छन्द अभिप्राय को लेकर प्रवृत्त होते हैं- यह बात उनकी रचनाओं को देखने से स्पष्ट हो जाती है। इन कुशल एवं विद्वान् मीमांसकों ने वैमत्य को धारण करने वाले अनेक ऋषिवाक्यों की व्यवस्था जैसे-तैसे कर डाली है, जिससे धार्मिक लोगों को बुद्धिभेद से मुक्ति मिली है। इस दृष्टि से हमें इन मीमांसकों की प्रशंसा करनी ही होगी।** बहुत से स्थलों पर तर्क-वितर्क द्वारा ऋषिवाक्यों में विरोध का परिहार करके अन्तिम सिद्धान्त की स्थापना में विफल होकर इन निबन्धकारों ने वैकल्पिक मत भी उत्पन्न कर दिए हैं । ये वैकल्पिक मत भी व्रतादि की तिथियों के निर्णय में वैमत्य के प्रभावशाली कारण बने हुए हैं। कोई पंचांगकार **'कालमाधव'** को कोई **'पुरुषार्थ चिन्तामणि'** को कोई **' निर्णयसिंधु'** को और कोई अन्य निबन्ध को प्रामाणिक मानता है, जिससे व्रतादि की तिथियों में अव्यवस्था उत्पन्न होती है। इस अव्यवस्था के लिए हम इन निबन्धकारों को दोषी नहीं ठहरा सकते, अपितु ऋषियों के **स्पष्टतया परस्पर विरोधी वचनों पर ही हम यह दोष आरोपित करते हैं। विभिन्न ऋषियों के वचनों में एकता के अभाव को शान्त करने के उद्देश्य से ही तो निबन्धकारों के एक बहुत बड़े वर्ग की उत्पत्ति हुई है**[⊙]। कुछ स्थलों पर तो ऋषिवाक्यों में विरोध का शमन करने में असमर्थ होकर इन निबन्धकारों ने एक ही व्रत-पर्व को दो भिन्न-भिन्न व्रत-पर्वों के रूप में प्रतिष्ठापित कर डाला है । इसका उदाहरण **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** और **श्रीकृष्णजयन्ती** है। ये दोनों व्रत मूलतः भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म से ही सम्बद्ध होने के कारण अलग-अलग नहीं है- यह बात इन व्रतों के प्रतिपादक वचनों से पूरी तरह स्पष्ट है। लेकिन श्रीकृष्ण के जन्मकाल के विषय में ऋषियों के पारस्परिक असह्य मतवैषम्य के परिहार के लिए इन्हें पृथक् -पृथक् दो व्रतों के रूप में स्वीकार कर लिया गया है, अन्यथा एक ही देव (कृष्ण) के जन्म के लिए दो व्रतों की क्या आवश्यकता थी[*]? जहां कहीं भी ये निपुण मीमांसक ऋषियों के आपसी मतभेद को दूर करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं, वहां ये लोग कल्पभेद से भी व्यवस्था कर डालते हैं। मत्स्य-कूर्म-बुद्धजयन्ती आदि के मासों और तिथियों में भिन्न-भिन्न ऋषि असमाधेय मतभेद रखते हैं, परन्तु कहीं पर भी पराजय स्वीकार न करने वाले इन मीमांसकों ने उन्हें कल्पभेद से व्यवस्थापित कर ही डाला है।

यहां नीचे उन सभी विषयों को संकलित करके सविवरण लिखा जा रहा है, जिनके बारे में ऋषि-आचार्यों का ऐकमत्य न होने से व्रत-पर्वों की तिथियों का निर्धारण वस्तुतः समस्या बना हुआ है, क्योंकि तिथियों का निर्धारण इन विषयों पर आधारित है :-

(क) पूर्व-परविद्धा तिथियों की व्यवस्थाः- सामान्य युग्मवाक्य "युग्माग्नि-युग-भूतानां.." के अपवादरूप विशेष युग्मवाक्यों की व्यवस्था में कुछ स्थलों पर मतभेद मिलता है। कोई पूर्वविद्धा को और कोई उसी व्रत-पर्व में परविद्धा को ग्राह्य घोषित करता है। **जैसे-** श्रीपचंमी (माघ शुक्ल पंचमी) में

⊙ तिथिनिर्णय करने वाले निबन्धग्रन्थों की संख्या एक हजार से भी अधिक है, (देखें- 'History of Dharma-Shastra' by P.V. Kane)

* कुछ निबन्धकार 'श्रीकृष्ण जयन्ती' और 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' को भिन्न-भिन्न नहीं मानते।

माधवाचार्य पूर्वविद्धा तिथि को और हेमाद्रि परविद्धा को ग्राह्य बतलाते हैं।

(ख) तिथियों के वेधकाल:- सामान्यतया तीन मुहूर्तों से ही तिथियां पूर्वापरतिथियों को प्रातःसायं विद्ध करती हैं। कुछेक वाक्य प्रातःवेध के लिए अनेकत्र दो मुहूर्तों को ही पर्याप्त कहते है। **"नागो द्वादशनाड़ीभिः..."** यह विशेष वाक्य भी वेध के विषय में प्राप्त होता है, इसके प्रवृत्तिक्षेत्र के बारे में भी अलग-अलग मत हैं।

(ग) साकल्यापादिता तिथि :- साकल्यापादिता (आपाद्या) तिथि के लिए सूर्योदय के बाद या सूर्यास्त से पूर्व कम से कम तीन मुहूर्त्त तक की व्याप्ति आवश्यक है। कुछेक के मत में प्रातः द्विमुहूर्त्त व्याप्ति ही आपाद्या तिथि के लिए पर्याप्त समझी जाती है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य साकल्यवचन भी उपलब्ध हैं, जिनमें एक घड़ी या इससे भी कम व्याप्ति से ही आपाद्या तिथि को पूरा दिन व्याप्त मान लेने की बात लिखी है।

(घ) कर्मकाल:- कुछ व्रत-पर्वों के कर्मकाल के विषय में भी ऐकमत्य नहीं मिलता। **जैसे-** श्रीमहाकाल/ भैरवाष्टमी (मार्ग. कृष्ण अष्टमी) को कुछ आचार्य मध्याह्नव्यापिनी, कुछ प्रदोषव्यापिनी और कुछ रात्रिव्यापिनी स्वीकार करते हैं।

(च) प्रयोजक एवं महत्त्वाधायक तत्त्व :- कई व्रत-पर्वों के प्रयोजक (नियामक) तत्त्वों (तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रहस्थिति आदि) के विषय में भी मत-मतान्तर मिलते हैं। **जैसे-**कुछ के मत में भाद्र. कृ. अष्टमी का रोहिणी नक्षत्र से सम्पर्क मात्र ही जयन्ती व्रत का प्रयोजक है, और कुछ का मत है- अर्धरात्रि में ही रोहिणी के योग से जयन्ती योग मानना चाहिए। इसी प्रकार कुछ निबन्धकार **" उदये चाष्टमी किञ्चित् नवमी सकला यदि....."** इस वाक्य में **'उदय'** शब्द का अर्थ सूर्योदय से सूर्योदयकालिक अष्टमी को जन्माष्टमी का प्रयोजक मानते है, जबकि कुछ अन्य आचार्य 'उदय' का अभिप्राय बलात् 'चन्द्रोदय' मानकर चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी को ही प्रयोजक सिद्ध करते हैं।

अनेक प्रसंगों में महत्त्वाधायक नक्षत्र आदि का सम्पर्क भी नियामक रूप धारण कर लेता है, जिनके बारे में निबन्धकर्ताओं में अनेकत्र सहमति नहीं हो पाई। **श्रवणनक्षत्र किस स्थिति में विजयादशमी का नियामक है,** और **रोहिणी नक्षत्र किन स्थितियों में जन्माष्टमी का नियामक बन जाता है,-** इत्यादि अनेक स्थलों पर मतमतान्तर किसी एक निर्णय पर पहुंचने में बाधा उपस्थित करते हैं।

हरिद्वार आदि के चारों कुम्भपर्वों के नियामक तत्त्व भी विवादग्रस्त हैं। कुछ लोग **'देवानां द्वादशाहोभिः ....,'** को और कुछ गुरु की राशियों को नियामक कहते हैं, इस विवाद के कारण विगत अनेक कुम्भपर्व दो-दो बार मनाए गए हैं।*

(छ) मध्याह्न आदि कालों की परिभाषाएं :- मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष, निशीथ, अरुणोदय तथा भद्रामुख आदि कुछ पारिभाषिक शब्द ऐसे हैं, जिनकी परिभाषाओं (कालावधि) के बारे में भिन्न-भिन्न मत हैं। **जैसे-** श्रीरामनवमी के लिए मध्याह्नव्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी चाहिए। परन्तु यहां मध्याह्न के बारे में निबन्धकारों ने अनेक मत प्रकट किए हैं। (**"रामनवमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या, मध्याह्नश्च पञ्चधा विभागेन, त्रेधा विभागेनेति केचित्, आवर्तनाख्यमुहूर्त एव वा, अत्र मध्याह्नः कृष्णाष्टम्यां मध्यरात्रवत् इति परे"**- *तिथिनिर्णय*)। किञ्च - प्रदोषव्यापिनी तिथि से दीपावली, प्रदोषव्रत आदि का निर्णय किया जाता है, परन्तु प्रदोषकाल की अवधि भी निश्चित नहीं है। कोई सूर्यास्तोत्तर दो घड़ी कोई तीन मुहूर्त्त और कोई रात्रिमान के अष्टमांश (यामार्ध) के तुल्य प्रदोष मानता है। **हमारे एक ही व्रत-पर्व को दो अलग-अलग दिनों में मनाए जाने का एक बहुत बड़ा कारण मध्याह्न आदि कालों की ये अनिश्चित (अनेकरूप) परिभाषाएं भी हैं।**

(ज) संसर्प में व्रत-पर्व:- क्षयमास से पूर्ववर्ती अधिकमास **'संसर्प'** कहलाता है। जो दो प्रकार का है- क्षयमास से **अव्यवहितपूर्व** और **व्यवहितपूर्व** । कुछेक लोग अव्यवहितपूर्व को शुद्धतुल्य समझकर उसमें तन्मास-सम्बन्धी व्रत-पर्वों का अनुष्ठान करने के पक्ष में हैं, और कुछ लोग दोनों प्रकार के संसर्पों को शुद्धतुल्य मानने के पक्ष में हैं। यह अक्षम्य मतभेद विगत क्षयमास वाले वर्ष सन् १९६३ में उत्पन्न हुआ था, जिसके कारण दशहरा आदि त्यौहार भिन्न-भिन्न मतों से भिन्न-भिन्न प्रान्तों और नगरों में एक-एक मास के अन्तर पर दो-दो बार मनाए गए थे। अनेक महानगरों और नगरों में भी दो-दो दशहरे और दो-दो दीवालियां एक-एक महीने के अन्तर पर मनाई गईं, जिससे धार्मिक समाज में भारी विक्षोभ रहा। सं २०३९ में भी क्षयमास घटित हुआ, वहां भी ऐसी अव्यवस्था पैदा हुई।

उपरोक्त सभी विषयों की सुस्पष्ट व्यवस्था किए बिना हम अपने व्रत-पर्वों में वैमत्य का परिहार कदापि नहीं कर सकते। इसके लिए आवश्यक है, कि - किन्हीं प्रभावशाली धार्मिक-ज्योतिष संस्थाओं एवं धर्माचार्यों की ओर से एक पुस्तिका (व्रतपर्वनिर्णायिका) प्रकाशित की जाए जिसमें प्रचलित निबन्धग्रन्थों में प्रदर्शित मतमतान्तरों के निर्देश की सर्वथा उपेक्षा करके सभी विवादों को छोड़कर सिद्धान्तरूप में किसी एक ही मत को स्वीकार किया गया हो। निबन्धग्रन्थों में उपलब्ध तर्क-वितर्क,

---

* कुम्भमर्व के बारे में उत्पन्न विवाद के समाधान के लिए लेख" कुम्भपर्व की शास्त्रीय व्यवस्था" हमारी पुस्तक ' शास्त्रीय पंचांग मीमांसा ' में देखें।

खण्डन-मण्डन तथा शास्त्रीय वाक्यों के उद्धरणों को इस पुस्तिका में स्थान बिल्कुल नहीं देना चाहिए ✱ । तिथि, नक्षत्र, योग आदि अनेक प्रयोजक तत्त्वों और कर्मकाल के संयोग आदि से उत्पन्न प्रत्येक व्रत-पर्व के सभी सम्भव पक्षों की सूची इस पुस्तिका में देकर प्रत्येक पक्ष का निर्णय उसके साथ ही निर्दिष्ट कर दिया जाए, जिसकी सहायता से एक साधारण व्यक्ति भी स्वयं किसी भी व्रतपर्व की तिथि का निर्णय पंचांग में दिए गए तिथ्यादि कालों द्वारा सरलतापूर्वक कर सके। (अनेक प्राचीन निबन्धकारों ने भी एकादशी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी आदि कुछ व्रत-पर्वों की तिथियों के निर्णयार्थ उनके सभी सम्भव पक्षों को लेकर उनका पृथक्-पृथक् निर्णय दिया भी है)। **उदाहरणार्थ**-हम यहां विजयादशमी के सम्भव कुल ८ पक्षों को निर्णयसहित लिख रहे हैं :-

(१) केवल दूसरे ही दिन दशमी अपराह्न में व्याप्त हो तो........**विजयादशमी दूसरे दिन।**

(२) दोनों दिन दशमी अपराह्नव्यापिनी हो और दोनों दिन अपराह्न में श्रवण नक्षत्र विद्यमान या अविद्यमान हो तो ....**विजयादशमी पहिले दिन।**

(३) दोनों दिन दशमी अपराह्न में अविद्यमान हो और दोनों दिन अपराह्न में श्रवण विद्यमान या अविद्यमान हो तो...**विजयादशमी पहिले दिन।**

(४) दोनों दिन दशमी अपराह्न में अविद्यमान या विद्यमान हो और श्रवण नक्षत्र पहले ही दिन अपराह्नमें विद्यमान हो तो ....**विजयादशमी पहले दिन।**

(५) दोनों दिन दशमी अपराह्न में अविद्यमान या विद्यमान हो और श्रवण नक्षत्र दूसरे ही दिन अपराह्न में विद्यमान हो तो...**विजयादशमी दूसरे दिन।**

(६) यदि केवल पहले ही दिन दशमी अपराह्नव्यापिनी हो और दूसरे दिन श्रवण अपराह्न में विद्यमान न हो तो......... ....**विजयादशमी पहिले दिन।**

(७) यदि दशमी पहिले ही दिन अपराह्नव्यापिनी हो और दूसरे दिन वह कम से कम तीन मुहूर्त को व्याप्त करे तथाच केवल दूसरे ही दिन श्रवण अपराह्नव्यापी हो तो..........**विजयादशमी दूसरे दिन।**

(८) यदि दशमी पहिले दिन अपराह्नव्यापिनी होकर दूसरे दिन तीनमुहूर्त्त से कम हो तो श्रवण की प्रत्येक स्थिति में.. ....**विजयादशमी पहिले दिन।**

इस प्रकार सभी व्रत-पर्वों के पृथक्-पृथक् सभी पक्षों का निर्णय इस पुस्तिका में बाल-बोध शैली में दिया जाए। इस पुस्तिका के लिए हमारी दृष्टि में **'धर्मसिन्धु'** सर्वोत्तम आधार बन सकता है। किसी व्रत-पर्व का जो सम्भव पक्ष धर्मसिन्धुकार द्वारा अस्पृष्ट रह गया है, उसे इस पुस्तिका में स्पष्ट कर देना चाहिए, ताकि भविष्य में वह वैमत्य का कारण न बन सके†। इस पुस्तिका में संकलित निर्णय ही सभी पंचांगकारों और धर्माचार्यों द्वारा पूर्वाग्रह छोड़ कर सिद्धान्तरूप मे स्वीकार करने होंगे।

विभिन्न ऋषि-मुनियों के मतों में से किसी एक ही के मत को मान्यता देने में शेष सभी ऋषि-मुनियों के मतों का तिरस्कार यदि कोई समझता है, तब उसे प्राचीनकाल से किसी एक ही ऋषि के मत का अनुसरण करने वाले लोगों पर भी अन्य ऋषि-मुनियों के मतों के तिरस्कार का दोष आरोपित करना होगा। इन विभिन्न मत-मतान्तरों के अनुपालन में यद्यपि अनेकत्र परम्परा द्वारा विभिन्न धार्मिक समाज बाधित हैं, तथापि राष्ट्र में धार्मिक-सांस्कृतिक एकता के लिए उन्हें अपनी छोटी-मोटी परम्पराओं को छोड़ देने में हर्ष होना चाहिए। उपरोक्त इन सभी विवादास्पद विषयों पर जो ऋषियों के मत-मतान्तर हैं, उनमें परस्पर अन्तर इतना कम है, जिसे आसानी से समाप्त किया जा सकता है। ऐसा करने से किसी प्रकार का क्षोभ धार्मिकसमाज में उत्पन्न नहीं हो सकता; क्योंकि जिस एकमत को हम सब अन्तिमरूप से स्वीकार करेंगे, वह भी तो आर्ष (किसी एक ऋषि का) ही होगा। हां, व्रत-पर्वों के विषय में कुछ परम्पराएं ऐसी भी हैं, जिनके परित्याग से धार्मिकवर्ग में विक्षोभ हो सकता है। ऐसी परम्पराओं को यथावस्थित ही स्वीकार कर लेने में कोई दोष नहीं है।

(४) सम्प्रदायादि भेद

हमारा धर्म एक होते हुए भी सम्प्रदाय आदि भेदों से अनेकता लिए हुए है। धार्मिककृत्यों के अनुष्ठान में सभी सम्प्रदाय (स्मार्त, वैष्णव आदि) अपनी परम्परा से प्राप्त निर्णायक तत्त्वों को प्रमाण मानते हैं। वर्ण, आश्रम, स्वाध्याय (वेदशाखा आदि), और सौभाग्यवती, विधवा आदि के भेद से अनेक व्रतपर्वों की निर्धारक विधियां शास्त्रों में अलग-अलग दी हुई हैं, जैसे कि श्री रामनवमी, जन्माष्टमी, एकादशी, एवं उपाकर्म आदि में हम देखते हैं। अपने-अपने सम्प्रदाय आदि में दृढ़ आस्था होने से यह

✱ इस प्रकार का कुछ प्रयास 'धर्मसिन्धु' में हम देखते हैं। 'कालमाधव-कारिकाएं' भी मतमतान्तरों के झंझटों को छोड़कर सारांशरूप में व्रत-पर्व निर्णय के नियम देने में आदर्श है। इस पुस्तक के निर्माण के लिए इन दोनों की सहायता लेना लाभप्रद होगा।

† व्रत-पर्वों पर लिखी मेरी पुस्तक 'व्रत-पर्व-विवेक' इस पुस्तिका के उद्देश्य की सर्वथा पूर्ति करती है - प्रियव्रत शर्मा।

वैविध्य अपरिहार्य है, अतः इसके निराकरण के लिए हमें प्रयास नहीं करना चाहिए। अगर ऐसा कोई प्रयास किया भी गया तो वह तबतक सफल नहीं होगा जबतक कि हिन्दुसमाज के ये सम्प्रदाय मिलकर एक नहीं हो जाते।

(५) स्थानीय परम्पराएं

लोकपरम्परा पर अंकुश लगाना कठिन है। यह शास्त्रीय नियमों का अनेक स्थानों पर उल्लंघन करके अपने आपको दृढ़ता से स्थापित कर लेती है। धार्मिक कृत्यों के निर्णय में भी परम्पराओं का पर्याप्त प्रभाव हमें देखने को मिलता है। आसाम में कृष्णजन्माष्टमी सौरभाद्रपद में ही मनाई जाती है। रक्षाबन्धन पंजाब आदि में भद्रा में भी कर लिया जाता है। भ्रातृद्वितीया को इन्हीं प्रदेशो में प्रातःकाल ही मना लिया जाता है। पार्वणश्राद्ध को भी यहां के अनेक लोग अपराह्न से पूर्व ही कर लेते हैं। वटसावित्री-व्रत आदि की तिथि में और अनेकत्र मासों में भी दाक्षिणात्य, औदीच्य, प्राच्य आदि प्रदेशों में एकता नहीं है। श्रीगुरुनानक देव जी का जन्मदिन " जनम साखी" आदि सिक्खधर्मग्रन्थों में यद्यपि स्पष्टरूप से वैशाखमास में लिखा हुआ है, तथापि परम्परया उसे कार्त्तिक में ही मनाया जाता है। पुरातन परम्परा भी शास्त्रवाक्य की भान्ति पूज्य मानी जाती है, अतः हमें ऐसी परम्पराओं का आदर करना होगा।

ध्यान रहे - सम्प्रदायभेद एवं परम्पराभेद से निर्णीत व्रत-पर्वों में भी उपरोक्त पहिले तीन कारण ('पंचागीय गणितों में मतभेद' आदि) वैमत्य तथा अनिश्चय पैदा करने वाले हैं, अतः इन्हें तो यहां भी अनिवार्य रूप से दूर करना ही होगा।

हमारे व्रत-पर्वों में वैमत्य के सभी (पांचों) कारणों का ऊपर स्पष्ट विश्लेषण कर दिया गया है। इनमें से पहिले तीन कारणों को हमें दूर करना ही होगा। यहां इनके अपाकारण के उपाय भी दे दिए गए हैं। भारतीय धर्माचार्य, विद्वान् और पंचांगकार, जो अपने धर्म की देश-विदेश में रक्षा और प्रचार में प्रगाढ़ रुचि रखते हैं, परम्परा से बद्धमूल अपने पूर्वाग्रहों को तिलाञ्जलि देकर इस वैमत्य को सर्वदा के लिए सर्वथा समाप्त करने में अपना पूर्ण सहयोग दें, इससे हमारे व्रत-पर्वों में विश्वजनीनता (Universality) एवं प्रामाणिकता आ जाएगी, अन्यथा समय-समय पर उपस्थित होने वाली अव्यवस्था से धर्मिक समाज में विक्षोभ, बुद्धिभेद तथा धर्मकृत्यों के प्रति विद्रोह पैदा होगा और हमारे शास्त्र व्यर्थ में ही उपहास का पात्र बनेंगे।

***नोटः**-इस विशेषांक में चर्चित किसी भी व्रत-पर्व के तिथिनिर्णय बारे यदि किसी को संदेह/शंका हो तो वह पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग सकता है- प्रियव्रत शर्मा।*

अनन्त आकाश में दूरियां (Distances in Space)

डॉ. शक्तिधर शर्मा

पूर्णिमा की रात्रि में एक बच्चा पिता के साथ अपने नाना के घर जा रहा है। वह पैदल चलते समय पिता को पूछता है कि पापा चन्द्रमा मेरे साथ ही चल रहा है ! आगे जा कर वे दोनों एक ट्रेन में यात्रा करते है। बच्चा पुन: आश्चर्य से प्रश्न करता है ! पापा चन्द्रमा तो तीव्र गति से चल रही ट्रेन में भी वैसी ही गति से मेरा पीछा करने लग गया है। इसने तो अपनी गति भी बहुत बढा ली है ! ट्रेन में वह पास के वृक्षों को ट्रेन से विपरीत दिशा में भागते देख खुश होता है परन्तु जब वह चलती ट्रेन में ही दूर क्षितिज के वृक्षों को देखता है तो उसे और भी आश्चर्य होता है कि वे (क्षितिज के समीप के) वृक्ष ट्रेन के पास के वृक्षों के विपरीत ट्रेन की गति की दिशा में ही चलते दिखाई देते है और वे भी मन्द गति से ! इन दृश्यों से तो बच्चों के पापा भी आश्चर्यान्वित हो जाते है। कुछ ऐसी प्रकार की भ्रान्त करने वाली प्रतीतियों के उत्तर देने में बच्चो के पापा, अन्य साधारण जनता व अन्य अध्यापक भी असमर्थ रहते है। ऐसी प्रतीतियों के उत्तर तो हैं -

ज्योति:शास्त्रीय परामितिक लम्बनों की परिभाषाओं में; (In definitions of Astronomical Parameter called Parallaxes;)

यद्यपि लम्बन **'ज्योतिषशास्त्र'** में विभिन्न सन्दर्भो में विभिन्न रीतियों से परिभाषित किया गया है परन्तु साधारण भाषा में व्यापक रूप से 'लम्बन' द्रष्टा के स्थान बदलने पर दृश्य वस्तु की स्थिति में प्रतीयमान अन्तर को अभिव्यक्त करने के लिए वैज्ञानिक ज्योतिषज्ञों द्वारा परिभाषित परामितिक मापदंड है। अधिकांश सन्दर्भो में यह कोणात्मक लिया जाता है। कुछ स्थितियों में विशेषत: सैकडों प्रकाश वर्ष* दूरी वाले ताराओं आदि के सन्दर्भो में यह अन्तर दूरी, के विलोम पदो में (In Terms of Inverses of Distances) के रूप में व उभयात्मक (कोणीयता या दूरी-विलोमता) के पदो में परिभाषित कर लिया जाता है।

वैज्ञानिक अन्वेषण के कार्य में कभी भी हार नही मानते। जब प्रकाश वर्ष दूरियों के प्रश्न उठे तो अन्तर विलोम (Inverse Distances) को परामितिक (parameter) परिभाषित करके काम शुरू कर दिया।

---

* एक प्रकाश वर्ष इतनी दूरी को कहते है जिसे प्रकाश एक वर्ष में पार कर लेता है।

1. ज्यामितीय लम्बन (Geometric parallex)

कल्पना करें कि आप कुछ दूरी पर दो वृक्षों को देख रहे हो। यदि आप अपनी आँख की पोज़िशन बदलते जाएं तो एक स्थिति ऐसी भी आ जाएगी, कि दोनो वृक्ष एवं आप की आँख तीनो एक लाइन में आ जाएंगें। ऐसी स्थिति में आपके लिए ... ओट में आ ... साधारण प्रयो ... की स्थिति के ... है। इन दो वृ ... के बीच के ... जाता है।

यदि आ ... करनी हो तो ... है। ज्यामितीय ... छात्र गणिती ... पर नही ज ... ऐसी परिस्थिति ... आदि की सह ... न तो पहाडी ... सकता है। अ ... व अन्य गणितीय ... प्रजनित कर ले ... लम्बन माप कर ... सरलता से ज्ञात ...

कृत्रिम ढंग से लम्बन प्रजनित करने के लिए जिस दिशा में वेधकर्ता चलता है, उसे हम आधार-रेखा कहेंगें।

एक दूसरा उदाहरण ले

2 लैबोरेटरी में Lenses के ... सिद्ध ...

अथ प्रकृतिगानम्

तत्र प्रथममाग्नेयं पर्व

॥ श्री सामवेदाय नमः ॥

ओम् । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

॥ गायत्रम् । परमेष्ठी प्रजापतिः, गायत्री, सविता ॥

ओम्ऽ३ । तत्सवितुर्वरेणियोम् । भार्गो देवस्य धीमाहीऽ२ । धियो यो नः प्रचोऽ१२१२ । हुम् स्थि आऽ२ । दायो । आऽ३४५ ॥

(दीर्घम् ५ । पर्वाणि ६ । मात्रा ६ ॥ (खि)

(इति प्रकृतिगानान्तर्भूतं गायत्राख्यं प्रथमं गानं सम्पूर्णम् ॥)

(१) पर्कः । गोतमो । गायत्री, अग्निः ॥

१-१. ओग्नाइ । आयाहीऽ३वोइतोयाऽ२इ । तोयाऽ२इ । गृणानोह ।

डॉ० एल०एम०सिंघवी; संस्कृति विभाग के सचिव डॉ० आर०वी०वी अय्यर; हंगरी के राजनयिक; भारत में राजनयिक मिशनों तथा प्रेस के प्रतिनिधि तथा समसामयिक चित्रकार, भारतीविद्याविद्, नृतत्त्वशास्त्री व दिल्ली के कला संस्थानों के प्रमुख ।

2. **शान्ति की खोज :** डॉ० सीमा भाटिया के चित्रों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन, साइप्रस की उच्चायुक्त महामहिम सुश्री रिया थिओरदाम्लिस द्वारा, 16 नवम्बर, 2000 को किया गया । प्रदर्शनी 30 नवम्बर, 2000 तक दर्शकों के लिए खुली रही ।

3. **टैगोर एवं शांतिनिकेतन :** इं०गां०रा०क०केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार से शम्भु साहा के फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति व इं०गां०रा०क०केन्द्र न्यास के अध्यक्ष श्री आर० वेंकटरामन ने 12 दिसम्बर, 2000 को किया । यह प्रदर्शनी 28 दिसम्बर, 2000 तक चलती रही।

4. **पोर्टेट व लघु चित्र :** श्री भीमराव मुर्गोड के चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन, भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री आइ०के० गुजराल द्वारा 19 जनवरी, 2001 के किया गया । यह 28 जनवरी, 2001 तक चलती रही ।

1. ज्यामितीय लम्बन (Geometric parallex)

कल्पना करें कि आप कुछ दूरी पर दो वृक्षों को देख रहे हो। यदि आप अपनी आँख की पोज़िशन बदलते जाएं तो एक स्थिति ऐसी भी आ जाएगी, कि दोनो वृक्ष एवं आप की आँख तीनो एक लाइन में आ जाएंगें। ऐसी स्थिति में आपके लिए एक वृक्ष दूसरे वृक्ष की ओट् में आ जाएगा। उन के बीच में अन्तर नही रहेगा। इस साधारण प्रयोग से यह स्पष्ट है, कि दो दृश्य पदार्थो में अन्तर द्रष्टा की स्थिति के सापेक्ष है। यदि स्थिति बदलती है, तो अन्तर भी बदलता है। इन दो वृक्षों के मध्य कोण parallex है। साधारणतया दो लाईनों के बीच के कोण को ज्यमितीय लम्बन (Geometric parallex) कहा जाता है।

यदि आपने किसी बड़ी बिल्डिंग या पहाड़ आदि की उंचाई ज्ञात करनी हो तो ज्यामितिक लम्बन की सहायता से जानी जा सकती है। ज्यामितीय त्रिकोणमिति में ऐसी समस्याओं के समाधान साधारण छात्र गणितीय अभ्यासो में करते ही हैं। क्योकि आप पहाड की चोटी पर नही जा सकते और न ही पहाड की तलहटी में पहुँच सकते है। ऐसी परिस्थितियों में मात्र एक साधारण कोण मापक यंत्र (sextant) आदि की सहायता से समस्या का समाधान हो जाता हैं क्योंकि वेधकर्ता न तो पहाडी पर चढ सकता है, और न ही उसकी तलहटी में पहुँच सकता है। अतः वह भूमि पर ही आगे या पीछे या लम्ब दिशा में व अन्य गणितीय सुविधानुसार चल कर त्रिभुज बनाते हुए लम्बन कोण प्रजनित कर लेता है, इस स्व-जनित त्रिभुज की भुजाएं एवं कृत्रिम लम्बन माप कर त्रिकोणमितीय सूत्रों से पहाड की उंचाई एवं दूरी सरलता से ज्ञात कर लेता है।

कृत्रिम ढंग से लम्बन प्रजनित करने के लिए जिस दिशा में वेधकर्ता चलता है, उसे हम आधार-रेखा कहेंगें।

एक दूसरा उदाहरण ले

2. लैबोरेटरी में Lenses के साथ एक छात्र Lense सूत्र सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा है । Optical bench पर उसे सूची (Needle) एवं उसके प्रतिबिम्ब में लम्बन खत्म (Removal of Parallax) करना पड़ता है।

इस तरह Lense प्रयोग में सूची (object needle) के स्थान को बदलते हुए प्रतिबिम्ब के साथ (विलोम प्रतिबिम्ब की स्थिति में अग्र भागो में Tip to Tip) लम्बन का अपाकरण करना पड़ता है। इस तरह हमें प्रतिबिम्ब का स्थान ज्ञात हो जाता है। यह भी एक प्रयोग है जिसमें Parallax की सहायता से समस्या का समाधान हो जाता है। यहाँ object सूची तथा प्रतिबिम्ब सूची को जोड़ने वाली रेखा आधार रेखा है।

3) अब हम ग्रहों के लम्बन के विषय में विचार करेंगें। केवल चन्द्रमा के लम्बन का विचार करना पर्याप्त होगा।
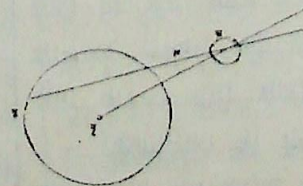
ल = लम्बन
च = चन्द्रमा
पृ = पृथ्वी
द्र = द्रष्टा

चन्द्रमा का लम्बन तब अधिकतम होता है जब वह क्षितिज में उदय हो रहा होता है। जब चन्द्रमा (Zenith) में होता है तब उसका लम्बन शून्य होता है।

वस्तुतः इस संदर्भ में आधार रेखा चन्द्रमा का व्यास है।

$$\text{चन्द्रमा का परम लम्बन} = \frac{\text{चन्द्रमा का व्यास}}{\text{पृथ्वी का व्यास}}$$

चन्द्रमा के लम्बन सूत्र को व्यापक करने पर किसी ग्रह का परम

$$\text{लम्बन} = \frac{\text{ग्रह का व्यास}}{\text{पृथ्वी का व्यास}}$$

परम लम्बन को क्षैतिज लम्बन (Horizontal Parallex) कहा जाता है।

चन्द्रमा का परम (क्षैतिज) लम्बन वेध से लगभग 1° सिद्ध होता है। चन्द्रमा का लम्बन जानने के लिए हमे पृथ्वी के दोनो छोर से चन्द्रमा का वेध करना पड़ता है। इस प्रयोग में आधार रेखा पृथ्वी का व्यास होगी। यह स्पष्ट है कि अगर हम पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाएं तो चन्द्रमा की स्थिति मे 1^0 का ही फर्क पड़ेगा। यदि पूर्व छोर पर चन्द्रमा कर्क राशि पर 5^0 है तो वह पश्चिम में 4^0 पर दिखाई देगा। साधारण भाषा में हम यह कह सकते है कि चन्द्रमा 1^0 व्यास वाला पिण्ड है। अर्थात् चन्द्रमा पृथ्वी से बहुत छोटा है।

इसलिए बच्चों को चन्द्रमा उनके साथ चलता प्रतीत होता है क्योंकि हम कितना भी चलें, चन्द्रमा की स्थिति में 1^0 से ज्यादा का अंतर नही प्रतीत होगा। जब हम तीव्र गति वाली ट्रेन में बैठे होते है तो ट्रेन की गति चन्द्रमा में आरोपित प्रतीत होती है। क्योंकि चन्द्रमा और हमारे मध्य आकाश है। ध्यान रहे शुन्य आकाश में दूरी की प्रतीति नही होती। इसी कारण तारे आदि एक ही क्वउम में जड़े होते है।

ताराओं के लम्बन

यह स्पष्ट है कि दूर के आकाशीय पिण्डों के लम्बन अत्यंत अल्प होंगें क्योंकि वे बहुत दूरी पर हैं।

वैज्ञानिको कें लिए इन के लम्बन दूरियां एवं इन का साईज़ ज्ञात करना बडी भारी समस्या थी। क्योंकि पृथ्वी को आधार रेखा मानकर लम्बन को प्रजनित करना संभव नही था। उन्हें यह बात सूझी कि हम अपने उपायों से इतनी दूरी पर नहीं जा सकते परन्तु हमारी पृथ्वी हमें एक वर्ष में 9 करोड़ 29 लाख मील दूर खुले आकाश (space) ले जाती है। अतः इस चल प्रयोगशाला (mobile laboratory) में प्रयोग किये जा सकते हैं।
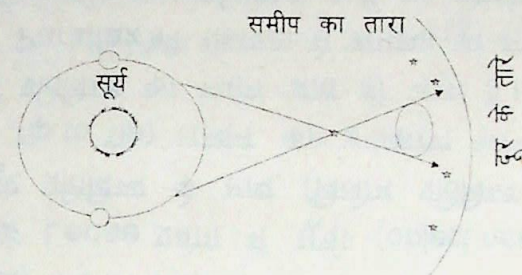
हमें तो इतनी बड़ी आधार रेखा सुलभ है। इसके उपयोग के लिए छः मासों के अन्तर पर वेध (Observations) प्रयोग करने होगें। पृथ्वी की इस गति से तारे एक वृत्त या दीर्घवृत्त में घूमते दीखते हैं। जैसा की चित्र में दिखाया गया हैं।

ताराओं के लम्बन वार्षिक लम्बन *(Annual parallax)* कहे जाते है। वैज्ञानिको ने तारों के इन *Parameters (परामितिकों)*

के सिद्धांतो की सहायता से अन्य प्रकार के परिचय प्राप्त किये हैं।

इस दीर्घ वृत्त के अक्ष के आधे को तारे का लम्बन कहा जाता है। छः मास के अन्तर पर वेध कार्य प्रारम्भ हो गये। उन के प्रयास सफल हुए। लगभग 200 वर्षों तक ऐसे प्रयोगों में सफलता मिली। छः मासों के अन्तर पर वेध करते-करते बहुत से ताराओं के लम्बनों की सारणियाँ तैयार कर लीं गईं ।

पृथ्वी से समीपतम दूर तारा आल्फा सेन्टौरी (Alfa Centauri) जिसका वार्षिक लम्बन 0".76 है और पृथ्वी से दूरी 1.3 Parsec (Note that 1 Parsec = 3.26 light years) है। इस से आगे के तारे तो बहुत ही दूर हैं। बच्चों! तुम समझते रहे हो कि चन्द्रमा तुम्हारा पीछा कर रहा है परन्तु तारे तो उनके साथ ही चलते है क्योंकि तारे इतनी दूरी पर है कि पृथ्वी पर रहने वाले हम लोगों के लिए तारे बहुत छोटे है वे हमारे लिए उसी स्थिति पर ही रहते है। क्योंकि उनका लम्बन कोण शून्य सा ही है। अकाशगंगाए तो और भी दूर, लाखों प्रकाश वर्ष दूरी पर हैं। प्रो० हब्बल के 100 इन्च टैलिस्कोप से यह ज्ञात हुआ कि Spectrum में Red Shift का इनकी गति के साथ सीधा समरेखीय (Linear) सम्बंध है। 200 इन्च से भी यही परिणाम निकले। ये दूर के पिण्ड भले ही इतनी दूर हैं इसकी कल्पना भी नही की जा सकती। वे लगभग लम्बन तुल्य अपने थोडे से आकाश खण्ड में एक ही जगह सिमटे से हैं परन्तु फिर भी पृथ्वी माता अपने अक्ष पर घूमती हुई लग्न बदल-बदल कर हम सबको दिखाना चाहती है। ये तो जितने दूर हैं उतने ही समीप हैं।

सन् 2002-2004 के मध्य कुछ विलक्षण घटनाएं

1) <u>शनि में ग्रहण:-</u> विगत वर्ष सन् 2002 में 24 जनवरी के दिन चन्द्रमा ने शनि को ग्रस्त किया। यह ग्रहण 24 जनवरी 2002 के शाम सूर्यास्त बाद लगा और लगभग सवा घंटे तक लगा रहा। इस आकाशीय घटना की घोषणा Indian Institute of Astrophysics कैवेलूर वेधशाला बंगलौर ने की थी।

2) 2003 में बुध रवि-संक्रमण (Transit of Mercury) होगा। यह ऐसी घटना है जिसमें बुध, सूर्य नें ग्रहण लगाता है।ऐसी घटनाएं सात-आठ साल बाद होती रहती हैं। लेखक ने गत वर्षों में इस आकाशीय घटना का दो बार साक्षात्कार किया। आकाश साफ होने से यह घटना कोरी आँख से देखने में भी कोई कठिनाई नहीं हुई। ऐसी घटना 30 या 60 वर्ष में सम्भावित है परन्तु कई बार Applause वर्ग में चली जाती हैं, (Applause घटनाओं का वह वर्ग है जिनमें सम्भव परन्तु अघटित घटनाएं (list) की जाती हैं।) अतः शनि ग्रहण की घटनाएं कभी नही भी हो सकती।

2. <u>रवि बुध संक्रमण :-</u>

इस घटना में बुध, सूर्य को ग्रहण लगाएगा। इस आगामी घटना के विवरण इस वर्ष के प्रकाशन में भ्राता प्रियव्रत जी ने दिये है। ऐसी घटनाएं सात-आठ साल बाद होती रहती है। लेखक ने पटियाला विश्वविद्यालय की वेधशाला (Observatory) में गत वर्षों में दो बार की ऐसी घटनाएं वहां के टेलीस्कोप से देखी **और** चित्र लिए।

3. <u>रवि शुक्र संक्रमण:-</u> **इस** घटना में शुक्र सूर्य में ग्रहण लगाता है। यह घटना एक बार घटने के बाद पुनः 8 वर्ष के बाद, 130

वर्ष बाद कभी 108 वर्ष बाद या पुन: 130 वर्ष बाद घटित होती है। इस बार यह लगभग 130 वर्ष बाद सन् 2004 में घटित होगी । इस घटना के विवरण अगले वर्ष के पंचांग में दिये जाएंगे। पीछे यह घटना 9 दिसंबर 1974 के दिन घटित हुई जिसका विवरण श्री वेंकटेश केतकर ने ज्योतिर्गणित में दिये हैं। ऐसी अन्य घटनाएं भी आकाश में घटित होती रहती है। ऐसे ग्रहण एवं नक्षत्रों के साथ ग्रहों की युतियां भी होती रहती है। कई बार Applause ही रह जाती हैं। ऊपर दिये शनि के ग्रहण भी 30 या 60 वर्ष बाद बहुत बार घटित होने से रह जाते है इन्हें Applause वर्ग में गिना जाता है।

भारतीय परम्परा में क्रान्ति साम्य भी ग्रहण के संदर्भ में Applause घटनाएं है। इन्हें सिद्धांत के प्रारम्भिक विकास में इसी वर्ग में रखना युक्ति संगत है।

(पंचांग परिर्वतन उस परम्परा में भी था। बाद में Flammarian Newton Hellay आदि विद्वानो तथा साम्राज्य ने ग्रीन्विच को विश्व को उज्जैन बना दिया। अत: मेरे विचार में प्राचीन इकाईयां भुलना उचित नही इन के सीधे उपयोग कुछ सरलता भी लाते है कि इकाईयों में सीधे आगामी वर्ष सन् यह स्पष्ट है कि अगर हम पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाऐ तो चन्द्रता की स्थिति मे 1^0 का ही फर्क पड़ेगा। यदि पूर्वी छोर पर चन्द्रमा कर्क राशि पर 5^0 है तो वह पश्चिम में 6^0 पर दिखाई देगा। साधरण भाषा में हम यह कह सकते है कि चन्द्रमा 1^0 व्यास वाला पिण्ड है। अर्थात चन्द्रमा पृथ्वी से बहुत छोटा है। इसलिए बच्चो को चन्द्रमा उनके साथ चलता प्रतीत होता है)।

तारओं के लम्बन यह स्पष्ट है दूर के आकाशीय पिण्डों के लम्बन अत्यंत अल्प होगें क्योंकि वे बहुत दूरी पर हैं।

वैज्ञानिको कों इन के लम्बन दूरियां एवं इन का साईज़ ज्ञात करन बडी भारी समस्या थी क्योंकि लम्बनो को प्रजनित करना संभव नही था।

ताराओं के लम्बन वार्षिक लम्बन (Annual paralax) कहे जाते है। वैज्ञानिको ने तारों के इन Parameters (परामितिको) को ज्ञात करके इन की इनकी दूरीयां एवं इन के साईज़ तथा Astrophysics के सिद्धांतो की सहायता से अन्य प्रकार के परिचय प्राप्त किये हैं।

स्टैंडर्ड टाईम का प्रयोग तो करें, परन्तु घड़ी-पलों को भुलाएं नहीं

डॉ. शक्तिधर शर्मा

चन्द्रमा का सूर्य सापेक्ष भगण काल (Time Period) ३० दिन का है यह चान्द्र मास संपूर्ण विश्व में सभी मनुष्य सभ्यताओं को प्रकृति की एक सी देन है, जिसने पृथ्वी पर रहने वाली मनुष्य जाति को एक सा कैलेण्डर दिया है। यह सभी मनुष्य जातियों की धरोहर है। इसके अतिरिक्त सौर वर्ष का मान ३६५ दिन भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह अंक ३६५ के स्थान पर ३६० कर लिया गया। ५ विराज्* दिन सूर्य की विराजमानता (स्थिरता) के दिन मान कर उपेक्ष्य कर दिये गए। इस प्रकार Fictitious सौर सावन वर्ष की परिभाषा मान्य हुई। इस प्रकार चन्द्र मास = ३० दिन, सौर वर्ष =३६० दिन इन दोनो अंको के युगपत् प्रयोग (simultaneous use) से ही षष्ट्यंश पद्धति का उद्भव हुआ। जल घटियों में ६० का अंक इकाई के रूप में स्वीकृत हुआ। जल घडी बनाने एवं प्रामागिकीकरण के लिए कितनी सूक्ष्मता एवं सावधानी की कितनी प्रक्रियाओं में से गुजरना पडता था? यह नीचे लिखे विवरणों से ज्ञात होगा;

जलघटी बनाने की विधियाँ ज्योतिष्करण्डक, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि गुप्तकालीन एवं अधिक प्राचीनतर प्राकृत ग्रन्थो में वर्णित हैं। ये प्रयोग सौरमास, नाक्षत्र चान्द्रमास (sidereal period of moon) एवं सूर्य-सापेक्ष चान्द्र-मास (Synodic period of moon) ज्ञात करने के लिए किए जाते थे।

*सूर्य उत्तरायण दक्षिणायन बिंदुओं पर स्थिर सा हो जाता है। इन दिनों को विराज दिन कहा जाता है।

दाडिम (अनार) के आकार की जलघटी (Pomegranate shape clapsydra) बनाने की विधि :

जलघटी बनाने के लिए एक धातु की शीट को गर्म करके समरूप बनाकर उस से दाडिम (अनार) की आकृति की घटी बनाएं।

छिद्र करने की विधि :

इसमें सबसे कठिन समस्या छिद्र करने की होती है। इसके लिए दो विधियां वर्णित है:-

(क) 4 माशा सुवर्ण लें इससे 4 अंगुल लम्बाई की समरूप कृतिवृत्त (circular cross section) वाली तार बनाएं। जलघटी का छिद्र इस तार के व्यास के बराबर रखें।

(ख) अथवा हथिनी के 3 वर्ष के बच्चे की पूंछ के अग्र भाग के 96 बालों का समरूप कृतिवृत्त बनाकर उससे छिद्र नापें। यहां द्वितीय प्रयोग का विश्लेषण तो नहीं किया जा सकता, परन्तु प्रथम विधि का संभव वैज्ञानिक विश्लेषण नीचे दिया जा रहा है :-

छिद्र का व्यास जानने के लिए कल्पना करे कि 4 माष सुवर्ण से 4 अंगुल समरूप तार बनाएं।

मान लो:

इस तरह बनी तार की लम्बाई $= l$

इस तरह बनी तार की त्रिज्या $= r$

इसका कृत्तिवृत्त क्षेत्र *(Area of cross section)* $A = \pi r^2$

अतः तार का कुल आयतन(Volume) $= A\, l$

यदि $\rho =$ सुवर्ण की घनता (density of gold) = 17gm/cc

अतः सुवर्ण का द्रव्यमान $= \rho v = M$

Hence $r = \sqrt{\dfrac{M}{\rho l \pi}}$

M = 1माष = 0.92 gm

ρ = 17 gm/cc

l = 4 अंगुल = 7.6 cm

π=3.1416

ρ = 17gm/cc

r = 0.047 cm ~ 0.47 mm

1 अंगुल = 1.9 cm

अतः यह स्पष्ट है कि छिद्र बहुत सूक्ष्म बनाना होगा।

इस जलघटी में शुद्ध साफ पानी, झरने से अथवा वृष्टि समय प्रथम बौछार के बाद का पानी या निथारा हुआ पानी प्रयोग मे लाया जाता था। इस प्रकार बनी जलघटी से प्राप्त पानी तुला से तोलकर इकट्ठा किया जाता था। तोलने के लिए जिस प्रकार की तुला का उपयोग किया जाता था; उसका विवरण निम्नलिखित है।

तुला बनाने की विधि :

तुला बनाने के लिए 35 पल लोहा लें, इसे गर्म करके पिघला कर सांचे की सहायता से 72 अंगुल लम्बाई वाला समरूप छड़ बनाए। इसके एक तरफ 35 पल तुल्य तोल का धरणक स्तम्भ पर लटकाएँ। इस पर विषम अंतरो पर समायकरण (Equilibrium of moments) के सिद्धांत अनुसार अंकन (Graduations) करें। इस तुला में अंकन विषम हैं।

तुला का रेखचित्र (line diagram of balance)
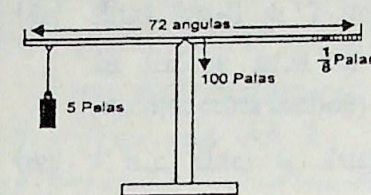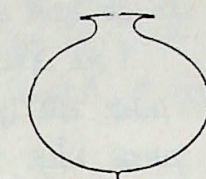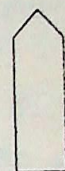
कालसममित जल (Water Equivelent of Time)।

एक सावन-वर्ष = 180 भार (तौल्य, धरिम) = 43200 आढ़क (नेय)

जलघटी से पानी को तोलने के लिए तुला

इस तुला से पानी को तोला जाता है।

प्रथम अंकन		कर्ष 1/8 पल का है
द्वितीय	"	1 कर्ष
तीसरा चिन्ह		2 कर्ष
चौथा	"	3 कर्ष
पाँचवां	"	4 कर्ष = 1 पल
छठा	"	2 पल
7वां	"	3 पल

सूर्यमास-चन्द्रमास आदि का ज्ञान करने के लिए वर्षो भर प्रतिदिन

14वां चिह्न	10 पल
15वां "	12 पल
16वां "	15 पल
17वां "	20 पल
18वां "	30 पल
20वां "	50 पल
21वां "	60 पल
25वां "	100 पल

इस प्रकार इस तुला से 100 पल तक तोलने के लिए अंकन है। ध्यान रहे ये विषम अंकन समायकरण (equilibrium of moments) सिद्धांतानुसार प्रयोगों के आधार पर किए जाते थे। जल तोलने के साथ- साथ जल के आयतनो का भी रिकार्ड रखा जाता था। इस प्रकार दोनों प्रकार की इकाईयों धरिम (तोलना) तथा मेय (आयतन मापना) में पानी का हिसाब रखा जाता था जिससे दोनो इकाईयों में तुलना की जा सके।

इन प्रयोगो के साथ शंकु क प्रयोग करते हुए प्रामाणिकीकरण किया जाता था। सूर्य एवं चन्द्र की छायाओं से मुहूर्त निश्चित किए जाते थे।

इन प्रयोगों में उपयोग मे ली जा रही इकाइयां प्राण

7 प्राण = 1 स्तोक, 7 स्तोक= 1 लव .... आदि। इन के संबंध ज्योतिषिक इकाइयों के साथ स्थापित किए गए।

बड़े परिमाण पर सौर सावन वर्ष नाक्षत्र-चान्द्र मास एवं सूर्य प्रवेश ... आदि का ज्ञान करने के लिए वर्षा भर प्रतिदिन निरंतर तोलन मापन के काम चलाने पड़ते थे। इन प्रयोगों से प्राप्त कुछ परिणाम निम्नलिखित है।

घड़ियों के विकास मे हज़ारों वर्ष लगे। लेखक को चैकोस्लोवाकिया में घड़ियो के क्रमिक विकास का museum देखने का मौका मिला। Pendulum watches के समय में घडियां बहुत विशाल आकार की (बडी बिल्डिंगों के आकार की) विकास क्रम में पाई जाती है।

कुछ भी हो यह विकास सैकड़ो सालो तक चलता रहा। प्रारंभिक प्रयासो की कठिनाइयों का हम तभी अनुमान लगा सकते है यदि हम वर्तमान काल के विकासो को भूल कर प्रारंभिक अवस्था की परिकल्पना में ही चिंतन करें। प्राचीन प्रारंभिक प्रयासो को सदा के लिए भूलना हमारी ओर से अपने पूर्वजों का तिरस्कार ही होगा। यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक है, कि स्टैण्डर्ड समय की परिकल्पना हमारी परम्परा में पहले भी थी। उज्जैन के काल, का व्यवहार में प्रयोग बहुत वर्षों तक रहा। परन्तु उस समय आने-जाने में सुविधाएं न होने से पारस्परिक व्यवहार में प्रमाणित समय की उपयोगिता की उपेक्षा स्वाभविक ही थी।

श्री कमलाकर भट्ट (17th A.D.) ने कट्टर होते हुए भी खालदात्त/काबुल के काल को प्रमाणिक मान कर सिद्धान्त-तत्त्व-विवेक ग्रन्थ रचा। पंचांग परिवर्तन उस परम्परा में भी था। बाद में Flammarian, Newton, Halley आदि वैज्ञानिकों तथा ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव ने ग्रीन्विच को विश्व का उज्जैन बना दिया Standard

Meridians का प्रयोग होने लगा International Dateline निश्चित हुई। इस तरह स्थानीय समय से व्यवहार की परंपरा खत्म हुई और आजकल की विकसित घडियों का प्रयोग होने लगा। जिन में घण्टा, मिनट का प्रयोग चल रहा है। वस्तुत: षष्ट्यंश पद्धति का सूर्य की गति के साथ सीधा संबंध है। सूर्य मध्ययम मान से एक दिन (60 घड़ी) में 1^{0},एक घड़ी में 1', एक पल में 1" चलता है। केवल सूर्य का भोगांश देखने से ही पता चल जाता है कि सूर्य की राशि व अंश कब बदलेंगे, इस संबंध का ज्योतिष शास्त्र में बहुत उपयोग है। धर्म शास्त्रों में सर्वत्र घड़ी पलों का ही प्रयोग हुआ है। इस विषय में यहाँ विस्तार से लिखना आवश्यक नहीं। आजकल के व्यवहार में भी घण्टा इकाई को छोड़कर शेष षष्ट्यंश पद्धति में ही है। इसी कारण से षष्ट्यंश पद्धति का उपयोग अभी भी सर्वत्र चल रहा है। वास्तव में दिन को 24 भागों में विभक्त करने की गलती बैबिलोनियनों से हुई। वे लोग **24** से विभाग करने के आदी थे।दिन को **24** भागों में बाँटना अवैज्ञानिक है। वस्तुत: षष्ट्यंश पद्धति के घड़ी पल आदि ही प्राकृतिक इकाईयां है। यदि **24** का फेर ना होता तो घड़ियाँ षष्ट्यंश पद्धति के अनुसार ही होतीं। वस्तुत: भारतीय परम्परा में "स्टैण्डर्ड टाइम" कोई नई बात नहीं रही। इसकी उपयोगिता के कारण ही सिद्धान्त ग्रन्थों में "उज्जयिनी काल" का उपयोग हुआ।कमलाकर भट्ट ने अपने ग्रन्थ सिद्धांत तत्व-विवेक में वैदेशिक काल को अपनाया। वस्तुत: उस समय देशों में संपर्क कम होने से क्षेत्रीय समय अधिक उपयोगी था।आजकल के वैश्वीकरण(Globlization) वातावरण मे Standard Time ही उपादेय है। परन्तु घडी पल को सदा के लिए छोडना शास्त्रीय परंपरा की अवहेलना होगी।

डा० सज्जन सिंह लिश्क जी का स्वर्गवास

डा० सज्जन सिंह का जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ। परिस्थितियां अनुकूल न होने पर भी उन्होने पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण ज्योतिष शास्त्र का गहन अध्ययन किया। 1972 में सज्जन सिंह ने पहली बार मेरे पास आ कर भारतीय ज्योतिष के विषय पर शोध के लिए मार्गदर्शनार्थ प्रार्थना की। यह अच्छा संयोग था। मैनें जो विचार चिंतन उसे दिया वह उसे कभी नही भूला परन्तु उसका विस्तार ही किया। सिद्धांत ज्योतिष शास्त्र में जैन परंपरा के योगदान के सम्बंध में सारगर्भित शोध निबंध से उसे Ph.D.मिली। जर्मनी तथा जापान के परीक्षकों ने thesis को "Marvellous" remarks दिए। उन्होने Post Doctoral Program में भी काम किया। वे 27 नवंबर 2001 को अचानक दिवंगत हो गए। उनके दो पुत्र है वे भी अपने पिता की प्रेरणा से ज्योतिष शास्त्र में जा रहे है। आशा है कि वे भी अपने पिता की तरह नाम कमाएंगें।

डा० शक्तिधर शर्मा

पंचांग के पाठको से निवेदन

पंजाबी University पटियाला में प्रो० पद पर रहते हुए मेरे साथ बहुत से वैज्ञानिक ज्योतिषज्ञों से संपर्क बना। सिद्धांत ज्योतिष की कठिनतम समस्याओं के समाधान मिले। सेवानिवृत्ति के बाद भी गत तीन चार वर्षों में बहुत से विद्वानों के साथ पत्राचार हुआ। इनमें उज्जैन के डा० मोहन गुप्ता (IAS Retired) एवं ओसमानिया University के भूतपूर्व Head Department of Astronomyऔर जपलनवरंग ओसमानिया Observatory के डायरेक्टर डा० अभयंकर और अन्य काफी विद्वान् है।उनके साथ मेरी पत्राचार चर्चा चल रही है। अब मेरी ओर से पंचांग के अन्य पाठक ज्योतिष प्रेमियों को ज्योतिष शास्त्र के क्षेत्र में पत्र व्यवहारार्थ आमंत्रण है, वे प्रश्न एवं शंका समाधान कर सकते है। आशा है कि इस प्रकिया में मुझे और आपको लाभ होगा।

Dr. Shaktidhar Sharma Block No. 44 Flat No. B1.

चन्द्रमा के वनस्पति जगत् पर प्रभाव

डॉ. शक्तिधर शर्मा

सूर्य का वनस्पति जगत् के साथ सम्बंध सर्व-विदित ही है।पुराणों में सूर्य की सहस्त्र किरणों में से बहुत सी किरणें वनस्पति जगत् को प्रभावित करने वाली मानी गईं हैं। ये वनस्पतियों में रस भरती हैं। कुछ औषधि प्रभाव पैदा करती हैं।

चन्द्रमा की किरणें भी वनस्पति जगत् को प्रभावित करतीं है। यह वैज्ञानिक पद्धतियों से सिद्ध भी हो चुका है।

चन्द्रमा का मनुष्य जाति के साथ प्रारंभिक युगों से ही सम्बंध रहा है। प्राचीन समय में इंगलैड, अमेरिका आदि पाश्चात्त्य देशों में पादरी एवं अन्य साधारण लोग सामान्यत: कोरी आँखों से ही घरों एवं दीवारों, खिड़कियों के छोरों से चन्द्रमा, सूर्य, तारों की पोज़िशन एवं गतियों का अध्ययन करते थे। उन्होने अपनें स्थूल हिसाब से चान्द्र कलैण्डर बना लिए थे। बाद में स्टोनहींज जैसी structures की सहायता से कलैण्डर का विकास कर लिया था। एरीज़ोना के पुराने वासियों ने एक चार मंजली बिल्ड़िंग की दीवारों तथा खिड़कियों की सहायता से वेध कार्य किए और चान्द्र कलैण्डर का विकास कर लिया। ये बिल्ड़िंगे आजकल टक्सन अबोड़ temples कहलाती हैं।

मैक्सिकन रेगिस्तान के लोगों ने भी अपनी खेती वनस्पति के व्यबसायों के लिए ऐसी ही पद्धतियां अपनाईं जिनमें चान्द्र कलैण्ड़र का उपयोग हुआ। मैडिटरेनियन क्षेत्र के लोगों ने भी यही पद्धति अपनाई। ये सभी सम्यताएं चन्द्र प्रभाव (Lunar Sympathy) पर आधारित हैं।पृथ्वी, जल के साथ सम्बन्ध मानते थे। ये बडे घमण्ड से अपने आप को अच्छे एग्रीकलचरिस्ट मानते थे। ये किसी राशि को बीज बोने के लिए, किसी को पौधे लगाने एवं किसी को खेती काटने के लिए अच्छा मानते थे। उनका पशुपालन कार्य भी चन्द्रमा की गतियों से अनुमान लगाने से अच्छा चलता था।

नांसी पैस्सामोर के 1980 के कलैण्डर में लिखा है जब चन्द्रमा कर्क, मीन या वृश्चिक राशि में होता है तब चन्द्रमा अमावस्या, पूर्णिमा ±3 दिन के मध्य मछली आदि जीवों पर ज्यादा प्रभाव करता है। इन दिनों चन्द्रमा की एक ही राशि विभिन्न में पौधो को भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभावित करती मानी जाती थी। उदाहरणार्थ एक पौधे को यदि मीन राशि बोने के लिए शुभ है तो यह भी सम्भव है कि वही राशि दूसरे पौधे को बोने के लिए कि अशुभ सिद्ध हो।

प्रक्षणीय (Preservable) वस्तुएं एवं जैली आदि चन्द्रमा के उपचय काल (Waxing Time) में स्थिर राशियों में बनाई जाएं तो वे ज्यादा काल के लिए प्रक्षित रहतीं हैं। इटली के लोग खेत का बोना एवं कटाई करना चन्द्रमा के उपचय काल में लाभप्रद मानते है।

इसमें तो कोई सन्देह नही कि सूर्य चन्द्रमा (शायद दूसरे ग्रह भी) वनस्पति जगत् पर प्रभाव डालते हैं। मुख्य परिवर्तन करने वाला तो सूर्य ही है। चन्द्रमा के प्रभाव भी विश्वसनीय हैं मच्छी आदि पर मेरे विचार में "चन्द्रमा के मीन राशि में होने से अमुक प्रभाव पड़ते है ऐसे Symboilc Astrological Correlations अविश्वसनीय हैं"। और शोध कार्यों की आवश्यकता है। वैज्ञानिक लोग चन्द्र गति के प्रभाव से metabolic rate, oxygen consumption में परिर्वतन मानते हैं और शोध कार्य चल रहा है। परिणामों की प्रतीक्षा है।

समस्याएं और समाधान

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है ।

[**ध्यान दें-** मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ- **प्रियव्रत शर्मा**]

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए

(१) क्या भद्राकाल में भी शुभकृत्य किए जा सकते हैं ?
(२) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के गृहारम्भादि मुहूर्तों में लग्नों का निर्देश क्यों नहीं ?
(३) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' २०५९ वि. में गृहारम्भमुहूर्त्त २१ जून '०२ ई. के बाद २१ नवं. '०२ ई. को ही क्यों, मध्यवर्ती समय में क्यों नहीं ?
(४) होलाष्टक के दिनों में श्रीमद्भागवत आदि का वाचन-श्रवण क्या हो सकता है ?
(५) क्रूरयुति से मुक्त नक्षत्र की शुद्धि के लिए क्या चन्द्र द्वारा उसका भोग आवश्यक है ?
(६) क्या ज्वालामुखी योग में गृहप्रवेशादि शुभकृत्य हो सकते हैं ?
(७) तुलसीविवाह की तिथि में पंचांगकार कई बार एकमत क्यों नहीं होते ?
(८) अश्वि., चित्रा, श्रव., धनि. नक्षत्रों को विवाहमुहूर्त्तों के लिए किस आधार पर लिया गया है ?
(९) वर/कन्या के विवाह के लिए सम/विषम वर्षों की गणना गर्भ से की जाए अथवा जन्म से ?
(१०) मासशून्य तिथियों एवं शून्यनक्षत्रों में विवाहादि शुभकृत्य वर्जित क्यों नहीं किए जाते ?
(११) रिक्ता तिथियों में भी विवाहादि क्यों लगाए जाते हैं ?
(१२) गोचर किसे कहते हैं ?
(१३) वर/कन्या की जन्म एवं लग्नराशि से अष्टम विवाहलग्न का क्या परिहार है ?
(१४) के. पी. पद्धति किसे कहते हैं ?
(१५) पातदोष किसे कहते हैं और भुजंगपात कौन सा पात है ?
(१६) विवाहमुहूर्त के शुद्धलग्न में परमशुद्धकाल कौन सा है ?
(१७) पारस्कर-गृह्यसूत्रोक्त अश्विन्यादि नक्षत्रों की भान्ति अन्य गृह्यसूत्रों में निर्दिष्ट विवाहनक्षत्र स्वीकार्य क्यों नहीं ?
(१८) नवीन और प्राचीन पद्धति से साधित लग्न एकरूप क्यों नहीं होते ?
(१९) ग्रहों के क्रान्ति, शर का क्या प्रयोजन है ?
(२०) विभिन्न प्रकारों से साधित सूर्योदयास्तकालों में अन्तर क्यों रहता है ?
(२१) अवकहड़चक्र में 'ञ', 'ण' आदि वर्णों का ग्रहण क्यों ?
(२२) अवकहड़चक्र में 'व' 'ब' और 'स' 'श' में अन्तर क्यों नहीं ?
(२३) नक्षत्रों के परमाल्प और परमाधिक मान क्या और क्यों हैं ?
(२४) सं. २०५९ वि. के श्रीमार्तण्ड पंचांग में 'कलंक चतुर्थी' और 'ऋषि पंचमी' की तिथियों के निर्धारण का आधार क्या था ?
(२५) श्री सत्यनारायणव्रत और पूर्णिमाव्रत में क्या अन्तर है ?
(२६) पौष संकट में विवाहादि [illegible] क्यों ?

समस्या :- (i) भद्रादोष को मुहूर्तों के लिए सभी आचार्यों ने सर्वथा वर्जित माना है, लेकिन पंजाब के एक पंचांगकार परिहार-वाक्यों का सहारा लेकर, अब कुछ वर्षों से ही भद्रा में भी विवाहादि मुहूर्त्त लगाने लगे हैं; क्या यह शास्त्रसम्मत है ?

(ii) 'मार्त्तण्ड पंचांग' के गृहारम्भादि मुहूर्त्तों में लग्नों का निर्देश नहीं होता। केवल शुद्धकाल ही वहां लिखा रहता है। यदि इस शुद्धकाल में लग्नशुद्धि न हो तो क्या करना चाहिए?

(iii) 'मार्त्तण्ड पंचांग' (२०५९ वि.) में गृहारम्भ के मुहूर्त्त २१ जून '०२ ई. के बाद २१ नवं. '०२ ई. को लगाए हैं। जबकि पंजाब के एक अन्य पंचांगकार ने २१ जून और २१ नवं. '०२ ई. के मध्य कई और भी गृहारम्भ मुहूर्त्त दिए हैं। क्या इन्हें आप शुद्ध नहीं मानते?

(iv) होलाष्टक के दिनों में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित रहते हैं । लेकिन लोग इन दिनों श्रीमद्भागवत पुराणादि की कथा करते हैं। क्या यह शास्त्र विहित है ?

श्री डिके राम शर्मा,
मु. तरौर, डा. सेगली (मण्डी)-(हि. प्र.)

समाधान :- (i) भद्रा वस्तुतः मुहूर्तों में अतिदूषितकाल के रूप में वर्णित है। किसी भी शुभकार्य में इसे स्वीकारा नहीं जाता। "रात्रिभद्रा यदाह्नि स्याद्...", तथा "दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वञ्च शस्तम्..."- इत्यादि भद्रा के जो परिहारवाक्य मिलते हैं, उनका अनुसरण अत्यन्त आवश्यक एवम् अपरिहार्य स्थिति में ही करना चाहिए; ऐसा शास्त्रों का निर्देश है। जब भद्रा के परिहार के बिना भी शुभकाल सुलभ हो तब इन परिहारवाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। भद्रा के परिहार वाक्यों की व्याख्या के बाद **'पीयूषधाराकार'** ने यही बात इस प्रकार लिखी है;-

" तस्मात्शुभकार्याणां भद्रारूपदुष्टदिन-व्यतिरिक्तकालप्रतीक्षायोग्यत्वे तदैव कार्यं, न दुष्टदिने। 'अबाधेनोपपत्तौ बाधो न न्याय्यः' इति न्यायाद् वचनस्य निषेध एव तात्पर्याच्च। अवश्य-कर्तव्यस्य तु शुभ-कर्मणः कालान्तर- प्रतीक्षामसहमानस्य एवमादि परिहारमाश्रित्य दुष्टदिने कृतिरुचितैव।" - (*पीयूषधारा*)

पीयूषधारा के इसवाक्य का यह सारांश है कि यदि शुभकार्य के लिए भद्रा से दूषित समय से अतिरिक्त (रहित) काल की प्रतीक्षा की जा सके तब उसी भद्रारहितकाल में वह शुभकार्य करना चाहिए, न कि परिहार के आधार पर भद्रादूषितकाल में उसे किया जाए। जो शुभकार्य अनिवार्य रूप से तत्काल करना हो और वह कालान्तर की प्रतीक्षा को सहन न कर सके ; ऐसे शुभकार्य को तो परिहार का आश्रय लेकर दूषितकाल में भी किया जा सकता है।

ध्यान रहे - पंजाब के ये पंचांगकार तो ऐसे सभी स्थलों पर जहां भद्रारहित सर्वथा शुद्ध मुहूर्त्त लग्न उपलब्ध हैं, वहां भी भद्रापरिहार वाले काल में उन्मुक्त रूप से लग्न लगा देते हैं।

(ii) गृहारम्भ के मुहूर्त्त तो वैसे भी वर्ष में बहुत कम बनते हैं। यदि मुहूर्त्तशास्त्र-नियमानुसार इन मुहूर्तों में लग्नशुद्धि देखी जाए तो ये और भी संक्षिप्त हो जाते हैं। कई वर्षों में तो ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि गृहारम्भ मुहूर्त्त एक दो ही बने अथवा न भी बने। इसीलिए सभी प्रकार की पंचांगशुद्धि एवं अन्य गृहारम्भ मुहूर्त्त- सम्बन्धी दोषों से मुक्त शुद्धकाल को ही हम पंचांग में देते हैं। इसमें लग्नशुद्धि न मिले तो अभिजित् मुहूर्त्त अथवा किसी शुभग्रह या चतुर्थेश के नवांश में गृहारम्भ किया जा सकता है।

(iii) २१ जून से २१ नवं. '०२. ई. के मध्य कोई भी गृहारम्भ मुहूर्त्त नहीं बनता है। इस पंचांगकार द्वारा इस अवधि में लिखे गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों में भूशयन, क्रूरग्रहवेध एवम् वृषवास्तुचक्र दोष हैं।

(iv) होलाष्टक के दिवस विवाहादि शुभकृत्यों के लिए वर्जित हैं; पुण्यकृत्यों के लिए नहीं। श्रीमद् भागवतकथा वाचन-श्रवण आदि पुण्यकृत्य (पुण्यप्रद कर्म) हैं; अतः इन्हें होलाष्टक में वर्जित नहीं माना जाता ।

समस्या :- सं. २०५८ में फाल्गु. कृ. ८ बु. और ९ गु. (६, ७ मार्च '०२ ई.) को मार्त्तण्डपंचांग में मूलनक्षत्र के विवाहमुहूर्त्त लगाए गए थे। जबकि यह नक्षत्र क्रूर (केतु) युति से दूषित था; और १६ फर. '०२ ई. को केतुयुति से मुक्त हो जाने के बाद चन्द्र के द्वारा एक बार भी भुक्त न होने के कारण यह नक्षत्र शुभकृत्य के लिए इन दिनों अग्राह्य था- **"क्रूरविद्धानि ऋक्षाणि क्रूरभुक्तादिकानि च । भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। - (** ***मुहूर्त्तचिन्तामणि*** **)।** आपने इसे ग्राह्य किस आधार पर माना ? स्पष्ट कर, मार्गदर्शन करें।

श्री महावीर प्रसाद पारीक,
पो. बीदासर (झुंझुनूं), राजस्थान ।

समाधान- क्योंकि नक्षत्र क्रूरग्रह से जब तक आक्रान्त रहता है, तभी तक वह वस्तुतः दूषित रहता है, या यूं कहिए- तभी वह विशेष रूप से दूषित रहता है; अत एव केवल इसी स्थिति में उसे दैवज्ञ-परम्परा ने दूषित माना है। उसे एकमास बाद भी दूषित मानने की परम्परा पंचांगकारों में नहीं है। **ध्यान रहे -** शास्त्रविरोधी लोकपरम्परा को भी मुहूर्तकारों ने उपेक्ष्य नहीं माना:-' **दैवज्ञस्तु लोकमार्गेण यायात्। '**

ध्यान रहे - गुर्वादित्य दोष में भी शास्त्रकारों ने गुरु और सूर्य की एक राशि में स्थिति के दोष को न मानकर इन दोनों की उस स्थिति को ही दोषपूर्ण माना है, जहां गुरु सूर्य के अधिक समीपस्थ हो

जाने पर लुप्तावस्था में होता है।

यदि हम युतिदोष के बारे में शास्त्रनिर्दिष्ट नियम का पूरी तरह पालन करें तब तो क्रूरग्रह द्वारा केवल आक्रान्त नक्षत्र ही नहीं, अपितु उसके भोग्य (गन्तव्य) नक्षत्र को भी वर्जित करना होगा। इस बारे में **'वशिष्ठ'** मुनि का यह वाक्य देखिए-

"गन्तव्यधिष्ण्यं खलु भुक्तभं यत् क्रूरैः महोत्पात-विदूषितञ्च।
चन्द्रोपभोगादमलं तदानीं शुभेषु कार्येषु शुभप्रदञ्च।।" - *(वशिष्ठः)*

इसी प्रकार ' वात्स्य' मुनि ने कहा है-

"भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण भम्।
मंगलेषु च कार्येषु यत्नत : परिवर्जयेत्।। " - *(वात्स्यः)*

लेकिन कोई भी पंचांगकार क्रूरग्रहद्वारा गन्तव्य नक्षत्र को मुहूर्तों में वर्जित नहीं करता। पंचांगकारों की इस परम्परा का भी हम शताब्दियों से पालन करते चले आ रहे हैं।

समस्याः- क्या ज्वालामुखी योग में गृहप्रवेश हो सकता है ?

श्री मनसाराम शास्त्री,
पो. वलरा, संगरूर ।

समाधान- ज्वालामुखी योग विशेष तिथि और नक्षत्र के योग से बनता है। नक्षत्र, तिथि-वार और नक्षत्र-वार के योग से बनने वाले ऐसे योग केवल हूण (पूर्वी प्रदेश), वंग (बंगाल) और खश (भारत के उत्तर में स्थित पर्वतीय) प्रदेशों में ही वर्जित हैं।

कुयोगाः तिथि-वारोत्थाः तिथिभोत्थाः भवारजाः।
हूण-वंग-खशेष्वेव वर्ज्याः त्रितयजास्तथा।। - *(मुहूर्तचिन्तामणि)*

अपि च *वार, तिथि और नक्षत्रों के योग से बनने वाले इन कुयोगों को यात्रा में ही वर्जित करना चाहिए, अन्य शुभकार्यों में इन्हें गर्ग आदि ने अशुभ नहीं माना है।* **लल्लाचार्य** का वचन है-

वारर्क्षतिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेत्।
विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः।।

समस्या- *(i) सं. २०५८ के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में तुलसीविवाह कार्ति. शुक्ल द्वादशी (२७ नवं. २००१ ई.) को लिखा गया था। जबकि अन्य कई पंचांगों में यह एकादशी के दिन (२६ नवं. ०१ ई. को) लिखा था, यह मतभेद क्यों ?*

(ii) 'मार्त्तण्डपंचांग' में अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा-इन चार नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्त लगाए रहते हैं, जबकि मुहूर्त्त के ग्रन्थों में रोहिणी आदि केवल ११ नक्षत्रों को ही (जिनमें अश्विनी आदि ये चार नक्षत्र नहीं हैं) विवाह के लिए उपयुक्त लिखा गया हैं; यह मतभेद क्यों हैं ?

पं. राजेन्द्र दत्त शास्त्री,
गोनियाना मण्डी, भटिण्डा (पं.)।

समाधान (i) प्रबोधिनी एकादशी की पारणा (व्रतसमाप्ति-भोजन) के दिन तुलसीविवाह का विधान है। **धर्मसिन्धु** का वचन है कि यद्यपि एकादशी से पूर्णिमा तक की किसी भी तिथि को विवाहनक्षत्र में तुलसी विवाह करने का शास्त्रनिर्देश है तथापि पारणा के दिन प्रबोधोत्सव के साथ ही पूर्वरात्रि में (आधी रात से पहले) तुलसी विवाह करने की सर्वत्र प्रथा है :-

एवं तुलसी-विवाहस्य नवम्यादि दिनत्रये एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि कार्त्तिकशुक्लान्तर्गत-विवाहनक्षत्रेषु वा विधानात्, तथापि पारणाहे प्रबोधोत्सव-कर्मणा सहतन्त्रतयैव सर्वत्र अनुष्ठीयते इति सोऽपि पारणाहे पूर्वरात्रे कार्यः" -(*धर्मसिन्धु*)।

सं.२०५८ वि. में २७ नवं. '०१ ई. को एकादशी का पारणा दिन था। इसदिन पूर्वरात्रि में विवाहनक्षत्र अश्विनी भी था, अतः इसी दिन तुलसीविवाह लिखा गया,- जो शास्त्रानुसार शुद्ध है।

(ii) यह ठीक है कि **'मुहूर्तचिन्तामणि'** आदि में अश्विनी आदि इन चार नक्षत्रों का विवाहनक्षत्रसूची में निर्देश नहीं है, लेकिन **'पारस्करगृह्यसूत्र'** एवं **'धर्मसिन्धु'** आदि में इन नक्षत्रों का निर्देश है। भारत के अन्य पचांगकार भी इन नक्षत्रों में विवाहमुहूर्त्त लगाते हैं। **ध्यान रहे-** पहिले उ.भा. के पंचांगों में इन चार नक्षत्रों मे विवाहमुहूर्त्त नहीं लगाए जाते थे। जबकि द.भा. के पंचांगों मे लगाए रहते थे। अब से लगभग ५५-५६ वर्ष पूर्व हमारे पूज्य **पिताश्री स्व. श्रीमुकुन्दवल्लभ** जी ने उ.भा. के पंचांगकारों को इन नक्षत्रों की विवाहार्थ स्वीकृति के लिए प्रेरित किया। कुछ वर्षों तक तो वे इनका विरोध करते रहे, लेकिन अब वे सभी इन्हें विवाहनक्षत्रों में स्वीकार कर इनमें विवाहमुहूर्त्त लगाने लगे हैं।

समस्या- आयु के विषम वर्ष में लड़के का और सम वर्ष में लड़की का विवाह करना चाहिए, ऐसा शास्त्र कहते हैं। यदि जन्म से आयु का वर्ष अनुकूल न हो तो क्या उसमें गर्भ के मास मिलाकर समवर्ष को विषम और विषम को सम बनाकर विवाह किया जा सकता है ?

पं. ईश्वर दत्त शर्मा,
पो. कूटा (कठुआ)- (ज.का.)।

समाधान- नारद आदि के अनुसार तो आयु के वर्षों की गणना जन्म से ली जाती है-

(युग्मेऽब्दे जन्मतः स्त्रीणां शुभदं पाणिपीडनम्। एतत्पुंसामयुग्मेऽब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः।।- नारद), लेकिन पराशर गर्भधारण से वर्षगणना का पक्षपाती है- *(युग्मेऽब्दे सम्पदः सौख्य-विद्याधर्मायुषः सदा। भर्तुर्दृष्टा भवत्योजे निषेकान्नात्र संशयः।। -पराशर)*। अतः हम कह सकते हैं कि गर्भ के मासों को जोड़कर आयु के वर्षों को सम या विषम बनाकर विवाह किया जा सकता है।

समस्या- क्या कारण है- सभी पंचांगों में विवाहादि शुभकृत्यों के मुहूर्त्त मासशून्य तिथियों एवं शून्यनक्षत्रों में भी लगाए होते हैं; जबकि मुहूर्त्तग्रन्थ इन्हें शुभकृत्यों में सर्वथा वर्ज्य लिखते हैं ?

श्री कलमदेव शर्मा,
पो.ओ. खदराला (रोहडू)-(हि.प्र.) ।

समाधान- मासशून्य तिथि आदि को केवल मध्यदेश में ही वर्जित कहा गया है।

" तिथयो मासशून्यांश्च शून्यलग्नानि भान्यपि। मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु।।"
-(मुहूर्त्तचिन्तामणि)

अन्य मुहूर्त्तग्रन्थों का तो कहना है कि यदि शुभकृत्य के लग्न के समय कोई एक भी बलवान् शुभ (गुरु, शुक्र या बुध) ग्रह केन्द्र, त्रिकोण अथवा उपचय स्थान में स्थित हो तो शून्यमास, तिथि और शून्यनक्षत्र का दोष नष्ट हो जाता है-

**" केन्द्रे चैव त्रिकोणे च शुभो ह्युपचयेऽपि च।
एकोऽपि बलवांश्चापि शून्यतिथ्युडुनाशकः।। "** - *(जगमोहन)*

कुछ यही बात **कश्यप** ने भी इस प्रकार कही है कि शुभग्रह केन्द्रस्थ होने पर मास, तिथि और नक्षत्र आदि के दोष समाप्त हो जाते हैं-

**" अब्दायनर्तु-मासोत्याः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः।
ते सर्वेनाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।"** - *(कश्यप)*

समस्या- (i)-रिक्ततिथियों में विवाहादि वर्जित लिखे गए हैं- पुनरपि मार्त्तण्डपञ्चांग (विवाहमुहूर्तों) में इन्हें स्वीकार किया जाता है; ऐसा क्यों?

(ii) गोचर किसे कहते हैं ?

पं. रूपलाल शर्मा,
मु. ढकेड़, पो. सौर (सोलन)-(हि.प्र.) ।

समाधान - (i) मंगलकृत्य के लग्न के समय केन्द्र, त्रिकोण में शुभग्रह होने पर रिक्ता आदि दोष समाप्त हो जाते हैं;- **" अब्दायनर्तु-मासोत्याः पक्षतिथ्यृक्षसंभवाः।
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।"** - (**कश्यप**)

(तिथिसंभवाः = रिक्तादयः दोषा इत्यर्थः)

(ii) गोचरपद्धति फलादेश-कथन की एक प्रक्रिया है, जिसमें जन्मराशि के सापेक्ष तात्कालिक (अभीष्टकालिक) ग्रहस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए **'वसिष्ठसंहिता', 'मुहूर्तचिन्तामणि', 'फलदीपिका'** आदि में दिए गए गोचरप्रकरण देखिए। गोचरपद्धति से फलादेशकथन की प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन मेरे **" जीवन के अच्छे-बुरे क्षण कब और कितने ?"**- लेख (मार्त्तण्डपंचांग सं. २०५४ वि.) में पढ़िए।

समस्या- 'विवाहादि मुहूर्तों में वर-कन्या की जन्मराशि या जन्मलग्नराशि से आठवें विवाहलग्न का क्या परिहार है ?

श्री सुजान सिंह सोढ़ा,
P.O. *नीमला (बाड़मेर)-(राज.)* ।

समाधान- वर या कन्या की जन्मराशि या जन्मलग्नराशि का स्वामी ग्रह विवाहलग्नराशि के स्वामी का मित्र हो या इन दोनों में ऐकाधिपत्य हो तो जन्मराशि एवं जन्मलग्नराशि से अष्टम विवाहलग्न का दोष नहीं रहता।

किञ्च-- लग्न से अष्टमभाव का स्वामी यदि विवाहलग्न कुण्डली में केन्द्रस्थ या शुभदृष्ट हो तो भी अष्टम विवाहलग्न का दोष नहीं रहता ।

अपि च- यदि विवाहलग्न कुण्डली में अष्टमेश अपने या किसी शुभग्रह के नवांश में, अथवा अपने उच्च या मित्रक्षेत्र में स्थित हो तब भी अष्टमलग्न का दोष समाप्त हो जाता है।

समस्या - (i) के.पी. पद्धति किसे कहते हैं ?

(ii) विवाहमुहूर्तों में पातदोष की चर्चा होती है। पातदोष किसे कहते हैं; किस पात का नाम भुजंगपात है ?

शास्त्री मनोज कुमार शर्मा,
पो. बासनी 'जोजावर' (पाली)- (राज.) ।

समाधान - (i) के.पी. पद्धति दक्षिणभारत के एक विगत शताब्दी के दैवज्ञ द्वारा आविष्कृत फलादेश -पद्धति है, जिसमें नक्षत्रों को प्रधानता दी गई है। के.पी. पद्धति की फलादेश-पुस्तकें English

में उपलब्ध हैं।

(ii) साध्य, हर्षण, शूल, वैधृति, व्यतीपात और गण्ड योग के अन्त में पड़ने वाला नक्षत्र पातदोष से दूषित माना जाता है। शूलयोग के अन्त में पड़ने वाला नक्षत्र विशेषरूप से दूषित माना गया है, इस नक्षत्र को 'भुजंगपात दूषित' कहा जाता है। सभी प्रान्तों में भुजंगपात दोष वाले नक्षत्र में विवाह विशेष रूप से वर्जित माना जाता है (**'सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः'**)। जबकि शेष पातदोष केवल कुरु (कुरुक्षेत्र) तथा जांगल (फिरोजपुर, भटिण्डा आदि) में ही वर्जित हैं।

समस्या- विवाहमुहूर्तों में शुद्धलग्न की राशियां दी रहती हैं। एक लग्न (लग्न की राशि) का काल मध्यमान से २ घण्टा रहता है। मेरी दृष्टि से पाणिग्रहण हेतु इस अवधि में किसी परमशुभकाल (नवांशादि) का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त होगा। इसमें आपका क्या मत है?

श्री सुनील शर्मा,
मु. ध्यावणी, पो. घड़सी (सोलन)-(हि.प्र.)।

समाधान- वैसे तो विवाहमुहूर्तों में लग्न का पूर्णकाल पाणिग्रहण के लिए शास्त्रविहित होता है। यदि इस अवधि में किसी बलवान् शुभग्रह लग्नेश या सप्तमेश के नवांश का प्रयोग किया जाए तो अधिक कल्याणप्रद माना जाएगा।

समस्या- मार्त्तण्डपञ्चाङ्ग में पारस्करगृह्यसूत्रानुसार कात्यायनोक्त अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा- इन चार नक्षत्रों में भी गत कई वर्षों से विवाहलग्न लगाए जा रहे हैं, इसप्रकार तो अन्य गृह्यसूत्रों व धर्मग्रन्थों में निर्दिष्ट अन्य नक्षत्रों को भी स्वीकार करना चाहिए। वाल्मीकि रामायण व महाभारत में पू.फा. को विवाह के लिए उत्कृष्ट बतलाया गया है, इसे भी इन विवाहनक्षत्रों में स्थान क्यों नहीं दिया जाता? पारस्करगृह्यसूत्र में तो दक्षिणायन एवम् कृष्णपक्ष को विवाह में वर्जित लिखा है; मघा, अनुराधा, मूल का भी वहां निषेध है, उपयुक्त क्या है ?

पं. सुरेशचन्द्र मिश्र,ज्योतिषाचार्य,
मु. पो. बहरोड़, अलवर (राज.)।

समाधान - अन्य गृह्यसूत्रों में इन सम्प्रति स्वीकृत १५ विवाहनक्षत्रों के अलावा यदि और भी कोई नक्षत्र विवाह के लिए ग्राह्य लिखे हों तो उन्हें समानन्याय से हमें स्वीकार करना ही होगा। यदि उन्हें कोई हमारी दृष्टि में लाता है, तो हम उन्हें सहर्ष मुहूर्त्तों में समाविष्ट करेंगे। **ध्यान रहे-** सूत्रकाल से परवर्त्ती संहिताग्रन्थों के निर्देशों की भी हम उपेक्षा नहीं कर सकते; इन ग्रन्थों में पू.फा. को ग्राह्य नहीं लिखा है, और वहां मघा, अनुराधा एवं मूल नक्षत्र विवाहयोग्य बतलाए गए हैं।**"उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम् ,"**- के अनुसार संहिताओं के निर्देशों को स्वीकार करने हेतु हम बाधित हैं। **ध्यान रहे-** गृह्यसूत्र में मघा, मूल, अनुराधा नक्षत्रों को विवाह मे निषिद्ध नहीं कहा है। हां- वहां विवाहनक्षत्रों में इनका निर्देश नहीं है। यह ठीक है कि **पारस्करगृह्यसूत्र** में कृष्णपक्ष एवं दक्षिणायन को विवाह में वर्जित लिखा है, लेकिन परवर्त्ती **कश्यप** आदि मुनियों ने इन्हें लग्नकालिक विशेष ग्रहस्थिति में ग्राह्य/निर्दोष भी बतलाया है-

"अब्दायनर्तु-मासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः।
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।" -(कश्यप)

अर्थात् लग्नकालिक कुण्डली में शुभग्रह (गुरु-शुक्र-बुध) केन्द्र या त्रिकोणगत हों तो अयनदोष (दक्षिणायनदोष) और पक्षदोष (कृष्णपक्षादि दोष) आदि नष्ट हो जाते हैं। यहां **'केन्द्रसंस्थे'** शब्द में **'केन्द्र'** शब्द **त्रिकोण** का भी उपलक्षण है। यह **ध्यातव्य** है कि श्रीमार्तण्डपंचांग में दिए गए विवाहमुहूर्त्तों में सर्वत्र कोई न कोई शुभग्रह त्रिकोण/केन्द्र में अवश्य होता है।

समस्या- (i) नवीन तथा प्राचीनपद्धति से साधित लग्नों में एकरूपता क्यों नहीं होती ?

(ii) ग्रहों के क्रान्ति, शर किस काम आते हैं?

(iii) विभिन्न विधियों से साधित सूर्योदयास्तकालों में एकात्मकता क्यों नहीं ?

श्री राजेन्द्र बड़कुलिया,
बकलोह (हि.प्र.)।

समाधान- (i) यदि सूर्योदयकाल, इष्टकाल, इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य तथा लग्नसारिणी सूक्ष्म शुद्ध हों, **तथा च-** साम्पातिककाल और साम्पातिक-काल की लग्नसारिणी भी सूक्ष्म शुद्ध हो तो प्राचीन एवं नवीन दोनों पद्धतियों से स्पष्ट किए गए लग्न में कोई अन्तर नहीं आएगा। वैसे साम्पातिककाल से लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षाकृत लाघव है।

(ii) ग्रह का **'शर'** हमें बतलाता है कि ग्रह **'क्रान्तिवृत्त'** (भूभ्रमणवत्त) से कितना दक्षिण या उत्तर में हटा हुआ है। आकाशीय **'नाड़ीवृत्त'** से ग्रह का उत्तर-दक्षिण में अन्तर ग्रहक्रान्ति बतलाती है। आकाश में संचार करते हुए ग्रहों का परस्पर अन्तर और युति आदि का निर्णय ग्रह की **क्रान्ति** एवं **शर** से किया जाता है। ग्रह का दैनिक उदयास्तकाल उसकी क्रान्ति पर निर्भर करता है।

(*iii*) यदि उदयास्तकालिक सूर्य की **क्रान्ति, चर** और **वेलान्तर** सूक्ष्म-शुद्ध हों तो सूर्योदयास्तकाल बिल्कुल शुद्ध आता है। **'चरसारणी'** और **वेलान्तर की** स्थूलता के कारण यह अन्तर उत्पन्न होता है।

समस्या- (i) अवकहड़ चक्र में 'ञ', 'ण' आदि वर्णों के ग्रहण की सार्थकता क्या है ?

(ii) अवकहड़ चक्र में वकार और बकार में अन्तर क्यों नहीं है ?

(iii) किसी भी नक्षत्र के अधिकतम और अल्पतम मान क्या हैं; कारण सहित बतलाएं ?

ईश्वरचंद शास्त्री,

1915/13, भिवानी (हरि.)।

समाधान- (i) वर्णों के नक्षत्र आदि का निर्देश करते हुए अवकहड़ चक्रकार ने इन्हें वर्जित करना उचित नहीं समझा। भले ही ये वर्ण नाम के आदि अक्षर नहीं होते, फिर भी इन की नक्षत्रराशियां तो हैं ही।

(ii) अवकहड़ चक्र का उद्‌गम अपभ्रंशकाल में हुआ है ;- यह स्पष्ट है। इसी लिए तो यहां 'व', 'ब' और 'स', 'श' में अन्तर नहीं है। अपभ्रंश (प्राकृत) भाषाओं में भी ऐसा ही है।

(iii) नक्षत्र का परममान २७ घण्टा से कुछ ही अधिक और परमाल्पमान लगभग २१ घण्टा होता है। ये परमाल्प, परमाधिकमान चन्द्रमा की क्रमशः परमाधिक और परमाल्पगति पर निर्भर करते हैं। चन्द्र की परमाधिक गति लगभग ६२० कला और परमाल्प गति ७०७ कला के लगभग है।

समस्या- सं २०५९ वि. के श्रीमार्त्तण्डपंचांग में कलंक चतुर्थी १० सितं. '०२ ई. और ऋषिपंचमी ११ सितं. '०२ ई. को लगाई गयी थी। इसे हमारे यहां के कुछ ज्योतिषियों ने शास्त्रसम्मत नहीं माना। कृपया उनकी शंका-निवृत्त करें।

डॉ. दीनानाथ शर्मा,

मु. धरीन, डॉ.ढयावला (सोलन)-(हि.प्र.)।

समाधान- भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (अस्तकाल व्यापिनी) में चन्द्रदर्शन निषिद्ध माना जाता है। यदि दोनों दिन चतुर्थी अस्तकाल व्यापिनी न हो तो दूसरे दिन **कलंक चतुर्थी** मनाई जाती है। सं. २०५९ वि. में ९ और १० सितं. '०२ ई. को दोनों दिन चतुर्थी अस्तकाल व्यापिनी नहीं थी; अतः दूसरे ही दिन १० सितं. सन् २००२ ई. को ही कलंक चतुर्थी लगाई गई थी। **ध्यान रहे -** १० सितं. को अस्तकाल में चन्द्रदर्शन के समय यद्यपि पंचमी थी, लेकिन वहां दृश्यचन्द्र चतुर्थी में ही उदित हुआ था। चतुर्थी में उदित चन्द्र का दर्शन भी इस स्थिति में शास्त्रकारों ने वर्जित माना है। मध्याह्न व्यापिनी भाद्र. शुक्ल पंचमी के दिन ऋषिपंचमी होती है। सं. २०५९ में यह (पंचमी) ११ सितं. '०२ ई. को ही मध्याह्नव्यापिनी थी, अतः ११ सितं. को ही **'ऋषिपंचमी'** पंचांग में लिखी गई।

समस्या - क्या श्री सत्यनारायण व्रत और पूर्णिमाव्रत में कोई मौलिक अन्तर है ?

प्रमोदकुमार शर्मा,

फ़ाज़िलाबाद (करौली)-(राज.)।

समाधानः- श्री सत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है **" सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे"-** (*स्कन्द पुराण*)। यदि दोनों दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी न हो तो दूसरे ही दिन श्री सत्यनारायण व्रत करना होगा। दोनों दिन प्रदोष -व्यापिनी पूर्णिमा होने पर भी यह व्रत दूसरे ही दिन किया जाता है।

पूर्णिमातिथि का व्रत सूर्योदयव्यापिनी तिथि में होता है। पूर्णिमा दोनों दिन उदयव्यापिनी हो तो पूर्णिमा व्रत पहले दिन होगा। इसी प्रकार दोनों दिन पूर्णिमा सूर्योदयव्यापिनी न हो (पूर्णिमाक्षय हो) तब भी यह व्रत पहले ही दिन किया जाता है।

समस्या- भीष्मपंचक (कार्त्ति. शु. एकादशी से कार्त्ति. पूर्णिमा तक) के दिनों में अब श्रीमार्त्तण्ड-पंचांग में विवाहमुहूर्त्त लगाना क्यों प्रारम्भ किया गया है, जबकि इससे पूर्व इन दिनों को विवाह-कृत्य में वर्जित किया जाता रहा है ?

पं.श्री सुरेशकुमार शर्मा,

मु. सुन्हाड़, पो. सौर (सोलन)-(हि.प्र.)।

समाधान- भीष्मपंचक को शुभकृत्यों के लिए केवल पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली में ही वर्जित किया जाता है, जबकि अन्य लगभग सभी प्रान्तों में इन दिनों में शुभकृत्य करने की परम्परा है। क्योंकि अब **'मार्त्तण्डपंचांग'** राज., म.प्र., उ.प्र. आदि अन्य प्रान्तों में भी प्रयोग में लाया जा रहा है। इसीलिए उनकी परम्परा के अनुसार **भीष्मपंचक** में विवाहादि मंगलकृत्यों के मुहूर्त्त लगाना प्रारम्भ कर दिया गया है। **ध्यान रहे-** मुहूर्त्तग्रन्थों में **भीष्मपंचक** को शुभकृत्य के लिए वर्जित करने का कोई निर्देश भी नहीं है।

★ ★ ★

प्रसूति-लग्न विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर,उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन थे। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष-माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया,गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३या ५ ,माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव,मुख ऊपर को , जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था , घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया , दूध कम उतरे ।४।१०।१४।३८।५८ वर्षो में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें । यदि इन वर्षो से बचे तो ८६ वर्ष जीवे ।

कर्क- माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४ , बालक जन्मते ही छींका , नाल छुटा, भूमि पर जन्म , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , माता के वस्त्र श्वेत व लाल , माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया , बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न , देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो कें प्रवेश के समय तुलादान ,छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह- *माता का पश्चिम या पूर्व में सिर , मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया , घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान , ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षो में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षो के प्रवेश होते ही श्री सूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।*

कन्या- *माता का दक्षिण में सिर , रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन,जन्म समय स्त्री ३या ५, दीपक हाथ में उठाया गया ,बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया,घर के नैर्ऋत्य कोण में सूतिका-स्थान , ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक है । यदि इन वर्षो से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।*

तुला -माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , श्वेत जीर्ण वस्त्र , भुना हुआ अन्न , ठंडा जल , या कोइ मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्म समय स्त्री ३या ६, वहां १कन्या भी हो , दीपक उठाया गया,बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्धशब्द करके रोया , घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान , ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान , हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक-माता का दक्षिण या उत्तर में सिर , रक्त या दग्ध वस्त्र , कष्ट अधिक,अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन , जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई , दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु-माता का सिर पश्चिम या पूर्व को , पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १या ५,दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान २,१०,१८,३१,३८,४२,६७, इन वर्षो के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप , ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है , यदि इन वर्षो से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर-माता का सिर दक्षिण में ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्म समय स्त्रियाँ २, पीछे से एक आई । दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्ट कारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ-माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया. वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन-माता को सिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे, अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिले-वहीं बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष ज्ञान- (१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे,(२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो,(३)लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो,(४)भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो -इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान- प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय,तृतीय ईशान। चतुर्थ-उत्तर। पञ्चम-षष्ठ-वायव्य। सप्तम-पश्चिम। अष्टम, नवम-नैर्ऋत्य। दशम-दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हो, वहाँ अग्नि स्थान(पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा- लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र(१।४।७।१०)स्थान में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो बली(स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का)केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्न पति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है । **ग्रहों की दिशा-सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत्य।**

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्-चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहना। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कही दीपक तैल नहीं। सित-शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्म में तव वाम, दीपक तैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्-जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः- यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्म काल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हो तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़े अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है, कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुग्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहाँ, धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा दुश्चरित्रा कहें।

शय्या-शिर व पाद विचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्विषद्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिराहना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण,६में नैर्ऋत्य,७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण,१०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां, स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों वहाँ सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

दो०-मीन-मिथुन-सिंह-तुला,मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक,शेषे भूमि विशाल॥

अथ चिह्नज्ञानम्-दोहा-षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानू तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भावत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भावत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर--प्रसव काल से पहले शुक्लपक्ष के चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर-माचिर-स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से ही शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मंत्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:- द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खगना बसै, वेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसे अष्ट भवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥"

अथ काणयोग--तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियधर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥"

मूकयोग-"पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।"

दुःखदयोग -रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश । यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस॥ पापग्रहयुत लग्न पति परै लग्न में आय । वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोग- क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार॥

सर्पवेष्टितयोग- यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोग- चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह,मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध)का सूर्य होवे , शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो

बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे-शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु-समय-विचार-- जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब मृत्यु कहना। अथवा-जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है. इसलिए आयु का प्रथम विचार करे. फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोगा:-अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:-- दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन से रिष्फ षट मन्द बसे क्लि भानु॥

कुष्ठयोगा:--लग्नप बुध कुज शशि युते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत. चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुम:-आगे पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमें बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच सो कन्याँ व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवे भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज कूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुबो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य-विषकन्यायोगा:-चौ.- रविवार द्वितीया जो होय श्लेषा ताहि दिन में जोय॥ १॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार साते तिथि को करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥ ३॥ इन योगन में कन्या होय निश्चय विधवा जाने सोय॥ ४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय एक पाप ग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो ता कन्या को विधवा जानो॥ ६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय मंदवार युत लीजो जोय॥ ७॥ परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार॥ ८॥ रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विसाखा जानो होय॥ ९॥ ऐसो योग लखो जो परै तो कन्या को विधवा करै॥ १०॥ दो० धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥ ११॥

वैधव्य- विषकन्याभंगयोग:-जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोग:- ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे बन्ध्या अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोग:--चौपाई- केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके-चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षडवर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा.... कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:--पञ्चमें शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्''॥

अशुभ प्रसव मास:-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैसाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्म फल:-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चांदी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हो तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर की पक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चुतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृ सुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वे में धनी।

अथैकनक्षत्रजनन-फल :--वृद्ध गर्ग कहते हैं, कि- यदि भ्राताओं वा पिता - पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना-(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।
(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है, यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना-(१)जन्म लग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावें, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।
(३)लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावें, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावें - शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है।
(४)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम, इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।
(५)लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश ओर भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना-(१)जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे शेष की राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना	वैधव्य	फलम

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१।२।३ च.)	आश्लेषा (२।३।४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४च.)
फलम्	ससुरहानि	सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त-पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक, माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

[illegible] अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से मुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पद	मन्त्री पद	विपुल लाभ	अल्प जीवन	फल

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम.

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है, एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्रासे गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥ यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः ससमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसुतेन जलेन हि॥ बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचार :- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष, असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू. ज्ये. पिता को भय	मू. ज्ये. माता को भय	रे. अश्वि. शरीर को भय	पशु-हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी, गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृद् ४	दुखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी, पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पआयु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी.	गुणी	नीचस्व.	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्य	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्य	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृद् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुक्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूका	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्— अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखेश्वर्य, तृतीय में मंत्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्-मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होंगे।

ज्येष्ठापाद फलम्— प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजी ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगा:-(१)पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे,(२) चन्द्रमा से सातवें पायुक्त शुक्र हों, (३)पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हो,(४)तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल होवे,(५)चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो - इन पाचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाश योगा - (१) सूर्य मंगल दसवें वा नवम में गये हो(२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो,(३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४)पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो,इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाश योगा:- भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय॥

सन्तानसुख नाशयोगाः- गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक धाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग- शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः-सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राह सग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगा : -भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उतर जन्म में तब शिशु कहो पसार॥

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना:	भय	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	यात्रा	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	अन्नलाभ,	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभे	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौमः	शत्रुभीति,	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभीति	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	धननाश
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरु.	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुखं	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश,	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाशः	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहुः	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक :	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःख	वैर	सुखं	शोक
केतुः	रोग	वैर	सुख	भय	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोग	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभीति

अथग्रहाणामेक भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के	ग्रहाः
मा.१	दि. २१	मा१ ॥	मा. १	मा.१२	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकार्थभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
भय.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गतव्यराशेः
								प्राक्फलम

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैदूर्यम्	लाजवर्तं:	लाजवर्तं:

पूतना-ग्रसित लक्षण एवं शांति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है । तब पूतना की बली निकालने से अच्छा होता है । जब कभी बच्चा बैठे बैठे गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है । यदि कोई लाभादि के वश. में आकर वनदेवता या नाकृदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है । यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा । बच्चे को इतर फुलेन और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है । सिर खुले जूते बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है ! संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है । कदाचित् बालक खेलता खेलता गिर जाये अथवा उसे उल्टी हो या हाथ पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है । जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है । फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शांति होती है ।

चेष्टाः- जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम् - दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूडे के पते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे यह रोग दूर होगा ।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ष्योतिदर्शन निवासश्च तत्र रात्रौ- "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥" इत्यस्य जपः. ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्टदृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाये तो- ॐवासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ १ ॥ कृष्ण, रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन! प्रातः-सङ्गव मध्याह्न सायाह्नेषु च सन्ध्ययो: ॥ २ ॥ महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन! यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ ३ ॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान् । त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥ ४॥

इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

अथ बाल पूतना विधान– यहां लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्नलिखित मंत्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्तों को उबाल कर बालक को मंत्र पाठपूर्वक स्नान कराना । तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना तदनन्तर '' ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्षं'' इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान स्पर्श पूर्वक यह मंत्र पढ़ें- '' ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर इर्वं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय रोदय, स्फोटय स्फोटय स्वाहा। गर्ज २ सः गृहाण गृहाण आमर्दय २ ह्रीम् ह्रीम्, हन हन एवं सिद्धि कुरो ज्ञापय स्वाहा॥ इति रक्षामंत्रः ॥

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५,५दीपक, ५आटे के सतिये,कपूर,लोहवान	श्वेत भात,५पूर्ण पोली(सुहाली) १प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।	राई, खस, आक के फुल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक,१०झण्डी,पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वानाद्रानया स्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन,रक्त पुष्प,श्वेत ध्वजा, दीपक१०,गेहूं केआटे केसतिये१०	एक सेर लाल भात,आधा सेर पूर्ण पोली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
चतुर्थदिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल -चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५,दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात , सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली , सांय ,पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,गेंहु के आटे के सतिये	श्वेत भात, ७ पूड़ियां , सांयकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	ओंभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्रं ठःठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठःठःस्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात,५ मिठाई ,५सुहाली ,७पूड़ियां,१ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तमदिन मास वर्ष में में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन , श्वेत पुष्प , दीपक ५,श्वेत ध्वजा ५,	भात, ७ पूड़ियां , सांयकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन, ५रंग की झण्डी ५, दीपक ५,	गेहूं की रोटी,मसूर की दाल,हरा साग, छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प,५दीपक,५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापडी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन २हुं फट् स्वाहा	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशमदिन मास वर्ष में में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प २५, झंडी,२५ दीपक,२५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल,गौ घृत, सांय,दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुर्दशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प,२५ दीपक,२५ सफेद झण्डी,२५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७,सांय व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा आटा एक सेर	१३ दीपक,१३झण्डी,१३ सतिये सतिये आटे के ।	सुहाली ,पूड़े ७,पूड़ियां ७ , मत्स्य मांस, पापडी , सांयकाल दक्षिण में चौरास्ते पर।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय२ मर्दय२ तापय२ हुं२ [illegible]	

अथ नक्षत्र -कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिन संख्या				रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमंत्र:	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मंत्र	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निर्मर्धेति	कछुए के मुख में घी दे
रोहिणी	घृतदान	३	९	१८	३०	ब्रह्मायवेति	सर्प को दूध-दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेति मन्त्र:	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र	बकरे के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदान	७	१४	२	२१	अदितिद्यौ रितिमन्त्र:	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदान	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गो-अजादिदान	०	०	४१	०	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राव्यदान	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदान	०	१५	०	३०	भगम्प्रणेति मन्त्र:	ऊंट के मुख में शहद दें
उ. फा.	अन्नदान	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्र:	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदान	१५	१७	१५	०	उदत्यंजातवेदैति मन्त्र:	भैंसे को कमल के फूल खिलायें
चित्रा	दुग्ध दान	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरिगति मन्त्र:	बाघ के लिए तगर धतूरे के फूल वन में रखें
स्वाती	गौघृत दान	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलावें
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्र:	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दें
अनुराधा	गौघृत दान	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्र:	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दें
ज्येष्ठा	तिलदान	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें
मूल	रौप्यपात्रदान	०	९	१५	६	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाव को दूध पिलावें
पू. षा.	गोमुक्तादान	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्र:	कछुए के मुख में नागर मोथे की बलि दें
उ.षा.	भोजनदान	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य डालें
श्रवण	श्रीफलदान	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्र	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें
धनिष्ठा	अश्वान्नादान	१५	४	२०	२१	वसो: पवित्रेति मन्त्र	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दें
शतभिषा	भोजनान्नदान	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्र	गौ को चावल खिलावें
पू. भा.	भोजनदान	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	कौए के मुख में फल की बलि दें
उ.भा.	अन्नदान	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र	गाय को चावल खिलावें
रेवती	फल दा.कन्यापूजन	१८	१०	९	२०	पूषन्नयेति मन्त्र	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दें

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में रोग नक्षत्र का नाम दिया गया है।

रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'-वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें-ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना - (१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब संतान उत्पन्न होती हैं।

(२) चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में संतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख)होने का समय जानना-(१)जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है॥

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े, उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(४) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना-(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट-

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युंजय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट व दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान, जप करे।

रोगोत्पत्तौ कुयोगा:

(१)रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२)सूर्यवार को मघा , द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३)सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो ।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११)हो ।

(५)बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा(२।७।१२) आश्लेषा हो।

(६)गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३)व मघा, हस्त हो ।

(७)शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता(४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा(५।१०।१५)व भरणी हो।

(९)सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी, कृत्ति, आर्दा, आश्लेषा, पूर्वा ३, विशा, ज्ये, धनि, शत, नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है ।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना । क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं। हाँ, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है । उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है ।

कालांग चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंङ्ग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा	पू.फा	उ.फा.	उ.फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्लेृ	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ. भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र , दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोगत्रिनाडीचक्र में एक ही नाडी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन नि:सदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाडीचक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना ।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०। १८ वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरूष की मृत्युपर्यन्त हालत होती है । रोग पर सर्पादि दर्शन पर,विग्रह - युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्ग विशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्म विकार किंवा वायु-विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगा कर निम्नलिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है । शांति के लिए उस ग्रह की शांति करावें। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित-भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट)शीघ्र निवृत्त हो जाएगा ।

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदिन	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रद. न
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगांदान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्न बलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेत वस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाक भो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	अपूपकान्न बलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यंत्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि, बुधदान
वृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि,गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि, शनिदान

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख,नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं । धूप देते समय ''खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा-'' इस मंत्र का उच्चारण करें ।

ग्रहगोचरादिदशा क्रमादिजन्य कृतानिष्ट-फल-शमनार्थ प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दान समय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूंर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २ शेष दिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूंर, शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५ शेष दिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्य उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्मांग, भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल, घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल, बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्येशवत्	ॐ मुन्येशमन्त्रः	मुन्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार के उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि-सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठ) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खायें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की माला जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्पदूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन करावें। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :- लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्रलिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्यान्ह के समय नमक के बिना दही - चावल, घी, खण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावें। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्ध्यर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार:-सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि-यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करें। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

मंगल शान्ति का सरल उपचार:- लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठ) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डूओं का दान करे। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावें। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्य नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार:- हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें, तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें, उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण, पीत-वस्त्र चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार- पीले वस्त्र, रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहूति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार:- सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल , सफेद फूल धारण करना आदि गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि- यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे, व्रत ५१ या ३१ करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १९ या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार:- घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहू केतु के व्रत की विधि- शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करें। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीज-मन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती हैं।

राहू, केतु शान्ति का सरल उपचार:- नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्॥
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी-कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी, लाल फूल, केसर, पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर, बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलैठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, गोंद, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करें। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारू, सरसों तथा लोहवान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट- स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविध शान्ति के लिए सामान्य औषध स्नान

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौं, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से मतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कर चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरू, वचन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं लोह शस्त्रभयं सदैव-असुखं कुर्यादर्मो सर्वदा॥ १॥ बृहत्कल्याणी फलम् .... राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये गाढ़ी द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्॥ हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा॥ २॥

सप्तधान्य- उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७.

अष्टगंध- अगर, कस्तूरी, कुंकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोमूत सफेद चन्दन।

नक्षत्र-राशि ज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेष :- नक्षत्र या राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय च.	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय च.	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ च.	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशयः	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्राणि	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथमचरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय च.	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय च.	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ च.	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू

राशयः	धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च.	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च.	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च.	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

ध्यान दें— नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो ङ की जगह घ, ञ की जगह द तथा ण की जगह पृ से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

॥ १ ॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्च। ततः पश्चादुद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्म राशि नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते - विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ॥ जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने पूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥ ६ ॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाममात्रं विचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥

अभिजित्-निर्णय-वैश्यप्रान्त्याङ्घ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥

उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानें। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करें, उसको श्रवण के १-१ चरण मानें। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्- चू. ल. अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडा कर्कः, माटे सिंहः, टो प ष ण ठ पो कन्या ॥
रते तुला तो ना यु वृश्चिक ये धफढभे धनुः ॥
भोजा खगा मकरः गुशडः कुम्भः दीथझञचो मीनः ॥

उपरोक्त राशि- ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे-मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृतिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष- जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्य' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ. षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ. षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोट- चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनस्पति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन- फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2060 वि.)

राशि	वैशाख (14 अप्रै. से 14 मई तक, सन् '03 ई.)	राशि	ज्येष्ठ (15 मई से 14 जून तक सन्. '03 ई.)	राशि	आषाढ़ (15 जून से 16 जुला. तक, सन् '03 ई.)
मेष	सेहत ठीक, स्थानान्तरण हो, धनहानि भय, विरोधी पक्ष कमजोर, अच्छे लोगों से मेल, नई योजना, कारोबार ठीक। अप्रैल 19, 20, 27, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।	मेष	स्थानान्तर हो, मन चिन्तित, भ्रातृ सुख, शत्रु प्रबल,स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक। मई 16, 17, 25, 26, 27; जून 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	मेष	शत्रु प्रबल, स्थानान्तर की योजना, धनलाभ होकर हानि हो, गुप्त चिन्ता। जून 21, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।
वृष	उदरविकार, आर्थिक संकट, निजीजन सहयोग, मानसिक अशान्ति, कारोबार यथावत्, स्त्री पक्ष से चिंता। अप्रैल 14, 20, 21, 22, 30; मई 1, 2, 10, 11 अशुभ।	वृष	कष्टभय, धनलाभ, सन्तति चिन्ता, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक, नेत्रकष्ट–विकार। मई 18, 19, 27, 28, 29; जून 6, 7, 8, 14 अशुभ।	वृष	अर्थलाभ, स्थानान्तर व कार्यान्तर की योजना, आय अच्छी लेकिन खर्च विशेष। जून 15, 16, 24, 25; जुलाई 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
मिथुन	रक्तविकार,, अर्थलाभ हो, भ्रातृ सुख, योजना कार्यान्वित, शत्रु हतप्रभ, कार्यान्तर से लाभ। अप्रैल 14, 15, 16, 23, 24 ; मई 3, 4, 12, 13 अशुभ।	मिथुन	अरिष्टभय, अचानक कष्ट, राजभय, आय से व्यय अधिक, कारोबार गड़बड़। मई 20, 21, 22, 30, 31; जून 1, 8, 9, 10 अशुभ।	मिथुन	देहपीड़ा, निजीजनों से अनबन, स्त्रीकष्ट, वृथा विवाद से बचें, नेत्र व सिर पीड़ा। जून 16, 17, 18, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।
कर्क	मन प्रसन्न, अर्थलाभ, अच्छे लोगों से मेल, सन्तति चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, मासान्त में विशेषखर्च। अप्रैल 17, 18, 25, 26, 27 ; मई 5, 6, 7, 14 अशुभ।	कर्क	अर्थलाभ, सुख, शत्रु बढ़ें, वृथा व्यय, स्त्री पक्ष से चिन्ता, यशलाभ। मई 15, 22, 23, 24; जून 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, निजीजनकष्ट, वृथा कलह, कारोबार ठीक, स्थानलाभ। जून 19, 20, 29, 30; जुलाई 8, 9, 16 अशुभ।
सिंह	हानिभय, निजीजनों से अनबन, शत्रु हतप्रभ, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार, मासान्त में शरीरिक कष्ट। अप्रैल 19, 20, 27, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।	सिंह	वायु रोग, धनलाभ होकर हानि, उत्साह बना रहे, सन्ततिपक्ष शुभ, कार्यान्तर का विचार। मई 16, 17, 25, 26, 27; जून 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	सिंह	अर्थहानि, कलह–क्लेश, स्त्रीकष्ट, मासान्त में लाभ, गुप्तशत्रुभय। जून 21, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।
कन्या	सुखलाभ, रोगभय, शत्रु बढ़ें, कारोबार में गिरावट,मासान्त में लाभयोग। अप्रैल 14, 20, 21, 22, 30; मई 1, 2, 10, 11 अशुभ।	कन्या	चिन्ता बढ़े, अर्थहानि, सम्पत्ति विवाद सुलझें, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ। मई 18, 19, 27, 28, 29; जून 6, 7, 8, 14 अशुभ।	कन्या	सिर व नेत्रकष्ट, वृथा व्यय हो, गृहक्लेश, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार अच्छा। जून 15, 16, 24, 25; जुलाई 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
तुला	धनहानि, शत्रुभय, सन्तानपक्ष शुभ, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। अप्रैल 14, 15, 16, 23, 24 ; मई 3, 4, 12, 13 अशुभ।	तुला	उदरविकार, भ्रातृ सुख, सन्तान पक्ष से खुशी, स्त्रीकष्ट, कारोबार से लाभ। मई 20, 21, 22, 30, 31; जून 1, 8, 9, 10 अशुभ।	तुला	कष्ट, रोग, शत्रु बढ़ें, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक, कार्यान्तर का विचार। जून 16, 17, 18, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।
वृश्चिक	उदरविकार, धनलाभ के बाद हानि, निजीजनों से मदद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। अप्रैल 17, 18, 25, 26, 27 ; मई 5, 6, 7, 14 अशुभ।	वृश्चिक	वायुविकार, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर का विचार। मई 15, 22, 23, 24; जून 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	वृश्चिक	सम्मान मिले, खर्च विशेष, सन्तान सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, नए कार्य की योजना। जून 19, 20, 29, 30; जुलाई 8, 9, 16 अशुभ।
धनु	शरीरकष्ट, धनलाभ, निजीजन सहयोग, शुभ समाचार, वृथाव्यय, मासान्त में लाभ। अप्रैल 19, 20, 27, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।	धनु	क्रोध बढ़े, मित्रों से मेल, सन्तति चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार में चिन्ता। मई 16, 17, 25, 26, 27; जून 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	धनु	क्रोध बढ़े, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर का विचार। जून 21, 22, 23; जुलाई 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ, बन्धु सुख, असफल योजना, स्त्री पक्ष से लाभ, आय से व्यय अधिक। अप्रैल 14, 20, 21, 22, 30; मई 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मकर	पित्तविकार, भ्रातृ सुख, निजीजनों से अनबन, समस्या उलझे, कारोबार कमजोर। मई 18, 19, 27, 28, 29; जून 6, 7, 8, 14 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, धनहानि, निजीजन सहयोग, वृथा कलह, सन्तान पक्ष ठीक। जून 15, 16, 24, 25; जुलाई 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
कुम्भ	सुख, शत्रुनाश, निजीजन सहयोग, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीकष्ट, अशुभ समाचार। अप्रैल 15, 16, 23, 24 ; मई 3, 4, 12, 13 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, स्थिर सम्पत्ति विवाद, सन्तानपक्ष शुभ। मई 20, 21, 22, 30, 31; जून 1, 8, 9, 10 अशुभ।	कुम्भ	रक्त–पित्तविकार, धनलाभ, सम्पत्ति सुख, यात्रा में कष्ट, वृथा कलह से बचें। जून 16, 17, 18, 26, 27, 28; जुलाई 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजनों से अनबन, यात्रा में कष्ट, नई योजना से लाभ, कफ–पित्त विकार। अप्रैल 17, 18, 25, 26, 27 ; मई 5, 6, 7, 14 अशुभ।	मीन	राजभय, गुप्तशत्रुभय, अर्थहानि, मित्रों से मदद, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मई 15, 22, 23, 24; जून 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।	मीन	सिर व नेत्र पीड़ा, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, गुप्त चिन्ता, आमदन से खर्च अधिक। जून 19, 20, 29, 30; जुलाई 8, 9, 16 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2060 वि.)

राशि	श्रावण (17 जुला. से 16 अग. तक, सन् '03 ई.)	राशि	भाद्रपद (17 अग. से 16 सितं. तक, सन् '03 ई.)	राशि	आश्विन (17 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् '03 ई.)
मेष	बन्धनभय, मन अशान्त, नई योजना से हानि, कार्यान्तर का विचार। जुलाई 18, 19, 20, 28, 29, 30; अगस्त 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ।	मेष	नुकसान का डर, स्थानान्तर व कार्यान्तर की योजना, निजीजनों से वैमत्य, मन अशान्त। अगस्त 17, 25, 26; सितम्बर 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	मेष	नेत्रकष्ट व सिरपीड़ा, वृथाव्यय, शत्रु बढ़ें, स्त्री सुख, कारोबार ठीक। सितम्बर 21, 22, 23, 30; अक्तूबर 1, 8, 9, 10 अशुभ।
वृष	हानिभय, शत्रु प्रबल, सम्पत्ति विवाद, निजीजन कष्ट, कर्जा सिर चढ़े। जुलाई 21, 22, 23, 31; अगस्त 1, 8, 9, 10 अशुभ।	वृष	उत्साह बढ़े, शत्रुपक्ष कमजोर, कारोबार में बाधा, मासान्त में हानि। अगस्त 17, 18, 19, 27, 28; सितम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	वृष	उदरविकार, सन्तानहेतु खर्च विशेष, गुप्तचिन्ता, कारोबार में रुकावट, कार्यान्तर से लाभ। सितम्बर 23, 24, 25; अक्तूबर 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
मिथुन	सम्पत्ति विवाद, वृथा कलह, अपमान भय, कार्यान्तर से लाभ। जुलाई 23, 24, 25; अगस्त 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	मिथुन	अर्थहानिभय, नई योजना में हानि, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। अगस्त 20, 21, 22, 29, 30, 31; सितम्बर 7, 8, 16 अशुभ।	मिथुन	स्त्री सुख, पित्तविकार, वृथाकलह से बचें, कारोबार ठीक, मासान्त कष्टप्रद। सितम्बर 17, 18, 25,26, 27; अक्तूबर 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, धनहानि भय, निजीजन सहयोग, स्थानलाभ, सन्तान पक्ष से चिन्ता। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28; अगस्त 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	कर्क	वायुविकार, निजीजन सहयोग, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में रोग से परेशानी। अगस्त 22, 23, 24, 31; सितम्बर 1, 2, 9, 10 अशुभ।	कर्क	उदरविकार, निजीलोगों से अनबन, यात्राकष्ट, नई योजनाओं से हानि, कारोबार ठीक। सितम्बर 19, 20, 28, 29; अक्तूबर 6, 7, 8, 16 अशुभ।
सिंह	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि, वृथाकलह, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जुलाई 18, 19, 20, 28, 29, 30; अगस्त 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ।	सिंह	कफ-वायुविकार, निजीजनकष्ट, वृथा कलह, गुप्त-शत्रुपक्ष से हानि, कारोबार गड़बड़। अगस्त 17, 25, 26; सितम्बर 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	सिंह	पित्तविकार, नेत्रकष्ट, वृथाव्यय, यात्रा में कष्ट, स्त्रीसुख, स्थान व कार्यान्तर का विचार। सितम्बर 21, 22, 23, 30; अक्तूबर 1, 8, 9, 10 अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजनकष्ट, शत्रु प्रबल, नीच से अपमान भय। जुलाई 21, 22, 23, 31; अगस्त 1, 8, 9, 10 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, कर्जे से बचें, निजीलोगों से अनबन, सन्ततिपक्ष से चिन्ता, स्त्री सुख। अगस्त 17, 18, 19, 27, 28; सितम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, शत्रु कमजोर, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में बाधा। सितम्बर 23, 24, 25; अक्तूबर 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
तुला	पित्तविकार, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, असफल योजना, स्त्री सुख। जुलाई 23, 24, 25; अगस्त 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	तुला	सेहत गड़बड़, धनलाभ, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीपक्ष शुभ, कार्यान्तर का विचार। अगस्त 20, 21, 22, 29, 30, 31; सितम्बर 7, 8, 16 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, अर्थहानि, निजीजन सहयोग, सन्तानपक्ष शुभ, मासान्त में अपमान भय। सितम्बर 17, 18, 25, 26, 27; अक्तूबर 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।
वृश्चिक	कफ-पित्तविकार, धनलाभ , वृथाकलह, आय से व्यय अधिक, कार्यान्तर का विचार। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28; अगस्त 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, निजीजन कष्ट, नई योजना, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। अगस्त 22, 23, 24, 31; सितम्बर 1, 2, 9, 10 अशुभ।	वृश्चिक	उदरविकार, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, सन्ततिसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। सितम्बर 19, 20, 28, 29; अक्तूबर 6, 7, 8, 16 अशुभ।
धनु	निजीजनकष्ट, पुरानी समस्या उलझे, सन्तानपक्ष से खुशी, कारोबार में रदोबदल। जुलाई 18, 19, 20, 28, 29, 30; अगस्त 6, 7, 8, 15, 16 अशुभ।	धनु	कष्टभय, वृथाकलह से बचें, बन्धुसुख, विद्या व नई योजना में सफलता, कारोबार गड़बड़। अगस्त 17, 25, 26; सितम्बर 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, अर्थहानि भय, आय से व्यय अधिक, गुप्तचिन्ता, मासान्त में व्ययविशेष। सितम्बर 21, 22, 23, 30; अक्तूबर 1, 8, 9, 10 अशुभ।
मकर	अर्थहानि, निजीजन विरोध, अचानक लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त में हानि। जुलाई 21, 22, 23, 31; अगस्त 1, 8, 9, 10 अशुभ।	मकर	उदरविकार, वृथाव्यय, निजीजन सहयोग, नीच से अपमान भय, कारोबार में बाधा। अगस्त 17, 18, 19, 27, 28; सितम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	मकर	सेहत गड़बड़, शत्रु से भय, सम्पत्ति विवाद, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। सितम्बर 23, 24, 25; अक्तूबर 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।
कुम्भ	उदरविकार, निजीजन सहयोग, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़। जुलाई 23, 24, 25; अगस्त 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	कुम्भ	शारीरकष्ट, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजन सहयोग, सन्तति सुख, कार्यान्तर का विचार। अगस्त 20, 21, 22, 29, 30, 31; सितम्बर 7, 8, 16 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन कष्ट, सम्पत्ति विवाद, कार्यान्तर का विचार। सितम्बर 17, 18, 25, 26, 27; अक्तूबर 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।
मीन	शत्रु से हानि, विशेष कष्टभय, अर्थलाभ, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28; अग. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, नई योजना हानिप्रद, आय से व्यय अधिक, गुप्त शत्रु से सावधान। अगस्त 22, 23, 24, 31; सितम्बर 1, 2, 9, 10 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। सितम्बर 19, 20, 28, 29; अक्तूबर 6, 7, 8, 16 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2060 वि.)

राशि	कार्तिक (17 अक्तू. से 15 नवं. तक, सन् '03 ई.)	राशि	मार्गशीर्ष (16 नवं. से 15 दिसं. तक, सन् '03 ई.)	राशि	पौष (16 दिसं., सन् '03 ई. से 13 जन. सन् '04 ई. तक)
मेष	रोगभय, स्थानान्तर का विचार, कारोबार गड़बड़, उलझनें बढ़ें, मासान्त में लाभ। अक्तूबर 18, 19, 20, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 15 अशुभ।	मेष	राजभय, शत्रु कमजोर, धनहानि, सम्पत्ति विवाद, अचानक कष्ट आए। नवम्बर 16, 23, 24, 25; दिसम्बर 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	मेष	शत्रु कमजोर, स्थानान्तर का विचार, अचानक कष्टमय, यात्रा में कष्ट, कारोबार ठीक। दिसम्बर 21, 22, 29, 30, 31; जनवरी 8, 9, 10 अशुभ।
वृष	कफविकार, धनलाभ,दोस्तों से अनबन, शत्रु हतप्रभ, कारोबार ठीक। अक्तूबर 21, 22, 29, 30; नवम्बर 7, 8, 9 अशुभ।	वृष	रोगभय, उत्साह बढ़े, नए काम का विचार, आमदन से खर्च ज्यादा, मासान्त में विशेष हानि से बचें। नवम्बर 17, 18, 19, 25, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	वृष	सेहत कमजोर, मित्रों से मेल, नए शत्रु खड़े हों, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। दिसम्बर 16, 23, . 24; जनवरी 1, 2, 11, 12 अशुभ।
मिथुन	सेहत ठीक, भ्रातृ कष्ट, सम्पति विवाद, नई योजना से हानि, स्त्रीसुख, कारोबार बेहतर। अक्तूबर 23, 24, 31; नवम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	मिथुन	धनहानि, नेत्रकष्ट, अशुभ समाचार, स्त्री सुख, कारोबार में रद्दोबदल। नवम्बर 19, 20, 21, 27, 28, 29; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धनहानि, नेत्रकष्ट भय, शत्रु कमजोर, सन्तति कष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। दिसम्बर 17, 18, 25, 26; जनवरी 3, 4, 5, 13 अशुभ।
कर्क	सेहत बिगड़े, अर्थलाभ होकर हानि, बन्धुसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। अक्तूबर 17, 18, 25, 26; नवम्बर 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	कर्क	भयपीड़ा, उत्साह बढ़े, धनलाभ, सन्तति कष्ट, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। नवम्बर 21, 22, 23, 30; दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ ।	कर्क	रोगभय, आय से व्यय अधिक, शत्रु बढ़ें, अचानक धनलाभ, कारोबार में रद्दोबदल। दिसम्बर 19, 20, 27, 28, 29; जनवरी 6, 7, 8 अशुभ।
सिंह	कर्जा सिर चढ़े, निजीजन सहयोग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट, गुप्त चिन्ता। अक्तूबर 18, 19, 20, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 15 अशुभ।	सिंह	वायुरोग, कर्जा सिर चढ़े, शत्रु प्रबल, कार्यहानि, मन अशान्त, सत्री सुख। नवम्बर 16, 23, 24, 25; दिसम्बर 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	सिंह	हानिभय, शरीर कष्ट, उत्साह बढ़े, नई योजना से लाभ, निजीजन कष्ट, कारोबार कमजोर। दिसम्बर 21, 22, 29, 30, 31; जनवरी 8, 9, 10 अशुभ।
कन्या	कफवायुविकार, नेत्रकष्ट, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार में बाधा। अक्तूबर 21, 22, 29, 30; नवम्बर 7, 8, 9 अशुभ।	कन्या	शरीरकष्ट, अर्थलाभ, शुभ काम में खर्च, कारोबार कुछ ठीक, मासमध्य कष्टप्रद। नवम्बर 17, 18, 19, 25, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, वृथा कलह, कारोबार में हानि, बन्धु से मदद, मासान्त में कष्ट। दिसम्बर 16, 23, 24; जनवरी 1, 2, 11, 12 अशुभ।
तुला	गुप्तचिन्ता, अर्थलाभ, निजीजन कष्ट, नई योजना, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। अक्तूबर 23, 24, 31; नवम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	तुला	यात्रा हो, विवाद से दूर रहें, कष्टभय, निजीजन सहयोग, कारोबार गड़बड़। नवम्बर 19, 20, 21, 27, 28, 29; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।	तुला	कफ–वायुविकार, निजीजन सहयोग, नई योजना में हानि, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। दिसम्बर 17, 18, 25, 26; जनवरी 3, 4, 5, 13 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, यात्रासुख, शुभ समाचार। अक्तूबर 17, 18, 25, 26; नवम्बर 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	वृश्चिक	शत्रु बढ़ें, अर्थहानि, रोगभय, अग्नि से भय, मासान्त ठीक, कार्यान्तर से लाभ। नवम्बर 21, 22, 23, 30; दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ ।	वृश्चिक	धनलाभ होकर हानि, सम्पत्ति विवाद,शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर का विचार, गुप्तशत्रुभय। दिसम्बर 19, 20, 27, 28, 29; जनवरी 6, 7, 8 अशुभ।
धनु	कफवायुविकार, अर्थलाभ, निजीजन सुख, वृथाकलह से बचें, कार्यान्तर से लाभ। अक्तूबर 18, 19, 20, 27, 28; नवम्बर 5, 6, 15 अशुभ।	धनु	अर्थलाभ, सेहत ठीक, सम्पत्ति विवाद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, मासान्त में खर्च अधिक। नवम्बर 16, 23, 24, 25; दिसम्बर 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, हिम्मत बढ़े, सन्तानपक्ष से चिन्ता, खर्चविशेष, कार्यान्तर से हानि। दिसम्बर 21, 22, 29, 30, 31; जनवरी 8, 9, 10 अशुभ।
मकर	मन परेशान, अच्छे लोगों से मेल, गुप्तचिन्ता, मासान्त में विशेषखर्च। अक्तूबर 21, 22, 29, 30; नवम्बर 7, 8, 9 अशुभ।	मकर	हानिभय, सुखलाभ, विवाद से दूर रहें, मानहानि भय, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। नवम्बर 17, 18, 19, 25, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	मकर	अर्थलाभ होकर हानि, स्त्रीकष्ट, कारोबार में बाधा, मासान्त ठीक। दिसम्बर 16, 23, 24; जनवरी 1, 2, 11, 12 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन सहयोग, शत्रु बढ़ें, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक। अक्तूबर 23, 24, 31; नवम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।	कुम्भ	शत्रुबढ़ें, धनहानि भय, निजीजन सुख, गुप्तचिन्ता, कारोबार बिगड़े। नवम्बर 19, 20, 21, 27, 28 29; दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ।	कुम्भ	अर्थलाभ, बन्धुसुख, गुप्तशत्रु से भय, कार्यान्तर से लाभ। दिसम्बर 17, 18, 25, 26; जनवरी 3, 4, 5, 13 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ। अक्तूबर 17, 18, 25, 26; नवम्बर 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।	मीन	रोगभय, अर्थलाभ होकर हानि, शत्रुबढ़ें, कारोबार में रद्दोबदल से लाभ, गुप्त शत्रु से भय। नवम्बर 21, 22, 23, 30; दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ ।	मीन	धनलाभ होकर हानिभय, स्त्रीसुख, मानसम्मान मिले, नए कार्य की योजना। दिसम्बर 19, 20, 27, 28, 29; जनवरी 6, 7, 8 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2060 वि.)

राशि	माघ (14 जन. से 12 फर. तक, सन् 2004 ई.)	राशि	फाल्गुन (13 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2004 ई.)	राशि	चैत्र (14 मार्च से 13 अप्रैल तक, सन् 2004 ई.)
मेष	स्थान हानि भय, आकस्मिक धन प्राप्ति, वृथाविवाद से बचें, कार्यान्तर से लाभ। जनवरी 17, 18, 19, 26, 27; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।	मेष	सेहत गड़बड़, धनलाभ हो, निजीजन सहयोग, सन्ततिचिन्ता, स्त्रीसुख। फरवरी 13, 14, 15, 22, 23, 24; मार्च 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	मेष	बन्धनभय, धनलाभ होकर हानि हो, मित्रों से अनबन, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। मार्च 20, 21, 22, 30, 31; अप्रैल 1, 8, 9 अशुभ
वृष	सेहत ठीक, अकस्मात् धनहानि होकर लाभ, शत्रु हतोत्साह, सन्तानपक्ष से चिन्ता। जनवरी 19, 20, 21, 28, 29, 30; फरवरी 7, 8 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अचानक भारी हानि, मित्रों से अनबन, आय से व्यय अधिक। फरवरी 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 5, 6, 7 अशुभ।	वृष	शत्रु कमजोर, धनलाभ होकर हानि, निजी लोगों से अनबन, मासान्त में हानि। मार्च 14, 15, 23, 24, 25; अप्रैल 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
मिथुन	भयपीड़ा, वृथाव्यय, क्लेश रहे, स्त्रीपक्ष शुभ,मासान्त में लाभ। जनवरी 14, 21, 22, 23, 30, 31; फरवरी 1, 9, 10, 11 अशुभ।	मिथुन	षरीरपीड़ा, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष ठीक, गुप्त चिन्ता, मासान्त ठीक। फरवरी 18, 19, 27, 28, 29; मार्च 7, 8, 9 अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, कर्जा चढ़े, वृथा विवाद से बचें, स्त्रीपक्ष शुभ, मासान्त में लाभ होकर हानि,। मार्च 16, 17, 25, 26, 27; अप्रैल 4, 5, 12, 13 अशुभ।
कर्क	उदरविकार, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, कारोबार गड़बड़, आय से व्यय अधिक। जनवरी 15, 16, 17, 23, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, अचानक कश्टभय, कलह बढ़े, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। फरवरी 13, 20, 21, 29; मार्च 1, 2, 10, 11 अशुभ।	कर्क	हानि, मन अशान्त, निजीजन सहयोग, स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में रद्दोबदल से लाभ। मार्च 18, 19, 20, 28, 29, 30; अप्रैल 6, 7 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, धनहानि, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु बढ़ें, कारोबार में कुच्छ बाधा। जनवरी 17, 18, 19, 26, 27; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।	सिंह	शरीर अस्वस्थ, शत्रु प्रबल, कार्य में बाधा, स्त्रीसुख, नए कार्य में लाभ। फरवरी 13, 14, 15, 22, 23, 24; मार्च 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	सिंह	कफ--वायुविकार, धनलाभ, सम्पत्ति विवाद, गुप्त शत्रुभय, कारोबार में बाधा। मार्च 20, 21, 22, 30, 31; अप्रैल 1, 8, 9 अशुभ
कन्या	कष्ट भय, भ्रातृ कष्ट, शुभकार्यों में खर्च, असफल योजना, वृथा कलह। जनवरी 19, 20, 21, 28, 29, 30; फरवरी 7, 8 अशुभ।	कन्या	धनलाभ, बन्धुसुख, गुप्तचिन्ता, कारोबार में रद्दोबदल, मासान्त में खर्च अधिक। फरवरी 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 5, 6, 7 अशुभ।	कन्या	कष्टभय, निजीलोगों से धनलाभ, बनते कार्य में रुकावट, गुप्त षत्रुभय, कार्यान्तर का विचार। मार्च 14, 15, 23, 24, 25; अप्रैल 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजन सहयोग, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से हानि। जनवरी 14, 21, 22, 23, 30, 31; फरवरी 1, 9, 10, 11 अशुभ।	तुला	कश्टभय, षत्रु कमजोर,, निजीजन सहयोग, स्त्रीकश्ट, कारोबार ठीक। फरवरी 18, 19, 27, 28, 29; मार्च 7, 8, 9 अषुभ।	तुला	स्थानान्तरण का योग, वृथाकलह से बचें, चोर--ठग से सावधान, स्त्री से अनबन। मार्च 16, 17, 25, 26, 27; अप्रैल 4, 5, 12, 13 अशुभ।
वृश्चिक	अचानक हानि, निजी लोगों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। जनवरी 15, 16, 17, 23, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि, स्त्रीसुख, मित्रमिलाप, कारोबार में रुकावट। फरवरी 13, 20, 21, 29; मार्च 1, 2, 10, 11 अषुभ।	वृश्चिक	उदरविकार, अर्थलाभ, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख, हिस्सेदारी में हानि। मार्च 18, 19, 20, 28, 29, 30; अप्रैल 6, 7 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, बन्धु से मदद, गुप्तचिन्ता, कारोबार में हानि। जनवरी 17, 18, 19, 26, 27; फरवरी 4, 5, 6 अशुभ।	धनु	वायुविकार,, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, मन अषान्त, कारोबार में फेरबदल। फरवरी 13, 14, 15, 22, 23, 24; मार्च 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि हो, सन्तानपक्ष से चिन्ता, वृथाकलह से बचें। मार्च 20, 21, 22, 30, 31; अप्रैल 1, 8, 9 अशुभ
मकर	उदरविकार, शत्रु से भय, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार में गतिरोध। जनवरी 19, 20, 21, 28, 29, 30; फरवरी 7, 8 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, स्त्रीसुख, नई योजना से लाभ। फरवरी 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 5, 6, 7 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक, हाथ तंग रहे, मानहानिभय,स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक,। मार्च 14, 15, 23, 24, 25; अप्रैल 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।
कुम्भ	अर्थलाभ, अच्छे लोगों ले मेल, कारोबार में रद्दोबदल, मासान्त में लाभ। जनवरी 14, 21, 22, 23, 30, 31; फरवरी 1, 9, 10, 11 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, सम्पदा लाभ, शुभ समाचार। फरवरी 18, 19, 27, 28, 29; मार्च 7, 8, 9 अशुभ।	कुम्भ	सुखलाभ, गुप्तषत्रु से सावधान, अच्छे लोगों से मेल, सम्पत्ति विवाद से दूर रहें। मार्च 16, 17, 25, 26, 27; अप्रैल 4, 5, 12, 13 अशुभ।
मीन	राजभय, व्यापार में हानि, निजीजन सहयोग, कष्ट--शत्रुभय, नई योजना से हानि। जनवरी 15, 16, 17, 23, 24, 25; फरवरी 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।	मीन	स्त्रीकष्ट, कारोबार बेहतर,, सेहत ठीक, निजीजन सहयोग, कार्यान्तर का विचार । फरवरी 13, 20, 21, 29; मार्च 1, 2, 10, 11 अशुभ।	मीन	सेहतठीक, व्यापार में हानि, बन्धुसुख, स्त्रीसुख, मासान्त ठीक रहे। मार्च 18, 19, 20, 28, 29, 30; अप्रैल 6, 7 अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल-विचार (सं.२०६० वि.)

(सन् २००३-२००४ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१०४, सृष्टिसंवत् १९५५८८५१०४, श्री विक्रम संवत् २०६०, शक संवत् १९२५, श्री कृष्णजन्म संवत् ५२२९, कलिसंवत् ५१०४, श्रीजैनमहावीर निर्वाण संवत् २५२८-२९, श्रीबुद्ध संवत् २६२६-२७, हिजरी सन् १४२३-२४, फसली सन् १४१०-१४११, ईस्वी सन् २००३-०४।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का "दुर्मुख" नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है: -

" दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीति-चौराकुलाधरा।
महावैरा महीनाथा वीर-वारण-वाजिभिः।। "

भाव यह है - दुर्मुख वर्ष में वर्षा मध्यम हो, पृथ्वी पर ईति (प्राकृतिक आपदाओं) एवं चोरी (घुसपैठादि)घटनाओं से जनता अशान्त रहे । सैन्यबल, हाथी एवं घुड़सवार सेना को सन्नद्ध रहना पड़े। शासकों किंवा विभिन्न विरोधी राष्ट्रों के अध्यक्षों में परस्पर (नीती विरोध से) महावैर के प्रदर्शन स्वरूप वातावरण क्षुब्ध रहे।

किञ्च - " दुर्मुखे शनिः स्वामी; अत्राशुभः, अल्पो मेघः, महतां लोकानां पीड़ा, सरोगा लोकाः, उत्तरापथि दुष्कालः, पश्चिमायां महापीड़ा, पूर्वदिशे सुभिक्षं, अन्नं महर्घम्, वैरम्, नकुल-सर्पाभ्यां विषं गृह्यते; चैत्रादि मासत्रये समर्घम्, आषाढ़ेऽल्पमेघः, श्रावणे प्रचण्ड-वायुः, सर्वधान्य-महर्घता, भाद्रपदे महन्महर्घम्, खण्डवृष्टिः, आश्विने रोगपीड़ा, सर्वे धातवः समर्घाः, कार्त्तिकादि मासचतुष्ट्ये रौरवं दुर्भिक्षम्, गोब्राह्मण-पीड़ा, माता-पुत्रविक्रयकरा, पितरः पुत्र-स्नेहमुक्ताः, फाल्गुने रोगपीड़ा, राज्ञां परस्परं विरोधः, लोकपीड़ा।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) **बुध, मन्त्री चन्द्र , सस्येश** (चौमासी फसलों के स्वामी) **बुध, धान्येश** (शीतकालीन फसलों के स्वामी) **मंगल, मेघेश** (मौसम-वर्षा-पानी के स्वामी) **सूर्य ,रसेश** (गुड़-खण्ड-रसकस आदि के स्वामी) **शुक्र, नीरसेश** (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) **बुध, फलेश** (फल-फूल आदि के स्वामी) **सूर्य, धनेश** (धन-दौलत एवम् खजाना के स्वामी) **बुध** एवं **दुर्गेश** (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) **सूर्य** हैं। वर्ष के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल निम्नांकित है:-

(१) राजा बुध का फलः-

" बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्य-विवाह-मंगलम्।
प्रकुर्वते दानदयां जनाश्च जगत् सुभिक्षं धनधान्य-संकुलम्।।"

अर्थात्- वर्षा पर्याप्त हो, घर घर में विवाहादि मांगलिक कृत्य हों, जनता में दान-प्रवृत्ति एवं दयाभाव रहे, सुभिक्ष रहे, संसार धनधान्य से समृद्ध रहे।

(२) मन्त्री चन्द्र का फल-

"शशिनि मन्त्रिपदे बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि-समेधिताः ।।"

अर्थात् - धनधान्य समृद्धि रहे, जनता सुखी रहे। वर्षा अत्यधिक हो, नगरों में आनन्द मंगल रहे।

(३) सस्येश बुध का फल -

"जलधरा जलराशिमुचो धरा सुख-समृद्धियुता निरुपद्रवा।
द्विजगणः श्रुतिपाठकरःसदा प्रथम-सस्यपतौ सति बोधने।।"

अर्थात्- वर्षा खूब हो, सुख-समृद्धि रहे, जनता उपद्रवग्रस्त न हो, द्विजवर्ग वेदपाठ में निरत रहें।

(४) धान्येश मंगल का फल-

"भूमिजे ग्रीष्मधान्येशे ग्रीष्मधान्य-महर्घता।
शालीक्षु-घृत-तैलादि महर्घं हि भवेदिह।। "

अर्थात् - ग्रीष्मधान्य (मूंग, मोठ ,बाजरा आदि) मंहगे हों । चावल, ईख, घी एवं खाद्य तेल भी तेज रहें।

(५) मेघेश सूर्य का फल -

" जलदपो यदि वासरपस्तदा सरसि वै रमते जनता रसम्।
यव-चणेक्षु-निवार-सुशालिभिः सुखचयः सुलभो भुवि वर्तते।।"

अर्थात्- जौ, चना, ईख, चावल आदि की फसल उत्तम हो, पृथ्वी पर सुख समृद्धि रहे।

(६) रसेश शुक्र का फल-

" यजन-याजनकोत्सव-कौतुका जनपदा जलतोषित-मानसाः।
सुख-समृद्ध-सुमोदवती धरा धरणिपा हतपापगणाः प्रियाः।।"

अर्थात् - जनता यज्ञादि धर्मिक अनुष्ठान करने-कराने में रुचि रखे, वर्षा पर्याप्त होने से कृषकवर्ग सन्तुष्ट रहे। सुख-समृद्धि रहे, शासकवर्ग कुपथ पर न चलें, न्यायमार्ग में प्रवृत्त रहें।

(७) नीरसेश बुध का फल-

" चित्र-वस्त्रादिकं चैव शंख-चन्दन-पूर्वकम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ।।"

अर्थात् - छींट के कपड़े, शंख-चन्दन आदि सब मंहगे हों।

(८) फलेश सूर्य का फल -

" द्रुमवती वरपुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोग विशेषिता।
बहुजलं जलदो भुवि मुञ्चति क्वचिदपि प्रमितं फलपे रवौ ।।"

अर्थात् -सूर्य फलेश हो तो अनेक प्रकार के फलपुष्प और वृक्षों से पृथ्वी सुशोभित रहे। वर्षा कहीं अच्छी और कहीं थोड़ी हो।

(९) धनेश बुध का फल -

" द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविध-संग्रहवस्तु फलार्थदा।
द्विजवरा जप-यज्ञसुसंयुताः कृषि-विशेष-विशेषित-मानसाः।। "

अर्थात् - नानाविध (अनाजों किंवा घी आदि) वस्तुओं के संग्रह से लाभ मिले। धार्मिक वृत्ति के लोग यज्ञ-जाप आदि में निरत रहें। कृषक लोग विशेषरूप से कृषिकर्म में दत्तचित्त रहें।

(१०) दुर्गेश सूर्य का फल -

" नय-विशेषकरस्तरणिस्तदा गतभया नरराज-पुरोगमाः।
समधिको न तदा नृपजोन्यज : निजपथि व्रजतां न भयं क्वचित्।।"

अर्थात् - शासक न्यायप्रिय हों, प्रजा निर्भय रहे। राजा-प्रजा में तालमेल रहे। स्वकर्म में निरत व्यक्ति के लिए किंवा नियत मार्ग पर चलने वालों के लिए कोई भय न रहे।

सूचना- यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः **राजा** का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; **मन्त्री** का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में, **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में, **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में, **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में, **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में ; **फलेश-दुर्गेश** एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ५, धान्य १३, तृण ६, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा ११, निद्रा १५, आलस्य ११, उद्यम ११, शांति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ३, पाप १७, पुण्य ३, व्याधि १७, व्याधिनाश १३, आचार ११, अनाचार १५, मृत्यु ११, जन्म १, देशोपद्रव ५, देशस्वास्थ्य ६, चौर १५, चौरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशांति ५, उदिभज्ज ३, जरायुज ३, अण्डज ३, स्वेदज ३, टिड्डी ७, तोता ८, मूषक ८, सोना १६, तांबा१७, स्वचक्र १५, परचक्र १७, वृष्टि १६, वृष्टिनाश ६ एवं संवत् विश्वा १८ है।

आवर्तकादि चतुर्मेघ - चतुर्मेघों में 'द्रोण ' संज्ञक मेघ है। **फल** - बाढ़ से फसलों को हानि एवं तूफान व अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि भी हो। आकालिक वर्षा से भी हानि हो- " **द्रोणे वर्षति सर्वदा।**"

नवमेघ विचार- नौ मेघों में इसवर्ष ' आवर्त ' नामक मेघ है।

फल- " विनाशनं शालि-यवादिकानां तथैव कार्पास-घृतादिकानाम्।
घनो यदावर्तक नामधेयः स्वल्पं जलं स्याद्धनिनामपायः ।।"

अर्थात् - जौ, चावल, गेहूं, चना, कपास एवं तेल बीजों की फसलों को हानि पहुंचे। घी-तेल आदि मंहगे हों। वर्षा आवश्यकता के अनुकूल न हो। धनाढ्य लोग व्यापार में चिन्तित रहें।

अनन्तादि अष्टनाग- इस वर्ष अनन्तादि अष्टनागों में **'अनन्त'** नामक नाग है। **फल** - वर्षा कुछ भागों में अच्छी, कहीं बाढ़ से हानि का योग बने।

सुबुघ्नादि द्वादशनाग- इस वर्ष बारह नागों में 'कंबल' नामक नाग है। **फल** -

" यदैव कम्बलाभिधो भुजंगमः प्रजायते।
तदास्ति मध्यमं जलं समस्त-धान्यमुत्तमम्।।"

अर्थात् :- वर्षा मध्यम हो, लेकिन सर्वविध अनाज उत्तम हों।

सप्तवायु - आवह आदि वायुसप्तक में इस वर्ष ' **आवह**' नामक वायु है। **फल**-आवह वायु के कारण वर्षा की कमी अनुभव हो, बादल हों, वायुवेग से गगन निरभ्र हो। कहीं असामयिक वर्षा व कहीं अतिवर्षण से हानि भी हो।

इस वर्ष का वाहन - वर्षेश बुध होने से इस वर्ष का वाहन 'गीदड़' है। **फल**- देश में अघटित घटनाएं घटित हों। काश्मीर, राजस्थान एवं झारखण्ड, नेपाल आदि में कहीं उग्रवाद से परेशानी, कहीं अकाल की स्थिति से सरकार चिन्तित रहे। देश को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़े।

इस वर्ष के चार स्तम्भ-

(१) **जलस्तम्भ**- (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ६३ प्रतिशत है।
(२) **वायुस्तम्भ**- (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र) ३६ प्रतिशत है।
(३) **तृणस्तम्भ**- (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ७५ प्रतिशत है।
(४) **अन्नस्तम्भ**-(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ५१ प्रतिशत है।

उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् का शुभाशुभ भी इन्हीं

स्तम्भों के आधार पर जाना जा सकता है। जनमानस एवं देश-विशेष की खुशहाली के मूल ये चार स्तम्भ ही हैं। अतः इन चार स्तम्भों का प्रतिशतता के आधार पर सामूहिक फल इस प्रकार होगा।

फल- गतवर्ष जल एवं तृणस्तम्भ बहुत क्षीण थे; तृणस्तम्भ क्षीण होने से पूर्व-दक्षिणवर्त्ती भूभाग पर अकाल की छाया एवं पशुचारा कम होना लिखा था। लेकिन इस वर्ष चारों स्तम्भ ठीक हैं। **जलस्तम्भ ६३ प्रतिशत** होने से वर्षा आवश्यकता से अधिक होती मालूम होती है। कई प्रान्तों में भारी वर्षा से बाढ़ का सामना करना पड़ सकता है। **वायु स्तम्भ ३६ प्रतिशत** होने से आकाश में उमड़े भारी बादलों को तितर-बितर करने में वायुवेग सक्षम न होगा। **तृणस्तम्भ ७५ प्रतिशत** होने से पशुओं के लिए चारा काफी होगा, पशुधन सुखी रहे। **अन्नस्तम्भ ५१ प्रतिशत** होने से अनाज सर्वत्र सुलभ हों एवं सरकार को अनाज भण्डारण में कठिनाई हो।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष-(अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ७६ प्रतिशत है।
(२) द्वितीय आर्ष-(सं. २०५६ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ६३ प्रतिशत है।
(३) तृतीय आर्ष-(श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ८५ प्रतिशत है।
(४) चतुर्थ आर्ष -(कार्त्तिक पूर्णिमा मो कृत्तिका नक्षत्र) का अभाव है।

फल- इसवर्ष वर्षरक्षा के संकेतक प्रथम तीन **आर्ष** बहुत प्रवल हैं। राजनैतिक दृष्टि से देश को सशक्त राष्ट्र के रूप मे उभारने का प्रयास जारी रहेगा। वैज्ञानिक नवीन तकनीक के आयुधपरीक्षण - संवर्धन की ओर प्रवृत्त रहेंगे। सैन्यशक्ति को समृद्ध करने के लिए विशेष व्यय होगा। अणुशक्ति सम्पन्न देश बनाने के लिए राजनीतिज्ञों के प्रयास सफल होंगे। चतुर्थ आर्ष का अभाव सीमाप्रान्तों पर वातावरण को आशान्त, कहीं भूकम्प, अग्निकाण्ड एवं कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जनधनहानि का संकेत देता है।

दोहा :" अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यों कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै,कहै भड्डली साख विनाशै।। "

रोहिणी का वास:- इसवर्ष रोहिणी का वास **'समुद्र'** में है।

फल - **" समुद्रे तु महावृष्टिः"**- अनेकत्र भयंकर वर्षा-बाढ़ से विनाशलीला का भयावहरूप किसी भी भाग में देखा जाएगा।

समय का वास- इसवर्ष समय का वास **'माली'** के घर है; -**"मालिनः प्रचुरा वृष्टिः"**,- पर्याप्त वर्षा हो।

शनि की दृष्टि -संवत् (२०६० वि.) के प्रारम्भ से ७ अप्रैल सन् २००३ ई. में २० घं. ७ मि. तक शनि वृष राशि में ही रहेगा। तत्पश्चात् ७ अप्रैल को २० घं. ७ मि. से संवत् २०६० वि. के अन्त तक शनि मिथुन राशि में ही रहेगा। क्योंकि वि. सं. २०६० में शनि का भ्रमण केवल वृष एवं मिथुन राशि में ही रहेगा; अतः सारे संवत् में शनि की दृष्टि पूर्वदिशा की तरफ ही रहेगी।

फल- पूर्वी गोलार्ध स्थित देशों एवं प्रान्तों में कहीं राजनैतिक अस्थिरता, समुद्री तूफान, सत्ता परिवर्तन हो। कहीं दो देशों में युद्ध-ज्वाला से बड़े देश चिन्तित हों, आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भंयकर रोग से मृत्युदर बढ़े। कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जन-धनहानि हो। पूर्व में शनिदृष्टि होने से मेष, मिथुन, वृष, मकर, कन्या, तुला नामराशि वाले देशों में विशेषतः मुस्लिम देशों में अघटित घटनाचक्र चलेगा।

शरत्सस्य जातक

इस वर्ष १५ मई गुरुवार (सन् २००३ ई.) को ८ घं. ४१ मि. (७ घटी ५२ पल) पर **सूर्यदेव वृषराशि** में प्रविष्ट होंगे।

शरत् सस्य जातक कुण्डली

४ गु. | सू. २ रा. | ५ | ३ श. | १ बु.शु. | ६ | १२ | ७ चं. | ९ | ११ | ८ के. | १० मं.

फल - शरत् सस्य कुण्डली में शुक्र-बुध मेष राशि पर हैं, चन्द्र पंचमभाव में एवं द्वितीयभाव में उच्चस्थ गुरु होने से शीतकालीन अनाजों की फसल उत्तम होगी। मूंग , मोठ, बाजरा की फसल उत्तम तो होगी; लेकिन शरत् सस्य कुण्डली के अनुसार वृश्चिकस्थ केतु, तुलास्थ नीचाकांक्षी चन्द्र एवं वृषस्थ राहु-सूर्य होने से खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचेगी। किसान निराश होंगे। अवर्षण किंवा अतिवर्षणादि प्राकृतिक आपदा से फसलें क्षतिग्रस्त होंगी। सरकारी नीति से स्टॉकिस्ट भी चिन्तित रहेंगे। कई स्थानों पर वर्षा की भारी कमी से खड़ी फसलें सूखे का शिकार होंगी ।

ग्रीष्मसस्य जातक

इसवर्ष १६ नवम्बर, रविवार, सन् २००३ ई. को २२ घं. २१ मि. (३८ घटी ४० पल) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल - वृश्चिक राशि में सूर्य-शुक्र-बुध एवं वृश्चिक से चतुर्थभाव में शत्रुक्षेत्री मंगल; सिंहस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि एवं मेषस्थ राहु हैं। स्थिति आशानुरूप फलद नहीं। खड़ी फसलें सूखेंगी। गेहूं, जौ, चना, दालवाना की फसल उत्तम होने पर भी किसान पूरा लाभ न ले सकेगा। वृश्चिकसंक्रान्ति कालीन लग्न में स्वक्षेत्री चन्द्र, द्वितीय भावस्थ गुरु एवं केन्द्रस्थ राहु यद्यपि ग्रीष्मान्नों के लिए शुभ हैं पुनरपि

चतुर्थेश-शुक्र का सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध खराब है, जोकि ग्रीष्मान्नों की फसल को खराब करेगा। क्योंकि सूर्य-बुध-शुक्र ये ग्रह गुरुदृष्ट नहीं हैं।

सवंत् २०६० वि. का शुभारम्भ

संवत् २०५६ वि. में चैत्रकृष्ण अमावस, मंगलवार तदनुसार १/२ अप्रैल, सन् २००३ ई. को ४६ घटी २१ पल (अर्थात् मध्यरात्रि के बाद २४ घं. ४६ मि.) पर रेवती नक्षत्र; ऐन्द्र योग एवं **'मीनस्थ चन्द्र'** के समय **संवत् २०६० वि. का शुभारम्भ होगा।**

फल - संवत् २०६० वि. का शुभारम्भ धनुलग्न में होने से उत्तर पूर्व में जन-जीवन सुखमय रहे। मध्यभारत में कहीं भारी वर्षा से हानि, कहीं सुभिक्ष एवं कहीं रोगभय व्याप्त हो। पश्चिम में पांच मास में घी, धान्य सस्ते हों, दक्षिण में सुख रहे लेकिन पशुओं में रोगपीड़ा रहे।

" धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्। सुभिक्षं प्रबला वृष्टि : मध्यदेशे सरोगता।।
पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मास-पंचकात्। दक्षिणस्यां सुखं लोके किञ्चित् पीड़ा चतुष्पदे।।"

नववर्षप्रवेश कुण्डली में लग्नेश-गुरु अष्टमभाव में उच्च है। उच्चस्थ-गुरु की सुखस्थानस्थ-सूर्य-चन्द्र एवं बुध पर विशेष दृष्टि है। सूर्य-बुध नवमेश-दशमेश हैं;- प्रधानशासक की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सरकार की गिरी हुई साख में सुधार होगा। देश प्रगतिपथ पर आगे बढ़ेगा। वैशाख, श्रावण, आश्विन एवं चैत्र मास नववर्ष में विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

वर्षेश (जगत) लग्न

संवत् २०६० वि. में चैत्रशुक्ल द्वादशी, चन्द्रवार, तदनुसार १४ अप्रैल सन् २००३ ई. को पू. फा. नक्षत्र, वृद्धि-योग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय ११ घं.४७ मि. (१४ घ. २५ प.) पर सूर्यदेव मेषराशि में दाखिल होंगे।

फल - लग्न मे उच्च गुरु है, धनेश-सूर्य भी उच्च है। मंगल एवं शुक्र भी अपनी उच्च राशि की तरफ बढ़ रहे हैं। इस प्रकार यह वर्ष भारत के लिए गरिमामय रहेगा। सामरिक एवं आर्थिक दृष्टि से समर्थ देशों की कोटि में आने का प्रयास प्रशस्य रहेगा।

" यदाशुभ-ग्रहैर्युक्तं लग्नं स्यात्तु तदा शुभम्।
धन-धान्यादि सम्पूर्णं सर्वं वर्षं शुभावहम्।।"

जगत् लग्न कुण्डली के अनुसार मुस्लिम राष्ट्रों द्वारा आतंकवाद को प्रश्रय हानिप्रद रहेगा एवं किसी मुस्लिमराष्ट्रविशेष में अचानक सत्तापरिर्वतन होगा।

जगत् लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो, तो उसवर्ष में उसभाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो, तो उसभाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष एवं पौष मास विश्व के प्रधान नेताओं एवं देशों के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

आर्द्राप्रवेश लग्न

सं. २०६० वि. में आषाढ़ कृष्ण अष्टमी, रविवार, तदनुसार २२ जून सन् २००३ ई. को उ.भा. नक्षत्र, सौभाग्य योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय १४ घं. ५८ मि. (२३ घ. ५२ प.) पर तुला लग्नकाल में सूर्यदेव आर्द्रानक्षत्र में दाखिल होंगे।

आर्द्राप्रवेश लग्न

८ के. | ६ | ६ | ७ | ५ | १० | ४ गु. | ११ मं. | १ | ३ सू. श. | १२ चं. | बु. २ शु. रा.

फल - लग्नेश-शुक्र अष्टमभाव में अपनी ही राशि में राहु-बुध के साथ है, मंगल की इन पर विशेष दृष्टि है। नवमी तिथि में आर्द्राप्रवेश हुआ है। अतः कुछ प्रान्तों में वर्षा की भारी कमी अनुभव होगी; जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी से जनता परेशान होगी।

उ.भा. नक्षत्र एवं सौभाग्य योग में आर्द्रा प्रवेश शुभ है। रविवार के दिन आर्द्राप्रवेश पशुओं के लिए कष्टप्रद रहेगा, -

" दिनपतिवारे पशुपति धिष्ण्ये दिनपतिवेशे सति पशुनाशः।"

आर्द्राप्रवेश कुण्डली में मीन राशिस्थ (जल-राशिस्थ) चन्द्र पर शनि-गुरु की दृष्टि है। अतः कहीं अतिवर्षण एवं कहीं अवर्षण से खेती को भारी हानि पहुंचे।

गुर्रा विचार (सन् २००३-२००४ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा " गुर्रा " होता है।

गत संवत् २०५९ वि. में फाल्गुन शुक्लपक्ष द्वितीया, बुधवार, तदनुसार ५ मार्च सन् २००३ ई. को मुहर्रम एक (यकम) से हिजरी सन् १४२४ प्रारम्भ हुआ था; अतः इस्लामी मतानुसार इस हिजरी सन् का बादशाह **बुध** ही माना जाएगा।

फल - खाद्यपदार्थ गुड़, चीनी, कपास मंहगे हों। केन्द्र व विश्व के प्रतिष्ठित नेताओं के लिए समय कठिन है, जनता एवं पशुओं में रोग व्याप्त हो। नेता अपने उद्देश्य में असफल रहें। रिश्वतखोरी बढ़े। वर्षा उपयुक्त समय पर न हो। दुर्घटना से जानी-माली नुक्सान हो । मेवा-दाख मंहगे हों। अग्निकाण्ड से हानि के योग हैं।

वर्तमान संवत् २०६० वि. में फाल्गुनशुक्ल द्वितीया, रविवार, तदनुसार २२ फरवरी सन् २००४ ई. को मुहर्रम एक (यकम मुहर्रम) से हिजरी सन् १४२५ प्रारम्भ होगा, अतः इस्लामी मतानुसार इस हिजरी सन् का बादशाह **'सूर्य'** ही माना जाएगा।

फल - वर्षा पर्याप्त हो, खाद्य अनाज काफी हों, अनाज सस्ते, फल-फूल काफी हों। जनता सुखी रहे, पशुधन स्वस्थ, दूध-दही (गोरस) खूब हो। कई स्थानों पर वायु का जोर रहे। नाना प्रकार के यौनरोग बढ़ें। कहीं आगजनी की घटनाओं से हानि हो । कपास की फसल कमजोर हो।

आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

लाभ-व्यय देखने की रीति- अपनी राशि के लाभ-व्यय अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर , यदि १, २, ६, ७ बचें, तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें, तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

" इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।।"

⌘⌘⌘⌘⌘

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 01888-64

ज्ञानी श्री करतार सिंह जी विगत ११ वर्षों से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि-लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार-समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अत एव ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू-पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख-स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए-नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली 'शिरोमणि तिथपत्रिका' का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू-पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे-तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ-रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी हैं। आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन-कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रवन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा-चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल- हरि.) तथा नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है। कुराली निवासी चि. मनीषकान्त गुप्ता को भी सहयोग के लिए हमारा आशीर्वाद है।

इस वर्ष के विशेष स्तम्भ 'व्रत-पर्व-विवेचन' की पाण्डुलिपि की त्रुटिमुक्त प्रस्तुति एवम् पंचांग के प्रूफों का संशोधन संस्कृत के नवयुवा विद्वान् आचार्य चि. *श्रीकृष्णशर्मा,* **M.A.** (संस्कृत), वेदाचार्य, साहित्याचार्य ने स्वत्वभाव तथा क्षमता से किया है, तदर्थ इसे हम अपना विशेष आशीर्वादात्मक धन्यवाद देना नितान्त आवश्यक समझते हैं।

– संपादक मण्डल

सन्दिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं. २०६० वि.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला-134109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए, - प्रियव्रत शर्मा)

गंगा दशहरा

ज्येष्ठशुक्ल दशमी को 'गंगादशहरा' मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसदिन स्वर्ग से गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। इस पर्व की तिथि के निर्णायक चार वाक्य वराह, भविष्य, विष्णुधर्मोत्तर और स्कन्द, इन चार पुराणों में इस प्रकार मिलते हैं :-

दशमी शुक्ल-पक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि।
अवतीर्णा यतः स्वर्गाद् हस्तर्क्षे च सरिद्वरा।।
हरते दश-पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता। - *(वराह पुराण)*
ज्येष्ठशुक्ल दशम्यां च भवेद् भौमदिनं यदि।
ज्ञेया हस्तर्क्ष- संयुक्ता सर्वपापहरा तिथिः।। - *(भविष्य पुराण)*
दशम्यां शुक्लपक्षे च ज्येष्ठे मासि कुजे दिने।
गंगावत्तीर्णा हस्तर्क्षे सर्वपापहरा स्मृता।। - *(विष्णुधर्मोत्तर पुराण)*
ज्येष्ठे मासि, सिते पक्षे दशम्यां बुध हस्तयोः।
व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।।
दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वैः पापैः प्रमुच्यते। - *(स्कन्दपुराण)*

देखिए;- वराह, भविष्य और विष्णुधर्मोत्तर पुराणों में इस पर्व के निर्णायक केवल पांच पदार्थ (ज्येष्ठमास, शुक्लपक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार और हस्त नक्षत्र) बतलाए गए हैं। जबकि स्कन्दपुराण में इन पांच के अलावा व्यतीपात योग, गर करण, आनन्द योग (हस्तनक्षत्र और बुधवार के संयोग से बना योग), कन्यास्थ-चन्द्र और वृषस्थ-सूर्य - ये पांच और इस प्रकार कुल १० निर्णायक पदार्थ निर्दिष्ट हैं। वार के बारे में स्कन्दपुराण का वराह, भविष्य और विष्णुधर्मोत्तर पुराणों से मतभेद है। स्कन्दपुराण में निर्णायक वार बुध और वराह, भविष्य तथा विष्णुधर्मोत्तर में मंगल लिखा है।

यहां लगभग सभी निबन्धकारों ने स्कन्दपुराणोक्त दस निर्णायक पदार्थों के अनुसार ही गंगादशहरा की तिथि के निर्णय का निर्देश किया है। उनका कहना है कि जिस दिन इन दस योगों में से अधिक योग उपलब्ध हों उसी दिन गंगादशहरा मनाना चाहिए-

" इयं च यत्रैव योग-बाहुल्यं सैव ग्राह्या " - *(निर्णयसिन्धु*)।

यदि इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) गंगादशहरा की तिथि के निर्णय के लिए इन निबन्धकारों के निर्देशानुसार स्कान्दोक्त इन दस निर्णायक पदार्थों का आश्रय लिया जाए, तब ६ और १० जून (सन् २००३ ई.)- इन दोनों दिन समान संख्या में पांच-पांच निर्णायक पदार्थ (योग) उपलब्ध हो रहे हैं। ६ जून को (i) ज्येष्ठमास (ii) शुक्लपक्ष (iii) दशमी तिथि (iv) हस्तनक्षत्र और (v) व्यतीपात योग तथा १० जून को (i) ज्येष्ठमास (ii) शुक्लपक्ष (iii) दशमीतिथि (iv) हस्तनक्षत्र और (v) गर करण उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में **"यत्र योग बाहुल्यं सैव ग्राह्या"** (जिस दिन इन दस योगों में से अधिक योग प्राप्त हों, उसी दिन गंगादशहरा मनाना चाहिए);- इस नियमानुसार दोनों दिन (६ और १० जून) में से किस दिन यह पर्व निर्धारित किया जाए यह निर्णय सम्भव नहीं है। इस प्रकार की दुविधा वाली स्थिति में, मेरा मत है, यह पर्व १० जून को निर्धारित किया जाए, क्योंकि इस दिन मंगलवार है। वराह, भविष्य और विष्णुधर्मोत्तर पुराणों के उपरोक्त वाक्य मंगलवार को भी इस पर्व का निर्णायक पदार्थ मानते हैं। ऐसे स्थल पर मंगलवार को निर्णायक मान लेने पर वराहादि पुराणों के ये वाक्य निरवकाश भी नहीं रहेंगे। **अपि च- 'कालमाधव'** के मतानुसार शुक्लपक्ष की दशमी परविद्धा ली जाती है;- (**"कृष्णा पूर्वोत्तरा शुक्ला दशम्येवं व्यवस्थिता"** - *कालमाधव*)। १० जून को दशमी परविद्धा भी है। कुछ लोग यहां यह कह सकते हैं, कि **'धर्मसिन्धुकार'** ने इसपर्व की तिथि के निर्णय के लिए दशमी और व्यतीपात योग को मुख्यता दी है;- (**"अत्र दशमी-व्यतीपातयोर्मुख्यत्वम्"**- *धर्मसिन्धु*)। अतः व्यतीपातयोग के कारण **६ जून को गंगादशहरा होना चाहिए। किञ्च-- लेकिन यहां व्यतीपात को मुख्यता देने की बात किसी आर्षवाक्य में उपलब्ध नहीं है। किञ्च-- धर्मसिन्धुकार के अतिरिक्त अन्य किसी दूसरे निबन्धकार ने इसका (व्यतीपात की मुख्यता का) समर्थन भी नहीं किया है। अतः अन्तिम निर्णय यही है कि इसवर्ष यह पर्व १० जून '०३ ई. को ही मनाया जाए।**

आषाढ़ कृष्ण का प्रदोषव्रत

इस वर्ष आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी २६ और २७ जून दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी है। ऐसी स्थिति में यदि पहिले दिन त्रयोदशी प्रदोषकाल के अधिकभाग को व्याप्त करती हो तो उसी दिन प्रदोषव्रत

किया जाना चाहिए, वशर्ते कि उस दिन प्रदोषयुक्त त्रयोदशी देवपूजा एवं नक्तभोजन के लिए पर्याप्त हो;- ऐसी धर्मशास्त्राज्ञा है;-

" दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेक स्पर्शे वा उत्तरा, वैषम्येण एक देशस्पर्शे तदाधिक्यवती पूर्वाऽपि ग्राह्या, यदि देवपूजाभोजनपर्याप्तं तदाधिक्यं लभ्येत।" -*(धर्मसिन्धु)*

इस वर्ष २६ जून को त्रयोदशी द्वारा पूरा प्रदोषकाल (लगभग ५ घड़ियां) व्याप्त है, जबकि २७ जून को त्रयोदशी प्रदोष के पूरे काल को व्याप्त नहीं करती, अतः उक्त नियमानुसार प्रदोषव्रत २६ जून को ही होगा, जहां शिवार्चन, भोजन के लिए प्रदोषयुक्त त्रयोदशी का काल पूर्णतया पर्याप्त है।

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष (महालय) में किस दिन अमुक तिथि का श्राद्ध किया जाए, इस बारे में पण्डितों को बहुत बार भ्रान्ति एवं दुविधा में देखा गया है। उनकी भ्रान्ति/ दुविधा को दूर करने के लिए हम यहां महालय श्राद्धों की तिथियों के दिनों के निर्णय का स्पष्ट प्रकार बतला रहे हैं। इसे वे यदि ध्यानपूर्वक पढ़ लेंगे तब वे इस विषय में किसी प्रकार की भ्रान्ति या दुविधा का कभी शिकार नहीं होंगे।

महालय श्राद्धतिथि के निर्धारण के नियम

(i) क्योंकि महालयपक्ष के लगभग सभी श्राद्ध पार्वण होते हैं, अतः किसी की मृत्युतिथि जिस दिन अपराह्णव्यापिनी होगी, उसी दिन उसका महालयश्राद्ध होगा । अर्थात् यदि पहिले दिन मृत्युतिथि अपराह्णव्यापिनी है तो उसी दिन और यदि दूसरे दिन अपराह्णव्यापिनी है तो दूसरे दिन उसका श्राद्ध होगा।

(दिनमान के पंचमांश वाले पांच भाग क्रमशः प्रातः, संभव, मध्याह्न , अपराह्ण एवम् सायाह्न कहलाते हैं। इस प्रकार दिनमान का पंचमांशतुल्य चौथा भाग अपराह्णकाल है।)

(ii) यदि तिथि (मृत्युतिथि) दोनों दिन अपराह्णकाल को स्पर्श न करे तो पहिले दिन श्राद्ध किया जाता है।

(iii) यदि दोनों दिन तिथि अपराह्ण को असमान रूप से व्याप्त करे (अर्थात् एक दिन कम और दूसरे दिन ज्यादा अपराह्ण को व्याप्त करे) तो श्राद्ध उस दिन होगा जिस दिन तिथि अपराह्ण को ज्यादा व्याप्त कर रही हो।

(iv) यदि तिथि अपराह्ण को दोनों दिन समानरूप से व्याप्त कर रही हो तो नीचे लिखी स्थितियों के अनुसार श्राद्धदिन का निर्णय करें-

(a) यदि तिथि (मृत्युतिथि) साठ घड़ी की अथवा साठ घड़ी से अधिक हो तो श्राद्ध दूसरे दिन होगा- **(खर्व-दर्पौ परौ कार्यौ)** ।

(b) यदि तिथि साठ घड़ी से कम हो तो श्राद्ध पहिले दिन होगा- **(हिंसा स्यात् पूर्वकालिकी)**।

उपरोक्त चार नियमों को जान लेने पर " किस मृत्युतिथि वाले का श्राद्ध किस दिन होना चाहिए"- यह निर्णय करने में कोई उलझन नहीं होगी।

देखिए- इसवर्ष आश्विन कृष्णपक्ष में नवमी का श्राद्ध १९ सितं. को लिखा है। क्योंकि १९ और २० सितं. दोनों दिन अपराह्णव्यापिनी यह नवमी पहले दिन १९ सितं. को अपराह्ण में अधिककाल तक व्याप्त है [देखें - उपरोक्त नियम (iii)]।

दशमी का श्राद्ध इस वर्ष २१ सितं. को लिखा गया है, क्योंकि यह तिथि भी २० और २१ सितं. दोनों दिन अपराह्ण में व्याप्त होकर २१ सितं. को अधिक अपराह्णव्यापिनी है। यही स्थिति इसवर्ष द्वादशीश्राद्ध तिथि की भी है। यह तिथि २२ सितं. को अत्यल्पकाल (केवल ४ पल) के लिए और २३ सितं. को लगभग ४ घड़ी तक अपराह्ण को व्याप्त कर रही है, अतः इस तिथि को श्राद्ध भी उपरोक्त नियम (iii) के अनुसार २३ सितं. को लिखा गया है।

यहां त्रयोदशी केवल २३ सितं. को ही अपराह्णव्यापिनी है, अतः इस तिथि का श्राद्ध २३ सितं. को ही लिखा गया है।

शारद नवरात्रारम्भ

नवरात्र का आरम्भ सामान्यतः उदयव्यापिनी शुक्ल प्रतिपदा में होता है। लेकिन यदि वह दोनों दिन उदयव्यापिनी न हो (अर्थात् प्रतिपदा क्षयतिथि हो) तो पहिले दिन ही (अमा वाले दिन ही) नवरात्रारम्भ किया जाता है-

" तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा।।" - *(धर्मसिन्धु)*

इसवर्ष आश्विनशुक्ल प्रतिपदा का क्षय है अतः उक्त नियमानुसार शारदनवरात्र का आरम्भ आश्विन अमा के दिन २६ सितं. '०३ ई. को होगा।

विजयादशमी (दशहरा)

अपराह्नव्यापिनी आश्विनशुक्ल दशमी के दिन यह पर्व मनाना चाहिए, - यह सामान्य नियम है । इस पर्व में अपराह्न के समय अपराजिता-पूजन का विधान है । दशमी की विभिन्न स्थितियों में इसपर्व की तिथि (दिन) का निर्णय शास्त्रकारों ने इस प्रकार किया है -

(१) दूसरे ही दिन दशमी अपराह्नव्यापिनी हो तो विजयादशमी दूसरे दिन होगी।

(२) दोनों दिन दशमी अपराह्नव्यापिनी हो और दोनों दिन श्रवणनक्षत्र अपराह्न में विद्यमान या अविद्यमान हो तो विजयादशमी पहिले दिन मानी जाएगी।

(३) दोनों दिन दशमी अपराह्न में अविद्यमान हो और दोनों दिन अपराह्न में श्रवण विद्यमान या अविद्यमान हो तो भी विजयादशमी पहिले दिन मनाई जाएगी।

(४) दोनों दिन दशमी अपराह्न में अविद्यमान या विद्यमान हो और श्रवण नक्षत्र अपराह्न में केवल एक ही दिन विद्यमान हो तो विजयादशमी उस दिन मनानी होगी, जिस दिन अपराह्न में श्रवण नक्षत्र है।

(५) यदि पहिले ही दिन दशमी अपराह्नव्यापिनी हो और दूसरे दिन श्रवण अपराह्न में विद्यमान न हो तब विजयादशमी पहिले ही दिन होगी।

(६) यदि दशमी पहिले ही दिन अपराह्नव्यापिनी होकर दूसरे दिन वह कम से कम तीन मुहूर्त्तों को व्याप्त करे, **तथा च-** दूसरे दिन अपराह्न में श्रवण विद्यमान हो तब दूसरे ही दिन विजयादशमी मनाने का **'कश्यप'** द्वारा निर्देश है। इस विषय में **'कश्यप'** का यह वाक्य है,-

उदये दशमी किञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि।
श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा।। - (*कश्यप*)

यहां सभी व्याख्याकारों ने " **किञ्चित्** " का अर्थ " **मुहूर्त्तत्रयादि व्यापिनी** " और " **काले** " का अर्थ " **अपराह्न काले** " ही लिया है।

इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) ठीक यही स्थिति है । केवल ४ अक्तू. '०३ ई. को ही दशमी अपराह्नव्यापिनी है, और वह ५ अक्तू. '०३ ई. को तीन मुहूर्त्त से कहीं अधिक काल को व्याप्त कर रही है। किञ्च-- इसी दिन (५ अक्तू. को ही) श्रवणनक्षत्र अपराह्न में विद्यमान है। **अतः कश्यप के उपरोक्त वाक्यानुसार ५ अक्तू. '०३ ई. को ही विजयादशमी पर्व सिद्ध होता है।**

यहां कुछ लोगों को यह आपत्ति है कि ४ अक्तू. के दिन अपराह्नव्यापिनी दशमी को तिरस्कृत कर ५ अक्तू. को अपराह्न में दशमी के अभाव में केवल श्रवण के अस्तित्व के कारण विजयादशमी निर्धारित नहीं कि जा सकती, क्योंकि व्रतादि के निर्धारण में तिथि ही प्रयोजिका (निर्धारिका) मानी जाती है, नक्षत्र नहीं। श्रवणनक्षत्र को यहां विजयादशमी का प्रयोजक नहीं माना जा सकता, **"श्रवणस्तु रोहणीवद् अप्रयोजकः"** " अर्थात् जिस प्रकार जन्माष्टमी के निर्धारण में अष्टमी के अभाव में रोहिणी नक्षत्र अप्रयोजक है, ठीक उसी तरह यहां भी दशमी के अभाव में श्रवण विजयादशमी का प्रयोजक नहीं हो सकता। इन लोगों के अनुसार विजयादशमी इसवर्ष ४ अक्तू. को होनी चाहिए, क्योंकि एकमात्र इसी दिन दशमी अपराह्न (कार्यकाल) व्यापिनी है। **लेकिन इनका यह मत (प्रतिपादन) व्यवस्था सिद्धान्त (समन्वय सिद्धान्त) के सर्वथा विरुद्ध है ,** क्योंकि **कश्यप** का उपरोक्त विशेष वचन (' **उदये दशमी किञ्चित्** .....') ' तिथि ही व्रतादि की प्रयोजिका है, नक्षत्र नहीं, ' - इस सामान्य नियम का भी बाधक है **(सामान्याद् विशेषो बलवान्)**। कश्यप ऋषि का यह वचन स्पष्ट कह रहा है कि दशमी की ऐसी स्थिति में श्रवण नक्षत्र को विजयादशमी का प्रयोजक मानना होगा। यदि हम कश्यप के इस वाक्य को ऐसे स्थल पर, जो इसका एकमात्र प्रवृत्ति स्थल है, उपेक्षित करते हैं तो यह (**"उदये दशमी किञ्चत्..."**) आर्षवाक्य सर्वथा निरवकाश होकर निरर्थक हो जाएगा। यह मीमांसा के सर्वथा विरुद्ध है । किसी भी परम्परागत आर्षवाक्य की निरर्थकता को मीमांसा में सहन नहीं किया जाता। **किञ्च-** मुहूर्त्तत्रय-व्यापिनी तिथि पूरे दिन को व्याप्त करने वाली तिथि मानी जाती है;- (**"यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः। सा तिथिः सकला ज्ञेया दान-ध्यान-जपादिषु।।"**)- इसे **साकल्यापादिता** तिथि कहा जाता है। इसके अनुसार **इसवर्ष ५ अक्तू. '०३ ई. को मुहूर्त्तत्रयाधिकव्यापिनी दशमी साकल्यापादिता होकर अपराह्न को भी व्याप्त कर रही है। इसदृष्टि से भी इसदिन (५ अक्तू. को) ही विजयादशमी पर्व सिद्ध हो जाता है।**

करक चतुर्थी (करवा चौथ)

चन्द्रोदय-व्यापिनी कार्तिक-कृष्ण चतुर्थी के दिन स्त्रियां करकचतुर्थी का व्रत करती हैं। यदि दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो पहिले दिन (तृतीयायुता-चतुर्थी वाले दिन) यह व्रत किया जाता है। इसवर्ष (सं. २०६० में) चतुर्थी तिथि लगभग समस्त भारत में १४ अक्तू. के दिन ही चन्द्रोदय-व्यापिनी है। अतः वहां यह व्रत १४ अक्तू. को ही होगा। लेकिन भारत के बहुत थोड़े से पश्चिमी एवं पश्चिमोत्तरी भाग (प. पंजाब, प. जम्मू कश्मीर, प. राजस्थान, प. महाराष्ट्र , एवं गुजरात) में जहां चन्द्रोदय १३ अक्तू. को १६ घं ४५ मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद होगा, यह व्रत १३ अक्तू. को ही करना होगा। इन प्रदेश-भागों में १३ और १४ अक्तू. दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी होगी, जिससे धर्मशास्त्रनियमानुसार यहां करकचतुर्थी

व्रत पहले दिन (तृतीयायुता-चतुर्थी के दिन) १३ अक्तूबर को ही किया जाएगा।- **" उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या।"** - (*धर्मसिन्धु*)

गोक्रीड़ा-गोवर्धन पूजा

कार्त्तिकशुक्ल प्रतिपदा के दिन गोक्रीड़ा एवम् इससे सम्बद्ध गोवर्धनपूजा, बलिपूजा तथा अन्नकूटपर्व मनाए जाते हैं। पुराणकारों की यह चेतावनी है कि उसीदिन ये पर्व मनाए जाएं, जिस दिन शाम को चन्द्रदर्शन न हो। अन्यथा अनिष्ट होगा- (**"गवां क्रीड़ादिने यत्र रात्रौ दृश्येत चन्द्रमाः। सोमो राजा पशून् हन्ति सुरभिः पूजकांस्तथा।।"**- *पुराणसमुच्चय*) । इसलिए यदि शाम को सूर्यास्त के समय कार्त्तिकशुक्ल प्रतिपदा के दिन चन्द्रदर्शन होने वाला हो तब गोक्रीडा, गोवर्धनपूजादि- ये पर्व पूर्वयुता (अमायुता) प्रतिपदा के दिन ही करने चाहिएं। लेकिन चन्द्रदर्शन आज शाम को होगा या नहीं, इसका प्रतिज्ञापूर्वक निर्णय कर सकना गणित द्वारा भी कई बार दूषित वातावरणादि के कारण सम्भव नहीं होता, अतः ऐसे स्थलों पर गोक्रीड़ा आदि इन पर्वों का निर्णय करना सचमुच समस्यापूर्ण है। अतः धर्मशास्त्रकारों ने इसका समाधान 'स्थूल चन्द्रदर्शन' द्वारा किया है। उनका निर्णय है कि उदयव्यापिनी प्रतिपदा के दिन यदि 'स्थूलचन्द्रदर्शन' का अभाव हो, उस दिन ग्रोकीड़ा आदि मनाने चाहिएं, अन्यथा इन्हें पूर्वयुता (अमायुता) प्रतिपदा के दिन मनाया जाए। उनका निर्देश है कि यदि प्रतिपदा सूर्योदयानुसार कम से कम ६ मुहूर्त्त तक विद्यमान हो तब उस दिन भले ही सूक्ष्म (वास्तविक) चन्द्रदर्शन शाम को हो जाए, लेकिन वहां 'स्थूलचन्द्रदर्शन' का अभाव माना जाए, और तदनुसार गोक्रीड़ा आदि उसी दिन मनाए जाएं। यदि प्रतिपदा ६ मुहूर्त्त से कम हो तो उस दिन, भले ही सूक्ष्म चन्द्रदर्शन न हो, 'स्थूलचन्द्रदर्शन' मानकर इन पर्वों को पहिले दिन (अमायुता प्रतिपदा को) ही मनाना चाहिए। इस 'स्थूलचन्द्रदर्शन' नियम के अनुसार इसवर्ष (सं. २०६० में) २६ अक्तू. को ही गोक्रीड़ा, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा व अन्नकूटपर्व मनाए जाएंगे, क्योंकि इस दिन प्रतिपदा ६ मुहूर्त्त से कहीं अधिक काल को व्याप्त कर रही है, जिससे यहां 'स्थूलचन्द्रदर्शन' का अभाव है। वैसे चन्द्रदर्शन गणितानुसार भी २६ अक्तू. को १५ से अधिक अक्षांश वाले भारतीय स्थलों पर सूक्ष्म (वास्तविक) चन्द्रदर्शन होगा भी नहीं। (**देखें- " अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें- पृष्ठ 205 पर**)।

भाईदूज, यमद्वितीया

अपराह्णव्यापिनी कार्त्तिकशुक्ल द्वितीया के दिन यमपूजा का विधान है- (**"ऊर्जे शुक्ल द्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद् यमम्"**- *स्कन्दपुराण*)। भविष्यपुराण में लिखा है, कि- इसदिन यमुना ने अपने भाई यम को अपने घर खाना खिलाया और उसकी अर्चना की। अतः इसी दिन सभी बहिनें अपने भाइयों को अपने घर खाना खिलाएं और उनकी अर्चना भी करें। पुराण के इसी आख्यान के अनुसार भ्रातृद्वितीया पर्व मनाया जाता है। क्योंकि यहपर्व यमद्वितीया से सम्बद्ध है, अतः इसका निर्धारण भी अपराह्णव्यापिनी द्वितीया के अनुसार ही होना चाहिए। इसके अनुसार ही धर्मसिन्धुकार आदि निबन्धकार अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में ही भातृद्वितीया (भाईदूज) मनाने के पक्ष में हैं। लेकिन अनेक निबन्धकार मध्याह्नव्यापिनी द्वितीया को इसपर्व का निर्णायक मानते हैं, उनका यहां तर्क यह है;- कि इसपर्व में बहिन द्वारा भाई को अपने घर खाना खिलाने का निर्देश है। क्योंकि खाना खाने का समय मध्याह्नकाल माना गया है। अतः भ्रातृद्वितीया में मध्याह्नव्यापिनी ही द्वितीया लेनी चाहिए । इस मतानुसार इसवर्ष (सं. २०६० में) भाईदूज २७ अक्तू. '०३ ई. को होगी, क्योंकि द्वितीया इसी दिन मध्याह्नव्यापिनी है । यमद्वितीया को तो २६ अक्तू. के दिन मनाना होगा, क्योंकि द्वितीया इसी दिन अपराह्ण को व्याप्त कर रही है।

कई पंचांगकार तो पौराणिक आख्यान के अनुसार भाईदूज को यमद्वितीया से सम्बद्ध (अभिन्न) मानकर यमद्वितीया की भान्ति अपराह्णव्यापिनी द्वितीया में ही मनाने के पक्ष में हैं।

२५ और २६ अक्तू. को मध्याह्नकाल भा.स्टैं.टा. के अनुसार लगभग ११ घं. ०० मि. से १३ घं. ११ मि. तक और अपराह्णकाल १३ घं. ११ मि. से १५ घं. २२ मि. तक रहेगा।

भीष्मद्वादशी

माघशुक्ल द्वादशी भीष्मद्वादशी कहलाती है। युग्म-वाक्यानुसार यह पूर्वविद्धा (एकादशीविद्धा) द्वादशी के दिन मनाई जाती है । इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) द्वादशी २ फर. '०४ ई. को पूर्वविद्धा है, अतः भीष्मद्वादशी इसी दिन लिखी गई है।

ग्रह दर्शन- मं. प्रातः याम्योत्तर वृत्तासन्न, शुक्र पूर्वी क्षितिज से ऊपर तथा सायं बुध पश्चिम, गुरु पूर्वकपाल और शनि पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५७	१	बु.	५२	१७	रेव.	४८	०४	ऐं.	३८	१७	किं.	१६	१६	२०	२	१२	२६	मे.	४८	०४	६	१५	१८	३८	११	१७	५८	२६	पंचक समाप्त ४८/०४, बुध अश्वि.मेष में २१/२५, वासन्त नवरात्र (A)
३१	०१	२	गु.	५८	४६	अश्वि.	५५	४५	वै.	४०	४१	बा.	२५	३१	२१	३	१३	३०	मेष			६	१४	१८	३८	११	१८	५७	३६	चन्द्र दर्शन मु. ३०, चन्द्रव्रत,
३१	०६	३	शु.	६०	००	भर.	६०	००	वि.	४३	२२	तै.	३२	१०	२२	४	१४	स.१	मेष			६	१३	१८	३९	११	१९	५६	४३	गुरु मार्गी ५/५२, सफर (B)
३१	११	३	श.	०५	३३	भर.	०३	४५	प्री.	४६	०४	ग.	०५	३३	२३	५	१५	२	वृ.	२०	४४	६	१२	१८	४०	११	२०	५५	४७	भ.३८/५३ बाद,
३१	१५	४	र.	१२	११	कृति.	११	३७	आ.	४८	२६	वि.	१२	११	२४	६	१६	३	वृष			६	१०	१८	४०	११	२१	५४	५०	भ.१२/११ तक, मंगल उ.षा. में ३१/१७, श्री (लक्ष्मी) पंचमी (चतुर्थी-विद्धा),
३१	२०	५	चं.	१८	१४	रोहि.	१८	५५	सौ.	५०	१६	बा.	१८	१४	२५	७	१७	४	मि.	५२	१२	६	०९	१८	४१	११	२२	५३	५१	शनि मृग. ३ मिथुन में ३४/५५, नाग पंचमी, स्कंद षष्ठी (पंचमी-विद्धा),
३१	२४	६	मं.	२३	१३	मृग.	२५	१३	शो.	५१	०४	तै.	२३	१३	२६	८	१८	५	मिथुन			६	०८	१८	४२	११	२३	५२	४९	शुक्र पू.भा.में १८/०५,
३१	२९	७	बु.	२६	३९	आर्द्रा	३०	००	अ.	५०	३३	व.	२६	३९	२७	९	१९	६	मिथुन			६	०७	१८	४२	११	२४	५१	४६	भ.२६/३९ से ५७/३९ तक, बुध भरणी में ५१/२२,
३१	३३	८	गु.	२८	११	पुन.	३२	५८	सु.	४८	३०	ब.	२८	११	२८	१०	२०	७	क.	१७	२५	६	०६	१८	४३	११	२५	५०	४०	श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी,
३१	३८	९	शु.	२७	३७	पुष्य	३३	५१	धृ.	४४	४७	कौ.	२७	३७	२९	११	२१	८	कर्क			६	०४	१८	४४	११	२६	४९	३१	मंगल मकर में ५६/०७, श्री रामनवमी, नवरात्र समाप्त,
३१	४२	१०	श.	२४	५५	आश्ले.	३२	४०	शू.	३६	२३	ग.	२४	५५	३०	१२	२२	९	सिं.	३२	४०	६	०३	१८	४४	११	२७	४८	२०	भ.५२/४७ बाद,
३१	४७	११	र.	२०	१३	मघा	२९	३३	गं.	३२	२५	वि.	२०	१३	३१	१३	२३	१०	सिंह			६	०२	१८	४५	११	२८	४७	०८	भ.२०/१३ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.),
३१	५१	१२	चं.	१३	४७	पू.फा.	२४	४५	वृ.	२४	०६	बा.	१३	४७	वै.१	१४	२४	११	क.	३८	१६	६	०१	१८	४५	११	२९	४५	५३	सं. सूर्य अश्वि. मेष में १४/ २५, मु. ३०, पुण्यकाल ३०/२५ तक, (C)
३१	५६	१३	मं.	०५	५८	उ.फा.	१८	३८	ध्रु.	१४	४२	तै.	०५	५८	२	१५	२५	१२	कन्या			६	००	१८	४६	०	००	४४	३५	भ.५७/०८ बाद, श्री महावीर जयन्ती (जैन),
अवम		१४	मं.	५७	०८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३२	००	१५	बु.	४७	४८	हस्त	११	३६	व्या. ह.	०४ ५३	३३ ५७	वि.	२२	३२	३	१६	२६	१३	तु.	३७	५७	५	५६	१८	४७	०	०१	४३	१६	भ.२२/३२ तक, शुक्र मीन में ३६/२०, श्रीसत्यनारायण व्रत, चैत्री पूर्णिमा, (D)

वर्षारम्भ में गुरुमान से 'दुर्मुख' नामक संवत्सर है। अतः वर्षान्त तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

(A) प्रारम्भ, कलश स्थापन, चांद्र संवत्सर प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यङ्ग, प्रपादान, (B) मु. प्रारम्भ, श्री मत्स्य जयन्ती, आन्दोलन तृतीया, गौरी तृतीया (गणगौर), (C) सोम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, वैशाखी(पंजाब), (D) वैशाख स्नान प्रारम्भ,

चैत्र शुक्ल ८ गुरु इष्ट ५८/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	८	०	३	१०	२	१	७
२६	०८	२९	१५	१४	२३	०	०७	०७
४८	५२	२४	१	१४	१३	१५	५०	५०
०७	४१	४३	२१	११	०८	५३	२१	२१
५८	७७३	३६	६०	०१	७२	०४	०३	०३
५४	४६	५४	१२	१२	१८	४८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

१ बु.
११ शु.
१२ सू.
१०
२ रा.
३ चं. श.
९ मं.
४ गु.
६
८ के.
५
७

लोक भविष्यः- संवत् का राजा बुध है, चान्द्रमास चैत्र में ५ बुधवार है, प्रजा में परस्पर स्नेह सद्भाव बढ़े;राष्ट्रभक्तिभावना प्रबल हो; सुभिक्ष रहे। लेकिन 'दुर्मुख' नामक संवत् होने से प्राकृतिक प्रकोप से कहीं भारी हानि एवं विभिन्न विरोधी राष्ट्रों के आपसों में नीतिविरोध के फलस्वरूप सीमाप्रान्तों पर सैन्य हलचल से वातावरण क्षुब्ध रहेगा। इसवर्ष में शनि-मंगल का षडष्टक कश्मीर, आसाम, त्रिपुरा, बिहार आदि प्रान्तों में अशान्ति का वातावरण बनाए। मिथुनराशि का शनि कहीं भयानक दुर्भिक्ष, पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर युद्ध का भी संकेत देता है:-

"मिथुने च यदा सौरिः दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में गेहूं, जौ, चना, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में मन्दा बने। ४ अप्रैल को रुई में मन्दा होकर तेजी आए। चांदी मन्दी रहे। ७ अप्रैल के लगभग तेल-तिलहन, खाण्ड, गुड़, लोहा, मजीठ, सोना में तेजी और रुई में जोरदार तेजी का झटका आएगा। ११ अप्रैल से पक्षान्त तक बाजार कुछ तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

आकाश लक्षण- अप्रैल ४, ६, ७, ८, ११, १२, १४, १६ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल,वर्मा एवं हि.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल, वर्षा व खण्डवृष्टि के योग हैं। उ.भा. में प्रायः मौसम शुष्क रहे, तापमान बढ़ने लगेगा।

शकुन विचार- यदि चैत्र शुक्ल पंचमी को वर्षा सहित दक्षिण-पूर्व की वायु चले, तो उसवर्ष अनाजों में तेजी बनती है -" चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः। वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्ये त्रिगुणता भवेत्॥" नोट करें-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, आजवायन, जीरा, तुलसीदल, ये सब खाण्ड या शक्कर में इच्छानुसार मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्त [illegible] विकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

कुण्डली सूर्योदये

२ रा
१२
१ सू. बु.
११ शु.
३ श
४ गु
१० मं.
५
७
९
६ चं.
८ के.

चैत्र शुक्ल १५ बुध इष्ट ५८/४७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	६	०	३	११	२	१	७
०२	०५	०३	२२	१४	०	०	०७	०७
४०	१७	०४	१५	२५	२७	४६	३१	३१
४७	५०	४८	०१	२२	०७	१६	१६	१६
५८	६१२	३६	५८	०२	७२	०५	०३	०३
४१	४०	३६	४२	१८	२४	१८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(१७ अप्रैल से १ मई तक, सन् २००३ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु ।

ग्रह दर्शन- बुध २८ अप्रै. से पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न, शु. पूर्व में, सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर झुका हुआ एवम् श. पश्चिमकपाल में दिखाई पड़ेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. वैशाख	मु. सफ़र	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	०४	१	गु.	३८	२१	चित्रा स्वा.	०४ ५६	१५ ५०	व.	४३	२२	बा.	१३	०५	४	१७	२७	१४	तुला			५	५८	१८	४७	०	०२	४१	५४	
३२	०६	२	शु.	२६	१४	वि.	४६	५६	सि.	३३	०५	तै.	३	४८	५	१८	२८	१५	वृ.	३६	३६	५	५६	१८	४८	०	०३	४०	३१	भ.५४/५३ बाद,
३२	१३	३	श.	२०	४६	अनु.	४३	५५	व्य.	२३	२६	वि.	२०	४६	६	१९	२९	१६	वृश्चिक			५	५५	१८	४९	०	०४	३९	०५	भ.२०/४६ तक, शुक्र उ.भा. में २२/१२, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३२	१७	४	र.	१३	२६	ज्ये.	३९	०७	ध.	१४	४१	बा.	१३	२६	७	२०	३०	१७	ध.	३९	०७	५	५४	१८	४९	०	०५	३७	३८	सूर्य सायन वृष में २९/०७, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
३२	२२	५	चं.	०७	३२	मूल	३५	४८	प.	०७	०४	तै.	०७	३२	८	२१	वै.१	१८	धनु			५	५३	१८	५०	०	०६	३६	११	शक वैशाख प्राम्भ, अगस्त्य अस्त,
३२	२६	६	मं.	०३	१०	पू.षा.	३४	१०	शि. सि.	०० ५५	४५ ४८	व.	०३	१०	९	२२	२	१९	म.	४९	०१	५	५२	१८	५१	०	०७	३४	४०	भ.०३/१० से ३१/३७ तक,
३२	३०	७	बु.	००	३३	उ.षा.	३४	१७	सा.	५२	१९	ब.	००	३३	१०	२३	३	२०	मकर			५	५१	१८	५१	०	०८	३३	०६	
अवम		८	बु.	५९	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३२	३४	९	गु.	६०	००	श्रव.	३६	०६	शु.	५०	११	तै.	३०	०७	११	२४	४	२१	मकर			५	५०	१८	५२	०	०९	३१	३६	
३२	३८	९	शु.	००	३४	धनि.	३९	३१	शु.	४९	१८	ग.	००	३४	१२	२५	५	२२	कुं.	०७	३६	५	४९	१८	५२	०	१०	३०	००	भ.३१/३५ बाद, पंचक प्रारम्भ ७/३६,
३२	४३	१०	श.	०३	००	शत.	४४	१९	ब्र.	४९	३०	वि.	०३	००	१३	२६	६	२३	कुम्भ			५	४८	१८	५३	०	११	२८	२४	भ.०३/०० तक, बुध वक्री २९/१२,
३२	४७	११	र.	०६	४६	पू.भा.	५०	१५	ऐं.	५०	३५	बा.	०६	४६	१४	२७	७	२४	मी.	३३	४१	५	४७	१८	५४	०	१२	२६	४६	सूर्य भरणी में ५४/४२, वरूथिनी एकादशी व्रत(स.), श्री वल्लभाचार्य (A)
३२	५१	१२	चं.	११	३७	उ.भा.	५७	०४	वै.	५२	२२	तै.	११	३७	१५	२८	८	२५	मीन			५	४६	१८	५४	०	१३	२५	०६	मंगल श्रवण में ३०/२०, बुध पश्चिम में अस्त ६/५२, सोम प्रदोष (B)
३२	५५	१३	मं.	१७	१८	रेव.	६०	००	वि.	५४	३६	व.	१७	१८	१६	२९	९	२६	मीन			५	४५	१८	५५	०	१४	२३	२५	भ.१७/१८ से ५०/२० तक,
३२	५९	१४	बु.	२३	३२	रेव.	०४	३२	प्री.	५७	१५	श.	२३	३२	१७	३०	१०	२७	मे.	०४	३२	५	४४	१८	५६	०	१५	२१	४२	पंचक समाप्त ४/३२, शुक्र रेवती में २४/२२,
३३	०३	३०	गु.	३०	०४	अश्वि.	१२	१९	आ.	६०	००	ना.	३०	०४	१८	म.१	११	२८	मेष			५	४३	१८	५६	०	१६	१९	५७	मई प्रारम्भ,

(A) जयन्ती, (B) व्रत,

वैशाख कृष्ण ७ बुध, इष्ट ५९/०७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	९	०	३	११	२	१	७
०६	१५	०७	२६	१४	०८	०१	०७	०७
३०	२४	१८	२१	४६	५४	२५	०६	०६
४७	१६	२६	२८	२७	१८	०३	०१	०१
५८	७८६	३६	९७	०३	७२	०५	०३	०३
३०	४२	०	२२	३६	३०	४२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	[illegible] २	उ.षा. ४	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] २	[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] २

कुण्डली सूर्योदये

२ रा.	१ सू. बु.	१२ शु.
३ श.		११
४ गु.		१० चं. मं.
५	७	९
६		८ के.

लोक भविष्य:- इसमास में ५ गुरुवार एवं ५ ही शुक्रवार हैं- पश्चिमी देशों में आन्तरिक उलझनें बढ़ेंगी; परस्पर विरोधी देशों में सैन्यसंघर्ष की संभावना से वातावरण क्षुब्ध रहेगा। इराक, पाक, अफगानिस्तान एवं अन्य मुस्लिमराष्ट्रों की आन्तरिक समस्याएं दुर्धर होती जाएंगी। २८ अप्रैल को बुध के वक्री होने पर कहीं अग्निकाण्ड, बम विस्फोट व प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- इस पक्ष में गेहूं, जौ, चना में साधारण तेजी-मन्दी के रिऐक्शन आएंगे। २६ अप्रैल के लगभग घी, गुड़, खाण्ड में तेजी; गेहूं, चना आदि अनाजों में मन्दा रहे। २८ अप्रैल को रुई में जोरदार मन्दे का रिऐक्शन आएगा। चांदी तेज और पाट, हेशियन, शेयरों में मन्दा रहेगा।

आकाश लक्षण:- उ.भा. में गर्मी बढ़ेगी। पक्ष के पूर्वार्ध में सिक्किम, आसाम, राज. एवं उत्तरांचल में बादलवात व तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि के योग बनते हैं। २६ एवं २८ अप्रैल को भी उत्तरी भारत में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- वैशाख कृष्ण एकादशी को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों के व्यापारी स्टॉक तुरन्त निकाल दें, अन्यथा व्यापारी हानि में रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदये

२ रा.	१ सू. चं. बु.	१२ शु.
३ श.		११
४ गु.		१० मं.
५	७	९
६		८ के.

वैशाख कृष्ण ३० गुरु, इष्ट ५९/२७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	९	०	३	११	२	१	७
१७	२२	१२	२५	१५	१८	०२	०६	०६
१७	३५	०३	२२	२०	३४	१३	४३	४३
४०	३४	१५	२५	४४	५६	२६	३४	३४
५९	७०७	३५	२४	०४	७२	०६	०३	०३
१५	२८	१७	१२	५४	३६	१८	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] २	[illegible] ३	[illegible] १	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] २

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(२ से १६ मई तक, सन् २००३ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.
३३	०७	१	शु.	३६	३७	भर.	२०	१२	आ.	००	०१	किं.	३	२०
३३	११	२	श.	४२	५६	कृत्ति.	२७	५५	सौ.	०२	४०	बा.	६	४६
३३	१४	३	र.	४८	४१	रोहि.	३५	१०	शो.	०५	०३	तै.	१५	४८
३३	१८	४	चं.	५३	३३	मृग.	४१	३९	अ.	०६	५६	व.	२१	१६
३३	२२	५	मं.	५७	१४	आर्द्रा	४७	०२	सु.	०८	०५	ब.	२५	२४
३३	२६	६	बु.	५९	२४	पुन.	५१	०१	धृ.	०८	१६	कौ.	२८	१९
३३	२९	७	गु.	५६	५३	पुष्य	५३	२२	शू.	०७	१६	ग.	२९	३९
३३	३३	८	शु.	५८	३१	आश्ले.	५३	५६	गं.	०४	५५	वि.	२९	२७
३३	३६	९	श.	५५	१८	मघा	५२	४०	वृ. ध्रु.	०१ ५५	०६ ४७	बा.	२६	५५
३३	४०	१०	र.	५०	२१	पू.फा.	४९	४१	व्या.	४९	०६	तै.	२२	५०
३३	४३	११	चं.	४३	५२	उ.फा.	४५	०९	ह.	४१	०९	व.	१७	१८
३३	४७	१२	मं.	३६	०७	हस्त	३९	२२	व.	३२	०८	ब.	२०	००
३३	५०	१३	बु.	२७	२८	चित्रा	३२	४२	सि.	२२	२१	तै.	२७	२८
३३	५३	१४	गु.	१८	१६	स्वा.	२५	३१	व्य.	१२	०४	व.	१८	१६
३३	५७	१५	शु.	०८	५६	वि.	१८	१४	ब. प.	०१ ५१	३८ २१	ब.	०८	५६

तिथि	तारीखें प्र. (वैशाख)	अं. (मई)	श. (वैशाख)	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
१	१९	२	१२	२९	वृ.	३७	०६	५	४२	१८	५७	०	१७	१८	१०
२	२०	३	१३	३०	वृष			५	४२	१८	५८	०	१८	१६	२३
३	२१	४	१४	र.१	वृष			५	४१	१८	५८	०	१९	१४	३३
४	२२	५	१५	२	मि.	०८	३३	५	४०	१८	५९	०	२०	१२	४२
५	२३	६	१६	३	मिथुन			५	३९	१९	००	०	२१	१०	४९
६	२४	७	१७	४	क.	३५	११	५	३८	१९	००	०	२२	०८	५४
७	२५	८	१८	५	कर्क			५	३७	१९	०१	०	२३	०६	५७
८	२६	९	१९	६	सिं.	५३	५६	५	३७	१९	०२	०	२४	०४	५७
९	२७	१०	२०	७	सिंह			५	३६	१९	०२	०	२५	०२	५६
१०	२८	११	२१	८	सिंह			५	३५	१९	०३	०	२६	००	५३
११	२९	१२	२२	९	क.	०३	४२	५	३४	१९	०४	०	२६	५८	५०
१२	३०	१३	२३	१०	कन्या			५	३४	१९	०४	०	२७	५६	४३
१३	३१	१४	२४	११	तु.	०६	०८	५	३३	१९	०५	०	२८	५४	३५
१४	ज्ये.१	१५	२५	१२	तुला			५	३२	१९	०६	०	२९	५२	२५
१५	२	१६	२६	१३	वृ.	०५	०३	५	३२	१९	०६	१	००	५०	१३

ग्रह दर्शन-बुध १६ मई से प्रातः पूर्व में दिखाई देने लगेगा। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न और श. पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में और मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। ७ मई को बुध रवि बिम्ब में प्रविष्ट होगा।

चन्द्र दर्शन मु. ४५, राहु कृत्ति. ३, केतु अनु. १ में ६/५७, (A)
रबी-उल-अव्वल मु. प्रा., श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया (B)
भ. २१/१६ से ५३/३३ तक,
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती,
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.), बुध-रवि भेद युति (देखें (C)
भ. ५६/५३ बाद, श्री गंगा जन्म,
भ. २६/२७ तक,
श्री जानकी जयन्ती,
सूर्य कृत्ति. में ४०/२७, शुक्र अश्वि. मेष में २५/२०,
भ. १७/१८ से ४३/५२ तक, शनि मृग. ४ में ६/१५, मोहिनी (D)
भौम प्रदोष व्रत,
श्री नृसिंह जयन्ती,
भ. १८/१६ से ४३/३५ तक, सं. सूर्य वृष में ७/५२, मु. १५,(E)
बुध पूर्व में उदय ३/५२, नेपच्यून वक्री १/५५, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, (F)

(A) श्री शिवाजी जयन्ती, (B) (रोहिणी योग), (C) पृष्ठ 17), (D) एकादशी व्रत (स.), (E) पुण्यकाल २३/४२ तक, गुरु आश्ले. १ में १६/३७, श्रीकूर्म जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत, (F) वैशाखस्नान समाप्त,

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र, इष्ट ५६/४२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २५ ०२ ४२	४ ०१ १७ ५१	९ १९ ४० ५६	० २० ४६ ४७	३ १६ ०५ १३	११ २८ १६ २२	२ ०३ ०५ २५	१ ०६ १८ ०८	७ ०६ १८ ०८
५८ ०१	७९५ २४	३४ १८	३६ २४	०६ ०६	७२ ४२	०६ ४२	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ भर.	१ मघा	३ पू.षा.	३ भर.	४ पुष्य	४ रेव.	३ मृग.	३ कृत्ति.	१ अनु.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः-कृत्तिका नक्षत्र का राहु प्रशासकवर्ग के लिए कष्टपूर्ण रहेगा। १७ मई को बुध-शनि-रविवेध युति होगी, शासनसत्ता में विशेष परिवर्तन हों एवं मुस्लिमराष्ट्र विशेष में शीघ्र ही सत्ता हस्तान्तरण का संकेत है; पक्षमध्य के बाद, कहीं अग्निकाण्ड व यानदुर्घटना से हानि भी हो । पक्षान्त में बुधोदय कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान से हानि करे- *"नैत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो ब्रजत्युदयम्।"*

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में सोना, चांदी, तांबा और तिलहन में तेजी रहेगी। ११ मई के लगभग जौ, चना, गेहूं आदि अनाज और घी तेज रहेंगे। सोना,चांदी में खास तेजी रहे। गुड़, शक्कर, पाट, बारदाना में घटा-बढ़ी और तेल, तिलहन में कुछ मन्दे का रुख रहे।

कुण्डली सूर्योदये

३ श
१ बु शु.
गु. ४
सू. २
रा.
१२
५
११
६
८ के.
१० मं.
७ चं.
९

वैशाख शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५६/५५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ ०१ ४७ ५८	७ १३ ४९ २७	९ २० ३७ ०१	० १७ ३७ ५९	३ १६ ५१ ४२	० ०६ ४५ ३३	२ ०३ ५३ ३०	१ ०५ ५५ ५३	७ ०५ ५५ ५३
५७ ४९	९०७ ०६	३३ १८	१६ ४८	०७ ०	७२ ४८	०७ ०	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ कृत्ति.	४ अनु.	४ श्रव.	२ भर.	१ आश्ले.	३ अश्वि.	४ मृग.	३ कृत्ति.	१ अनु.

आकाश लक्षणः- मई ३, ११, १२ एवं १५ के लगभग मुम्बई, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आसाम एवं हि.प्र. के सुदूर भागों में कहीं बादलचाल व वर्षा के योग हैं।

शकुन विचारः- वैशाख शुक्ल तृतीया किंवा पंचमी के दिन यदि दिनभर बादल रहें एवं मेघ गरजें तो भाद्रपद में अनाज मंहगे होंगे, भाद्रपद में ही सटीक निकालें; लाभ मिलेगा।

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१७ से ३१ मई तक, सन् २००३ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन-प्रातः बुध-शुक्र पूर्व में परस्पर काफी समीपस्थ दीखेंगे। इस समय मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं श. पश्चिम में और गुरु इससे काफी ऊपर उठा दिखाई देगा। ३१ मई को खण्डग्रास सूर्यग्रहण पश्चिमोत्तरी भारत में दीखेगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	प.	योग	समाप्तिकाल घ.	प.	करण	समाप्तिकाल घ.	प.	तारीखें प्र. (ज्येष्ठ)	अं. (मई)	श. (वैशाख)	मु. (र.उ.ऊ.)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	शु.	५६	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३४	००	२	श.	५१	२४	अनु.	११	१६	शि.	४१	३५	तै.	२५	३७	३	१७	२७	१४	वृश्चिक			५	३१	१९	०७	१	०१	४८	०१	
३४	०३	३	र.	४४	०२	ज्ये.	०५	०६	सि.	३२	३६	व.	१७	३५	४	१८	२८	१५	ध.	०५	०६	५	३०	१९	०८	१	०२	४५	४७	म. १७/३५ से ४४/०२ तक,
३४	०६	४	चं.	३८	०३	मूल पू.षा.	०० ५६	०७ ३४	सा.	२४	४८	ब.	११	०३	५	१९	२९	१६	धनु			५	३०	१९	०८	१	०३	४३	३३	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
३४	०९	५	मं.	३३	४५	उ.षा.	५४	४७	शु.	१८	१६	कौ.	५	५४	६	२०	३०	१७	म.	१०	५८	५	२९	१९	०६	१	०४	४१	१७	बुध मार्गी १८/५५,
३४	१२	६	बु.	३१	१६	श्रव.	५४	५४	शु.	१३	१५	ग.	२	३२	७	२१	३१	१८	मकर			५	२९	१९	१०	१	०५	३८	५६	म. ३१/१६ बाद, **सूर्य सायन मिथुन में २८/०२, मंगल धनि. में ५७/५०,**
३४	१४	७	गु.	३०	५१	धनि.	५६	५८	ब्र.	०६	४७	वि.	०	५१	८	२२	ज्ये.१	१९	कुं.	२५	४२	५	२८	१९	१०	१	०६	३६	४०	म. ००/५१ तक, पंचक प्रारम्भ २५/४२, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, शुक्र भरणी में (A)
३४	१७	८	शु.	३२	२०	शत.	६०	००	ऐं.	०७	५३	बा.	१	३५	९	२३	२	२०	कुम्भ			५	२८	१९	११	१	०७	३४	२१	
३४	२०	९	श.	३५	३३	शत.	००	५२	वै.	०७	२५	तै.	३	५६	१०	२४	३	२१	मी.	४६	४६	५	२७	१९	११	१	०८	३२	०१	
३४	२२	१०	र.	४०	१३	पू.भा.	०६	२०	वि.	०८	११	व.	७	४४	११	२५	४	२२	मीन			५	२७	१९	१२	१	०९	२९	४०	म. ०७/४४ से ४०/१३ तक, सूर्य रोहि. में ३१/३५,
३४	२५	११	चं.	४५	५७	उ.भा.	१३	०१	प्री.	०६	५५	ब.	१३	०५	१२	२६	५	२३	मीन			५	२७	१९	१३	१	१०	२७	१८	अपरा एकादशी व्रत (स.), **भद्रकाली एकादशी (पं.),**
३४	२७	१२	मं.	५२	१७	रेव.	२०	३०	आ.	१२	१८	कौ.	१६	०७	१३	२७	६	२४	मे.	२०	३०	५	२६	१९	१३	१	११	२४	५४	पंचक समाप्त, २०/३०,
३४	३०	१३	बु.	५८	४६	अश्वि.	२८	२१	सौ.	१५	०२	ग.	२५	३३	१४	२८	७	२५	मेष			५	२६	१९	१४	१	१२	२२	३०	म. ५८/४६ बाद, प्रदोष व्रत,
३४	३२	१४	गु.	६०	००	भर.	३६	१२	शो.	१७	४६	वि.	३२	०३	१५	२९	८	२६	वृ.	५३	०७	५	२६	१९	१४	१	१३	२०	०४	म. ३२/०३ तक,
३४	३४	१४	शु.	०५	११	कृत्ति.	४३	४२	अ.	२०	२३	श.	०५	११	१६	३०	९	२७	वृष			५	२५	१९	१५	१	१४	१७	३६	वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), **सूर्यग्रहण-शूल,**
३४	३६	३०	श.	११	०२	रोहि.	५०	३६	सु.	२२	३२	ना.	११	०२	१७	३१	१०	२८	वृष			५	२५	१९	१५	१	१५	१५	१२	शनैश्चरी अमावस, भावुका अमावस, खण्डग्रास **सूर्यग्रहण** (पश्चिमोत्तर (B)

(A) २५/१२, (B) भारत में दृश्य,)-(देखें पृ. 11),

ज्येष्ठ कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ००/५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	६	०	३	०	२	१	७
०७	०७	२३	१७	१७	१४	०४	०५	०५
३४	१९	५३	२६	३६	०२	३६	३६	३६
२६	२७	३०	४७	४७	२०	२३	४८	४८
५७	७०२	३२	०६	०७	७२	०७	०३	०३
४२	०७	१८	५४	४८	४८	१८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः-भरणी नक्षत्र में बुध मार्गी होगा। उलझी हुई कुछ समस्याओं के समाधानार्थ प्रयास होंगे। रोगों से जनता परेशान हो। इसमास में ५ शनिवार हैं;- कहीं भूकम्प से भारी हानि होगी। समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड से हानि के समाचार भी मिलें; पूर्वोत्तर के मध्यवर्ती देशों में कहीं विशेष विनाश एवम् सत्तापरिवर्तन हो;

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २० मई के लगभग रुई और चांदी में घटा-बढ़ी। अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में कुछ मन्दा बने। २५ मई के लगभग तेल, तिलहन, जौ, चना, ज्वार, बाजरा में तेजी। पक्षान्त में शनैश्चरी अमा के कारण भी तेजी का रुख रहेगा।

आकाश लक्षणः- मई २०, २१, २२, २५, ३१ को मुम्बई, भूटान, सिक्किम, आसाम, बिहार एवं झारखण्ड के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि के योग हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में ग्रीष्मऋतु का असर विशेषरूप से अनुभव होने लगेगा।

शकुन विचारः- यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की वायु चले तो घी, तेल, तिल के स्टॉक से आश्विन में लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

३ श.
१ बु. शु.
गु. ४
सू. २ चं. रा.
१२
५
११
६
८ के
१०मं.
७
९

ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनि, इष्ट ०/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	६	०	३	०	२	१	७
१५	१३	२८	२१	१८	२३	०५	०५	०५
१५	१६	०४	२४	४३	४५	३५	११	११
२४	३०	३५	३६	४६	२५	२२	२२	२२
५७	७१२	३०	४३	०८	७२	०७	०३	०३
३४	५४	३६	३६	४८	५४	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, **ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५** (२ से १४ जून तक, सन् २००३ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

ग्रह दर्शन- ६ जून को शनि पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः शु. बु. पूर्व में परस्पर समीपस्थ और मं. पश्चिम कपाल में होगा। सायं गुरु को पश्चिम में देखिए।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३८	१	र.	१६	१०	मृग.	५६	३६	धृ.	२४	०५	ब.	१६	१०	१८	१	११	२६	मि.	२३	४५	५	२५	१६	१६	१	१६	१२	४३	चन्द्र दर्शन मु. ३०, जून प्रारम्भ, सूर्यग्रहण शूल,
३४	४०	२	चं.	२०	२१	आर्द्रा	६०	००	शू.	२४	५६	कौ.	२०	२१	१९	२	१२	र.१	मिथुन			५	२४	१६	१७	१	१७	१०	१५	शुक्र कृत्ति. में २३/५०, सूर्यग्रहण शूल, रबी-उस्सानी मु. प्रा., (A)
३४	४२	३	मं.	२३	२८	आर्द्रा	०१	४४	गं.	२४	५५	ग.	२३	२८	२०	३	१३	२	क.	४९	४८	५	२४	१६	१७	१	१८	०७	४४	भ. ५८/३४ बाद, मंगल कुम्भ में ५१/००, सूर्यग्रहण शूल, (B),
३४	४४	४	बु.	२५	२२	पुन.	०५	४१	वृ.	२३	५९	वि.	२५	२२	२१	४	१४	३	कर्क			५	२४	१६	१८	१	१९	०५	१३	भ. २५/२२ तक,
३४	४५	५	गु.	२५	५९	पुष्य	०८	२३	ध्रु.	२२	०१	बा.	२५	५९	२२	५	१५	४	कर्क			५	२४	१६	१८	१	२०	०२	४०	बुध कृत्ति. में ४०/५०, शुक्र वृष में ८/१७,
३४	४७	६	शु.	२५	१३	आश्ले.	०९	४६	व्या.	१८	५९	तै.	२५	१३	२३	६	१६	५	सिं.	०९	४६	५	२४	१६	१९	१	२१	००	०७	शनि अस्त २४/४७,
३४	४९	७	श.	२३	०२	मघा	०९	४६	ह.	१४	४९	व.	२३	०२	२४	७	१७	६	सिंह			५	२४	१६	१९	१	२१	५७	३३	भ. २३/०२ से ५१/२५ तक, यूरेनस वक्री १७/४०,
३४	५०	८	र.	१९	२८	पू.फा.	०८	२२	व.	०९	३२	ब.	१९	२८	२५	८	१८	७	क.	२२	४६	५	२४	१६	१९	१	२२	५४	५६	सूर्य मृग. में २६/१०, बुध वृष में ३२/५७, गुरु आश्ले. २ में १३/३२, (C)
३४	५१	९	चं.	१४	३४	उ.फा.	०५	३६	सि. व्य.	०२ ५५	०८ ४५	कौ.	१४	३४	२६	९	१९	८	कन्या			५	२३	१६	२०	१	२३	५२	२०	
३४	५२	१०	मं.	०८	२६	हस्त चित्रा	०१ ५६	४२ ४३	व.	४७	३०	ग.	०८	२६	२७	१०	२०	९	तु.	२९	२०	५	२३	१६	२०	१	२४	४९	४२	भ. ३५/०३ बाद, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.), श्रीगंगा दशहरा (D)
३४	५४	११	बु.	०१	२३	स्वा.	५०	५७	प.	३८	३२	वि.	०१	२३	२८	११	२१	१०	तुला			५	२३	१६	२१	१	२५	४७	०२	भ. ०१/२३ तक, निर्जला एकादशी व्रत (वै.), चम्पक द्वादशी,
अवम		१२	बु.	५३	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३४	५४	१३	गु.	४५	११	वि.	४४	४१	शि.	२९	०७	कौ.	१९	२१	२९	१२	२२	११	वृ.	३१	१६	५	२३	१६	२१	१	२६	४४	२२	प्रदोष व्रत,
३४	५५	१४	शु.	३६	४२	अनु.	३८	१६	सि.	१९	२९	ग.	१०	५६	३०	१३	२३	१२	वृश्चिक			५	२३	१६	२२	१	२७	४१	४२	भ. ३६/४२ बाद, शुक्र रोहि. में २१/२५,
३४	५६	१५	श.	२८	२६	ज्ये.	३२	०५	सा.	०९	५६	वि.	२	३१	३१	१४	२४	१३	ध.	३२	०५	५	२३	१६	२२	१	२८	३६	००	भ. ०२/३१ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष) ,

(A) रम्भा तृतीया, (B) श्रीप्रताप जयन्ती (राज.), (C) शनि आर्द्रा १ में ३१/४७, (D) (देखें पृ.139),

ज्येष्ठ शुक्ल ८ रवि, इष्ट ००/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २२ ५५ १२	४ २४ ४८ १८	१० ०२ ० २२	० २९ १९ ३६	३ १९ ५७ ५१	१ ०३ २९ १२	२ ०६ ३५ ५७	१ ०४ ४५ ५६	७ ०४ ४५ ५६
५७ २४	८१६ ०८	२८ ३६	७० ५४	०९ ३६	७३ ०	०७ ३६	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

३ श. | १ बु | गु ४ | सू. २ रा शु | १२ | ५ चं. | ११ मं. | ६ | ८ के. | १० | ७ | ९
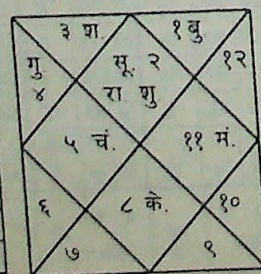
लोक भविष्य:-कुम्भराशि का मंगल जनता में सन्तोष; देश में धार्मिक-समस्या को लेकर गतिरोध पैदा करे। नेता लोगों में परस्पर मतभेद से राजनैतिक वातावरण गर्माएगा। आर्द्रानक्षत्र का शनि विदेशों से व्यापारिक सम्बन्धों को मजबूत करेगा। ६ जून को शनि का अस्त पशुओं में रोग का संकेत देता है। वृषराशि के बुध-शुक्र कहीं आन्तरिक कलह एवं युद्धमय वातवरण का संकेत देते हैं;- *"मेदिनी नवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम् ।"*

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में रुई और चांदी में काफी घटा-बढ़ी; अनाज, सोना, गुड़, खाण्ड में तेजी रहेगी। ५ जून के लगभग वृषराशि का शुक्र रुई, कपास में अच्छा मन्दा; सोना, चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी बनाए। ६ जून को रुई, शेयर बाज़ार, अनाज और सोने में अच्छे मन्दी-तेजी के रिऐक्शन आएंगे।

आकाश लक्षण:- जून ३ से ८ के मध्य मुम्बई एवं आसाम में अच्छी वर्षा के योग हैं। भूटान, सिक्किम, मैसूर, बिहार के कुछ भागों में भी बादलचाल व वर्षा के योग हैं। हि.प्र. के ऊपरी भाग, जम्मू-काश्मीर में खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचार:- ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को यदि बादल गरजें, दक्षिण की हवा चले, तो तिलहन के स्टॉक से कार्तिक में लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

३ श | १ | गु ४ | सू. २ रा शु बु | १२ | ५ | ११ मं. | ६ | ८ के | १० | ७ | चं | ९
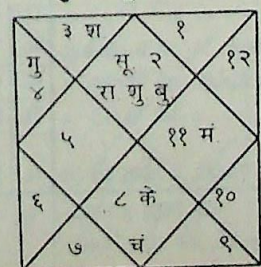
ज्येष्ठ शुक्ल १५ शनि, इष्ट ०/१७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ २८ ३९ १६	७ २२ ०७ ५८	१० ०४ ४५ १५	१ ०७ २९ १७	३ २० ५७ २६	१ १० ४७ २३	२ ०७ २२ १४	१ ०४ २६ ५१	७ ०४ २६ ५१
५७ १९	८६५ ०६	२६ ४२	८९ ०६	१० १२	७३ ०६	०७ ४८	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ (१५ से २९ जून तक, सन् २००३ ई.) उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन-शनि अदृश्य है। २४ जून को बुध भी पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः शुक्र पूर्व में, मंगल पश्चिम कपाल में तथा सायं गुरु पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५७	१	र.	२०	४६	मूल	२६	३१	शु. शु.	०० ५२	४५ १६	कौ.	२०	४६	१	१५	२५	१४	धनु			५	२३	१६	२२	१	२६	३६	१८	सं. सूर्य मिथुन में २४/५०, मु. ३०, पुण्यकाल ८/५० बाद, बुध (A)
३४	५८	२	चं.	१४	०३	पू.षा.	२१	५७	ब्र.	४४	४६	ग.	१४	०३	२	१६	२६	१५	म.	३६	०१	५	२४	१६	२३	२	००	३३	३६	भ. ४१/१० बाद,
३४	५८	३	मं.	०८	४०	उ.षा.	१८	४७	ऐं.	३८	३०	वि.	०८	४०	३	१७	२७	१६	मकर			५	२४	१६	२३	२	०१	३०	५३	भ. ०८/४० तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	५८	४	बु.	०४	५५	श्रव.	१७	१८	वै.	३३	४२	बा.	०४	५५	४	१८	२८	१७	कुं.	४७	१६	५	२४	१६	२३	२	०२	२८	०८	पंचक प्रारम्भ ४७/१६, मंगल शतभिषा में २७/३२,
३४	५९	५	गु.	०३	०४	धनि.	१७	४४	वि.	३०	२९	तै.	०३	०४	५	१९	२९	१८	कुम्भ			५	२४	१६	२३	२	०३	२५	२५	
३४	५९	६	शु.	०३	१४	शत.	२०	०८	प्री.	२८	५१	व.	०३	१४	६	२०	३०	१९	कुम्भ			५	२४	१६	२४	२	०४	२२	४१	भ. ०३/१४ से ३४/०३ तक,
३४	५९	७	श.	०५	२२	पू.भा.	२४	२६	आ.	२८	४३	ब.	०५	२२	७	२१	३१	२०	मी.	०८	११	५	२४	१६	२४	२	०५	१९	५६	सूर्य सायन कर्क में ४८/१०, दक्षिणायन-वर्षा ऋतु प्रा.,
३४	५९	८	र.	०६	१५	उ.भा.	३०	२०	सौ.	२६	५१	कौ.	०६	१५	८	२२	आ.१	२१	मीन			५	२५	१६	२४	२	०६	१७	१२	सूर्य आर्द्रा में २३/५२, शक आषाढ़ प्रा.,
३४	५९	९	चं.	१४	३२	रेव.	३७	२५	शो.	३१	५६	ग.	१४	३२	९	२३	२	२२	मे.	३७	२५	५	२५	१६	२४	२	०७	१४	२८	भ. ४७/३२ बाद, पंचक समाप्त ३७/२५, बुध मृग. में ११/००,
३४	५९	१०	मं.	२०	४०	अश्वि.	४५	०६	अ.	३४	३४	वि.	२०	४०	१०	२४	३	२३	मेष			५	२५	१६	२५	२	०८	११	४२	भ. २०/४० तक, शुक्र मृग. में १७/३५, बुध पूर्व में अस्त १५/५५,
३४	५८	११	बु.	२७	०७	भर.	५२	५८	सु.	३७	२०	बा.	२७	०७	११	२५	४	२४	मेष			५	२५	१६	२५	२	०९	०८	५८	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	गु.	३३	२०	कृत्ति.	६०	००	धृ.	३९	५२	कौ.	०	१४	१२	२६	५	२५	वृ.	०९	५२	५	२६	१६	२५	२	१०	०६	१२	बुध मिथुन में ३१/२०, प्रदोष व्रत (देखें पृ.139)
३४	५८	१३	शु.	३८	५१	कृत्ति.	००	२३	शू.	४१	५१	ग.	६	०५	१३	२७	६	२६	वृष			५	२६	१६	२५	२	११	०३	२८	भ. ३८/५१ बाद, गुरु आश्ले. ३ में १६/३७,
३४	५७	१४	श.	४३	२३	रोहि.	०७	००	गं.	४३	०४	वि.	११	१५	१४	२८	७	२७	मि.	३९	५६	५	२६	१६	२५	२	१२	००	४३	भ. ११/१५ तक,
३४	५६	३०	र.	४६	४५	मृग.	१२	३५	वृ.	४३	२३	च.	१५	०४	१५	२९	८	२८	मिथुन			५	२७	१६	२५	२	१२	५७	५८	बुध आर्द्रा में ४१/४५, शुक्र मिथुन में ४५/०२,

(A) रोहि. में ३७/२५,

आषाढ़ कृष्ण ८ रवि, इष्ट ०/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१०	१	३	१	२	१	७
०६	१०	०८	२१	२२	२०	०८	०४	०४
१७	३६	०६	०४	२१	३२	२४	०१	०१
२५	४५	०७	४७	४३	२१	२५	२५	२५
५७	७३५	२३	१११	१०	७३	०७	०३	०३
१५	०८	४८	३६	४८	११	४८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

गु.४ | रा शु बु. २ | सू. ३ श. | १ | ५ | ६ | १२ चं. | ७ | ९ | ११ मं. | ८ के | १०

लोक भविष्य:- इसमास में बुध का वृषराशि में अस्त होना पशुपीड़ा एवं जनता में विषम रोगों से परेशानी करे। मिथुनराशि का बुध कहीं वायुवेग, तूफान से हानि एवं पक्षान्त में मिथुन का शुक्र खाद्यान्नों में विशेष तेजी से जनता में असन्तोष व्याप्त करे;-

"मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते। यव-गोधूम-चणका: शालिश्चैव विशेषत :।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में सूत, कपास, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी और दालवाना में तेजी का रुख रहेगा। २४ जून के करीब बाज़ारों में मन्दा रहे। २६ जून के लगभग सोना, चांदी, सरसों, तारामीरा, तेल, तिलहन में काफी तेजी के बाद काफी मन्दा आने का योग है।

आकाश लक्षण:- जून १५, १८, २१, २२, २४, २६, २७ एवं २९ को भूटान, शिलांग, काठमाण्डु, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आसाम, पंजाब, हरियाणा एवं हि.प्र. में कहीं जोरदार वर्षा, कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। उ.भारत के मैदानी भाग में कहीं पानी की कमी भी अनुभव होगी।

शकुन विचार:- यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके, वर्षा भी हो तो आगे अनाज में तेजी से लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

आषाढ़ कृष्ण ३० रवि, इष्ट ०/०७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१०	२	३	१	२	१	७
१२	०४	१०	०५	२३	२६	०६	०३	०३
५८	०७	४०	११	३६	०५	१६	३६	३६
०६	१५	०	११	३०	०८	०६	०६	०६
५७	७२६	२०	१२६	११	७३	०७	०३	०३
१४	५६	३०	४२	१८	१७	४८	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, **आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७**

(३० जून से १३ जुलाई तक, सन् २००३ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन- बुध अदृश्य है। १२ जुलाई से शनि प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। प्रातः मं. पश्चिमकपाल में, शु. पूर्व क्षितिज से थोड़ा ऊपर तथा सायं गुरु पश्चिम में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ मा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५५	१	चं.	४८	५३	आर्द्रा	१६	५६	ध्रु.	४२	४४	किं.	१७	४६	१६	३०	६	२६	मिथुन			५	२७	१६	२५	२	१३	५५	१४	
३४	५५	२	मं.	४६	४६	पुन.	२०	१२	व्या.	४१	०८	बा.	१६	२१	१७	जु.१	१०	३०	क.	०४	३०	५	२७	१६	२५	२	१४	५२	२६	चन्द्र दर्शन मु. ३०, रथयात्रा (पुरी), जुलाई प्रा.,
३४	५४	३	बु.	४६	३५	पुष्य	२२	१४	ह.	३८	३७	तै.	१६	४२	१८	२	११	ज.१	कर्क			५	२८	१६	२५	२	१५	४६	४१	जमद-उ-अव्वल मु. प्रा.,
३४	५२	४	गु.	४८	१७	आश्ले.	२३	१२	व.	३५	१४	व.	१६	०३	१६	३	१२	२	सिं.	२३	१२	५	२८	१६	२५	२	१६	४६	५६	भ.१६/०३ से ४८/१७ तक,
३४	५१	५	शु.	४५	५६	मघा	२३	०६	सि.	३१	०२	ब.	१७	०८	२०	४	१३	३	सिंह			५	२८	१६	२५	२	१७	४४	१०	शनि आर्द्रा २ में १५/४७,
३४	५०	६	श.	४२	४७	पू.फा.	२२	१०	व्य.	२६	०६	कौ.	१४	२३	२१	५	१४	४	क.	३६	४७	५	२६	१६	२५	२	१८	४१	२४	बुध पुन. में ५०/४५, शुक्र आर्द्रा में १२/०२, राहु कृत्ति. २, केतु (A)
३४	४६	७	र.	३८	४२	उ.फा.	२०	१८	व.	२०	२६	ग.	१०	४५	२२	६	१५	५	कन्या			५	२६	१६	२५	२	१६	३८	३७	भ. ३८/४२ बाद, सूर्य पुन. में २२/२५, विवस्वत् सप्तमी,
३४	४७	८	चं.	३३	५०	हस्त	१७	३८	प.	१४	०७	वि.	६	२१	२३	७	१६	६	तु.	४६	०१	५	३०	१६	२५	२	२०	३५	५१	भ. ०६/२१ तक,
३४	४६	६	मं.	२८	१४	चित्रा	१४	१२	शि. सि.	०७ ५६	१० ४२	बा.	१	०२	२४	८	१७	७	तुला			५	३०	१६	२४	२	२१	३३	०३	
३४	४४	१०	बु.	२२	०१	स्वा.	१०	०७	सा.	५१	४५	ग.	२२	०१	२५	६	१८	८	वृ.	५१	४४	५	३१	१६	२४	२	२२	३०	१६	भ. ४८/४४ बाद,
३४	४२	११	गु.	१५	२०	वि.	०५	३१	शु.	४३	२६	वि.	१५	२०	२६	१०	१६	६	वृश्चिक			५	३१	१६	२४	२	२३	२७	२६	भ. १५/२० तक, **बुध कर्क में ३२/००**, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.),
३४	४०	१२	शु.	०८	२०	अनु. ज्ये.	०० ५५	३५ ३६	शु.	३५	०५	बा.	०८	२०	२७	११	२०	१०	ध.	५५	३६	५	३२	१६	२४	२	२४	२४	४२	प्रदोष व्रत,
३४	३८	१३	श.	०१	१८	मूल	५०	४७	ब्र.	२६	४६	तै.	०१	१८	२८	१२	२१	११	धनु			५	३२	१६	२४	२	२५	२१	५४	भ. ५४/३१ बाद, बुध पुष्य में ८/३७, **शनि उदित ४५/४०**,
अवम		१४	श.	५४	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**चतुर्दशी तिथिक्षय**,
३४	३६	१५	र.	४८	१७	पू.षा.	४६	३१	ऐं	१८	४५	वि.	२१	१८	२६	१३	२२	१२	धनु			५	३३	१६	२३	२	२६	१६	०८	भ. २१/१८ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, **गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा, (B)

(A) विशा. ४ मे १/२५, कुमार षष्टी, (B) शिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, आषाढ़ी पूर्णिमा, **चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ,**

आषाढ़ शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ०/०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २० ३५ ५१	५ १६ १३ ०२	१० १३ ०५ ४१	२ २२ २६ ४६	३ २५ १२ २३	२ ०८ ५२ ०७	२ १० २१ १०	१ ०३ १३ ४३	७ ०३ १३ ४३
५७ १२	८३३ १७	१६ १८	१२६ ३६	११ ५४	७३ २४	०७ ४१	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
१	३	२	१	३	१	२	२	४

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्य:- ४ जुला.को शनि एवं ५ जुला. को शुक्र आर्द्रानक्षत्र में आकर वर्षा से कुछ प्रान्तों में बाढ़ से जनधनहानि करे। अमेरिका, इरान, पाकिस्तान, जापान, जर्मनी में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो। १२ जुला.को शनि का आर्द्रानक्षत्र में उदय अनेकत्र सुभिक्ष से सुख-समृद्धि का संकेत देता है। आषाढ़शुक्ल द्वितीया एवं नवमी मंगलवारी होने से कुछ प्रान्तों में अनावृष्टि से कृषकवर्ग चिन्तित रहे;-" *आषाढ़-शुक्ल पक्षे च द्वितीयानवमी दिने।......कुजे वृष्टिर्न जायते ॥*"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में ४ जुलाई के लगभग मूंग, मोठ, जौ, कपास में तेजी । पक्षमध्य में रुई मे जोरदार मन्दा; चांदी में घटा-बढ़ी। गुड़, मूंगफली, सरसों और सोने में पहले कुछ तेजी आकर बाद में मन्दा बने। पक्षान्त में १२ जुलाई के लगभग रुई, शेयर ओर तिलहन में मन्दा आए।

कुण्डली सूर्योदये

आषाढ़ शुक्ल १५रवि, इष्ट ५६/५२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २७ १६ १३	८ २६ ५० ११	१० १४ ४२ २२	३ ०७ ०५ ०८	३ २६ ३६ २८	२ १७ २६ ३६	२ ११ १४ ५१	१ ०२ ५१ २७	७ ०२ ५१ २७
५७ १२	८५८ ३५	११ ५४	१२० ३६	१२ १२	७३ ३७	०७ ३५	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	१	३	२	३	४	२	२	४

आकाश लक्षण:- इस पक्ष में उत्तरी भारत में एवं पश्चिमी प्रान्तों में व्यापक वर्षा के योग हैं। ४, ५, १०, ११, १२ जुलाई को पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार:- आषाढ़ शुक्ल पंचमी को यदि पश्चिम की हवा चले, बादल-वर्षा हो और इन्द्रधनुष दीखे, तो अनाज का स्टॉक करने से कार्त्तिक में लाभ होगा।

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(१४ से २८ जुलाई तक, सन् २००३ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. १७ जुलाई से सायं पश्चिम में दिखाई देने लगेगा। शु. २६ जुलाई को पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः मं. पश्चिम कपाल में, श. पूर्व में और सायं गुरु पश्चिम में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज.उ.क.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३४	१	चं.	४२	५७	उ.षा.	४३	०८	वै.	११	२१	बा.	१५	३७	३०	१४	२३	१३	म.	००	३३	५	३३	१९	२३	२	२७	१६	२१	गुरु आश्ले. ४ में १७/१७,
३४	३२	२	मं.	३८	५२	श्रव.	४१	०१	वि. प्री.	०४ ५६	४८ २४	तै.	१०	५५	३१	१५	२४	१४	मकर			५	३४	१९	२३	२	२८	१३	३३	अशून्य शयन व्रत,
३४	३०	३	बु.	३६	२१	धनि.	४०	२७	आ.	५५	१९	व.	७	२३	श्रा.१	१६	२५	१५	कुं.	१०	३१	५	३४	१९	२२	२	२९	१०	४७	भ. ०७/२३ से ३६/२१ तक, पंचक प्रा. १०/३१, सं. सूर्य कर्क में (A)
३४	२८	४	गु.	३५	३८	शत.	४१	४१	सौ.	५२	४३	ब.	६	००	२	१७	२६	१६	कुम्भ			५	३५	१९	२२	३	००	०८	०२	बुध पश्चिम में उदित ११/३५,
३४	२५	५	शु.	३६	४९	पू.भा.	४४	४६	शो.	५१	३८	कौ.	६	१४	३	१८	२७	१७	मी.	२८	४६	५	३५	१९	२२	३	०१	०५	१६	बुध आश्ले. में ५८/४०,
३४	२३	६	श.	३९	५१	उ.भा.	४९	३९	अ.	५१	५७	ग.	८	२०	४	१९	२८	१८	मीन			५	३६	१९	२१	३	०२	०२	३१	भ. ३९/५१ बाद,
३४	२०	७	र.	४४	२९	रेव.	५६	००	सु.	५३	२६	वि.	११	५९	५	२०	२९	१९	मे.	५६	००	५	३७	१९	२१	३	०२	५६	४८	भ. ११/५९ तक, पंचक समाप्त ५६/००, सूर्य पुष्य में २१/१०,
३४	१७	८	चं.	५०	१५	अश्वि.	६०	००	धृ.	५५	४३	बा.	१७	२२	६	२१	३०	२०	मेष			५	३७	१९	२०	३	०३	५७	०४	
३४	१५	९	मं.	५६	३४	अश्वि.	०३	२०	शू.	५८	२३	तै.	२३	२५	७	२२	३१	२१	मेष			५	३८	१९	२०	३	०४	५४	२२	
३४	१२	१०	बु.	६०	००	भर.	११	०५	गं.	६०	००	व.	२९	४३	८	२३	श्रा.१	२२	वृ.	२८	०१	५	३८	१९	१९	३	०५	५१	४०	भ. २९/४३ बाद, सूर्य सायन सिंह में १४/५०, शक श्रावण प्रा., (B)
३४	०९	१०	गु.	०२	४५	कृत्ति.	१८	३६	गं.	००	५६	वि.	०२	४५	९	२४	२	२३	वृष			५	३९	१९	१९	३	०६	४८	५६	भ. ०२/४५ तक, शुक्र कर्क में १३/२०,
३४	०६	११	शु.	०८	१४	रोहि.	२५	१८	वृ.	०२	५८	बा.	०८	१४	१०	२५	३	२४	मि.	५८	१४	५	४०	१९	१८	३	०७	४६	२०	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३४	०३	१२	श.	१२	३४	मृग.	३०	४८	ध्रु.	०४	०८	तै.	१२	३४	११	२६	४	२५	मिथुन			५	४०	१९	१७	३	०८	४३	४१	बुध मघा सिंह में ४०/१५, शुक्र पुष्य में ५५/५७, **शुक्र पूर्व में अस्त** (C)
३४	००	१३	र.	१५	२८	आर्द्रा	३४	५२	व्या.	०४	१२	व.	१५	२८	१२	२७	५	२६	मिथुन			५	४१	१९	१७	३	०९	४१	०३	भ. १५/२८ से ४९/२० तक,
३३	५७	१४	चं.	१६	४९	पुन.	३७	२६	ह.	०३	०५	श.	१६	४९	१३	२८	६	२७	क.	२१	५५	५	४१	१९	१६	३	१०	३८	२४	
३३	५४	३०	मं.	१६	४२	पुष्य	३८	३५	व. सि.	०० ५७	४६ २४	ना.	१६	४२	१४	२९	७	२८	कर्क			५	४२	१९	१६	३	११	३५	४६	मंगल वक्री १८/३२, भौमवती अमावस, हरियाली अमावस,

शुक्र अस्त २६ जुलाई

(A) ५१/३७, मु. १५, पुण्यकाल २१/३७ बाद, शुक्र पुन. में ४/५७, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (B) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ११/५२, (C) ११/५२, शनि प्रदोष व्रत,

श्रावण कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ५९/४२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	१०	३	३	२	२	१	७
०४	१२	१५	२२	२८	२७	१२	०२	०२
५४	३६	५२	०६	१५	१५	१४	२६	२६
०३	४५	२६	३६	२०	४१	५६	०१	०१
५७	७१२	०६	१०६	१२	७३	०७	०३	०३
१६	२०	१२	१७	२९	४२	२४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः- इसपक्ष में कर्कराशि में बुधोदय प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत देता है। २४ जुलाई को शुक्र कर्कराशि में आकर पक्षान्त में चतुर्ग्रही योग बनाता है; गुरु-शुक्र का वर्षा ऋतु में एकराशि सम्बन्ध कहीं भंयकर बाढ़ से हानि का संकेत देता है;- *"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम्।"* कहीं बादल फटने व भूस्खलन से हानि भी हो। भौमवती अमावस एवं मंगल का वक्रत्व कहीं भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप एवं यानदुर्घटना से हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- १६ जुलाई को रुई, सूत, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, सोना, चांदी तेज रहेगे। १७ जुलाई को रुई और शेयरों में मन्दा। २४ जुलाई के करीब रुई में अच्छी मन्दी के बाद तेजी बने। अलसी, खाण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी के बाद २६ जुलाई को अचानक मन्दा आ सकता है। पक्षान्त में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी।

आकाश लक्षणः- जुलाई १६ से १८, २०, एवं २२ से २६ जुलाई तक देश के उत्तरी-पश्चिमी भागों में वायुवेग के साथ व्यापक वर्षा होने से कहीं बाढ़ से हानि के योग हैं।

शकुन विचारः- श्रावण में यदि बिजली चमके बादल गरजें, तो आगे सुभिक्ष की सूचना मिलती है, यदि श्रावण में कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदये

५ बु. | श. ३ | सू. ४ | २ | ६ | गु. चं. शु. | रा. | ७ | १ | ८ के. | १० | १२ | ९ | ११ मं.

श्रावण कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५९/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१०	४	३	३	२	१	७
१२	२१	१६	०५	२९	०७	१३	०२	०२
३२	१७	१३	१२	५६	०६	१३	०	०
४२	१६	३७	४१	३७	०४	१९	३५	३५
५७	७९०	०	६२	१२	७३	०७	०३	०३
२२	२२	१२	०	४८	५४	१२	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, श्रावण शुक्ल पक्ष ६

(३० जुलाई से १२ अगस्त तक, सन् २००३ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

ग्रह दर्शन- शु. अस्त है। गु. भी ७ अग. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः श. पूर्व में, मं. पश्चिम में और सायं बु. पश्चिम में दिखाई पड़ेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. श्रावण	मु. ज.उ.क्र.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५१	१	बु.	१५	१५	आश्ले.	३८	३१	व्या.	५३	०३	ब.	१५	१५	१५	३०	८	२९	सिं.	३८	३१	५	४३	१९	१५	३	१२	३३	१२	चन्द्र दर्शन मु. १५, गुरु मघा १ सिंह में १५/२०, शनि आर्द्रा ३ में ५५/५५,
३३	४७	२	गु.	१२	४३	मघा	३७	२७	व.	४७	५७	कौ.	१२	४३	१६	३१	९	ज.१	सिंह			५	४३	१९	१४	३	१३	३०	३८	जमद-उस्सानी मु. प्रा.,
३३	४४	३	शु.	०६	१८	पू.फा.	३५	३७	प.	४२	१४	ग.	०६	१८	१७	अ.१	१०	२	क.	५०	०४	५	४४	१९	१३	३	१४	२८	०३	भ. ३७/२० बाद, मधुश्रवा तृतीया (संधारा तीज), अगस्त प्रारम्भ,
३३	४१	४	श.	०५	१३	उ.फा.	३३	१२	शि.	३६	०४	वि.	०५	१३	१८	२	११	३	कन्या			५	४४	१९	१३	३	१५	२५	३०	भ. ०५/१३ तक, नागपंचमी,
३३	३७	५	र.	००	३६	हस्त	३०	२३	सि.	२६	३५	बा.	००	३६	१९	३	१२	४	तु.	५८	५३	५	४५	१९	१२	३	१६	२२	५६	सूर्य आश्ले. में १७/५०, श्रीकल्कि जयन्ती,
अवम		६	र.	५५	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**षष्ठी तिथिक्षय,**
३३	३४	७	चं.	५०	३८	चित्रा	२७	१७	सा.	२२	५२	ग.	२३	१२	२०	४	१३	५	तुला			५	४६	१९	११	३	१७	२०	२३	भ. ५०/३८ बाद, बुध पू.फा. में ४०/१२, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ २४/१५, (A)
३३	३०	८	मं.	४५	१८	स्वा.	२३	५६	शु.	१५	५८	वि.	१७	५८	२१	५	१४	६	तुला			५	४६	१९	१०	३	१८	१७	५१	भ. १७/५८ तक, श्रीदुर्गाष्टमी,
३३	२७	९	बु.	३६	५१	वि.	२०	३२	शु.	०८	५७	बा.	१२	३५	२२	६	१५	७	वृ.	०६	२४	५	४७	१९	१०	३	१९	१५	२१	शुक्र आश्ले. में ४४/५५,
३३	२३	१०	गु.	३४	२१	अनु.	१७	००	ब्र. ऐ.	०१ ५४	५१ ४५	तै.	७	०६	२३	७	१६	८	वृश्चिक			५	४८	१९	०९	३	२०	१२	५०	**गुरु अस्त २४/१५,**
३३	१९	११	शु.	२८	५३	ज्ये.	१३	२८	वै.	४७	४२	व.	१	३५	२४	८	१७	९	ध.	१३	२८	५	४८	१९	०८	३	२१	१०	२०	भ. ०१/३५ से २८/५३ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३३	१५	१२	श.	२३	३७	मूल	१०	०५	वि.	४०	५२	बा.	२३	३७	२५	९	१८	१०	धनु			५	४९	१९	०७	३	२२	०७	५१	शनि प्रदोष व्रत,
३३	१२	१३	र.	१८	४४	पू.षा.	०७	०२	प्री.	३४	२५	तै.	१८	४४	२६	१०	१९	११	म.	२१	२२	५	४९	१९	०६	३	२३	०५	२३	
३३	०८	१४	चं.	१४	२६	उ.षा.	०४	३४	आ.	२८	३१	व.	१४	२६	२७	११	२०	१२	मकर			५	५०	१९	०५	३	२४	०२	५५	भ. १४/२६ से ४२/४२ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, ऋक् उपाकर्म, (B)
३३	०४	१५	मं.	११	०६	श्रव.	०२	५७	सौ.	२३	२६	ब.	११	०६	२८	१२	२१	१३	कुं.	३२	३४	५	५१	१९	०४	३	२५	००	२६	पंचक प्रारम्भ ३२/३४, रक्षाबन्धन (राखी), कृष्ण-यजु-उपाकर्म, अथर्व- (C)

गुरु अस्त - ७ अगस्त

(A)श्री तुलसीदास जयन्ती, (B) शुक्ल-यजु-उपाकर्म, (C) उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा,

श्रावण शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५६/२०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	१०	४	४	३	२	१	७
१६	२८	१५	१५	०१	१५	१४	०१	०१
१४	१६	५०	०४	२६	४३	०२	३८	३८
४०	२६	२६	३३	३६	३६	२४	१६	१६
५७	८४७	०५	७८	१२	७४	०६	०३	०३
२८	४०	३७	४८	५४	०	५४	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः-श्रावण चन्द्रमास में ५ बुधवार हैं । पक्षारम्भ में ही गुरु सिंहराशि में आता है; देश में सुभिक्ष से जनता में सन्तोष रहे- *" यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते। मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी।।"* इसपक्ष में षष्ठी तिथिक्षय होने से कार्तिक तक किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा; *"श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते ।। "*
पक्ष में राजनीतिक हत्याकाण्ड किंवा काश्मीर आदि सीमाप्रान्तों पर अशान्ति भी रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में ३० जुलाई को गेहूं, घी, सरसों, जौ में तेजी बने। पक्षमध्य में ७ अगस्त के लगभग रुई व शेयर बाजारों, सोना, चांदी और अनाजों में तेजी का रुख बनेगा।

कुण्डली सूर्योदये

श्रावण शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ५६/०७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	१०	४	४	३	२	१	७
२५	०५	१४	२३	०२	२४	१४	०१	०१
५७	५५	५१	१६	५७	२२	४६	१६	१६
१४	२४	२२	१३	३५	०८	१७	०४	०४
५७	८०७	१०	६३	१३	७४	०६	०३	०३
३४	०८	२४	१७	०६	०६	३६	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षणः- जुलाई ३०, ३१, अगस्त ३, ४, ६, ७ एवं १२ को हि.प्र. चण्डीगढ़, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली एवं उ.प्रदेश में व्यापक बादलवाल व वर्षा के योग हैं।

शकुन विचारः- यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को वर्षा हो, तो सभी प्रकार के धान्य उत्तम हों।

श्री वि. सं. २०६०, शाक १६२५, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(१३ से २७ अगस्त तक, सन् २००३ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- गु. शु. अदृश्य हैं। प्रातः श. पूर्व में, मं. पश्चिम में तथा सायं बु. भी पश्चिम में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	तारीखें अं. अगस्त	तारीखें श. श्रावण	तारीखें मु. ज.उ.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	००	१	बु.	०६	००	धनि.	०२	२८	शो.	१६	२०	कौ.	०६	००	२६	१३	२२	१४	कुम्भ			५	५१	१६	०३	३	२५	५८	०५	
३२	५६	२	गु.	०८	१८	शत.	०३	२३	अ.	१६	२६	ग.	०८	१८	३०	१४	२३	१५	मी.	५०	०८	५	५२	१६	०२	३	२६	५५	४०	भ. ३८/३४ बाद, गुरु मघा २ में ४२/१२,
३२	५२	३	शु.	०६	१४	पू.भा.	०५	५४	सु.	१४	४६	वि.	०६	१४	३१	१५	२४	१६	मीन			५	५२	१६	०१	३	२७	५३	१८	भ. ०६/१४ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (संकष्ट चतुर्थी व्रत), चन्द्रोदय (A)
३२	४८	४	श.	११	५२	उ.भा.	१०	०३	धृ.	१४	३२	बा.	११	५२	३२	१६	२५	१७	मीन			५	५३	१६	००	३	२८	५०	५७	बुध उ.फा. में ३३/३५,
३२	४४	५	र.	१६	०४	रेव.	१५	४४	शू.	१५	२६	तै.	१६	०४	भा.१	१७	२६	१८	मे.	१५	४४	५	५४	१८	५६	३	२६	४८	३७	पंचक समाप्त १५/४४, सं. सूर्य मघा सिंह में ११/५०, मु. ३०, (B)
३२	४०	६	चं.	२१	३२	अश्वि.	२२	३८	गं.	१७	२०	व.	२१	३२	२	१८	२७	१६	मेष			५	५४	१८	५८	४	००	४६	१८	भ. २१/३२ से ५४/३६ तक,
३२	३६	७	मं.	२७	४६	भर.	३०	१४	वृ.	१६	४६	ब.	२७	४६	३	१६	२८	२०	वृ.	४७	११	५	५५	१८	५७	४	०१	४४	०२	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत [चन्द्रोदय व्यापिनी, स्मार्तों (गृहस्थियों) के लिए] (C)
३२	३२	८	बु.	३४	०६	कृत्ति.	३७	५६	ध्रु.	२२	२७	बा.	०	५६	४	२०	२६	२१	वृष			५	५५	१८	५६	४	०२	४१	४६	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णवों, सन्यासियों के लिए),
३२	२८	६	गु.	३६	५४	रोहि.	४५	०४	व्या.	२४	४४	तै.	७	००	५	२१	३०	२२	वृष			५	५६	१८	५५	४	०३	३६	३४	बुध कन्या में ३/०७, गुग्गा नवमी, (सिंहस्थ (कुम्भ) महापर्व, नासिक - २७ अगस्त)
३२	२४	१०	शु.	४४	३२	मृग.	५१	०२	ह.	२६	१४	व.	१२	२२	६	२२	३१	२३	मि.	१८	१३	५	५७	१८	५४	४	०४	३७	२२	भ. १२/२२ से ४४/३२ तक,
३२	१६	११	श.	४७	३४	आर्द्रा	५५	२७	व.	२६	३६	ब.	१६	०३	७	२३	भा.१	२४	मिथुन			५	५७	१८	५३	४	०५	३५	११	सूर्य सायन कन्या में ३१/४२, शरद् ऋतु प्रा., शक भाद्रपद प्रा. (D)
३२	१५	१२	र.	४८	४६	पुन.	५८	०६	सि.	२५	३६	कौ.	१८	१२	८	२४	२	२५	क.	४२	३६	५	५८	१८	५२	४	०६	३३	०२	पर्युषण पर्व (जैन),
३२	११	१३	चं.	४८	१६	पुष्य	५८	५६	व्य.	२३	१०	ग.	१८	३२	६	२५	३	२६	कर्क			५	५८	१८	५१	४	०७	३०	५५	भ. ४८/१६ बाद, वक्री प्लूटो ज्ये. २ में २८/५०, सोम प्रदोष व्रत,
३२	०७	१४	मं.	४६	०१	आश्ले.	५८	१६	व.	१६	२०	वि.	१७	१६	१०	२६	४	२७	सिं.	५८	१६	५	५६	१८	५०	४	०८	२८	५१	भ. १७/१६ तक,
३२	०२	३०	बु.	४२	२२	मघा	५६	१२	प.	१४	१५	च.	१४	१२	११	२७	५	२८	सिंह			६	००	१८	४८	४	०६	२६	४७	पिठौरी अमावस, कुशोत्पटिनी अमावस, सिंहस्थ (कुम्भ) महापर्व, (E)

(A) (२१ घं १२ मि.), बहुला चतुर्थी, भारत स्वतन्त्रता दिवस, **(B)** पुण्यकाल २७/५० तक, शुक्र मघा सिंह में ३२/२२, **(C)** (चन्द्रोदय २३ घं ७ मि.), **(D)** अजा एकादशी व्रत (स.), **(E)** नासिक, (प्रमुख शाहीस्नान, देखें पृष्ठ ९),

भाद्रपद कृष्ण ८ बुध, इष्ट ५८/५७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	१०	४	४	४	२	१	७
०३	१४	१३	२६	०४	०४	१५	०	०
३८	०६	०८	५७	४२	१५	३६	५०	५०
३१	०६	०३	३५	०४	३७	४६	३८	३८
५७	७१०	१४	३८	१३	७४	०६	०३	०३
४६	०८	३०	३०	०६	१८	१२	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२	२	२	१	२	२	३	२	४
मघा	रोहि.	[illegible]	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

६ | ४ | ७ | सू.५ बु. शु. गु. | ३ श. | ८ के. | २ चं. रा. | ९ | ११ मं. | १ | १० | १२

लोक भविष्य:- सिंहस्थ गुरु अस्त है, सीमाप्रान्तों पर कहीं युद्धभय रहे, राजनीतिक पार्टियों में आन्तरिक उलझने बढ़ें, कहीं सत्तासंघर्ष हो। १७ अगस्त को सू. गु. शु. का एकराशि में होना वर्षा में बाधक ग्रहस्थिति बनाता है। प्रकृतिक-प्रकोप से हानि के भी योग बनते हैं। मुस्लिमराष्ट्रों के लिए स्थिति भयावह बनेगी। बहुचर्चित व्यक्ति का निधन होगा। भाद्र.कृ. चतुर्थी को शनिवार होने से कहीं शासनसत्ता (मंत्रिमंडल) में परिवर्तन, कहीं दुर्भिक्ष व भयंकर प्राकृतिक आपदा से हानि के योग हैं; -" **शनौ भाद्रपदे कृष्णे चतुर्थी यदि जायते। देशभंगश्च दुर्भिक्षं लोके भिक्षाऽपि दुर्लभा।।"**

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षराम्भ से पक्षमध्य तक चांदी, सोना, रुई, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों में तेजी रहे। २३ अगस्त के लगभग रुई, चांदी मन्दी; खाण्ड, शक्कर और हल्दी में तेजी बनेगी; यह तेजी पक्षान्त तक प्रभावी रहेगी।

भाद्रपद कृष्ण ३० बुध, इष्ट ५८/४५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	१०	५	४	४	२	१	७
१०	१३	११	०२	०६	१२	१६	०	०
२३	५५	१६	२४	१३	५५	२०	२८	२८
३३	५४	०२	१४	३६	५४	४५	२२	२२
५७	८२८	१६	०५	१३	७४	०५	०३	०३
५७	३६	०	५६	०	२४	४२	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४	१	२	२	२	४	३	२	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण:- अगस्त १४, १६, १७, १६ से २१ तक लंका, गोआ, आसाम, भूटान, सिक्किम, शिलांग एवं उ. भारत में बादलचाल रहे, वायुवेग के साथ कहीं वर्षा हो एवं तापमान गिरे। इसपक्ष में सूर्य एवं शुक्र दोनों एक ही दिन सिंहराशि में आकर वर्षा में कमी कर देंगे।

शकुन विचार:- यदि भाद्र. कृष्ण तृतीया [illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, **भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११** (२८ अगस्त से १० सितम्बर तक, सन् २००३ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- शुक्र अदृश्य है। बुध भी ४ सितं. को पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। गुरु २ सितं. से प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा। प्रातः शनि पश्चिम में और सायं मंगल पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. ज.उ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३१	५८	१	गु.	३७	३७	पू.फा.	५३	०७	शि.	०८	०६	किं.	१०	०	१२	२८	६	२९	सिंह			६	००	१८	४७	४	१०	२४	४६	शुक्र पू.फा. में १८/१२, बुध वक्री ३२/५७,
३१	५४	२	शु.	३२	०६	उ.फा.	४६	२२	सि. / सा.	०१ / ५३	११ / ५६	बा.	४	५२	१३	२९	७	३०	क.	०७	१३	६	०१	१८	४६	४	११	२२	४५	चन्द्रदर्शन मु. ४५, गुरु मघा ३ में ५६/२५, प्लूटो मार्गी ७/३५, (A)
३१	४९	३	श.	२६	०८	हस्त	४५	१५	शु.	४६	१६	ग.	२६	०८	१४	३०	८	र.१	कन्या			६	०१	१८	४५	४	१२	२०	४५	भ. ५३/०५ बाद, श्रीवराह जयन्ती, साम-उपाकर्म, गौरी तृतीया, (B)
३१	४५	४	र.	१६	५६	चित्रा	४१	०४	शु.	३८	३३	वि.	१६	५६	१५	३१	९	२	तु.	१३	०६	६	०२	१८	४४	४	१३	१८	४७	भ.१६/५६ तक, सूर्य पू.फा.में १/१५, शनि आर्द्रा ४ में २६/२५, (C)
३१	४०	५	चं.	१३	५५	स्वा.	३७	०१	ब्र.	३०	५६	बा.	१३	५५	१६	सि.१	१०	३	तुला			६	०२	१८	४३	४	१४	१६	५०	प्लूटो ज्ये. ३ में ३८/४०, ऋषि पंचमी, सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३६	६	मं.	०८	०५	वि.	३३	१५	ऐं.	२३	३२	तै.	०८	०५	१७	२	११	४	वृ.	१६	०६	६	०३	१८	४१	४	१५	१४	५६	सूर्य षष्ठी, गुरु उदित ३५/४२,
३१	३१	७	बु.	०२	३६	अनु.	२६	५२	वै.	१६	२७	व.	०२	३६	१८	३	१२	५	वृश्चिक			६	०४	१८	४०	४	१६	१३	०२	भ. ०२/३६ से ३०/०१ तक, (D)
अवम		८	बु.	५७	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३१	२७	९	गु.	५२	५६	ज्ये.	२६	५७	वि.	०६	४४	बा.	२५	१६	१९	४	१३	६	ध.	२६	५७	६	०४	१८	३६	४	१७	११	११	व. बुध उ.फा. १ सिंह में २८/००, बुध पश्चिम में अस्त ४/५७, (E)
३१	२३	१०	शु.	४८	५६	मूल	२४	३१	श्री. / आ.	०३ / ५७	२४ / ३१	तै.	२०	५८	२०	५	१४	७	धनु			६	०५	१८	३८	४	१८	०६	२०	राहु कृति. १ मेष, केतु विशा.३ तुला में ५३/५२, गुरु बाल्य समाप्त (F)
३१	१८	११	श.	४५	२८	पू.षा.	२२	३६	सौ.	५२	०६	व.	१७	०६	२१	६	१५	८	म.	३७	१७	६	०५	१८	३६	४	१९	०७	३०	भ. १७/०६ से ४५/२८ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.),
३१	१४	१२	र.	४२	४१	उ.षा.	२१	२४	शो.	४७	१४	ब.	१४	०५	२२	७	१६	९	मकर			६	०६	१८	३५	४	२०	०५	४२	श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी व्रत,
३१	०९	१३	चं.	४०	४४	श्रव.	२०	५६	अ.	४३	०३	कौ.	११	४२	२३	८	१७	१०	कुं.	५१	०२	६	०६	१८	३४	४	२१	०३	५६	पंचक प्रारम्भ ५१/०२, व. बुध पू.फा. ४ में २४/३०, शुक्र उ.फा.(G)
३१	०५	१४	मं.	३६	४६	धनि.	२१	२२	सु.	३६	३६	ग.	१०	१५	२४	९	१८	११	कुम्भ			६	०७	१८	३३	४	२२	०२	१२	भ. ३६/४६ बाद, अनन्त चतुर्दशी व्रत,
३१	००	१५	बु.	३६	५७	शत.	२२	५३	धृ.	३७	०६	वि.	६	४१	२५	१०	१९	१२	कुम्भ			६	०७	१८	३१	४	२३	००	२८	भ. ०६/४१ तक, शुक्र कन्या में ४३/५५, श्री सत्यनारायण व्रत (H)

गुरु उदित २ सित

(A) मेला बाबा गोसाईआणां-कुराली (पंजाब), (B) हरितालिका तृतीया, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध)-(चन्द्रास्त २० घं. ४१ मि.), रजब मु. प्रा., (C) व. यूरेनस धनि. ४ में ६/३०, सिद्धि विनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, संवत्सरी पर्व (जैन), (D) अगस्त्य उदित-(अर्धरात्रि के बाद), दूर्वाष्टमी, राधाष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (E) श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (F) ३५/४२, (G) २/५२, सोम प्रदोष व्रत, (H) प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध,

भाद्रपद शुक्ल ७ बुध, इष्ट ५८/३५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	१०	५	४	४	२	१	७
१७	२३	०६	०	०७	२१	१६	०	०
०६	२३	२८	२०	४४	३६	५८	०६	०६
४८	२१	०७	२४	५६	४१	१६	०७	०७
५८	८४४	१५	३५	१३	७४	०५	०३	०३
०७	१४	०६	५४	०	२४	०५	११	११
-	-	द.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः-मंगल-बुध वक्री हैं, राजनीतिज्ञों के लिए समय कठिन है। राजनीतिज्ञों में मतभेद गहरायेंगे। देश में धार्मिक संगठन संकट का कारण बनेंगे। जातीय-धार्मिक असहिष्णुता से वातावरण किसी प्रान्त में अशान्त रहे। पक्षमध्य में चतुर्ग्रहीयोग जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी करे; कहीं यानदुर्घटना से हानि; कहीं रोग से परेशानी हो। इसमास में पांच बुधवार होने से विदेशों से सम्बन्ध स्वस्थ होंगे। प्रगतिप्रद नई योजनाएं बनेंगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २८ अगस्त को घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी और अनाजों में मन्दे का रुख बनेगा। २ सितम्बर को बृहस्पति के उदय होने पर चांदी और अनाजों में तेजी, सोने में कुछ मन्दा बने। ४ सितम्बर के करीब रुई में झटके की मन्दी आए। चांदी और अनाज तेज रहें। शेयर बाज़ारो में मन्दे का योग है। गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा बने। ५ सितम्बर को गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों।

आकाश लक्षणः- अगस्त २८, २९, ३१; सितं. २, ३, ४, ५, १० को भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में रुक-रुक कर वर्षा हो। सिंहस्थ शुक्र होने से कुछ भागों में बादलवाल हो, परन्तु वर्षा न हो।

शकुन विचारः- भाद्र. शुक्ल पूर्णिमा को यदि आकाश निर्मल रहे, तो गेहूं, जौ, चना, चावल के स्टॉक से आगे लाभ मिले।

कुण्डली सूर्योदये

६ | ४ | ७ के. | सू. बु. शु. ५ गु. | ३ श. | ८ | २ | चं. ११ मं. | ९ | रा.१ | १० | १२

भाद्रपद शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५८/२७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	१०	४	४	५	२	०	६
२३	२७	०७	२४	०६	०	१७	२६	२६
५७	३५	५४	०६	१५	१८	३२	४३	४३
१४	१७	३६	५२	२५	०३	१२	५१	५१
५८	७७१	१२	६०	१२	७४	०४	०३	०३
१७	०७	०६	१८	५४	२६	३५	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५,

आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(११ से २६ सितम्बर तक, सन् २००३ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- शुक्र अदृश्य है। बुध १८ सितं. से पूर्व में दीखने लगेगा। प्रातः गुरु पूर्व में, शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न और सायं मं. पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	तारीखें अं. सितंबर	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५५	१	गु.	४१	२७	पू.भा.	२५	३८	शू.	३५	४१	बा.	१०	१२	२६	११	२०	१३	मी.	०६	४६	६	०८	१८	३०	४	२३	५८	४६	श्राद्ध पक्ष (महालय) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध,
३०	५१	२	शु.	४४	२०	उ.भा.	२६	४३	गं.	३५	१६	तै.	१२	५३	२७	१२	२१	१४	मीन			६	०६	१८	२६	४	२४	५७	०७	द्वितीया श्राद्ध,
३०	४६	३	श.	४८	३५	रेव.	३५	०७	वृ.	३५	५५	व.	१६	१७	२८	१३	२२	१५	मे.	३५	०७	६	०६	१८	२८	४	२५	५५	२८	भ. १६/१७ से ४८/३५ तक, पंचक समाप्त ३५/०७, सूर्य उ.फा. में (A)
३०	४२	४	र.	५४	०१	अश्वि.	४१	४३	ध्रु.	३७	३०	ब.	२१	१८	२९	१४	२३	१६	मेष			६	१०	१८	२६	४	२६	५३	५३	गुरु मघा ४ में २७/१०, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध,
३०	३७	५	चं.	६०	००	भर.	४६	११	व्या.	३६	४७	कौ.	२७	०८	३०	१५	२४	१७	मेष			६	१०	१८	२५	४	२७	५२	१९	पंचमी श्राद्ध,
३०	३३	५	मं.	००	१६	कृत्ति.	५७	०१	ह.	४२	२५	तै.	००	१६	३१	१६	२५	१८	वृ.	०६	०६	६	११	१८	२४	४	२८	५०	४७	षष्ठी श्राद्ध,
३०	२८	६	बु.	०६	४६	रोहि.	६०	००	व.	४४	५८	व.	०६	४६	आ.१	१७	२६	१९	वृष			६	११	१८	२३	४	२९	४६	१८	भ. ०६/४६ से ४०/०२ तक, सं. सूर्य कन्या में ११/००, मु. ४५, (B)
३०	२३	७	गु.	१३	०४	रोहि.	०४	३६	सि.	४७	०१	ब.	१३	०४	२	१८	२७	२०	मि.	३८	०६	६	१२	१८	२१	५	००	४७	५१	शुक्र हस्त में ४६/४२, बुध पूर्व में (C)
३०	१९	८	शु.	१८	२१	मृग.	११	२३	व्य.	४८	०६	कौ.	१८	२१	३	१९	२८	२१	मिथुन			६	१२	१८	२०	५	०१	४६	२६	व. मंगल धनि. ४ में २/००, नवमी (D)
३०	१४	९	श.	२२	०८	आर्द्रा	१६	४६	व.	४७	५२	ग.	२२	०८	४	२०	२९	२२	मिथुन			६	१३	१८	१९	५	०२	४५	०२	भ. ५३/२१ बाद, बुध मार्गी २०/२२,
३०	१०	१०	र.	२४	०३	पुन.	२०	२२	प.	४६	०८	वि.	२४	०३	५	२१	३०	२३	क.	०४	३८	६	१४	१८	१७	५	०३	४३	४२	भ. २४/०३ तक, दशमी श्राद्ध,
३०	०५	११	चं.	२३	५६	पुष्य	२१	५६	शि.	४२	४६	बा.	२३	५६	६	२२	३१	२४	कर्क			६	१४	१८	१६	५	०४	४२	२३	इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी श्राद्ध,
३०	००	१२	मं.	२१	५०	आश्ले.	२१	३६	सि.	३७	५२	तै.	२१	५०	७	२३	आ.१	२५	सिं.	२१	३६	६	१५	१८	१५	५	०५	४१	०८	सूर्य सायन तुला में २५/ ०५, दक्षिणगोल प्रा., विषुव दिन, शक अश्विन (E)
२९	५६	१३	बु.	१७	५५	मघा	१९	३२	सा.	३१	३५	व.	१७	५५	८	२४	२	२६	सिंह			६	१५	१८	१४	५	०६	३९	५३	भ. १७/५५ से ४५/२३ तक, शस्त्र-विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध, (F)
२९	५१	१४	गु.	१२	३०	पू.फा.	१५	५६	शु.	२४	०७	श.	१२	३०	९	२५	३	२७	क.	२६	५१	६	१६	१८	१२	५	०७	३८	४१	चतुर्दशी-अमा श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध,
२९	४६	३०	शु.	०५	५७	उ.फा.	११	१२	शु.	१५	४८	ना.	०५	५७	१०	२६	४	२८	कन्या			६	१७	१८	११	५	०८	३७	३१	मातामह (नाना का) श्राद्ध, श्राद्ध (महालय) पक्ष समाप्त, शारद नवरात्र (G)

नवमी से त्रयोदशी तक की श्राद्ध तिथियों के लिए स्पष्टीकरण देखें पृ.139

(A) ४५/४७, तृतीया श्राद्ध, (B) पुण्यकाल २७/०० तक, सप्तमी श्राद्ध, (C) उदय ४४/१७, अष्टमी श्राद्ध, (D) श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समाप्त, (E) प्रा., भौम प्रदोष व्रत, द्वादशी-त्रयोदशी श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, (F) मघा श्राद्ध, (G) प्रारम्भ, घटस्थापन, (देखें पृष्ठ 140),

आश्विन कृष्ण ८ शुक्र, इष्ट ५८/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	१०	४	४	५	२	०	६
०२	१६	०६	१८	११	११	१८	२६	२६
४३	१०	३४	१८	०६	२८	०६	१५	१५
१७	५६	१७	३५	५६	५६	४७	१४	१४
५८	७२६	०६	०८	१२	७४	०३	०३	०३
३५	३७	०६	२३	३५	३६	४८	११	११
-	-	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः- इसमास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में युद्धभय से अशान्ति; कहीं विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो, कहीं प्राकृतिक-आपदा से जनधनहानि के भी योग हैं:- **"यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धं च जायते।।"**

पक्षमध्य में बुध उदय एवं वक्र हो रहा है, देश में कहीं भूकम्प, समुद्री तुफान आदि से हानि हो। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल तेज। चांदी और शेयर बाजार मन्दे रहें। १८ सितम्बर के लगभग रुई में मन्दा आकर तेजी बने। कपास में जोरदार मन्दा और तेलों में भी कुछ मन्दे का रुख रहे।

कुण्डली सूर्योदये

७के. | गु.५बु. | सू. शु. ६ चं. | ८ | ४ | ९ | श. ३ | १० | १२ | २ | ११ म. | १ रा.

आश्विन कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५८/०२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	१०	४	४	५	२	०	६
०६	२१	०६	२१	१२	२०	१८	२८	२८
३४	२६	१२	४४	३७	११	३३	५२	५२
२६	१४	५२	२४	१६	०७	५८	५६	५६
५८	८७७	०	५५	१२	७४	०३	०३	०३
४६	३४	३६	४८	२३	३६	१२	११	११
-	-	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षणः- पक्षमध्य में पश्चिमी भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल, वायुवेग व कहीं खण्डवर्षा के योग हैं। १८, १९, २० सितं. को वायुवेग के साथ वर्षा एवम् कहीं वर्षा से तापमान नीचे आएगा।

शकुन विचारः- यदि आश्विन [illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, **आश्विन शुक्ल पक्ष १३**

(२७ सितम्बर से १० अक्तूबर तक, सन् २००३ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

ग्रह दर्शन- बुध ७ अक्तूबर को प्रातः पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। शु. ६ अक्तू. से सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रातः शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न, गु. पूर्व में तथा सायं मं. भी पूर्व में दीखने लगेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विं.	तारीखें अं. सितं.	तारीखें श. आश्विं.	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	शु.	५८	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय
२९	४२	२	श.	५०	५६	हस्त	०५	४६	ब्र. ऐ.	०६ ५७	५५ ४८	बा.	२४	४६	११	२७	५	२९	तु.	३२	५५	६	१७	१८	१०	५	०६	३६	२२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सूर्य हस्त में २४/०५, व. नेपच्यून श्रव.२ में (A)
२९	३७	३	र.	४३	१७	चित्रा स्वा.	०० ५४	०१ १६	वै.	४८	४०	तै.	१७	०८	१२	२८	६	शा.१	तुला			६	१८	१८	०६	५	१०	३५	१६	शाबान मु. प्रा., गुरु सिंहांशक में प्रविष्ट- ३० सितं.
२९	३३	४	चं.	३५	५४	वि.	४८	५८	वि.	३६	५०	व.	६	३२	१३	२९	७	२	वृ.	३५	१५	६	१८	१८	०७	५	११	३४	१२	भ. ०६/३२ से ३५/५४ तक, शुक्र चित्रा में २६/५०,
२९	२८	५	मं.	२६	०५	अनु.	४४	१५	प्री.	३१	२८	ब.	२	३०	१४	३०	८	३	वृश्चिक			६	१९	१८	०६	५	१२	३३	०६	गुरु पू.फा. १ में २७/३७, उपाङ्गललिता व्रत, गुरु सिंहांशक में प्रविष्ट,
२९	२३	६	बु.	२३	०३	ज्ये.	४०	२१	आ.	२३	४४	तै.	२३	०३	१५	अ.१	९	४	ध.	४०	२१	६	१९	१८	०५	५	१३	३२	०९	अक्तूबर प्रारम्भ, बुध उ.फा. में १/४२,
२९	१९	७	गु.	१७	५७	मूल	३७	२५	सौ.	१६	४७	व.	१७	५७	१६	२	१०	५	धनु			६	२०	१८	०४	५	१४	३१	१०	भ. १७/५७ से ४५/४८ तक, सरस्वती आवाहन,
२९	१४	८	शु.	१३	५३	पू.षा.	३५	३२	शो.	१०	३६	ब.	१३	५३	१७	३	११	६	म.	५०	१४	६	२१	१८	०२	५	१५	३०	१३	बुध कन्या में १६/४५, श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी, सरस्वती पूजन,
२९	०९	९	श.	१०	५४	उ.षा.	३४	४२	अ.	०५	२२	कौ.	१०	५४	१८	४	१२	७	मकर			६	२१	१८	०१	५	१६	२६	१७	शुक्र तुला में ५१/१७, सरस्वती बलिदान, नवरात्र समाप्त,
२९	०५	१०	र.	०६	००	श्रव.	३४	५८	सु. धृ.	०० ५७	५८ २८	ग.	०६	००	१९	५	१३	८	मकर			६	२२	१८	००	५	१७	२८	२४	भ. ३८/२६ बाद, मंगल शत. में २६/४०, सरस्वती विसर्जन, (B)
२९	००	११	चं.	०८	१३	धनि.	३६	१६	शू.	५४	४६	वि.	०८	१३	२०	६	१४	९	कुं.	०५	२६	६	२३	१७	५६	५	१८	२७	३२	भ. ०८/१३ तक, पंचक प्रारम्भ ५/२६, शुक्र पश्चिम में उदय २५/२२, (C)
२८	५६	१२	मं.	०८	३४	शत.	३८	४५	गं.	५३	०२	बा.	०८	३४	२१	७	१५	१०	कुम्भ			६	२३	१७	५७	५	१९	२६	४२	भौम प्रदोष व्रत, बुध पूर्व में अस्त ३२/१०, शुक्र उदित- ६ अक्तू.
२८	५१	१३	बु.	१०	०२	पू.भा.	४२	१७	वृ.	५२	०७	तै.	१०	०२	२२	८	१६	११	मी.	२६	१७	६	२४	१७	५६	५	२०	२५	५४	
२८	४६	१४	गु.	१२	३८	उ.भा.	४६	५४	ध्रु.	५२	०४	व.	१२	३८	२३	९	१७	१२	मीन			६	२४	१७	५५	५	२१	२५	०७	भ. १२/३८ से ४४/२२ तक, बुध हस्त में १८/१०, शुक्र बाल्य समाप्त (D)
२८	४२	१५	शु.	१६	२१	रेव.	५२	३४	व्या.	५२	५१	ब.	१६	२१	२४	१०	१८	१३	मे.	५२	३४	६	२५	१७	५४	५	२२	२४	२२	पंचक समाप्त ५२/३४, सूर्य चित्रा में ५६/२०, शुक्र स्वाती में (E)

(A) ४०/३२, मंगल मार्गी १७/४२, (B) विजयादशमी (दशहरा), (देखें पृ.141) अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (C) पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप, (D) २५/२२, श्री सत्यनारायण व्रत, शरत् पूर्णिमा, कोजागर व्रत, (E) १२/४०, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ,

आश्वि. शुक्ल ८ शुक्र, इष्ट ५७/५२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	१०	५	४	५	२	०	६
१६	०१	०६	०१	१४	२८	१८	२८	२८
२७	४३	३०	०४	०२	५३	५३	३०	३०
११	५४	४५	०१	१५	३६	१५	४३	४३
५९	८२०	०४	६३	१२	७४	०२	०३	०३
०३	१४	५४	२४	०	३६	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

७ के. | बु.५ गु. | ८ | सू. शु. ६ | ४ | ९ चं. | ३ श. | १० | १२ | २ | ११ मं. | १ रा.

लोक भविष्यः-मंगल मार्गी हो गया है। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं को सुलभ बनाने के लिए सरकार सक्रिय होगी। तुलाराशि का शुक्र अच्छा है। देश में अमन-चैन का वातावरण बने, मुस्लिम देशों में कहीं आन्तरिक अशान्ति का वातावारण रहे- " यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशिं प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किञ्चत् किञ्चत् विरोधकृत्।।" मुस्लिमराष्ट्र में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २७ सितम्बर को मंगल के मार्गी होने पर रुई में जोरदार मन्दा आ सकता है- वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। पक्षमध्य में ३ अक्तूबर के करीब रुई, चांदी, में अच्छा मन्दा आकर बाद मे तेजी बने। गेहूं, जौ, चना गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बने। पक्षान्त में अनाज, घी मन्दे हों।

आकाशलक्षणः- सितं. २७, अक्तू. ३,४,६,७ को कहीं बादलचाल एवं कहीं बूंदाबांदी हो। ध्यान दें:- सिंहराशि का शुक्र अनेक प्रान्तों में वर्षा का अवरोधक भी है। **"सिंहशुक्र जब होय भवानी, चाले पवन नहीं बरसे पानी।"**

कुण्डली सूर्योदये

७ के. शु. | ५ गु. | ८ | सू. ६ बु. | ४ | ९ | ३ श. | १० | १२ चं. | २ | ११ मं. | १ रा.

आश्वि. शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५७/४२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	०	१०	५	४	६	२	०	६
२३	०१	०७	१२	१५	०७	१९	२८	२८
२१	०२	२६	५३	२४	३५	०७	०८	०८
२२	०४	४४	०६	३२	५६	२६	२८	२८
५९	७२६	१०	१०४	११	७४	०१	०३	०३
१६	१६	१२	३०	३०	३६	४२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचारः-यदि अशिवन शुक्ल पूर्णिमा को आकाश मेघाछन्न हो तो धान्य के स्टॉक से आगामी चैत्रमास में लाभ मिले। " आशिवनी निर्मलापूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभप्रदो मतः।"

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

(११ अक्तूबर से २५ अक्तूबर तक, सन् २००३ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. अदृश्य है। प्रातः गु. पूर्व में, श. पश्चिम कपाल में तथा सायं मं. पूर्व कपाल में और शु. पश्चिम में होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. (आश्वि.)	अं. (अक्तूबर)	श. (कार्तिक)	मु. (शाबा.)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	३७	१	श.	२१	०८	अश्वि.	५६	११	ह.	५४	२२	कौ.	२१	०८	२५	११	१६	१४	मेष			६	२६	१७	५३	५	२३	२३	४०	
२८	३३	२	र.	२६	५१	भर.	६०	००	व.	५६	३०	ग.	२६	५१	२६	१२	२०	१५	मेष			६	२६	१७	५१	५	२४	२३	००	भ. ५६/५६ बाद, **गुरु सिंहांशक से बाहिर- १७ अक्तू.**
२८	२८	३	चं.	३३	१४	भर.	०६	३२	सि.	५६	०२	वि.	३३	१४	२७	१३	२१	१६	वृ.	२३	२८	६	२७	१७	५०	५	२५	२२	२२	भ. ३३/१४ तक,
२८	२४	४	मं.	३६	५७	कृत्ति.	१४	२२	व्य.	६०	००	ब.	६	३५	२८	१४	२२	१७	वृष			६	२८	१७	४६	५	२६	२१	४७	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी, (करवा चौथ)-(चन्द्रोदय २० घं १४ मि.) (A)
२८	१९	५	बु.	४६	३१	रोहि.	२२	१३	व्य.	०१	३८	कौ.	१३	१४	२९	१५	२३	१८	मि.	५६	०२	६	२८	१७	४८	५	२७	२१	१४	
२८	१५	६	गु.	५२	२४	मृग.	२९	३७	व.	०४	०२	[illegible]	१९	२७	३०	१६	२४	१९	मिथुन			६	२९	१७	४७	५	२८	२०	४२	भ. ५२/२४ बाद, बुध चित्रा में ५६/३५,
२८	१०	७	शु.	५७	०४	आर्द्रा	३६	०२	प.	०५	४८	वि.	२४	५४	का.१	१७	२५	२०	मिथुन			६	३०	१७	४६	५	२९	२०	१२	भ. २४/५४ तक, सं. सूर्य तुला में ४०/०५, पु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न (B)
२८	०६	८	श.	६०	००	पुन.	४०	५८	शि.	०६	३४	बा.	२८	३४	२	१८	२६	२१	क.	२४	५३	६	३०	१७	४५	६	००	१९	४६	अहोई अष्टमी (पं.),
२८	०१	८	र.	००	०३	पुष्य	४४	०६	सि.	०६	०१	कौ.	००	०३	३	१९	२७	२२	कर्क			६	३१	१७	४४	६	०१	१९	२२	
२७	५७	९	चं.	०१	०६	आश्ले.	४५	१३	सा.	०३	५७	ग.	०१	०६	४	२०	२८	२३	सिं.	४५	१३	६	३२	१७	४३	६	०२	१९	००	भ. ३०/५१ बाद, बुध तुला में ४६/००, शुक्र विशा. में ५५/३२,
२७	५२	१०	मं.	००	०४	मघा	४४	१८	शु. / शु.	०० / ५४	१४ / ५६	वि.	००	०४	५	२१	२९	२४	सिंह			६	३३	१७	४२	६	०३	१८	३९	भ. ००/०४ तक, रमा एकादशी व्रत (स्मा.),
क्षय		११	मं.	५७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२७	४८	१२	बु.	५२	०४	पू.फा.	४१	३१	ब्र.	४८	०७	कौ.	२४	३२	६	२२	३०	२५	क.	५५	३४	६	३३	१७	४०	६	०४	१८	२२	रमा एकादशी व्रत (वै.), गोवत्स द्वादशी,
२७	४४	१३	गु.	४५	३४	उ.फा.	३७	०७	ऐं.	४०	००	ग.	१८	४६	७	२३	का.१	२६	कन्या			६	३४	१७	३९	६	०५	१८	०७	भ. ४५/३४ बाद, सूर्य सायन वृश्चिक में ४७/४०, नेपच्यून मार्गी २/०५,(C)
२७	३९	१४	शु.	३७	५२	हस्त	३१	२७	वै.	३०	५२	वि.	११	५०	८	२४	२	२७	तु.	५८	१९	६	३५	१७	३८	६	०६	१७	५३	भ. ११/५० तक, सूर्य स्वाती में २२/१०, बुध स्वाती में ४६/१७, (D)
२७	३५	३०	श.	२९	२२	चित्रा	२४	५५	वि.	२१	०१	च.	३	३७	९	२५	३	२८	तुला			६	३५	१७	३७	६	०७	१७	४२	शनि वक्री ५६/३२, शनैश्चरी अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, (E)

A) (देखें पृ.141), (B) के बाद, गुरु पू.फा. २ में ३७/२५, गुरु सिंहांशक से बाहिर, (C) हेमन्त ऋतु प्रा., शक कार्तिक प्रा., प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, नरकचतुर्दशी (आगामी अरुणोदय वाली), (D) श्री हनुमान् जयन्ती (पूर्व अरुणोदय वाली), (E) श्रीमहावीर निर्वाण (जैन),

कार्तिक कृष्ण ८ शनि, इष्ट ५७/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	१०	५	४	६	२	०	६
०१	०६	०८	२६	१६	१७	१९	२७	२७
१६	४६	१२	४८	५४	३३	१७	४३	४३
५०	४६	१९	५९	४६	०४	१९	०१	०१
५९	७४४	१५	१०३	११	७४	०	०३	०३
३४	२६	२४	२४	०६	३६	५४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	पुष्य २	शत. १	चित्रा २	पू.फा. २	स्वा. ४	आर्द्रा ४	कृत्ति. १	विशा. ३

कुण्डली सूर्योदये

८ | ९ बु. | सू. शु. ७ के. | ५ गु. | ९ | १० | ४ | श. | ११ मं. | १ रा. | चं. ३ | १२ | २

लोक भविष्यः- इसमास में ५ शनिवार हैं। पूर्वोत्तरी भूभाग पर राजनैतिक उथल-पुथल हो। कहीं किसी विशिष्ट व्यक्ति किंवा बहुचर्चित व्यक्ति के निधन का समाचार मिले। अग्निकाण्ड व बम विस्फोट आदि से जनता को कष्ट, मंहगाई से जनसाधारण में असन्तोष रहे। कहीं भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि हो,-*"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पताले कम्पते फणिः। ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"* इस पक्ष में शनिवारी अमा भी राजनीतिज्ञों के लिए कष्टप्रद है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में बाज़ार ऊपर-नीचे चलेंगे। १६ अक्तूबर के लगभग रुई, चांदी में घटा-बढ़ी होकर अनाजों में भी तेजी रहे। १७ अक्तूबर के लगभग, गेहूं, जौ, चना, सोना, तांबा, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा बने। पक्षान्त में तेल, सरसों, धातुओं में तेजी रहे।

आकाश लक्षणः- अक्तूबर १४, १७, २० एवं. २५ अक्तू. को लंका, आसाम, बंगलादेश एवं. उ. भारत में कहीं बादलचाल के योग हैं। उत्तरी भारत का तापमान गिरेगा। **शकुन विचारः-** कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो सरसों, तिल, तेल तेज होंगे; शीघ्र ही सटीक से निःसंदेह लाभ होगा। दीपावली की सायं को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें खराब होने से तेजी जोर पकड़ेगी।

कुण्डली सूर्योदये

८ | बु. | ९ | सू. शु. चं. ७के | ५ गु. | ९ | १० | ४ | ११ मं. | १ रा. | श. ३ | १२ | २

कार्तिक कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५७/१७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	१०	६	४	६	२	०	६
०८	१४	११	०८	१८	२६	१९	२७	२७
१४	४७	१६	३७	०९	१५	१९	२०	२०
४८	२४	३६	५८	४२	३९	५९	४६	४६
५९	६०१	१९	९९	१०	७४	०	०३	०३
४९	५६	२४	३६	३०	४२	०५	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. १	स्वा. ३	शत. २	स्वा. १	पू.फा. २	विशा. २	आर्द्रा ४	कृत्ति. १	विशा. ३

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(२६ अक्तूबर से ८ नवंबर तक, सन् २००३ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. अस्त है। प्रातः गु. पूर्व में, श. पश्चिमकपाल में तथा सायं मं. पूर्व कपाल में और शु. पश्चिम में होगा। ९ नवं. को सूर्योदय से पूर्व भारत में ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई पड़ेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.
२७	३१	१	र.	२०	२८	स्वा.	१७	५७	प्री.	१०	४७	ब.	२०	२८
२७	२६	२	चं.	११	३५	वि.	१०	५६	आ. सौ.	०० ५०	२६ २६	कौ.	११	३५
२७	२२	३	मं.	०३	०५	अनु. ज्ये.	०४ ५८	२४ ३६	शो.	४१	००	ग.	०३	०५
अदम		४	मं.	५५	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	१८	५	बु.	४८	४१	मूल	५३	५१	अ.	३२	१९	ब.	२२	०२
२७	१४	६	गु.	४३	१८	पू.षा.	५०	२५	सु.	२४	३८	कौ.	१६	००
२७	१०	७	शु.	३६	२६	उ.षा.	४८	२९	धृ.	१८	०७	ग.	११	२२
२७	०५	८	श.	३७	०९	श्रव.	४८	०८	शू.	१२	५२	वि.	८	०४
२७	०१	९	र.	३६	३०	धनि.	४६	२१	गं.	०८	५३	बा.	६	५०
२६	५७	१०	चं.	३७	२५	शत.	५२	०४	वृ.	०६	०९	तै.	६	५७
२६	५३	११	मं.	३६	४७	पू.भा.	५६	०८	ध्रु.	०४	३५	व.	८	२५
२६	४९	१२	बु.	४३	२५	उ.भा.	६०	००	व्या.	०४	०३	ब.	११	३६
२६	४५	१३	गु.	४८	०७	उ.भा.	०१	२०	ह.	०४	२६	कौ.	१५	४६
२६	४२	१४	शु.	५३	४०	रेव.	०७	३२	व.	०५	३४	ग.	२०	५४
२६	३८	१५	श.	५९	५२	अश्वि.	१४	२९	सि.	०७	१७	वि.	२६	४१

तिथि	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्टूबर	श. कार्तिक	मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
१	१०	२६	४	२९	वृ.	५७	४४	६	३६	१७	३६	६	०८	१७	३३	गोक्रीड़ा, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा, अन्नकूट, यमद्वितीया (देखें पृष्ठ142),
२	११	२७	५	३०	वृश्चिक			६	३७	१७	३६	६	०९	१७	२६	चन्द्रदर्शन मु. ३०, भाईदूज (देखें पृष्ठ142), विश्वकर्मा पूजा,
३	१२	२८	६	रम.१	ध.	५८	३६	६	३८	१७	३५	६	१०	१७	२२	भ. २९/०७ से ५५/२२ तक, शुक्र वृश्चिक में ५७/३२, रमज़ान मु. प्रारम्भ,
४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
५	१३	२९	७	२	धनु			६	३८	१७	३४	६	११	१७	१८	
६	१४	३०	८	३	धनु			६	३९	१७	३३	६	१२	१७	१६	सूर्यषष्ठी,
७	१५	३१	९	४	म.	०४	४६	६	४०	१७	३२	६	१३	१७	१६	भ. ३९/२६ बाद, शुक्र अनु. में ३८/१५,
८	१६	न.१	१०	५	मकर			६	४१	१७	३१	६	१४	१७	१८	भ. ०८/०४ तक, बुध विशा. में ५६/५०, गोपाष्टमी, नवम्बर प्रारम्भ,
९	१७	२	११	६	कुं.	१८	३२	६	४२	१७	३०	६	१५	१७	२१	पंचक प्रारम्भ १८/३२, कूष्माण्ड नवमी, अक्षय नवमी,
१०	१८	३	१२	७	कुम्भ			६	४२	१७	२९	६	१६	१७	२६	
११	१९	४	१३	८	मी.	४०	००	६	४३	१७	२९	६	१७	१७	३२	भ. ०८/२५ से ३९/४७ तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), भीष्म पंचक प्रारम्भ,
१२	२०	५	१४	९	मीन			६	४४	१७	२८	६	१८	१७	४०	तुलसी विवाह,
१३	२१	६	१५	१०	मीन			६	४५	१७	२७	६	१९	१७	५०	सूर्य विशा. में ४२/०५, गुरु पू.फा. ३ में ८/०२, प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ (A)
१४	२२	७	१६	११	मे.	०७	३२	६	४६	१७	२६	६	२०	१८	०१	भ. ५३/४० बाद, पंचक समाप्त ७/३२, राहु भर. ४ , केतु विशा. २(B)
१५	२३	८	१७	१२	मेष			६	४७	१७	२६	६	२१	१८	१४	भ. २६/४१ तक, बुध वृश्चिक में १७/५७, यूरेनस मार्गी २८/३७,(C)

(A) चतुर्दशी (आगामी अरुणोदय वाली), (B) मे ४६/०५, चन्द्रग्रहणमूल, (C) श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त, चातुर्मास्य व्रत नियम एवम् भीष्म पंचक समाप्त, ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (९ नवं. '०३ ई. के सूर्योदय से पहिले समस्त भारत में दृश्य, देखें पृ.11),

कार्तिक शुक्ल ८ शनि, इष्ट ५७/०२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १५ १४ २२	६ २५ १७ ४४	१० १३ ४६ ५९	६ २० ० २१	४ १९ २० ११	७ ०४ ५८ ०८	२ १९ १७ १६	० २६ ५८ ३०	६ २६ ५८ ३०
६० ०१	८०१ ११	२२ ५३	६५ ५४	०९ ४८	७४ ४२	० ४३	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

८ शु.
६
सू. बु.
७ के
५
९
गु
१० चं.
४
११मं.
१ रा.
३श.
१२
२

लोक भविष्यः- इसपक्ष में वृश्चिक राशि का शुक्र जनता में सुख-समृद्धि, धन-धान्य सम्पन्नता का संकेत देता है। लेकिन खाद्य वस्तुओं में तेजी बनेगी;

"वृश्चिके तु गते शुक्रे सर्वधान्यमहर्घता। लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुखं स्वस्थं प्रवर्तते।।"

पक्षान्त में शनिवारी पूर्णिमा के दिन चन्द्रग्रहण होने से कहीं बिजली गिरे, भूकम्प से कहीं जनधनहानि भी संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २८ अक्तूबर के लगभग रुई, चांदी, शेयर बाज़ारों में मन्दे के बाद तेजी। गुड़ में घटा-बढ़ी। दालवाना और अनाजों में भी तेजी का रुख रहे। पक्षमध्य में गुड़, खाण्ड, चावल और नमक मन्दा रहे। रुई में अचानक अच्छा मन्दा आ सकता है। पक्षान्त में कपास, घी, गुड़, तेल तेज रहें।

आकाशलक्षणः- अक्तूबर २८, ३१, नवम्बर १, ७, ८ के लगभग पर्वतीय भूभाग पर वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि भी हो।

शकुन विचारः- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य के चारों तरफ परिवेष (घेरा) दिखाई दे, तो तेल के सटीक से आगे लाभ मिलता है।

कुण्डली सूर्योदये

कार्तिक शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५६/४७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २२ १५ १५	० २१ ४२ ०७	१० १६ ३९ ०४	७ ०१ ० १३	४ २० २५ ४६	७ १३ ४० १९	२ १९ ०९ ०३	० २६ ३६ १५	६ २६ ३६ १५
६० १३	७१२ २७	२५ ४७	६३ ०५	०९ ०६	७४ ३६	०१ ३०	०३ ११	०३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(९ से २३ नवंबर तक, सन् २००३ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. १७ नवं. सायं से पश्चिम में दृश्य होगा। प्रातः गु. पूर्वकपाल में, श. पश्चिम में तथा सायं शु. भी पश्चिम में और मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	तारीखें अं. नवंबर	तारीखें श. कार्तिक	तारीखें मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३४	१	र.	६०	००	भर.	२१	५८	व्य.	०६	२७	बा.	३३	०८	२४	९	१८	१३	वृ.	३८	५४	६	४७	१७	२५	६	२२	१८	२९	चन्द्रग्रहणशूल,
२६	३०	१	चं.	०६	२५	कृत्ति.	२९	४४	व.	११	५२	कौ.	०६	२५	२५	१०	१९	१४	वृष			६	४८	१७	२४	६	२३	१८	४५	बुध अनु. में २७/१५, चन्द्रग्रहणशूल,
२६	२६	२	मं.	१३	०८	रोहि.	३७	३०	प.	१४	२०	ग.	१३	०८	२६	११	२०	१५	वृष			६	४९	१७	२४	६	२४	१९	०५	भ. ४६/२७ बाद, शुक्र ज्ये. में २१/२०, चन्द्रग्रहणशूल,
२६	२३	३	बु.	१९	३६	मृग.	४४	५९	शि.	१६	४०	वि.	१९	३६	२७	१२	२१	१६	मि.	११	१७	६	५०	१७	२३	६	२५	१९	२५	भ. १९/३६ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२६	१९	४	गु.	२५	३८	आर्द्रा	५१	४९	सि.	१८	३७	बा.	२५	३८	२८	१३	२२	१७	मिथुन			६	५१	१७	२२	६	२६	१९	४६	
२६	१६	५	शु.	३०	४३	पुन.	५७	३९	सा.	१९	५४	तै.	३०	४३	२९	१४	२३	१८	क.	४१	१८	६	५२	१७	२२	६	२७	२०	१०	जन्मदिन श्री जवाहर लाल नेहरु (बाल दिवस),
२६	१२	६	श.	३४	३०	पुष्य	६०	००	शु.	२०	१६	ग.	२	३६	३०	१५	२४	१९	कर्क			६	५२	१७	२१	६	२८	२०	३६	भ. ३४/३० बाद,
२६	०९	७	र.	३६	४२	पुष्य	०२	०४	शु.	१९	२९	वि.	५	४८	मा.१	१६	२५	२०	कर्क			६	५३	१७	२१	६	२९	२१	०४	भ. ०५/४८ तक, सं. सूर्य वृश्चिक में ३८/४०, मु. १५, पुण्यकाल (A)
२६	०५	८	चं.	३७	०५	आश्ले.	०४	५४	ब्र.	१७	१९	बा.	६	५४	२	१७	२६	२१	सिं.	०४	५४	६	५४	१७	२०	७	००	२१	३४	बुध पश्चिम में उदय ६/१५, श्री कालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
२६	०२	९	मं.	३५	३२	मघा	०५	५३	ऐं.	१३	४१	तै.	६	१८	३	१८	२७	२२	सिंह			६	५५	१७	२०	७	०१	२२	०५	
२५	५९	१०	बु.	३२	०३	पू.फा.	०४	५९	वै.	०८	३१	व.	४	४१	४	१९	२८	२३	क.	१९	२८	६	५६	१७	१९	७	०२	२२	३७	भ. ०४/०१ से ३२/०३ तक, सूर्य अनु. में ५६/५०, बुध ज्येष्ठा में (B)
२५	५६	११	गु.	२६	४८	उ.फा. हस्त	०२ ५७	१५ ५४	वि. प्री.	०१ ५३	५३ ५६	बा.	२६	४८	५	२०	२९	२४	कन्या			६	५७	१७	१९	७	०३	२३	१३	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	५३	१२	शु.	२०	००	चित्रा	५२	०९	आ.	४४	४९	तै.	२०	००	६	२१	३०	२५	तु.	२५	१०	६	५८	१७	१९	७	०४	२३	५०	प्रदोष व्रत,
२५	५०	१३	श.	११	५८	स्वा.	४५	२४	सौ.	३४	४९	व.	११	५८	७	२२	मा.१	२६	तुला			६	५८	१७	१८	७	०५	२४	२८	भ. ११/५८ से ३७/३७ तक, सूर्य सायन धनु में ४०/३७, शुक्र मूल धनु (C)
२५	४७	१४	र.	०३	०४	वि.	३८	०२	शो.	२४	१५	श.	०३	०४	८	२३	२	२७	वृ.	२४	५४	६	५९	१७	१८	७	०६	२५	०९	
अवम		३०	र.	५३	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथि क्षय,

(A) मध्याह्न के बाद, मंगल पू.भा. में १९/३५, नेपच्यून श्रव. ३ में ४७/४०, (B) १४/२०, (C) में ४/४७, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,

मार्ग. कृष्ण ८ चन्द्र, इष्ट ५६/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	१०	७	४	७	२	०	६
०१	११	२०	१४	२१	२४	१८	२६	२६
१८	१४	४६	४३	४१	५१	५०	०७	०७
३१	५०	१५	२४	५०	१७	५०	३८	३८
६०	७८३	२८	६०	०७	७४	०२	०३	०३
२६	०२	४२	१२	५६	३०	२४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

९ | ७ के. | सू. बु. | ६ | १० | शु. ८ | मं ११ | ५ गु. | १२ | २ | ४ चं. | १ रा. | श. ३

लोक भविष्यः- इसमास में ५ रविवार हैं, अमावस भी रविवार को ही है। कहीं दुर्भिक्ष; कहीं मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन; सीमाप्रान्तों पर कहीं हलचल से अशान्ति का वातावरण रहे,- **"यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।"** इस पक्ष के पूर्वार्ध में प्रतिपदा की वृद्धि से कहीं युद्ध से अशान्त वातावरण का संकेत मिलता है; जनता में परेशानी रहे,- *"मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः।।"*

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में सूत, सण, रुई, सोना, चांदी, तिल-तेल, चावल मन्दे रहें। पक्षमध्य में १६ नवम्बर के लगभग रुई, तांबा, चांदी, सोना तेज हों, लेकिन रुई और शेयर बाज़ारों मे जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे। पक्षान्त में अनाज, सोना, चांदी, तांबा, शेयर बाज़ार तेज होंगे। **आकाशलक्षणः-** इसपक्ष में काश्मीर, भूटान, शिलांग, हि. प्र. एवं. उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ कहीं बादलचाल, वर्षा व बूंदाबांदी के योग हैं। शरद ऋतु का प्रभाव बढ़ने लगेगा। पक्षमध्य में १७ नवं. के लगभग कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। **शकुन विचारः-** मार्ग.कृष्ण चतुर्दशी किंवा अमावस वाले दिन बादल हों, तो अनाजों में शीघ्र तेजी आती है।

कुण्डली सूर्योदये

९ शु. | ७ के. चं. | सू. बु. | ८ | ६ | १० | मं ११ | ५ गु. | १२ | २ | ४ | १ रा. | श. ३

मार्ग. कृष्ण १४ रवि, इष्ट ५६/१७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	१०	७	४	८	२	०	६
०७	०७	२३	२३	२२	०२	१८	२५	२५
२२	५८	४४	३६	२६	१८	३४	४८	४८
०३	१४	३२	५३	४६	२८	०७	३३	३३
६०	६१२	३०	८७	०७	७४	०३	०३	०३
४०	५३	२३	५४	११	२६	०	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(२४ नवम्बर से ८ दिसम्बर तक, सन् २००३ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- प्रातः श. पश्चिम में, गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा सायं बु.-शु. पश्चिम में और मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	प.	योग	समाप्तिकाल घ.	प.	करण	समाप्तिकाल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४४	१	चं.	४४	२०	अनु.	३०	२६	अ.	१३	२७	किं.	१६	०२	६	२४	३	२८	वृश्चिक			७	००	१७	१८	७	०७	२५	५१	
२५	४१	२	मं.	३५	१६	ज्ये.	२३	१२	सु. धृ.	०२ ५२	४५ ३१	बा.	६	५०	१०	२५	४	२६	ध.	२३	१२	७	०१	१७	१७	७	०८	२६	३४	चन्द्रदर्शन मु. ३०,
२५	३८	३	बु.	२७	०५	मूल	१६	३८	शू.	४३	०१	तै.	१	१२	११	२६	५	श.१	धनु			७	०२	१७	१७	७	०९	२७	१७	भ. ५३/२५ वाद, शव्वाल मु. प्रा.,
२५	३६	४	गु.	२०	०४	पू.षा	११	११	गं.	३४	३६	वि.	२०	०४	१२	२७	६	२	म.	२५	०३	७	०३	१७	१७	७	१०	२८	०४	भ. २०/०४ तक,
२५	३३	५	शु.	१४	३६	उ.षा.	०७	१२	वृ.	२७	२८	बा.	१४	३६	१३	२८	७	३	मकर			७	०४	१७	१७	७	११	२८	५१	बुध मूल धनु में २२/४७, स्कन्द षष्ठी (पंचमी विद्धा), शहीदी दिन (A)
२५	३१	६	श.	१०	५६	श्रव.	०४	५९	ध्रु.	२१	५०	तै.	१०	५६	१४	२९	८	४	कुं.	३४	३७	७	०४	१७	१७	७	१२	२९	३६	पंचक प्रारम्भ ३४/३७, चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र),
२५	२८	७	र.	०६	१५	धनि.	०४	४२	व्या.	१७	४७	व.	०६	१५	१५	३०	९	५	कुम्भ			७	०५	१७	१७	७	१३	३०	२७	भ. ०६/१५ से ३६/१२ तक, मित्र सप्तमी,
२५	२६	८	चं.	०६	३७	शत.	०६	२४	ह.	१५	१७	ब.	०६	३७	१६	दि.१	१०	६	मी.	५३	५५	७	०६	१७	१६	७	१४	३१	१७	दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२४	९	मं.	११	५३	पू.भा.	०६	५६	व.	१४	१४	कौ.	११	५३	१७	२	११	७	मीन			७	०७	१७	१६	७	१५	३२	०७	गुरु पू.फा. ४ में ८/२२. शुक्र पू.षा. में ४८/५५,
२५	२२	१०	बु.	१५	४६	उ.भा.	१५	०५	सि.	१४	२७	ग.	१५	४६	१८	३	१२	८	मीन			७	०८	१७	१६	७	१६	३२	५८	भ. ४८/२० बाद, सूर्य ज्येष्ठा में ६/५५,
२५	२०	११	गु.	२१	०५	रेव.	२१	२६	व्य.	१५	३६	वि.	२१	०५	१९	४	१३	९	मे.	२१	२६	७	०८	१७	१६	७	१७	३३	५१	भ. २१/०५ तक, पंचक समाप्त २१/२६, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.),(B)
२५	१८	१२	शु.	२७	१५	अश्वि.	२८	४५	व.	१७	३३	बा.	२७	१५	२०	५	१४	१०	मेष			७	०९	१७	१६	७	१८	३४	४४	मंगल मीन में ४२/४५,
२५	१६	१३	श.	३३	५५	भर.	३६	२८	प.	१६	५२	कौ.	०	३५	२१	६	१५	११	वृ.	५३	२६	७	१०	१७	१६	७	१९	३५	३८	शनि प्रदोष व्रत,
२५	१४	१४	र.	४०	४२	कृत्ति.	४४	१७	शि.	२२	१८	ग.	७	१६	२२	७	१६	१२	वृष			७	११	१७	१७	७	२०	३६	३३	भ. ४०/४२ बाद,
२५	१३	१५	चं.	४७	१८	रोहि.	५१	५४	सि.	२४	४०	वि.	१४	०२	२३	८	१७	१३	वृष			७	१२	१७	१७	७	२१	३७	२६	भ. १४/०२ तक, बुध पू.षा. में ५१/३७, श्री सत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,

(A) श्री गुरु तेग़ बहादुर जी, (B) श्रीगीता जयन्ती,

मार्ग. शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ५६/००,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	१०	८	४	८	२	०	६
१५	०	२७	०४	२३	१२	१८	२५	२५
२८	२६	५६	५३	१८	१४	०६	२३	२३
०२	०५	१९	५१	४८	२१	४८	०७	०७
६०	७५६	३२	८१	०६	७४	०३	०३	०३
४८	०४	१८	०५	०	३०	४२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

बु.९ शु, ७ के., सू., ८, १०, ६, मं. ११ चं, ५ गु., १२, २, ४, १ रा., श. ३

लोक भविष्य:-इसपक्ष में बुध मूलनक्षत्र एवं धनुराशि में आकर शनि से देखा गया है। पशुओं में रोग से कष्ट हो; रोग विशेष से जनता को कष्ट एवं किसी विशेष मुद्दे को लेकर प्रजा एवं नेतृत्व में विरोध हो,-" धनुषि यदि बुधो याति मारयति मृगजान् गजान् राजा विरोधकृत्तत्र नान्यथा च भविष्यति।।" ५ दिसम्बर को मीनराशि के मंगल पर शनि की दृष्टि है। भारत में समृद्धि बढ़े, लेकिन यानदुर्घटना में जनधनहानि के योग हैं। कहीं मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २८ नवम्बर के लगभग कपास, सूत, चांदी में तेजी। ५ दिसम्बर के करीब सोना, रुई में तेजी और तेल, तिलहन में भी तेजी का ही रुख रहे। मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों में भी तेजी रहेगी।

आकाश लक्षण:- २८ नवम्बर को हवा का जोर रहे। ५ दिसम्बर के लगभग उत्तर भारत में बादलचाल व वर्षा हो। उत्तर भारत में शीतलहर चले। काश्मीर व हि.प्र. में जोरदार वर्षा व हिमपातके समाचार मिलें।

शकुन विचार:- यदि इस पक्ष में धनिष्टा नक्षत्र के समय (नवं. २६, ३० को) मेघ गरजें, तो जनता में संक्रामक रोग हों। यदि इस पक्ष में इन्द्रधनुष दीखे तो आगे वर्षा अच्छी हो।

कुण्डली सूर्योदये

बु.९ शु, ७ के., सू., ८, १०, ६, ११, ५ गु., मं. १२, चं. २, ४, १ रां., श. ३

मार्ग. शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ५५/४५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	११	८	४	८	२	०	६
२२	२४	०१	१३	२३	२०	१७	२५	२५
३४	०५	४७	२४	५६	५४	३८	०	००
०६	५६	१२	२६	०५	५०	५३	५१	५१
६०	७०६	३३	६४	०४	७४	०४	०३	०३
५५	५५	३०	३०	४८	१८	१२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, पौष कृष्ण पक्ष १८

(६ से २३ दिसं. तक सन् २००३ ई.)
दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन- २० दिसं. को बु. पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न और सायं मं. भी याम्योत्तरवृत्तासन्न एवम् शु. पश्चिमस्थ और श. पूर्वस्थ होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	११	१	मं.	५३	२७	मृग.	५६	०५	सा.	२६	४५	बा.	२०	२२	२४	६	१८	१४	मि.	२५	३२	७	१२	१७	१७	७	२२	३८	२५	
२५	१०	२	बु.	५८	५७	आर्द्रा	६०	००	शु.	२८	२५	तै.	२६	१२	२५	१०	१९	१५	मिथुन			७	१३	१७	१७	७	२३	३९	२३	
२५	०९	३	गु.	६०	००	आर्द्रा	०५	३६	शु.	२९	३१	व.	३१	२३	२६	११	२०	१६	क.	५५	०१	७	१४	१७	१७	७	२४	४०	२१	भ. ३१/२३ बाद, मंगल उ.भा. में ४०/१५,
२५	०७	३	शु.	०३	३५	पुन.	११	२१	ब्र.	२९	५६	वि.	०३	३५	२७	१२	२१	१७	कर्क			७	१४	१७	१७	७	२५	४१	२१	भ. ०३/३५ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२५	०६	४	श.	०७	१५	पुष्य	१६	०७	ऐं.	२९	३३	बा.	०७	१५	२८	१३	२२	१८	कर्क			७	१५	१७	१८	७	२६	४२	२२	शुक्र उ.षा. में ३४/२५,
२५	०५	५	र.	०९	४४	आश्ले.	१९	४४	वै.	२८	१३	तै.	०९	४४	२९	१४	२३	१९	सिं.	१९	४४	७	१६	१७	१८	७	२७	४३	२४	
२५	०५	६	चं.	१०	५३	मघा	२२	०२	वि.	२५	५०	व.	१०	५३	३०	१५	२४	२०	सिंह			७	१६	१७	१८	७	२८	४४	२७	भ. १०/५३ से ४०/५५ तक,
२५	०४	७	मं.	१०	३२	पू.फा.	२२	५३	प्री.	२२	१६	ब.	१०	३२	पौ.१	१६	२५	२१	क.	३७	५२	७	१७	१७	१९	७	२९	४५	२९	सं. सूर्य मूल धनु में १४/१७, मु. ३०, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र (A)
२५	०३	८	बु.	०८	३८	उ.फा.	२२	११	आ.	१७	२८	कौ.	०८	३८	२	१७	२६	२२	कन्या			७	१८	१७	१९	८	००	४६	३३	बुध वक्री ३५/३२,
२५	०३	९	गु.	०५	०७	हस्त	१९	५६	सौ.	११	२५	ग.	०५	०७	३	१८	२७	२३	तु.	४८	१५	७	१८	१७	१९	८	०१	४७	३८	भ. ३२/४७ बाद,
२५	०२	१०	शु.	००	०४	चित्रा	१६	१२	शो. अ.	०४ ५५	०८ ४७	वि.	००	०४	४	१९	२८	२४	तुला			७	१९	१७	२०	८	०२	४८	४५	भ. ००/०४ तक, सफला एकादशी व्रत (स्मा.),
अवम		११	शु.	५३	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५	०२	१२	श.	४६	०४	स्वा.	११	०८	सु.	४६	२८	कौ.	१९	५२	५	२०	२९	२५	वृ.	५१	३९	७	१९	१७	२०	८	०३	४९	५२	बुध पश्चिम में अस्त ४६/०२, सफला एकादशी व्रत (वै.),
२५	०२	१३	र.	३७	३८	वि. अनु.	०५ ५८	०२ १३	धृ.	३६	२८	ग.	११	५२	६	२१	३०	२६	वृश्चिक			७	२०	१७	२१	८	०४	५१	००	भ. ३७/३८ बाद, व. शनि आर्द्रा ३ में ५१/०२, प्रदोष व्रत,
२५	०२	१४	चं.	२८	४१	ज्ये.	५१	०३	शू.	२६	०३	वि.	३	११	७	२२	पौ.१	२७	ध.	५१	०३	७	२०	१७	२१	८	०५	५२	०६	भ. ०३/११ तक, सूर्य सायन मकर में १३/०५, उत्तरायण-शिशिर (B)
२५	०२	३०	मं.	१९	४०	मूल	४३	५९	गं.	१५	३२	ना.	१९	४०	८	२३	२	२८	धनु			७	२१	१७	२२	८	०६	५३	१७	भौमवती अमावस,

(A) मकर में १६/०५, (B) ऋतु प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ,

पौष कृष्ण ८ बुध , इष्ट ५५/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	११	८	४	९	२	०	६
०१	१७	०६	१८	२४	०२	१६	२४	२४
४३	३८	५५	३८	३२	०२	५८	३२	३२
०३	५७	३५	३९	१०	५५	३६	१४	१४
६१	८२१	३४	०१	०३	७४	०४	०३	०३
०४	११	४८	४७	१८	०६	४२	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

१० शु.
८
सू. बु.
९
के.
७
११
मं. १२
६ चं.
१ रा.
३ श.
५ गु.
२
४

लोक भविष्य:- शनि-मंगल का दशम-चतुर्थ दृष्टिसम्बन्ध राजनीतिज्ञों के लिए कष्टप्रद है। संक्रान्ति एवं अमावस दोनों मंगलवारी होने से खप्परयोग बनता है, महामारी से जनधनहानि तथा खड़ी फसलों को हानि पहुंचने से मंहगाई बढ़े,-" यस्मिन् वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः। लोके खर्परयोगोऽयं जीव-धान्यादि नाशकः।।"

इस चान्द्रमास में ५ मंगलवार भी कही युद्धमय वातावरण बनाएं तथा कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो व मन्त्रिमण्डल में उल्टफेर हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- ११ दिसम्बर के लगभग सोना, चांदी, रुई, जौ, चना में तेजी बने। १३ दिसम्बर के लगभग सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, एरण्ड में मन्दा और अनाजों में तेजी बने। १६ दिसम्बर को रुई, सूत, कपास, तिल, तेल, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना और दालवाना में अच्छी तेजी का योग है। २० दिसम्बर को रुई मे जोरदार मन्दा बन सकता है।

आकाश लक्षण:- दिसं. ११, १३, १६, १७, २०, २१ के लगभग वर्षा के योग है। उत्तरी भारत [illegible] ... काश्मीर एवं हि.प्र. में भारी हिमपात के समाचार मिलेंगे, जिससे यातायात प्रभावित होगा। [illegible]

कुण्डली सूर्योदये

१० शु.
८
सू. बु.
९ चं.
के.
७
११
मं. १२
६
१ रा.
३ श.
५ गु.
२
४

पौष कृष्ण ३० मंगल, इष्ट ५५/२२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	११	८	४	९	२	०	६
०७	१६	१०	१४	२४	०९	१६	२४	२४
४९	११	२७	५३	४८	२७	२९	१३	१३
४३	१६	१०	०	०३	२४	५६	१०	१०
६१	९०५	३५	६४	०२	७४	०४	०३	०३
०८	२३	३६	३०	१२	०	५५	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, पौष शुक्ल पक्ष १९

(२४ दिसम्बर सन् २००३ ई. से ७ जनवरी सन् २००४ ई. तक)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. १ जन. से प्रातःपूर्व में दिखाई देने लगेगा। प्रातः गु. पश्चिमकपालस्थ तथा सायं मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न, शु. पश्चिम में और श. पूर्वस्थ होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.
२५	०२	१	बु.	११	००	पू.षा	३७	२६	वृ. / ध्रु.	०५ / ५५	१७ / ४०	ब.	११	००	९	२४	३	२९	म.	५१	००
२५	०२	२	गु.	०३	०८	उ.षा.	३२	००	व्या.	४७	००	कौ.	०३	०८	१०	२५	४	ज़ि.१	मकर		
अवम		३	गु.	५६	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	०	०
२५	०३	४	शु.	५१	३२	श्रव.	२७	५८	ह.	३६	३५	व.	२३	४७	११	२६	५	२	कुं.	५६	३७
२५	०३	५	श.	४८	२६	धनि.	२५	४५	व.	३३	४१	ब.	२०	००	१२	२७	६	३	कुम्भ		
२५	०४	६	र.	४७	३७	शत.	२५	३४	सि.	२९	२७	कौ.	१८	०३	१३	२८	७	४	कुम्भ		
२५	०५	७	चं.	४८	५७	पू.भा.	२७	३३	व्य.	२९	५६	ग.	१८	१७	१४	२९	८	५	मी.	११	५१
२५	०५	८	मं.	५२	२०	उ.भा.	३१	३४	व.	२९	०३	वि.	२०	२४	१५	३०	९	६	मीन		
२५	०६	९	बु.	५७	२५	रेव.	३७	१६	प.	२६	३३	बा.	२४	५२	१६	३१	१०	७	मे.	३७	१६
२५	०८	१०	गु.	६०	००	अश्वि.	४४	२१	शि.	२८	०८	तै.	३०	३२	१७	ज.१	११	८	मेष		
२५	०९	१०	शु.	०३	४०	भर.	५२	०७	सि.	३०	२४	ग.	०३	४०	१८	२	१२	९	मेष		
२५	१०	११	श.	१०	३२	कृत्ति.	६०	००	सा.	३२	५६	वि.	१०	३२	१९	३	१३	१०	वृ.	०६	०६
२५	१२	१२	र.	१७	२६	कृत्ति.	००	०३	शु.	३५	२१	बा.	१७	२६	२०	४	१४	११	वृष		
२५	१३	१३	चं.	२३	५४	रोहि.	०७	४२	शु.	३७	२४	तै.	२३	५४	२१	५	१५	१२	मि.	४१	१८
२५	१५	१४	मं.	२९	३७	मृग.	१४	४१	ब्र.	३८	५०	व.	२९	३७	२२	६	१६	१३	मिथुन		
२५	१७	१५	बु.	३४	२२	आर्द्रा	२०	४८	ऐं.	३९	३३	वि.	२	०७	२३	७	१७	१४	मिथुन		

चण्डीगढ़ मा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
७	२१	१७	२२	८	०७	५४	२७	चन्द्रदर्शन मु. ३०, शुक्र श्रव. में २१/४७,
७	२२	१७	२३	८	०८	५५	३७	वक्री बुध मूल ४ में १०/५५, जिल्काद मु. प्रा.,
०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
७	२२	१७	२३	८	०९	५६	४७	भ. २३/४७ से ५१/३२ तक, पंचक प्रारम्भ ५६/३७,
७	२३	१७	२४	८	१०	५७	५८	
७	२३	१७	२५	८	११	५९	०८	
७	२३	१७	२५	८	१३	००	१८	भ. ४८/५७ बाद, सूर्य पू.षा. में १९/२२, अवतार दिन श्री गुरु (A)
७	२४	१७	२६	८	१४	०१	२७	भ. २०/२४ तक,
७	२४	१७	२७	८	१५	०२	३६	पंचक समाप्त ३७/१६, सन् २००३ ई. समाप्त,
७	२४	१७	२७	८	१६	०३	४६	बुध पूर्व में उदय ५७/१५, जनवरी (सन् २००४ ई.) प्रारम्भ,
७	२५	१७	२८	८	१७	०४	५६	भ. ३७/०४ बाद,
७	२५	१७	२९	८	१८	०६	०५	भ. १०/३२ तक, मंगल रेवती में १४/१७, गुरु वक्री ५५//०५, (B)
७	२५	१७	३०	८	१९	०७	१४	शुक्र धनि. में १२/०२, प्रदोष व्रत,
७	२५	१७	३०	८	२०	०८	२३	
७	२५	१७	३१	८	२१	०९	३१	भ. २९/३७ बाद, बुध मार्गी २९/३२,
७	२५	१७	३२	८	२२	१०	३९	भ. २/०७ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, पौषी पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ,

(A) गोबिन्द सिंह जी, (B) प्लूटो ज्ये. ४ में ११/०७, पुत्रदा एकादशी व्रत(स.),

पौष शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ५५/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	११	८	४	९	२	०	६
१४	२१	१४	०५	२४	१८	१५	२३	२३
५७	३०	३६	५४	५८	०४	५५	५०	५०
४६	३०	०३	११	०८	४१	३१	५४	५४
६१	७४१	३६	६८	०	७३	०४	०३	०३
०९	०५	१८	३६	५४	४८	५४	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

१० शु. | ८ | सू. बु. ९ | के. ७ | ११ | म. १२ चं. | ६ | १ रा. | ३ श. | ५ गु. | २ | ४

लोक भविष्यः- शनि-सूर्य का समसप्तक एवं शुक्र-गुरु का षडष्टक चल रहा है। राजनीतिक दलों में आन्तरिक समस्याएं उभरेंगी। कहीं राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा। मन्त्रिमण्डल में प्रधाननेता के लिए कुछ राजनैतिक दल सरदर्द बनेंगे। ३ जनवरी को गुरु के वक्री होने पर सुभिक्ष, आरोग्य एवं राजनैतिक कई समस्याओं का हल निकले।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में अनाज, सोना, चांदी में मन्दा। २९ दिसम्बर को वायदा बाज़ारों में तेजी बने। १ जन. २००४ ई. को रुई में मन्दे के बाद अच्छी तेजी बने । गेहूं, चना, तिल, घी, लालमिर्च भी तेज रहे। पक्षान्त में बुध के मार्गी होने पर अनाजों में कुछ तेजी एवम् तिलहनों में कुछ मन्दा रहे।

आकाश लक्षणः- दिसंबर २५ से २९ तक व १ जनवरी (२००४ इ.) से ६ जनवरी तक पंजाब, हि. प्र., हरियाणा राजस्थान एवं. केन्द्रशासित कुछ प्रान्तों में जोरदार शीतलहर चलेगी। कहीं धुन्द, वर्षा व वायुवेग से हानि भी हो।

शकुन विचारः- पौष शुक्ल पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाछन्न रहे, तो फसल अच्छी हो। यदि पौषशुक्ल पंचमी को वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी होती है।

कुण्डली सूर्योदये

१० शु | ८ | सू. बु. ९ | के. ७ | ११ | मं. १२ | ६ | १ रा. | चं. ३ श. | ५ गु. | २ | ४

पौष शुक्ल १५ बुध, इष्ट ५५/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	११	८	४	९	२	०	६
२३	२७	१९	०२	२४	२७	१५	२३	२३
०६	०	३२	३०	५८	५३	१६	२५	२५
५३	५५	०२	२५	०६	२२	०	२८	२८
६१	७३२	३६	०८	०	७३	०४	०३	०३
०८	०४	४८	०	४३	२४	५४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, माघ कृष्ण पक्ष २०

(८ से २१ जनवरी तक, सन् २००४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन
२५	१८	१	गु.	३८	०५	पुन.	२५	५६	वै.	३६	२६	बा.	६	१३	२४	८	१८	१५	क.	०६	४५	७	२५	१७	३३	८	२३	११	४७	ग्रह दर्शन- प्रातः बुध पूर्वस्थ, गु. पश्चिमकपालस्थ तथा सायं मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर झुका हुआ, शु. पश्चिम में एवम् श. पूर्वकपाल में दिखाई देगा।
२५	२०	२	शु.	४०	४५	पुष्य	३०	०५	वि.	३८	३८	तै.	६	२५	२५	९	१९	१६	कर्क			७	२५	१७	३४	८	२४	१२	५५	शुक्र कुम्भ में ३८/४७, राहु भर. ३, केतु विशा. १ में ३८/२२,
२५	२२	३	श.	४२	२४	आश्ले.	३३	१४	प्री.	३७	००	व.	११	४२	२६	१०	२०	१७	सिं.	३३	१४	७	२५	१७	३४	८	२५	१४	०३	भ. ११/४२ से ४२/२४ तक,
२५	२४	४	र.	४३	०३	मघा	३५	२५	आ.	३४	३७	ब.	१२	४४	२७	११	२१	१८	सिंह			७	२५	१७	३५	८	२६	१५	१०	सूर्य उ.षा. में २४/२२, श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (A)
२५	२७	५	चं.	४२	४०	पू.फा.	३६	३७	सौ.	३१	२६	कौ.	१२	५२	२८	१२	२२	१९	क.	५१	४६	७	२५	१७	३६	८	२७	१६	१८	यूरेनस शत. १ में २०/०२,
२५	२९	६	मं.	४१	१५	उ.फा.	३६	५०	शो.	२७	२८	ग.	११	५७	२९	१३	२३	२०	कन्या			७	२५	१७	३७	८	२८	१७	२४	भ. ४१/१५ बाद, लोहड़ी (पं.),
२५	३१	७	बु.	३८	४६	हस्त	३५	५९	अ.	२२	३९	वि.	१०	०९	मा.१	१४	२४	२१	कन्या			७	२५	१७	३८	८	२९	१८	३०	भ. १०/०९ तक, सं. सूर्य मकर में ४०/४५, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
२५	३४	८	गु.	३५	१०	चित्रा	३४	०३	सु.	१६	५८	बा.	६	५८	२	१५	२५	२२	तु.	०५	०९	७	२५	१७	३९	९	००	१९	३७	शुक्र शत. में ६/५०,
२५	३७	९	शु.	३०	२८	स्वा.	३१	०२	धृ.	१०	२५	तै.	२	४९	३	१६	२६	२३	तुला			७	२५	१७	४०	९	०१	२०	४५	भ. ५७/४२ बाद,
२५	३९	१०	श.	२४	४३	वि.	२७	००	शू. धं.	०३ ५४	०० ४८	वि.	२४	४३	४	१७	२७	२४	वृ.	१३	०९	७	२५	१७	४०	९	०२	२१	५१	भ. २४/४३ तक,
२५	४२	११	र.	१८	०५	अनु.	२२	०६	वृ.	४५	५६	बा.	१८	०५	५	१८	२८	२५	वृश्चिक			७	२४	१७	४१	९	०३	२२	५७	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२५	४५	१२	चं.	१०	४६	ज्ये.	१६	३२	ध्रु.	३६	४४	तै.	१०	४६	६	१९	२९	२६	ध.	१६	३२	७	२४	१७	४२	९	०४	२४	०३	सोम प्रदोष व्रत,
२५	४८	१३	मं.	०३	०४	मूल	१०	३७	व्या.	२७	१८	व.	०३	०४	७	२०	३०	२७	धनु			७	२४	१७	४३	९	०५	२५	०८	भ. ०३/०४ से २९/११ तक, सूर्य सायन कुम्भ में ३६/३०,
अवम		१४	मं.	५५	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२५	५१	३०	बु.	४७	५८	पू.षा. उ.षा.	०४ ५९	४४ १६	ह.	१८	००	च.	२१	३६	८	२१	मा.१	२८	म.	१८	१८	७	२४	१७	४४	९	०६	२६	१३	शक माघ प्रारम्भ, बुध पू.षा. में २५/२२, मौनी अमावस,

(A) (चन्द्रोदय २१ घं. ०८ मि.), (B) अगले दिन २०/४५ तक,

माघ कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ५५/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	११	८	४	१०	२	०	६
०१	११	२४	०७	२४	०७	१४	२३	२३
१५	३५	२९	२७	४५	३८	३७	०	०
५२	१३	१३	२६	४१	५१	५३	०२	०२
६१	८२२	३७	५४	०२	७३	०४	०३	०३
०८	०६	१८	१८	१८	०	३६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	[illegible] २	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] १

कुण्डली सूर्योदये

११ शु, ९ बु., १२ मं, १० सू., ८, १ रा., ७ के., २, ४, ६ चं., ३ श., ५ गु.

लोक भविष्यः-गुरु-शुक्र का समसप्तकयोग पक्षारम्भ में ही बन गया है। बुधवारी मकर संक्रान्ति एवं बुधवारी मौनीअमावस भी खप्परयोग बना रहे हैं। राजनैतिक गतिरोध पैदा हो। कहीं अघटित घटनाचक्र चलेगा। राजनीतिज्ञों के लिए समय कठिन है। यानदुर्घटना, विस्फोट आदि में हानि के समाचार मिलेंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड और अनाजों में कुछ मन्दा रहे लेकिन पक्षमध्य में घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई में तेजी; गेहूं आदि अनाज व वारदाना में मन्दे का रुख रहे। पक्षान्त में बिनौला तेज; अनाज मन्दा एवम् सोना, चांदी में विशेष मन्दे का योग है।

आकाश लक्षणः- जनवरी ६, ११, १२, १४ के लगभग हिमाचल प्रदेश., शिलांग, आसाम, अरुणाचल एवं जम्मू-काशमीर में वर्षा के योग हैं। उत्तर भारत में जोरदार शीतलहर चले। पर्वतीय भूभाग पर हिमपात के समाचार मिलें।

शकुन विचारः- माघकृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें, लेकिन वर्षा न हो, तो गेहूं और जौ के सटीक से आगे लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदये

११ शु., ९ बु. चं., १२ मं., १० सू., ८, १ रा., ७ के., २, ४, ६, ३ श., ५ गु.

माघ कृष्ण ३० बुध , इष्ट ५५/१५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	८	४	१०	२	०	६
०७	०६	२८	१३	२४	१४	१४	२२	२२
२२	०१	१४	५५	२८	५५	१०	४०	४०
२६	३४	३०	०८	२८	३८	५२	५७	५७
६१	८८१	३७	७०	०३	७२	०४	०३	०३
०५	१२	४२	३६	२४	४२	२४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] १	[illegible] ४	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] १

(२२ जनवरी से ६ फरवरी तक, सन् २००४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, माघ शुक्ल पक्ष २१

ग्रह दर्शन- प्रातः बुध पूर्व में, गु. पश्चिमकपाल में तथा सायं शु., मं. पश्चिमकपाल में और श. पूर्वकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र.	तारीखें अं.	तारीखें श.	तारीखें मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५४	१	गु.	४१	२५	श्रव.	५४	४३	व.	०९	०९	किं.	१४	४१	९	२२	२	२९	मकर			७	२३	१७	४५	९	०७	२७	१७	
२५	५७	२	शु.	३६	०५	धनि.	५१	२८	सि. व्य.	०१ ५४	०५ ०६	बा.	८	४५	१०	२३	३	३०	कुं.	२२	५५	७	२३	१७	४६	९	०८	२८	२०	चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक प्रारम्भ २२/५५,
२६	००	३	श.	३२	२२	शत.	४६	५५	व.	४८	३२	तै.	४	१४	११	२४	४	जि.१	कुम्भ			७	२३	१७	४७	९	०९	२९	२३	सूर्य श्रव. में ३०/०२, मंगल अश्वि.मेष में ४३/०५, जिल्हिज मु. प्रा. (A)
२६	०३	४	र.	३०	३५	पू.भा.	५०	१९	प.	४४	३१	०.	१	१४	१२	२५	५	२	मी.	३५	०२	७	२२	१७	४८	९	१०	३०	२५	भ. ०१/१४ से ३०/३५ तक, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
२६	०७	५	चं.	३०	५६	उ.भा.	५२	४८	शि.	४२	१०	व.	०	४५	१३	२६	६	३	मीन			७	२२	१७	४८	९	११	३१	२५	शुक्र पू.भा. में ७/३०, भारत गणतन्त्र दिवस, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी,
२६	१०	६	मं.	३३	२४	रेव.	५७	१६	सि.	४१	२६	कौ.	२	१०	१४	२७	७	४	मे.	५७	१६	७	२१	१७	४९	९	१२	३२	२४	पंचक समाप्त ५७/१६,
२६	१४	७	बु.	३७	४६	अश्वि.	६०	००	सा.	४२	०५	ग.	५	३५	१५	२८	८	५	मेष			७	२१	१७	५०	९	१३	३३	२३	भ. ३७/४६ बाद, रथ सप्तमी (पूर्व अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी,
२६	१७	८	गु.	४३	३६	अश्वि.	०३	२६	शु.	४३	४९	वि.	१०	३२	१६	२९	९	६	मेष			७	२०	१७	५१	९	१४	३४	२०	भ. १०/३२ तक, भीष्माष्टमी,
२६	२१	९	शु.	५०	१७	भर.	१०	४५	शु.	४६	१०	बा.	१६	५६	१७	३०	१०	७	वृ.	२७	४१	७	२०	१७	५२	९	१५	३५	१६	
२६	२४	१०	श.	५७	०८	कृत्ति.	१८	३८	ब्र.	४८	४१	तै.	२३	४२	१८	३१	११	८	वृष			७	१९	१७	५३	९	१६	३६	१०	बुध उ.षा. में ३८/१०,
२६	२८	११	र.	६०	००	रोहि.	२६	२४	ऐं.	५०	५६	व.	३०	२७	१९	फ.१	१२	९	वृष			७	१९	१७	५४	९	१७	३७	०४	भ. ३०/२७ बाद, फरवरी प्रारम्भ,
२६	३२	११	चं.	०३	३४	मृग.	३३	३१	वै.	५२	३२	वि.	०३	३४	२०	२	१३	१०	मि.	००	०५	७	१८	१७	५५	९	१८	३७	५५	भ. ०३/३४ तक, बुध मकर में ५८/३२, जया एकादशी व्रत, (स.), (B)
२६	३६	१२	मं.	०९	०२	आर्द्रा	३९	३६	वि.	५३	१५	बा.	०९	०२	२१	३	१४	११	मिथुन			७	१७	१७	५६	९	१९	३८	४५	शुक्र मीन में २८/३०, भौम प्रदोष व्रत,
२६	४०	१३	बु.	१३	१४	पुन.	४४	२५	प्री.	५२	५७	तै.	१३	१४	२२	४	१५	१२	क.	२८	२०	७	१७	१७	५६	९	२०	३९	३५	वक्री शनि आर्द्रा २ में १/२५,
२६	४३	१४	गु.	१६	०४	पुष्य	४७	५५	आ.	५१	३७	व.	१६	०४	२३	५	१६	१३	कर्क			७	१६	१७	५७	९	२१	४०	२४	भ. १६/०४ से ४६/५८ तक, वक्री गुरु पू.फा. ३ में ३६/१७, (C)
२६	४७	१५	शु.	१७	३४	आश्ले.	५०	११	सौ.	४६	१९	व.	१७	३४	२४	६	१७	१४	सिं.	५०	११	७	१५	१७	५८	९	२२	४१	११	सूर्य धनि. में ३८/२०, शुक्र उ.षा. में १६/५२, माघी पूर्णिमा, माघ (D)

(A) गौरी तृतीया (गौंतरी), (B) भीष्म द्वादशी (देखें पृ. 142), (C) श्री सत्यनारायण व्रत, (D) स्नान समाप्त, जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी,

माघ शुक्ल ८ गुरु, इष्ट ५५/२५,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	०	८	४	१०	२	०	६
१५	२३	०३	२४	२३	२४	१३	२२	२२
३०	३८	१७	१६	५५	३३	३८	१५	१५
३७	३९	११	४३	२७	४८	१५	३१	३१
६०	७१४	३८	८२	०४	७१	०३	०३	०३
५७	५२	०	१२	४२	५९	५४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

११ शु. | ९ बु
१२ | १० सू. | ८
१ रा. मं. चं. | ७ के.
२ | ४ | ६
३ श. | ५ गु

लोक भविष्यः-मंगल मेषराशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। कहीं अग्निकाण्ड से हानि एवं यानदुर्घटना से भी हानि के योग हैं। माघशुक्ल द्वितीया-तृतीया को शुक्र शनिवार होने से कहीं युद्ध के समाचार से वातावरण अशान्त हो,-"माघ-शुक्ल द्वितीया च तृतीया शुक्रसंयुता। यदा स्यान्मन्द संयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा।।" पक्षान्त में मीनराशि का शुक्र राजनीतिक दृष्टि से अनुकूल वातावरण बनाता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २४ जनवरी २००४ ई. के लगभग अनाजों में मन्दे के बाद तेजी बने। सोना, चांदी, ऊन, रुई, कपास, पाट, बारदाना में तेजी बने। २ फरवरी के लगभग रुई, सोना, चांदी में तेजी; अनाज, सरसों, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड में मन्दा बने।

आकाश लक्षणः- २४ जनवरी के लगभग वर्षा के योग हैं। २६ जनवरी के बाद उत्तर भारत में ऋतु परिवर्तन अनुभव होने लगेगा। जन. २६, ३१; फरवरी २३ से ६ तक कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि भी हो।

शकुन विचारः- माघी पूर्णिमा के दिन यदि बादल हों, तो अन्नसंग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ मिले। यदि इसदिन आकाश साफ रहे, तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहेगा।

कुण्डली सूर्योदये

माघ शुक्ल १५ शुक्र, इष्ट ५५/३७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	४	०	९	४	११	२	०	६
२३	०१	०८	०५	२३	०४	१३	२१	२१
३७	१०	२१	४९	१२	०५	१०	५०	५०
३१	३५	५२	०६	१४	५९	३२	०४	०४
६०	७७२	३८	८९	०५	७१	०३	०३	०३
४७	४६	०६	४२	५४	१२	१२	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(७ से २० फरवरी तक, सन् २००४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन-१५ फर. को बु. पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः गु. पश्चिम में और सायं शु. भी पश्चिम में तथा शु. से काफी ऊपर मं. होगा। इस समय श. पूर्वकपाल में दीखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. माघ	तारीखें मु. जिल्हिज.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ मा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५१	१	श.	१७	५१	मघा	५१	२१	शो.	४६	०६	कौ.	१७	५१	२५	७	१८	१५	सिंह			७	१५	१७	५६	६	२३	४१	५६	
२६	५५	२	र.	१७	०५	पू.फा.	५१	३७	अ.	४२	१३	ग.	१७	०५	२६	८	१६	१६	सिंह			७	१४	१८	००	६	२४	४२	४०	भ. ४६/२१ बाद,
२७	००	३	चं.	१५	२६	उ.फा.	५१	०६	सु.	३७	४०	वि.	१५	२६	२७	९	२०	१७	क.	०६	३४	७	१३	१८	०१	६	२५	४३	२३	भ. १५/२६ तक, बुध श्रव. में ४०/४७, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२७	०४	४	मं.	१३	०३	हस्त	४९	५६	धृ.	३२	३४	बा.	१३	०३	२८	१०	२१	१८	कन्या			७	१२	१८	०२	६	२६	४४	०४	
२७	०८	५	बु.	१०	०२	चित्रा	४८	११	शू.	२७	००	तै.	१०	०२	२९	११	२२	१९	तु.	१९	०६	७	११	१८	०२	६	२७	४४	४४	
२७	१२	६	गु.	०६	२६	स्वा.	४५	५४	गं.	२०	५८	व.	०६	२६	३०	१२	२३	२०	तुला			७	११	१८	०३	६	२८	४५	२४	भ. ०६/२६ से ३४/२५ तक,
२७	१६	७	शु.	०२	१७	वि.	४३	०४	वृ.	१४	३१	ब.	०२	१७	फा.१	१३	२४	२१	वृ.	२८	५०	७	१०	१८	०४	६	२९	४६	०३	सं. सूर्य कुम्भ में १३/४७, मु. ४५, पुण्यकाल सारा दिन,
अवम		८	शु.	५७	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२७	२०	९	श.	५२	२३	अनु.	३९	४४	ध्रु.	०७	३७	तै.	२४	५८	२	१४	२५	२२	वृश्चिक			७	०९	१८	०५	१०	००	४६	४१	मंगल भरणी में ४३/३५,
२७	२५	१०	र.	४६	४६	ज्ये.	३५	५७	व्या. ह.	०० ५२	२१ ४२	व.	१९	३८	३	१५	२६	२३	ध.	३५	५७	७	०८	१८	०६	१०	०१	४७	१६	भ. १९/३८ से ४६/४६ तक, बुध पूर्व में अस्त ४०/३०,
२७	२९	११	चं.	४०	५२	मूल	३१	५२	व.	४४	५३	ब.	१३	४६	४	१६	२७	२४	धनु			७	०७	१८	०७	१०	०२	४७	५२	विजया एकादशी व्रत (स.),
२७	३३	१२	मं.	३४	५३	पू.षा.	२७	४०	सि.	३७	०१	कौ.	७	५३	५	१७	२८	२५	म.	४१	३७	७	०६	१८	०७	१०	०३	४८	२६	शुक्र रेवती में ३८/१५,
२७	३८	१३	बु.	२९	०६	उ.षा.	२३	३६	व्य.	२६	१९	ग.	२	००	६	१८	२९	२६	मकर			७	०५	१८	०८	१०	०४	४८	५९	भ. २९/०६ से ५६/२१ तक, बुध धनि. में २/००, प्रदोष व्रत, (A)
२७	४२	१४	गु.	२३	४८	श्रव.	२०	००	व.	२२	००	श.	२३	४८	७	१९	३०	२७	कुं.	४८	२८	७	०४	१८	०९	१०	०५	४९	३०	पंचक प्रारम्भ ४८/२८, सूर्य सायन मीन में १५/४०, वसन्त ऋतु (B)
२७	४७	३०	शु.	१९	२१	धनि.	१७	१४	प.	१५	२३	ना.	१९	२१	८	२०	फा.१	२८	कुम्भ			७	०३	१८	१०	१०	०६	५०	००	शक फाल्गुन प्रा.,

(A) श्री महाशिवरात्रि व्रत, (B) प्रारम्भ, सूर्य शत. में ५०/०२,

फाल्गु. कृष्ण ७ शुक्र, इष्ट ५५/५०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	०	९	४	११	२	०	६
०	०६	१२	१६	२२	१२	१२	२१	२१
४२	१९	४६	३९	२७	२०	५०	२७	२७
३१	५६	३३	४१	१९	४६	५५	४६	४६
६०	८४१	३८	६५	०६	७०	०२	०३	०३
४०	३८	१८	२४	४२	१८	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

११, ९, १२ शु, १० सू. बु., ८, रा., मं. १, के ७ चं., २, ४, ६, ३ श, गु ५

लोक भविष्य:- इस मास में ५ शनिवार हैं। शुक्रवारी संक्रान्ति एवं शुक्रवारी अमावस होने से कहीं सीमाप्रान्तों में अशान्ति, कहीं मुस्लिमराष्ट्रों में युद्धाग्नि प्रज्वलित हो। अग्निकाण्ड व भूकम्प एवं यानदुर्घटना से जनधनहानि के भी योग हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, अलसी, चना और चावल में तेजी बनेगी। पक्षमध्य में घी, तेल, नमक, सरसों , मूंगफली और राई में तेजी। रुई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूं आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा बनेगा। १५ फरवरी के लगभग अनाज और घी मन्दे । सोने में घटा-बढ़ी के बाद तेजी बने।

आकाश लक्षण:- इसपक्ष में लंका के पूर्वी छोर एवं शिलांग आदि में वर्षा के योग हैं। १५ फरवरी के लगभग उत्तर भारत में हवा का जोर रहेगा। मौसम सुखद अनुभव होगा।

शकुन विचार:- यदि फाल्गुन में बादल हों परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षाऋतु में अच्छी वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदये

१२ शु., १० बु., मं. १ रा., चं. ११ सू., ९, २, ८, श. ३, ५ गु., ७ के., ४, ६

फाल्गु. कृष्ण ३० शुक्र, इष्ट ५६/०७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	०	९	४	११	२	०	६
०७	१५	१७	२८	२१	२०	१२	२१	२१
४६	३५	१७	१२	३७	२९	३६	०५	०५
३६	१६	५६	०४	१८	०९	१२	३३	३३
६०	८२८	३८	१०१	०७	६९	०१	०३	०३
३१	५५	२४	३६	२४	१८	४८	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(२१ फरवरी से ६ मार्च तक, सन् २००४ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- बु. लुप्त है। प्रातः गु. पश्चिम में, सायं शु. पश्चिम में, शु. से काफी ऊपर मं. तथा श. पूर्वकपाल में दीखेगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५१	१	श.	१६	०७	शत.	१५	३७	शि.	०६	४२	ब.	१६	०७	६	२१	२	२६	कुम्भ			७	०२	१८	११	१०	०७	५०	२८	चन्द्रदर्शन मु. ३०, बुध कुम्भ में ५८/२०,
२७	५६	२	र.	१४	२४	पू.भा.	१५	३०	सि.	०५	१२	कौ.	१४	२४	१०	२२	३	मु.१	मी.	००	२३	७	०१	१८	११	१०	०८	५०	५४	मुहर्रम मु.(हिजरी सन् १४२५) प्रारम्भ,
२८	००	३	चं.	१४	२६	उ.भा.	१७	०६	सा.	०२	०४	ग.	१४	२६	११	२३	४	२	मीन			७	००	१८	१२	१०	०६	५१	१८	भ. ४५/०६ बाद,
२८	०५	४	मं.	१६	२१	रेव.	२०	३१	शु.	००	२२	वि.	१६	२१	१२	२४	५	३	मे.	२०	३१	६	५६	१८	१३	१०	१०	५१	४१	भ. १६/२१ तक, पंचक समाप्त २०/३१,
२८	०६	५	बु.	२०	०५	अश्वि.	२५	३६	शु.	००	०४	बा.	२०	०५	१३	२५	६	४	मेष			६	५८	१८	१४	१०	११	५२	०३	बुध शत. में ४८/१७,
२८	१४	६	गु.	२५	२०	भर.	३२	१३	ब्र.	०१	०१	तै.	२५	२०	१४	२६	७	५	वृ.	४६	०१	६	५७	१८	१४	१०	१२	५२	२२	
२८	१८	७	शु.	३१	३७	कृत्ति.	३६	४२	ऐं.	०२	५४	व.	३१	३७	१५	२७	८	६	वृष			६	५६	१८	१५	१०	१३	५२	३६	भ. ३१/३७ बाद,
२८	२३	८	श.	३८	१७	रोहि.	४७	२६	वै.	०५	१८	वि.	४	५८	१६	२८	९	७	वृष			६	५५	१८	१६	१०	१४	५२	५४	भ. ०४/५८ तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	२७	९	र.	४४	४१	मृग.	५४	५५	वि.	०७	४४	बा.	११	२६	१७	२९	१०	८	मि.	२१	१९	६	५४	१८	१७	१०	१५	५३	०६	शुक्र अश्वि. मेष में १६/०२,
२८	३२	१०	चं.	५०	११	आर्द्रा	६०	००	प्री.	०६	४६	तै.	१७	२६	१८	मा.१	११	९	मिथुन			६	५३	१८	१७	१०	१६	५३	१७	नेपच्यून श्रव. ४ में ३८/५२, मार्च प्रारम्भ,
२८	३७	११	मं.	५४	२०	आर्द्रा	०१	२६	आ.	१०	५८	व.	२२	२८	१९	२	१२	१०	क.	५०	२७	६	५१	१८	१८	१०	१७	५३	२६	भ. २२/२८ से ५४/२० तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
२८	४१	१२	बु.	५६	५१	पुन.	०६	३८	सौ.	११	०५	ब.	२५	३५	२०	३	१३	११	कर्क			६	५०	१८	१९	१०	१८	५३	३३	गोविन्द द्वादशी,
२८	४६	१३	गु.	५७	४३	पुष्य	१०	१४	शो.	०६	५७	कौ.	२७	१७	२१	४	१४	१२	कर्क			६	४९	१८	२०	१०	१९	५३	३८	सूर्य पू.भा.में ६/२०, बुध पू.भा. में ३/५०, वक्री गुरु पू.फा. २ में (A)
२८	५१	१४	शु.	५६	५९	आश्ले.	१२	१३	अ.	०७	३२	ग.	२७	२१	२२	५	१५	१३	सिं.	१२	१३	६	४८	१८	२०	१०	२०	५३	४१	भ. ५६/५६ बाद,
२८	५५	१५	श.	५४	५३	मघा	१२	४३	सु. धृ.	०३ ५६	५५ १२	वि.	२६	०७	२३	६	१६	१४	सिंह			६	४७	१८	२१	१०	२१	५३	४१	भ. २६/०७ तक, मंगल कृत्ति. में ३३/५५, श्री सत्यनारायण व्रत, (B)

(A) ३२/५५, प्रदोष व्रत, (B) होलिका दहन, होलाष्टक समाप्त,

फाल्गु. शुक्ल ८ शनि, इष्ट ५६/२७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	०	१०	४	११	२	०	६
१५	२५	२२	१२	२०	२६	१२	२०	२०
४६	०६	२५	१६	३६	३७	२५	४०	४०
३६	१२	२४	२२	०४	५६	४७	०७	०७
६०	७०८	३८	१०६	०७	६८	०	०३	०३
१५	४१	२३	१८	४६	०	५४	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदये

लोक भविष्यः-मेष राशिस्थ मंगल-शुक्र पर गुरु की दृष्टि है; अतः राजनीतिक समस्याओं के समाधानार्थ प्रयास होंगे। शनिवारी अमावस होने से किसी दुर्घटना में हानि का समाचार मिलेगा। रोग विशेष से जनता में परेशानी रहे। प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जनधनहानि भी हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में चांदी में मन्दे के बाद तेजी; घी, गुड़, खाण्ड में भी तेजी रहे। पक्षमध्य में जौ, चना, गेहूं आदि अनाज और घी तेज रहें। सोना, चांदी में खास तेजी का योग है। ऊन, तिल, तेल सरसों, अलसी में कुछ मन्दा रहे।

आकाश लक्षणः- फरवरी २१, २५, २९ एवं. मार्च ४ को बंगलादेश, भूटान, सिक्किम एवं लंका के पश्चिमी भूभाग पर वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में गर्मी अनुभव होने लगेगी।

कुण्डली सूर्योदये
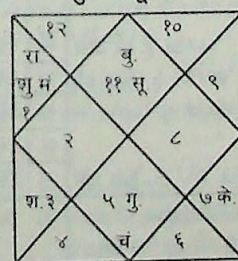
फाल्गु. शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५६/४७,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	०	१०	४	०	२	०	६
२२	२३	२६	२५	१९	०७	१२	२०	२०
५०	१४	५४	३१	४१	२७	२२	१७	१७
३१	२६	४१	१५	१५	४६	२८	५२	५२
६०	८०६	३८	११५	०७	६६	०	०३	०३
०२	५५	२६	४२	४८	३०	०६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचारः- यदि फाल्गुनशुक्ल पूर्णिमा के दिन वर्षा हो, तो फसल को राली (काल अंगारी) नामक रोग से हानि पहुंचे। इस समय अन्न-संग्रह से सातवें मास लाभ मिलता है।

श्री वि. सं. २०६०, शाक १९२५, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(७ से २० मार्च तक, सन् २००४ ई)
उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

ग्रह दर्शन- १७ मार्च से बु. सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। सायं शु. पश्चिम में और शु. से काफी ऊपर मं. होगा। इस समय गु. पूर्व में तथा श. याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखाई देगा।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ मा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्टसूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	००	१	र.	५१	४१	पू.फा.	११	५६	शू.	५३	४०	बा.	२३	१७	२४	७	१७	१५	क.	२६	३४	६	४६	१८	२२	१०	२२	५३	४०	शनि मार्गी, ३८/५७, वसन्तोत्सव, होला मेला श्रीआनन्दपुर साहिब (पं.),
२९	०४	२	चं.	४७	३७	उ.फा.	१०	०६	गं.	४७	२८	तै.	१६	३६	२५	८	१८	१६	कन्या			६	४५	१८	२२	१०	२३	५३	३७	
२९	०९	३	मं.	४२	५६	हस्त	०७	३७	वृ.	४०	४७	व.	१५	२३	२६	९	१९	१७	तु.	३६	०७	६	४३	१८	२३	१०	२४	५३	३२	म. १५/२३ से ४२/५६ तक, बुध मीन में १५/०५,
२९	१४	४	बु.	३७	५८	चित्रा	०४	३५	ध्रु.	३३	४६	ब.	१०	२८	२७	१०	२०	१८	तुला			६	४२	१८	२४	१०	२५	५३	२६	बुध उ.भा. में ५७/०७, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२९	१९	५	गु.	३२	४६	स्वा. वि.	०१ ५७	१५ ४५	व्या.	२६	४१	कौ.	५	२२	२८	११	२१	१९	वृ.	४३	३८	६	४१	१८	२४	१०	२६	५३	१८	मंगल वृष में ४६/१०, मेला श्री शीतला माता, कुराली (पं.),
२९	२३	६	शु.	२७	३०	अनु.	५४	१८	ह.	१९	३०	ग.	०	०८	२९	१२	२२	२०	वृश्चिक			६	४०	१८	२५	१०	२७	५३	०८	म. २७/३० से ५४/५१ तक, शुक्र भरणी में १८/४७, राहु भर. २, (A)
२९	२८	७	श.	२२	१६	ज्ये.	५०	५५	व.	१२	२१	ब.	२२	१६	३०	१३	२३	२१	ध.	५०	५५	६	३९	१८	२६	१०	२८	५२	५६	
२९	३३	८	र.	१७	१०	मूल	४७	४२	सि. व्य.	०५ ५८	१६ १९	कौ.	१७	१०	चै.१	१४	२४	२२	धनु			६	३७	१८	२६	१०	२९	५२	४३	सं. सूर्य मीन में ७/२०, मु. ३०, पुण्यकाल २३/२० तक,
२९	३७	९	चं.	१२	१५	पू.षा.	४४	४३	व.	५१	३५	ग.	१२	१५	२	१५	२५	२३	म.	५६	०१	६	३६	१८	२७	११	००	५२	२८	म. ३६/५३ बाद,
२९	४२	१०	मं.	०७	३८	उ.षा.	४२	०६	प.	४५	११	वि.	०७	३८	३	१६	२६	२४	मकर			६	३५	१८	२८	११	०१	५२	१२	म. ०७/३८ तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
२९	४७	११	बु.	०३	२५	श्रव.	३९	५८	शि.	३९	११	बा.	०३	२५	४	१७	२७	२५	मकर			६	३४	१८	२८	११	०२	५१	५३	सूर्य उ.भा. में २८/१२, बुध रेव. में ५१/२०, बुध पश्चिम में उदय (B)
अवम		१२	बु.	५९	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथि क्षय,
२९	५१	१३	गु.	५६	५१	धनि.	३८	३२	सि.	३३	४४	ग.	२८	१८	५	१८	२८	२६	कुं.	०६	११	६	३२	१८	२९	११	०३	५१	३३	म. ५६/५१ बाद, पंचक प्रारम्भ ६/११, प्रदोष व्रत,
२९	५६	१४	शु.	५४	५७	शत.	३७	५६	सा.	२९	०१	वि.	२५	४७	६	१९	२९	२७	कुम्भ			६	३१	१८	३०	११	०४	५१	११	म. २५/४७ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा),
३०	०१	३०	श.	५४	१३	पू.भा.	३८	३३	शु.	२५	०६	च.	२४	३५	७	२०	३०	२८	मी.	२३	१८	६	३०	१८	३०	११	०५	५०	४७	सूर्य सायन मेष में १४/३२, उत्तरगोल प्रा., महाविषुव दिन, शनैश्चरी (C)

(A) केतु स्वाती ४ में ३४/१०, यूरेनस शत. २ में ५२/३२, (B) ५४/४५, पापमोचिनी एकादशी व्रत, (वै.), (C) अमावस, शक सं. १९२५ पूर्ण, चान्द संवत्सर २०६० वि. पूर्ण,

चैत्र कृष्ण ८ रवि, इष्ट ५७/१२,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	११	४	०	२	०	६
०	१५	०२	११	१८	१६	१२	१६	१६
४६	३३	०२	०६	३६	१०	२५	५२	५२
४३	४१	१६	०२	३२	४१	२७	२५	२५
५९	८४५	३८	११६	०७	६४	०	०३	०३
४८	४२	२४	३६	३६	३०	४८	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदये

बु. १२
१०
शु.१
सू. ११
चं. ९
रा
२ मं.
८
श.
के.
३
५ गु
७
४
६

लोक भविष्य:- वृषराशि का मंगल महगाई के कारण जनता में अशान्ति करे। मीनस्थ बुध भी पशुओं में रोग एवं राजनीतिज्ञों में विरोध का संकेत देता है;-" धनुषि मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। राजा विरोधकृत्तत्र नान्यथा च भविष्यति।।" शनिवारी अमावस किसी आकस्मिक घटना से राजनीतिज्ञों में परेशानी का कारण बने।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में रुई में मन्दा होकर फिर तेजी बने। तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च में भी तेजी बने। ९ मार्च के लगभग बिनौला में तेजी, सोना, चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी बने। १४ मार्च के लगभग तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, रुई, सोना तेज हों। पक्षान्त में रुई और शेयरों में कुछ मन्दे का रुख बने।

आकाश लक्षण:- मार्च ७, ९, १०, ११, १२, १३, एवं. १७ के लगभग हवा का जोर रहे। उत्तरी भारत में तापमान जोर पकड़ेगा। बंगलादेश एवं कुछ दक्षिणी प्रान्तों में बादलवाल व वर्षा के योग हैं। ... तो गुड़, खांड, गेहूं एवं सोना तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदये

शु.१ रा.
११ चं.
२मं.
सू. १२ बु.
१०
३ श.
९
४
६
८
५ गु.
७ के.

चैत्र कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५७/३०,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१	११	४	०	२	०	६
०६	०७	०५	२२	१७	२२	१२	१६	१६
४७	२७	५२	१३	५५	३१	३२	३३	३३
५५	१८	५७	३६	३७	०४	२०	२१	२१
५९	७८८	३८	१०४	०७	६२	०१	०३	०३
३७	१४	२४	३६	०६	३६	३०	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	जन. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृ.	1	14	बु.	27	38	ज्ये.	18	49	गं.	13	19	ध. 18	49	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	भ. 16/38 तक, शुक्र वृश्चिक में 11/12, जनवरी (सन् 2003 ई.) प्रारम्भ,
	2	30	गु.	25	53	मूल	17	36	वृ.	10	29	धनु		7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	बुध वक्री 23/49,
पौष शुक्ल पक्ष	3	1	शु.	24	33	पू.षा.	16	46	ध्रु.	07	56	म. 22	37	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	*पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,*
									व्या.	29	44																				
	4	2	श.	23	45	उ.षा.	16	24	ह.	27	58	मकर		7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	42	6	48	17	17	4	चन्द्रदर्शन, शुक्र अनु. में 22/52,
	5	3	र.	23	34	श्रव.	16	38	व.	26	42	कु. 28	59	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	पंचक प्रारम्भ 28/59,
	6	4	चं.	24	05	धनि.	17	30	सि.	25	58	कुम्भ		7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 11/44 से 24/05 तक,
	7	5	मं.	25	17	शत.	19	04	व्य.	25	46	कुम्भ		7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	*मंगल वृश्चिक* में 22/35, बुध पश्चिम में अस्त 19/57,
	8	6	बु.	27	08	पू.भा.	21	14	व.	26	02	मी. 14	38	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	*वक्री शनि मृग. 2 वृष* में 13/52,
	9	7	गु.	29	28	उ.भा.	23	55	प.	26	40	मीन		7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 29/28 बाद, वक्री बुध उ.षा. 1 धनु में 22/44, (A)
	10	8	शु.	-	-	रेव.	26	54	शि.	27	32	मे. 26	54	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 18/43 तक, पंचक समाप्त 26/54,
	11	8	श.	08	04	अश्वि.	29	58	सि.	28	27	मेष		7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 10/55,
	12	9	र.	10	42	भर.	-	-	सा.	29	14	मेष		7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	मंगल अनु. में 26/41, वक्री बुध पू.षा. 4 में 12/44,
	13	10	चं.	13	06	भर.	08	50	शु.	29	43	वृ. 15	30	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 26/08 बाद , *लोहड़ी* (पं., हरि., हि. प्र.),
	14	11	मं.	15	02	कृत्ति.	11	19	शु.	29	47	वृष		7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	भ. 15/02 तक, *सं. सूर्य मकर में* 17/27, पुण्यकाल 11/03 बाद, (B)
	15	12	बु.	16	22	रोहि.	13	13	ब्र.	29	21	मि. 25	56	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	प्रदोष व्रत,
	16	13	गु.	17	00	मृग	14	29	ऐं.	28	24	मिथुन		7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	52	6	49	17	26	16	बुध पूर्व में उदय 14/08,
	17	14	शु.	16	58	आर्द्रा	15	05	वै.	26	56	मिथुन		7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 16/58 से 28/42 तक, शुक्र जयेष्ठा में 25/22 श्री सत्यनारायण व्रत,
	18	15	श.	16	18	पुन.	15	04	वि.	25	00	क. 09	07	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	माघ स्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण पक्ष	19	1	र.	15	06	पुष्य	14	32	प्री.	22	40	कर्क		7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	*माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	20	2	चं.	13	29	आश्ले.	13	35	आ.	20	04	सिं. 13	35	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	भ. 24/33 बाद, *यूरनेस धनि. 4* में 24/22, *सूर्य सायन कुम्भ में* 17/23,
	21	3	मं.	11	34	मघा	12	21	सौ.	17	14	सिंह		7	24	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	भ. 11/34 तक, श्री गणेश (संकटष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 20 घं. 53 मि.),
	22	4/	बु.	09	29	पू.फा.	10	56	शो.	14	18	क. 16	34	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	22	बुध मार्गी 30/38,
		/ 5		31	19																										
	23	6	गु.	29	09	उ.फा.	09	27	अ.	11	19	कन्या		7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 29/09 बाद,
	24	7	शु.	27	04	हस्त	08	00	सु.	08	21	तु. 19	17	7	23	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	भ. 16/08 तक, सूर्य श्रवण में 13/17
						चित्रा	30	36	धृ.	29	26																				
	25	8	श.	25	04	स्वा.	29	19	शू.	26	37	तुला		7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	9	र.	23	13	वि.	28	10	गं.	23	54	वृ. 22	26	7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	48	17	33	26	भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	10	चं.	21	30	अनु.	27	09	वृ.	21	18	वृश्चिक		7	21	17	49	7	16	17	52	7	19	18	00	6	47	17	34	27	भ. 10/21 से 21/30 तक, *वक्री गुरु आश्ले. 1* में 15/22,
	28	11	मं.	19	58	ज्ये.	26	19	ध्रु.	18	50	ध. 26	19	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	01	6	47	17	35	28	*नेपच्यून श्रव. 3* में 13/09, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	29	12	बु.	18	37	मूल	25	42	व्या.	16	31	धनु		7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	02	6	46	17	36	29	प्रदोष व्रत,
	30	13	गु.	17	31	पू.षा.	25	19	ह.	14	24	म. 31	17	7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	03	6	46	17	36	30	भ. 17/31 से 29/04 तक, *शुक्र मूल धनु में* 8/01,
	31	14	शु.	16	43	उ.षा.	25	16	व.	12	30	मकर		7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	03	6	46	17	37	31	

(A) अवतार दिन श्री गोबिन्द सिंह जी, (B)पुत्रदा एकादशी व्रत (स.).

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

वि. सं. 2059 — फरवरी, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	फर. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.
मा-कृ	1	30	श.	16	18	श्रव.	25	38	सि.	10	54	मकर		
माघ शुक्ल पक्ष	2	1	र.	16	22	धनि.	26	28	व्य.	09	40	कु.	13	59
	3	2	चं.	16	58	शत.	27	51	व.	08	49	कुम्भ		
	4	3	मं.	18	08	पू.भा.	29	47	प.	08	24	मी.	23	15
	5	4	बु.	19	53	उ.भा.	-	-	शि.	08	26	मीन		
	6	5	गु.	22	07	उ.भा.	08	14	सि.	08	52	मीन		
	7	6	शु.	24	42	रेव.	11	06	सा.	09	37	मे.	11	06
	8	7	श.	27	23	अश्वि.	14	11	शु.	10	34	मेष		
	9	8	र.	29	55	भर.	17	15	शु.	11	31	वृ.	23	59
	10	9	चं.	-	-	कृत्ति.	20	02	ब्र.	12	17	वृष		
	11	9	मं.	08	01	रोहि.	22	18	ऐं.	12	42	वृष		
	12	10	बु.	09	30	मृग	23	53	वै.	12	37	मि.	11	11
	13	11	गु.	10	12	आर्द्रा	24	40	वि.	11	57	मिथुन		
	14	12	शु.	10	04	पुन.	24	41	प्री.	10	38	क.	18	45
	15	13	श.	09	09	पुष्य	23	58	आ.	08	42	कर्क		
									सौ.	30	13			
	16	14/	र.	07	32	आश्ले.	22	39	शो.	27	17	सिं.	22	39
		/15		29	21									
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	17	1	चं.	26	46	मघा	20	53	अ.	24	00	सिंह		
	18	2	मं.	23	57	पू.फा.	18	50	सु.	20	31	क.	24	18
	19	3	बु.	21	03	उ.फा.	16	41	धृ.	16	57	कन्या		
	20	4	गु.	18	13	हस्त	14	33	शू.	13	25	तु.	25	33
	21	5	शु.	15	34	चित्रा	12	35	गं.	10	00	तुला		
									वृ.	30	48			
	22	6	श.	13	11	स्वा.	10	53	ध्रु.	27	52	वृ.	27	50
	23	7	र.	11	09	वि.	09	31	व्या.	25	13	वृश्चिक		
	24	8	चं.	09	29	अनु.	08	30	ह.	22	52	वृश्चिक		
	25	9	मं.	08	11	ज्ये.	07	52	व.	20	48	ध.	07	52
	26	10/	बु.	07	15	मूल	07	35	सि.	19	02	धनु		
		/11		30	40									
	27	12	गु.	30	27	पू.षा.	07	40	व्य.	17	33	म.	13	44
	28	13	शु.	30	36	उ.षा.	08	05	व.	16	20	मकर		

चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
7	19	17	54	7	14	17	56	7	16	18	04	6	45	17	38	1	*फरवरी प्रारम्भ,* शनैश्चरी अमा, मौनी अमा, *महोदय योग* (A)
7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	05	6	45	17	39	2	*माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन, पंचक प्रारम्भ 13/59, मंगल ज्येष्ठा में 19/15,
7	17	17	56	7	12	17	57	7	15	18	06	6	44	17	39	3	
7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	07	6	44	17	40	4	भ. 30/56 बाद, गौरी तृतीया (गौंतरी),
7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	07	6	43	17	41	5	भ. 19/53 तक, बुध उ.षा. में 8/23, वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी,
7	15	17	58	7	11	18	00	7	14	18	08	6	43	17	42	6	सूर्य धनि. में 16/21, वसन्त पंचमी (श्रीपंचमी),
7	15	17	59	7	10	18	01	7	13	18	09	6	42	17	42	7	पंचक समाप्त 11/08,
7	14	18	00	7	09	18	01	7	12	18	10	6	42	17	43	8	भ. 27/23 बाद, *बुध मकर में* 8/13, रथ सप्तमी (पहले अरुणोदय वाली),(B)
7	13	18	01	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 16/41 तक, भीष्माष्टमी,
7	12	18	02	7	08	18	03	7	11	18	11	6	40	17	44	10	शुक्र पू.षा. में 27/47,
7	11	18	02	7	07	18	04	7	10	18	12	6	40	17	45	11	
7	11	18	03	7	06	18	05	7	10	18	12	6	39	17	46	12	भ. 21/57 बाद, सं *सूर्य कुम्भ में* 30/24, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,
7	10	18	04	7	05	18	05	7	09	18	13	6	38	17	46	13	भ. 10/12 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
7	09	18	05	7	05	18	06	7	08	18	14	6	38	17	47	14	प्रदोष व्रत,
7	08	18	06	7	04	18	07	7	08	18	15	6	37	17	48	15	बुध श्रवण में 28/29,
7	07	18	07	7	03	18	08	7	07	18	15	6	36	17	48	16	भ. 7/32 से 18/30 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान समाप्त, (C)
7	06	18	07	7	02	18	08	7	06	18	16	6	35	17	49	17	*फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
7	05	18	08	7	01	18	09	7	05	18	17	6	35	17	49	18	
7	04	18	09	7	00	18	10	7	04	18	17	6	34	17	50	19	भ. 10/30 से 21/03 तक, सूर्य शत. में 20/55, *सूर्य सायन मीन में* (D)
7	03	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	33	17	51	20	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
7	02	18	11	6	59	18	11	7	03	18	19	6	32	17	51	21	
7	01	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	31	17	52	22	भ. 13/11 से 24/07 तक, *वक्री गुरु पुष्य 4 में* 15/23, शुक्र उ.षा. में (E)
7	00	18	12	6	57	18	13	7	01	18	20	6	31	17	52	23	*मंगल मूल धनु में* 13/36,
6	59	18	13	6	56	18	13	7	00	18	20	6	30	17	53	24	
6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 19/40 बाद , बुध धनि. में 8/30, *शुक्र मकर में* 13/22,
6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 7/15 तक, बुध पूर्व में अस्त 21/42, विजया एकादशी व्रत (स्मा),
6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	विजया एकादशी व्रत (वै.),
6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 30/36 बाद, प्रदोष व्रत,

(A) 10 घं. 54 मि. से 16 घं. 18 मि. तक, (B) आरोग्य सप्तमी, (C) जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी, (D) 7/31, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (E) 16/53, *शनि मार्गी* 13/11.

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	मार्च. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृ.	1	14	श.	–	–	श्रव.	08	51	प.	15	25	कु. 21	23	6	54	18	17	6	51	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	भ. 18/49 तक, पंचक प्रारम्भ 21/23, *बुध कुम्भ* में 14/15, राहु कृति. 4, (A)
	2	14	र.	07	08	धनि.	10	00	शि.	14	48	कुम्भ		6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	
	3	30	चं.	08	05	शत.	11	34	सि.	14	31	कुम्भ		6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	सोमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	4	1	मं.	09	29	पू.भा.	13	33	सा.	14	35	मी. 07	00	6	50	18	19	6	48	18	19	6	52	18	25	6	23	17	57	4	*फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन, सूर्य पू.भा. में 27/10,
	5	2	बु.	11	19	उ.भा.	15	57	शु.	14	58	मीन		6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	5	बुध शत. में 15/38, शुक्र श्रव. में 25/30,
	6	3	गु.	13	34	रेव.	18	45	शु.	15	40	मे. 18	45	6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	6	भ. 28/49 बाद, पंचक समाप्त 18/45,
	7	4	शु.	16	08	अश्वि.	21	48	ब्र.	16	35	मेष		6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	20	17	59	7	भ. 16/08 तक,
	8	5	श.	18	50	भर.	24	58	ऐं.	17	37	मेष		6	46	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	19	17	59	8	
	9	6	र.	21	28	कृत्ति.	28	00	वै.	18	36	वृ. 07	45	6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	00	9	
	10	7	चं.	23	47	रोहि.	30	41	वि.	19	23	वृष		6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	17	18	00	10	भ. 23/47 बाद,
	11	8	मं.	25	33	मृग	–	–	प्री.	19	46	मि. 19	49	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	01	11	भ. 12/45 तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
	12	9	बु.	26	34	मृग	08	47	आ.	19	37	मिथुन		6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	15	18	01	12	बुध पू. भा. में 30/34,
	13	10	गु.	26	43	आर्द्रा	10	08	सौ.	18	50	क. 28	35	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	02	13	
	14	11	शु.	26	00	पुन.	10	38	शो.	17	21	कर्क		6	39	18	26	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	02	14	भ. 14/28 से 28/00 तक, *सं. सूर्य मीन में* 27/16, पुण्यकाल अगले दिन (B)
	15	12	श.	24	27	पुष्य	10	16	अ.	15	12	कर्क		6	37	18	26	6	35	18	25	6	41	18	31	6	12	18	03	15	गोबिन्द द्वादशी,
	16	13	र.	22	10	आश्ले.	09	08	सु.	12	26	सिं. 09	08	6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	03	16	मंगल पू. षा. में 12/02, प्रदोष व्रत,
	17	14	चं.	19	19	मघा	07	21	धृ.	09	09	सिंह		6	35	18	28	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	04	17	भ. 19/19 से 29/44 तक, शुक्र धनि. में 7/17, श्री सत्यनारायण व्रत, (C)
						पू.फा.	29	03	शू.	29	28																				
	18	15	मं.	16	05	उ.फा.	26	27	गं.	25	32	क. 10	26	6	34	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	09	18	04	18	सूर्य उ.भा. में 11/38, *बुध मीन में* 14/42, होली, होलाष्टक समाप्त,
चैत्र कृष्ण पक्ष	19	1	बु.	12	37	हस्त	23	43	वृ.	21	29	कन्या		6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	08	18	05	19	*चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* होला मेला (श्री आनन्दपुर साहिब), वसन्तोत्सव,
	20	2/	गु.	09	07	चित्रा	21	02	ध्रु.	17	28	तु. 10	22	6	31	18	30	6	30	18	28	6	35	18	34	6	06	18	05	20	भ. 19/24 से 29/44 तक, बुध उ.भा. में 7/58,
		/ 3		29	44																										
	21	4	शु.	26	37	स्वा.	18	34	व्या.	13	36	तुला		6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	05	18	06	21	*यूरेनस शत. 1 में 15/18, सूर्य सायन मेष में 6/31, उत्तरगोल प्रारम्भ,* (D)
	22	5	श.	23	54	वि.	16	27	ह.	10	00	वृ. 10	56	6	29	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	04	18	06	22	*शुक्र कुम्भ में 21/24,*
	23	6	र.	21	40	अनु.	14	47	व.	06	45	वृश्चिक		6	27	18	32	6	26	18	30	6	32	18	35	6	03	18	07	23	भ. 21/40 बाद, *प्लूटो वक्री* 10/41,
									सि.	27	55																				
	24	7	चं.	19	59	ज्ये.	13	39	व्य.	25	32	ध. 13	39	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	02	18	07	24	भ. 8/45 तक,
	25	8	मं.	18	52	मूल	13	04	व.	23	36	धनु		6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	01	18	07	25	
	26	9	बु.	18	18	पू.षा.	13	03	प.	22	07	म. 19	08	6	24	18	33	6	23	18	32	6	29	18	37	6	00	18	08	26	भ. 30/14 बाद, बुध रेव. में 23/49,
	27	10	गु.	18	17	उ.षा.	13	34	शि.	21	03	मकर		6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	08	27	भ. 18/17 तक, *मेला श्री शीतला माता,* कुराली (पं.),
	28	11	शु.	18	46	श्रव.	14	34	सि.	20	21	कु. 27	14	6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	09	28	पंचक प्रारम्भ 27/14, शुक्र शत. में 11/03, पापमोचनी एकादशी व्रत (स.),
	29	12	श.	19	41	धनि.	16	01	सा.	20	01	कुम्भ		6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	09	29	
	30	13	र.	21	02	शत.	17	52	शु.	20	00	कुम्भ		6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	भ. 21/02 बाद, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व (17 घं. 52 मि. तक),
	31	14	चं.	22	45	पू.भा.	20	05	शु.	20	16	मी. 13	30	6	18	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	भ. 9/51 तक, सूर्य रेव. में 22/28, बुध पश्चिम में उदय 10/45, (E)

होलाष्टक
11 से 18 मार्च

(A) केतु अनु. 2 में 10/54, *श्री महाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग), मार्च प्रारम्भ,* (B) मध्याह्न तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), (C) होलिका दहन, (19 घं. 19 मि. से 21 घं. 45 मि. तक), (D) श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (E) मेला पिहोवा तीर्थ (हरि).

वि. सं. 2059-60

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	अप्रै. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चै.कृ.	1	30	मं.	24	49	उ.भा.	22	38	ब्र.	20	48	मीन			6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	मौमवती अमा, अप्रैल प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर 2059 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल पक्ष	2	1	बु.	27	10	रेव.	25	29	ऐं.	21	34	मे.	25	29	6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	2	चैत्र शुक्ल प्रारम्भ, पंचक समाप्त 25/29, बुध अश्वि मेष में 14/49, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ,
	3	2	गु.	29	44	अश्वि.	28	32	वै.	22	30	मेष			6	14	18	38	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	चन्द्र दर्शन मु. 30,
	4	3	शु.	-	-	भर.	-	-	वि.	23	34	मेष			6	13	18	39	6	12	18	37	6	19	18	41	5	51	18	12	4	गुरु मार्गी 8/34, गौरी तृतीया (गणगौर), श्री मत्स्य जयन्ती,
	5	3	श.	08	25	भर.	07	42	प्री.	24	37	वृ.	14	29	6	11	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	5	भ. 21/45 बाद,
	6	4	र.	11	03	कृत्ति.	10	49	आ.	25	34	वृष			6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	13	6	भ. 11/03 तक, मंगल उ. षा. में 18/41, श्री (लक्ष्मी) पंचमी (चतुर्थी विद्धा),
	7	5	चं.	13	27	रोहि.	13	43	सौ.	26	16	मि.	27	02	6	09	18	41	6	09	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	7	शनि मृग. 3 मिथुन में 20/07, नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी (पंचमी विद्धा),
	8	6	मं.	15	25	मृग	16	13	शो.	26	33	मिथुन			6	08	18	42	6	08	18	39	6	15	18	43	5	47	18	14	8	शुक्र पू.भा. में 13/22,
	9	7	बु.	16	46	आर्द्रा	18	07	अ.	26	20	मिथुन			6	07	18	42	6	07	18	39	6	13	18	44	5	46	18	14	9	भ.16/48 से 29/10 तक, बुध भर. में 26/40,
	10	8	गु.	17	22	पुन.	19	17	सु.	25	30	क.	13	04	6	06	18	43	6	06	18	40	6	12	18	44	5	45	18	14	10	श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी,
	11	9	शु.	17	07	पुष्य	19	37	धृ.	23	59	कर्क			6	04	18	44	6	05	18	40	6	11	18	45	5	44	18	15	11	मंगल मकर में 28/31, श्रीराम नवमी, नवरात्र समाप्त,
	12	10	श.	16	01	आश्ले.	19	07	शू.	21	48	सिं.	19	07	6	03	18	44	6	03	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	12	भ. 27/10 बाद,
	13	11	र.	14	07	मघा	17	51	गं.	19	00	सिंह			6	02	18	45	6	02	18	42	6	09	18	46	5	42	18	16	13	भ. 14/07 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.),
	14	12	चं.	11	32	पू.फा.	15	55	वृ.	15	39	क.	21	20	6	01	18	45	6	01	18	42	6	08	18	46	5	41	18	16	14	सं. सूर्य अश्विनी मेष में 11/47, पुण्यकाल 18/11 तक, (A)
	15	13/	मं.	08	23	उ.फा.	13	27	ध्रु.	11	53	कन्या			6	00	18	46	6	00	18	43	6	07	18	47	5	40	18	17	15	भ. 28/51 बाद, श्री महावीर जयन्ती (जैन),
		/14		28	51																											
															5	59	18	47	5	59	18	43	6	06	18	47	5	39	18	17	16	भ. 14/59 तक, शुक्र मीन में 20/31, श्री सत्यनारायण व्रत, चैत्री पूर्णिमा,(B)
	16	15	बु.	25	06	हस्त	10	38	व्या.	07	48	तु.	21	09																		
									ह.	27	34																					
वैशाख कृष्ण पक्ष	17	1	गु.	21	18	चित्रा	07	39	व.	23	18	तुला			5	58	18	47	5	58	18	44	6	05	18	48	5	38	18	18	17	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
						स्वा.	28	41																								
															5	56	18	48	5	57	18	44	6	04	18	48	5	37	18	18	18	भ. 27/54 बाद,
	18	2	शु.	17	38	वि.	25	55	सि.	19	11	वृ.	20	35	5	55	18	49	5	56	18	45	6	03	18	49	5	36	18	19	19	भ. 14/15 तक, शुक उ. भा. में 14/48, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	19	3	श.	14	15	अनु.	23	29	व्य.	15	18	वृश्चिक			5	54	18	49	5	55	18	45	6	02	18	49	5	35	18	19	20	सूर्य सायन वृष में 17/33, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
	20	4	र.	11	18	ज्ये.	21	33	व.	11	46	ध.	21	33	5	53	18	50	5	54	18	46	6	02	18	50	5	34	18	19	21	अगस्त्य अस्त,
	21	5	चं.	08	54	मूल	20	13	प.	08	43	धनु			5	52	18	51	5	53	18	47	6	01	18	50	5	34	18	20	22	भ. 7/08 से 18/31 तक,
	22	6	मं.	07	08	पू.षा.	19	32	शि.	06	10	म.	25	29																		
									सि.	28	12																					
	23	7/	बु.	06	04	उ.षा.	19	34	सा.	26	47	मकर			5	51	18	51	5	52	18	47	6	00	18	51	5	33	18	20	23	
		/ 8		29	43																											
	24	9	गु.	-	-	श्रव.	20	17	शु.	25	55	मकर			5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	24	
	25	9	शु.	06	03	धनि.	21	38	शु.	25	32	कु.	08	53	5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	25	भ. 18/27 बाद, पंचक प्रारम्भ 8/53,
	26	10	श.	07	00	शत.	23	32	ब्र.	25	36	कुम्भ			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	भ. 7/0 तक, बुध वक्री 17/29,
	27	11	र.	08	29	पू.भा.	25	53	ऐं.	26	01	मी.	19	16	5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	सूर्य भर. में 27/40, वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
	28	12	चं.	10	25	उ.भा.	28	36	वै.	26	43	मीन			5	46	18	54	5	47	18	50	5	55	18	54	5	29	18	23	28	मंगल श्रव. में 17/54, बुध पश्चिम में अस्त 8/31, सोम प्रदोष व्रत,
	29	13	मं.	12	40	रेव.	-	-	वि.	27	37	मीन			5	45	18	55	5	47	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	भ. 12/40 से 25/53 तक,
	30	14	बु.	15	09	रेव.	07	33	प्री.	28	38	मे.	07	33	5	44	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	26	18	24	30	पंचक समाप्त 7/33, शुक्र रेव. में 15/29,

(A) सोमप्रदोष व्रत, वैशाखी (पंजाब), (B) वैशाख स्नान प्रारम्भ,

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	मई 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल		चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
														सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वै.कृ.	1	30	गु.	17	45	अश्वि.	10	39	आ.	-	-	मेष		5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	मई प्रारम्भ,
वैशाख शुक्ल पक्ष	2	1	शु.	20	21	भर.	13	47	आ.	05	43	वृ. 20	34	5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	3	2	श.	22	52	कृत्ति.	16	52	सौ.	06	46	वृष		5	42	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	24	18	25	3	राहु. कृति. 3, केतु अनु. 1 में 8/29, श्री शिवाजी जयन्ती,
	4	3	र.	25	09	रोहि.	19	45	शो.	07	42	वृष		5	41	18	58	5	42	18	54	5	51	18	57	5	23	18	26	4	श्री परशुराम जयन्ती , अक्षय तृतीया (रोहिणी योग),
	5	4	चं.	27	05	मृग	22	19	अ.	08	26	मि. 09	05	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	5	भ. 14/10 से 27/05 तक,
	6	5	मं.	28	32	आर्द्रा	24	28	सु.	08	53	मिथुन		5	39	19	00	5	41	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती,
	7	6	बु.	29	24	पुन.	26	03	धृ.	08	57	क. 19	42	5	38	19	00	5	40	18	56	5	48	18	59	5	21	18	27	7	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ. भा.),
	8	7	गु.	29	34	पुष्य	26	58	शू.	08	32	कर्क		5	37	19	01	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	8	भ. 29/34 बाद, श्रीगंगा जन्म,
	9	8	शु.	29	01	आश्ले.	27	11	गं.	07	35	सिं. 27	11	5	37	19	02	5	39	18	57	5	47	19	00	5	20	18	28	9	भ. 17/23 तक,
	10	9	श.	27	43	मघा	26	40	वृ.	06	02	सिंह		5	36	19	02	5	38	18	57	5	46	19	00	5	20	18	29	10	श्री जानकी जयन्ती,
									ध्रु.	27	55																				
	11	10	र.	25	44	पू.फा.	25	27	व्या.	25	13	सिंह		5	35	19	03	5	37	18	58	5	46	19	01	5	19	18	29	11	सूर्य कृति. में 21/46, *शुक्र अश्वि. मेष में* 15/43,
	12	11	चं.	23	07	उ.फा.	23	38	ह.	22	02	क. 07	03	5	34	19	04	5	37	18	59	5	45	19	01	5	18	18	30	12	भ. 12/30 से 23/07 तक, शनि मृग. 4 में 9/16, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
	13	12	मं.	20	01	हस्त	21	19	व.	18	25	कन्या		5	34	19	04	5	36	18	59	5	45	19	02	5	18	18	30	13	भौम प्रदोष व्रत,
	14	13	बु.	16	32	चित्रा	18	38	सि.	14	29	तु. 08	00	5	33	19	05	5	35	19	00	5	44	19	02	5	17	18	31	14	श्री नृसिंह जयन्ती,
	15	14	गु.	12	51	स्वा.	15	45	व्य.	10	22	तुला		5	32	19	06	5	35	19	00	5	43	19	03	5	17	18	31	15	भ. 12/51 से 22/58 तक, *सं. सूर्य वृष में* 8/41, पुण्यकाल 15/01 तक,(A)
	16	15/	शु.	09	06	वि.	12	50	व.	06	11	वृ. 07	33	5	32	19	06	5	34	19	01	5	43	19	04	5	16	18	32	16	*नेपच्यून वक्री* 6/17, बुध पूर्व में उदित 7/05, श्री बुद्ध पूर्णिमा,
		/1		29	27				प.	26	04																				
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	17	2	श.	26	05	अनु.	10	03	शि.	22	09	वृश्चिक		5	31	19	07	5	34	19	02	5	42	19	04	5	16	18	32	17	*ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	18	3	र.	23	07	ज्ये.	07	34	सि.	18	34	ध. 07	34	5	30	19	08	5	33	19	02	5	42	19	05	5	16	18	33	18	भ. 12/32 से 23/07 तक,
	19	4	चं.	20	43	मूल	05	33	सा.	15	25	धनु		5	30	19	08	5	33	19	03	5	41	19	05	5	15	18	34	19	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
						पू.षा.	28	07																							
	20	5	मं.	18	59	उ.षा.	27	24	शु.	12	48	म. 09	52	5	29	19	09	5	32	19	03	5	41	19	06	5	15	18	34	20	बुध मार्गी 13/03,
	21	6	बु.	18	00	श्रव.	27	26	शु.	10	47	मकर		5	29	19	10	5	32	19	04	5	40	19	06	5	14	18	35	21	भ. 18/00 बाद, मंगल धनि. में 28/37, *सूर्य सायन मिथुन में* 16/42,
	22	7	गु.	17	49	धनि.	28	15	ब्र.	09	23	कु. 15	45	5	28	19	10	5	31	19	04	5	40	19	07	5	14	18	35	22	भ. 5/49 तक, पंचक प्रारम्भ 15/45, शुक्र भर. में 15/33,
	23	8	शु.	18	24	शत.	-	-	ऐं.	08	37	कुम्भ		5	28	19	11	5	31	19	05	5	40	19	07	5	14	18	36	23	
	24	9	श.	19	41	शत.	05	48	वै.	08	25	मी. 25	23	5	27	19	11	5	30	19	06	5	39	19	08	5	13	18	36	24	
	25	10	र.	21	32	पू.भा.	07	59	वि.	08	43	मीन		5	27	19	12	5	30	19	06	5	39	19	08	5	13	18	37	25	भ. 6/33 से 21/32 तक, सूर्य रोहि. में 18/05,
	26	11	चं.	23	49	उ.भा.	10	39	प्री.	09	25	मीन		5	27	19	13	5	30	19	07	5	39	19	09	5	13	18	37	26	अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
	27	12	मं.	26	21	रेव.	13	38	आ.	10	22	मे. 13	38	5	26	19	13	5	29	19	07	5	38	19	09	5	12	18	38	27	पंचक समाप्त 13/38 ,
	28	13	बु.	28	57	अश्वि.	16	46	सौ.	11	27	मेष		5	26	19	14	5	29	19	08	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 28/57 बाद, प्रदोष व्रत ,
	29	14	गु.	-	-	भर.	19	54	शो.	12	33	वृ. 26	40	5	26	19	14	5	29	19	08	5	38	19	10	5	12	18	38	29	भ. 18/15 तक ,
	30	14	शु.	07	30	कृत्ति.	22	54	अ.	13	34	वृष		5	25	19	15	5	28	19	09	5	38	19	11	5	12	18	39	30	वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष), ग्रहणशूल,
	31	30	श.	09	50	रोहि.	25	39	सु.	14	26	वृष		5	25	19	15	5	28	19	09	5	37	19	11	5	12	18	39	31	शनैश्चरी अमावस , भावुका अमावस, *खण्डग्रास सूर्यग्रहण* (पश्चिमोत्तर भारत में दृश्य),

(A) गुरु आश्ले. 1 में 13/23, श्री कूर्म जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत,

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

जून, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	जून 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल		चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
														सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	1	1	र.	11	53	मृग	28	04	धृ.	15	03	मि. 14	55	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	*ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्र दर्शन मु. 30, *जून प्रारम्भ,* ग्रहणशूल,
	2	2	चं.	13	33	आर्द्रा	-	-	शू.	15	23	मिथुन		5	24	19	17	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	2	शुक्र कृत्ति. में 14/56, रम्भा तृतीया, ग्रहणशूल,
	3	3	मं.	14	47	आर्द्रा	06	06	गं.	15	22	क. 25	19	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 27/14 बाद, *मंगल कुम्भ में* 25/48, श्री प्रताप जयन्ती (राज.), ग्रहणशूल,
	4	4	बु.	15	33	पुन.	07	40	वृ.	15	00	कर्क		5	24	19	18	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	4	भ. 15/33 तक,
	5	5	गु.	15	47	पुष्य	08	45	ध्रु.	14	12	कर्क		5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	42	5	बुध कृत्ति. में 21/44, *शुक्र वृष में* 8/43,
	6	6	शु.	15	29	आश्ले.	09	18	व्या.	12	59	सिं. 09	18	5	24	19	19	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	*शनि अस्त* 15/19,
	7	7	श.	14	36	मघा	09	18	ह.	11	19	सिंह		5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	7	भ. 14/38 से 25/58 तक, *यूरेनस वक्री* 12/28,
	8	8	र.	13	11	पू.फा.	08	44	व.	09	12	क. 14	31	5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	सूर्य मृग. में 15/52, *बुध वृष में* 18/35, *गुरु आश्ले 2 में* 10/49, शनि आर्द्रा 1 में 18/07,
	9	9	चं.	11	13	उ.फा.	07	39	सि.	06	39	कन्या		5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	9	
									व्य.	27	42																				
	10	10	मं.	08	47	हस्त	06	04	व.	24	23	तु. 17	07	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 19/24 बाद, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.), श्री गंगा दशहरा–(देखें पृष्ठ 139),
						चित्रा	28	05																							
	11	11/	बु.	05	57	स्वा.	25	46	प.	20	48	तुला		5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 5/57 तक, निर्जला एकादशी व्रत (वै.), चम्पक द्वादशी,
		/12		26	48																										
	12	13	गु.	23	28	वि.	23	16	शि.	17	02	वृ. 17	54	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	प्रदोष व्रत,
	13	14	शु.	20	04	अनु.	20	42	सि.	13	11	वृश्चिक		5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 20/4 बाद, शुक्र रोहि. में 13/57,
	14	15	श.	16	46	ज्ये.	18	13	सा.	09	22	ध. 18	13	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 6/24 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	15	1	र.	13	42	मूल	16	00	शु.	05	41	धनु		5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	*आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य मिथुन में* 15/19, पुण्यकाल 8/55 बाद,(A)
									शु.	26	18																				
	16	2	चं.	11	01	पू.षा.	14	10	ब्र.	23	18	म. 19	48	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 21/52 बाद,
	17	3	मं.	08	52	उ.षा.	12	54	ऐं.	20	48	मकर		5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	12	18	46	17	भ. 8/52 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	18	4	बु.	07	22	श्रव.	12	19	वै.	18	53	कु. 24	18	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	पंचक प्रारम्भ 24/18, मंगल शत. में 16/25,
	19	5	गु.	06	38	धनि.	12	29	वि.	17	35	कुम्भ		5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	
	20	6	शु.	06	42	शत.	13	27	प्री.	16	57	कुम्भ		5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 6/42 से 19/02 तक,
	21	7	श.	07	33	पू.भा.	15	11	आ.	16	54	मी. 08	41	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	21	*सूर्य सायन कर्क में* 24/40, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रा.,
	22	8	र.	09	07	उ.भा.	17	32	सौ.	17	21	मीन		5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	13	18	47	22	सूर्य आर्द्रा में 14/58,
	23	9	चं.	11	13	रेव.	20	23	शो.	18	11	मे. 20	23	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 24/26 बाद, पंचक समाप्त 20/23, बुध मृग. में 9/49,
	24	10	मं.	13	41	अश्वि.	23	29	अ.	19	15	मेष		5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	भ. 13/41 तक, शुक्र मृग. में 12/27, बुध पूर्व में अस्त 11/47,
	25	11	बु.	16	16	भर.	26	37	सु.	20	21	मेष		5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	26	12	गु.	18	45	कृत्ति.	-	-	धृ.	21	22	वृ. 09	22	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	14	18	48	26	*बुध मिथुन में* 17/58, प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 139),
	27	13	शु.	20	58	कृत्ति.	05	35	शू.	22	10	वृष		5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 20/58 बाद, *गुरु आश्ले. 3 में* 12/05,
	28	14	श.	22	48	रोहि.	08	14	गं.	22	40	मि. 21	25	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 09/56 तक,
	29	30	र.	24	09	मृग	10	28	वृ.	22	48	मिथुन		5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	29	बुध आर्द्रा में 22/09, *शुक्र मिथुन में* 23/28,
आ.शु.	30	1	चं.	25	00	आर्द्रा	12	15	ध्रु.	22	33	मिथुन		5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	*आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,*

(A) बुध रोहि. में 20/21,

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

जुलाई, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	जुला. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	1	2	मं.	25	23	पुन.	13	32	व्या.	21	55	क.	07	15	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	चन्द्रदर्शन मु. 30, रथयात्रा (पुरी), जुलाई प्रारम्भ,
	2	3	बु.	25	18	पुष्य	14	21	ह.	20	54	कर्क			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	2	
	3	4	गु.	24	47	आश्ले.	14	45	व.	19	34	सिं.	14	45	5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	भ. 13/05 से 24/47 तक,
	4	5	शु.	23	52	मघा	14	44	सि.	17	53	सिंह			5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	4	शनि आर्द्रा 2 में 11/47,
	5	6	श.	22	36	पू.फा.	14	21	व्य.	15	55	क.	20	12	5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	बुध पुन. में 25/47, शुक्र आर्द्रा में 10/18, राहु कृत्ति. 2 (A)
	6	7	र.	20	58	उ.फा.	13	37	व.	13	40	कन्या			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 20/58 बाद, सूर्य पुन. में 14/27, विवस्वत् सप्तमी,
	7	8	चं.	19	02	हस्त	12	33	प.	11	09	तु.	23	54	5	30	19	25	5	33	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	7	भ. 8/02 तक,
	8	9	मं.	16	48	चित्रा	11	11	शि.	08	22	तुला			5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	
									सि.	29	23																					
	9	10	बु.	14	19	स्वा.	09	34	सा.	26	13	वृ.	26	12	5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	9	भ. 25/00 बाद,
	10	11	गु.	11	39	वि.	07	44	शु.	22	55	वृश्चिक			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	भ. 11/39 तक, बुध कर्क में 18/19, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.),
	11	12	शु.	08	52	अनु.	05	46	शु.	19	34	ध.	27	46	5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	प्रदोष व्रत,
						ज्ये.	27	46																								
	12	13/	श.	06	03	मूल	25	51	ब्र.	16	14	धनु			5	32	19	24	5	35	19	18	5	45	19	20	5	20	18	48	12	भ. 27/21 बाद, बुध पुष्य में 8/59, शनि उदित 23/48,
		/14		27	21																											
	13	15	र.	24	51	पू.षा.	24	09	ऐं.	13	03	धनु			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 14/04 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा (B)
श्रावण कृष्ण पक्ष	14	1	चं.	22	44	उ.षा.	22	49	वै.	10	06	म.	05	47	5	33	19	23	5	36	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	14	*श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु आश्ले. 4 में 12/28,*
	15	2	मं.	21	07	श्रव.	21	58	वि.	07	29	मकर			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	अशून्यशयन व्रत,
									प्री.	29	20																					
	16	3	बु.	20	07	धनि.	21	45	आ.	27	42	कु.	09	47	5	34	19	22	5	37	19	16	5	47	19	19	5	21	18	47	16	भ. 8/32 से 20/07 तक, पंचक प्रा. 9/47, सं. सूर्य कर्क में 28/13, (C).
	17	4	गु.	19	50	शत.	22	15	सौ.	26	40	कुम्भ			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	बुध पश्चिम में उदित 10/13,
	18	5	शु.	20	19	पू.भा.	23	30	शो.	26	15	मी.	17	07	5	35	19	22	5	38	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	बुध आश्ले. में 29/03,
	19	6	श.	21	33	उ.भा.	25	28	अ.	26	23	मीन			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	18	5	23	18	46	19	भ. 21/33 बाद,
	20	7	र.	23	24	रेव.	28	01	सु.	26	59	मे.	28	01	5	37	19	21	5	39	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	भ. 10/24 तक, पंचक समाप्त 28/01, सूर्य पुष्य में 14/05,
	21	8	चं.	25	43	अश्वि.	-	-	धृ.	27	55	मेष			5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	24	18	45	21	
	22	9	मं.	28	15	अश्वि.	06	58	शू.	28	59	मेष			5	38	19	20	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	45	22	
	23	10	बु.	-	-	भर.	10	04	गं.	-	-	वृ.	16	51	5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	25	18	44	23	भ. 17/31 बाद, *सूर्य सायन सिंह में 11/34, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 10/25,*
	24	10	गु.	06	45	कृत्ति.	13	05	गं.	06	01	वृष			5	39	19	19	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	भ. 6/45 तक, *शुक्र कर्क में 10/59,*
	25	11	शु.	08	57	रोहि.	15	47	वृ.	06	51	मि.	28	57	5	40	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	26	18	43	25	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	26	12	श.	10	42	मृग	17	59	ध्रु.	07	19	मिथुन			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	15	5	26	18	43	26	*बुध मघा सिंह में 21/46, शुक्र पुष्य में 28/03, शुक्र पूर्व में अस्त* (D).
	27	13	र.	11	52	आर्द्रा	19	37	व्या.	07	22	मिथुन			5	41	19	17	5	43	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	भ. 11/52 से 24/13 तक,
	28	14	चं.	12	25	पुन.	20	40	ह.	06	55	क.	14	27	5	41	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	
	29	30	मं.	12	23	पुष्य	21	08	व.	06	00	कर्क			5	42	19	16	5	44	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	*मंगल वक्री* 13/07, भौमवती अमावस, हरियाली अमावस,
									सि.	28	40																					
श्रावण शु.	30	1	बु.	11	49	आश्ले.	21	07	व्य.	26	56	सिं.	21	07	5	43	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	28	18	41	30	*श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन मु. 15, *गुरु मघा 1 सिंह में* 11/51, (E)
	31	2	गु.	10	48	मघा	20	42	व.	24	54	सिंह			5	43	19	14	5	46	19	09	5	54	19	12	5	28	18	40	31	

शुक्र अस्त 26 जुलाई

(A) केतु विशा. 4 में 6/03, कुमार षष्ठी, (B) शिव शयनोत्सव, आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रा., कोकिला व्रत,(C) पुण्यकाल 14/13 बाद, शुक्र पुन. में 7/33, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (D) 10/25, शनि प्रदोष व्रत, (E) शनि आर्द्रा 3 में 28/05,

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	अग. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण शुक्ल पक्ष	1	3	शु.	09 27	पू.फा.	19 59	प.	22 37	क. 25 45	5 44	19 13	5 46	19 08	5 55	19 11	5 29	18 40	1	म. 20/40 बाद, मधुश्रवा तृतीया, संधारातीज, *अगस्त प्रारम्भ*,
	2	4	श.	07 50	उ.फा.	19 01	शि.	20 10	कन्या	5 44	19 13	5 47	19 08	5 55	19 10	5 29	18 39	2	म. 7/50 तक, नागपंचमी,
	3	5/	र.	06 01	हस्त	17 54	सि.	17 35	तु. 29 18	5 45	19 12	5 47	19 07	5 56	19 10	5 30	18 39	3	सूर्य आश्ले. में 12/53, श्री कल्कि जयन्ती,
		/6		28 04															
	4	7	चं.	26 01	चित्रा	16 41	सा.	14 55	तुला	5 46	19 11	5 48	19 06	5 56	19 09	5 30	18 38	4	म. 26/01 बाद, बुध पू.फा. में 21/51, श्री तुलसीदास जयन्ती, *गुरु वार्धक्य* (A)
	5	8	मं.	23 54	स्वा.	15 22	शु.	12 10	तुला	5 46	19 10	5 48	19 05	5 57	19 08	5 30	18 37	5	म. 12/58 तक, श्री दुर्गाष्टमी,
	6	9	बु.	21 43	वि.	14 00	शु.	09 22	वृ. 08 21	5 47	19 10	5 49	19 05	5 57	19 08	5 31	18 37	6	शुक्र आश्ले. में 23/45,
	7	10	गु.	19 32	अनु.	12 36	ब्र.	06 32	वृश्चिक	5 48	19 09	5 49	19 04	5 58	19 07	5 31	18 36	7	*गुरु अस्त* 15/30,
							ऐं.	27 42											
	8	11	शु.	17 21	ज्ये.	11 11	वै.	24 53	ध. 11 11	5 48	19 08	5 50	19 03	5 58	19 06	5 32	18 35	8	म. 6/26 से 17/21 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	9	12	श.	15 16	मूल	09 51	वि.	22 10	धनु	5 49	19 07	5 51	19 02	5 59	19 05	5 32	18 34	9	शनि प्रदोष व्रत,
	10	13	र.	13 19	पू.षा.	08 38	प्री.	19 35	म. 14 22	5 49	19 06	5 51	19 01	5 59	19 05	5 33	18 34	10	
	11	14	चं.	11 38	उ.षा.	07 40	आ.	17 15	मकर	5 50	19 05	5 52	19 01	6 00	19 04	5 33	18 33	11	म. 11/38 से 22/55 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, ऋक् उपाकर्म, (B)
	12	15	मं.	10 18	श्रव.	07 01	सौ.	15 13	कु. 18 52	5 51	19 04	5 52	19 00	6 00	19 03	5 34	18 32	12	पंचक प्रा. 18/52, रक्षा बन्धन (राखी), कृष्ण–यजु– अथर्व–उपाकर्म, श्रावणी पूर्णिमा,
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	13	1	बु.	09 27	धनि.	06 50	शो.	13 35	कुम्भ	5 51	19 03	5 53	18 59	6 01	19 02	5 34	18 31	13	*भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ*,
	14	2	गु.	09 11	शत.	07 13	अ.	12 26	मी. 25 55	5 52	19 02	5 53	18 58	6 01	19 01	5 35	18 31	14	म. 21/18 बाद, *गुरु मघा 2 में* 22/45,
	15	3	शु.	09 34	पू.भा.	08 14	सु.	11 48	मीन	5 52	19 01	5 54	18 57	6 02	19 00	5 35	18 30	15	म. 9/34 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (संकष्ट चतुर्थी व्रत) (C)
	16	4	श.	10 38	उ.भा.	09 54	धृ.	11 42	मीन	5 53	19 00	5 54	18 56	6 02	19 00	5 35	18 29	16	बुध उ.फा.में 19/19,
	17	5	र.	12 19	रेव.	12 11	शू.	12 04	मे. 12 11	5 54	18 59	5 55	18 55	6 03	18 59	5 36	18 28	17	पंचक समाप्त 12/11, सं *सूर्य मघा सिंह में* 10/38, पुण्यकाल 17/02 तक, (D)
	18	6	चं.	14 31	अश्वि.	14 57	गं.	12 50	मेष	5 54	18 58	5 55	18 54	6 03	18 58	5 36	18 27	18	म. 14/31 से 27/45 तक,
	19	7	मं.	17 01	भर.	18 01	वृ.	13 50	वृ. 24 47	5 55	18 57	5 56	18 53	6 04	18 57	5 37	18 26	19	*श्री कृष्ण जन्माष्टमी* [चन्द्रोदय व्यापिनी, स्मार्तों (गृहस्थियों) के लिए (E)
	20	8	बु.	19 34	कृत्ति.	21 06	ध्रु.	14 54	वृष	5 55	18 56	5 56	18 52	6 04	18 56	5 37	18 25	20	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णवों, संन्यासियों के लिए),
	21	9	गु.	21 53	रोहि.	23 58	व्या.	15 50	वृष	5 56	18 55	5 57	18 51	6 05	18 55	5 38	18 25	21	*बुध कन्या में* 7/11, गुग्गा नवमी,
	22	10	शु.	23 45	मृग	26 22	ह.	16 26	मि. 13 14	5 57	18 54	5 57	18 50	6 05	18 54	5 38	18 24	22	म. 10/54 से 23/45 तक,
	23	11	श.	24 59	आर्द्रा	28 08	व.	16 36	मिथुन	5 57	18 53	5 58	18 49	6 05	18 53	5 38	18 23	23	*सूर्य सायन कन्या में* 18/38, शरद ऋतु प्रारम्भ, अजा एकादशी व्रत (स.),
	24	12	र.	25 30	पुन.	29 12	सि.	16 12	क. 23 00	5 58	18 52	5 59	18 48	6 06	18 52	5 39	18 22	24	
	25	13	चं.	25 17	पुष्य	29 34	व्य.	15 14	कर्क	5 58	18 51	5 59	18 47	6 06	18 51	5 39	18 21	25	म. 25/17 बाद, वक्री प्लूटो, ज्ये. 2 में 17/30, सोमप्रदोष व्रत,
	26	14	मं.	24 23	आश्ले.	29 17	व.	13 43	सिं. 29 17	5 59	18 50	6 00	18 46	6 07	18 50	5 40	18 20	26	म. 12/55 तक,
	27	30	बु.	22 56	मघा	28 28	प.	11 42	सिंह	5 59	18 48	6 00	18 45	6 07	18 49	5 40	18 19	27	पिठोरी अमावस, कुशोत्पाटिनी अमावस, *सिंहस्थ (कुम्भ) महापर्व नासिक (प्रमुख शाही स्नान)*,
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	28	1	गु.	21 03	पू.फा.	27 15	शि.	09 16	सिंह	6 00	18 47	6 01	18 44	6 08	18 48	5 40	18 18	28	*भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ*, बुध वक्री 19/11, शुक्र पू.फा. में 13/17,
	29	2	शु.	18 51	उ.फा.	25 45	सि.	06 32	क. 08 54	6 01	18 46	6 01	18 43	6 08	18 47	5 41	18 17	29	*गुरु मघा 3 में* 29/47, *प्लूटो मार्गी* 9/03, चन्द्रदर्शन मु. 45, मेला (F)
							सा.	27 35											
	30	3	श.	16 28	हस्त	24 07	शु.	24 32	कन्या	6 01	18 45	6 02	18 42	6 09	18 46	5 41	18 16	30	म. 27/15 बाद, श्री वराह जयन्ती, साम–उपाकर्म, गौरीतृतीया, हरितालिका ,(G)
	31	4	र.	14 02	चित्रा	22 27	शु.	21 27	तु. 11 17	6 02	18 44	6 02	18 41	6 09	18 45	5 42	18 15	31	म. 14/02 तक, सूर्य पू. फा. में 6/32, शनि आर्द्रा 4 में 17/48, (H)

गुरु अस्त 7 अगस्त

(A) प्रारम्भ 15/30, (B) शुक्ल–यजु उपाकर्म, (C) (चद्रोदय 21 घं. 12 मि.), बहुला चतुर्थी, भारत स्वतन्त्रतादिवस, (D) *शुक्र मघा सिंह में* 18/51, (E) (चन्द्रोदय 23 घं. 7 मि.), (F) *बाबा गोसाईंआणां (कुराली) पं.*, (G) तृतीया, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20 घं. 41 मि.), (H) *वक्री यूरेनस धनि 4 में* 9/50, [illegible]

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	सितं. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	1	5	च.	11	36	स्वा.	20	51	ब्र.	18	25	तुला			6	02	18	43	6	03	18	39	6	10	18	44	5	42	18	14	1	प्लूटो ज्ये. 3 में 21/30, ऋषि पचमी, *सितंबर प्रारम्भ,*
	2	6	मं.	09	17	वि.	19	21	ऐं.	15	28	वृ.	13	43	6	03	18	41	6	03	18	38	6	10	18	43	5	42	18	13	2	*गुरु उदित* 20/20, सूर्य षष्ठी,
	3	7/	बु.	07	06	अनु.	18	00	वै.	12	38	वृश्चिक			6	04	18	40	6	04	18	37	6	10	18	42	5	43	18	12	3	भ. 7/06 से 18/04 तक, अगस्त्य उदित (अर्धरात्रि के बाद), दूर्वाष्टमी, (A)
		/ 8		29	05																											
	4	9	गु.	27	16	ज्ये.	16	51	वि.	09	58	ध.	16	51	6	04	18	39	6	04	18	36	6	11	18	41	5	43	18	11	4	वक्री बुध उ.फा. 1 सिंह में 17/16, बुध पश्चिम में अस्त 8/03, श्रीचन्द नवमी (B)
	5	10	शु.	25	39	मूल	15	53	प्री.	07	26	धनु			6	05	18	38	6	05	18	35	6	11	18	39	5	44	18	10	5	राहु कृत्ति.1 मेष, केतु विशा. 3 तुला में 27/38, *गुरु बाल्य समाप्त* 20/20,
									आ.	29	05																					
	6	11	श.	24	16	पू.षा.	15	09	सौ.	26	56	म.	21	00	6	05	18	36	6	05	18	34	6	12	18	38	5	44	18	09	6	भ. 12/56 से 24/16 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.), [गुरु उदित 2 सितं.]
	7	12	र.	23	10	उ.षा.	14	40	शो.	25	00	मकर			6	06	18	35	6	06	18	33	6	12	18	37	5	44	18	08	7	वामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी व्रत,
	8	13	चं.	22	24	श्रव.	14	29	अ.	23	20	कु.	26	31	6	06	18	34	6	06	18	31	6	13	18	36	5	45	18	07	8	पंचक प्रारम्भ 26/31, बुध पू. फा. 4 में 15/54, शुक्र उ.फा. में 7/15, (C)
	9	14	मं.	22	01	धनि.	14	40	सु.	21	58	कुम्भ			6	07	18	33	6	06	18	30	6	13	18	35	5	45	18	06	9	भ. 22/01 बाद, अनन्त चतुर्दशी व्रत,
	10	15	बु.	22	06	शत.	15	16	धृ.	20	59	कुम्भ			6	07	18	31	6	07	18	29	6	13	18	34	5	45	18	05	10	भ.10/00 तक, *शुक्र कन्या में* 23/41, श्री सत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध. (D)
आश्विन कृष्ण पक्ष	11	1	गु.	22	43	पू.भा.	16	23	शू.	20	24	मी.	10	03	6	08	18	30	6	07	18	28	6	14	18	33	5	46	18	03	11	*आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,* श्राद्धपक्ष (महालय) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध ,
	12	2	शु.	23	53	उ.भा.	18	02	गं.	20	15	मीन			6	09	18	29	6	08	18	27	6	14	18	32	5	46	18	02	12	द्वितीया श्राद्ध,
	13	3	श.	25	35	रेव.	20	12	वृ.	20	31	मे.	20	12	6	09	18	28	6	08	18	25	6	15	18	31	5	47	18	01	13	भ. 12/40 से 25/35 तक, पंचक समाप्त 20/12, सूर्य उ.फा. में 24/28, (E)
	14	4	र.	27	46	अश्वि.	22	51	ध्रु.	21	10	मेष			6	10	18	26	6	09	18	24	6	15	18	29	5	47	18	00	14	*गुरु मघा 4* में 17/02, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध,
	15	5	चं.	–	–	भर.	25	51	व्या.	22	05	मेष			6	10	18	25	6	09	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	पंचमी श्राद्ध,
	16	5	मं.	06	17	कृत्ति.	28	59	ह.	23	09	वृ.	08	37	6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	48	17	58	16	षष्ठी श्राद्ध,
	17	6	बु.	08	55	रोहि.	–	–	व.	24	11	वृष			6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	17	भ. 8/55 से 22/12 तक, *सं. सूर्य कन्या में* 10/35, पुण्य काल 16/59 (F)
	18	7	गु.	11	25	रोहि.	08	02	सि.	25	00	मि.	21	27	6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	25	5	48	17	56	18	शुक्र हस्त में 24/53, बुध पूर्व में उदित 23/55, अष्टमी श्राद्ध,
	19	8	शु.	13	33	मृग	10	46	व्य.	25	27	मिथुन			6	12	18	20	6	11	18	18	6	17	18	24	5	49	17	55	19	*वक्री मंगल धनि. 4* में 7/00, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
	20	9	श.	15	04	आर्द्रा	12	55	व.	25	22	मिथुन			6	13	18	19	6	12	18	17	6	18	18	23	5	49	17	54	20	भ. 27/34 बाद, बुध मार्गी 14/22,
	21	10	र.	15	51	पुन.	14	22	प.	24	41	क.	08	05	6	14	18	17	6	12	18	16	6	18	18	21	5	50	17	53	21	भ.15/51 तक, दसवीं श्राद्ध,
	22	11	चं.	15	49	पुष्य	15	02	शि.	23	21	कर्क			6	14	18	16	6	13	18	15	6	19	18	20	5	50	17	51	22	इन्दिरा एकादशीव्रत (स.), एकादशी श्राद्ध,
	23	12	मं.	14	59	आश्ले.	14	54	सि.	21	24	सिं.	14	54	6	15	18	15	6	13	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	*सूर्य सायन तुला में* 16/17, *दक्षिणगोल प्रारम्भ, विषुव दिन,* भौम प्रदोष व्रत, (G)
	24	13	बु.	13	25	मघा	14	04	सा.	18	53	सिंह			6	15	18	14	6	14	18	12	6	19	18	18	5	51	17	49	24	भ. 13/25 से 24/25 तक, शस्त्र–विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध, मघाश्राद्ध,
	25	14	गु.	11	16	पू.फा.	12	38	शु.	15	55	क.	18	12	6	16	18	12	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	25	चतुर्दशी–अमा श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध,
	26	30/	शु.	08	39	उ.फा.	10	46	शु.	12	36	कन्या			6	17	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	26	मातामह (नाना का) श्राद्ध. (H)
		/ 1		29	44																											
आश्विन शुक्ल पक्ष	27	2	श.	26	41	हस्त	08	36	ब्र.	09	03	तु.	19	27	6	17	18	10	6	15	18	09	6	21	18	15	5	52	17	46	27	*आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,* चन्द्रदर्शन मु. 30, सूर्य हस्त में 15/55, मंगल (I)
									ऐं.	29	24																					
	28	3	र.	23	37	चित्रा	06	18	वै.	25	46	तुला			6	18	18	09	6	16	18	07	6	21	18	13	5	52	17	45	28	
						स्वा.	28	01																								
	29	4	चं.	20	40	वि.	25	54	वि.	22	14	वृ.	20	24	6	18	18	07	6	16	18	06	6	22	18	12	5	53	17	44	29	भ. 10/07 से 20/40 तक, शुक्र चित्रा में 18/14,
	30	5	मं.	17	57	अनु.	24	01	प्री.	18	54	वृश्चिक			6	19	18	06	6	17	18	05	6	22	18	11	5	53	17	43	30	*गुरु पू.फा. 1 में 17/22,* उपाङ्ग ललिता व्रत,

नवमी से त्रयोदशी तक की श्राद्ध तिथियों के लिए स्पष्टीकरण देखें पृष्ठ 140,

(A) राधाष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रा., (B) (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (C) सोम प्रदोष व्रत, (D) पूर्णिमा श्राद्ध, (E) तृतीया श्राद्ध, (F) तक, सप्तमी श्राद्ध, (G) द्वादशी–त्रयोदशी श्राद्ध, सन्यासिओं का श्राद्ध, (H) श्राद्ध (महालय पक्ष) समाप्त, *शारद नवरात्र प्रारम्भ,* घट स्थापन (I) मार्गी 13/22, वक्री नेपच्यून श्रव. 2 में 22/30,

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

अक्तूबर, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	अक्टू. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आश्विन शुक्ल पक्ष	1	6	बु.	15	33	ज्ये.	22	28	आ.	15	49	ध.	22	28	6	19	18	05	6	17	18	04	6	23	18	10	5	53	17	42	1	बुध उ.फा. में 7/00, *अक्तूबर प्रारम्भ,*
	2	7	गु.	13	31	मूल	21	18	सौ.	13	03	धनु			6	20	18	04	6	18	18	03	6	23	18	09	5	54	17	41	2	भ. 13/31 से 24/39 तक, सरस्वती आवाहन,
	3	8	शु.	11	54	पू.षा.	20	33	शो.	10	36	म.	26	26	6	21	18	02	6	18	18	02	6	24	18	08	5	54	17	40	3	*बुध कन्या में 13/03, श्री दुर्गाष्टमी महाष्टमी,* सरस्वती पूजन,
	4	9	श.	10	43	उ.षा.	20	14	अ.	08	30	मकर			6	21	18	01	6	19	18	00	6	24	18	07	5	55	17	39	4	*शुक्र तुला में 26/52,* सरस्वती बलिदान, नवरात्र समाप्त,
	5	10	र.	09	58	श्रव.	20	21	सु.	06	45	मकर			6	22	18	00	6	20	17	59	6	25	18	06	5	55	17	38	5	भ. 21/46 बाद , मंगल शत. में 18/14, सरस्वती विसर्जन,विजया दशमी (A)
									धृ.	29	21																					
	6	11	चं.	09	40	धनि.	20	54	शू.	28	18	कु.	08	34	6	23	17	59	6	20	17	58	6	25	18	05	5	56	17	37	6	भ. 9/40 तक, पंचक प्रारम्भ 8/34, *शुक्र पश्चिम में उदित 16/32,*(B)
	7	12	मं.	09	49	शत.	21	53	गं.	27	36	कुम्भ			6	23	17	57	6	21	17	57	6	26	18	04	5	56	17	36	7	बुध पूर्व में अस्त 19/15, भौमप्रदोष व्रत, [शुक्र उदित 8 अक्तूबर]
	8	13	बु.	10	24	पू.भा.	23	18	वृ.	27	15	मी.	16	55	6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	02	5	56	17	35	8	
	9	14	गु.	11	28	उ.भा.	25	10	ध्रु.	27	14	मीन			6	24	17	55	6	22	17	55	6	27	18	01	5	57	17	34	9	भ. 11/28 से 24/09 तक, बुध हस्त में 13/40, *शुक्र बाल्य समाप्त* 16/32 (C)
	10	15	शु.	12	57	रेव.	27	27	व्या.	27	33	मे.	27	27	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	00	5	57	17	33	10	पंचक समाप्त 27/27, सूर्य चित्रा में 28/57, शुक्र स्वाती में 11/29, (D)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	11	1	श.	14	53	अश्वि.	30	06	ह.	28	11	मेष			6	26	17	53	6	23	17	53	6	28	17	59	5	58	17	32	11	*कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	12	2	र.	17	11	भर.	–	–	व.	29	03	मेष			6	26	17	51	6	23	17	51	6	28	17	58	5	58	17	31	12	भ. 30/26 बाद,
	13	3	चं.	19	45	भर.	09	04	सि.	30	04	वृ.	15	50	6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	30	13	भ.19/45 तक,
	14	4	मं.	22	27	कृत्ति.	12	12	व्य.	–	–	वृष			6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	29	14	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी व्रत *(करवा चौथ)* (चन्द्रोय 20 घं.14 मि.),
	15	5	बु.	25	05	रोहि.	15	22	व्य.	07	08	मि.	28	53	6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	00	17	28	15	
	16	6	गु.	27	27	मृग	18	20	व.	08	06	मिथुन			6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	00	17	27	16	भ. 27/27 बाद ,बुध चित्रा में 29/07,
	17	7	शु.	29	19	आर्द्रा	20	54	प.	08	49	मिथुन			6	30	17	46	6	26	17	46	6	31	17	53	6	01	17	26	17	भ. 16/27 तक, *सं सूर्य तुला में* 22/32, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद, (E)
	18	8	श.	–	–	पुन.	22	54	शि.	09	08	क.	16	28	6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	52	6	01	17	25	18	अहोई अष्टमी (पंजाब),
	19	8	र.	06	32	पुष्य	24	10	सि.	08	56	कर्क			6	31	17	44	6	28	17	44	6	32	17	51	6	02	17	24	19	
	20	9	चं.	06	58	आश्ले.	24	37	सा.	08	06	सिं.	24	37	6	32	17	43	6	28	17	43	6	32	17	50	6	02	17	23	20	भ. 18/52 बाद, *बुध तुला में* 26/08, शुक्र विशा. में 28/45,
	21	10/	मं.	06	34	मघा	24	16	शु.	06	38	सिंह			6	33	17	42	6	29	17	42	6	33	17	49	6	03	17	22	21	भ. 6/34 तक, रमा एकादशी व्रत (स्मा.),
		/11		29	21				शु.	28	31																					
	22	12	बु.	27	23	पू.फा.	23	10	ब्र.	25	48	क.	28	47	6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	49	6	03	17	21	22	रमा एकादशी व्रत (वै.), गोवत्स द्वादशी,
	23	13	गु.	24	48	उ.फा.	21	25	ऐं.	22	34	कन्या			6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	48	6	04	17	21	23	भ. 24/48 बाद, *नेपच्यून मार्गी 7/24, सूर्य सायन वृश्चिक में* 25/38 (F)
	24	14	शु.	21	44	हस्त	19	09	वै.	18	55	तु.	29	53	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	04	17	20	24	भ. 11/19 तक, सूर्य स्वा. में 15/27, बुध स्वा. में 25/06, (G)
	25	30	श.	18	20	चित्रा	16	33	वि.	15	00	तुला			6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	05	17	19	25	*शनि वक्री 29/12,* शनैश्चरी अमावस्, *दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन,* (H)
कार्तिक शुक्ल पक्ष	26	1	र.	14	47	स्वा.	13	47	प्री.	10	55	वृ.	29	42	6	36	17	36	6	32	17	37	6	36	17	45	6	06	17	18	26	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गोक्रीडा, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, यम द्वितीया,
	27	2	चं.	11	15	वि.	11	00	आ.	06	49	वृश्चिक			6	37	17	36	6	33	17	37	6	37	17	44	6	06	17	17	27	भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा, चन्द्रदर्शन मु. 30,
									सौ.	26	49																					
	28	3/	मं.	07	52	अनु.	08	23	शो.	23	02	ध.	30	04	6	38	17	35	6	34	17	36	6	37	17	43	6	07	17	17	28	भ. 18/16 से 28/47 तक, *शुक्र वृश्चिक में* 29/39,
		/ 4		28	47	ज्ये.	30	04																								
	29	5	बु.	26	07	मूल	28	11	अ.	19	34	धनु			6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	07	17	16	29	
	30	6	गु.	23	59	पू.षा.	26	49	सु.	16	31	धनु			6	39	17	33	6	35	17	34	6	39	17	42	6	08	17	15	30	
	31	7	शु.	22	26	उ.षा.	26	04	धृ.	13	55	म.	08	34	6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	09	17	14	31	भ. 22/26 बाद, शुक्र अनु. में 21/58,

(A) *(दशहरा),* अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन,(B)पापांकुशा एकादशीव्रत (स.), (C) श्री सत्यनारायण व्रत ,शरतपूर्णिमा, कोजागर व्रत , (D) महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, (E) *गुरु पू. फा. 2 में 21/28,* (F) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी (आगामी अरुणोदय वाली), (G) श्री हनुमान् जयन्ती (पूर्व अरुणोदय वाली),(H) श्री महावीर निर्वाण (जैन).

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

नवंबर, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	नवं. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	8	श.	21	33	श्रव.	25	56	शू.	11	50	मकर			6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	09	17	14	1	भ. 9/55 तक, बुध विशा. में 29/25, गोपाष्टमी, *नवम्बर प्रारम्भ,*
	2	9	र.	21	18	धनि.	26	26	गं.	10	15	कु.	14	06	6	42	17	30	6	37	17	32	6	41	17	40	6	10	17	13	2	पंचक प्रा. 14/06, कूष्माण्ड नवमी, अक्षय नवमी,
	3	10	चं.	21	41	शत.	27	32	वृ.	09	10	कुम्भ			6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	
	4	11	मं.	22	38	पू.भा.	29	10	ध्रु.	08	33	मी.	22	43	6	43	17	29	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	4	भ. 10/05 से 22/38 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), भीष्म पंचक प्रारम्भ,
	5	12	बु.	24	06	उ.भा.	-	-	व्या.	08	21	मीन			6	44	17	28	6	39	17	29	6	43	17	38	6	12	17	11	5	तुलसी विवाह,
	6	13	गु.	26	00	उ.भा.	07	17	ह.	08	31	मीन			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	6	सूर्य विशा. में 23/35, *गुरु पू. फा. 3 में* 9/58, प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी (A)
	7	14	शु.	28	14	रेव.	09	46	व.	08	59	मे.	09	46	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 28/14 बाद, पंचक समाप्त 9/46, *राहु भर 4 केतु विशा. 2 में* 25/12,(B)
	8	15	श.	30	43	अश्वि.	12	34	सि.	09	42	मेष			6	46	17	26	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	09	8	भ. 17/27 तक , *बुध वृश्चिक में* 13/58, *यूरेनस मार्गी* 18/14,(C)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	9	1	र.	-	-	भर.	15	34	व्य.	10	34	वृ.	22	21	6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	09	9	*मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारंभ,* ग्रहणशूल,
	10	1	चं.	09	22	कृत्ति.	18	42	व.	11	33	वृष			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	08	10	बुध अनु. में 17/42, ग्रहणशूल,
	11	2	मं.	12	04	रोहि.	21	49	प.	12	33	वृष			6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	16	17	08	11	भ. 25/24 बाद, शुक्र ज्येष्ठा में 15/21, ग्रहणशूल,
	12	3	बु.	14	42	मृग	24	50	शि.	13	30	मि.	11	21	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	34	6	16	17	07	12	भ. 14/42 तक , श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	13	4	गु.	17	06	आर्द्रा	27	34	सि.	14	17	मिथुन			6	51	17	22	6	46	17	25	6	48	17	33	6	17	17	07	13	
	14	5	शु.	19	09	पुन.	29	55	सा.	14	49	क.	23	23	6	52	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	07	14	जन्मदिन श्री जवाहर लाल नेहरु (बाल दिवस),
	15	6	श.	20	41	पुष्य	-	-	शु.	14	59	कर्क			6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	06	15	भ. 20/41 बाद,
	16	7	र.	21	34	पुष्य	07	43	शु.	14	41	कर्क			6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	06	16	भ. 9/13 तक, *सं. सूर्य वृश्चिक में* 22/21, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद (D)
	17	8	चं.	21	44	आश्ले.	08	52	ब्र.	13	50	सिं.	08	52	6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	05	17	बुध पश्चिम में उदित 9/24, कालाष्टमी (श्री भैरवाष्टमी),
	18	9	मं.	21	08	मघा	09	16	ऐं.	12	23	सिंह			6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	05	18	
	19	10	बु.	19	45	पू.फा.	08	55	वै.	10	20	क.	14	43	6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	05	19	भ. 8/32 से 19/45 तक, सूर्य अनु. में 29/40, बुध ज्ये. में 12/40,
	20	11	गु.	17	40	उ.फा.	07	51	वि.	07	42	कन्या			6	57	17	19	6	51	17	22	6	54	17	30	6	22	17	05	20	उत्पन्ना एकादशीव्रत (स.),
						हस्त	30	06	प्री.	28	31																					
	21	12	शु.	14	58	चित्रा	27	49	आ.	24	53	तु.	17	01	6	58	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	04	21	प्रदोष व्रत,
	22	13	श.	11	46	स्वा.	25	08	सौ.	20	54	तुला			6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	24	17	04	22	भ. 11/46 से 22/01 तक, *शुक्र मूल धनु में* 8/53, (E)
	23	14/	र.	08	13	वि.	22	12	शो.	16	41	वृ.	16	57	6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	04	23	
		/30		28	29																											
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	24	1	चं.	24	44	अनु.	19	12	अ.	12	23	वृश्चिक			7	00	17	18	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	04	24	*मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,*
	25	2	मं.	21	08	ज्ये.	16	18	सु.	08	07	ध.	16	18	7	01	17	17	6	55	17	20	6	58	17	29	6	26	17	04	25	चन्द्रदर्शन मु. 30,
									धृ.	28	01																					
	26	3	बु.	17	52	मूल	13	41	शू.	24	14	धनु			7	02	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	03	26	भ. 28/24 बाद,
	27	4	गु.	15	04	पू.षा.	11	31	गं.	20	53	म.	17	04	7	03	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	03	27	भ. 15/04 तक,
	28	5	शु.	12	54	उ.षा.	09	56	वृ.	18	03	मकर			7	04	17	17	6	58	17	20	7	00	17	29	6	28	17	03	28	*बुध मूल धनु में* 16/11, स्कन्द षष्ठी (पंचमी विद्धा),शहीदी दिन गुरु तेगबहादुर जी,
	29	6	श.	11	27	श्रव.	09	04	ध्रु.	15	48	कु.	20	55	7	04	17	17	6	58	17	20	7	01	17	29	6	29	17	03	29	पंचक प्रारम्भ 20/55, चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र.),
	30	7	र.	10	47	धनि.	08	58	व्या.	14	12	कुम्भ			7	05	17	17	6	59	17	20	7	01	17	29	6	29	17	03	30	भ. 10/47 से 22/46 तक , मित्र सप्तमी,

(A) (आगामी अरुणोदय वाली),(B) ग्रहण शूल, (C) श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्तिक स्नान –चातुर्मास्य व्रतनियम एवम् भीष्मपंचक समाप्त, *प्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (9 नवं. '03 के सूर्योदय से पहले समस्त भारत में दृश्य),*

(D) मंगल पू.भा. में 14/43, नेपच्यून श्रव. 3 में 25/57, (E) सूर्य सायन धनु में 23/13.

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

दिसंबर, सन् 2003 ई.

मास पक्ष	दिसं. 2003 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1	8	चं.	10 57	शत.	09 39	ह.	13 13	मी. 28 40	7 06	17 16	7 00	17 20	7 02	17 29	6 30	17 03	1	दिसम्बर प्रारम्भ,
	2	9	मं.	11 52	पू.भा.	11 05	व.	12 49	मीन	7 07	17 16	7 01	17 19	7 03	17 29	6 31	17 03	2	गुरु पू. फा. 4 में 10/28, शुक्र पू.षा. में 26/41,
	3	10	बु.	13 27	उ.भा.	13 10	सि.	12 54	मीन	7 08	17 16	7 02	17 20	7 04	17 29	6 32	17 03	3	भ. 26/28 बाद, सूर्य ज्ये. में 9/54,
	4	11	गु.	15 34	रेव.	15 44	व्य.	13 24	मे. 15 44	7 08	17 16	7 02	17 20	7 04	17 29	6 32	17 03	4	भ. 15/34 तक, पंचक समाप्त 15/44, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.) (A)
	5	12	शु.	18 03	अश्वि.	18 39	व.	14 11	मेष	7 09	17 16	7 03	17 20	7 05	17 29	6 33	17 04	5	मंगल मीन में 24/15,
	6	13	श.	20 44	भर.	21 45	प.	15 07	वृ. 28 32	7 10	17 16	7 04	17 20	7 06	17 29	6 34	17 04	6	शनि प्रदोष व्रत,
	7	14	र.	23 28	कृत्ति.	24 53	शि.	16 06	वृष	7 11	17 16	7 05	17 20	7 06	17 29	6 34	17 04	7	भ. 23/28 बाद,
	8	15	चं.	26 07	रोहि.	27 57	सि.	17 03	वृष	7 12	17 17	7 05	17 20	7 07	17 29	6 35	17 04	8	भ. 12/48 तक, बुध पू. षा. में 27/51, श्री सत्यनारायण व्रत, श्री दत्त जयन्ती,
पौष कृष्ण पक्ष	9	1	मं.	28 35	मृग	30 50	सा.	17 54	मि. 17 25	7 12	17 17	7 06	17 20	7 08	17 30	6 36	17 04	9	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	10	2	बु.	30 48	आर्द्रा	– –	शु.	18 35	मिथुन	7 13	17 17	7 07	17 20	7 09	17 30	6 36	17 04	10	
	11	3	गु.	– –	आर्द्रा	09 28	शु.	19 02	क. 29 14	7 14	17 17	7 07	17 21	7 09	17 30	6 37	17 05	11	भ.19/47 बाद, मंगल उ. भा. में 23/20,
	12	3	शु.	08 40	पुन.	11 47	ब्र.	19 13	कर्क	7 14	17 17	7 08	17 21	7 10	17 30	6 38	17 05	12	भ. 8/40 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	13	4	श.	10 09	पुष्य	13 42	ऐं.	19 04	कर्क	7 15	17 18	7 09	17 21	7 11	17 31	6 38	17 05	13	शुक्र उ.षा.में 21/01,
	14	5	र.	11 09	आश्ले.	15 09	वै.	18 33	सिं. 15 09	7 16	17 18	7 09	17 21	7 11	17 31	6 39	17 06	14	
	15	6	चं.	11 37	मघा	16 05	वि.	17 36	सिंह	7 16	17 18	7 10	17 22	7 12	17 31	6 40	17 06	15	भ. 11/37 से 23/38 तक,
	16	7	मं.	11 30	पू.फा.	16 26	प्री.	16 11	क. 22 26	7 17	17 19	7 11	17 22	7 12	17 32	6 40	17 06	16	सं. सूर्य मूल धनु में 13/00, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र मकर में 13/43,
	17	8	बु.	10 45	उ.फा.	16 10	आ.	14 17	कन्या	7 18	17 19	7 11	17 22	7 13	17 32	6 41	17 07	17	बुध वक्री 21/31,
	18	9	गु.	09 21	हस्त	15 17	सौ.	11 52	तु. 26 36	7 18	17 19	7 12	17 23	7 14	17 32	6 41	17 07	18	भ. 20/25 बाद,
	19	10/	शु.	07 21	चित्रा	13 47	शो.	08 58	तुला	7 19	17 20	7 12	17 23	7 14	17 33	6 42	17 08	19	भ. 7/21 तक, सफला एकादशी व्रत (स्मा),
		/11		28 47			अ.	29 38											
	20	12	श.	25 45	स्वा.	11 47	सु.	25 55	वृ. 27 59	7 19	17 20	7 13	17 24	7 15	17 33	6 42	17 08	20	बुध पश्चिम में अस्त 26/56, सफला एकादशी व्रत (वै.),
	21	13	र.	22 23	वि.	09 21	धृ.	21 55	वृश्चिक	7 20	17 21	7 13	17 24	7 15	17 34	6 43	17 09	21	भ. 22/23 बाद, वक्री शनि आर्द्रा 3 में 27/45, प्रदोष व्रत,
					अनु.	30 37													
	22	14	चं.	18 49	ज्ये.	27 46	शू.	17 45	ध. 27 46	7 20	17 21	7 14	17 25	7 16	17 34	6 43	17 09	22	भ. 8/37 तक, सूर्य सायन मकर में 12/34, उत्तरायण–शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
	23	30	मं.	15 13	मूल	24 57	गं.	13 34	धनु	7 21	17 22	7 14	17 25	7 16	17 35	6 44	17 10	23	भौमवती अमावस,
पौष शुक्ल पक्ष	24	1	बु.	11 46	पू.षा.	22 21	वृ.	09 28	म. 27 46	7 21	17 22	7 15	17 26	7 17	17 35	6 44	17 10	24	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रव. में 16/04, चन्द्रदर्शन मु. 30,
							ध्रु.	29 38											
	25	2/	गु.	08 37	उ.षा.	20 10	व्या.	26 10	मकर	7 22	17 23	7 15	17 26	7 17	17 36	6 45	17 11	25	वक्री बुध मूल 4 में 11/44,
		/3		29 58															
	26	4	शु.	27 59	श्रव.	18 34	ह.	23 12	कु. 30 01	7 22	17 23	7 16	17 27	7 18	17 36	6 45	17 11	26	भ. 16/53 से 27/59 तक, पंचक प्रा. 30/01,
	27	5	श.	26 46	धनि.	17 41	व.	20 51	कुम्भ	7 23	17 24	7 16	17 27	7 18	17 37	6 46	17 12	27	
	28	6	र.	26 26	शत.	17 37	सि.	19 10	कुम्भ	7 23	17 25	7 17	17 28	7 18	17 38	6 46	17 12	28	
	29	7	चं.	26 58	पू.भा.	18 25	व्य.	18 10	मी. 12 08	7 23	17 25	7 17	17 29	7 19	17 38	6 47	17 13	29	भ. 26/58 बाद, सूर्य पू.षा. में 15/08, अवतार दिन गुरु गोबिन्द सिंह जी,
	30	8	मं.	28 20	उ.भा.	20 01	व.	17 49	मीन	7 24	17 26	7 17	17 29	7 19	17 39	6 47	17 14	30	भ. 15/33 तक,
	31	9	बु.	30 22	रेव.	22 20	प.	18 01	मे. 22 20	7 24	17 27	7 18	17 30	7 19	17 39	6 47	17 14	31	पंचक समाप्त 22/20, सन् 2003 ई. समाप्त.

(A) श्री गीता जयन्ती.

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

जनवरी, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	जन. 2004 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शुक्ल पक्ष	1	10	गु.	-	-	अश्वि.	25	09	शि.	18	40	मेष			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	बुध पूर्व में उदित 30/18, *जनवरी (सन् 2004 ई.) प्रारम्भ,*
	2	10	शु.	08	53	भर.	28	15	सि.	19	34	मेष			7	25	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 22/14 बाद,
	3	11	श.	11	38	कृत्ति.	-	-	सा.	20	35	वृ.	11	03	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	भ. 11/38 तक, मंगल रेव. में 13/08, *गुरु वक्री 29/27,* प्लूटो ज्ये. (A)
	4	12	र.	14	23	कृत्ति.	07	26	शु.	21	34	वृष			7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	शुक्र धनि. में 12/14, प्रदोष व्रत,
	5	13	चं.	16	59	रोहि.	10	30	शु.	22	23	मि.	23	56	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	49	17	18	5	
	6	14	मं.	19	16	मृग	13	18	ब्र.	22	57	मिथुन			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 19/16 बाद, बुध मार्गी 19/14,
	7	15	बु.	21	10	आर्द्रा	15	44	ऐं.	23	15	मिथुन			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	भ. 8/16 तक, श्री सत्यनाराण व्रत, पौषी पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण पक्ष	8	1	गु.	22	39	पुन.	17	48	वै.	23	13	क.	11	19	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	*माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	9	2	शु.	23	44	पुष्य	19	27	वि.	22	53	कर्क			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	*शुक्र कुम्भ में 22/56, राहु भर 3. केतु विशा. 1 में 22/48,*
	10	3	श.	24	23	आश्ले.	20	43	प्री.	22	14	सिं.	20	43	7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 12/06 से 24/23 तक,
	11	4	र.	24	38	मघा	21	35	आ.	21	16	सिंह			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 17/10, श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थीव्रत (चन्द्रोदय 21 घं. 08 मि.),
	12	5	चं.	24	29	पू.फा.	22	04	सौ.	20	00	क.	28	08	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	*यूरेनस शत. 1 में* 15/26,
	13	6	मं.	23	55	उ.फा.	22	09	शो.	18	24	कन्या			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	भ. 23/55 बाद,
	14	7	बु.	22	55	हस्त	21	49	अ.	16	29	कन्या			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	भ. 11/29 तक, *सं. सूर्य मकर में 23/43,* पुण्यकाल अगले दिन 15/43 तक,
	15	8	गु.	21	29	चित्रा	21	02	सु.	14	12	तु.	09	29	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	51	6	49	17	25	15	शुक्र शत. में 10/09,
	16	9	शु.	19	36	स्वा.	19	50	धृ.	11	35	तुला			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 30/30 बाद,
	17	10	श.	17	18	वि.	18	13	शू.	08	37	वृ.	12	39	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	17	भ. 17/18 तक,
									गं.	29	20																					
	18	11	र.	14	38	अनु.	16	15	वृ.	25	48	वृश्चिक			7	25	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	षटतिला एकादशी व्रत (स.),
	19	12	चं.	11	43	ज्ये.	14	01	ध्रु.	22	06	ध.	14	01	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	सोम प्रदोष व्रत,
	20	13/	मं.	08	38	मूल	11	39	व्या.	18	19	धनु			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	भ. 8/38 से 19/04 तक , *सूर्य सायन कुम्भ में* 23/12,
		/14		29	32																											
	21	30	बु.	26	35	पू.षा.	09	17	ह.	14	36	म.	14	43	7	24	17	44	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	21	बुध पू.षा. में 17/33, मौनी अमावस,
						उ.षा.	31	06																								
माघ शुक्ल पक्ष	22	1	गु.	23	57	श्रव.	29	17	व.	11	03	मकर			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	22	*माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,*
	23	2	शु.	21	49	धनि.	27	58	सि.	07	49	कु.	16	33	7	23	17	46	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	पंचक प्रा. 16/33, चन्द्रदर्शन मु. 30,
									व्य.	29	02																					
	24	3	श.	20	19	शत.	27	21	व.	26	47	कुम्भ			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 19/24, *मंगल अश्वि. मेष में* 24/37, गौरी तृतीया (गौंतरी),
	25	4	र.	19	36	पू.भा.	27	30	प.	25	11	मी.	21	23	7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	भ. 7/52 से 19/36 तक, वरद-तिल-कुन्द-चतुर्थी,
	26	5	चं.	19	44	उ.भा.	28	29	शि.	24	14	मीन			7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	48	17	33	26	शुक्र पू.भा. में 10/22, भारत गणतन्त्र दिवस, श्री पंचमी , वसन्त पंचमी,
	27	6	मं.	20	43	रेव.	30	16	सि.	23	55	मे.	30	16	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	00	6	47	17	34	27	पंचक समाप्त 30/16,
	28	7	बु.	22	27	अश्वि.	-	-	सा.	24	11	मेष			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	01	6	47	17	35	28	भ. 22/27 बाद, रथ सप्तमी (पूर्व अरुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी,
	29	8	गु.	24	47	अश्वि.	08	43	शु.	24	52	मेष			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	02	6	47	17	36	29	भ. 11/33 तक, भीष्माष्टमी,
	30	9	शु.	27	26	भर.	11	38	शु.	25	48	वृ.	18	24	7	20	17	52	7	15	17	54	7	18	18	02	6	46	17	36	30	
	31	10	श.	30	10	कृत्ति.	14	46	ब्र.	26	48	वृष			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	03	6	46	17	37	31	बुध उ.षा. में 22/35

(A) 4 में 11/52, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.).

वि. सं. 2060

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2004 ई.

मास पक्ष	फर. 2004 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ शुक्ल पक्ष	1	11	र.	–	–	रोहि.	17	52	ऐं.	27	41	वृष			7	19	17	54	7	14	17	56	7	17	18	04	6	45	17	38	1	भ. 19/29 बाद, *फरवरी प्रारम्भ,*
	2	11	चं.	08	44	मृग	20	43	वै.	28	19	मि.	07	20	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	05	6	45	17	39	2	भ. 8/44 तक, *बुध मकर में* 30/43, जया एकादशी व्रत (स.), (A)
	3	12	मं.	10	54	आर्द्रा	23	08	वि.	28	35	मिथुन			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	06	6	44	17	39	3	*शुक्र मीन में* 18/41, भौम प्रदोष व्रत,
	4	13	बु.	12	34	पुन.	25	02	प्री.	28	27	क.	18	37	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	06	6	44	17	40	4	*वक्री शनि आर्द्रा* 2 में 7/51,
	5	14	गु.	13	42	पुष्य	26	26	आ.	27	55	कर्क			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	07	6	43	17	41	5	भ. 13/42 से 26/03 तक, *व. गुरु पू.फा.* 3 में 21/47, श्री सत्यनारायण व्रत,
	6	15	शु.	14	17	आश्ले.	27	20	सौ.	26	59	सिं.	27	20	7	15	17	58	7	11	18	00	7	14	18	08	6	43	17	41	6	सूर्य धनि. में 22/35, शुक्र उ.भा. में 14/00, माघी पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त (B)
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	7	1	श.	14	23	मघा	27	47	शो.	25	42	सिंह			7	15	17	59	7	10	18	00	7	13	18	09	6	42	17	42	7	*फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,*
	8	2	र.	14	04	पू.फा.	27	52	अ.	24	07	सिंह			7	14	18	00	7	09	18	01	7	13	18	09	6	42	17	43	8	भ. 25/46 बाद,
	9	3	चं.	13	23	उ.फा.	27	39	सु.	22	17	क.	09	51	7	13	18	01	7	09	18	02	7	12	18	10	6	41	17	43	9	भ. 13/23 तक, बुध श्रव. में 23/32, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	10	4	मं.	12	25	हस्त	27	11	धृ.	20	14	कन्या			7	12	18	01	7	08	18	03	7	11	18	11	6	41	17	44	10	
	11	5	बु.	11	12	चित्रा	26	28	शू.	17	59	तु.	14	51	7	12	18	02	7	07	18	04	7	11	18	12	6	40	17	45	11	
	12	6	गु.	09	45	स्वा.	25	32	गं	15	34	तुला			7	11	18	03	7	06	18	04	7	10	18	12	6	39	17	45	12	भ. 9/45 से 20/57 तक,
	13	7/	शु.	08	05	वि.	24	23	वृ.	12	58	वृ.	18	42	7	10	18	04	7	06	18	05	7	09	18	13	6	39	17	46	13	*सं. सूर्य कुम्भ में* 12/41, पुण्यकाल सारा दिन,
		/ 8		30	11																											
	14	9	श.	28	06	अनु.	23	02	ध्रु.	10	12	वृश्चिक			7	09	18	05	7	05	18	06	7	08	18	14	6	38	17	47	14	मंगल भर. में 24/35,
	15	10	र.	25	50	ज्ये.	21	31	व्या.	07	16	ध.	21	31	7	08	18	06	7	04	18	07	7	08	18	14	6	37	17	47	15	भ. 14/59 से 25/50 तक, बुध पूर्व में अस्त 23/20,
									ह.	28	13																					
	16	11	चं.	23	28	मूल	19	52	व.	25	04	धनु			7	07	18	06	7	03	18	07	7	07	18	15	6	36	17	48	16	विजया एकादशी व्रत (स.),
	17	12	मं.	21	03	पू.षा.	18	10	सि.	21	54	म.	23	45	7	06	18	07	7	02	18	08	7	06	18	16	6	36	17	49	17	शुक्र रेव. में 22/24,
	18	13	बु.	18	43	उ.षा.	16	32	व्य.	18	49	मकर			7	05	18	08	7	02	18	09	7	05	18	16	6	35	17	49	18	भ. 18/43 से 29/37 तक, बुध धनि. में 7/53, प्रदोष व्रत, *श्री महाशिवरात्रि व्रत,*
	19	14	गु.	16	35	श्रव.	15	04	व.	15	52	कु.	26	27	7	04	18	09	7	01	18	10	7	04	18	17	6	34	17	50	19	पंचक प्रा. 26/27, सूर्य शत. में 27/05, *सूर्य सायन मीन में* 13/20, (C)
	20	30	शु.	14	48	धनि.	13	57	प.	13	12	कुम्भ			7	03	18	10	7	00	18	10	7	04	18	18	6	33	17	51	20	
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	21	1	श.	13	29	शत.	13	17	शि.	10	55	कुम्भ			7	02	18	10	6	59	18	11	7	03	18	18	6	33	17	51	21	*फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध कुम्भ में* 30/46, चन्द्रदर्शन मु. 30,
	22	2	र.	12	47	पू.भा.	13	13	सि.	09	06	मी.	07	10	7	01	18	11	6	58	18	12	7	02	18	19	6	32	17	52	22	
	23	3	चं.	12	47	उ.भा.	13	51	सा.	07	50	मीन			7	00	18	12	6	57	18	12	7	01	18	20	6	31	17	52	23	भ. 25/04 बाद,
	24	4	मं.	13	32	रेव.	15	12	शु.	07	08	मे.	15	12	6	59	18	13	6	56	18	13	7	00	18	20	6	30	17	53	24	भ. 13/32 तक, पंचक समाप्त 15/12,
	25	5	बु.	15	00	अश्वि.	17	14	शु.	07	00	मेष			6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	बुध शत. में 26/17,
	26	6	गु.	17	05	भर.	19	50	ब्र.	07	21	वृ.	26	33	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	
	27	7	शु.	19	35	कृत्ति.	22	49	ऐं.	08	06	वृष			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 19/35 बाद,
	28	8	श.	22	14	रोहि.	25	54	वै.	09	02	वृष			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 8/54 तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
	29	9	र.	24	46	मृग	28	52	वि.	09	59	मि.	15	25	6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	26	17	56	29	*शुक्र अश्वि. मेष में* 13/19,

(A) भीष्म द्वादशी(देखें पृष्ठ142). (B) जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी. (C) वसन्त ऋतु प्रारम्भ.

तिथ्यादि पञ्चांग (भा. स्टैं. टा.)

मास पक्ष	मार्च 2004 ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्रराशि प्रवेशकाल घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा - ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	10	चं.	26	57	आर्द्रा	–	–	प्री.	10	47	मिथुन		6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	25	17	56	1	नेपच्यून श्रव. 4 में 22/50, मार्च प्रारम्भ,
	2	11	मं.	28	35	आर्द्रा	07	27	आ.	11	15	क. 27	02	6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	24	17	57	2	भ. 15/51 से 28/35 तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.).
	3	12	बु.	29	35	पुन.	09	30	सौ.	11	16	कर्क		6	51	18	19	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	गोबिन्द द्वादशी,
	4	13	गु.	29	54	पुष्य	10	55	शो.	10	48	कर्क		6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पूभा. में 9/21, बुध पू भा. में 8/21, व गुरु पूफा. 2 में 19/59, प्रदोष व्रत,
	5	14	शु.	29	36	आश्ले.	11	41	अ.	09	49	सिं. 11	41	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 29/38 बाद ,
	6	15	श.	28	44	मघा	11	52	सु.	08	21	सिंह		6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 17/14 तक, मंगल कृत्ति. में 20/21, श्री सत्यनारायण व्रत, होलिका दहन (A)
									धृ	30	28																				
चैत्र कृष्ण पक्ष	7	1	र.	27	26	पू.फा.	11	32	शू.	28	14	क. 17	23	6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शनि मार्गी 22/21, वसन्तोत्सव, होलामेला, (B)
	8	2	चं.	25	48	उ.फा.	10	48	गं.	25	44	कन्या		6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	00	8	
	9	3	मं.	23	55	हस्त	09	46	वृ.	23	02	तु. 21	10	6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	17	18	00	9	भ. 12/53 से 23/55 तक, बुध मीन मे 12/45.
	10	4	बु.	21	53	चित्रा	08	32	ध्रु.	20	14	तुला		6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	01	10	बुध उ. भा. में 29/33, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	11	5	गु.	19	47	स्वा.	07	11	व्या.	17	22	वृ. 24	08	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	01	11	मंगल वृष में 25/09, मेला श्री शीतला माता कुराली (पं).
						वि.	29	47																							
	12	6	शु.	17	40	अनु.	28	23	ह.	14	28	वृश्चिक		6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	02	12	भ. 17/40 से 28/38 तक, शुक्र भर, में 14/11, राहु भर 2 (C)
	13	7	श.	15	33	ज्ये.	27	00	व.	11	35	ध. 27	00	6	39	18	26	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	02	13	
	14	8	र.	13	29	मूल	25	42	सि.	08	44	धनु		6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	03	14	सं सूर्य मीन में 9/33, पुण्यकाल 15/58 तक,
									व्य.	29	56																				
	15	9	चं.	11	30	पू.षा.	24	29	व.	27	14	म. 30	12	6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	03	15	भ. 22/33 बाद.
	16	10	मं.	09	38	उ.षा.	23	25	प.	24	39	मकर		6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	04	16	भ. 9/38 तक, पाप मोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
	17	11/	बु.	07	56	श्रव.	22	33	शि.	22	14	मकर		6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	09	18	04	17	सूर्य उ. भा. में 17/51, बुध रेव.में 27/06, बुध पश्चिम में उदित 28/28, (D)
		/12		30	27																										
	18	13	गु.	29	17	धनि.	21	57	सि.	20	02	कु. 10	13	6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	08	18	05	18	भ. 29/17 बाद, पंचक प्रारम्भ 10/13, प्रदोष व्रत,
	19	14	शु.	28	30	शत.	21	43	सा.	18	07	कुम्भ		6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	07	18	05	19	भ. 16/50 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.).
	20	30	श.	28	11	पू.भा.	21	55	शु.	16	33	मी. 15	49	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	06	18	06	20	सूर्य सायन मेष में 12/19, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, शनैश्चरी अमा (E)

(A) होलाष्टक समाप्त, (B) श्री आनन्दपुर साहब (पंजाब), (C) केतु स्वा. 4 में 20/20, यूरेनस शत. 2 में 27/41, (D) पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.), (E) चान्द्र संवत्सर 2060 वि. पूर्ण,

अमृतसर और जम्मू के सूर्योदयास्त (1 जनवरी से 31 दिसम्बर 2002 ई. तक)

तारीख	जनवरी								फरवरी								मार्च							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	7	34	17	33	7	37	17	30	7	28	18	00	7	30	17	58	7	02	18	24	7	03	18	23
2	7	35	17	34	7	37	17	31	7	27	18	01	7	29	17	59	7	01	18	25	7	02	18	24
3	7	35	17	35	7	37	17	32	7	27	18	02	7	29	18	00	7	00	18	26	7	00	18	25
4	7	35	17	36	7	38	17	33	7	26	18	03	7	28	18	01	6	58	18	26	6	59	18	26
5	7	35	17	36	7	38	17	33	7	25	18	04	7	27	18	02	6	57	18	27	6	58	18	26
6	7	35	17	37	7	38	17	34	7	25	18	05	7	26	18	03	6	56	18	28	6	57	18	27
7	7	35	17	38	7	38	17	35	7	24	18	06	7	25	18	04	6	55	18	29	6	55	18	28
8	7	35	17	39	7	38	17	36	7	23	18	07	7	25	18	05	6	54	18	29	6	54	18	29
9	7	35	17	40	7	38	17	37	7	22	18	08	7	24	18	06	6	53	18	30	6	53	18	29
10	7	35	17	40	7	38	17	38	7	21	18	08	7	23	18	07	6	51	18	31	6	52	18	30
11	7	35	17	41	7	38	17	39	7	20	18	09	7	22	18	08	6	50	18	31	6	50	18	31
12	7	35	17	42	7	38	17	39	7	20	18	10	7	21	18	08	6	49	18	32	6	49	18	32
13	7	35	17	43	7	38	17	40	7	19	18	11	7	20	18	09	6	48	18	33	6	48	18	32
14	7	35	17	44	7	38	17	41	7	18	18	12	7	19	18	10	6	46	18	34	6	47	18	33
15	7	35	17	45	7	37	17	42	7	17	18	13	7	18	18	11	6	45	18	34	6	45	18	34
16	7	35	17	46	7	37	17	43	7	16	18	14	7	17	18	12	6	44	18	35	6	44	18	35
17	7	34	17	47	7	37	17	44	7	15	18	14	7	16	18	13	6	43	18	36	6	43	18	35
18	7	34	17	47	7	37	17	45	7	14	18	15	7	15	18	14	6	41	18	36	6	41	18	36
19	7	34	17	48	7	36	17	46	7	13	18	16	7	14	18	15	6	40	18	37	6	40	18	37
20	7	34	17	49	7	36	17	47	7	12	18	17	7	13	18	16	6	39	18	38	6	39	18	38
21	7	33	17	50	7	36	17	48	7	11	18	18	7	12	18	16	6	38	18	38	6	37	18	38
22	7	33	17	51	7	35	17	49	7	10	18	18	7	11	18	17	6	36	18	39	6	36	18	39
23	7	33	17	52	7	35	17	50	7	09	18	19	7	10	18	18	6	35	18	40	6	35	18	40
24	7	32	17	53	7	34	17	51	7	08	18	20	7	09	18	19	6	34	18	40	6	34	18	40
25	7	32	17	54	7	34	17	51	7	07	18	21	7	08	18	20	6	32	18	41	6	32	18	41
26	7	31	17	55	7	33	17	52	7	06	18	22	7	07	18	21	6	31	18	42	6	31	18	42
27	7	31	17	56	7	33	17	53	7	05	18	22	7	05	18	21	6	30	18	42	6	30	18	43
28	7	30	17	57	7	32	17	54	7	03	18	23	7	04	18	22	6	29	18	43	6	28	18	43
29	7	30	17	58	7	32	17	55									6	27	18	44	6	27	18	44
30	7	29	17	58	7	31	17	56									6	26	18	44	6	26	18	45
31	7	29	17	59	7	31	17	57									6	25	18	45	6	24	18	45

तारीख	अप्रैल								मई								जून							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	6	24	18	46	6	23	18	46	5	50	19	06	5	48	19	07	5	31	19	26	5	28	19	29
2	6	22	18	46	6	22	18	47	5	49	19	06	5	47	19	08	5	30	19	27	5	28	19	29
3	6	21	18	47	6	20	18	47	5	48	19	07	5	46	19	09	5	30	19	27	5	27	19	30
4	6	20	18	48	6	19	18	48	5	47	19	08	5	45	19	10	5	30	19	28	5	27	19	30
5	6	19	18	48	6	18	18	49	5	46	19	09	5	44	19	10	5	30	19	28	5	27	19	31
6	6	17	18	49	6	17	18	50	5	45	19	09	5	43	19	11	5	30	19	29	5	27	19	31
7	6	16	18	50	6	15	18	50	5	44	19	10	5	42	19	12	5	29	19	29	5	27	19	32
8	6	15	18	50	6	14	18	51	5	44	19	11	5	42	19	13	5	29	19	30	5	27	19	32
9	6	14	18	51	6	13	18	52	5	43	19	11	5	41	19	13	5	29	19	30	5	26	19	33
10	6	13	18	52	6	12	18	52	5	42	19	12	5	40	19	14	5	29	19	30	5	26	19	33
11	6	11	18	52	6	10	18	53	5	41	19	13	5	39	19	15	5	29	19	31	5	26	19	34
12	6	10	18	53	6	09	18	54	5	41	19	13	5	38	19	15	5	29	19	31	5	26	19	34
13	6	09	18	54	6	08	18	55	5	40	19	14	5	38	19	16	5	29	19	32	5	26	19	34
14	6	08	18	54	6	07	18	55	5	39	19	15	5	37	19	17	5	29	19	32	5	26	19	35
15	6	07	18	55	6	05	18	56	5	38	19	15	5	36	19	18	5	29	19	32	5	26	19	35
16	6	05	18	56	6	04	18	57	5	38	19	16	5	35	19	18	5	29	19	33	5	26	19	35
17	6	04	18	56	6	03	18	57	5	37	19	17	5	35	19	19	5	30	19	33	5	27	19	36
18	6	03	18	57	6	02	18	58	5	37	19	17	5	34	19	20	5	30	19	33	5	27	19	36
19	6	02	18	58	6	01	18	59	5	36	19	18	5	34	19	20	5	30	19	34	5	27	19	36
20	6	01	18	58	6	00	19	00	5	35	19	19	5	33	19	21	5	30	19	34	5	27	19	37
21	6	00	18	59	5	58	19	00	5	35	19	19	5	32	19	22	5	30	19	34	5	27	19	37
22	5	59	19	00	5	57	19	01	5	34	19	20	5	32	19	22	5	30	19	34	5	27	19	37
23	5	58	19	00	5	56	19	02	5	34	19	21	5	31	19	23	5	31	19	34	5	28	19	37
24	5	57	19	01	5	55	19	02	5	33	19	21	5	31	19	24	5	31	19	35	5	28	19	37
25	5	56	19	02	5	54	19	03	5	33	19	22	5	30	19	24	5	31	19	35	5	28	19	38
26	5	55	19	02	5	53	19	04	5	33	19	22	5	30	19	25	5	31	19	35	5	29	19	38
27	5	54	19	03	5	52	19	05	5	32	19	23	5	30	19	26	5	32	19	35	5	29	19	38
28	5	53	19	04	5	51	19	05	5	32	19	24	5	29	19	26	5	32	19	35	5	29	19	38
29	5	52	19	04	5	50	19	06	5	31	19	24	5	29	19	27	5	32	19	35	5	30	19	38
30	5	51	19	05	5	49	19	07	5	31	19	25	5	28	19	27	5	33	19	35	5	30	19	38
31									5	31	19	25	5	28	19	28								

अमृतसर और जम्मू के सूर्योदयास्त (1 जनवरी से 31 दिसम्बर 2002 ई. तक)

तारीख	जुलाई								अगस्त								सितम्बर							
	अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू			
	सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	5	33	19	35	5	30	19	38	5	50	19	23	5	48	19	25	6	10	18	51	6	09	18	52
2	5	34	19	35	5	31	19	38	5	51	19	22	5	49	19	24	6	10	18	50	6	09	18	50
3	5	34	19	35	5	31	19	38	5	52	19	21	5	50	19	23	6	11	18	48	6	10	18	49
4	5	34	19	35	5	32	19	38	5	52	19	20	5	50	19	22	6	12	18	47	6	11	18	48
5	5	35	19	35	5	32	19	38	5	53	19	20	5	51	19	21	6	12	18	46	6	11	18	47
6	5	35	19	35	5	32	19	37	5	54	19	19	5	52	19	21	6	13	18	45	6	12	18	45
7	5	36	19	35	5	33	19	37	5	54	19	18	5	52	19	20	6	13	18	43	6	13	18	44
8	5	36	19	34	5	33	19	37	5	55	19	17	5	53	19	19	6	14	18	42	6	13	18	43
9	5	37	19	34	5	34	19	37	5	55	19	16	5	54	19	18	6	15	18	41	6	14	18	41
10	5	37	19	34	5	35	19	37	5	56	19	15	5	54	19	17	6	15	18	39	6	14	18	40
11	5	38	19	34	5	35	19	36	5	57	19	14	5	55	19	16	6	16	18	38	6	15	18	39
12	5	38	19	33	5	36	19	36	5	57	19	13	5	56	19	15	6	16	18	37	6	16	18	37
13	5	39	19	33	5	36	19	36	5	58	19	12	5	56	19	14	6	17	18	36	6	16	18	36
14	5	39	19	33	5	37	19	35	5	59	19	11	5	57	19	13	6	17	18	34	6	17	18	35
15	5	40	19	32	5	37	19	35	5	59	19	10	5	58	19	12	6	18	18	33	6	18	18	33
16	5	41	19	32	5	38	19	35	6	00	19	09	5	58	19	11	6	19	18	32	6	18	18	32
17	5	41	19	32	5	39	19	34	6	01	19	08	5	59	19	10	6	19	18	30	6	19	18	31
18	5	42	19	31	5	39	19	34	6	01	19	07	6	00	19	08	6	20	18	29	6	20	18	29
19	5	42	19	31	5	40	19	33	6	02	19	06	6	00	19	07	6	20	18	28	6	20	18	28
20	5	43	19	30	5	40	19	33	6	02	19	05	6	01	19	06	6	21	18	26	6	21	18	26
21	5	44	19	30	5	41	19	32	6	03	19	04	6	02	19	05	6	22	18	25	6	21	18	25
22	5	44	19	29	5	42	19	32	6	04	19	03	6	02	19	04	6	22	18	24	6	22	18	24
23	5	45	19	29	5	42	19	31	6	04	19	02	6	03	19	03	6	23	18	23	6	23	18	22
24	5	45	19	28	5	43	19	30	6	05	19	00	6	04	19	02	6	23	18	21	6	23	18	21
25	5	46	19	28	5	44	19	30	6	06	18	59	6	04	19	00	6	24	18	20	6	24	18	20
26	5	47	19	27	5	44	19	29	6	06	18	58	6	05	18	59	6	25	18	19	6	25	18	18
27	5	47	19	26	5	45	19	29	6	07	18	57	6	06	18	58	6	25	18	17	6	25	18	17
28	5	48	19	26	5	45	19	28	6	07	18	56	6	06	18	57	6	26	18	16	6	26	18	16
29	5	48	19	25	5	46	19	27	6	08	18	54	6	07	18	55	6	27	18	15	6	27	18	14
30	5	49	19	24	5	47	19	26	6	09	18	53	6	07	18	54	6	27	18	13	6	27	18	13
31	5	50	19	23	5	47	19	26	6	09	18	52	6	08	18	53								

अक्तूबर								नवम्बर								दिसम्बर								तारीख
अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				अमृतसर				जम्मू				
सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		
घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
6	28	18	12	6	28	18	12	6	50	17	38	6	52	17	36	7	16	17	22	7	19	17	20	1
6	28	18	11	6	29	18	10	6	51	17	37	6	53	17	35	7	17	17	22	7	19	17	20	2
6	29	18	10	6	29	18	09	6	52	17	36	6	53	17	34	7	18	17	22	7	20	17	20	3
6	30	18	08	6	30	18	08	6	53	17	35	6	54	17	33	7	19	17	22	7	21	17	20	4
6	30	18	07	6	31	18	06	6	53	17	34	6	55	17	32	7	19	17	22	7	22	17	20	5
6	31	18	06	6	32	18	05	6	54	17	33	6	56	17	31	7	20	17	22	7	23	17	20	6
6	32	18	05	6	32	18	04	6	55	17	33	6	57	17	31	7	21	17	22	7	24	17	20	7
6	32	18	03	6	33	18	03	6	56	17	32	6	58	17	30	7	22	17	23	7	24	17	20	8
6	33	18	02	6	34	18	01	6	57	17	31	6	59	17	29	7	22	17	23	7	25	17	20	9
6	34	18	01	6	34	18	00	6	58	17	31	7	00	17	28	7	23	17	23	7	26	17	20	10
6	34	18	00	6	35	17	59	6	59	17	30	7	01	17	28	7	24	17	23	7	27	17	20	11
6	35	17	59	6	36	17	58	7	00	17	29	7	02	17	27	7	25	17	23	7	27	17	20	12
6	36	17	57	6	37	17	56	7	00	17	29	7	02	17	26	7	25	17	24	7	28	17	21	13
6	36	17	56	6	37	17	55	7	01	17	28	7	03	17	26	7	26	17	24	7	29	17	21	14
6	37	17	55	6	38	17	54	7	02	17	28	7	04	17	25	7	27	17	24	7	29	17	21	15
6	38	17	54	6	39	17	53	7	03	17	27	7	05	17	25	7	27	17	25	7	30	17	22	16
6	39	17	53	6	40	17	52	7	04	17	26	7	06	17	24	7	28	17	25	7	31	17	22	17
6	39	17	52	6	40	17	50	7	05	17	26	7	07	17	24	7	28	17	25	7	31	17	22	18
6	40	17	50	6	41	17	49	7	06	17	26	7	08	17	23	7	29	17	26	7	32	17	23	19
6	41	17	49	6	42	17	48	7	07	17	25	7	09	17	23	7	30	17	26	7	32	17	23	20
6	42	17	48	6	43	17	47	7	07	17	25	7	10	17	22	7	30	17	27	7	33	17	24	21
6	42	17	47	6	43	17	46	7	08	17	24	7	11	17	22	7	31	17	27	7	33	17	24	22
6	43	17	46	6	44	17	45	7	09	17	24	7	12	17	22	7	31	17	28	7	34	17	25	23
6	44	17	45	6	45	17	44	7	10	17	24	7	12	17	21	7	32	17	28	7	34	17	25	24
6	45	17	44	6	46	17	43	7	11	17	23	7	13	17	21	7	32	17	29	7	35	17	26	25
6	45	17	43	6	47	17	42	7	12	17	23	7	14	17	21	7	32	17	29	7	35	17	26	26
6	46	17	42	6	48	17	41	7	13	17	23	7	15	17	20	7	33	17	30	7	36	17	27	27
6	47	17	41	6	48	17	40	7	14	17	23	7	16	17	20	7	33	17	31	7	36	17	28	28
6	48	17	40	6	49	17	39	7	14	17	23	7	17	17	20	7	33	17	31	7	36	17	28	29
6	49	17	39	6	50	17	38	7	15	17	23	7	18	17	20	7	34	17	32	7	37	17	29	30
6	49	17	38	6	51	17	37									7	34	17	33	7	37	17	30	31

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
जनवरी 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	ज्ये.	20 16	1 53	7 31	13 09
1/2	मूल	18 49	0 29	6 10	11 52
2/3	पू.षा.	17 36	23 21	5 08	10 56
3/4	उ.षा.	16 46	22 37	4 31	10 26
4/5	श्रव.	16 24	22 24	4 26	10 31
5/6	धनि.	16 38	22 47	4 59	11 13
6/7	शत.	17 30	23 50	6 12	12 37
7/8	पू.भा.	19 04	1 33	8 04	14 38
8/9	उ.भा.	21 14	3 52	10 31	17 12
9/10	रेव.	23 55	6 38	13 23	20 08
11	अश्वि.	2 54	9 40	16 26	23 12
12/13	भर.	5 58	12 42	19 26	2 09
13/14	कृत्ति.	8 50	15 30	22 08	4 44
14/15	रोहि.	11 19	17 51	0 20	6 48
15/16	मृग	13 13	19 36	1 56	8 14
16/17	आर्द्रा	14 29	20 42	2 52	9 00
17/18	पुन.	15 05	21 08	3 09	9 07
18/19	पुष्य	15 04	20 59	2 51	8 42
19/20	आश्ले.	14 32	20 20	2 06	7 51
20/21	मघा	13 35	19 18	0 59	6 40
21/22	पू.फा.	12 21	18 00	23 39	5 18
22/23	उ.फा.	10 56	16 34	22 12	3 50
23/24	हस्त	9 27	15 05	20 43	2 21
24/25	चित्रा	8 00	13 38	19 17	0 56
25	स्वा.	6 36	12 16	17 56	23 37
26	वि.	5 19	11 01	16 43	22 26
27	अनु.	4 10	9 54	15 38	21 24
28	ज्ये.	3 09	8 56	14 43	20 31
29	मूल	2 19	8 09	13 59	19 50
30	पू.षा.	1 42	7 34	13 28	19 23
31	उ.षा.	1 19	7 17	13 15	19 15

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
फरवरी 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	श्रव.	1 16	7 19	13 24	19 30
2	धनि.	1 38	7 47	13 59	20 13
3	शत.	2 28	8 46	15 05	21 27
4	पू.भा.	3 51	10 17	16 45	23 15
5/6	उ.भा.	5 47	12 21	18 57	1 35
6/7	रेव.	8 14	14 55	21 38	4 21
7/8	अश्वि.	11 06	17 52	0 38	7 24
8/9	भर.	14 11	20 58	3 44	10 30
9/10	कृत्ति.	17 15	23 59	6 42	13 23
10/11	रोहि.	20 02	2 40	9 15	15 48
11/12	मृग	22 18	4 46	11 11	17 33
12/13	आर्द्रा	23 53	6 09	12 23	18 33
14	पुन.	0 40	6 45	12 46	18 45
15	पुष्य	0 41	6 34	12 24	18 12
15/16	आश्ले.	23 58	5 41	11 22	17 02
16/17	मघा	22 39	4 15	9 49	15 22
17/18	पू.फा.	20 53	2 24	7 53	13 22
18/19	उ.फा.	18 50	0 18	5 46	11 13
19/20	हस्त	16 41	22 08	3 36	9 04
20/21	चित्रा	14 33	20 03	1 33	7 04
21/22	स्वा.	12 35	18 08	23 42	5 17
22/23	वि.	10 53	16 31	22 10	3 50
23/24	अनु.	9 31	15 14	20 58	2 44
24/25	ज्ये.	8 30	14 19	20 09	2 00
25/26	मूल	7 52	13 46	19 41	1 38
26/27	पू.षा.	7 35	13 35	19 35	1 37
27/28	उ.षा.	7 40	13 44	19 50	1 57

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
मार्च 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
28/1	श्रव.	8 05	14 14	20 25	2 38
1/2	धनि.	8 51	15 06	21 23	3 41
2/3	शत.	10 00	16 21	22 44	5 08
3/4	पू.भा.	11 34	18 01	0 30	7 00
4/5	उ.भा.	13 33	20 06	2 42	9 19
5/6	रेव.	15 57	22 37	5 18	12 01
6/7	अश्वि.	18 45	1 29	8 15	15 01
7/8	भर.	21 48	4 35	11 23	18 10
9	कृत्ति.	0 58	7 45	14 31	21 16
10/11	रोहि.	4 00	10 43	17 24	0 04
11/12	मृग	6 41	13 16	19 49	2 19
12/13	आर्द्रा	8 47	15 12	21 34	3 52
13/14	पुन.	10 08	16 20	22 29	4 35
14/15	पुष्य	10 38	16 37	22 33	4 26
15/16	आश्ले.	10 16	16 04	21 48	3 29
16/17	मघा	9 08	14 45	20 19	1 51
17	पू.फा.	7 21	12 49	18 15	23 40
18	उ.फा.	5 03	10 26	15 47	21 07
19	हस्त	2 27	7 46	13 05	18 24
19/20	चित्रा	23 43	5 02	10 22	15 42
20/21	स्वा.	21 02	2 24	7 46	13 09
21/22	वि.	18 34	0 00	5 28	10 56
22/23	अनु.	16 27	21 59	3 33	9 09
23/24	ज्ये.	14 47	20 27	2 09	7 53
24/25	मूल	13 39	19 27	1 18	7 10
25/26	पू.षा.	13 04	19 01	1 00	7 00
26/27	उ.षा.	13 03	19 08	1 15	7 23
27/28	श्रव.	13 34	19 46	2 00	8 16
28/29	धनि.	14 34	20 53	3 14	9 37
29/30	शत.	16 01	22 26	4 53	11 22
30/31	पू.भा.	17 52	0 23	6 56	13 30

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
अप्रैल 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	उ.भा.	20 05	2 42	9 20	15 58
1/ 2	रेव.	22 38	5 20	12 02	18 45
3	अश्वि.	1 29	8 14	14 59	21 45
4/ 5	भर.	4 32	11 19	18 06	0 54
5/ 6	कृत्ति.	7 42	14 29	21 16	4 03
6/ 7	रोहि.	10 49	17 34	0 18	7 02
7/ 8	मृग	13 43	20 23	3 02	9 39
8/ 9	आर्द्रा	16 13	22 45	5 15	11 42
9/10	पुन.	18 07	0 29	6 48	13 04
10/11	पुष्य	19 17	1 26	7 33	13 37
11/12	आश्ले.	19 37	1 34	7 28	13 19
12/13	मघा	19 07	0 53	6 35	12 14
13/14	पू.फा.	17 51	23 25	4 57	10 27
14/15	उ.फा.	15 55	21 20	2 44	8 06
15/16	हस्त	13 27	18 46	0 05	5 22
16/17	चित्रा	10 38	15 54	21 09	2 24
17	स्वा.	7 39	12 54	18 10	23 25
18	वि.	4 41	9 58	15 16	20 35
19	अनु.	1 55	7 16	12 39	18 03
19/20	ज्ये.	23 29	4 57	10 27	15 59
20/21	मूल	21 33	3 09	8 48	14 29
21/22	पू.षा.	20 13	1 59	7 47	13 38
22/23	उ.षा.	19 32	1 29	7 28	13 29
23/24	श्रव.	19 34	1 41	7 50	14 02
24/25	धनि.	20 17	2 33	8 53	15 14
25/26	शत.	21 38	4 03	10 31	17 00
26/27	पू.भा.	23 32	6 05	12 39	19 16
28	उ.भा.	1 53	8 32	15 12	21 54
29/30	रेव.	4 36	11 19	18 03	0 48

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
मई 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/ 1	अश्वि.	7 33	14 19	21 05	3 52
1/ 2	भर.	10 39	17 26	0 13	7 00
2/ 3	कृत्ति.	13 47	20 34	3 20	10 06
3/ 4	रोहि.	16 52	23 36	6 20	13 03
4/ 5	मृग	19 45	2 26	9 05	15 43
5/ 6	आर्द्रा	22 19	4 54	11 27	17 59
7	पुन.	0 28	6 55	13 20	19 42
8	पुष्य	2 03	8 20	14 36	20 48
9	आश्ले.	2 58	9 06	15 10	21 12
10	मघा	3 11	9 07	15 01	20 52
11	पू.फा.	2 40	8 26	14 09	19 49
12	उ.फा.	1 27	7 03	12 37	18 09
12/13	हस्त	23 38	5 06	10 32	15 56
13/14	चित्रा	21 19	2 40	8 00	13 19
14/15	स्वा.	18 38	23 55	5 12	10 28
15/16	वि.	15 45	21 01	2 17	7 33
16/17	अनु.	12 50	18 07	23 24	4 43
17/18	ज्ये.	10 03	15 23	20 45	2 09
18/19	मूल	7 34	13 01	18 29	0 00
19	पू.षा.	5 33	11 08	16 45	22 25
20	उ.षा.	4 07	9 52	15 40	21 31
21	श्रव.	3 24	9 20	15 19	21 21
22	धनि.	3 26	9 34	15 45	21 59
23	शत.	4 15	10 35	16 57	23 21
24/25	पू.भा.	5 48	12 18	18 49	1 23
25/26	उ.भा.	7 59	14 36	21 16	3 57
26/27	रेव.	10 39	17 22	0 07	6 52
27/28	अश्वि.	13 38	20 25	3 12	9 59
28/29	भर.	16 46	23 34	6 21	13 08
29/30	कृत्ति.	19 54	2 40	9 26	16 10
30/31	रोहि.	22 54	5 37	12 19	19 00

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
जून 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	मृग	1 39	8 18	14 55	21 30
2	आर्द्रा	4 04	10 37	17 08	23 38
3/ 4	पुन.	6 06	12 32	18 57	1 19
4/ 5	पुष्य	7 40	13 59	20 17	2 32
5/ 6	आश्ले.	8 45	14 56	21 06	3 13
6/ 7	मघा	9 18	15 21	21 22	3 21
7/ 8	पू.फा.	9 18	15 13	21 05	2 56
8/ 9	उ.फा.	8 44	14 31	20 16	1 58
9/10	हस्त	7 39	13 18	18 55	0 30
10	चित्रा	6 04	11 37	17 07	22 37
11	स्वा.	4 05	9 32	14 57	20 22
12	वि.	1 46	7 09	12 32	17 54
12/13	अनु.	23 16	4 37	9 59	15 20
13/14	ज्ये.	20 42	2 04	7 26	12 49
14/15	मूल	18 13	23 38	5 04	10 31
15/16	पू.षा.	16 00	21 30	3 01	8 35
16/17	उ.षा.	14 10	19 48	1 28	7 10
17/18	श्रव.	12 54	18 42	0 31	6 24
18/19	धनि.	12 19	18 17	0 18	6 22
19/20	शत.	12 29	18 39	0 52	7 08
20/21	पू.भा.	13 27	19 49	2 14	8 41
21/22	उ.भा.	15 11	21 43	4 17	10 54
22/23	रेव.	17 32	0 13	6 55	13 38
23/24	अश्वि.	20 23	3 08	9 55	16 41
24/25	भर.	23 29	6 16	13 03	19 50
26	कृत्ति.	2 37	9 22	16 08	22 52
27/28	रोहि.	5 35	12 17	18 57	1 37
28/29	मृग	8 14	14 50	21 25	3 57
29/30	आर्द्रा	10 28	16 58	23 25	5 51

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4	चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4	चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
जुलाई 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	अगस्त 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	सितंबर 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/1	पुन.	12 15	18 37	0 57	7 15	31/1	पू.फा.	20 42	2 33	8 22	14 11	31/1	स्वा.	22 27	4 03	9 38	15 14
1/2	पुष्य	13 32	19 47	2 00	8 12	1/2	उ.फा.	19 59	1 45	7 31	13 17	1/2	वि.	20 51	2 27	8 05	13 43
2/3	आश्ले.	14 21	20 30	2 36	8 41	2/3	हस्त	19 01	0 45	6 29	12 12	2/3	अनु.	19 21	1 00	6 39	12 20
3/4	मघा	14 45	20 47	2 47	8 46	3/4	चित्रा	17 54	23 37	5 18	11 00	3/4	ज्ये.	18 00	23 42	5 24	11 07
4/5	पू.फा.	14 44	20 40	2 35	8 29	4/5	स्वा.	16 41	22 21	4 02	9 42	4/5	मूल	16 51	22 35	4 20	10 06
5/6	उ.फा.	14 21	20 12	2 01	7 50	5/6	वि.	15 22	21 02	2 41	8 21	5/6	पू.षा.	15 53	21 41	3 29	9 18
6/7	हस्त	13 37	19 22	1 07	6 51	6/7	अनु.	14 00	19 39	1 18	6 57	6/7	उ.षा.	15 09	21 00	2 52	8 45
7/8	चित्रा	12 33	18 14	23 54	5 33	7/8	ज्ये.	12 36	18 14	23 53	5 32	7/8	श्रव.	14 40	20 35	2 32	8 29
8/9	स्वा.	11 11	16 48	22 24	3 59	8/9	मूल	11 11	16 51	22 31	4 10	8/9	धनि.	14 29	20 29	2 31	8 34
9/10	वि.	9 34	15 07	20 40	2 12	9/10	पू.षा.	9 51	15 32	21 13	2 55	9/10	शत.	14 40	20 46	2 54	9 05
10/11	अनु.	7 44	13 15	18 46	0 16	10/11	उ.षा.	8 38	14 22	20 07	1 53	10/11	पू.भा.	15 16	21 30	3 46	10 03
11	ज्ये.	5 46	11 16	16 46	22 16	11/12	श्रव.	7 40	13 28	19 18	1 09	11/12	उ.भा.	16 23	22 45	5 08	11 34
12	मूल	3 46	9 16	14 47	20 19	12/13	धनि.	7 01	12 56	18 52	0 50	12/13	रेव.	18 02	0 31	7 03	13 37
13	पू.षा.	1 51	7 24	12 58	18 33	13/14	शत.	6 50	12 53	18 57	1 04	13/14	अश्वि.	20 12	2 49	9 28	16 09
14	उ.षा.	0 09	5 47	11 26	17 06	14/15	पू.भा.	7 13	13 25	19 39	1 55	14/15	भर.	22 51	5 34	12 19	19 04
14/15	श्रव.	22 49	4 33	10 19	16 08	15/16	उ.भा.	8 14	14 35	20 59	3 25	16	कृत्ति.	1 51	8 37	15 25	22 12
15/16	धनि.	21 58	3 51	9 47	15 45	16/17	रेव.	9 54	16 25	22 58	5 34	17/18	रोहि.	4 59	11 46	18 32	1 18
16/17	शत.	21 45	3 49	9 55	16 04	17/18	अश्वि.	12 11	18 50	1 31	8 14	18/19	मृग	8 02	14 46	21 27	4 07
17/18	पू.भा.	22 15	4 30	10 47	17 07	18/19	भर.	14 57	21 42	4 28	11 14	19/20	आर्द्रा	10 46	17 22	23 55	6 27
18/19	उ.भा.	23 30	5 56	12 24	18 55	19/20	कृत्ति.	18 01	0 47	7 34	14 20	20/21	पुन.	12 55	19 21	1 45	8 05
20	रेव.	1 28	8 03	14 40	21 20	20/21	रोहि.	21 06	3 51	10 34	17 17	21/22	पुष्य	14 22	20 37	2 48	8 56
21/22	अश्वि.	4 01	10 43	17 27	0 12	21/22	मृग	23 58	6 37	13 14	19 49	22/23	आश्ले.	15 02	21 04	3 04	9 00
22/23	भर.	6 58	13 44	20 31	3 18	23	आर्द्रा	2 22	8 52	15 20	21 45	23/24	मघा	14 54	20 46	2 34	8 20
23/24	कृत्ति.	10 04	16 51	23 36	6 21	24	पुन.	4 08	10 28	16 46	23 00	24/25	पू.फा.	14 04	19 46	1 25	7 03
24/25	रोहि.	13 05	19 48	2 29	9 09	25	पुष्य	5 12	11 21	17 28	23 32	25/26	उ.फा.	12 38	18 12	23 45	5 16
25/26	मृग	15 47	22 23	4 57	11 29	26	आश्ले.	5 34	11 33	17 30	23 25	26/27	हस्त	10 46	16 14	21 42	3 09
26/27	आर्द्रा	17 59	0 27	6 53	13 16	27	मघा	5 17	11 08	16 56	22 43	27/28	चित्रा	8 36	14 02	19 27	0 53
27/28	पुन.	19 37	1 56	8 13	14 27	28	पू.फा.	4 28	10 12	15 54	21 35	28	स्वा.	6 18	11 43	17 09	22 35
28/29	पुष्य	20 40	2 50	8 58	15 04	29	उ.फा.	3 15	8 54	14 32	20 09	29	वि.	4 01	9 28	14 56	20 24
29/30	आश्ले.	21 08	3 10	9 11	15 10	30	हस्त	1 45	7 21	12 57	18 32	30	अनु.	1 54	7 24	12 55	18 27
30/31	मघा	21 07	3 03	8 57	14 50	31	चित्रा	0 07	5 42	11 17	16 52						

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
अक्तूबर 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	ज्ये.	0 01	5 36	11 12	16 49
1/ 2	मूल	22 28	4 08	9 50	15 33
2/ 3	पू.षा.	21 18	3 05	8 53	14 42
3/ 4	उ.षा.	20 33	2 26	8 20	14 16
4/ 5	श्रव.	20 14	2 13	8 14	14 17
5/ 6	धनि.	20 21	2 27	8 34	14 43
6/ 7	शत.	20 54	3 06	9 20	15 36
7/ 8	पू.भा.	21 53	4 12	10 32	16 55
8/ 9	उ.भा.	23 18	5 44	12 11	18 40
10	रेव.	1 10	7 42	14 15	20 50
11	अश्वि.	3 27	10 05	16 44	23 24
12/13	भर.	6 06	12 49	19 33	2 18
13/14	कृत्ति.	9 04	15 50	22 37	5 25
14/15	रोहि.	12 12	19 00	1 48	8 35
15/16	मृग	15 22	22 08	4 53	11 37
16/17	आर्द्रा	18 20	1 01	7 41	14 19
17/18	पुन.	20 54	3 28	9 59	16 28
18/19	पुष्य	22 54	5 17	11 38	17 55
20	आश्ले.	0 10	6 21	12 29	18 35
21	मघा	0 37	6 36	12 32	18 26
22	पू.फा.	0 16	6 03	11 48	17 30
22/23	उ.फा.	23 10	4 47	10 21	15 54
23/24	हस्त	21 25	2 53	8 20	13 45
24/25	चित्रा	19 09	0 32	5 53	11 14
25/26	स्वा.	16 33	21 52	3 11	8 29
26/27	वि.	13 47	19 05	0 23	5 42
27/28	अनु.	11 00	16 20	21 40	3 01
28/29	ज्ये.	8 23	13 46	19 11	0 37
29	मूल	6 04	11 33	17 04	22 36
30	पू.षा.	4 11	9 47	15 26	21 06
31	उ.षा.	2 49	8 34	14 22	20 12

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
नवंबर 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	श्रव.	2 04	7 58	13 55	19 54
2	धनि.	1 56	8 00	14 06	20 15
3	शत.	2 26	8 39	14 55	21 12
4	पू.भा.	3 32	9 54	16 17	22 43
5/ 6	उ.भा.	5 10	11 40	18 10	0 43
6/ 7	रेव.	7 17	13 52	20 29	3 07
7/ 8	अश्वि.	9 46	16 27	23 08	5 51
8/ 9	भर.	12 34	19 18	2 03	8 48
9/10	कृत्ति.	15 34	22 21	5 08	11 55
10/11	रोहि.	18 42	1 29	8 16	15 03
11/12	मृग	21 49	4 35	11 21	18 06
13	आर्द्रा	0 50	7 33	14 14	20 55
14	पुन.	3 34	10 12	16 48	23 23
15/16	पुष्य	5 55	12 25	18 54	1 19
16/17	आश्ले.	7 43	14 04	20 23	2 38
17/18	मघा	8 52	15 02	21 09	3 14
18/19	पू.फा.	9 16	15 15	21 11	3 05
19/20	उ.फा.	8 55	14 43	20 28	2 11
20/21	हस्त	7 51	13 28	19 03	0 36
21	चित्रा	6 06	11 35	17 01	22 26
22	स्वा.	3 49	9 11	14 31	19 50
23	वि.	1 08	6 25	11 41	16 57
23/24	अनु.	22 12	3 27	8 42	13 57
24/25	ज्ये.	19 12	0 27	5 43	11 00
25/26	मूल	16 18	21 37	2 57	8 18
26/27	पू.षा.	13 41	19 06	0 32	6 01
27/28	उ.षा.	11 31	17 04	22 39	4 16
28/29	श्रव.	9 56	15 39	21 25	3 13
29/30	धनि.	9 04	14 58	20 55	2 55

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
दिसंबर 2003 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
30/ 1	शत.	8 58	15 04	21 13	3 25
1/ 2	पू.भा.	9 39	15 57	22 17	4 40
2/ 3	उ.भा.	11 05	17 33	0 03	6 35
3/ 4	रेव.	13 09	19 46	2 24	9 03
4/ 5	अश्वि.	15 44	22 26	5 10	11 54
5/ 6	भर.	18 39	1 25	8 11	14 58
6/ 7	कृत्ति.	21 45	4 32	11 19	18 07
8	रोहि.	0 53	7 40	14 26	21 12
9/10	मृग	3 57	10 42	17 25	0 08
10/11	आर्द्रा	6 50	13 31	20 11	2 50
11/12	पुन.	9 28	16 05	22 40	5 14
12/13	पुष्य	11 47	18 18	0 47	7 15
13/14	आश्ले.	13 42	20 06	2 29	8 50
14/15	मघा	15 09	21 26	3 41	9 54
15/16	पू.फा.	16 05	22 14	4 20	10 24
16/17	उ.फा.	16 26	22 26	4 23	10 18
17/18	हस्त	16 10	22 00	3 48	9 33
18/19	चित्रा	15 17	20 58	2 36	8 13
19/20	स्वा.	13 47	19 20	0 51	6 20
20/21	वि.	11 47	17 12	22 36	3 59
21/22	अनु.	9 21	14 41	20 00	1 19
22	ज्ये.	6 37	11 55	17 12	22 29
23	मूल	3 46	9 03	14 20	19 38
24	पू.षा.	0 57	6 16	11 36	16 58
24/25	उ.षा.	22 21	3 46	9 12	14 40
25/26	श्रव.	20 10	1 42	7 17	12 54
26/27	धनि.	18 34	0 16	6 01	11 49
27/28	शत.	17 41	23 35	5 32	11 33
28/29	पू.भा.	17 37	23 44	5 54	12 08
29/30	उ.भा.	18 25	0 44	7 07	13 33
30/31	रेव.	20 01	2 32	9 06	15 42

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
जनवरी 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	अश्वि.	22 20	4 59	11 41	18 24
2	भर.	1 09	7 54	14 41	21 28
3/4	कृत्ति.	4 15	11 03	17 51	0 39
4/5	रोहि.	7 26	14 13	21 00	3 45
5/6	मृग	10 30	17 14	23 56	6 38
6/7	आर्द्रा	13 18	19 56	2 34	9 10
7/8	पुन.	15 44	22 18	4 49	11 19
8/9	पुष्य	17 48	0 15	6 41	13 05
9/10	आश्ले.	19 27	1 48	8 08	14 26
10/11	मघा	20 43	2 58	9 12	15 24
11/12	पू.फा.	21 35	3 45	9 53	15 59
12/13	उ.फा.	22 04	4 08	10 10	16 10
13/14	हस्त	22 09	4 06	10 02	15 56
14/15	चित्रा	21 49	3 40	9 29	15 16
15/16	स्वा.	21 02	2 47	8 29	14 10
16/17	वि.	19 50	1 28	7 04	12 39
17/18	अनु.	18 13	23 45	5 16	10 46
18/19	ज्ये.	16 15	21 42	3 09	8 35
19/20	मूल	14 01	19 26	0 50	6 15
20/21	पू.षा.	11 39	17 03	22 27	3 52
21/22	उ.षा.	9 17	14 43	20 10	1 37
22	श्रव.	7 06	12 36	18 08	23 41
23	धनि.	5 17	10 54	16 33	22 14
24	शत.	3 58	9 45	15 34	21 26
25	पू.भा.	3 21	9 18	15 19	21 23
26	उ.भा.	3 30	9 40	15 53	22 10
27	रेव.	4 29	10 51	17 17	23 45
28/29	अश्वि.	6 16	12 49	19 25	2 03
29/30	भर.	8 43	15 24	22 08	4 52
30/31	कृत्ति.	11 38	18 24	1 11	7 59

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
फरवरी 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/1	रोहि.	14 46	21 33	4 20	11 07
1/2	मृग	17 52	0 37	7 20	14 02
2/3	आर्द्रा	20 43	3 21	9 59	16 34
3/4	पुन.	23 08	5 39	12 09	18 37
5	पुष्य	1 02	7 26	13 48	20 08
6	आश्ले.	2 26	8 42	14 56	21 09
7	मघा	3 20	9 29	15 36	21 42
8	पू.फा.	3 47	9 50	15 52	21 53
9	उ.फा.	3 52	9 51	15 48	21 44
10	हस्त	3 39	9 34	15 27	21 19
11	चित्रा	3 11	9 01	14 51	20 40
12	स्वा.	2 28	8 15	14 01	19 47
13	वि.	1 32	7 16	12 59	18 42
14	अनु.	0 23	6 04	11 44	17 24
14/15	ज्ये.	23 02	4 40	10 18	15 55
15/16	मूल	21 31	3 07	8 42	14 17
16/17	पू.षा.	19 52	1 26	7 01	12 35
17/18	उ.षा.	18 10	23 45	5 20	10 55
18/19	श्रव.	16 32	22 08	3 46	9 25
19/20	धनि.	15 04	20 45	2 27	8 11
20/21	शत.	13 57	19 44	1 33	7 24
21/22	पू.भा.	13 17	19 13	1 10	7 10
22/23	उ.भा.	13 13	19 19	1 27	7 37
23/24	रेव.	13 51	20 07	2 26	8 47
24/25	अश्वि.	15 12	21 38	4 08	10 40
25/26	भर.	17 14	23 50	6 28	13 08
26/27	कृत्ति.	19 50	2 33	9 18	16 03
27/28	रोहि.	22 49	5 35	12 22	19 08
29	मृग	1 54	8 40	15 25	22 09

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
मार्च 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1/2	आर्द्रा	4 52	11 33	18 13	0 51
2/3	पुन.	7 27	14 01	20 33	3 02
3/4	पुष्य	9 30	15 55	22 17	4 37
4/5	आश्ले.	10 55	17 10	23 23	5 33
5/6	मघा	11 41	17 47	23 51	5 52
6/7	पू.फा.	11 52	17 50	23 46	5 40
7/8	उ.फा.	11 32	17 23	23 13	5 01
8/9	हस्त	10 48	16 34	22 19	4 03
9/10	चित्रा	9 46	15 28	21 10	2 51
10/11	स्वा.	8 32	14 12	19 52	1 32
11/12	वि.	7 11	12 50	18 29	0 08
12	अनु.	5 47	11 26	17 05	22 44
13	ज्ये.	4 23	10 02	15 41	21 21
14	मूल	3 00	8 40	14 21	20 01
15	पू.षा.	1 42	7 23	13 05	18 47
16	उ.षा.	0 29	6 12	11 56	17 40
16/17	श्रव.	23 25	5 11	10 57	16 45
17/18	धनि.	22 33	4 22	10 13	16 04
18/19	शत.	21 57	3 51	9 47	15 44
19/20	पू.भा.	21 43	3 43	9 45	15 49
20/21	उ.भा.	21 55	4 03	10 12	16 24
21/22	रेव.	22 38	4 54	11 12	17 33
22/23	अश्वि.	23 55	6 20	12 47	19 16
24	भर.	1 47	8 20	14 55	21 32
25/26	कृत्ति.	4 10	10 50	17 32	0 15
26/27	रोहि.	6 59	13 43	20 29	3 15
27/28	मृग	10 01	16 47	23 33	6 19
28/29	आर्द्रा	13 04	19 48	2 31	9 12
29/30	पुन.	15 53	22 31	5 08	11 43
30/31	पुष्य	18 15	0 45	7 13	13 38

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टें. टा.)

चंद्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
अप्रैल 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
31/ 1	आश्ले.	20 01	2 20	8 38	14 52
1/ 2	मघा	21 04	3 13	9 19	15 23
2/ 3	पू.फा.	21 23	3 22	9 17	15 11
3/ 4	उ.फा.	21 02	2 51	8 37	14 22
4/ 5	हस्त	20 05	1 45	7 25	13 02
5/ 6	चित्रा	18 39	0 14	5 47	11 20
6/ 7	स्वा.	16 52	22 23	3 53	9 23
7/ 8	वि.	14 53	20 22	1 51	7 20
8/ 9	अनु.	12 49	18 18	23 47	5 17
9/10	ज्ये.	10 47	16 17	21 49	3 21
10/11	मूल	8 53	14 27	20 01	1 37
11/12	पू.षा.	7 14	12 51	18 30	0 10

नक्षत्र चरण-प्रवेशकाल से भुक्तदशा का ज्ञान

चन्द्र के नक्षत्र में प्रवेशकाल द्वारा जन्मकालिक दशा का लगभग भुक्तकाल बड़ी ही आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है:-

नीचे नं. (१) एवं (२) भुक्त-दशा-साधन सारणियां दी गई हैं। जन्मकालिक नक्षत्र के चरण का भुक्तकाल (घं.मि.) ज्ञात करें। सारणी (१) से जन्मकालिक नक्षत्र के चरण के नीचे लिखे वर्ष, मास उठा लें। इनमें सारणी (२) से नक्षत्र-चरण के भुक्तकाल के आगे दशेश ग्रह क नीचे लिखे गए वर्ण, मास जोड़ दीजिए। बस यही जन्मकालिक दशा का भुक्तकाल होगा। दशेश का ज्ञान सारणी (१) से हो जाता है।

उदाहरण :- मान लीजिए, कि किसी बच्चे का जन्म ३० मार्च सन् २००१ को ११ घं. ३२ मि. पर हुआ है। स्पष्ट है कि इसका जन्म रोहिणी के तीसरे चरण में हुआ है। जन्म के समय रोहिणी का तृतीय चरण २ घं. ४ मि. भुक्त है। 'भुक्तदशा साधन सारणी(१)' में रोहिणी के तृतीय चरण के नीचे ५ वर्ष ० मास लिखा है। इसी सारणी में रोहिणी का 'दशेश' चन्द्र भी लिखा है। 'भुक्तदशा साधन सारणी (२)' में रोहिणी के तृतीय चरण के भुक्तकाल २ घं. ० . के आगे 'दशेश' चन्द्र वाले कालम में ० वर्ष १० मास लिखे हैं। इन्हें ५ वर्ष ० मास में जोड़ने पर ५ वर्ष १० मास हुए। यही इस बच्चे के जन्म के समय चन्द्र की दशा का लगभग भुक्तकाल है।

भुक्त-दशा -साधन सारणी (१)

नक्षत्र			दशेश	१ चरण		२ चरण		३ चरण		४ चरण	
				वर्ष	मास	वर्ष	मास	वर्ष	मास	वर्ष	मास
अश्वि	मघा	मूल	के	००	००	१	९	३	६	५	३
भ.	पू.फा.	पू.षा.	शु.	००	००	५	००	१०	००	१५	००
कृ.	उ.फा.	उ.षा.	सू.	००	००	१	६	३	००	४	६
रो.	हस्त	श्रव.	चं.	००	००	२	६	५	००	७	६
मृ.	चित्रा	ध.	मं.	००	००	१	९	३	६	५	३
आर्द्रा	स्वा.	शत.	रा.	००	००	४	६	९	००	१३	६
पुन.	विशा.	पू.भा.	गु.	००	००	४	००	८	००	१२	००
पुष्य	अनु.	उ.भा.	श.	००	००	४	९	९	६	१४	३
आश्ले.	ज्येष्ठा	रेव.	बु.	००	००	४	३	८	६	१२	९

भुक्त-दशा -साधन सारणी (२)

नक्षत्र चरण का भुक्त काल		दशेश सूर्य		दशेश चन्द्र		दशेश भौम, केतु		दशेश बुध		दशेश गुरु		दशेश शुक्र		दशेश शनि		दशेश राहु	
घं.	मि.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	मा.
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
०	३०	०	१	०	२	०	२	०	४	०	४	०	५	०	५	०	४
१	००	०	३	०	५	०	३	०	८	०	८	०	१०	०	९	०	९
१	३०	०	४	०	७	०	५	१	१	१	०	१	३	१	२	१	१
२	००	०	६	०	१०	०	७	१	५	१	४	१	८	१	७	१	६
२	३०	०	७	१	००	०	९	१	९	१	८	२	१	२	००	१	१०
३	००	०	९	१	३	०	१०	२	१	२	००	२	६	२	४	२	३
३	३०	०	१०	१	५	१	०	२	६	२	४	२	११	२	९	२	७
४	००	१	०	१	८	१	२	२	१०	२	८	३	४	३	२	३	००
४	३०	१	१	१	१०	१	४	३	२	३	०	३	९	३	७	३	४
५	००	१	३	२	१	१	५	३	६	३	४	४	२	३	१	३	९
५	३०	१	४	२	३	१	७	३	११	३	८	४	७	४	४	४	१
६	००	१	६	२	६	१	९	४	३	४	००	५	००	४	९	४	६
*७	३०	१	६	२	६	१	९	४	३	४	००	५	००	४	९	४	६

* ६ घं.०० मि.और ७ घं.३० मि. के आगे इस सारणी में वर्ष-मास एक से ही हैं। सारणी में लगभग (मध्यम) मान का प्रयोग करने के कारण ऐसा लिखना आवश्यक था। पाठक इसे गलत न समझें।

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जनवरी 2003 ई. को अयनांश $23^0/53'/40''$

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
जनवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	8 16 14 32	7 22 08 28	6 25 40 21	9 04 17 08	3 22 59 37	6 29 46 34	2 00 33 01	1 13 08 19	1 14 35 02	-23 03	-23 23	- 0 41	05 39	16 01
2	8 17 15 43	8 06 16 34	6 26 19 03	9 04 30 50	3 22 54 25	7 00 43 10	2 00 28 25	1 13 05 08	1 14 33 07	-22 58	-25 22	- 1 55	06 45	16 58
3	8 18 16 54	8 20 12 50	6 26 57 45	9 04 33 43	3 22 49 01	7 01 40 16	2 00 23 49	1 13 01 57	1 14 29 31	-22 53	-25 42	- 3 02	07 46	17 59
4	8 19 18 05	9 03 53 19	6 27 36 27	9 04 25 19	3 22 43 31	7 02 37 52	2 00 19 13	1 12 58 47	1 14 24 25	-22 47	-24 28	- 3 56	08 40	19 02
5	8 20 19 16	9 17 15 03	6 28 15 09	9 04 05 00	3 22 37 49	7 03 36 04	2 00 14 43	1 12 55 36	1 14 18 19	-22 41	-21 51	- 4 36	09 26	20 05
6	8 21 20 26	10 00 16 35	6 28 53 51	9 03 32 47	3 22 32 01	7 04 34 39	2 00 10 19	1 12 52 25	1 14 11 49	-22 34	-18 11	- 5 01	10 05	21 05
7	8 22 21 36	10 12 58 03	6 29 32 32	9 02 49 11	3 22 26 00	7 05 33 45	2 00 05 55	1 12 49 14	1 14 05 48	-22 27	-13 47	- 5 10	10 39	22 03
8	8 23 22 46	10 25 21 14	7 00 11 08	9 01 54 52	3 22 19 54	7 06 33 21	2 00 01 30	1 12 46 03	1 14 00 54	-22 19	- 8 55	- 5 04	11 09	22 58
9	8 24 23 55	11 07 29 12	7 00 49 50	9 00 51 09	3 22 13 36	7 07 33 21	1 29 57 12	1 12 42 53	1 13 57 36	-22 11	- 3 48	- 4 44	11 37	23 51
10	8 25 25 04	11 19 26 06	7 01 28 32	8 29 39 57	3 22 07 12	7 08 33 45	1 29 53 00	1 12 39 42	1 13 55 54	-22 03	+ 1 23	- 4 13	12 04	-- --
11	8 26 26 13	0 01 16 47	7 02 07 14	8 28 23 27	3 22 00 42	7 09 34 39	1 29 48 48	1 12 36 31	1 13 55 48	-21 54	+ 6 28	- 3 30	12 31	00 44
12	8 27 27 21	0 13 06 24	7 02 45 56	8 27 04 02	3 21 54 06	7 10 35 51	1 29 44 48	1 12 33 20	1 13 56 48	-21 44	+11 20	- 2 39	13 00	01 38
13	8 28 28 28	0 25 00 12	7 03 24 32	8 25 44 20	3 21 47 18	7 11 37 27	1 29 40 42	1 12 30 10	1 13 58 18	-21 35	+15 49	- 1 41	13 32	02 32
14	8 29 29 35	1 07 03 08	7 04 03 13	8 24 26 50	3 21 40 23	7 12 39 26	1 29 36 48	1 12 26 59	1 13 59 30	-21 24	+19 44	- 0 37	14 08	03 29
15	9 00 30 41	1 19 19 38	7 04 41 55	8 23 13 44	3 21 33 29	7 13 41 50	1 29 32 53	1 12 23 48	1 13 59 30	-21 14	+22 52	+ 0 29	14 50	04 27
16	9 01 31 47	2 01 53 08	7 05 20 31	8 22 06 51	3 21 26 23	7 14 44 32	1 29 29 05	1 12 20 37	1 13 57 41	-21 03	+24 57	+ 1 35	15 38	05 26
17	9 02 32 52	2 14 45 53	7 05 59 13	8 21 07 39	3 21 19 11	7 15 47 32	1 29 25 23	1 12 17 26	1 13 53 41	-20 52	+25 47	+ 2 38	16 34	06 24
18	9 03 33 57	2 27 58 35	7 06 37 55	8 20 17 15	3 21 11 59	7 16 50 56	1 29 21 41	1 12 14 16	1 13 47 29	-20 40	+25 11	+ 3 34	17 35	07 19
19	9 04 35 01	3 11 30 14	7 07 16 37	8 19 35 57	3 21 04 35	7 17 54 32	1 29 18 05	1 12 11 05	1 13 39 23	-20 28	+23 06	+ 4 19	18 40	08 08
20	9 05 36 04	3 25 18 12	7 07 55 12	8 19 04 10	3 20 57 10	7 18 58 32	1 29 14 35	1 12 07 54	1 13 30 22	-20 15	+19 39	+ 4 50	19 47	08 53
21	9 06 37 07	4 09 18 42	7 08 33 54	8 18 41 52	3 20 49 40	7 20 02 49	1 29 11 11	1 12 04 43	1 13 21 16	-20 02	+15 03	+ 5 04	20 53	09 32
22	9 07 38 09	4 23 27 14	7 09 12 36	8 18 28 34	3 20 42 04	7 21 07 19	1 29 07 52	1 12 01 33	1 13 13 16	-19 49	+ 9 36	+ 5 00	21 58	10 08
23	9 08 39 11	5 07 39 25	7 09 51 18	8 18 23 58	3 20 34 22	7 22 12 13	1 29 04 40	1 11 58 22	1 13 07 10	-19 35	+ 3 38	+ 4 38	23 03	10 42
24	9 09 40 13	5 21 51 37	7 10 29 54	8 18 27 35	3 20 26 40	7 23 17 19	1 29 01 28	1 11 55 11	1 13 03 28	-19 21	- 2 32	+ 3 58	-- --	11 15
25	9 10 41 14	6 06 01 11	7 11 08 36	8 18 38 47	3 20 18 52	7 24 22 37	1 28 58 22	1 11 52 00	1 13 01 58	-19 07	- 8 34	+ 3 04	00 07	11 49
26	9 11 42 14	6 20 06 30	7 11 47 18	8 18 56 59	3 20 11 04	7 25 28 13	1 28 55 28	1 11 48 49	1 13 02 04	-18 52	-14 08	+ 1 59	01 13	12 26
27	9 12 43 14	7 04 06 41	7 12 25 59	8 19 21 35	3 20 03 15	7 26 34 07	1 28 52 34	1 11 45 39	1 13 02 46	-18 37	-18 56	+ 0 48	02 20	13 07
28	9 13 44 13	7 18 01 10	7 13 04 35	8 19 52 05	3 19 55 21	7 27 40 13	1 28 49 46	1 11 42 28	1 13 02 52	-18 21	-22 39	- 0 26	03 27	13 54
29	9 14 45 12	8 01 49 10	7 13 43 17	8 20 27 53	3 19 47 21	7 28 46 30	1 28 47 03	1 11 39 17	1 13 01 09	-18 05	-25 00	- 1 38	04 32	14 47
30	9 15 46 11	8 15 29 31	7 14 21 59	8 21 08 35	3 19 39 27	7 29 53 00	1 28 44 33	1 11 36 06	1 12 56 57	-17 49	-25 49	- 2 43	05 34	15 45
31	9 16 47 09	8 29 00 26	7 15 00 35	8 21 53 4[illegible]	3 19 31 27	8 00 59 12	1 28 42 03	1 11 32 56	1 12 49 51	-17 33	-25 05	- 3 39	06 30	16 47

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 फरवरी 2003 ई. को अयनांश 23°/53'/45"

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्ट. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
फरवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	9 17 48 05	9 12 19 52	7 15 39 17	8 22 42 47	3 19 23 27	8 02 06 36	1 28 39 39	1 11 29 45	1 12 40 09	-17 16	-22 55	-4 21	07 18	17 49
2	9 18 49 01	9 25 25 45	7 16 17 53	8 23 35 29	3 19 15 27	8 03 13 42	1 28 37 21	1 11 26 34	1 12 28 32	-16 59	-19 35	-4 48	08 00	18 51
3	9 19 49 54	10 08 16 32	7 16 56 28	8 24 31 29	3 19 07 26	8 04 20 54	1 28 35 09	1 11 23 23	1 12 16 02	-16 42	-15 22	-5 01	08 36	19 50
4	9 20 50 48	10 20 51 34	7 17 35 04	8 25 30 35	3 18 59 26	8 05 28 24	1 28 33 03	1 11 20 12	1 12 04 02	-16 24	-10 35	-4 58	09 07	20 46
5	9 21 51 40	11 03 11 23	7 18 13 40	8 26 32 17	3 18 51 26	8 06 35 59	1 28 31 08	1 11 17 02	1 11 53 20	-16 06	-5 28	-4 41	09 36	21 41
6	9 22 52 30	11 15 17 50	7 18 52 16	8 27 36 41	3 18 43 26	8 07 43 47	1 28 29 14	1 11 13 51	1 11 44 56	-15 48	-0 13	-4 12	10 04	22 34
7	9 23 53 20	11 27 13 55	7 19 30 52	8 28 43 17	3 18 35 26	8 08 51 41	1 28 27 32	1 11 10 40	1 11 39 02	-15 30	+4 58	-3 32	10 31	23 28
8	9 24 54 07	0 09 03 42	7 20 09 28	8 29 51 59	3 18 27 32	8 09 59 47	1 28 25 50	1 11 07 29	1 11 35 44	-15 11	+9 56	-2 43	10 59	-- --
9	9 25 54 54	0 20 52 03	7 20 48 04	9 01 02 47	3 18 19 38	8 11 07 59	1 28 24 20	1 11 04 18	1 11 34 26	-14 52	+14 33	-1 47	11 30	00 22
10	9 26 55 38	1 02 44 18	7 21 26 33	9 02 15 23	3 18 11 49	8 12 16 23	1 28 22 50	1 11 01 08	1 11 34 20	-14 33	+18 39	-0 47	12 03	01 17
11	9 27 56 21	1 14 46 03	7 22 05 09	9 03 29 41	3 18 04 01	8 13 24 53	1 28 21 32	1 10 57 57	1 11 34 26	-14 13	+22 01	+0 17	12 42	02 14
12	9 28 57 03	1 27 02 43	7 22 43 39	9 04 45 35	3 17 56 13	8 14 33 34	1 28 20 19	1 10 54 46	1 11 33 25	-13 54	+24 28	+1 21	13 27	03 12
13	9 29 57 43	2 09 39 05	7 23 22 15	9 06 02 59	3 17 48 31	8 15 42 22	1 28 19 13	1 10 51 35	1 11 30 25	-13 34	+25 46	+2 23	14 18	04 10
14	10 00 58 21	2 22 38 47	7 24 00 45	9 07 21 47	3 17 40 55	8 16 51 16	1 28 18 13	1 10 48 25	1 11 24 49	-13 13	+25 42	+3 19	15 17	05 06
15	10 01 58 58	3 06 03 42	7 24 39 15	9 08 41 59	3 17 33 25	8 18 00 16	1 28 17 19	1 10 45 14	1 11 16 31	-12 53	+24 09	+4 06	16 21	05 58
16	10 02 59 34	3 19 53 26	7 25 17 45	9 10 03 28	3 17 25 55	8 19 09 28	1 28 16 37	1 10 42 03	1 11 05 48	-12 33	+21 09	+4 40	17 28	06 45
17	10 04 00 06	4 04 05 00	7 25 56 14	9 11 26 10	3 17 18 30	8 20 18 46	1 28 15 55	1 10 38 52	1 10 53 36	-12 12	+16 49	+4 57	18 36	07 27
18	10 05 00 39	4 18 32 59	7 26 34 44	9 12 50 04	3 17 11 12	8 21 28 10	1 28 15 25	1 10 35 41	1 10 41 18	-11 51	+11 27	+4 57	19 44	08 05
19	10 06 01 09	5 03 10 18	7 27 13 14	9 14 15 10	3 17 03 54	8 22 37 39	1 28 14 54	1 10 32 31	1 10 30 06	-11 30	+5 24	+4 37	20 51	08 41
20	10 07 01 39	5 17 49 23	7 27 51 44	9 15 41 22	3 16 56 48	8 23 47 15	1 28 14 36	1 10 29 20	1 10 21 12	-11 08	-0 58	+3 59	21 58	09 15
21	10 08 02 07	6 02 23 31	7 28 30 08	9 17 08 40	3 16 49 42	8 24 57 03	1 28 14 24	1 10 26 09	1 10 15 06	-10 47	-7 16	+3 05	23 05	09 50
22	10 09 02 33	6 16 47 40	7 29 08 38	9 18 37 04	3 16 42 48	8 26 06 51	1 28 14 18	1 10 22 58	1 10 11 48	-10 25	-13 08	+2 00	-- --	10 26
23	10 10 02 58	7 00 58 52	7 29 47 02	9 20 06 28	3 16 36 00	8 27 16 45	1 28 14 18	1 10 19 48	1 10 10 42	-10 03	-18 12	+0 48	00 13	11 06
24	10 11 03 22	7 14 56 03	8 00 25 25	9 21 36 58	3 16 29 11	8 28 26 51	1 28 14 30	1 10 16 37	1 10 10 42	-9 41	-22 11	-0 25	01 20	11 51
25	10 12 03 45	7 28 39 26	8 01 03 49	9 23 08 28	3 16 22 35	8 29 36 57	1 28 14 42	1 10 13 26	1 10 10 18	-9 19	-24 49	-1 36	02 26	12 42
26	10 13 04 06	8 12 09 57	8 01 42 13	9 24 40 57	3 16 16 11	9 00 47 14	1 28 15 05	1 10 10 15	1 10 08 17	-8 57	-25 58	-2 40	03 28	13 37
27	10 14 04 26	8 25 28 35	8 02 20 37	9 26 14 33	3 16 09 47	9 01 57 32	1 28 15 35	1 10 07 04	1 10 03 29	-8 34	-25 34	-3 34	04 25	14 37
28	10 15 04 45	9 08 35 59	8 02 59 01	9 27 49 09	3 16 03 35	9 03 07 56	1 28 16 05	1 10 03 54	1 09 55 41	-8 12	-23 46	-4 16	05 15	15 39

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मार्च 2003 ई. को अयनांश $23^0/53'/49''$

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	10 16 05 01	9 21 32 25	8 03 37 19	9 29 24 45	3 15 57 29	9 04 18 20	1 28 16 47	1 10 00 43	1 09 44 58	- 7 49	-20 44	- 4 44	05 58	16 40
2	10 17 05 16	10 04 17 42	8 04 15 42	10 01 01 21	3 15 51 29	9 05 28 56	1 28 17 41	1 09 57 32	1 09 32 04	- 7 26	-16 45	- 4 58	06 35	17 39
3	10 18 05 29	10 16 51 31	8 04 54 00	10 02 39 03	3 15 45 40	9 06 39 32	1 28 18 35	1 09 54 21	1 09 18 04	- 7 03	-12 06	- 4 57	07 07	18 36
4	10 19 05 41	10 29 13 46	8 05 32 12	10 04 17 45	3 15 40 04	9 07 50 14	1 28 19 35	1 09 51 11	1 09 04 10	- 6 40	- 7 02	- 4 41	07 37	19 32
5	10 20 05 50	11 11 24 47	8 06 10 30	10 05 57 33	3 15 34 28	9 09 01 01	1 28 20 46	1 09 48 00	1 08 51 40	- 6 17	- 1 46	- 4 13	08 05	20 26
6	10 21 05 58	11 23 25 45	8 06 48 42	10 07 38 21	3 15 29 10	9 10 11 49	1 28 21 58	1 09 44 49	1 08 41 28	- 5 54	+ 3 30	- 3 34	08 32	21 19
7	10 22 06 04	0 05 18 45	8 07 26 54	10 09 20 15	3 15 23 58	9 11 22 43	1 28 23 22	1 09 41 38	1 08 34 04	- 5 31	+ 8 36	- 2 46	09 00	22 13
8	10 23 06 08	0 17 06 48	8 08 05 06	10 11 03 14	3 15 18 52	9 12 33 37	1 28 24 52	1 09 38 27	1 08 29 34	- 5 08	+13 23	- 1 50	09 29	23 08
9	10 24 06 08	0 28 53 49	8 08 43 17	10 12 47 20	3 15 13 58	9 13 44 37	1 28 26 28	1 09 35 17	1 08 27 28	- 4 44	+17 39	- 0 50	10 01	-- --
10	10 25 06 08	1 10 44 30	8 09 21 23	10 14 32 38	3 15 09 15	9 14 55 43	1 28 28 10	1 09 32 06	1 08 27 04	- 4 21	+21 16	+ 0 12	10 37	00 03
11	10 26 06 06	1 22 44 06	8 09 59 29	10 16 18 56	3 15 04 45	9 16 06 49	1 28 29 58	1 09 28 55	1 08 27 22	- 3 57	+24 01	+ 1 15	11 18	01 00
12	10 27 06 01	2 04 58 08	8 10 37 35	10 18 06 26	3 15 00 21	9 17 18 00	1 28 31 51	1 09 25 44	1 08 27 09	- 3 34	+25 42	+ 2 16	12 06	01 57
13	10 28 05 54	2 17 31 56	8 11 15 41	10 19 55 08	3 14 56 09	9 18 29 12	1 28 33 51	1 09 22 34	1 08 25 27	- 3 10	+26 08	+ 3 12	13 00	02 53
14	10 29 05 45	3 00 30 14	8 11 53 41	10 21 44 56	3 14 52 09	9 19 40 30	1 28 36 03	1 09 19 23	1 08 21 27	- 2 47	+25 10	+ 3 59	14 01	03 46
15	11 00 05 34	3 13 56 13	8 12 31 41	10 23 35 56	3 14 48 15	9 20 51 54	1 28 38 15	1 09 16 12	1 08 15 03	- 2 23	+22 45	+ 4 36	15 06	04 34
16	11 01 05 19	3 27 51 00	8 13 09 40	10 25 28 02	3 14 44 33	9 22 03 12	1 28 40 39	1 09 13 01	1 08 06 26	- 1 59	+18 57	+ 4 58	16 13	05 18
17	11 02 05 03	4 12 12 47	8 13 47 40	10 27 21 20	3 14 41 02	9 23 14 42	1 28 43 03	1 09 09 50	1 07 56 20	- 1 36	+13 56	+ 5 01	17 22	05 58
18	11 03 04 46	4 26 56 32	8 14 25 34	10 29 15 43	3 14 37 44	9 24 26 06	1 28 45 39	1 09 06 40	1 07 45 56	- 1 12	+ 8 00	+ 4 46	18 31	06 35
19	11 04 04 26	5 11 54 33	8 15 03 28	11 01 11 19	3 14 34 32	9 25 37 41	1 28 48 14	1 09 03 29	1 07 36 20	- 0 48	+ 1 32	+ 4 10	19 39	07 10
20	11 05 04 04	5 26 57 23	8 15 41 22	11 03 07 55	3 14 31 38	9 26 49 11	1 28 51 02	1 09 00 18	1 07 28 38	- 0 24	- 5 05	+ 3 18	20 49	07 46
21	11 06 03 40	6 11 55 40	8 16 19 10	11 05 05 37	3 14 28 50	9 28 00 53	1 28 53 50	1 08 57 07	1 07 23 26	- 0 01	-11 24	+ 2 11	21 59	08 22
22	11 07 03 13	6 26 41 31	8 16 57 04	11 07 04 19	3 14 26 14	9 29 12 29	1 28 56 50	1 08 53 56	1 07 20 56	+ 0 23	-16 59	+ 0 57	23 09	09 02
23	11 08 02 46	7 11 09 32	8 17 34 51	11 09 03 55	3 14 23 50	10 00 24 11	1 28 59 56	1 08 50 46	1 07 20 26	+ 0 47	-21 28	- 0 20	-- --	09 47
24	11 09 02 17	7 25 16 59	8 18 12 33	11 11 04 13	3 14 21 38	10 01 35 59	1 29 03 02	1 08 47 35	1 07 21 02	+ 1 10	-24 34	- 1 34	00 18	10 37
25	11 10 01 47	8 09 03 25	8 18 50 15	11 13 05 19	3 14 19 37	10 02 47 47	1 29 06 20	1 08 44 24	1 07 21 43	+ 1 34	-26 05	- 2 41	01 23	11 32
26	11 11 01 15	8 22 29 59	8 19 27 57	11 15 06 55	3 14 17 43	10 03 59 34	1 29 09 37	1 08 41 13	1 07 21 13	+ 1 58	-26 01	- 3 37	02 22	12 31
27	11 12 00 40	9 05 38 38	8 20 05 39	11 17 08 54	3 14 16 07	10 05 11 28	1 29 13 07	1 08 38 03	1 07 18 49	+ 2 21	-24 29	- 4 20	03 14	13 32
28	11 13 00 04	9 18 31 38	8 20 43 15	11 19 11 00	3 14 14 37	10 06 23 22	1 29 16 43	1 08 34 52	1 07 14 01	+ 2 45	-21 42	- 4 49	03 58	14 33
29	11 13 59 26	10 01 11 06	8 21 20 51	11 21 13 06	3 14 13 25	10 07 35 22	1 29 20 19	1 08 31 41	1 07 06 49	+ 3 08	-17 55	- 5 04	04 36	15 33
30	11 14 58 46	10 13 38 49	8 21 58 20	11 23 14 48	3 14 12 19	10 08 47 22	1 29 24 01	1 08 28 30	1 06 57 54	+ 3 31	-13 25	- 5 03	05 10	16 30
31	11 15 58 04	10 25 56 16	8 22 35 50	11 25 15 48	3 14 11 25	10 09 59 22	1 29 27 55	1 08 25 19	1 06 48 00	+ 3 55	- 8 27	- 4 49	05 40	17 25

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)   1 अप्रैल 2003 ई. को अयनांश 23°/53'/54"

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ़ (भा.स्टै. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	11 16 57 21	11 08 04 40	8 23 13 14	11 27 15 54	3 14 10 42	10 11 11 22	1 29 31 49	1 08 22 09	1 06 38 06	+ 4 18	- 3 13	- 4 21	06 08	18 19
2	11 17 56 35	11 20 05 11	8 23 50 38	11 29 14 35	3 14 10 12	10 12 23 27	1 29 35 48	1 08 18 58	1 06 29 18	+ 4 41	+ 2 06	- 3 42	06 35	19 13
3	11 18 55 48	0 01 59 14	8 24 27 56	0 01 11 35	3 14 09 54	10 13 35 33	1 29 39 54	1 08 15 47	1 06 22 06	+ 5 04	+ 7 18	- 2 54	07 02	20 06
4	11 19 54 58	0 13 48 34	8 25 05 14	0 03 06 29	3 14 09 48	10 14 47 39	1 29 44 06	1 08 12 36	1 06 17 06	+ 5 27	+12 13	- 1 58	07 30	21 01
5	11 20 54 05	0 25 35 28	8 25 42 25	0 04 58 59	3 14 09 48	10 15 59 45	1 29 48 24	1 08 09 26	1 06 14 18	+ 5 50	+16 41	- 0 57	08 01	21 56
6	11 21 53 11	1 07 22 54	8 26 19 37	0 06 48 34	3 14 10 06	10 17 11 57	1 29 52 48	1 08 06 15	1 06 13 36	+ 6 13	+20 31	+ 0 06	08 35	22 53
7	11 22 52 15	1 19 14 31	8 26 56 43	0 08 34 58	3 14 10 30	10 18 24 09	1 29 57 12	1 08 03 04	1 06 14 24	+ 6 35	+23 32	+ 1 10	09 14	23 49
8	11 23 51 16	2 01 14 33	8 27 33 49	0 10 17 40	3 14 11 11	10 19 36 21	2 00 01 48	1 07 59 53	1 06 15 59	+ 6 58	+25 32	+ 2 11	09 58	-- --
9	11 24 50 16	2 13 27 42	8 28 10 49	0 11 56 33	3 14 11 59	10 20 48 32	2 00 06 23	1 07 56 42	1 06 17 23	+ 7 20	+26 22	+ 3 08	10 49	00 45
10	11 25 49 13	2 25 58 52	8 28 47 49	0 13 31 09	3 14 12 59	10 22 00 50	2 00 11 05	1 07 53 32	1 06 18 05	+ 7 43	+25 52	+ 3 57	11 46	01 37
11	11 26 48 07	3 08 52 41	8 29 24 43	0 15 01 21	3 14 14 11	10 23 13 08	2 00 15 53	1 07 50 21	1 06 17 23	+ 8 05	+24 01	+ 4 36	12 47	02 26
12	11 27 46 59	3 22 12 59	9 00 01 30	0 16 26 38	3 14 15 35	10 24 25 20	2 00 20 47	1 07 47 10	1 06 15 05	+ 8 27	+20 48	+ 5 01	13 52	03 11
13	11 28 45 49	4 06 02 02	9 00 38 18	0 17 47 02	3 14 17 11	10 25 37 44	2 00 25 41	1 07 43 59	1 06 11 10	+ 8 49	+16 20	+ 5 10	14 58	03 51
14	11 29 44 37	4 20 19 42	9 01 15 00	0 19 02 14	3 14 18 59	10 26 50 02	2 00 30 47	1 07 40 49	1 06 06 16	+ 9 11	+10 50	+ 5 01	16 06	04 28
15	0 00 43 22	5 05 02 50	9 01 51 36	0 20 12 01	3 14 20 52	10 28 02 20	2 00 35 53	1 07 37 38	1 06 00 58	+ 9 32	+ 4 35	+ 4 32	17 14	05 03
16	0 01 42 06	5 20 05 10	9 02 28 12	0 21 16 19	3 14 23 04	10 29 14 43	2 00 40 58	1 07 34 27	1 05 56 04	+ 9 54	- 2 05	+ 3 43	18 24	05 38
17	0 02 40 47	6 05 17 50	9 03 04 48	0 22 15 01	3 14 25 22	11 00 27 07	2 00 46 16	1 07 31 16	1 05 52 10	+10 15	- 8 43	+ 2 39	19 35	06 15
18	0 03 39 26	6 20 30 42	9 03 41 12	0 23 07 54	3 14 27 46	11 01 39 31	2 00 51 34	1 07 28 05	1 05 49 52	+10 36	-14 51	+ 1 23	20 48	06 54
19	0 04 38 03	7 05 34 03	9 04 17 35	0 23 55 00	3 14 30 28	11 02 51 55	2 00 56 58	1 07 24 55	1 05 49 04	+10 57	-20 01	+ 0 01	22 01	07 37
20	0 05 36 39	7 20 19 59	9 04 53 53	0 24 36 17	3 14 33 16	11 04 04 25	2 01 02 28	1 07 21 44	1 05 49 40	+11 18	-23 48	- 1 18	23 11	08 26
21	0 06 35 14	8 04 43 15	9 05 30 11	0 25 11 29	3 14 36 22	11 05 16 49	2 01 08 04	1 07 18 33	1 05 51 04	+11 39	-25 57	- 2 31	-- --	09 22
22	0 07 33 46	8 18 41 28	9 06 06 23	0 25 40 46	3 14 39 33	11 06 29 18	2 01 13 40	1 07 15 22	1 05 52 33	+11 59	-26 23	- 3 33	00 15	10 22
23	0 08 32 17	9 02 14 34	9 06 42 29	0 26 04 04	3 14 42 51	11 07 41 48	2 01 19 21	1 07 12 11	1 05 53 33	+12 19	-25 12	- 4 21	01 11	11 24
24	0 09 30 47	9 15 24 16	9 07 18 29	0 26 21 28	3 14 46 27	11 08 54 18	2 01 25 03	1 07 09 01	1 05 53 39	+12 39	-22 38	- 4 54	01 58	12 27
25	0 10 29 14	9 28 13 18	9 07 54 22	0 26 32 51	3 14 50 09	11 10 06 54	2 01 30 51	1 07 05 50	1 05 52 27	+12 59	-19 02	- 5 11	02 38	13 27
26	0 11 27 40	10 10 44 53	9 08 30 16	0 26 38 33	3 14 53 57	11 11 19 24	2 01 36 45	1 07 02 39	1 05 50 09	+13 19	-14 39	- 5 12	03 13	14 25
27	0 12 26 04	10 23 02 19	9 09 05 58	0 26 38 32	3 14 58 03	11 12 32 00	2 01 42 45	1 06 59 28	1 05 46 50	+13 38	- 9 45	- 4 59	03 44	15 21
28	0 13 24 27	11 05 08 43	9 09 41 40	0 26 33 08	3 15 02 15	11 13 44 36	2 01 48 45	1 06 56 18	1 05 43 08	+13 57	- 4 34	- 4 33	04 12	16 15
29	0 14 22 48	11 17 06 51	9 10 17 10	0 26 22 26	3 15 06 38	11 14 57 11	2 01 54 51	1 06 53 07	1 05 39 20	+14 16	+ 0 45	- 3 56	04 39	17 08
30	0 15 21 07	11 28 59 14	9 10 52 40	0 26 06 49	3 15 11 08	11 16 09 47	2 02 00 56	1 06 49 56	1 05 36 02	+14 35	+ 5 59	- 3 08	05 05	18 01

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मई 2003 ई. को अयनांश $23^0/53'/58''$

2003 ई. मई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ़ (भा.स्टै. टा.) चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	0 16 19 25	0 10 48 06	9 11 27 58	0 25 46 37	3 15 15 50	11 17 22 23	2 02 07 08	1 06 46 45	1 05 33 38	+14 53	+11 01	- 2 12	05 33	18 55
2	0 17 17 40	0 22 35 34	9 12 03 15	0 25 22 25	3 15 20 44	11 18 34 59	2 02 13 26	1 06 43 34	1 05 32 02	+15 11	+15 38	- 1 11	06 03	19 51
3	0 18 15 55	1 04 23 49	9 12 38 21	0 24 54 30	3 15 25 44	11 19 47 41	2 02 19 44	1 06 40 24	1 05 31 38	+15 29	+19 41	- 0 06	06 36	20 47
4	0 19 14 07	1 16 15 11	9 13 13 21	0 24 23 24	3 15 30 56	11 21 00 17	2 02 26 08	1 06 37 13	1 05 32 02	+15 47	+22 56	+ 0 59	07 13	21 44
5	0 20 12 18	1 28 12 17	9 13 48 15	0 23 49 54	3 15 36 14	11 22 12 59	2 02 32 32	1 06 34 02	1 05 33 01	+16 04	+25 14	+ 2 02	07 55	22 39
6	0 21 10 27	2 10 18 07	9 14 23 03	0 23 14 24	3 15 41 44	11 23 25 40	2 02 39 02	1 06 30 51	1 05 34 19	+16 21	+26 23	+ 3 00	08 44	23 33
7	0 22 08 34	2 22 36 02	9 14 57 45	0 22 37 42	3 15 47 19	11 24 38 16	2 02 45 31	1 06 27 41	1 05 35 43	+16 38	+26 15	+ 3 52	09 38	-- --
8	0 23 06 39	3 05 09 36	9 15 32 14	0 22 00 23	3 15 53 07	11 25 50 58	2 02 52 07	1 06 24 30	1 05 36 43	+16 55	+24 48	+ 4 33	10 37	00 22
9	0 24 04 41	3 18 02 27	9 16 06 38	0 21 23 11	3 15 59 07	11 27 03 40	2 02 58 43	1 06 21 19	1 05 37 13	+17 11	+22 02	+ 5 02	11 39	01 07
10	0 25 02 42	4 01 17 51	9 16 40 56	0 20 46 47	3 16 05 13	11 28 16 22	2 03 05 25	1 06 18 08	1 05 37 13	+17 27	+18 04	+ 5 15	12 42	01 48
11	0 26 00 41	4 14 58 10	9 17 15 02	0 20 11 35	3 16 11 25	11 29 29 04	2 03 12 13	1 06 14 57	1 05 36 37	+17 43	+13 04	+ 5 12	13 47	02 24
12	0 26 58 39	4 29 04 16	9 17 49 08	0 19 38 23	3 16 17 49	0 00 41 46	2 03 18 55	1 06 11 47	1 05 35 48	+17 58	+ 7 14	+ 4 50	14 53	02 59
13	0 27 56 34	5 13 34 51	9 18 22 56	0 19 07 41	3 16 24 19	0 01 54 33	2 03 25 49	1 06 08 36	1 05 34 54	+18 13	+ 0 51	+ 4 10	16 00	03 33
14	0 28 54 28	5 28 26 02	9 18 56 44	0 18 39 53	3 16 30 54	0 03 07 15	2 03 32 36	1 06 05 25	1 05 34 00	+18 28	- 5 44	+ 3 11	17 09	04 07
15	0 29 52 19	6 13 31 21	9 19 30 19	0 18 15 29	3 16 37 42	0 04 19 57	2 03 39 30	1 06 02 14	1 05 33 30	+18 43	-12 07	+ 1 59	18 21	04 44
16	1 00 50 09	6 28 42 18	9 20 03 43	0 17 54 47	3 16 44 42	0 05 32 45	2 03 46 30	1 05 59 04	1 05 33 18	+18 57	-17 49	+ 0 38	19 34	05 25
17	1 01 47 58	7 13 49 27	9 20 37 01	0 17 37 59	3 16 51 42	0 06 45 33	2 03 53 30	1 05 55 53	1 05 33 24	+19 11	-22 21	- 0 46	20 48	06 12
18	1 02 45 46	7 28 43 52	9 21 10 13	0 17 25 29	3 16 58 54	0 07 58 15	2 04 00 36	1 05 52 42	1 05 33 42	+19 24	-25 19	- 2 05	21 57	07 05
19	1 03 43 33	8 13 18 18	9 21 43 13	0 17 17 17	3 17 06 18	0 09 11 03	2 04 07 36	1 05 49 31	1 05 33 59	+19 38	-26 29	- 3 14	22 59	08 05
20	1 04 41 18	8 27 28 00	9 22 16 01	0 17 13 35	3 17 13 42	0 10 23 50	2 04 14 48	1 05 46 20	1 05 34 11	+19 51	-25 51	- 4 10	23 52	09 10
21	1 05 39 02	9 11 10 54	9 22 48 42	0 17 14 29	3 17 21 17	0 11 36 38	2 04 21 53	1 05 43 10	1 05 34 11	+20 03	-23 40	- 4 49	-- --	10 15
22	1 06 36 44	9 24 27 20	9 23 21 12	0 17 19 53	3 17 28 59	0 12 49 32	2 04 29 05	1 05 39 59	1 05 34 05	+20 15	-20 15	- 5 11	00 37	11 18
23	1 07 34 26	10 07 19 27	9 23 53 30	0 17 29 47	3 17 36 47	0 14 02 20	2 04 36 23	1 05 36 48	1 05 33 59	+20 27	-15 58	- 5 17	01 14	12 18
24	1 08 32 07	10 19 50 38	9 24 25 36	0 17 44 17	3 17 44 47	0 15 15 14	2 04 43 35	1 05 33 37	1 05 33 53	+20 39	-11 07	- 5 07	01 46	13 15
25	1 09 29 47	11 02 04 54	9 24 57 30	0 18 03 11	3 17 52 53	0 16 28 02	2 04 50 53	1 05 30 26	1 05 33 58	+20 50	- 5 56	- 4 44	02 15	14 10
26	1 10 27 26	11 14 06 30	9 25 29 12	0 18 26 23	3 18 01 05	0 17 40 55	2 04 58 11	1 05 27 16	1 05 34 16	+21 01	- 0 37	- 4 08	02 43	15 03
27	1 11 25 03	11 25 59 34	9 26 00 42	0 18 53 53	3 18 09 23	0 18 53 49	2 05 05 34	1 05 24 05	1 05 34 46	+21 11	+ 4 39	- 3 22	03 09	15 56
28	1 12 22 40	0 07 47 54	9 26 31 59	0 19 25 35	3 18 17 46	0 20 06 43	2 05 12 58	1 05 20 54	1 05 35 22	+21 21	+ 9 45	- 2 28	03 36	16 50
29	1 13 20 15	0 19 34 56	9 27 03 05	0 20 01 18	3 18 26 22	0 21 19 37	2 05 20 22	1 05 17 43	1 05 35 58	+21 31	+14 29	- 1 28	04 05	17 45
30	1 14 17 50	1 01 23 36	9 27 33 59	0 20 41 00	3 18 34 58	0 22 32 31	2 05 27 52	1 05 14 33	1 05 36 28	+21 40	+18 42	- 0 23	04 37	18 41
31	1 15 15 24	1 13 16 30	9 28 04 35	0 21 24 36	3 18 43 46	0 23 45 25	2 05 35 22	1 05 11 22	1 05 36 34	+21 49	+22 12	+ 0 42	05 13	19 38

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जून 2003 ई. को अयनांश 23°/54'/03"

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	1 16 12 56	1 25 15 48	9 28 34 53	0 22 11 48	3 18 52 40	0 24 58 25	2 05 42 52	1 05 08 11	1 05 36 09	+21 58	+24 46	+ 1 47	05 54	20 35
2	1 17 10 28	2 07 23 30	9 29 05 05	0 23 02 42	3 19 01 40	0 26 11 18	2 05 50 22	1 05 05 00	1 05 35 09	+22 06	+26 13	+ 2 47	06 41	21 29
3	1 18 07 58	2 19 41 26	9 29 34 58	0 23 57 12	3 19 10 46	0 27 24 18	2 05 57 57	1 05 01 49	1 05 33 39	+22 14	+26 24	+ 3 40	07 33	22 20
4	1 19 05 27	3 02 11 27	10 00 04 34	0 24 55 06	3 19 19 57	0 28 37 12	2 06 05 27	1 04 58 39	1 05 31 51	+22 21	+25 15	+ 4 24	08 31	23 06
5	1 20 02 55	3 14 55 20	10 00 33 52	0 25 56 18	3 19 29 15	0 29 50 12	2 06 13 03	1 04 55 28	1 05 29 57	+22 28	+22 48	+ 4 55	09 31	23 47
6	1 21 00 22	3 27 54 59	10 01 02 58	0 27 00 54	3 19 38 39	1 01 03 12	2 06 20 45	1 04 52 17	1 05 28 21	+22 35	+19 10	+ 5 13	10 34	-- --
7	1 21 57 48	4 11 12 10	10 01 31 46	0 28 08 42	3 19 48 15	1 02 16 12	2 06 28 21	1 04 49 06	1 05 27 08	+22 41	+14 30	+ 5 14	11 36	00 25
8	1 22 55 12	4 24 48 18	10 02 00 22	0 29 19 36	3 19 57 51	1 03 29 12	2 06 35 57	1 04 45 56	1 05 26 44	+22 47	+ 9 02	+ 4 58	12 40	00 59
9	1 23 52 36	5 08 44 10	10 02 28 33	1 00 33 42	3 20 07 33	1 04 42 11	2 06 43 39	1 04 42 45	1 05 27 02	+22 53	+ 2 59	+ 4 24	13 44	01 32
10	1 24 49 58	5 22 59 25	10 02 56 27	1 01 50 48	3 20 17 21	1 05 55 11	2 06 51 20	1 04 39 34	1 05 28 02	+22 58	- 3 21	+ 3 33	14 49	02 04
11	1 25 47 18	6 07 32 07	10 03 24 09	1 03 10 59	3 20 27 14	1 07 08 11	2 06 59 02	1 04 36 23	1 05 29 08	+23 02	- 9 39	+ 2 28	15 58	02 38
12	1 26 44 38	6 22 18 31	10 03 51 27	1 04 34 05	3 20 37 08	1 08 21 17	2 07 06 44	1 04 33 12	1 05 30 08	+23 06	-15 32	+ 1 12	17 09	03 16
13	1 27 41 58	7 07 12 52	10 04 18 33	1 06 00 11	3 20 47 14	1 09 34 17	2 07 14 26	1 04 30 02	1 05 30 26	+23 10	-20 32	- 0 09	18 22	03 59
14	1 28 39 16	7 22 07 58	10 04 45 15	1 07 29 17	3 20 57 26	1 10 47 23	2 07 22 14	1 04 26 51	1 05 29 49	+23 14	-24 12	- 1 30	19 34	04 48
15	1 29 36 34	8 06 55 57	10 05 11 38	1 09 01 17	3 21 07 38	1 12 00 29	2 07 29 56	1 04 23 40	1 05 28 01	+23 17	-26 10	- 2 44	20 41	05 46
16	2 00 33 51	8 21 29 13	10 05 37 38	1 10 36 11	3 21 18 02	1 13 13 28	2 07 37 44	1 04 20 29	1 05 25 13	+23 19	-26 17	- 3 46	21 39	06 49
17	2 01 31 08	9 05 41 44	10 06 03 20	1 12 13 53	3 21 28 26	1 14 26 40	2 07 45 31	1 04 17 18	1 05 21 49	+23 22	-24 40	- 4 32	22 29	07 56
18	2 02 28 23	9 19 29 34	10 06 28 38	1 13 54 29	3 21 38 55	1 15 39 46	2 07 53 19	1 04 14 08	1 05 18 07	+23 23	-21 36	- 5 01	23 11	09 02
19	2 03 25 39	10 02 51 18	10 06 53 38	1 15 37 59	3 21 49 31	1 16 52 52	2 08 01 01	1 04 10 57	1 05 14 43	+23 25	-17 29	- 5 13	23 46	10 05
20	2 04 22 55	10 15 47 46	10 07 18 14	1 17 24 11	3 22 00 07	1 18 06 04	2 08 08 49	1 04 07 46	1 05 12 13	+23 26	-12 41	- 5 08	-- --	11 05
21	2 05 20 10	10 28 21 37	10 07 42 19	1 19 13 11	3 22 10 55	1 19 19 10	2 08 16 37	1 04 04 35	1 05 10 42	+23 26	- 7 29	- 4 48	00 17	12 02
22	2 06 17 25	11 10 36 45	10 08 06 07	1 21 04 47	3 22 21 43	1 20 32 21	2 08 24 25	1 04 01 25	1 05 10 24	+23 26	- 2 07	- 4 15	00 45	12 56
23	2 07 14 40	11 22 37 51	10 08 29 25	1 22 58 59	3 22 32 37	1 21 45 33	2 08 32 12	1 03 58 14	1 05 11 12	+23 26	+ 3 14	- 3 32	01 12	13 50
24	2 08 11 54	0 04 29 49	10 08 52 25	1 24 55 41	3 22 43 36	1 22 58 45	2 08 40 00	1 03 55 03	1 05 12 42	+23 25	+ 8 25	- 2 40	01 39	14 43
25	2 09 09 09	0 16 17 30	10 09 14 49	1 26 54 47	3 22 54 36	1 24 12 03	2 08 47 48	1 03 51 52	1 05 14 18	+23 24	+13 16	- 1 42	02 07	15 38
26	2 10 06 23	0 28 05 25	10 09 36 49	1 28 55 59	3 23 05 42	1 25 25 15	2 08 55 36	1 03 48 41	1 05 15 36	+23 23	+17 38	- 0 39	02 38	16 33
27	2 11 03 38	1 09 57 34	10 09 58 24	2 00 59 17	3 23 16 54	1 26 38 33	2 09 03 30	1 03 45 31	1 05 15 48	+23 21	+21 20	+ 0 25	03 12	17 30
28	2 12 00 52	1 21 57 19	10 10 19 30	2 03 04 29	3 23 28 12	1 27 51 51	2 09 11 18	1 03 42 20	1 05 14 41	+23 18	+24 10	+ 1 29	03 51	18 28
29	2 12 58 06	2 04 07 15	10 10 40 00	2 05 11 11	3 23 39 30	1 29 05 08	2 09 19 06	1 03 39 09	1 05 11 41	+23 16	+25 56	+ 2 30	04 36	19 23
30	2 13 55 21	2 16 29 14	10 11 00 06	2 07 19 11	3 23 50 54	2 00 18 26	2 09 26 53	1 03 35 58	1 05 07 05	+23 13	+26 26	+ 3 25	05 28	20 16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जुलाई 2003 ई. को अयनांश 23°/54′/07″

2003 ई. जुलाई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टै. टा.) चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	2 14 52 33	2 29 04 17	10 11 19 42	2 09 28 23	3 24 02 17	2 01 31 50	2 09 34 35	1 03 32 48	1 05 01 05	+23 09	+25 36	+ 4 10	06 24	21 04
2	2 15 49 47	3 11 52 55	10 11 38 42	2 11 38 16	3 24 13 53	2 02 45 08	2 09 42 23	1 03 29 37	1 04 54 17	+23 05	+23 25	+ 4 44	07 25	21 48
3	2 16 47 01	3 24 55 03	10 11 57 11	2 13 48 40	3 24 25 23	2 03 58 32	2 09 50 11	1 03 26 26	1 04 47 22	+23 01	+20 00	+ 5 04	08 27	22 26
4	2 17 44 14	4 08 10 28	10 12 15 11	2 15 59 22	3 24 37 05	2 05 11 56	2 09 57 59	1 03 23 15	1 04 41 16	+22 56	+15 31	+ 5 08	09 30	23 01
5	2 18 41 27	4 21 38 48	10 12 32 35	2 18 09 58	3 24 48 47	2 06 25 20	2 10 05 41	1 03 20 04	1 04 36 40	+22 51	+10 14	+ 4 55	10 33	23 33
6	2 19 38 39	5 05 19 45	10 12 49 23	2 20 20 10	3 25 00 29	2 07 38 43	2 10 13 29	1 03 16 54	1 04 33 52	+22 45	+ 4 22	+ 4 25	11 36	-- --
7	2 20 35 51	5 19 13 02	10 13 05 41	2 22 29 46	3 25 12 23	2 08 52 07	2 10 21 10	1 03 13 43	1 04 32 58	+22 39	- 1 48	+ 3 40	12 39	00 05
8	2 21 33 02	6 03 18 10	10 13 21 17	2 24 38 40	3 25 24 10	2 10 05 37	2 10 28 52	1 03 10 32	1 04 33 28	+22 33	- 7 59	+ 2 40	13 44	00 38
9	2 22 30 14	6 17 34 11	10 13 36 22	2 26 46 27	3 25 36 04	2 11 19 01	2 10 36 34	1 03 07 21	1 04 34 34	+22 26	-13 50	+ 1 30	14 52	01 13
10	2 23 27 26	7 01 59 16	10 13 50 52	2 28 53 03	3 25 48 04	2 12 32 31	2 10 44 16	1 03 04 10	1 04 35 16	+22 19	-19 00	+ 0 14	16 02	01 52
11	2 24 24 38	7 16 30 20	10 14 04 40	3 00 58 21	3 26 00 04	2 13 46 01	2 10 51 58	1 03 01 00	1 04 34 45	+22 11	-23 03	- 1 04	17 13	02 37
12	2 25 21 49	8 01 02 57	10 14 17 52	3 03 02 15	3 26 12 10	2 14 59 31	2 10 59 34	1 02 57 49	1 04 32 15	+22 03	-25 38	- 2 17	18 21	03 30
13	2 26 19 01	8 15 31 36	10 14 30 28	3 05 04 32	3 26 24 16	2 16 13 00	2 11 07 16	1 02 54 38	1 04 27 27	+21 55	-26 27	- 3 21	19 24	04 30
14	2 27 16 13	8 29 50 11	10 14 42 22	3 07 05 08	3 26 36 28	2 17 26 36	2 11 14 51	1 02 51 27	1 04 20 33	+21 46	-25 29	- 4 12	20 18	05 35
15	2 28 13 24	9 13 53 02	10 14 53 39	3 09 04 08	3 26 48 39	2 18 40 06	2 11 22 27	1 02 48 17	1 04 12 15	+21 37	-22 56	- 4 46	21 03	06 42
16	2 29 10 37	9 27 35 41	10 15 04 09	3 11 01 20	3 27 00 57	2 19 53 42	2 11 30 03	1 02 45 06	1 04 03 26	+21 28	-19 07	- 5 03	21 42	07 48
17	3 00 07 50	10 10 55 31	10 15 14 03	3 12 56 44	3 27 13 15	2 21 07 18	2 11 37 33	1 02 41 55	1 03 55 02	+21 18	-14 26	- 5 03	22 15	08 50
18	3 01 05 03	10 23 52 02	10 15 23 15	3 14 50 19	3 27 25 33	2 22 21 00	2 11 45 09	1 02 38 44	1 03 47 56	+21 08	- 9 14	- 4 47	22 45	09 50
19	3 02 02 17	11 06 26 44	10 15 31 39	3 16 42 07	3 27 37 57	2 23 34 35	2 11 52 39	1 02 35 33	1 03 42 44	+20 58	- 3 48	- 4 17	23 12	10 46
20	3 02 59 32	11 18 42 43	10 15 39 20	3 18 32 07	3 27 50 21	2 24 48 17	2 12 00 08	1 02 32 23	1 03 39 32	+20 47	+ 1 40	- 3 36	23 40	11 41
21	3 03 56 47	0 00 44 25	10 15 46 14	3 20 20 19	3 28 02 51	2 26 01 59	2 12 07 32	1 02 29 12	1 03 38 20	+20 36	+ 6 58	- 2 46	-- --	12 35
22	3 04 54 03	0 12 36 45	10 15 52 26	3 22 06 36	3 28 15 20	2 27 15 41	2 12 14 56	1 02 26 01	1 03 38 26	+20 24	+11 57	- 1 50	00 07	13 29
23	3 05 51 20	0 24 25 02	10 15 57 50	3 23 51 12	3 28 27 50	2 28 29 23	2 12 22 20	1 02 22 50	1 03 39 02	+20 12	+16 30	- 0 49	00 37	14 24
24	3 06 48 38	1 06 14 36	10 16 02 32	3 25 33 54	3 28 40 26	2 29 43 11	2 12 29 44	1 02 19 40	1 03 39 14	+20 00	+20 24	+ 0 14	01 10	15 21
25	3 07 45 57	1 18 10 23	10 16 06 20	3 27 14 54	3 28 53 02	3 00 56 53	2 12 37 08	1 02 16 29	1 03 38 07	+19 47	+23 30	+ 1 16	01 47	16 18
26	3 08 43 17	2 00 16 40	10 16 09 25	3 28 54 00	3 29 05 44	3 02 10 40	2 12 44 26	1 02 13 18	1 03 35 01	+19 35	+25 35	+ 2 17	02 30	17 15
27	3 09 40 37	2 12 36 54	10 16 11 43	4 00 31 23	3 29 18 26	3 03 24 28	2 12 51 37	1 02 10 07	1 03 29 25	+19 21	+26 28	+ 3 11	03 19	18 09
28	3 10 37 57	2 25 13 19	10 16 13 07	4 02 06 53	3 29 31 07	3 04 38 22	2 12 58 55	1 02 06 56	1 03 21 25	+19 08	+26 00	+ 3 58	04 15	18 59
29	3 11 35 20	3 08 06 54	10 16 13 49	4 03 40 41	3 29 43 49	3 05 52 10	2 13 06 07	1 02 03 46	1 03 11 24	+18 54	+24 09	+ 4 33	05 15	19 45
30	3 12 32 42	3 21 17 16	10 16 13 37	4 05 12 41	3 29 56 37	3 07 06 04	2 13 13 19	1 02 00 35	1 03 00 12	+18 40	+20 58	+ 4 55	06 18	20 25
31	3 13 30 06	4 04 42 52	10 16 12 42	4 06 42 46	4 00 09 25	3 08 19 58	2 13 20 25	1 01 57 24	1 02 48 54	+18 25	+16 39	+ 5 01	07 22	21 02

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 अगस्त 2003 ई. को अयनांश 23°/54'/12"

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टै. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
अगस्त	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	3 14 27 30	4 18 21 16	10 16 10 54	4 08 11 10	4 00 22 13	3 09 33 52	2 13 27 31	1 01 54 13	1 02 38 48	+18 11	+11 26	+ 4 50	08 26	21 35
2	3 15 24 55	5 02 09 44	10 16 08 24	4 09 37 40	4 00 35 01	3 10 47 51	2 13 34 37	1 01 51 02	1 02 30 36	+17 56	+ 5 35	+ 4 22	09 29	22 08
3	3 16 22 20	5 16 05 39	10 16 05 06	4 11 02 16	4 00 47 55	3 12 01 45	2 13 41 36	1 01 47 52	1 02 25 12	+17 40	- 0 36	+ 3 39	10 33	22 40
4	3 17 19 45	6 00 06 51	10 16 01 00	4 12 24 57	4 01 00 48	3 13 15 45	2 13 48 36	1 01 44 41	1 02 22 18	+17 25	- 6 48	+ 2 42	11 37	23 13
5	3 18 17 12	6 14 11 49	10 15 56 06	4 13 45 45	4 01 13 42	3 14 29 39	2 13 55 30	1 01 41 30	1 02 21 30	+17 09	-12 43	+ 1 34	12 43	23 50
6	3 19 14 40	6 28 19 29	10 15 50 29	4 15 04 33	4 01 26 36	3 15 43 39	2 14 02 24	1 01 38 19	1 02 21 48	+16 53	-17 59	+ 0 21	13 51	-- --
7	3 20 12 08	7 12 28 52	10 15 44 05	4 16 21 21	4 01 39 36	3 16 57 45	2 14 09 12	1 01 35 09	1 02 21 41	+16 36	-22 15	- 0 53	15 00	00 32
8	3 21 09 37	7 26 38 38	10 15 37 05	4 17 36 09	4 01 52 30	3 18 11 45	2 14 16 00	1 01 31 58	1 02 20 05	+16 19	-25 10	- 2 04	16 08	01 21
9	3 22 07 06	8 10 46 44	10 15 29 17	4 18 48 44	4 02 05 30	3 19 25 44	2 14 22 47	1 01 28 47	1 02 15 53	+16 02	-26 29	- 3 08	17 11	02 17
10	3 23 04 37	8 24 50 11	10 15 20 47	4 19 59 08	4 02 18 30	3 20 39 50	2 14 29 29	1 01 25 36	1 02 08 53	+15 45	-26 05	- 3 59	18 07	03 19
11	3 24 02 07	9 08 45 20	10 15 11 40	4 21 07 14	4 02 31 29	3 21 53 56	2 14 36 05	1 01 22 25	1 01 59 16	+15 28	-24 02	- 4 36	18 56	04 25
12	3 24 59 40	9 22 28 16	10 15 01 46	4 22 12 56	4 02 44 29	3 23 08 02	2 14 42 41	1 01 19 15	1 01 47 40	+15 10	-20 38	- 4 56	19 37	05 31
13	3 25 57 14	10 05 55 24	10 14 51 22	4 23 16 13	4 02 57 35	3 24 22 08	2 14 49 17	1 01 16 04	1 01 35 16	+14 52	-16 11	- 4 59	20 12	06 35
14	3 26 54 48	10 19 04 13	10 14 40 16	4 24 16 49	4 03 10 35	3 25 36 14	2 14 55 47	1 01 12 53	1 01 23 16	+14 34	-11 05	- 4 46	20 43	07 36
15	3 27 52 24	11 01 53 38	10 14 28 40	4 25 14 49	4 03 23 41	3 26 50 19	2 15 02 11	1 01 09 42	1 01 12 46	+14 15	- 5 37	- 4 18	21 12	08 34
16	3 28 50 02	11 14 24 13	10 14 16 28	4 26 10 00	4 03 36 41	3 28 04 31	2 15 08 34	1 01 06 32	1 01 04 40	+13 56	- 0 04	- 3 39	21 39	09 30
17	3 29 47 40	11 26 38 07	10 14 03 39	4 27 02 06	4 03 49 47	3 29 18 43	2 15 14 58	1 01 03 21	1 00 59 04	+13 37	+ 5 23	- 2 50	22 07	10 25
18	4 00 45 20	0 08 38 47	10 13 50 27	4 27 51 12	4 04 02 52	4 00 32 55	2 15 21 10	1 01 00 10	1 00 55 58	+13 18	+10 33	- 1 55	22 36	11 19
19	4 01 43 02	0 20 30 41	10 13 36 45	4 28 36 54	4 04 15 52	4 01 47 07	2 15 27 28	1 00 56 59	1 00 54 46	+12 59	+15 17	- 0 55	23 07	12 14
20	4 02 40 45	1 02 18 58	10 13 22 33	4 29 19 05	4 04 28 58	4 03 01 19	2 15 33 34	1 00 53 48	1 00 54 34	+12 39	+19 25	+ 0 07	23 43	13 10
21	4 03 38 31	1 14 09 06	10 13 08 03	4 29 57 35	4 04 42 04	4 04 15 37	2 15 39 46	1 00 50 38	1 00 54 15	+12 20	+22 47	+ 1 09	-- --	14 07
22	4 04 36 18	1 26 06 33	10 12 53 09	5 00 32 11	4 04 55 10	4 05 29 54	2 15 45 45	1 00 47 27	1 00 52 51	+12 00	+25 12	+ 2 09	00 23	15 04
23	4 05 34 06	2 08 16 23	10 12 37 56	5 01 02 40	4 05 08 16	4 06 44 12	2 15 51 45	1 00 44 16	1 00 49 27	+11 40	+26 29	+ 3 04	01 09	15 59
24	4 06 31 55	2 20 43 01	10 12 22 32	5 01 28 46	4 05 21 21	4 07 58 30	2 15 57 39	1 00 41 05	1 00 43 33	+11 19	+26 28	+ 3 51	02 02	16 51
25	4 07 29 47	3 03 29 37	10 12 06 50	5 01 50 16	4 05 34 27	4 09 12 48	2 16 03 33	1 00 37 54	1 00 35 08	+10 59	+25 03	+ 4 28	03 00	17 38
26	4 08 27 41	3 16 37 47	10 11 51 02	5 02 06 45	4 05 47 33	4 10 27 06	2 16 09 21	1 00 34 44	1 00 24 38	+10 38	+22 16	+ 4 51	04 03	18 21
27	4 09 25 36	4 00 07 18	10 11 35 02	5 02 18 15	4 06 00 39	4 11 41 30	2 16 15 03	1 00 31 33	1 00 12 50	+10 17	+18 13	+ 5 00	05 08	19 00
28	4 10 23 33	4 13 55 54	10 11 19 02	5 02 24 14	4 06 13 39	4 12 55 54	2 16 20 45	1 00 28 22	1 00 00 50	+ 9 56	+13 08	+ 4 51	06 13	19 35
29	4 11 21 31	4 27 59 40	10 11 02 55	5 02 24 38	4 06 26 45	4 14 10 11	2 16 26 20	1 00 25 11	0 29 50 02	+ 9 35	+ 7 16	+ 4 25	07 18	20 08
30	4 12 19 30	5 12 13 38	10 10 46 55	5 02 19 08	4 06 39 51	4 15 24 35	2 16 31 50	1 00 22 01	0 29 41 14	+ 9 14	+ 0 58	+ 3 42	08 23	20 41
31	4 13 17 30	5 26 32 37	10 10 31 01	5 02 07 43	4 06 52 50	4 16 38 59	2 16 37 14	1 00 18 50	0 29 35 08	+ 8 52	- 5 27	+ 2 45	09 29	21 14

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 सितंबर 2003 ई. को अयनांश $23^0/54'/16''$

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
सितंबर	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	4 14 15 32	6 10 52 00	10 10 15 13	5 01 50 07	4 07 05 56	4 17 53 23	2 16 42 38	1 00 15 39	0 29 31 56	+ 8 31	-11 35	+ 1 37	10 36	21 50
2	4 15 13 36	6 25 08 16	10 09 59 37	5 01 26 18	4 07 18 56	4 19 07 53	2 16 47 56	1 00 12 28	0 29 30 50	+ 8 09	-17 06	+ 0 23	11 44	22 31
3	4 16 11 41	7 09 19 07	10 09 44 13	5 00 56 18	4 07 31 56	4 20 22 17	2 16 53 14	1 00 09 17	0 29 31 01	+ 7 47	-21 39	- 0 52	12 53	23 17
4	4 17 09 48	7 23 23 21	10 09 29 07	5 00 20 24	4 07 44 56	4 21 36 41	2 16 58 19	1 00 06 07	0 29 31 07	+ 7 25	-24 52	- 2 03	14 01	-- --
5	4 18 07 56	8 07 20 14	10 09 14 24	4 29 38 47	4 07 57 56	4 22 51 10	2 17 03 25	1 00 02 56	0 29 29 49	+ 7 03	-26 32	- 3 06	15 04	00 10
6	4 19 06 05	8 21 09 15	10 08 59 54	4 28 51 59	4 08 10 56	4 24 05 40	2 17 08 25	0 29 59 45	0 29 26 19	+ 6 41	-26 31	- 3 58	16 02	01 10
7	4 20 04 15	9 04 49 30	10 08 45 54	4 28 00 28	4 08 23 49	4 25 20 04	2 17 13 19	0 29 56 34	0 29 20 00	+ 6 18	-24 54	- 4 35	16 52	02 13
8	4 21 02 28	9 18 19 49	10 08 32 24	4 27 05 10	4 08 36 43	4 26 34 34	2 17 18 13	0 29 53 23	0 29 11 18	+ 5 56	-21 52	- 4 56	17 34	03 18
9	4 22 00 42	10 01 38 35	10 08 19 18	4 26 07 04	4 08 49 43	4 27 49 04	2 17 22 55	0 29 50 13	0 29 00 36	+ 5 33	-17 44	- 5 01	18 11	04 22
10	4 22 58 57	10 14 44 10	10 08 06 42	4 25 07 10	4 09 02 31	4 29 03 34	2 17 27 37	0 29 47 02	0 28 49 12	+ 5 11	-12 49	- 4 50	18 43	05 23
11	4 23 57 14	10 27 35 17	10 07 54 36	4 24 06 52	4 09 15 25	5 00 18 03	2 17 32 12	0 29 43 51	0 28 38 06	+ 4 48	- 7 26	- 4 25	19 12	06 22
12	4 24 55 33	11 10 11 19	10 07 43 06	4 23 07 28	4 09 28 13	5 01 32 33	2 17 36 48	0 29 40 40	0 28 28 18	+ 4 25	- 1 50	- 3 46	19 40	07 19
13	4 25 53 53	11 22 32 36	10 07 32 11	4 22 10 16	4 09 41 06	5 02 47 03	2 17 41 12	0 29 37 30	0 28 20 48	+ 4 02	+ 3 44	- 2 58	20 07	08 15
14	4 26 52 16	0 04 40 36	10 07 21 53	4 21 16 52	4 09 53 54	5 04 01 33	2 17 45 30	0 29 34 19	0 28 15 42	+ 3 39	+ 9 04	- 2 02	20 36	09 10
15	4 27 50 41	0 16 37 52	10 07 12 11	4 20 28 28	4 10 06 36	5 05 16 09	2 17 49 48	0 29 31 08	0 28 13 00	+ 3 16	+14 00	- 1 01	21 06	10 05
16	4 28 49 08	0 28 27 55	10 07 03 11	4 19 46 16	4 10 19 24	5 06 30 39	2 17 54 00	0 29 27 57	0 28 12 17	+ 2 53	+18 23	+ 0 01	21 39	11 00
17	4 29 47 37	1 10 15 10	10 06 54 53	4 19 11 22	4 10 32 06	5 07 45 15	2 17 58 05	0 29 24 46	0 28 12 47	+ 2 30	+22 01	+ 1 04	22 17	11 57
18	5 00 46 09	1 22 04 33	10 06 47 17	4 18 44 46	4 10 44 48	5 08 59 44	2 18 02 05	0 29 21 36	0 28 13 29	+ 2 07	+24 45	+ 2 04	23 01	12 53
19	5 01 44 42	2 04 01 22	10 06 40 23	4 18 26 58	4 10 57 24	5 10 14 20	2 18 05 59	0 29 18 25	0 28 13 41	+ 1 44	+26 25	+ 3 00	23 50	13 49
20	5 02 43 17	2 16 10 59	10 06 34 17	4 18 18 35	4 11 09 59	5 11 28 56	2 18 09 47	0 29 15 14	0 28 12 29	+ 1 21	+26 51	+ 3 48	-- --	14 41
21	5 03 41 55	2 28 38 23	10 06 28 53	4 18 19 53	4 11 22 35	5 12 43 32	2 18 13 35	0 29 12 03	0 28 09 23	+ 0 57	+25 56	+ 4 27	00 45	15 30
22	5 04 40 35	3 11 27 43	10 06 24 10	4 18 30 53	4 11 35 05	5 13 58 08	2 18 17 11	0 29 08 53	0 28 04 16	+ 0 34	+23 40	+ 4 53	01 45	16 14
23	5 05 39 18	3 24 41 48	10 06 20 22	4 18 51 36	4 11 47 35	5 15 12 44	2 18 20 47	0 29 05 42	0 27 57 28	+ 0 11	+20 05	+ 5 05	02 49	16 54
24	5 06 38 02	4 08 21 24	10 06 17 16	4 19 21 42	4 12 00 05	5 16 27 20	2 18 24 10	0 29 02 31	0 27 49 28	- 0 13	+15 21	+ 5 01	03 54	17 31
25	5 07 36 48	4 22 25 02	10 06 14 58	4 20 00 48	4 12 12 29	5 17 41 55	2 18 27 34	0 28 59 20	0 27 41 10	- 0 36	+ 9 40	+ 4 38	05 00	18 05
26	5 08 35 37	5 06 48 40	10 06 13 28	4 20 48 36	4 12 24 53	5 18 56 31	2 18 30 46	0 28 56 09	0 27 33 40	- 1 00	+ 3 21	+ 3 58	06 06	18 38
27	5 09 34 26	5 21 26 14	10 06 12 52	4 21 44 24	4 12 37 16	5 20 11 07	2 18 33 58	0 28 52 59	0 27 27 40	- 1 23	- 3 15	+ 3 01	07 13	19 12
28	5 10 33 19	6 06 10 30	10 06 12 58	4 22 47 31	4 12 49 34	5 21 25 49	2 18 36 58	0 28 49 48	0 27 23 40	- 1 46	- 9 45	+ 1 52	08 21	19 48
29	5 11 32 13	6 20 54 13	10 06 13 58	4 23 57 25	4 13 01 46	5 22 40 25	2 18 39 58	0 28 46 37	0 27 21 45	- 2 10	-15 43	+ 0 35	09 31	20 28
30	5 12 31 09	7 05 31 06	10 06 15 39	4 25 13 19	4 13 13 58	5 23 55 01	2 18 42 51	0 28 43 26	0 27 21 39	- 2 33	-20 44	- 0 44	10 42	21 13

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 अक्तूबर 2003 ई. को अयनांश 23°/54'/21"

2003 ई. अक्तूबर	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	5 13 30 07	7 19 56 36	10 06 18 15	4 26 34 37	4 13 26 10	5 25 09 42	2 18 45 33	0 28 40 15	0 27 22 33	- 2 56	-24 26	- 1 59	11 53	22 05
2	5 14 29 07	8 04 07 52	10 06 21 39	4 28 00 37	4 13 38 16	5 26 24 18	2 18 48 15	0 28 37 05	0 27 23 39	- 3 20	-26 31	- 3 05	12 59	23 03
3	5 15 28 08	8 18 03 40	10 06 25 51	4 29 30 37	4 13 50 15	5 27 39 00	2 18 50 45	0 28 33 54	0 27 23 57	- 3 43	-26 53	- 4 00	13 59	-- --
4	5 16 27 11	9 01 43 54	10 06 30 45	5 01 04 01	4 14 02 15	5 28 53 36	2 18 53 15	0 28 30 43	0 27 22 51	- 4 06	-25 35	- 4 39	14 51	00 06
5	5 17 26 16	9 15 09 03	10 06 36 33	5 02 40 19	4 14 14 09	6 00 08 12	2 18 55 33	0 28 27 32	0 27 19 56	- 4 29	-22 51	- 5 03	15 35	01 10
6	5 18 25 23	9 28 19 50	10 06 43 03	5 04 18 55	4 14 26 03	6 01 22 54	2 18 57 51	0 28 24 22	0 27 15 20	- 4 52	-18 58	- 5 09	16 12	02 14
7	5 19 24 31	10 11 16 58	10 06 50 21	5 05 59 25	4 14 37 57	6 02 37 30	2 18 59 56	0 28 21 11	0 27 09 26	- 5 15	-14 16	- 5 00	16 45	03 15
8	5 20 23 41	10 24 01 05	10 06 58 21	5 07 41 25	4 14 49 39	6 03 52 05	2 19 02 02	0 28 18 00	0 27 02 56	- 5 38	- 9 01	- 4 36	17 14	04 14
9	5 21 22 53	11 06 32 48	10 07 07 02	5 09 24 37	4 15 01 21	6 05 06 47	2 19 03 56	0 28 14 49	0 26 56 32	- 6 01	- 3 29	- 3 59	17 42	05 11
10	5 22 22 06	11 18 52 48	10 07 16 32	5 11 08 36	4 15 13 02	6 06 21 23	2 19 05 44	0 28 11 38	0 26 51 02	- 6 24	+ 2 06	- 3 11	18 09	06 06
11	5 23 21 22	0 01 02 04	10 07 26 44	5 12 53 06	4 15 24 32	6 07 35 59	2 19 07 26	0 28 08 28	0 26 46 56	- 6 47	+ 7 33	- 2 16	18 37	07 01
12	5 24 20 41	0 13 02 01	10 07 37 38	5 14 38 00	4 15 36 08	6 08 50 41	2 19 09 02	0 28 05 17	0 26 44 26	- 7 09	+12 40	- 1 14	19 06	07 56
13	5 25 20 01	0 24 54 38	10 07 49 14	5 16 23 00	4 15 47 32	6 10 05 17	2 19 10 31	0 28 02 06	0 26 43 31	- 7 32	+17 15	- 0 10	19 38	08 52
14	5 26 19 24	1 06 42 35	10 08 01 26	5 18 08 00	4 15 58 56	6 11 19 53	2 19 11 55	0 27 58 55	0 26 43 55	- 7 54	+21 10	+ 0 54	20 14	09 48
15	5 27 18 49	1 18 29 10	10 08 14 20	5 19 52 48	4 16 10 14	6 12 34 34	2 19 13 13	0 27 55 44	0 26 45 13	- 8 17	+24 12	+ 1 56	20 55	10 45
16	5 28 18 16	2 00 18 17	10 08 27 50	5 21 37 30	4 16 21 31	6 13 49 10	2 19 14 25	0 27 52 34	0 26 47 01	- 8 39	+26 12	+ 2 54	21 42	11 40
17	5 29 17 44	2 12 14 24	10 08 42 01	5 23 21 41	4 16 32 37	6 15 03 52	2 19 15 31	0 27 49 23	0 26 48 31	- 9 01	+27 01	+ 3 44	22 34	12 33
18	6 00 17 16	2 24 22 17	10 08 56 55	5 25 05 35	4 16 43 43	6 16 18 28	2 19 16 25	0 27 46 12	0 26 49 31	- 9 23	+26 34	+ 4 25	23 31	13 23
19	6 01 16 50	3 06 46 46	10 09 12 19	5 26 48 59	4 16 54 49	6 17 33 04	2 19 17 19	0 27 43 01	0 26 49 24	- 9 45	+24 48	+ 4 55	-- --	14 08
20	6 02 16 26	3 19 32 26	10 09 28 19	5 28 31 59	4 17 05 43	6 18 47 46	2 19 18 00	0 27 39 51	0 26 48 24	-10 07	+21 45	+ 5 12	00 31	14 48
21	6 03 16 04	4 02 42 59	10 09 45 01	6 00 14 23	4 17 16 37	6 20 02 21	2 19 18 36	0 27 36 40	0 26 46 18	-10 28	+17 32	+ 5 12	01 34	15 25
22	6 04 15 45	4 16 20 43	10 10 02 13	6 01 56 10	4 17 27 25	6 21 17 03	2 19 19 06	0 27 33 29	0 26 43 36	-10 49	+12 17	+ 4 56	02 38	16 00
23	6 05 15 28	5 00 25 47	10 10 19 55	6 03 37 28	4 17 38 06	6 22 31 39	2 19 19 30	0 27 30 18	0 26 40 42	-11 11	+ 6 15	+ 4 22	03 43	16 33
24	6 06 15 12	5 14 55 45	10 10 38 19	6 05 18 16	4 17 48 42	6 23 46 21	2 19 19 48	0 27 27 07	0 26 38 00	-11 32	- 0 17	+ 3 30	04 50	17 06
25	6 07 14 59	5 29 45 28	10 10 57 12	6 06 58 22	4 17 59 12	6 25 00 57	2 19 19 54	0 27 23 57	0 26 35 54	-11 53	- 6 58	+ 2 23	05 58	17 41
26	6 08 14 48	6 14 47 24	10 11 16 36	6 08 37 58	4 18 09 42	6 26 15 39	2 19 19 59	0 27 20 46	0 26 34 35	-12 13	-13 23	+ 1 05	07 09	18 20
27	6 09 14 39	6 29 52 42	10 11 36 36	6 10 17 04	4 18 20 00	6 27 30 15	2 19 19 53	0 27 17 35	0 26 34 17	-12 34	-19 01	- 0 18	08 22	19 04
28	6 10 14 33	7 14 52 30	10 11 57 06	6 11 55 33	4 18 30 18	6 28 44 56	2 19 19 47	0 27 14 24	0 26 34 41	-12 54	-23 24	- 1 39	09 36	19 55
29	6 11 14 27	7 29 39 10	10 12 18 06	6 13 33 33	4 18 40 29	6 29 59 32	2 19 19 29	0 27 11 14	0 26 35 35	-13 14	-26 09	- 2 53	10 47	20 53
30	6 12 14 23	8 14 07 09	10 12 39 36	6 15 11 03	4 18 50 35	7 01 14 14	2 19 19 05	0 27 08 03	0 26 36 35	-13 34	-27 05	- 3 53	11 52	21 56
31	6 13 14 21	8 28 13 16	10 13 01 36	6 16 47 57	4 19 00 29	7 02 28 50	2 19 18 35	0 27 04 52	0 26 37 17	-13 54	-26 12	- 4 38	12 48	23 02

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 नवंबर 2003 ई. को अयनांश $23^{0}/54'/25''$

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
नवंबर	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	6 14 14 21	9 11 56 33	10 13 24 06	6 18 24 27	4 19 10 23	7 03 43 26	2 19 17 59	0 27 01 41	0 26 37 41	-14 13	-23 45	- 5 06	13 35	-- --
2	6 15 14 22	9 25 17 44	10 13 46 59	6 20 00 21	4 19 20 11	7 04 58 08	2 19 17 16	0 26 58 30	0 26 37 28	-14 33	-20 04	- 5 16	14 14	00 07
3	6 16 14 25	10 08 18 41	10 14 10 17	6 21 35 56	4 19 29 53	7 06 12 44	2 19 16 22	0 26 55 20	0 26 36 52	-14 52	-15 30	- 5 10	14 48	01 09
4	6 17 14 29	10 21 01 54	10 14 34 05	6 23 10 56	4 19 39 29	7 07 27 19	2 19 15 28	0 26 52 09	0 26 35 52	-15 10	-10 21	- 4 48	15 18	02 09
5	6 18 14 35	11 03 30 04	10 14 58 17	6 24 45 38	4 19 48 58	7 08 41 55	2 19 14 22	0 26 48 58	0 26 34 46	-15 29	- 4 54	- 4 13	15 46	03 06
6	6 19 14 42	11 15 45 49	10 15 22 53	6 26 19 50	4 19 58 16	7 09 56 31	2 19 13 10	0 26 45 47	0 26 33 46	-15 47	+ 0 39	- 3 27	16 13	04 01
7	6 20 14 51	11 27 51 36	10 15 47 53	6 27 53 44	4 20 07 34	7 11 11 07	2 19 11 52	0 26 42 36	0 26 32 58	-16 05	+ 6 07	- 2 32	16 40	04 55
8	6 21 15 02	0 09 49 40	10 16 13 17	6 29 27 08	4 20 16 40	7 12 25 43	2 19 10 33	0 26 39 26	0 26 32 28	-16 23	+11 20	- 1 31	17 08	05 50
9	6 22 15 15	0 21 42 07	10 16 39 04	7 01 00 13	4 20 25 46	7 13 40 19	2 19 09 03	0 26 36 15	0 26 32 09	-16 41	+16 05	- 0 27	17 39	06 45
10	6 23 15 29	1 03 31 01	10 17 05 10	7 02 33 01	4 20 34 40	7 14 54 54	2 19 07 27	0 26 33 04	0 26 32 09	-16 58	+20 12	+ 0 39	18 14	07 41
11	6 24 15 46	1 15 18 31	10 17 31 40	7 04 05 25	4 20 43 27	7 16 09 24	2 19 05 39	0 26 29 53	0 26 32 15	-17 15	+23 31	+ 1 42	18 53	08 38
12	6 25 16 04	1 27 06 59	10 17 58 28	7 05 37 31	4 20 52 09	7 17 24 00	2 19 03 51	0 26 26 43	0 26 32 15	-17 31	+25 49	+ 2 41	19 37	09 34
13	6 26 16 23	2 08 59 08	10 18 25 40	7 07 09 19	4 21 00 45	7 18 38 36	2 19 01 57	0 26 23 32	0 26 32 15	-17 48	+26 59	+ 3 34	20 27	10 28
14	6 27 16 45	2 20 58 03	10 18 53 10	7 08 40 43	4 21 09 15	7 19 53 06	2 18 59 57	0 26 20 21	0 26 32 09	-18 04	+26 53	+ 4 18	21 22	11 18
15	6 28 17 09	3 03 07 14	10 19 20 58	7 10 11 54	4 21 17 33	7 21 07 42	2 18 57 50	0 26 17 10	0 26 31 56	-18 19	+25 30	+ 4 51	22 20	12 04
16	6 29 17 34	3 15 30 30	10 19 49 04	7 11 42 42	4 21 25 45	7 22 22 12	2 18 55 32	0 26 13 59	0 26 31 44	-18 35	+22 53	+ 5 11	23 21	12 45
17	7 00 18 02	3 28 11 48	10 20 17 33	7 13 13 12	4 21 33 51	7 23 36 47	2 18 53 14	0 26 10 49	0 26 31 38	-18 50	+19 08	+ 5 17	-- --	13 22
18	7 01 18 31	4 11 14 50	10 20 46 15	7 14 43 24	4 21 41 50	7 24 51 17	2 18 50 50	0 26 07 38	0 26 31 50	-19 04	+14 22	+ 5 06	00 22	13 56
19	7 02 19 01	4 24 42 40	10 21 15 15	7 16 13 18	4 21 49 38	7 26 05 53	2 18 48 14	0 26 04 27	0 26 32 14	-19 19	+ 8 47	+ 4 39	01 24	14 29
20	7 03 19 34	5 08 37 07	10 21 44 33	7 17 42 48	4 21 57 20	7 27 20 23	2 18 45 38	0 26 01 16	0 26 32 56	-19 33	+ 2 36	+ 3 55	02 28	15 01
21	7 04 20 09	5 22 57 59	10 22 14 09	7 19 11 53	4 22 04 56	7 28 34 59	2 18 42 55	0 25 58 05	0 26 33 38	-19 46	- 3 55	+ 2 56	03 33	15 34
22	7 05 20 45	6 07 42 34	10 22 44 03	7 20 40 41	4 22 12 20	7 29 49 29	2 18 40 07	0 25 54 55	0 26 34 19	-20 00	-10 26	+ 1 43	04 42	16 10
23	7 06 21 23	6 22 45 21	10 23 14 09	7 22 08 59	4 22 19 38	8 01 03 59	2 18 37 07	0 25 51 44	0 26 34 37	-20 12	-16 28	+ 0 21	05 53	16 51
24	7 07 22 03	7 07 58 14	10 23 44 32	7 23 36 53	4 22 26 49	8 02 18 28	2 18 34 07	0 25 48 33	0 26 34 31	-20 25	-21 33	- 1 03	07 08	17 39
25	7 08 22 44	7 23 11 35	10 24 15 08	7 25 04 11	4 22 33 49	8 03 32 58	2 18 31 01	0 25 45 22	0 26 33 43	-20 37	-25 10	- 2 22	08 23	18 35
26	7 09 23 25	8 08 15 30	10 24 46 02	7 26 30 59	4 22 40 43	8 04 47 34	2 18 27 49	0 25 42 12	0 26 32 19	-20 49	-26 56	- 3 30	09 34	19 39
27	7 10 24 09	8 23 01 28	10 25 17 14	7 27 57 04	4 22 47 25	8 06 02 04	2 18 24 31	0 25 39 01	0 26 30 37	-21 00	-26 43	- 4 24	10 36	20 46
28	7 11 24 54	9 07 23 25	10 25 48 38	7 29 22 22	4 22 54 01	8 07 16 28	2 18 21 06	0 25 35 50	0 26 28 48	-21 11	-24 43	- 4 58	11 29	21 55
29	7 12 25 40	9 21 18 13	10 26 20 14	8 00 46 52	4 23 00 25	8 08 30 58	2 18 17 42	0 25 32 39	0 26 27 18	-21 22	-21 17	- 5 14	12 13	23 00
30	7 13 26 26	10 04 45 29	10 26 52 02	8 02 10 22	4 23 06 42	8 09 45 27	2 18 14 12	0 25 29 28	0 26 26 24	-21 32	-16 49	- 5 12	12 49	-- --

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 दिसंबर 2003 ई. को अयनांश 23°/54'/30"

2003 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
दिसंबर	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	7 14 27 14	10 17 47 01	10 27 24 01	8 03 32 46	4 23 12 48	8 10 59 51	2 18 10 30	0 25 26 18	0 26 26 24	-21 42	-11 42	- 4 54	13 21	00 02
2	7 15 28 02	11 00 26 05	10 27 56 19	8 04 53 51	4 23 18 48	8 12 14 21	2 18 06 48	0 25 23 07	0 26 27 06	-21 51	- 6 15	- 4 22	13 50	01 00
3	7 16 28 50	11 12 46 48	10 28 28 43	8 06 13 27	4 23 24 36	8 13 28 45	2 18 03 06	0 25 19 56	0 26 28 30	-22 00	- 0 41	- 3 38	14 17	01 56
4	7 17 29 41	11 24 53 25	10 29 01 25	8 07 31 27	4 23 30 12	8 14 43 09	2 17 59 11	0 25 16 45	0 26 30 12	-22 09	+ 4 49	- 2 46	14 43	02 50
5	7 18 30 32	0 06 50 06	10 29 34 13	8 08 47 21	4 23 35 42	8 15 57 33	2 17 55 17	0 25 13 34	0 26 31 54	-22 17	+10 04	- 1 46	15 11	03 45
6	7 19 31 24	0 18 40 39	11 00 07 13	8 10 00 56	4 23 41 06	8 17 11 51	2 17 51 17	0 25 10 24	0 26 32 53	-22 25	+14 56	- 0 43	15 41	04 39
7	7 20 32 17	1 00 28 22	11 00 40 25	8 11 12 02	4 23 46 17	8 18 26 14	2 17 47 11	0 25 07 13	0 26 32 59	-22 32	+19 13	+ 0 22	16 14	05 35
8	7 21 33 11	1 12 16 01	11 01 13 42	8 12 19 56	4 23 51 17	8 19 40 32	2 17 43 05	0 25 04 02	0 26 31 47	-22 39	+22 44	+ 1 25	16 52	06 32
9	7 22 34 06	1 24 05 56	11 01 47 12	8 13 24 26	4 23 56 05	8 20 54 50	2 17 38 53	0 25 00 51	0 26 29 11	-22 45	+25 19	+ 2 25	17 35	07 28
10	7 23 35 01	2 06 00 04	11 02 20 54	8 14 24 55	4 24 00 47	8 22 09 14	2 17 34 41	0 24 57 41	0 26 25 17	-22 51	+26 46	+ 3 19	18 23	08 23
11	7 24 35 58	2 18 00 12	11 02 54 48	8 15 20 43	4 24 05 17	8 23 23 26	2 17 30 22	0 24 54 30	0 26 20 22	-22 57	+26 58	+ 4 05	19 17	09 15
12	7 25 36 56	3 00 08 04	11 03 28 42	8 16 11 12	4 24 09 41	8 24 37 44	2 17 25 58	0 24 51 19	0 26 14 58	-23 02	+25 54	+ 4 40	20 14	10 02
13	7 26 37 55	3 12 25 34	11 04 02 54	8 16 55 42	4 24 13 52	8 25 52 01	2 17 21 34	0 24 48 08	0 26 09 40	-23 06	+23 34	+ 5 03	21 13	10 45
14	7 27 38 55	3 24 54 46	11 04 37 12	8 17 33 24	4 24 17 52	8 27 06 13	2 17 17 04	0 24 44 57	0 26 05 04	-23 10	+20 07	+ 5 11	22 14	11 23
15	7 28 39 56	4 07 38 07	11 05 11 35	8 18 03 23	4 24 21 40	8 28 20 25	2 17 12 34	0 24 41 47	0 26 01 46	-23 14	+15 40	+ 5 05	23 14	11 57
16	7 29 40 57	4 20 38 15	11 05 46 05	8 18 24 53	4 24 25 22	8 29 34 37	2 17 07 58	0 24 38 36	0 25 59 58	-23 17	+10 26	+ 4 43	-- --	12 28
17	8 00 41 59	5 03 57 46	11 06 20 47	8 18 36 52	4 24 28 52	9 00 48 49	2 17 03 21	0 24 35 25	0 25 59 46	-23 20	+ 4 36	+ 4 06	00 15	12 59
18	8 01 43 03	5 17 38 57	11 06 55 35	8 18 38 39	4 24 32 10	9 02 02 55	2 16 58 39	0 24 32 14	0 26 00 46	-23 22	- 1 36	+ 3 14	01 17	13 30
19	8 02 44 08	6 01 43 04	11 07 30 35	8 18 29 27	4 24 35 15	9 03 17 01	2 16 53 57	0 24 29 03	0 26 02 09	-23 24	- 7 54	+ 2 08	02 21	14 03
20	8 03 45 14	6 16 09 46	11 08 05 41	8 18 08 44	4 24 38 09	9 04 31 12	2 16 49 15	0 24 25 53	0 26 03 21	-23 25	-13 59	+ 0 54	03 28	14 40
21	8 04 46 20	7 00 56 27	11 08 40 53	8 17 36 19	4 24 40 57	9 05 45 18	2 16 44 27	0 24 22 42	0 26 03 27	-23 26	-19 24	- 0 26	04 40	15 23
22	8 05 47 28	7 15 57 46	11 09 16 10	8 16 52 25	4 24 43 27	9 06 59 18	2 16 39 39	0 24 19 31	0 26 01 45	-23 26	-23 40	- 1 46	05 54	16 15
23	8 06 48 35	8 01 05 53	11 09 51 34	8 15 57 30	4 24 45 51	9 08 13 24	2 16 34 51	0 24 16 20	0 25 58 03	-23 26	-26 19	- 2 58	07 07	17 15
24	8 07 49 43	8 16 11 16	11 10 27 10	8 14 53 00	4 24 48 03	9 09 27 24	2 16 29 56	0 24 13 10	0 25 52 32	-23 26	-27 00	- 3 58	08 15	18 22
25	8 08 50 52	9 01 04 10	11 11 02 52	8 13 40 23	4 24 50 03	9 10 41 24	2 16 25 08	0 24 09 59	0 25 45 50	-23 25	-25 44	- 4 40	09 15	19 33
26	8 09 52 01	9 15 36 18	11 11 38 40	8 12 21 59	4 24 51 56	9 11 55 24	2 16 20 14	0 24 06 48	0 25 38 44	-23 23	-22 44	- 5 03	10 04	20 42
27	8 10 53 11	9 29 41 58	11 12 14 34	8 11 00 17	4 24 53 32	9 13 09 17	2 16 15 20	0 24 03 37	0 25 32 08	-23 21	-18 29	- 5 07	10 45	21 48
28	8 11 54 20	10 13 18 41	11 12 50 34	8 09 38 04	4 24 54 56	9 14 23 11	2 16 10 20	0 24 00 26	0 25 26 50	-23 19	-13 24	- 4 53	11 20	22 49
29	8 12 55 29	10 26 26 56	11 13 26 33	8 08 18 04	4 24 56 14	9 15 37 05	2 16 05 26	0 23 57 16	0 25 23 20	-23 16	- 7 52	- 4 24	11 51	23 48
30	8 13 56 37	11 09 09 25	11 14 02 45	8 07 02 47	4 24 57 14	9 16 50 53	2 16 00 25	0 23 54 05	0 25 21 50	-23 12	- 2 11	- 3 43	12 19	-- --
31	8 14 57 46	11 21 30 30	11 14 39 03	8·05 54 11	4 24 58 08	9 18 04 41	2 15 55 31	0 23 50 54	0 25 21 56	-23 08	+ 3 25	- 2 52	12 46	00 44

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 जनवरी 2004 ई. को अयनांश $23^0/54'/34''$

2004 ई. जनवरी	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चंन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	8 15 58 55	0 03 35 14	11 15 15 27	8 04 54 05	4 24 58 50	9 19 18 23	2 15 50 31	0 23 47 43	0 25 23 02	-23 04	+ 8 48	- 1 55	13 13	01 38
2	8 17 00 04	0 15 28 53	11 15 51 51	8 04 03 29	4 24 59 13	9 20 32 05	2 15 45 37	0 23 44 33	0 25 24 13	-22 59	+13 47	- 0 53	13 42	02 33
3	8 18 01 13	0 27 16 35	11 16 28 21	8 03 23 00	4 24 59 31	9 21 45 46	2 15 40 37	0 23 41 22	0 25 24 37	-22 54	+18 13	+ 0 10	14 14	03 28
4	8 19 02 21	1 09 02 54	11 17 04 57	8 02 52 54	4 24 59 37	9 22 59 22	2 15 35 43	0 23 38 11	0 25 23 19	-22 48	+21 56	+ 1 12	14 50	04 25
5	8 20 03 30	1 20 51 46	11 17 41 39	8 02 33 06	4 24 59 31	9 24 12 58	2 15 30 43	0 23 35 00	0 25 19 43	-22 42	+24 45	+ 2 12	15 32	05 21
6	8 21 04 37	2 02 46 19	11 18 18 20	8 02 23 07	4 24 59 13	9 25 26 28	2 15 25 49	0 23 31 50	0 25 13 36	-22 36	+26 30	+ 3 06	16 18	06 17
7	8 22 05 45	2 14 48 51	11 18 55 14	8 02 22 25	4 24 58 49	9 26 39 58	2 15 20 54	0 23 28 39	0 25 05 00	-22 29	+27 01	+ 3 52	17 11	07 10
8	8 23 06 53	2 27 00 55	11 19 32 02	8 02 30 25	4 24 58 06	9 27 53 22	2 15 16 00	0 23 25 28	0 24 54 30	-22 21	+26 13	+ 4 28	18 08	08 00
9	8 24 08 01	3 09 23 21	11 20 09 02	8 02 46 25	4 24 57 12	9 29 06 46	2 15 11 12	0 23 22 17	0 24 42 54	-22 13	+24 09	+ 4 52	19 07	08 44
10	8 25 09 09	3 21 56 39	11 20 46 02	8 03 09 37	4 24 56 12	10 00 20 03	2 15 06 18	0 23 19 06	0 24 31 18	-22 05	+20 53	+ 5 02	20 08	09 23
11	8 26 10 16	4 04 41 06	11 21 23 08	8 03 39 31	4 24 54 54	10 01 33 21	2 15 01 30	0 23 15 56	0 24 20 48	-21 56	+16 37	+ 4 58	21 08	09 59
12	8 27 11 24	4 17 37 05	11 22 00 14	8 04 15 26	4 24 53 24	10 02 46 33	2 14 56 42	0 23 12 45	0 24 12 24	-21 47	+11 31	+ 4 38	22 09	10 31
13	8 28 12 30	5 00 45 20	11 22 37 25	8 04 56 38	4 24 51 48	10 03 59 45	2 14 51 54	0 23 09 34	0 24 06 36	-21 37	+ 5 51	+ 4 03	23 09	11 01
14	8 29 13 37	5 14 06 53	11 23 14 37	8 05 42 44	4 24 50 00	10 05 12 51	2 14 47 11	0 23 06 23	0 24 03 30	-21 27	- 0 11	+ 3 15	-- --	11 31
15	9 00 14 44	5 27 43 07	11 23 51 55	8 06 33 08	4 24 47 59	10 06 25 51	2 14 42 29	0 23 03 12	0 24 02 35	-21 17	- 6 20	+ 2 15	00 11	12 02
16	9 01 15 52	6 11 35 13	11 24 29 13	8 07 27 26	4 24 45 41	10 07 38 51	2 14 37 53	0 23 00 02	0 24 02 53	-21 06	-12 19	+ 1 06	01 15	12 36
17	9 02 16 59	6 25 43 53	11 25 06 43	8 08 25 08	4 24 43 17	10 08 51 50	2 14 33 11	0 22 56 51	0 24 03 05	-20 54	-17 47	- 0 09	02 22	13 15
18	9 03 18 06	7 10 08 24	11 25 44 07	8 09 26 02	4 24 40 41	10 10 04 44	2 14 28 41	0 22 53 40	0 24 01 59	-20 43	-22 20	- 1 24	03 32	14 01
19	9 04 19 12	7 24 46 14	11 26 21 37	8 10 29 44	4 24 37 59	10 11 17 32	2 14 24 11	0 22 50 29	0 23 58 29	-20 31	-25 32	- 2 35	04 43	14 55
20	9 05 20 18	8 09 32 32	11 26 59 12	8 11 35 56	4 24 34 59	10 12 30 20	2 14 19 41	0 22 47 19	0 23 52 10	-20 18	-26 59	- 3 36	05 53	15 58
21	9 06 21 24	8 24 20 22	11 27 36 48	8 12 44 32	4 24 31 52	10 13 42 56	2 14 15 16	0 22 44 08	0 23 43 04	-20 05	-26 32	- 4 22	06 56	17 07
22	9 07 22 29	9 09 01 34	11 28 14 30	8 13 55 08	4 24 28 28	10 14 55 38	2 14 10 52	0 22 40 57	0 23 32 04	-19 52	-24 13	- 4 51	07 51	18 18
23	9 08 23 33	9 23 28 00	11 28 52 12	8 15 07 37	4 24 24 58	10 16 08 07	2 14 06 34	0 22 37 46	0 23 20 10	-19 38	-20 23	- 5 00	08 36	19 27
24	9 09 24 37	10 07 33 03	11 29 29 54	8 16 21 49	4 24 21 16	10 17 20 37	2 14 02 22	0 22 34 35	0 23 08 40	-19 24	-15 29	- 4 51	09 15	20 32
25	9 10 25 40	10 21 12 30	0 00 07 42	8 17 37 37	4 24 17 22	10 18 33 01	2 13 58 10	0 22 31 25	0 22 58 46	-19 10	- 9 56	- 4 25	09 48	21 33
26	9 11 26 41	11 04 25 05	0 00 45 29	8 18 54 55	4 24 13 22	10 19 45 19	2 13 54 04	0 22 28 14	0 22 51 10	-18 55	- 4 07	- 3 46	10 18	22 32
27	9 12 27 41	11 17 12 03	0 01 23 23	8 20 13 31	4 24 09 09	10 20 57 37	2 13 50 03	0 22 25 03	0 22 46 16	-18 40	+ 1 42	- 2 56	10 46	23 28
28	9 13 28 41	11 29 36 43	0 02 01 17	8 21 33 25	4 24 04 45	10 22 09 43	2 13 46 03	0 22 21 52	0 22 43 51	-18 25	+ 7 17	- 1 59	11 13	-- --
29	9 14 29 40	0 11 43 47	0 02 39 11	8 22 54 31	4 24 00 09	10 23 21 49	2 13 42 09	0 22 18 42	0 22 43 03	-18 09	+12 29	- 0 58	11 42	00 24
30	9 15 30 37	0 23 38 39	0 03 17 11	8 24 16 43	4 23 55 27	10 24 33 48	2 13 38 15	0 22 15 31	0 22 43 03	-17 53	+17 09	+ 0 05	12 13	01 20
31	9 16 31 33	1 05 27 00	0 03 55 11	8 25 40 01	4 23 50 33	10 25 45 42	2 13 34 33	0 22 12 20	0 22 42 33	-17 37	+21 06	+ 1 07	12 48	02 16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.) 1 फरवरी 2004 ई. को अयनांश 23°/54'/39"

2004 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टै. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
फरवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
								0 22 09 09	0 22 40 27	-17 20	+24 11	+ 2 05	13 27	03 12
1	9 17 32 28	1 17 14 15	0 04 33 11	8 27 04 19	4 23 45 33	10 26 57 24	2 13 30 51	0 22 05 58	0 22 36 03	-17 03	+26 14	+ 2 59	14 12	04 09
2	9 18 33 21	1 29 05 24	0 05 11 16	8 28 29 31	4 23 40 21	10 28 09 06	2 13 27 15	0 22 02 48	0 22 28 44	-16 46	+27 06	+ 3 45	15 02	05 03
3	9 19 34 13	2 11 04 38	0 05 49 22	8 29 55 36	4 23 35 02	10 29 20 42	2 13 23 44	0 21 59 37	0 22 18 32	-16 29	+26 40	+ 4 22	15 58	05 54
4	9 20 35 05	2 23 15 15	0 06 27 28	9 01 22 42	4 23 29 32	11 00 32 12	2 13 20 20	0 21 56 26	0 22 06 02	-16 11	+24 55	+ 4 47	16 58	06 40
5	9 21 35 55	3 05 39 19	0 07 05 34	9 02 50 36	4 23 23 56	11 01 43 35	2 13 16 56	0 21 53 15	0 21 52 14	-15 53	+21 54	+ 4 58	17 59	07 22
6	9 22 36 44	3 18 17 49	0 07 43 46	9 04 19 24	4 23 18 08	11 02 54 47	2 13 13 44	0 21 50 04	0 21 38 07	-15 34	+17 47	+ 4 55	19 01	07 59
7	9 23 37 31	4 01 10 35	0 08 21 52	9 05 49 06	4 23 12 14	11 04 05 59	2 13 10 32	0 21 46 54	0 21 25 07	-15 16	+12 45	+ 4 36	20 02	08 32
8	9 24 38 17	4 14 16 36	0 09 00 04	9 07 19 30	4 23 06 08	11 05 16 59	2 13 07 26	0 21 43 43	0 21 14 25	-14 57	+ 7 05	+ 4 02	21 03	09 04
9	9 25 39 02	4 27 34 24	0 09 38 15	9 08 50 48	4 23 00 01	11 06 27 59	2 13 04 26	0 21 40 32	0 21 06 37	-14 37	+ 1 00	+ 3 13	22 05	09 34
10	9 26 39 46	5 11 02 25	0 10 16 27	9 10 22 54	4 22 53 43	11 07 38 47	2 13 01 31	0 21 37 21	0 21 02 01	-14 18	- 5 13	+ 2 14	23 08	10 04
11	9 27 40 28	5 24 39 27	0 10 54 45	9 11 55 54	4 22 47 13	11 08 49 29	2 12 58 43	0 21 34 11	0 21 00 07	-13 58	-11 15	+ 1 06	-- --	10 37
12	9 28 41 10	6 08 24 51	0 11 32 57	9 13 29 41	4 22 40 43	11 09 59 58	2 12 56 01	0 21 31 00	0 20 59 49	-13 38	-16 48	- 0 07	00 13	11 14
13	9 29 41 51	6 22 18 21	0 12 11 15	9 15 04 17	4 22 34 01	11 11 10 28	2 12 53 25	0 21 27 49	0 20 59 55	-13 18	-21 30	- 1 20	01 21	11 56
14	10 00 42 31	7 06 19 59	0 12 49 33	9 16 39 41	4 22 27 19	11 12 20 46	2 12 50 55	0 21 24 38	0 20 58 49	-12 58	-24 59	- 2 29	02 31	12 45
15	10 01 43 09	7 20 29 25	0 13 27 50	9 18 15 59	4 22 20 25	11 13 30 58	2 12 48 31	0 21 21 27	0 20 55 36	-12 38	-26 55	- 3 29	03 39	13 43
16	10 02 43 47	8 04 45 28	0 14 06 08	9 19 53 11	4 22 13 24	11 14 40 58	2 12 46 13	0 21 18 17	0 20 49 36	-12 17	-27 03	- 4 16	04 43	14 48
17	10 03 44 23	8 19 05 41	0 14 44 26	9 21 31 11	4 22 06 24	11 15 50 52	2 12 44 00	0 21 15 06	0 20 40 48	-11 56	-25 23	- 4 47	05 39	15 57
18	10 04 44 59	9 03 26 05	0 15 22 50	9 23 10 05	4 21 59 12	11 17 00 39	2 12 41 54	0 21 11 55	0 20 29 48	-11 35	-22 06	- 5 00	06 27	17 06
19	10 05 45 33	9 17 41 31	0 16 01 14	9 24 49 47	4 21 52 00	11 18 10 21	2 12 39 54	0 21 08 44	0 20 17 48	-11 13	-17 34	- 4 54	07 08	18 12
20	10 06 46 05	10 01 46 21	0 16 39 32	9 26 30 28	4 21 44 42	11 19 19 51	2 12 38 00	0 21 05 33	0 20 05 53	-10 52	-12 12	- 4 31	07 43	19 16
21	10 07 46 36	10 15 35 16	0 17 17 56	9 28 12 04	4 21 37 18	11 20 29 09	2 12 36 12	0 21 02 23	0 19 55 29	-10 30	- 6 22	- 3 54	08 15	20 16
22	10 08 47 04	10 29 04 21	0 17 56 19	9 29 54 34	4 21 29 47	11 21 38 21	2 12 34 30	0 20 59 12	0 19 47 23	-10 09	- 0 24	- 3 04	08 44	21 15
23	10 09 47 31	11 12 11 31	0 18 34 49	10 01 38 04	4 21 22 17	11 22 47 21	2 12 32 54	0 20 56 01	0 19 41 53	- 9 47	+ 5 26	- 2 07	09 12	22 12
24	10 10 47 57	11 24 56 46	0 19 13 13	10 03 22 34	4 21 14 41	11 23 56 14	2 12 31 29	0 20 52 50	0 19 38 59	- 9 24	+10 54	- 1 05	09 41	23 08
25	10 11 48 21	0 07 22 02	0 19 51 37	10 05 07 52	4 21 06 59	11 25 04 56	2 12 30 05	0 20 49 40	0 19 38 11	- 9 02	+15 51	- 0 01	10 11	-- --
26	10 12 48 43	0 19 30 46	0 20 30 07	10 06 54 16	4 20 59 23	11 26 13 26	2 12 28 47	0 20 46 29	0 19 38 29	- 8 40	+20 07	+ 1 02	10 44	00 05
27	10 13 49 03	1 01 27 31	0 21 08 31	10 08 41 40	4 20 51 35	11 27 21 44	2 12 27 41	0 20 43 18	0 19 38 53	- 8 17	+23 31	+ 2 02	11 22	01 02
28	10 14 49 21	1 13 17 31	0 21 47 01	10 10 30 04	4 20 43 53	11 28 29 56	2 12 26 41	0 20 40 07	0 19 38 17	- 7 55	+25 55	+ 2 57	12 04	01 59
29	10 15 49 36	1 25 06 12	0 22 25 24	10 12 19 22	4 20 36 04	11 29 37 56	2 12 25 47							

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.) 1 मार्च 2004 ई. को अयनांश $23^0/54'/43''$

2004 ई.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चंद्र क्रां.	चंद्रशर	चण्डीगढ (भा.स्टैं. टा.) चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
1	10 16 49 50	2 06 58 59	0 23 03 54	10 14 09 39	4 20 28 16	0 00 45 38	2 12 24 59	0 20 36 56	0 19 36 04	- 7 32	+27 10	+ 3 44	12 52	02 54
2	10 17 50 02	2 19 00 51	0 23 42 24	10 16 01 03	4 20 20 28	0 01 53 13	2 12 24 16	0 20 33 46	0 19 31 34	- 7 09	+27 09	+ 4 22	13 46	03 46
3	10 18 50 12	3 01 16 07	0 24 20 48	10 17 53 15	4 20 12 34	0 03 00 37	2 12 23 40	0 20 30 35	0 19 24 40	- 6 46	+25 49	+ 4 48	14 44	04 34
4	10 19 50 20	3 13 47 58	0 24 59 18	10 19 46 27	4 20 04 46	0 04 07 43	2 12 23 10	0 20 27 24	0 19 15 46	- 6 23	+23 12	+ 5 02	15 45	05 17
5	10 20 50 26	3 26 38 20	0 25 37 48	10 21 40 33	4 19 56 52	0 05 14 37	2 12 22 52	0 20 24 13	0 19 05 28	- 6 00	+19 23	+ 5 01	16 47	05 56
6	10 21 50 29	4 09 47 34	0 26 16 12	10 23 35 33	4 19 49 03	0 06 21 19	2 12 22 34	0 20 21 03	0 18 54 51	- 5 37	+14 33	+ 4 44	17 49	06 31
7	10 22 50 31	4 23 14 29	0 26 54 41	10 25 31 15	4 19 41 15	0 07 27 49	2 12 22 28	0 20 17 52	0 18 44 57	- 5 13	+ 8 55	+ 4 11	18 52	07 03
8	10 23 50 31	5 06 56 39	0 27 33 05	10 27 27 39	4 19 33 21	0 08 34 00	2 12 22 28	0 20 14 41	0 18 36 51	- 4 50	+ 2 46	+ 3 23	19 55	07 34
9	10 24 50 29	5 20 50 43	0 28 11 35	10 29 24 33	4 19 25 33	0 09 40 00	2 12 22 33	0 20 11 30	0 18 31 03	- 4 27	- 3 38	+ 2 22	20 59	08 05
10	10 25 50 26	6 04 53 06	0 28 50 05	11 01 22 02	4 19 17 51	0 10 45 48	2 12 22 45	0 20 08 19	0 18 27 51	- 4 03	- 9 55	+ 1 12	22 05	08 38
11	10 26 50 21	6 19 00 25	0 29 28 29	11 03 19 44	4 19 10 03	0 11 51 18	2 12 23 03	0 20 05 09	0 18 26 57	- 3 40	-15 46	- 0 03	23 14	09 14
12	10 27 50 14	7 03 09 56	1 00 06 59	11 05 17 26	4 19 02 21	0 12 56 30	2 12 23 27	0 20 01 58	0 18 27 33	- 3 16	-20 46	- 1 18	-- --	09 54
13	10 28 50 05	7 17 19 38	1 00 45 22	11 07 15 08	4 18 54 44	0 14 01 30	2 12 23 57	0 19 58 47	0 18 28 45	- 2 52	-24 34	- 2 29	00 23	10 42
14	10 29 49 55	8 01 27 59	1 01 23 52	11 09 12 26	4 18 47 08	0 15 06 11	2 12 24 39	0 19 55 36	0 18 29 21	- 2 29	-26 51	- 3 30	01 32	11 36
15	11 00 49 43	8 15 33 41	1 02 02 16	11 11 09 02	4 18 39 32	0 16 10 41	2 12 25 27	0 19 52 25	0 18 28 26	- 2 05	-27 24	- 4 18	02 36	12 38
16	11 01 49 30	8 29 35 20	1 02 40 46	11 13 04 31	4 18 32 02	0 17 14 47	2 12 26 14	0 19 49 15	0 18 25 32	- 1 41	-26 10	- 4 51	03 34	13 44
17	11 02 49 15	9 13 31 05	1 03 19 10	11 14 58 43	4 18 24 38	0 18 18 41	2 12 27 14	0 19 46 04	0 18 20 32	- 1 18	-23 20	- 5 06	04 24	14 52
18	11 03 48 58	9 27 18 40	1 03 57 40	11 16 51 13	4 18 17 14	0 19 22 17	2 12 28 20	0 19 42 53	0 18 13 56	- 0 54	-19 13	- 5 03	05 06	15 58
19	11 04 48 39	10 10 55 30	1 04 36 04	11 18 41 25	4 18 09 56	0 20 25 29	2 12 29 32	0 19 39 42	0 18 06 26	- 0 30	-14 08	- 4 43	05 42	17 02
20	11 05 48 18	10 24 19 04	1 05 14 33	11 20 29 00	4 18 02 43	0 21 28 28	2 12 30 50	0 19 36 32	0 17 58 55	- 0 06	- 8 28	- 4 08	06 14	18 03
21	11 06 47 55	11 07 27 18	1 05 52 57	11 22 13 36	4 17 55 37	0 22 31 04	2 12 32 20	0 19 33 21	0 17 52 25	+ 0 17	- 2 31	- 3 20	06 43	19 [illegible]
22	11 07 47 31	11 20 18 59	1 06 31 21	11 23 54 36	4 17 48 31	0 23 33 22	2 12 33 49	0 19 30 10	0 17 47 31	+ 0 41	+ 3 25	- 2 23	07 11	19 59
23	11 08 47 04	0 02 54 02	1 07 09 51	11 25 31 35	4 17 41 37	0 24 35 16	2 12 35 25	0 19 26 59	0 17 44 25	+ 1 05	+ 9 06	- 1 20	07 40	20 56
24	11 09 46 35	0 15 13 33	1 07 48 15	11 27 04 05	4 17 34 43	0 25 36 52	2 12 37 13	0 19 23 48	0 17 43 13	+ 1 28	+14 19	- 0 14	08 09	21 53
25	11 10 46 04	0 27 19 51	1 08 26 45	11 28 31 47	4 17 28 01	0 26 38 04	2 12 39 07	0 19 20 38	0 17 43 43	+ 1 52	+18 54	+ 0 52	08 41	22 51
26	11 11 45 30	1 09 16 11	1 09 05 09	11 29 54 16	4 17 21 25	0 27 38 51	2 12 41 01	0 19 17 27	0 17 45 07	+ 2 15	+22 40	+ 1 54	09 17	23 48
27	11 12 44 55	1 21 06 42	1 09 43 32	0 01 11 04	4 17 14 54	0 28 39 15	2 12 43 07	0 19 14 16	0 17 46 55	+ 2 39	+25 26	+ 2 52	09 57	-- --
28	11 13 44 17	2 02 56 01	1 10 21 56	0 02 22 03	4 17 08 30	0 29 39 15	2 12 45 19	0 19 11 05	0 17 48 25	+ 3 02	+27 05	+ 3 41	10 43	00 44
29	11 14 43 37	2 14 49 09	1 11 00 20	0 03 26 39	4 17 02 12	1 00 38 51	2 12 47 36	0 19 07 54	0 17 49 00	+ 3 26	+27 30	+ 4 22	11 34	01 37
30	11 15 42 55	2 26 51 09	1 11 38 44	0 04 24 51	4 16 56 00	1 01 37 57	2 12 50 00	0 19 04 44	0 17 48 18	+ 3 49	+26 38	+ 4 51	12 30	02 27
31	11 16 42 10	3 09 06 50	1 12 17 08	0 05 16 2[illegible]	4 16 50 00	1 02 36 39	2 12 52 30	0 19 01 33	0 17 46 18	+ 4 12	+24 29	+ 5 08	13 29	03 11

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टे. टा.) 1 अप्रैल 2004 ई. को अयनांश 23°/54'48"

2004 ई. अप्रैल	सूर्य रा. अं. क. वि.	चंद्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चंद्र क्रां. अं. क.	चंद्रशर अं. क.	चण्डीगढ (भा.स्टे. टा.) चंद्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
1	11 17 41 23	3 21 40 19	1 12 55 32	0 06 01 02	4 16 44 06	1 03 34 50	2 12 55 06	0 18 58 22	0 17 43 00	+ 4 35	+21 07	+ 5 11	14 30	03 51
2	11 18 40 33	4 04 34 47	1 13 33 55	0 06 38 37	4 16 38 24	1 04 32 38	2 12 57 48	0 18 55 11	0 17 38 54	+ 4 59	+16 40	+ 4 58	15 32	04 27
3	11 19 39 42	4 17 51 58	1 14 12 13	0 07 09 13	4 16 32 47	1 05 29 50	2 13 00 36	0 18 52 01	0 17 34 23	+ 5 22	+11 18	+ 4 30	16 34	05 01
4	11 20 38 48	5 01 31 47	1 14 50 37	0 07 32 36	4 16 27 17	1 06 26 32	2 13 03 30	0 18 48 50	0 17 30 11	+ 5 44	+ 5 15	+ 3 45	17 38	05 32
5	11 21 37 52	5 15 32 16	1 15 28 55	0 07 48 54	4 16 21 59	1 07 22 38	2 13 06 29	0 18 45 39	0 17 26 47	+ 6 07	- 1 12	+ 2 46	18 43	06 03
6	11 22 36 54	5 29 49 34	1 16 07 13	0 07 58 11	4 16 16 47	1 08 18 20	2 13 09 35	0 18 42 28	0 17 24 29	+ 6 30	- 7 45	+ 1 35	19 50	06 36
7	11 23 35 54	6 14 18 32	1 16 45 31	0 08 00 35	4 16 11 41	1 09 13 19	2 13 12 47	0 18 39 17	0 17 23 35	+ 6 53	-13 59	+ 0 17	20 59	07 11
8	11 24 34 51	6 28 53 18	1 17 23 49	0 07 56 17	4 16 06 53	1 10 07 43	2 13 16 05	0 18 36 07	0 17 23 53	+ 7 15	-19 29	- 1 03	22 11	07 50
9	11 25 33 48	7 13 28 05	1 18 02 12	0 07 45 34	4 16 02 05	1 11 01 37	2 13 19 23	0 18 32 56	0 17 24 59	+ 7 37	-23 49	- 2 18	23 23	08 36
10	11 26 32 42	7 27 57 48	1 18 40 24	0 07 28 52	4 15 57 34	1 11 54 49	2 13 22 53	0 18 29 45	0 17 26 29	+ 8 00	-26 36	- 3 25	-- --	09 30
11	11 27 31 35	8 12 18 33	1 19 18 42	0 07 06 27	4 15 53 10	1 12 47 19	2 13 26 29	0 18 26 34	0 17 27 40	+ 8 22	-27 35	- 4 17	00 30	10 31
12	11 28 30 27	8 26 27 34	1 19 57 00	0 06 39 03	4 15 48 52	1 13 39 13	2 13 30 10	0 18 23 24	0 17 28 16	+ 8 44	-26 44	- 4 54	01 31	11 37
13	11 29 29 16	9 10 23 15	1 20 35 18	0 06 07 09	4 15 44 52	1 14 30 24	2 13 33 58	0 18 20 13	0 17 28 04	+ 9 06	-24 14	- 5 12	02 23	12 44
14	0 00 28 04	9 24 04 48	1 21 13 30	0 05 31 26	4 15 40 58	1 15 20 54	2 13 37 46	0 18 17 02	0 17 26 52	+ 9 27	-20 23	- 5 12	03 07	13 50
15	0 01 26 49	10 07 31 58	1 21 51 47	0 04 52 32	4 15 37 10	1 16 10 36	2 13 41 46	0 18 13 51	0 17 25 04	+ 9 49	-15 34	- 4 55	14 53	

अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत श्रृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2060 वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2003 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2004 ई.)	उन्नत श्रृंग (अंश)
+ 5°	3 अप्रै.	द. 8	3 मई	द. 14	1 जून	द. 12	1 जुला.	द. 15	30जुला.	0	29 अग.	उ. 16	27सितं.	उ. 21	26अक्तू.	उ. 22	25 नवं.	उ. 23	24दिसं.	उ. 20	23 जन.	उ. 8	21 फर.	द. 1
+ 15°	3 अप्रै.	उ. 2	3 मई	द. 3	1 जून	द. 2	1 जुला.	उ. 5	30जुला.	उ. 10	29 अग	उ. 26	27सितं	उ. 31	,, *	उ. 32	25 नवं.	उ. 34	24दिसं.	उ. 30	23 जन.	उ. 19	21 फर.	उ. 9
+ 25°	3 अप्रै.	उ. 13	3 मई	उ. 7	1 जून	उ. 8	1 जुला.	उ. 5	30जुला.	उ. 20	29 अग	उ. 37	27सितं	उ. 41	27अक्तू.	उ. 49	25 नवं.	उ. 44	,, ⊕	उ. 41	23 जन.	उ. 29	21 फर.	उ. 19
+ 35°	3 अप्रै.	उ. 23	3 मई	उ. 18	1 जून	उ. 18	1 जुला.	उ. 15	30जुला.	उ. 30	29 अग	उ. 47	27सितं	उ. 51	27अक्तू.	उ. 59	25 नवं.	उ. 54	25दिसं.	उ. 48	23 जन.	उ. 39	21 फर.	उ. 29

*15 से अधिक अक्षांश वाले स्थलों पर 26 अक्तू.को चन्द्रदर्शन नहीं होगा। ⊕ 25 से अधिक अक्षांशीय स्थलों पर चन्द्रदर्शन 25 दिसंबर को होगा।

नोटः– यहां दिए गए श्रृंगोन्नति के अंश लगभग हैं।

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		युरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2003 ई.				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन 1	10 02 22	9 15 40	7 24 23	-16 58	+ 0 41	-20 42	- 0 10	+16 32	+ 0 47	-15 13	+ 3 34	+22 03	- 1 17	-13 28	- 0 43	-17 50	+ 0 02	-13 51	+ 9 03
4	10 02 30	9 15 46	7 24 29	-17 30	+ 0 39	-19 49	+ 0 42	+16 38	+ 0 47	-15 52	+ 3 35	+22 02	- 1 16	-13 25	- 0 43	-17 48	+ 0 02	-13 51	+ 9 04
7	10 02 38	9 15 52	7 24 35	-18 01	+ 0 38	-19 12	+ 1 40	+16 44	+ 0 48	-16 31	+ 3 35	+22 02	- 1 16	-13 22	- 0 43	-17 47	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
10	10 02 47	9 15 59	7 24 42	-18 31	+ 0 36	-18 53	+ 2 33	+16 50	+ 0 49	-17 09	+ 3 33	+22 02	- 1 15	-13 19	- 0 43	-17 45	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
13	10 02 56	9 16 05	7 24 48	-18 59	+ 0 35	-18 52	+ 3 11	+16 56	+ 0 49	-17 46	+ 3 30	+22 02	- 1 15	-13 16	- 0 43	-17 43	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
16	10 03 05	9 16 12	7 24 53	-19 27	+ 0 33	-19 05	+ 3 27	+17 03	+ 0 50	-18 21	+ 3 25	+22 02	- 1 14	-13 13	- 0 43	-17 41	+ 0 02	-13 52	+ 9 04
19	10 03 14	9 16 18	7 24 59	-19 53	+ 0 31	-19 26	+ 3 21	+17 10	+ 0 50	-18 53	+ 3 20	+22 02	- 1 14	-13 10	- 0 43	-17 40	+ 0 02	-13 53	+ 9 05
22	10 03 23	9 16 25	7 25 05	-20 18	+ 0 29	-19 51	+ 3 02	+17 17	+ 0 51	-19 23	+ 3 13	+22 02	- 1 13	-13 06	- 0 43	-17 38	+ 0 02	-13 53	+ 9 05
25	10 03 33	9 16 32	7 25 10	-20 41	+ 0 27	-20 18	+ 2 34	+17 24	+ 0 51	-19 50	+ 3 06	+22 02	- 1 13	-13 03	- 0 43	-17 36	+ 0 02	-13 53	+ 9 05
28	10 03 43	9 16 39	7 25 15	-21 03	+ 0 25	-20 42	+ 2 02	+17 31	+ 0 52	-20 13	+ 2 57	+22 02	- 1 12	-13 00	- 0 43	-17 34	+ 0 01	-13 53	+ 9 06
31	10 03 53	9 16 46	7 25 20	-21 24	+ 0 23	-21 01	+ 1 30	+17 39	+ 0 52	-20 32	+ 2 48	+22 02	- 1 11	-12 56	- 0 43	-17 32	+ 0 01	-13 53	+ 9 06
फर 1	10 03 56	9 16 48	7 25 22	-21 31	+ 0 22	-21 06	+ 1 19	+17 41	+ 0 52	-20 38	+ 2 45	+22 03	- 1 11	-12 55	- 0 43	-17 32	+ 0 01	-13 53	+ 9 06
4	10 04 06	9 16 55	7 25 26	-21 49	+ 0 20	-21 15	+ 0 48	+17 48	+ 0 52	-20 51	+ 2 35	+22 03	- 1 11	-12 51	- 0 43	-17 30	+ 0 01	-13 53	+ 9 07
7	10 04 17	9 17 02	7 25 31	-22 07	+ 0 18	-21 15	+ 0 18	+17 55	+ 0 53	-21 01	+ 2 24	+22 03	- 1 10	-12 48	- 0 43	-17 28	+ 0 01	-13 53	+ 9 07
10	10 04 27	9 17 08	7 25 35	-22 22	+ 0 16	-21 05	- 0 09	+18 02	+ 0 53	-21 05	+ 2 13	+22 03	- 1 09	-12 44	- 0 43	-17 26	+ 0 01	-13 52	+ 9 08
13	10 04 37	9 17 15	7 25 39	-22 37	+ 0 13	-20 44	- 0 35	+18 09	+ 0 53	-21 04	+ 2 02	+22 04	- 1 09	-12 41	- 0 43	-17 25	+ 0 01	-13 52	+ 9 08
16	10 04 48	9 17 22	7 25 42	-22 49	+ 0 11	-20 12	- 0 57	+18 15	+ 0 53	-20 59	+ 1 50	+22 04	- 1 08	-12 37	- 0 43	-17 23	+ 0 01	-13 52	+ 9 09
19	10 04 58	9 17 28	7 25 45	-23 00	+ 0 08	-19 28	- 1 17	+18 21	+ 0 53	-20 48	+ 1 38	+22 05	- 1 07	-12 34	- 0 43	-17 21	+ 0 01	-13 51	+ 9 09
22	10 05 08	9 17 35	7 25 49	-23 10	+ 0 05	-18 33	- 1 34	+18 27	+ 0 54	-20 32	+ 1 26	+22 05	- 1 07	-12 30	- 0 43	-17 19	+ 0 01	-13 51	+ 9 10
25	10 05 19	9 17 41	7 25 51	-23 18	+ 0 03	-17 27	- 1 48	+18 33	+ 0 54	-20 11	+ 1 14	+22 06	- 1 06	-12 26	- 0 43	-17 18	+ 0 01	-13 51	+ 9 10
28	10 05 29	9 17 47	7 25 54	-23 24	- 0 00	-16 09	- 1 59	+18 38	+ 0 54	-19 44	+ 1 02	+22 07	- 1 05	-12 23	- 0 43	-17 16	+ 0 01	-13 50	+ 9 11
मार्च 1	10 05 32	9 17 50	7 25 54	-23 26	- 0 01	-15 40	- 2 02	+18 40	+ 0 54	-19 35	+ 0 58	+22 07	- 1 05	-12 22	- 0 43	-17 15	+ 0 01	-13 50	+ 9 11
4	10 05 43	9 17 56	7 25 56	-23 31	- 0 04	-14 07	- 2 08	+18 44	+ 0 54	-19 02	+ 0 46	+22 08	- 1 05	-12 18	- 0 43	-17 14	+ 0 01	-13 50	+ 9 12
7	10 05 53	9 18 02	7 25 58	-23 33	- 0 07	-12 22	- 2 11	+18 49	+ 0 54	-18 24	+ 0 34	+22 09	- 1 04	-12 14	- 0 43	-17 12	+ 0 01	-13 49	+ 9 13
10	10 06 03	9 18 07	7 26 00	-23 35	- 0 11	-10 25	- 2 09	+18 53	+ 0 54	-17 41	+ 0 22	+22 10	- 1 03	-12 11	- 0 43	-17 10	+ 0 01	-13 49	+ 9 13
13	10 06 13	9 18 13	7 26 01	-23 34	- 0 14	- 8 17	- 2 04	+18 56	+ 0 54	-16 54	+ 0 11	+22 11	- 1 03	-12 08	- 0 43	-17 09	+ 0 01	-13 48	+ 9 14
16	10 06 22	9 18 19	7 26 02	-23 33	- 0 18	- 5 58	- 1 54	+18 59	+ 0 54	-16 03	+ 0 00	+22 12	- 1 02	-12 04	- 0 43	-17 07	+ 0 01	-13 47	+ 9 15
19	10 06 32	9 18 24	7 26 02	-23 29	- 0 21	- 3 29	- 1 40	+19 01	+ 0 53	-15 07	- 0 10	+22 13	- 1 02	-12 01	- 0 43	-17 06	+ 0 01	-13 47	+ 9 15
22	10 06 41	9 18 29	7 26 03	-23 24	- 0 25	- 0 51	- 1 20	+19 03	+ 0 53	-14 08	- 0 21	+22 14	- 1 01	-11 58	- 0 43	-17 05	+ 0 01	-13 46	+ 9 16
25	10 06 51	9 18 34	7 26 03	-23 18	- 0 29	+ 1 55	- 0 56	+19 05	+ 0 53	-13 05	- 0 30	+22 15	- 1 00	-11 54	- 0 43	-17 03	+ 0 01	-13 46	+ 9 16
28	10 07 00	9 18 38	7 26 02	-23 11	- 0 33	+ 4 45	- 0 28	+19 06	+ 0 53	-11 59	- 0 39	+22 16	- 1 00	-11 51	- 0 43	-17 02	+ 0 01	-13 45	+ 9 17
31	10 07 08	9 18 43	7 26 02	-23 02	- 0 37	+ 7 36	+ 0 04	+19 07	+ 0 53	-10 49	- 0 48	+22 17	- 0 59	-11 48	- 0 43	-17 01	+ 0 01	-13 44	+ 9 18

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टे. टा.)

तारिख	युरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		युरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
003 ई.				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	10 07 11	9 18 44	7 26 01	-22 58	- 0 39	+ 8 32	+ 0 16	+19 07	+ 0 53	-10 26	- 0 51	+22 17	- 0 59	-11 47	- 0 43	-17 00	+ 0 01	-13 44	+ 9 18
4	10 07 20	9 18 48	7 26 00	-22 48	- 0 43	+11 14	+ 0 51	+19 07	+ 0 53	- 9 13	- 0 59	+22 19	- 0 58	-11 44	- 0 43	-16 59	+ 0 01	-13 43	+ 9 18
7	10 07 28	9 18 52	7 25 59	-22 36	- 0 48	+13 43	+ 1 25	+19 07	+ 0 52	- 7 57	- 1 06	+22 20	- 0 58	-11 41	- 0 43	-16 58	+ 0 01	-13 43	+ 9 19
10	10 07 35	9 18 56	7 25 57	-22 22	- 0 52	+15 52	+ 1 57	+19 06	+ 0 52	- 6 40	- 1 13	+22 21	- 0 57	-11 39	- 0 43	-16 57	+ 0 01	-13 42	+ 9 20
13	10 07 43	9 18 59	7 25 55	-22 08	- 0 57	+17 40	+ 2 23	+19 04	+ 0 52	- 5 21	- 1 18	+22 22	- 0 57	-11 36	- 0 44	-16 56	+ 0 01	-13 41	+ 9 20
16	10 07 50	9 19 02	7 25 53	-21 53	- 1 02	+19 02	+ 2 43	+19 03	+ 0 52	- 4 00	- 1 24	+22 23	- 0 56	-11 34	- 0 44	-16 55	+ 0 01	-13 41	+ 9 21
19	10 07 57	9 19 05	7 25 51	-21 36	- 1 07	+19 59	+ 2 54	+19 01	+ 0 52	- 2 38	- 1 28	+22 24	- 0 56	-11 31	- 0 44	-16 55	+ 0 01	-13 40	+ 9 21
22	10 08 04	9 19 07	7 25 48	-21 19	- 1 13	+20 29	+ 2 54	+18 58	+ 0 51	- 1 15	- 1 32	+22 26	- 0 55	-11 29	- 0 44	-16 54	+ 0 01	-13 39	+ 9 22
25	10 08 10	9 19 10	7 25 46	-21 00	- 1 18	+20 33	+ 2 44	+18 55	+ 0 51	+ 0 08	- 1 35	+22 27	- 0 55	-11 27	- 0 44	-16 53	+ 0 01	-13 39	+ 9 22
28	10 08 16	9 19 11	7 25 42	-20 41	- 1 24	+20 12	+ 2 22	+18 52	+ 0 51	+ 1 32	- 1 38	+22 28	- 0 54	-11 25	- 0 44	-16 53	+ 0 01	-13 38	+ 9 22
1	10 08 21	9 19 13	7 25 39	-20 21	- 1 30	+19 27	+ 1 49	+18 48	+ 0 51	+ 2 56	- 1 40	+22 29	- 0 54	-11 23	- 0 44	-16 53	+ 0 00	-13 38	+ 9 23
4	10 08 26	9 19 14	7 25 36	-20 01	- 1 36	+18 22	+ 1 06	+18 44	+ 0 51	+ 4 19	- 1 41	+22 30	- 0 53	-11 21	- 0 44	-16 52	+ 0 00	-13 37	+ 9 23
7	10 08 31	9 19 15	7 25 32	-19 39	- 1 42	+17 04	+ 0 16	+18 39	+ 0 50	+ 5 42	- 1 41	+22 31	- 0 53	-11 20	- 0 44	-16 52	+ 0 00	-13 37	+ 9 23
10	10 08 35	9 19 16	7 25 28	-19 18	- 1 49	+15 41	- 0 36	+18 34	+ 0 50	+ 7 04	- 1 41	+22 32	- 0 53	-11 18	- 0 44	-16 52	+ 0 00	-13 36	+ 9 23
13	10 08 39	9 19 17	7 25 24	-18 56	- 1 56	+14 22	- 1 27	+18 29	+ 0 50	+ 8 25	- 1 40	+22 32	- 0 52	-11 17	- 0 45	-16 52	+ 0 00	-13 36	+ 9 24
16	10 08 43	9 19 17	7 25 20	-18 33	- 2 03	+13 17	- 2 12	+18 23	+ 0 50	+ 9 44	- 1 38	+22 33	- 0 52	-11 16	- 0 45	-16 52	+ 0 00	-13 35	+ 9 24
19	10 08 46	9 19 16	7 25 16	-18 11	- 2 10	+12 29	- 2 48	+18 17	+ 0 50	+11 02	- 1 36	+22 34	- 0 51	-11 15	- 0 45	-16 52	+ 0 00	-13 35	+ 9 24
22	10 08 48	9 19 16	7 25 11	-17 48	- 2 17	+12 04	- 3 16	+18 10	+ 0 50	+12 17	- 1 33	+22 35	- 0 51	-11 14	- 0 45	-16 52	+ 0 00	-13 34	+ 9 24
25	10 08 50	9 19 15	7 25 07	-17 25	- 2 25	+11 59	- 3 33	+18 04	+ 0 49	+13 30	- 1 30	+22 35	- 0 51	-11 14	- 0 45	-16 52	+ 0 00	-13 34	+ 9 24
28	10 08 52	9 19 14	7 25 02	-17 03	- 2 33	+12 15	- 3 42	+17 57	+ 0 49	+14 40	- 1 26	+22 36	- 0 50	-11 13	- 0 45	-16 52	+ 0 00	-13 34	+ 9 24
31	10 08 53	9 19 13	7 24 57	-16 40	- 2 41	+12 49	- 3 43	+17 49	+ 0 49	+15 47	- 1 21	+22 36	- 0 50	-11 13	- 0 45	-16 53	+ 0 00	-13 33	+ 9 24
जून 1	10 08 54	9 19 13	7 24 56	-16 33	- 2 44	+13 04	- 3 41	+17 47	+ 0 49	+16 09	- 1 20	+22 36	- 0 50	-11 13	- 0 45	-16 53	+ 0 00	-13 33	+ 9 24
4	10 08 54	9 19 11	7 24 51	-16 11	- 2 52	+13 58	- 3 32	+17 39	+ 0 49	+17 11	- 1 15	+22 37	- 0 50	-11 13	- 0 45	-16 54	+ 0 00	-13 33	+ 9 23
7	10 08 55	9 19 09	7 24 46	-15 50	- 3 01	+15 04	- 3 16	+17 30	+ 0 49	+18 10	- 1 09	+22 37	- 0 49	-11 13	- 0 46	-16 54	+ 0 00	-13 33	+ 9 23
10	10 08 54	9 19 07	7 24 41	-15 29	- 3 10	+16 19	- 2 55	+17 22	+ 0 49	+19 04	- 1 03	+22 37	- 0 49	-11 13	- 0 46	-16 55	+ 0 00	-13 33	+ 9 23
13	10 08 54	9 19 04	7 24 37	-15 09	- 3 19	+17 40	- 2 29	+17 13	+ 0 49	+19 54	- 0 57	+22 37	- 0 49	-11 13	- 0 46	-16 55	+ 0 00	-13 33	+ 9 22
16	10 08 53	9 19 02	7 24 32	-14 50	- 3 29	+19 04	- 2 00	+17 04	+ 0 48	+20 40	- 0 51	+22 37	- 0 48	-11 14	- 0 46	-16 56	- 0 00	-13 33	+ 9 22
19	10 08 51	9 18 59	7 24 27	-14 32	- 3 38	+20 26	- 1 27	+16 55	+ 0 48	+21 20	- 0 44	+22 37	- 0 48	-11 14	- 0 46	-16 57	- 0 00	-13 33	+ 9 22
22	10 08 50	9 18 56	7 24 22	-14 15	- 3 48	+21 43	- 0 53	+16 45	+ 0 48	+21 55	- 0 37	+22 37	- 0 48	-11 15	- 0 46	-16 58	- 0 00	-13 33	+ 9 21
25	10 08 47	9 18 52	7 24 18	-13 59	- 3 58	+22 50	- 0 18	+16 35	+ 0 48	+22 25	- 0 30	+22 37	- 0 48	-11 16	- 0 46	-16 59	- 0 00	-13 33	+ 9 21
28	10 08 44	9 18 49	7 24 13	-13 45	- 4 09	+23 40	+ 0 16	+16 25	+ 0 48	+22 48	- 0 23	+22 37	- 0 47	-11 17	- 0 46	-17 00	- 0 00	-13 33	+ 9 20

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख	युरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		युरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2003 ई.				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	10 08 41	9 18 45	7 24 09	-13 32	- 4 19	+24 10	+ 0 46	+16 14	+ 0 48	+23 06	- 0 15	+22 36	- 0 47	-11 18	- 0 46	-17 01	- 0 00	-13 34	+ 9 19
4	10 08 38	9 18 41	7 24 04	-13 21	- 4 30	+24 15	+ 1 11	+16 03	+ 0 48	+23 18	- 0 08	+22 36	- 0 47	-11 20	- 0 47	-17 02	- 0 00	-13 34	+ 9 19
7	10 08 34	9 18 37	7 24 00	-13 12	- 4 41	+23 55	+ 1 31	+15 52	+ 0 48	+23 24	- 0 00	+22 36	- 0 47	-11 21	- 0 47	-17 04	- 0 00	-13 34	+ 9 18
10	10 08 30	9 18 33	7 23 56	-13 05	- 4 52	+23 12	+ 1 43	+15 41	+ 0 48	+23 24	+ 0 07	+22 35	- 0 46	-11 23	- 0 47	-17 05	- 0 00	-13 35	+ 9 17
13	10 08 25	9 18 28	7 23 52	-13 00	- 5 03	+22 08	+ 1 49	+15 30	+ 0 48	+23 17	+ 0 14	+22 34	- 0 46	-11 24	- 0 47	-17 06	- 0 00	-13 35	+ 9 16
16	10 08 20	9 18 24	7 23 48	-12 57	- 5 14	+20 47	+ 1 49	+15 18	+ 0 48	+23 04	+ 0 21	+22 34	- 0 46	-11 26	- 0 47	-17 07	- 0 00	-13 36	+ 9 16
19	10 08 15	9 18 19	7 23 45	-12 57	- 5 25	+19 13	+ 1 43	+15 06	+ 0 48	+22 46	+ 0 28	+22 33	- 0 46	-11 28	- 0 47	-17 09	- 0 00	-13 36	+ 9 15
22	10 08 10	9 18 15	7 23 41	-12 59	- 5 36	+17 29	+ 1 32	+14 54	+ 0 48	+22 21	+ 0 35	+22 32	- 0 46	-11 30	- 0 47	-17 10	- 0 00	-13 37	+ 9 14
25	10 08 04	9 18 10	7 23 38	-13 03	- 5 46	+15 39	+ 1 16	+14 42	+ 0 48	+21 50	+ 0 41	+22 31	- 0 46	-11 32	- 0 47	-17 11	- 0 00	-13 37	+ 9 13
28	10 07 58	9 18 05	7 23 35	-13 09	- 5 56	+13 44	+ 0 56	+14 30	+ 0 48	+21 13	+ 0 47	+22 30	- 0 45	-11 35	- 0 47	-17 13	- 0 00	-13 38	+ 9 12
31	10 07 52	9 18 00	7 23 33	-13 18	- 6 06	+11 47	+ 0 34	+14 17	+ 0 48	+20 31	+ 0 53	+22,29	- 0 45	-11 37	- 0 47	-17 14	- 0 01	-13 39	+ 9 11
अगस्त 1	10 07 50	9 17 58	7 23 32	-13 21	- 6 09	+11 08	+ 0 25	+14 13	+ 0 49	+20 16	+ 0 55	+22 29	- 0 45	-11 38	- 0 47	-17 15	- 0 01	-13 39	+ 9 11
4	10 07 43	9 17 54	7 23 29	-13 33	- 6 17	+ 9 11	- 0 01	+14 00	+ 0'49	+19 27	+ 1 00	+22 28	- 0 45	-11 40	- 0 47	-17 16	- 0 01	-13 40	+ 9 09
7	10 07 36	9 17 49	7 23 27	-13 46	- 6 25	+ 7 16	- 0 30	+13 47	+ 0 49	+18 32	+ 1 05	+22 27	- 0 45	-11 42	- 0 47	-17 17	- 0 01	-13 41	+ 9 08
10	10 07 30	9 17 44	7 23 25	-14 01	- 6 31	+ 5 24	- 1 00	+13 34	+ 0 49	+17 33	+ 1 09	+22 26	- 0 45	-11 45	- 0 47	-17 19	- 0 01	-13 42	+ 9 07
13	10 07 23	9 17 39	7 23 23	-14 17	- 6 37	+ 3 39	- 1 32	+13 21	+ 0 49	+16 30	+ 1 13	+22 24	- 0 45	-11 47	- 0 47	-17 20	- 0 01	-13 43	+ 9 06
16	10 07 16	9 17 34	7 23 22	-14 33	- 6 40	+ 2 01	- 2 04	+13 07	+ 0 49	+15 23	+ 1 16	+22 23	- 0 45	-11 50	- 0 48	-17 21	- 0 01	-13 44	+ 9 05
19	10 07 09	9 17 29	7 23 21	-14 50	- 6 43	+ 0 33	- 2 36	+12 54	+ 0 49	+14 12	+ 1 19	+22 22	- 0 45	-11 52	- 0 48	-17 23	- 0 01	-13 45	+ 9 04
22	10 07 01	9 17 25	7 23 20	-15 07	- 6 43	- 0 42	- 3 07	+12 41	+ 0 49	+12 57	+ 1 21	+22 21	- 0 44	-11 55	- 0 48	-17 24	- 0 01	-13 46	+ 9 03
25	10 06 54	9 17 20	7 23 20	-15 23	- 6 42	- 1 40	- 3 36	+12 27	+ 0 50	+11 39	+ 1 23	+22 20	- 0 44	-11 58	- 0 48	-17 25	- 0 01	-13 47	+ 9 02
28	10 06 47	9 17 16	7 23 19	-15 38	- 6 39	- 2 16	- 4 01	+12 13	+ 0 50	+10 18	+ 1 24	+22 18	- 0 44	-12 00	- 0 48	-17 27	- 0 01	-13 48	+ 9 00
31	10 06 40	9 17 11	7 23 19	-15 52	- 6 34	- 2 27	- 4 19	+12 00	+ 0 50	+ 8 55	+ 1 25	+22 17	- 0 44	-12 03	- 0 48	-17 28	- 0 01	-13 49	+ 8 59
सित 1	10 06 38	9 17 10	7 23 19	-15 56	- 6 32	- 2 23	- 4 23	+11 55	+ 0 50	+ 8 27	+ 1 25	+22 17	- 0 44	-12 03	- 0 48	-17 28	- 0 01	-13 50	+ 8 59
4	10 06 30	9 17 06	7 23 20	-16 06	- 6 25	- 1 51	- 4 26	+11 42	+ 0 50	+ 7 01	+ 1 25	+22 16	- 0 44	-12 06	- 0 48	-17 29	- 0 01	-13 51	+ 8 58
7	10 06 24	9 17 02	7 23 21	-16 14	- 6 17	- 0 44	- 4 15	+11 28	+ 0 51	+ 5 33	+ 1 24	+22 14	- 0 44	-12 08	- 0 48	-17 31	- 0 01	-13 52	+ 8 56
10	10 06 17	9 16 58	7 23 22	-16 20	- 6 07	+ 0 51	- 3 46	+11 14	+ 0 51	+ 4 03	+ 1 23	+22 13	- 0 44	-12 11	- 0 47	-17 32	- 0 01	-13 54	+ 8 55
13	10 06 10	9 16 54	7 23 23	-16 22	- 5 55	+ 2 42	- 3 01	+11 01	+ 0 51	+ 2 33	+ 1 21	+22 12	- 0 44	-12 13	- 0 47	-17 33	- 0 01	-13 55	+ 8 54
16	10 06 03	9 16 51	7 23 24	-16 21	- 5 43	+ 4 30	- 2 05	+10 47	+ 0 51	+ 1 02	+ 1 18	+22 11	- 0 44	-12 15	- 0 47	-17 34	- 0 01	-13 56	+ 8 53
19	10 05 57	9 16 48	7 23 26	-16 18	- 5 30	+ 5 56	- 1 05	+10 33	+ 0 52	- 0 30	+ 1 15	+22 10	- 0 44	-12 17	- 0 47	-17 34	- 0 01	-13 58	+ 8 52
22	10 05 51	9 16 45	7 23 29	-16 11	- 5 16	+ 6 46	- 0 09	+10 20	+ 0 52	- 2 02	+ 1 12	+22 09	- 0 44	-12 20	- 0 47	-17 35	- 0 01	-13 59	+ 8 51
25	10 05 45	9 16 42	7 23 31	-16 01	- 5 02	+ 6 55	+ 0 38	+10 06	+ 0 52	- 3 33	+ 1 07	+22 08	- 0 44	-12 22	- 0 47	-17 36	- 0 01	-14 00	+ 8 49
28	10 05 39	9 16 39	7 23 34	-15 49	- 4 48	+ 6 24	+ 1 14	+ 9 53	+ 0 53	- 5 04	+ 1 03	+22 07	- 0 44	-12 23	- 0 47	-17 37	- 0 01	-14 02	+ 8 48

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टे. टा.)

तारिख सन् 2004 ई.	युरेनस रा. अ. क.	नेपच्यून रा. अ. क.	वेंकटेश रा. अ. क.	मंगल क्रान्ति अं. क.	मंगल शर अं. क.	बुध क्रान्ति अं. क.	बुध शर अं. क.	गुरु क्रान्ति अं. क.	गुरु शर अं. क.	शुक्र क्रान्ति अं. क.	शुक्र शर अं. क.	शनि क्रान्ति अं. क.	शनि शर अं. क.	युरेनस क्रान्ति अं. क.	युरेनस शर अं. क.	नेपच्यून क्रान्ति अं. क.	नेपच्यून शर अं. क.	वेंकटेश (प्लूटो) क्रान्ति अं. क.	वेंकटेश (प्लूटो) शर अं. क.
अप्रैल 1	10 10 59	9 20 54	7 28 19	+22 34	+ 1 08	+14 13	+ 2 53	+ 8 56	+ 1 25	+22 53	+ 3 21	+22 49	- 0 26	-10 25	- 0 44	-16 27	- 0 03	-14 31	+ 8 41
4	10 11 08	9 20 58	7 28 18	+22 54	+ 1 09	+15 00	+ 3 09	+ 9 02	+ 1 25	+23 43	+ 3 34	+22 49	- 0 26	-10 22	- 0 44	-16 25	- 0 03	-14 30	+ 8 41
7	10 11 16	9 21 02	7 28 16	+23 12	+ 1 10	+15 14	+ 3 13	+ 9 07	+ 1 25	+24 29	+ 3 45	+22 49	- 0 26	-10 19	- 0 44	-16 24	- 0 03	-14 30	+ 8 42
10	10 11 25	9 21 05	7 28 15	+23 28	+ 1 11	+14 55	+ 3 04	+ 9 12	+ 1 24	+25 10	+ 3 56	+22 49	- 0 25	-10 16	- 0 44	-16 23	- 0 03	-14 29	+ 8 42
13	10 11 32	9 21 09	7 28 13	+23 43	+ 1 11	+14 04	+ 2 41	+ 9 17	+ 1 24	+25 46	+ 4 06	+22 49	- 0 25	-10 13	- 0 44	-16 22	- 0 03	-14 29	+ 8 43
16	10 11 40	9 21 12	7 28 11	+23 56	+ 1 12	+12 49	+ 2 06	+ 9 20	+ 1 23	+26 18	+ 4 14	+22 49	- 0 24	-10 10	- 0 44	-16 21	- 0 03	-14 28	+ 8 43

ग्रहों की क्रान्ति

ग्रहों की क्रान्ति दो प्रकार की है- (i) मध्यम क्रान्तिः(ग्रह के क्रान्तिवृत्तीय स्थान की क्रान्ति)। (ii)स्पष्ट क्रान्ति (ग्रह के बिम्ब की क्रान्ति)। जातकपद्धतिकारों ने अयनबल साधन के लिए ग्रहों की मध्यमक्रान्ति का ही प्रयोग किया है। अतः हमने भी यहां नीचे कोष्ठक में ग्रहों की मध्यमक्रान्ति ही दी है।

अभीष्ट ग्रह के भोगांशों (स्पष्ट राश्यादि) में उस दिन के अयनांश जोड़कर उसके सायन भोगांशों द्वारा इस निम्नांकित कोष्ठक से ग्रह की मध्यमक्रान्ति उठा लीजिए। कोष्ठक ५-५ अंशों के अन्तर पर बनाया गया है। बीच में अनुपात कीजिए।

जैसे- १३ मार्च सन् २००१ ई. को प्रातः ५ घं. ३० मि. पर बुध की मध्यम क्रान्ति ज्ञात करनी है। इस समय बुध के राश्यादि भोगांश १०/१/१३है। इसमें इस दिन का अयनांश २३ अं. ५२ क. जोड़ने पर बुध के सायन राश्यादि भोगांश १० /२५/५ हुए। इस कोष्ठक से सायन राश्यादि भोगांश १०/२५/५ की मध्यम क्रान्ति १३ अं. १० क. (दक्षिण) मिली। यही बुध की इस समय की मध्यम क्रान्ति है।

सूर्य की मध्यम क्रान्ति और स्पष्ट क्रान्ति में कोई अन्तर नहीं होता ।

ग्रहों की मध्यम क्रान्ति

उ= उत्तर — द = दक्षिण

सायन भोगांश रा.	अं.	क्रान्ति अं.	क.	सायन भोगांश रा.	अं.	क्रान्ति अं.	क.	सायन भोगांश रा.	अं.	क्रान्ति अं.	क.	सायन भोगांश रा.	अं.	क्रान्ति अं.	क.	सायन भोगांश रा.	अं.	क्रान्ति अं.	क.	सायन भोगांश रा.	अं.	क्रान्ति अं.	क.
०	००	००	००	२	००	उ.२०	१०	४	००	उ.२०	१०	६	००	००	००	८	००	द.२०	१०	१०	००	द.२०	१०
०	०५	उ.०१	५९	२	०५	२१	०९	४	०५	१९	०२	६	०५	द.०१	५९	८	०५	२१	०९	१०	०५	१९	०२
०	१०	०३	५८	२	१०	२१	५८	४	१०	१७	४५	६	१०	०३	५८	८	१०	२१	५८	१०	१०	१७	४५
०	१५	०५	५५	२	१५	२२	३७	४	१५	१६	२१	६	१५	०५	५५	८	१५	२२	३७	१०	१५	१६	२१
०	२०	०७	४९	२	२०	२३	०५	४	२०	१४	४९	६	२०	०७	४९	८	२०	२३	०५	१०	२०	१४	४९
०	२५	०९	४१	२	२५	२३	२२	४	२५	१३	१२	६	२५	०९	४१	८	२५	२३	२२	१०	२५	१३	१२
१	००	११	२९	३	००	२३	२६	५	००	११	२९	७	००	११	२९	९	००	२३	२६	११	००	११	२९
१	०५	१३	१२	३	०५	२३	२२	५	०५	०९	४१	७	०५	१३	१२	९	०५	२३	२२	११	०५	०९	४१
१	१०	१४	४९	३	१०	२३	०५	५	१०	०७	४९	७	१०	१४	४९	९	१०	२३	०५	११	१०	०७	४९
१	१५	१६	२१	३	१५	२२	३७	५	१५	०५	५५	७	१५	१६	२१	९	१५	२२	३७	११	१५	०५	५५
१	२०	१७	४५	३	२०	२१	५८	५	२०	०३	५८	७	२०	१७	४५	९	२०	२१	५८	११	२०	०३	५८
१	२५	१९	०२	३	२५	२१	०९	५	२५	उ.०१	५९	७	२५	१९	०२	९	२५	२१	०९	११	२५	द.०१	५९
२	००	उ.२०	१०	४	००	उ.२०	१०	६	००	००	००	८	००	द.२०	१०	१०	००	द.२०	१०	००	००	००	००

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारिख	यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2004 ई.				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी 1	10 06 09	9 17 46	7 26 35	+ 3 43	+ 0 04	-20 16	+ 3 10	+ 5 33	+ 1 13	-18 35	- 1 49	+22 25	- 0 40	-12 10	- 0 44	-17 19	- 0 02	-14 37	+ 8 28
4	10 06 17	9 17 52	7 26 41	+ 4 30	+ 0 08	-20 13	+ 3 11	+ 5 33	+ 1 14	-17 28	- 1 48	+22 27	- 0 39	-12 07	- 0 44	-17 17	- 0 02	-14 37	+ 8 28
7	10 06 24	9 17 58	7 26 48	+ 5 16	+ 0 12	-20 26	+ 2 57	+ 5 35	+ 1 15	-16 17	- 1 46	+22 28	- 0 39	-12 04	- 0 44	-17 16	- 0 02	-14 37	+ 8 28
10	10 06 33	9 18 05	7 26 54	+ 6 03	+ 0 16	-20 49	+ 2 35	+ 5 36	+ 1 15	-15 02	- 1 43	+22 30	- 0 38	-12 01	- 0 44	-17 14	- 0 02	-14 38	+ 8 28
13	10 06 41	9 18 11	7 27 00	+ 6 49	+ 0 19	-21 18	+ 2 08	+ 5 39	+ 1 16	-13 44	- 1 39	+22 31	- 0 38	-11 58	- 0 44	-17 12	- 0 02	-14 38	+ 8 29
16	10 06 50	9 18 18	7 27 06	+ 7 35	+ 0 23	-21 46	+ 1 40	+ 5 42	+ 1 17	-12 22	- 1 34	+22 32	- 0 38	-11 55	- 0 44	-17 10	- 0 02	-14 38	+ 8 29
19	10 06 59	9 18 24	7 27 12	+ 8 20	+ 0 26	-22 11	+ 1 11	+ 5 46	+ 1 18	-10 58	- 1 29	+22 33	- 0 37	-11 51	- 0 44	-17 09	- 0 02	-14 38	+ 8 29
22	10 07 08	9 18 31	7 27 17	+ 9 05	+ 0 29	-22 30	+ 0 42	+ 5 50	+ 1 19	- 9 31	- 1 23	+22 35	- 0 37	-11 48	- 0 44	-17 07	- 0 02	-14 39	+ 8 29
25	10 07 18	9 18 38	7 27 23	+ 9 50	+ 0 32	-22 41	+ 0 16	+ 5 55	+ 1 19	- 8 02	- 1 16	+22 36	- 0 37	-11 45	- 0 44	-17 05	- 0 02	-14 39	+ 8 29
28	10 07 27	9 18 45	7 27 28	+10 34	+ 0 35	-22 42	- 0 10	+ 6 01	+ 1 20	- 6 32	- 1 08	+22 37	- 0 36	-11 41	- 0 44	-17 03	- 0 02	-14 39	+ 8 30
31	10 07 37	9 18 51	7 27 33	+11 17	+ 0 37	-22 33	- 0 33	+ 6 07	+ 1 21	- 5 00	- 1 00	+22 38	- 0 36	-11 38	- 0 43	-17 01	- 0 02	-14 39	+ 8 30
फरवरी 1	10 07 40	9 18 54	7 27 35	+11 32	+ 0 38	-22 28	- 0 40	+ 6 09	+ 1 21	- 4 29	- 0 57	+22 38	- 0 36	-11 37	- 0 43	-17 00	- 0 02	-14 39	+ 8 30
4	10 07 50	9 19 01	7 27 39	+12 14	+ 0 41	-22 04	- 1 01	+ 6 16	+ 1 22	- 2 55	- 0 47	+22 39	- 0 35	-11 33	- 0 43	-16 59	- 0 03	-14 39	+ 8 31
7	10 08 00	9 19 07	7 27 44	+12 56	+ 0 43	-21 29	- 1 19	+ 6 24	+ 1 22	- 1 21	- 0 37	+22 40	- 0 35	-11 29	- 0 43	-16 57	- 0 03	-14 38	+ 8 31
10	10 08 10	9 19 14	7 27 48	+13 38	+ 0 45	-20 43	- 1 34	+ 6 31	+ 1 23	+ 0 13	- 0 27	+22 41	- 0 34	-11 26	- 0 43	-16 55	- 0 03	-14 38	+ 8 31
13	10 08 21	9 19 21	7 27 52	+14 18	+ 0 47	-19 44	- 1 47	+ 6 40	+ 1 23	+ 1 47	- 0 15	+22 42	- 0 34	-11 22	- 0 43	-16 53	- 0 03	-14 38	+ 8 32
16	10 08 31	9 19 28	7 27 56	+14 58	+ 0 49	-18 33	- 1 57	+ 6 48	+ 1 24	+ 3 22	- 0 04	+22 43	- 0 33	-11 18	- 0 43	-16 51	- 0 03	-14 38	+ 8 32
19	10 08 41	9 19 34	7 28 00	+15 36	+ 0 51	-17 10	- 2 04	+ 6 57	+ 1 24	+ 4 55	+ 0 09	+22 44	- 0 33	-11 15	- 0 43	-16 49	- 0 03	-14 38	+ 8 33
22	10 08 52	9 19 41	7 28 03	+16 14	+ 0 53	-15 35	- 2 07	+ 7 06	+ 1 25	+ 6 27	+ 0 21	+22 44	- 0 32	-11 11	- 0 43	-16 47	- 0 03	-14 37	+ 8 33
25	10 09 02	9 19 47	7 28 06	+16 50	+ 0 54	-13 47	- 2 06	+ 7 15	+ 1 25	+ 7 59	+ 0 35	+22 45	- 0 32	-11 07	- 0 43	-16 45	- 0 03	-14 37	+ 8 34
28	10 09 12	9 19 54	7 28 08	+17 26	+ 0 56	-11 47	- 2 02	+ 7 24	+ 1 26	+ 9 29	+ 0 48	+22 46	- 0 31	-11 03	- 0 43	-16 44	- 0 03	-14 36	+ 8 34
मार्च 1	10 09 19	9 19 58	7 28 10	+17 49	+ 0 57	-10 21	- 1 56	+ 7 30	+ 1 26	+10 27	+ 0 57	+22 46	- 0 31	-11 01	- 0 43	-16 42	- 0 03	-14 36	+ 8 35
4	10 09 29	9 20 04	7 28 12	+18 23	+ 0 59	- 8 01	- 1 44	+ 7 40	+ 1 26	+11 54	+ 1 11	+22 47	- 0 31	-10 57	- 0 43	-16 41	- 0 03	-14 36	+ 8 35
7	10 09 40	9 20 10	7 28 14	+18 55	+ 1 00	- 5 31	- 1 27	+ 7 49	+ 1 26	+13 18	+ 1 26	+22 47	- 0 30	-10 54	- 0 43	-16 39	- 0 03	-14 35	+ 8 36
10	10 09 50	9 20 16	7 28 16	+19 27	+ 1 01	- 2 52	- 1 05	+ 7 58	+ 1 26	+14 40	+ 1 40	+22 48	- 0 30	-10 50	- 0 43	-16 37	- 0 03	-14 35	+ 8 36
13	10 10 00	9 20 22	7 28 17	+19 57	+ 1 02	- 0 06	- 0 37	+ 8 07	+ 1 26	+15 58	+ 1 54	+22 48	- 0 29	-10 46	- 0 43	-16 36	- 0 03	-14 34	+ 8 37
16	10 10 10	9 20 27	7 28 18	+20 25	+ 1 04	+ 2 43	- 0 05	+ 8 16	+ 1 26	+17 14	+ 2 08	+22 48	- 0 29	-10 43	- 0 44	-16 34	- 0 03	-14 34	+ 8 38
19	10 10 19	9 20 33	7 28 19	+20 53	+ 1 05	+ 5 28	+ 0 30	+ 8 24	+ 1 26	+18 26	+ 2 23	+22 49	- 0 28	-10 39	- 0 44	-16 33	- 0 03	-14 33	+ 8 38
22	10 10 29	9 20 38	7 28 19	+21 18	+ 1 06	+ 8 04	+ 1 08	+ 8 32	+ 1 26	+19 34	+ 2 37	+22 49	- 0 28	-10 36	- 0 44	-16 31	- 0 03	-14 33	+ 8 39
25	10 10 38	9 20 43	7 28 19	+21 43	+ 1 07	+10 24	+ 1 44	+ 8 40	+ 1 26	+20 39	+ 2 51	+22 49	- 0 27	-10 32	- 0 44	-16 30	- 0 03	-14 32	+ 8 39
28	10 10 48	9 20 48	7 28 19	+22 06	+ 1 07	+12 20	+ 2 18	+ 8 47	+ 1 26	+21 39	+ 3 04	+22 49	- 0 27	-10 29	- 0 44	-16 28	- 0 03	-14 32	+ 8 40
31	10 10 57	9 20 52	7 28 19	+22 27	+ 1 08	+13 50	+ 2 45	+ 8 54	+ 1 25	+22 35	+ 3 17	+22 49	- 0 27	-10 26	- 0 44	-16 27	- 0 03	-14 31	+ 8 40

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख	युरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		युरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
सन्	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2004 ई.				अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	10 10 59	9 20 54	7 28 19	+22 34	+ 1 08	+14 13	+ 2 53	+ 8 56	+ 1 25	+22 53	+ 3 21	+22 49	- 0 26	-10 25	- 0 44	-16 27	- 0 03	-14 31	+ 8 41
4	10 11 08	9 20 58	7 28 18	+22 54	+ 1 09	+15 00	+ 3 09	+ 9 02	+ 1 25	+23 43	+ 3 34	+22 49	- 0 26	-10 22	- 0 44	-16 25	- 0 03	-14 30	+ 8 41
7	10 11 16	9 21 02	7 28 16	+23 12	+ 1 10	+15 14	+ 3 13	+ 9 07	+ 1 25	+24 29	+ 3 45	+22 49	- 0 26	-10 19	- 0 44	-16 24	- 0 03	-14 30	+ 8 42
10	10 11 25	9 21 05	7 28 15	+23 28	+ 1 11	+14 55	+ 3 04	+ 9 12	+ 1 24	+25 10	+ 3 56	+22 49	- 0 25	-10 16	- 0 44	-16 23	- 0 03	-14 29	+ 8 42
13	10 11 32	9 21 09	7 28 13	+23 43	+ 1 11	+14 04	+ 2 41	+ 9 17	+ 1 24	+25 46	+ 4 06	+22 49	- 0 25	-10 13	- 0 44	-16 22	- 0 03	-14 29	+ 8 43
16	10 11 40	9 21 12	7 28 11	+23 56	+ 1 12	+12 49	+ 2 06	+ 9 20	+ 1 23	+26 18	+ 4 14	+22 49	- 0 24	-10 10	- 0 44	-16 21	- 0 03	-14 28	+ 8 43

ग्रहों की क्रान्ति

ग्रहों की क्रान्ति दो प्रकार की है- (i) मध्यम क्रान्ति:(ग्रह के क्रान्तिवृत्तीय स्थान की क्रान्ति)। (ii)स्पष्ट क्रान्ति (ग्रह के बिम्ब की क्रान्ति)। जातकपद्धतिकारों ने अयनबल साधन के लिए ग्रहों की मध्यमक्रान्ति का ही प्रयोग किया है। अत: हमने भी यहां नीचे कोष्ठक में ग्रहों की मध्यमक्रान्ति ही दी है।

अभीष्ट ग्रह के भोगांशों (स्पष्ट राश्यादि) में उस दिन के अयनांश जोड़कर उसके सायन भोगांशों द्वारा इस निम्नांकित कोष्ठक से ग्रह की मध्यमक्रान्ति उठा लीजिए। कोष्ठक ५-५ अंशों के अन्तर पर बनाया गया है। बीच में अनुपात कीजिए।

जैसे- १३ मार्च सन् २००१ ई. को प्रातः ५ घं. ३० मि. पर बुध की मध्यम क्रान्ति ज्ञात करनी है। इस समय बुध के राश्यादि भोगांश १०/१/१३है। इसमें इस दिन का अयनांश २३ अं. ५२ क. जोड़ने पर बुध के सायन राश्यादि भोगांश १० /२५/५ हुए। इस कोष्ठक से सायन राश्यादि भोगांश १०/२५/५ की मध्यम क्रान्ति १३ अं. १० क. (दक्षिण) मिली। यही बुध की इस समय की मध्यम क्रान्ति है।

सूर्य की मध्यम क्रान्ति और स्पष्ट क्रान्ति में कोई अन्तर नहीं होता ।

उ= उत्तर

ग्रहों की मध्यम क्रान्ति

द = दक्षिण

सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति		सायन भोगांश		क्रान्ति	
रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.	रा.	अं.	अं.	क.
०	००	००	००	२	००	उ.२०	१०	४	००	उ.२०	१०	६	००	००	००	८	००	द.२०	१०	१०	००	द.२०	१०
०	०५	उ.०१	५९	२	०५	२१	०९	४	०५	१९	०२	६	०५	द.०१	५९	८	०५	२१	०९	१०	०५	१९	०२
०	१०	०३	५८	२	१०	२१	५८	४	१०	१७	४५	६	१०	०३	५८	८	१०	२१	५८	१०	१०	१७	४५
०	१५	०५	५५	२	१५	२२	३७	४	१५	१६	२१	६	१५	०५	५५	८	१५	२२	३७	१०	१५	१६	२१
०	२०	०७	४९	२	२०	२३	०५	४	२०	१४	४९	६	२०	०७	४९	८	२०	२३	०५	१०	२०	१४	४९
०	२५	०९	४१	२	२५	२३	२२	४	२५	१३	१२	६	२५	०९	४१	८	२५	२३	२२	१०	२५	१३	१२
१	००	११	२९	३	००	२३	२६	५	००	११	२९	७	००	११	२९	९	००	२३	२६	११	००	११	२९
१	०५	१३	१२	३	०५	२३	२२	५	०५	०९	४१	७	०५	११	१२	९	०५	२३	२२	११	०५	०९	४१
१	१०	१४	४९	३	१०	२३	०५	५	१०	०७	४९	७	१०	१४	४९	९	१०	२३	०५	११	१०	०७	४१
१	१५	१६	२१	३	१५	२२	३७	५	१५	०५	५५	७	१५	१६	२१	९	१५	२२	३७	११	१५	०५	५५
१	२०	१७	४५	३	२०	२१	५८	५	२०	०३	५८	७	२०	१७	४५	९	२०	२१	५८	११	२०	०३	५८
१	२५	१९	०२	३	२५	२१	०९	५	२५	उ.०१	५९	७	२५	१९	०२	९	२५	२१	०९	११	२५	द.०१	५९
२	००	उ.२०	१०	४	००	उ.२०	१०	६	००	००	००	८	००	द.२०	१०	१०	००	द.२०	१०	००	००	००	००

साभिजित् नक्षत्र–गणनानुसार उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरण

प्रियव्रत शर्मा

अश्विनी आदि नक्षत्रों की संख्या सामान्यतः 27 मानी गई है। लेकिन कुछ स्थलों पर (पञ्च–सप्त–शलाकावेध, वृषवास्तुचक्र, अवकहड़ाचक्र आदि में) 28 नक्षत्रों के प्रयोग का भी निर्देश है, वहां अभिजित् नाम का एक अतिरिक्त नक्षत्र इन अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों में समाविष्ट किया गया है। यह अतिरिक्त नक्षत्र उ.षा. के अन्तिम (चतुर्थ) चरण और श्रवण के प्रारम्भिक (पहिले) 15 वें भाग को मिलाकर बनाया गया है । 27 नक्षत्र-गणना-पद्धति को "निरभिजित् नक्षत्र गणना " और 28 नक्षत्र-गणना-पद्धति को " साभिजित् नक्षत्र–गणना " पद्धति कहा जाता है। निरभिजित् गणना पद्धति में सभी (27) नक्षत्रों के भोगांश और चरणों के मान परस्पर समान (क्रमशः 13°–20′ और 3°–20′ के) हैं। साभजित् नक्षत्र-गणना पद्धति में भी उ.षा. और श्रवण को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों के भोगांश और चरण निरभिजित् नक्षत्र-गणना-पद्धति के समान ही हैं। साभजित् नक्षत्र-गणना-पद्धति मे उ.षा. और श्रवण दोनों का मान अन्य नक्षत्रों के मान से छोटा होता है। यहां उ.षा. का मान केवल 10° और श्रवण का मान केवल 12°– 26′– 40″ है। इस गणना पद्धति में उ.षा. और श्रवण के इन्हीं भोगांशों के बराबर–बराबर चार–चार भाग ही, इन दोनों नक्षत्रों के अपने–अपने चरणों के मान हैं। **किञ्च**– उ.षा. के अन्तिम चतुर्थांश और श्रवण के पहिले 15 वें भाग के योग से उत्पन्न अभिजित् नक्षत्र का जो पूर्ण भोग बनता है, उसके समान चार भाग उसके चार चरण माने गए हैं।

निरभिजित् और साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार उ.षा., श्रवण के चरणों के प्रारम्भ बिन्दुओं के राश्यादि, जो भिन्न–भिन्न हैं ,नीचे कोष्ठक में दिए गए हैं। अभिजित् नक्षत्र के चरणों के प्रारम्भ बिन्दुओं के राश्यादि भी इसी कोष्ठक में निर्दिष्ट हैं।

निरभिजित्–साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार उ.षा., अभिजित्, श्रवण के चरणों का प्रारम्भ

नक्षत्र चरण	निरभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार			साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार			
	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.
उ.षा. 1	8	26	40	8	26	40	00
उ.षा. 2	9	00	00	8	29	10	00
उ.षा. 3	9	03	20	9	01	40	00
उ.षा. 4	9	06	40	9	04	10	00
अभिजित् 1	—	—	—	9	06	40	00
अभिजित् 2	—	—	—	9	07	43	20
अभिजित् 3	—	—	—	9	08	46	40
अभिजित् 4	—	—	—	9	09	50	00
श्रवण 1	9	10	00	9	10	53	20
श्रवण 2	9	13	20	9	14	00	00
श्रवण 3	9	16	40	9	17	06	40
श्रवण 4	9	20	00	9	20	13	20

जातक एवं मुहूर्त्तग्रन्थों में जहां निरभिज़ित् नक्षत्र-गणना के प्रयोग का निर्देश है, वहां निरभिजित् नक्षत्र-गणना वाले उ.षा., श्रवण के चरणों का और जहां साभिजित् नक्षत्र-गणना के प्रयोग का निर्देश है, वहां साभिजित् नक्षत्र-गणना वाले उ.षा., अभिजित् एवं श्रवण के चरणों का निर्धारण इस उपरोक्त कोष्ठकानुसार करना नितान्त आवश्यक है। **जैसे**– जातक के नाम के आदि अक्षर के निर्धारण के लिए अवकहड़ाचक्र का प्रयोग साभिजित् नक्षत्र-गणनानुसार करने का निर्देश है। अतः जातक के जन्म–कालिक चन्द्र के भोगांशों (स्पष्ट राश्यादि) के अनुसार जातक के जन्मनक्षत्रचरण का निर्धारण करते हुए, यह आवश्यक है कि उ.षा. और श्रवण के चरणों का निश्चय इस उपरोक्त कोष्ठक में निर्दिष्ट साभिजित्–नक्षत्र–गणनानुसार ही किया जाए और यहां अभिजित् नक्षत्र एवं उसके चरणों को भी ध्यान में रखना होगा। एतदनुसार उ.षा.,अभिजित् या श्रवण के जिस चरण में जातक का जन्म सिद्ध हो, उसी के अनुसार जातक के नाम का आदि अक्षर निश्चित करना होगा।

ध्यान रहे–अधिकतर (लगभग शतप्रतिशत) ज्योतिषी लोग जातक के नाम का आदि अक्षर निर्धारित करने के लिए जातक के नक्षत्र–चरण का निर्णय अन्य नक्षत्रों की भांति उ.षा. और श्रवण के प्रत्येक चरण का मान 3°–20′ ही मानकर कर लेते हैं और अभिजित् नक्षत्र को वे कोई मान्यता ही नहीं देते। यह सर्वथा गलत है। अवकहड़ाचक्र में साभिजित् नक्षत्र-गणना है। अतः यह आवश्यक है कि इस के अनुसार जातक के नाम का आदि अक्षर निश्चित करने के लिए उ.षा. के अन्तिम चतुर्थांश और श्रवण के पहिले पन्द्रहवें भाग को जोड़कर, उसे अभिजित् नक्षत्र माना जाए और शेष बचे उ.षा. और श्रवण को पूर्ण नक्षत्र मानते हुए, उन के समान चार–चार भाग करके, उन्हें उन के वास्तविक चरण मानकर, उन के अनुसार अवकहडाचक्र द्वारा जातक के नाम का आदि अक्षर निर्धारित किया जाए। यहां जातक का जन्म यदि उ.षा., श्रवण के मध्य स्थित अभिजित् वाले भाग में पड़े तो अभिजित् के भी समान चार भाग (चरण) बनाए जाएं और अभिजित् के जिस चरण में जातक का जन्म हुआ हो, अवकहड़ाचक्र में निर्दिष्ट उस चरण के अक्षरानुसार जातक के नाम का आदि अक्षर निश्चित किया जाए।

जातक यदि उ.षा. या श्रवण नक्षत्र में पैदा हुआ हो तो दैवज्ञ को चाहिए कि वह जातक का जन्मकालिक चन्द्र स्पष्ट करे और तब उसके राश्यादि के अनुसार उपरोक्त कोष्ठक में दिए गए, उ.षा., अभिजित् और श्रवण के साभिजित्–नक्षत्र–गणनानुसारी राश्यादि द्वारा वह यह निर्णय करे कि जातक का जन्म उ.षा., अभिजित् या श्रवण के किस चरण में हुआ है।

पञ्च–सप्तशलाकावेध आदि के निर्णय के लिए सूर्यादि ग्रहों की उ.षा., श्रवण नक्षत्रों तथा इनके चरणों में स्थिति का निर्णय भी साभिजित् नक्षत्र गणनानुसार (ऊपर कोष्ठकोक्त) राश्यादि के अनुसार ही करना होगा। यह बहुत जरूरी है। इन स्थलों पर उ.षा. और श्रवण के भोगांश 13°–20′ मानकर तदनुसार पञ्च–सप्तशलाका वेध आदि का निर्णय बहुधा भ्रामक होगा –यह ध्यान रहे।

यहां आगे कोष्ठकों में वि. सं. 2060 के लिए साभिजित् नक्षत्र गणनानुसार चन्द्रमा एवं सूर्यादि ग्रहों का उ.षा., अभिजित् एवं श्रवण नक्षत्र के चरणों में प्रवेशकाल (भा.स्टैं.टा.) दिया गया है, ताकि साभिजित् नक्षत्रगणना–स्थलों पर, इन नक्षत्रों के चरणों का प्रारम्भकाल ज्ञात करने में दैवज्ञों को कठिनाई न हो और वे साभिजित् नक्षत्र गणना वाले स्थलों पर उ.षा., अभिजित् और श्रवण में सूर्यादि ग्रहों की स्थिति का यथार्थ निर्णय कर सकें।

साभिजित् नक्षत्र–गणनानुसारी उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरणों में चन्द्रमा का प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सं. 2060 वि. (सन् 2003–04 ई.)

नक्षत्र चरण →	उ.षा. 1	उ.षा. 2	उ.षा. 3	उ.षा. 4	अभि. 1	अभि. 2	अभि. 3	अभि. 4	श्रव. 1	श्रव. 2	श्रव. 3	श्रव. 4
तारीख ↓	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रै. 22,23,24, (सन् 2003)	19 32	0 01	4 30	8 59	13 29,	15 25	17 21	19 17	21 13	2 59	8 45	14 31
मई 20, 21,	4 07	8 28	12 49	17 10	21 31	23 23	1 15	3 07	5 00	10 36	16 13	21 49
जून 16, 17, 18,	14 10	18 25	22 40	2 55	7 10	8 59	10 48	12 37	14 27	19 55	1 23	6 51
जुला. 14, 15,	0 09	4 23	8 37	12 51	17 06	18 55	20 44	22 33	0 22	5 46	11 10	16 34
अग. 10, 11, 12,	8 38	12 57	17 16	21 35	1 53	3 43	5 33	7 23	9 13	14 40	20 07	1 34
सितं. 6, 7, 8,	15 09	19 33	23 57	4 21	8 45	10 38	12 30	14 22	16 15	21 49	3 22	8 55
अक्तू. 3, 4, 5,	20 33	0 58	5 23	9 49	14 16	16 11	18 06	20 01	21 57	3 33	9 09	14 45
अक्तू.31, नवं. 1,	2 49	7 10	11 31	15 52	20 12	22 02	23 52	1 42	3 31	9 07	14 43	20 19
नवं. 27, 28, 29,	11 31	15 42	19 53	0 04	4 16	6 04	7 52	9 40	11 29	16 53	22 17	3 41
दिसं. 24, 25, 26,	22 21	2 26	6 31	10 36	14 40	16 25	18 10	19 55,	21 40	2 54	8 07	13 20
जन. 21, 22, 23, (सन् 2004 ई.)	9 17	13 22	17 27	21 32	1 37	3 21	5 05	6 49	8 34	13 45	18 56	0 07
फर. 17, 18, 19,	18 10	22 21	2 32	6 43	10 55	12 42	14 29	16 16	18 02	23 18	4 33	9 48
मार्च 16, 17,	0 29	4 47	9 05	13 23	17 40	19 30	21 19	23 08	0 58	6 22	11 46	17 10

साभिजित् नक्षत्र–गणनानुसारी उ.षा., अभिजित् और श्रवण के चरणों में सूर्य, मंगल बुध, शुक्र का प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सं. 2060 वि. (सन् 2003–04 ई.)

सूर्य (2004 ई.)			बुध (सन्–2004 ई.)		
नक्षत्र चरण	तारीख	प्रवेशकाल घं. मि.	नक्षत्र चरण	तारीख	प्रवेशकाल घं. मि.
उ.षा. 1	जन. 11	17 10	उ.षा. 1	जन. 31	22 35
उ.षा. 2	जन. 14	4 05	उ.षा. 2	फर. 2	16 47
उ.षा. 3	जन. 16	14 57	उ.षा. 3	फर. 4	10 14
उ.षा. 4	जन. 19	01 53	उ.षा. 4	फर. 6	2 57
अभि. 1	जन. 21	12 48	अभि. 1	फर. 7	19 01
अभि. 2	जन. 22	13 40	अभि. 2	फर. 8	11 45
अभि. 3	जन. 23	14 34	अभि. 3	फर. 9	4 25
अभि. 4	जन. 24	19 25	अभि. 4	फर. 9	20 55
श्रव. 1	जन. 25	16 24	श्रव. 1	फर. 10	13 21
श्रव. 2	जन. 28	17 49	श्रव. 2	फर. 12	13 11
श्रव. 3	जन. 31	19 20	श्रव. 3	फर. 14	12 13
श्रव. 4	फर. 3	20 54	श्रव. 4	फर. 16	10 25
मंगल (सन् 2003 ई.)			**शुक्र (2003–04 ई.)**		
उ .षा. 1	अप्रै. 6	18 41	उ.षा. 1	दिसं. 13	21 01
उ. षा. 2	अप्रै. 10	19 56	उ.षा. 2	दिसं. 15	21 23
उ. षा. 3	अप्रै. 14	21 53	उ.षा. 3	दिसं. 17	22 05
उ. षा. 4	अप्रै. 19	0 29	उ.षा. 4	दिसं. 19	22 39
अभि. 1	अप्रै. 23	3 50	अभि. 1	दिसं. 21	22 14
अभि. 2	अप्रै. 24	22 04	अभि. 2	दिसं. 22	19 45
अभि. 3	अप्रै. 26	16 31	अभि. 3	दिसं. 23	16 14
अभि. 4	अप्रै. 28	11 07	अभि. 4	दिसं. 24	12 49
श्रव. 1	अप्रै. 30	5 58	श्रव. 1	दिसं. 25	9 21
श्रव. 2	मई 5	13 34	श्रव. 2	दिसं. 27	21 58
श्रव. 3	मई 10	23 35	श्रव. 3	दिसं. 30	10 38
श्रव. 4	मई 16	12 25	श्रव. 4	जन. 1	23 23

इसवर्ष सं. 2060 वि. में गुरु और शनि ने उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों में संचार नहीं किया है। अतः उनका निर्देश यहां नहीं है।

ग्रहों के निरयण राशि - नक्षत्र - चरण - चार (संवत् 2060 वि.)

सूर्य-चार (सन् 2003 ई.)

तारीख सन 2003 ई	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1	धनु	पू. षा.	2	15	29
4			3	21	56
8			4	4	25
11		उ. षा.	1	10	55
14	मकर		2	17	27
18			3	0	01
21			4	6	38
24		श्रवण	1	13	17
27			2	19	58
31			3	2	41
फरवरी 3			4	9	29
6		धनिष्ठा	1	16	21
9			2	23	19
13	कुम्भ		3	6	24
16			4	13	36
19		शतभिषक्	1	20	55
23			2	4	19
26			3	11	50
मार्च 1			4	19	26
5		पू. भा.	1	3	10
8			2	11	03
11			3	19	05
15	मीन		4	3	16
18		उ. भा.	1	11	38
21			2	20	09
25			3	4	47
28			4	13	33
31		रेवती	1	22	28
अप्रैल 4			2	7	33
7			3	16	47
11			4	2	12
14	मेष	अश्विनी	1	11	47
17			2	21	33
अप्रैल 21			3	7	27
24			4	17	30
28		भरणी	1	3	40

तारीख सन 2003 ई	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मई 1			2	13	59
5			3	0	26
8			4	11	01
11		कृत्तिका	1	21	46
15	वृष		2	8	41
18			3	19	43
22			4	6	52
25		रोहिणी	1	18	05
29			2	5	24
जून 1			3	16	47
5			4	4	17
8		मृग	1	15	52
12			2	3	34
15	मिथुन		3	15	19
19			4	3	08
22		आर्द्रा	1	14	58
26			2	2	49
29			3	14	40
जुलाई 3			4	2	33
6		पुनर्वसु	1	14	27
10			2	2	23
13			3	14	18
17	कर्क		4	2	13
20		पुष्य	1	14	05
24			2	1	53
27			3	13	37
31			4	1	17
अगस्त 3		आश्लेषा	1	12	53
7			2	0	26
10			3	11	55
13			4	23	20
17	सिंह	मघा	1	10	38
20			2	21	48
24			3	8	51
27			4	19	45
31		पू. फा	1	6	32

तारीख सन 2003 ई	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितंबर 3			2	17	12
7			3	3	45
10			4	14	10
14		उ.फा.	1	0	28
17	कन्या		2	10	35
20			3	20	32
24			4	6	18
27		हस्त	1	15	55
अक्तूबर 1			2	1	23
4			3	10	42
7			4	19	54
11		चित्रा	1	4	57
14			2	13	49
17	तुला		3	22	32
21			4	7	05
24		स्वाती	1	15	27
27			2	23	40
31			3	7	46
नवंबर 3			4	15	43
6		विशाखा	1	23	35
10			2	7	18
13			3	14	54
16	वृश्चिक		4	22	21
20		अनुराधा	1	5	40
23			2	12	52
26			3	19	57
30			4	2	58
दिसंबर 3		ज्येष्ठा	1	9	54
6			2	16	46
9			3	23	35
13			4	6	19
16	धनु	मूळ	1	13	00
19			2	19	35
23			3	2	08
26			4	8	38
29		पू. षा.	1	15	08

सूर्य-चार (सन् 2004 ई.)

तारीख सन 2004 ई	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1			2	21	38
5			3	4	08
8			4	10	39
11		उ. षा.	1	17	10
14	मकर		2	23	43
18			3	6	15
21			4	12	48
24		श्रवण	1	19	24
28			2	2	05
31			3	8	50
फरवरी 3			4	15	40
6		धनिष्ठा	1	22	35
10			2	5	36
13	कुम्भ		3	12	41
16			4	19	51
20		शतभिषक्	1	3	05
23			2	10	27
26			3	17	57
मार्च 1			4	1	35
4		पू. भा.	1	9	21
7			2	17	17
11			3	1	21
14	मीन		4	9	33
17		उ. भा.	1	17	51
21			2	2	19
24			3	10	55
27			4	19	41
31		रेवती	1	4	37
अप्रैल 3			2	13	45
6			3	23	02
10			4	8	29
13	मेष	अश्विनी	1	18	02

ग्रहों के निरयण राशि - नक्षत्र - चरण - चार (संवत् 2060 वि.)

ग्रहों के निरयण राशि - नक्षत्र - [illegible] 2060 वि.)

मंगल-चार (सन् 2003-04 ई.)

तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 2	तुला	विशाखा	3	18	30
7	वृश्चिक		4	22	35
13		अनुराधा	1	2	41
18			2	6	48
23			3	10	55
28			4	15	04
फरवरी 2		ज्येष्ठा	1	19	15
7			2	23	37
13			3	4	06
18			4	8	47
23	धनु	मूळ	1	13	36
28			2	18	39
मार्च 6			3	0	02
11			4	5	50
16		पू. षा.	1	12	02
21			2	18	42
27			3	1	54
अप्रैल 1			4	9	51
6		उ. षा.	1	18	41
12	मकर		2	4	31
17			3	15	31
23			4	3	51
28		श्रवण	1	17	54
मई 4			2	10	04
10			3	4	51
16			4	2	50
22		धनिष्ठा	1	4	37
28			2	11	41
जून 4	कुम्भ		3	1	48
11			4	1	54
18		शतभिषक्	1	16	25
27			2	7	19
जुलाई 8			3	3	32
29	वक्री				
अगस्त 20			2	9	43
सितंबर 2			1	4	55र्

तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
सितंबर 19		धनिष्ठा	4	7	00
27	मार्गी				
अक्तूबर 5		शतभिषक्	1	18	14
22			2	2	24
नवंबर 1			3	1	08
9			4	6	21
16		पू. भा.	1	14	43
23			2	10	07
29			3	20	25
दिसंबर 6	मीन		4	0	15
11		उ. भा.	1	23	20
17			2	18	45
23			3	11	11
29			4	1	08
सन 2004 ई.					
जनवरी 3		रेवती	1	13	08
8			2	23	38
14			3	8	58
19			4	17	14
25	मेष	अश्विनी	1	0	37
30			2	7	17
फरवरी 4			3	13	24
9			4	19	10
15		भरणी	1	0	35
20			2	5	47
25			3	10	44
मार्च 1			4	15	32
6		कृत्तिका	1	20	21
12	वृष		2	1	09
17			3	6	01
22			4	10	54
27		रोहिणी	1	15	47
अप्रैल 1			2	20	48
7			3	2	03
12			4	7	23

बुध-चार (सन् 2003-04 ई.)

तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 3	वक्री				
6	मकर	उ. षा.	2	12	32
9	धनु		1	22	44
12		पू. षा.	4	12	44
15			3	3	27
18			2	15	31
23	मार्गी				
28			3	10	48
फरवरी 1			4	22	27
5		उ. षा.	1	8	23
8	मकर		2	8	13
11			3	2	22
13			4	16	46
16		श्रवण	1	4	29
18			2	13	57
20			3	21	37
23			4	3	46
25		धनिष्ठा	1	8	30
27			2	11	57
मार्च 1	कुम्भ		3	14	15
3			4	15	27
5		शतभिषक्	1	15	36
7			2	14	46
9			3	12	57
11			4	10	12
13		पू. भा.	1	6	34
15			2	2	03
16			3	20	45
18	मीन		4	14	42
20		उ. भा.	1	7	58
22			2	0	35
23			3	16	41
25			4	8	24
26		रेवती	1	23	49
28			2	15	08
30			3	6	32

तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
मार्च 31			4	22	20
अप्रैल 2	मेष	अश्विनी	1	14	49
4			2	8	23
6			3	3	37
8			4	1	22
10		भरणी	1	2	40
12			2	9	29
15			3	1	22
18			4	11	40
26	वक्री				
मई 6			3	1	43
11			2	13	52
20	मार्गी				
29			3	4	38
जून 2			4	13	07
5		कृत्तिका	1	21	44
8	वृष		2	18	35
11			3	8	06
13			4	16	13
15		रोहिणी	1	20	21
17			2	21	16
19			3	19	31
21			4	15	34
23		मृग	1	9	49
25			2	2	31
26	मिथुन		3	17	58
28			4	8	26
29		आर्द्रा	1	22	09
जुलाई 1			2	11	21
3			3	0	13
4			4	12	58
6		पुनर्वसु	1	1	47
7			2	14	51
9			3	4	17
10	कर्क		4	18	19
12		पुष्य	1	8	59

ग्रहों के निरयण राशि - नक्षत्र - चरण - चार (संवत् 2060 वि.)

बुध-चार (सन् 2003-04 ई.)

तारीख (सन 2003 ई)	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जुलाई 14			2	0	30
15			3	16	56
17			4	10	25
19		आश्लेषा	1	5	03
21			2	1	00
22			3	22	20
24			4	21	12
26	सिंह	मघा	1	21	46
29			2	0	12
31			3	4	46
अगस्त 2			4	11	50
4		पू.फा.	1	21	51
7			2	11	29
10			3	5	48
13			4	7	00
16		उ.फा.	1	19	19
21	कन्या		2	7	11
29	वक्री				
सितंबर 4	सिंह		1	17	16
8		पू.फा.	4	15	54
12			3	0	26
15			2	21	41
20	मार्गी				
25			3	5	01
28			4	16	39
अक्तूबर 1		उ.फा.	1	7	00
3	कन्या		2	13	03
5			3	15	10
7			4	15	03
9		हस्त	1	13	40
11			2	11	39
13			3	9	23
15			4	7	09
17		चित्रा	1	5	07
19			2	3	25
21	तुला		3	2	08
अक्तू. 23			4	1	22
25		स्वाती	1	1	06
27			2	1	22
29			3	2	11
31			4	3	32
नवंबर 2		विशाखा	1	5	25
4			2	7	48
6			3	10	39
8	वृश्चिक		4	13	58
10		अनुराधा	1	17	42
12			2	21	50
15			3	2	22
17			4	7	19
19		ज्येष्ठा	1	12	40
21			2	18	30
24			3	0	53
26			4	8	01
28	धनु	मूळ	1	16	11
दिसंबर 1			2	1	47
3			3	13	40
6			4	5	12
9		पू. षा.	1	3	51
12			2	21	02
18	वक्री				
22			1	10	56
25		मूळ	4	11	44
27			3	23	06
30			2	13	28
सन 2004 ई.					
जनवरी 3			1	7	54
7	मार्गी				
10			2	13	50
15			3	8	32
18			4	18	18
21		पू. षा.	1	17	33
जनवरी 24			2	11	15
27			3	1	22
29			4	12	56
31		उ. षा.	1	22	35
फरवरी 3	मकर		2	6	43
5			3	13	27
7			4	19	01
9		श्रवण	1	23	32
12			2	3	01
14			3	5	35
16			4	7	10
18		धनिष्ठा	1	7	53
20			2	7	45
22	कुम्भ		3	6	46
24			4	4	55
26		शतभिषक्	1	2	17
27			2	22	51
29			3	18	42
मार्च 2			4	13	50
4		पू. भा.	1	8	21
6			2	2	15
7			3	19	41
9	मीन		4	12	45
11		उ. भा.	1	5	33
12			2	22	20
14			3	15	17
16			4	8	45
18		रेवती	1	3	06
19			2	23	02
21			3	21	17
23			4	23	15
26	मेष	अश्विनी	1	7	17
29			2	3	02
अप्रैल 2			3	6	35
7	वक्री				
12			2	4	40

गुरु-चार (सन् 2003-04 ई.)

तारीख (सन 2003 ई)	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 27	कर्क	आश्लेषा	1	15	22
फरवरी 22		पुष्य	4	15	23
अप्रैल 5	मार्गी				
मई 15		आश्लेषा	1	13	23
जून 8			2	10	49
27			3	12	05
जुलाई 14			4	12	28
30	सिंह	मघा	1	11	51
अगस्त 14			2	22	45
30			3	5	47
सितंबर 14			4	17	02
30		पू.फा.	1	17	22
अक्तूबर 17			2	21	28
नवंबर 6			3	9	58
दिसंबर 2			4	10	28
सन 2004 ई.					
जनवरी 4	वक्री				
फरवरी 5			3	21	47
मार्च 4			2	19	59
अप्रैल 1			1	22	46

शुक्र-चार

सन 2003 ई.

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 1	वृश्चिक	विशाखा	4	11	12
4		अनुराधा	1	22	52
8			2	8	10
11			3	15	26
14			4	21	06
18		ज्येष्ठा	1	1	22
21			2	4	27
24			3	6	29
27			4	7	28
30	धनु	मूळ	1	8	01
फरवरी 2			2	7	45
5			3	6	55

ग्रहों के निरयण राशि - नक्षत्र - चरण - चार (संवत् 2060 वि.)

शुक्र-चार (सन् 2003-04 ई.)

तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख सन 2003 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
फरवरी 8			4	5	35	मई 19			4	21	38	अगस्त 25			4	20	45	नवंबर 30			4	10	12
11		पू. षा.	1	3	47	22		भरणी	1	15	33	28		पू.फा.	1	13	17	दिसंबर 3		पू. षा.	1	2	41
14			2	1	35	25			2	9	26	31			2	5	50	5			2	19	13
16			3	23	00	28			3	3	17	सितंबर 2			3	22	19	8			3	11	47
19			4	20	06	30			4	21	08	5			4	14	47	11			4	4	23
22		उ. षा.	1	16	53	जून 2		कृत्तिका	1	14	56	8		उ.फा.	1	7	15	13		उ. षा.	1	21	01
25	मकर		2	13	22	5	वृष		2	8	43	10	कन्या		2	23	41	16	मकर		2	13	43
28			3	9	37	8			3	2	29	13			3	16	07	19			3	6	28
मार्च 3			4	5	39	10			4	20	14	16			4	8	30	21			4	23	14
6		श्रवण	1	1	30	13		रोहिणी	1	13	57	19		हस्त	1	0	53	24		श्रवण	1	16	04
8			2	21	11	16			2	7	39	21			2	17	14	27			2	8	59
11			3	16	41	19			3	1	17	24			3	9	35	30			3	1	58
14			4	12	03	21			4	18	53	27			4	1	55	सन 2004 ई.					
17		धनिष्ठा	1	7	17	24		मृग	1	12	27	29		चित्रा	1	18	14	जनवरी 1			4	19	03
20			2	2	25	27			2	5	58	अक्तूबर 2			2	10	33	4		धनिष्ठा	1	12	14
22	कुम्भ		3	21	24	29	मिथुन		3	23	28	5	तुला		3	2	52	7			2	5	31
25			4	16	16	जुलाई 2			4	16	54	7			4	19	11	9	कुम्भ		3	22	56
28		शतभिषक्	1	11	03	5		आर्द्रा	1	10	18	10		स्वाती	1	11	29	12			4	16	28
31			2	5	43	8			2	3	40	13			2	3	48	15		शतभिषक्	1	10	09
अप्रैल 3			3	0	19	10			3	21	00	15			3	20	07	18			2	3	56
5			4	18	53	13			4	14	18	18			4	12	26	20			3	21	55
8		पू. भा.	1	13	22	16		पुनर्वसु	1	7	33	21		विशाखा	1	4	45	23			4	16	03
11			2	7	47	19			2	0	45	23			2	21	02	26		पू. भा.	1	10	22
14			3	2	10	21			3	17	53	26			3	13	20	29			2	4	54
16	मीन		4	20	31	24	कर्क		4	10	59	29	वृश्चिक		4	5	39	31			3	23	41
19		उ. भा.	1	14	48	27		पुष्य	1	4	03	31		अनुराधा	1	21	58	फरवरी 3	मीन		4	18	41
22			2	9	03	29			2	21	02	नवंबर 3			2	14	16	6		उ. भा.	1	14	00
25			3	3	13	अगस्त 1			3	13	59	6			3	6	37	9			2	9	34
27			4	21	22	4			4	6	53	8			4	22	58	12			3	5	31
30		रेवती	1	15	29	6		आश्लेषा	1	23	45	11		ज्येष्ठा	1	15	21	15			4	1	45
मई 3			2	9	34	9			2	16	36	14			2	7	43	17		रेवती	1	22	24
6			3	3	38	12			3	9	23	17			3	0	06	20			2	19	24
8			4	21	41	15			4	2	09	19			4	16	29	23			3	16	53
11	मेष	अश्विनी	1	15	43	17	सिंह	मघा	1	18	51	22	धनु	मूळ	1	8	53	26			4	14	50
14			2	9	43	20			2	11	32	25			2	1	19	29	मेष	अश्विनी	1	13	19
17			3	3	40	23			3	4	09	27			3	17	44						

ग्रहों के निरयण राशि - नक्षत्र - चरण - चार (संवत् 2060 वि.)

शुक्र-चार (सन् 2003-4 ई.)

तारीख सन 2004 ई		राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
मार्च	3			2	12	26
	6			3	12	15
	9			4	12	48
	12		भरणी	1	14	11
	15			2	16	29
	18			3	19	49
	22			4	0	21
	25		कृत्तिका	1	6	16
	28	वृष		2	13	51
	31			3	23	23
अप्रैल	4			4	11	16
	8		रोहिणी	1	2	06
	11			2	20	37
	15			3	19	54

शनि-चार

सन 2003 ई.

तारीख		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी	8	वृष	मृग	2	13	52
फरवरी	23	मार्गी				
अप्रैल	7	मिथुन		3	20	07
मई	12			4	9	16
जून	8		आर्द्रा	1	18	07
जुलाई	4			2	11	47
	31			3	4	05
अगस्त	31			4	17	48
अक्तू.	26	वक्री				
दिसंबर	22			3	3	45
सन 2004 ई.						
फरवरी	4			2	7	51
मार्च	8	मार्गी				
अप्रैल	9			3	9	44

स्पष्ट राहू-चार (सन् 2003-4 ई.)

तारीख सन 2004 ई		राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी	21	वृष	रोहिणी	1	9	18
फरवरी	27		कृत्तिका	4	16	13
अप्रैल	1			3	0	54
जुलाई	28			2	8	54
अगस्त	28	मेष		1	7	21
अक्तूबर	23		भरणी	4	11	43
सन 2004 ई.						
जनवरी	23			3	5	51
फरवरी	21			2	19	05

मध्यम राहू-चार

सन 2003 ई.

तारीख		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मार्च	1	वृष	कृत्तिका	4	10	54
मई	3			3	8	29
जुलाई	5			2	6	03
सितंबर	6	मेष		1	3	38
नवंबर	8		भरणी	4	1	12
सन् 2004 ई.						
जनवरी	9			3	22	46
मार्च	12			2	20	20

स्पष्ट केतु-चार

सन 2003 ई.

तारीख		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी	21	वृश्चिक	अनुराधा	3	9	18
फरवरी	27			2	16	13
अप्रैल	1			1	0	54
जुलाई	28		विशाखा	4	8	54
अगस्त	28	तुला		3	7	21
अक्तूबर	23			2	11	43
सन 2004 ई.						
जनवरी	23			1	5	51
फरवरी	21		स्वाती	4	19	05

हर्शल-चार (सन् 2003-4 ई.)

तारीख सन 2003 ई		राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी	21	कुम्भ	धनिष्ठा	4	0	22
मार्च	21		शतभिषक्	1	15	18
जून	7	वक्री				
अगस्त	31		धनिष्ठा	4	9	50
नवंबर	9	मार्गी				
सन 2004 ई.						
जनवरी	12		शतभिषक्	1	15	26
मार्च	13			2	3	41

नेपच्यून-चार

सन 2003 ई.

तारीख		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी	28	मकर	श्रवण	3	13	09
मई	17	वक्री				
सितंबर	27			2	22	30
अक्तू.	25	मार्गी				
नवंबर	17			3	1	57
सन 2004 ई.						
मार्च	1			4	22	50

प्लूटो-चार

सन 2003 ई.

तारीख		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
मार्च	24	वक्री				
अगस्त	25	वृश्चिक	ज्येष्ठा	2	17	30
	29	मार्गी				
सितंबर	1			3	21	30
सन 2004 ई.						
जनवरी	3			4	11	52
मार्च	26	वक्री				

'श्रीमार्त्तण्डपंचांग'

(सं. 2061 वि.)

'मुहूर्त्त विशेषांक'

याद रखिए–सं. 2061 वि. का 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' 'मुहूर्त्त विशेषांक' होगा, जिसमें छोटे–मोटे सभी मुहूर्त्तों के निर्णय के नियम एवं प्रकार बालबोध शैली में विस्तारपूर्वक हम पाठकों को समझाएंगे, जिन्हें पढ़कर आप मुहूर्त्त–विशेषज्ञ बन सकेंगे।

सं. 2061 वि. के 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' की अपनी प्रति अपने पुस्तकविक्रेता के पास सुरक्षित करवाना कभी मत भूलिए।

दैनिक लग्नसारणी, [illegible] (U.T.) [illegible] प्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

वैशाख

मास	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० [illegible]	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४२	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४२	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	५ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० १	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ [illegible]	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५५
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

कार्त्तिक

मास	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्तूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ [illegible]२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३४	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १४	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

माह	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

माघ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फ़रवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	४ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै. १	६ ३८											

चैत्र

मास	अंग्रेज़ी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै. १	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचाग में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३१	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उतर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
अकोला (म.)	२०	४२	७७	२	—२१	५२
अगरतल्ला (त्रि.)	२३	४९	९१	१८	+३५	१२
अंकलेश्वर (गु.)	२१	३८	७३	३	—३७	४८
अखनूर (का.)	३२	५४	७४	४५	—३१	०
अजन्ता (म.)	२०	३३	७५	४८	—२६	४८
अजमेर (रा.)	२६	२७	७४	४२	—३१	१२
अनन्तनाग (का.)	३३	४३	७५	१७	—२८	५२
अनामलै (ता.)	१०	३४	७६	५०	—२२	४०
अनूपशहर (उ.प्र.)	२८	२१	७८	१६	—१६	५६
अमरावती (म.)	२०	५६	७७	४८	—१८	४८
अमरेली (गु.)	२१	३६	७१	१५	—४५	०
अमरोहा (उ.प्र.)	२८	५४	७८	३१	—१५	५६
अमृतसर (पं.)	३१	३७	७४	५५	—३०	२०
अमेठी (उ.प्र.)	२६	८	८१	५०	—२	४०
अम्बाला (ह.)	३०	२१	७६	५२	—२२	३२
अयोध्या (उ.प्र.)	२६	४८	८२	१४	—१	४
अरकोणम् (ता.)	१३	५	७९	४३	—११	८
अर्की (हि.प्र.)	३१	९	७६	५८	—२२	८
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९	३७	७९	४०	—११	२०
अलवर (रा.)	२७	३४	७६	३८	—२३	२८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७	५४	७८	६	—१७	३६
अहमदनगर (मं.)	१९	५	७४	४८	—३०	४८
अहमदाबाद (गु.)	२३	२	७२	३८	—३९	२८
आगरा (उ.प्र.)	२७	१०	७८	५	—१७	४०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६	५	८३	१२	+ २	४८
आनन्द (गु.)	२२	३२	७६	०	—३८	०
आबू (राज.)	२४	४०	७३	४५	—३९	०
आरा (बि.)	२५	३४	८४	३४	+ ८	१६
आसनसोल (बं.)	२३	४२	८७	१	+ १८	४
इटारसी (म.प्र.)	२२	३७	७७	४५	—१९	०
इटावा (उ.प्र.)	२६	४७	७९	२	—१३	५२
इन्दौर (म.प्र.)	२२	४४	७५	५०	—२६	४०
इम्फाल (मणि.)	२४	४४	९३	५८	—४५	५२
उज्जैन (म.प्र.)	२३	९	७४	४३	—२७	८
उदयपुर (रा.)	२४	३५	७३	४२	—३५	१२
उन्नाव (उ.प्र.)	२६	३४	८०	३०	—८	०
ऊधमपुर (का.)	३२	५५	७५	७	—२९	३२

नगर	अक्षांश (उतर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
ऊना (हि.प्र.)	३१	३२	७६	१८	—२४	४८
एकलिंगजी (राज.)	२४	४३	७३	४६	—३४	५६
एटा (उ.प्र.)	२७	३५	७८	४०	—१५	२०
एर्नाकुलम् (के.)	१०	०	७६	१५	—२५	०
एलिचपुर (म.)	२१	१८	७७	३३	—१९	४८
एलेप्पे (के.)	९	३०	७६	२३	—२४	२८
ऐलोरा (म.)	२०	२	७५	१३	—२९	८
ओरंगाबाद (आं.)	१९	५३	७५	२३	—२८	२८
कटक (उ.)	२०	२८	८५	५४	+ १३	३६
कटनी (म.प्र.)	२३	५०	८०	२३	—८	२८
कठुआ (का.)	३२	१७	७५	३६	—२७	३६
कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०	५७	७७	६	—२१	३६
कन्नौज (उ.प्र.)	२७	३	७९	५८	—१०	८
कपूर्थला (पं.)	३१	२३	७५	२५	—२८	२०
करतारपुर (पं.)	३१	२७	७५	३२	—२७	५२
करनाल (हरि.)	२९	४२	७७	२	—२१	५२
करौली (रा.)	२६	३०	७७	४	—२१	४४
कलकत्ता (बं)	२२	३४	८८	२४	+२३	३६
कसौली (हि.प्र.)	३०	५३	७७	१	—२१	५६
काँगड़ा (हि.प्र.)	३२	५	७६	१८	—२४	४८
कांचीपुरम् (ता.)	१२	५०	७९	४५	—११	०
काठियाबाड़ (गु.)	२२	०	७१	०	—४६	०
कानपुर (उ.प्र.)	२६	२७	८०	२४	—८	२४
कारगिल (का.)	३४	३०	७६	१३	—२५	८
कालका (ह.)	३०	५०	७७	१	—२१	५६
काशी (उ.प्र.)	२५	२०	८३	०	+ २	०
किसनगढ़ (राज.)	२७	५३	७०	३७	—४७	३२
कुराली (पं.)	३०	५०	७६	३५	—२३	४०
कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०	०	७६	४८	—२२	४८
कुल्लू (हि.प्र.)	३१	५८	७७	६	—२१	३६
कुमारी (अन्तरीप)	८	५	७७	३४	—१९	४४
कुम्भकोणम् (ता.)	१०	५८	७९	२५	—१२	२०
कैंथल (ह.)	२९	४८	७६	२६	—२४	१६
कोचीन (के.)	९	५८	७६	१७	—२४	५२
कोटखाई (हि.प्र.)	३१	८	७७	३६	—१९	३६
कोटा (राज.)	२५	१०	७५	५२	—२६	३२
कोडै कनाल (ता.)	१०	१३	७७	३२	—१९	५२

नगर	अक्षांश (उतर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
कोल्हापुर (म.)	१६	४२	७४	१६	—३२	५६
कोहिमा (ना.)	२५	४१	९४	७	+ ४६	२८
खन्ना (पं.)	३०	४२	७६	१३	—२५	८
खुर्जा (उ.प्र.)	२८	१५	७७	५०	—१८	४०
गया (बिहार)	२४	४९	८५	१	+ १०	४
गंगटोक (सि.)	२७	२०	८८	४०	+२४	४०
गढ़शंकर (पं.)	३१	१३	७६	११	—२५	१६
गाजियाबाद (उ.प्र.)	[illegible]	४०	७७	२८	—२०	८
गाजीपुर (उ.प्र.)	२५	३४	८३	३५	+ ४	२०
गिलगित (का.)	३५	५५	७४	२२	—३२	३२
गुड़गांव (हरि.)	२८	२७	७७	४	—२१	४४
गुरदासपुर (पं.)	३२	२	७५	२७	—२८	१२
गोंड़ा (उ.प्र.)	२७	१०	८१	५७	—२	१२
गोरखपुर (उ.प्र.)	२६	४५	८३	२४	+ ३	३६
गोहाटी (आसाम)	२६	११	९१	४५	+ ३७	०
ग्वालियर (म.प्र.)	२६	१४	७८	१०	—१७	२०
चण्डीगढ़ (पं.)	३०	४४	७६	५२	—२२	३२
चन्दौसी (उ.प्र.)	२८	२७	७८	४९	—१४	४४
चम्बा (हि.प्र.)	३२	२९	७६	१०	—२५	२०
चित्तौडगढ़ (रा.)	२४	५४	७४	४२	—३१	१२
चीरापूंजी (मे.)	२५	१७	९१	४७	+ ३७	८
चूरू (राज.)	२८	१९	७५	१	—२९	५६
छतरपुर (म. प्र.)	२४	५४	७९	३८	—११	२८
छपरा (बिहार)	२५	४७	८४	४१	+ ८	४४
जबलपुर (म.प्र.)	२३	१०	७९	५९	—१०	४
जम्मू (का.)	३२	४४	७४	५४	—३०	२४
जयपुर (राज.)	२६	५५	७५	५२	—२६	३४
जलगांव (म.)	२१	५	७५	४०	—२७	२०
जलपाई गुड़ी (बं.)	२६	३२	८८	४६	+ २५	४
जामनगर (गुज.)	२२	२७	७०	७	—४९	३२
जालंधर (पं.)	३१	१९	७५	३४	—२७	४०
जालोर (राज.)	२५	२२	७२	३८	—३९	२८
जलोन (उ.प्र.)	२६	८	७९	२३	—१२	२८
जीन्द (हरि.)	२९	१९	७६	२३	—२४	२८
जूनागढ़ (गु.)	२१	३१	७०	३६	—४७	३६
जैसलमेर (राज.)	२६	५५	७०	५७	—४६	१२
जोगिन्दर नगर (हि.प्र)	३१	५०	७६	४५	—२३	०

नगर	अक्षांश (उतर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	सै.
जोधपुर (राज.)	२६	१८	७३	४	—३७	४४
जौनपुर (उ. प्र.)	२५	४६	८२	४४	+ ०	५६
ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१	५६	७६	२२	—२४	३२
जालना (म.)	१९	५१	७५	५६	—२६	१६
झरिया (बि.)	२३	५०	८६	३३	+ १६	१२
झांसी (उ.प्र.)	२५	२७	७८	३७	—१५	३२
झालरापाटन (रा.)	२४	३२	७६	१२	—२५	१२
झालाबाड़ (रा.)	२४	३६	७४	९	—३३	२४
झुंझुनू (रा.)	२८	६	७५	२५	—२८	२०
टाडाउरमुर (पं.)	३१	४०	७५	४१	—२७	१६
टिहरी (उ.प्र.)	३०	२०	७८	२०	—१६	०
टोंक (राज.)	२६	११	७५	५०	—२६	४०
टोडारायसिंह (रा.)	२६	०	७५	२९	—२८	४
ट्रावनकोर (के.)	९	०	७७	०	—२२	०
डगशई (हि.प्र.)	३०	५३	७७	६	—२१	३६
डलहोजी (हि.प्र.)	३२	३२	७५	५९	—२६	४
डिबाई (उ.प्र.)	२८	१२	७८	१५	—१७	०
डिब्रूगढ़ (आ.)	२७	२९	९४	५६	+ ४९	४४
डीडवाना (राज.)	२७	२४	७४	३४	—३१	४४
डीसा (गु.)	२४	१४	७२	१३	—४१	८
डूंगरपुर (राज.)	२३	५०	७६	४६	—३५	८
तिरुपति (आंध्र.)	१३	४०	७९	२०	—१२	५०
त्रिचनापल्ली (ता.)	१०	५०	७८	४६	—१४	५६
त्रिचुर (के.)	१०	३०	७६	१५	—२५	०
त्रिवेन्द्रम् (के.)	८	३०	७६	५७	—२२	१२
थराड (गु.)	२४	२३	७१	३७	—४३	३२
थानेसर (हरि.)	२९	५८	७६	५६	—२२	१६
दतिया (म.प्र.)	२५	३९	७८	२७	—१६	१२
दमोह (म.प्र.)	२३	५०	७९	२९	—१२	४
दरभंगा (बिहार)	२६	१०	८५	५७	+ १३	४८
दसूआ (पं.)	३१	४९	७५	४२	—२७	१२
दार्जिलिंग (बं.)	२७	३	८८	१८	+ २३	१२
दिल्ली	२८	३८	७७	१२	—२१	१२
दीनानगर (पं.)	३२	८	७५	३१	—२७	५६
देवबन्द (उ.प्र.)	२९	४२	७७	४३	—१९	८
देवरिया (उ.प्र.)	२३	३३	८३	४५	+ ५	०
देवास (म.प्र.)	२२	५८	७६	६	—२५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
देव प्रयाग (उ.प्र.)	३०	९	७८	३७	-१५	३२
देहरादून (उ.प्र.)	३०	१९	७८	४	-१७	४४
द्वारिका (गु.)	२२	१४	६९	७	-५३	३२
धनबाद (बि.)	२३	४७	८६	३०	+१६	०
धर्मशाला (हि.प्र.)	३२	१६	७६	२३	-२४	२८
धारवाड़ (क.)	१५	२७	७५	५	-२९	४०
धौलपुर (रा.)	२६	४२	७७	५३	-१८	२८
नडियाद (गु.)	२२	४१	७२	५५	-३८	२०
नरैना (रा.)	२३	५०	७४	११	-३३	१६
नवलगढ़ (रा.)	२७	५१	७५	१८	-२८	४८
नसीराबाद (रा.)	२६	१८	७४	४६	-३०	५६
नागपुर (म.)	२१	९	७९	९	-१३	२४
नागौर (रा.)	२७	११	७३	४०	-३५	२०
नाचना (रा.)	२७	२९	७१	७५	-४३	०
नाथद्वारा (रा.)	२४	५६	७६	५२	-३४	३२
नान्देड़ (म.)	१९	९	७७	२७	-२०	१२
नाभा (पं.)	३०	२५	७६	९	-२५	३६
नारनौल (ह.)	२८	२	७६	१४	-२५	४
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१	३	७६	४२	-२३	१२
नाहन (हि.प्र.)	३०	३३	७७	२१	-२०	३६
नासिक (म.)	२०	२	७३	५०	-३४	४०
निम्बहेड़ा (रा.)	२४	३७	७४	४५	-३१	०
नीमच (म.प्र.)	२४	२७	७४	५२	-३०	३२
नूरपुर (हि.प्र.)	३२	१८	७५	५६	-२६	१६
नैनवा (रा.)	२५	४५	७५	५७	-२६	१२
नैनीताल (उ.प्र.)	२९	२३	७९	३०	-१२	०
नोहर (राज.)	२९	११	७४	४६	-३०	५६
नौशेरा (का.)	३३	१३	७४	१७	-३२	५२
पचपदरा (रा.)	२५	५५	७२	२१	-४०	३६
पंचमढी (म.प्र.)	२२	३०	७८	२२	-१६	३२
पचकूला (हरि.)	३०	४६	७६	५६	-२२	१६
पंजिम (गोआ)	१५	२९	७३	४९	-३४	४४
पटना (बि.)	२५	३७	८५	१३	+१०	५२
पटियाला (पं.)	३०	२०	७६	२५	-२४	२०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
पटौदी (ह.)	२८	४८	७६	४८	-२२	४८
पठानकोट (पं.)	३२	१७	७५	४२	-२७	१२
पन्ना (म.प्र.)	२४	४४	८०	१४	-९	४
पाटन (गु.)	२३	५३	७२	१०	-४१	२०
पाण्डिचेरी	११	५६	७९	५३	-१०	२८
पालमपुर (हि.प्र.)	३२	७	७६	३२	-२३	५२
पाली (रा.)	२५	४६	७३	२५	-३६	२०
पूंछ (का.)	३३	५१	७४	८	-३३	२८
पुरनिया (बि.)	२५	४९	८७	३१	+२०	४
पुरी (उडी.)	१९	४८	८५	५२	+१३	२८
पूना (म.)	१८	३०	७३	५६	-३४	२८
पोरबन्दर (गु.)	२१	३७	६९	४९	-५०	४४
पोर्टब्लेअर	११	४०	९२	४६	+४१	४
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५	५४	८१	५९	-२	४
प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४	२	७४	४०	-३१	२०
प्रयाग (उ.प्र.)	२५	२८	८१	५४	-२	२४
फगबाड़ा (पं.)	३१	१४	७५	४६	-२६	५६
फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७	१	७८	१९	-१६	४०
फतेहाबाद (ह.)	२९	३१	७५	३०	-२८	०
फरीदकोट (पं.)	३०	४०	७४	४०	-३१	२०
फरीदबाद (ह.)	२८	२५	७७	२२	-२०	३२
फर्रुखबाद (उ.प्र.)	२७	२४	७९	३७	-११	३२
फाजिल्का (पं.)	३०	२५	७४	४	-३३	४४
फिरोजपुर (पं.)	३०	५५	७४	४०	-३१	२०
फुलेरा (रा.)	२६	५२	७५	१६	-२८	५६
फैजाबद (उ.प्र.)	२६	४७	८२	१२	-१	१२
बंगलोर (क.)	१२	५८	७७	३८	-१९	२८
बटाला (पं.)	३१	४९	७५	१४	-२९	४
बदायूं (उ. प्र.)	२८	२	७९	१०	-१३	२०
बड़ोदा (गु.)	२२	१८	७३	१२	-३७	१२
बम्बई (म.)	१९	०	७२	५४	-३८	२४
बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३०	४४	७९	३२	-११	५२
बर्दवान (ब.)	२३	१६	८७	५२	+२१	२८
बलिया (उ.प्र.)	२५	४४	८४	११	+६	४४

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
बागलकोट (क.)	१६	१२	७५	४४	-२७	४
बाकीपुर (बि.)	२५	४०	८५	१२	+१०	४८
बांसबाड़ा (रा.)	२३	३०	७४	२४	-३२	२४
बांदा (उ.प्र.)	२५	३०	८०	२२	-८	३२
बाराबंकी (उ.प्र.)	२६	५६	८१	१३	-५	८
बारामूला (का.)	३४	१०	७४	२०	-३२	४०
वालासोर (उ.)	२१	३०	८६	५४	+१७	३६
बालोतरा (रा.)	२५	४९	७२	१५	-४१	०
बिजनोर (उ.प्र.)	२९	२३	७८	११	-१७	१६
बिलासपुर (म.प्र.)	२२	५	८२	१३	-१	८
बिलासपुर (हि.प्र.)	३१	१९	७६	५०	-२२	४०
बीकानेर (रा.)	२८	१	७३	२२	-३६	३२
बीजापुर (म.)	१६	५०	७५	४७	-२६	५२
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८	२४	७७	५४	-१८	२४
बूंदी (रा.)	२५	२७	७५	४१	-२७	१६
वृन्दावन (उ.प्र.)	२७	३३	७७	४४	-१९	४
बुद्धगया (बि.)	२४	४२	८४	५९	+९	५९
भद्रवाह (का.)	३३	१	७५	४३	-२७	८
भटिण्डा (पं.)	३०	११	७५	०	-३०	०
भरतपुर (रा.)	२७	१५	७७	३०	-२०	०
भरूच (गु.)	२१	४८	७३	१	-३७	५६
भागलपुर (बि.)	२५	१४	८६	५९	+१७	५६
भिवानी (ह.)	२८	४६	७३	१८	-२४	४८
भीनमाल (रा.)	२५	०	७२	१९	-४०	४४
भुज (गुज.)	२३	१६	६९	४४	-५१	४
भुवनेश्वर (उ.)	२०	१५	८५	५२	+१३	२८
भोपाल (म.प्र.)	२३	१६	७७	२३	-२०	२८
मऊ (उ.प्र.)	२५	५८	८३	३६	+४	२४
मछलीपट्टण (आ.)	१६	९	८१	८	-५	२८
मण्डी (हि.प्र.)	३१	४३	७६	५८	-२२	८
मद्रास (ता.)	१३	४	८०	१७	-८	५२
मथुरा (उ.प्र.)	२७	२८	७७	४१	-१९	१६
मन्दसोर (म.प्र.)	२४	४	७५	५	-२९	४०
मंसूरी (उ.प्र.)	३०	२७	७८	६	-१७	३६

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	सै.
महेसाणा (गु.)	२३	३५	७२	२७	-४०	१२
माछीबाड़ा (पं.)	३०	५५	७६	१५	-२५	०
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८	१७	७६	१४	-२५	४
मण्डवी (गु.)	२२	५१	६९	३०	-५२	०
मारबाड़ जं. (रा.)	२५	४३	७३	४०	-३५	२०
मालेगांव (म.)	२०	३०	७४	४०	-३१	२०
मालेरकोटला (पं.)	३०	३१	७५	५९	-२६	४
मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५	१०	८२	३३	-०	१२
मीरपुर (का.)	३३	१२	७३	५१	-३४	३६
मुगलसराय (उ.प्र.)	२५	१७	८३	११	+२	४४
मुंगेर (बि.)	२५	२३	८६	३०	+१६	०
मुजफर न. (उ.प्र.)	२९	२८	७७	४४	-१९	४
मुजफर पुर (बि.)	२६	७	८५	२७	+११	४८
मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८	५१	७८	४९	-१४	४४
मेरठ (उ.प्र.)	२९	१	७७	४५	-१९	०
मैननुरी (उ.प्र.)	२७	१४	७९	३	-१३	४८
मोगा (पं.)	३०	४८	७५	१०	-२९	२०
मोरार (म.प्र.)	२६	१३	७८	१४	-१७	४
मोरेना (म.प्र.)	२६	२६	७८	४	-१७	४४
यवतमाल (म.)	२०	२३	७८	११	-१७	१६
चोल (हि.प्र.)	३२	११	७६	२३	-२४	२८
रतलाम (म.प्र.)	२३	२०	७५	७	-२९	३२
रत्नागिरि (म.)	१७	२	७३	१९	-३६	४४
राजकोट (गु.)	२२	१८	७०	५०	-४६	४०
राजमहेन्द्री (आ.)	१७	५	८१	४८	-२	४८
रांची (बि.)	२३	२०	८५	२०	+११	२०
रानीखेत (उ.प्र.)	२९	४०	७९	३०	-११	४८
रापर (गु.)	२३	३२	७०	४०	-४७	२०
रामपुर बुशहर (हि.प्र.)	३१	२७	७७	३८	-१९	२८
रायपुर (म.प्र.)	२१	१५	८१	४१	-३	१६
रायबरेली (उ.प्र.)	२६	१२	८१	१४	-५	४
रामेश्वरम् (ता.)	९	१७	७९	२२	-१२	३२
रिवाड़ी (ह.)	२८	१२	७६	४०	-२३	२०
रीवां (म.प्र.)	२४	३१	८१	१९	-४	४४

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांशादि)

नगर	अक्षांश (उतर) अं. क	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
रोपड़ (पं.)	३० ५७	७६ ३०	—२४ ०
रोहतक (ह.)	२८ ५४	७६ ३८	—२३ २८
लखनऊ (उ.प्र.)	२६ ५५	८० ५९	—६ ४
लाडवा (ह.)	२९ ५९	७७ ५	—२१ ४०
लुधियाना (पं.)	३० ५५	७५ ५४	—२६ २४
लेह (का.)	३४ १०	७७ ४०	—१९ २०
लोहारू (ह.)	२८ २६	७५ ४७	—२६ ५२
बर्धा (म.)	२० ४५	७८ ३९	—१५ २४
विजयवाड़ा (आं.)	१६ ३१	८० ३९	—७ २४
विशाखापट्टनम् (आं.)	१७ ४२	८३ २०	+ ३ २०
शाहदरा (दिल्ली)	२८ ४०	७७ २०	—२० ४०
शाहावाद (उ.प्र.)	२७ ३०	८० ०	—१० ०
शिमला (हि.प्र)	३१ ६	७७ १३	—२१ ८
शिलांग (मेघा.)	२५ ३४	९१ ५४	+३७ ३६
श्रीनग्गर (का.)	३४ ६	७४ ५१	—३० ३६

नगर	अक्षांश (उतर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
श्रीमाधोपुर (रा.)	२७ २५	७५ ३२	—२७ ५२
संगरूर (पं.)	३० १२	७५ ५३	—२६ २८
सतारा (म.)	२७ ४२	७४ २	—३३ ५२
सनावर (पं.)	३० १८	७६ ३०	—२४ ०
सरदार शहर (रा.)	२८ २७	७४ ३२	—३१ ५२
सरहिन्द (पं.)	३० ३८	७६ २५	—२४ २०
सवाईमधोपुर (रा.)	२६ ०	७६ ३०	—२४ ०
ससाराम (बि.)	२४ ५७	८४ ३	+६ १२
सहारनपुर (उ.प्र.)	२९ ५८	७७ ३३	—१९ ४८
सागर (म.प्र.)	२३ ५०	७८ ४५	—१५ ०
सांगली (म.)	१६ ५२	७४ ३६	—३१ ३६
सांगानेर (रा.)	२६ ४९	७५ ४९	—२६ ४४
साम्भर (रा.)	२६ ५४	७५ १३	—२९ ८
सिकन्दराबाद (आं.)	२७ २७	७८ ३३	—१५ ४८
सिन्दरी (रा.)	२५ ३३	७१ ५५	—४२ २०

नगर	अक्षांश (उतर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
सिन्दरी (बं.)	२३ ४५	८६ ४२	+ १६ ४८
सिरसा (ह.)	२९ ३२	७५ ४	—२९ ४४
सिरोही (रा.)	२४ ५३	७२ ५४	—३८ २४
सिलीगुड़ी (बं.)	२६ ४२	८८ २५	+२३ ४०
सिवाना (रा.)	२५ ३६	७२ २७	—४० १२
सिहोरा (म.प्र.)	२३ २९	८० १९	—९ २४
सिंहभूम (वि.)	२२ २४	८५ ३०	+१२ ००
सीकर (रा.)	२७ ३६	७५ १२	—२९ १२
सीतापुर (उ.प्र.)	२७ ३२	८० ४३	—७ ८
सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१ ३२	७६ ५३	—२२ २८
सूरत (गु.)	२१ १२	७२ ५२	—३८ ३२
सूरतगढ़ (रा.)	२९ १९	७३ ५७	—३४ १२
सोजत (रा.)	२५ ५६	७३ ४२	—३५ १२
सोनहाट (म.प्र.)	२३ २९	८२ ३०	० ०
सोमनाथ (गु.)	२१ ४	७० २६	—४८ १६

नगर	अक्षांश (उतर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
सोलन (हि.प्र.)	३० ५५	७७ ९	—२१ २४
हाजारी बाग (बि.)	२३ ५९	८५ २५	+ ११ ४०
हमीरपुर (उ.प्र.)	२५ ५८	८० १२	—९ १२
हमीरपुर (हि.प्र.)	३१ ४१	७६ ३१	—२३ ५६
हनुमानगढ़ (राज.)	२९ ३५	७४ २१	—३२ ३६
हरदोई (उ.प्र.)	२७ २३	८० १०	—९ २०
हरिद्वार (उ.प्र.)	२९ ५८	७५ १३	—१७ ८
हाथरस (उ.प्र.)	२७ ३६	७८ ६	—१७ ३६
हापुड़ (उ.प्र.)	२८ ४३	७७ ५०	—१८ ४०
हांसी (ह.)	२९ ६	७६ ०	—२६ ०
हिसार (ह.)	२९ १०	७५ ४६	—२६ ५६
हुबली (क.)	१५ २०	७५ १२	—२९ १२
हैदराबाद (आं)	१७ २०	७८ ३०	—१६ ०
होशंगाबाद (म.प्र.)	२२ ४६	७७ ४५	—१९ ०
होशियारपुर (पं.)	३१ ३२	७५ ५७	—२६ १२
होसुर (ता.)	१२ ४४	७७ ५२	—१८ ३२

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

(स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है)

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर
अकलेरा	२४ २३	७६ ३६	२३ ३६
अजमेर	२६ २७	७४ ४२	३१ १२
अनूपगढ़	२९ ७	७३ ६	३७ ३६
अमेट	२५ २०	७३ ५९	३४ ४
अलवर	२७ ३४	७६ ३८	२३ २८
अलीगढ़	२५ ५८	७६ ७	२५ ३०
आबू	२४ ४०	७२ ४५	३९ ०
आबू रोड़	२४ २९	७२ ४७	३८ ५२
आमेर	२६ ५९	७५ ५२	२६ ३२
आसपुर	२३ ५८	७४ ३	३३ ४८
आहोर	२५ २३	७२ ५२	३८ ३२
इन्द्रगढ	२५ ४४	७६ १२	२५ १२
उतारनी	२६ ६	७१ ५८	४२ ८
उदयपुर	२४ ३५	७३ ४१	३५ १६
एकलिंगजी	२४ ४३	७३ ४६	३४ ५६
एरिनपुरा	२५ ९	७३ ६	३७ ३६

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर
ओसिया	२६ ४३	७२ ५५	३८ २०
करौली	२६ ३०	७७ १	२१ ५६
कांकरोली	२५ ४	७३ ५४	३४ २४
कामन	२७ ३९	७७ १६	२० ५६
किशनगढ़	२६ ३४	७४ ५२	३० ३२
कुशालगढ़	२३ १०	७४ २७	३२ १२
कूचामन	२७ ९	७४ ५२	३० ३२
कूरी	२६ ४२	७० ४०	४७ २०
केकड़ी	२५ ५६	७५ १०	२९ २०
कोटरा	२४ २२	७३ १०	३७ २०
कोटा	२५ १०	७५ ५२	२६ ३२
कोलायत	२७ ५०	७२ ५७	३८ १२
खण्डेला	२७ ६	७५ ३२	२७ ५२
खुईआला	२७ ६	७० २५	४८ २०
खेड़ब्रह्मा	२४ ५	७३ ३	३७ ४८
खेरबड़ा	२४ ०	७३ ३५	३५ ४०

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर
गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०
गंगापुर (भीलबाड़ा)	२५ १३	७४ १६	३२ ५६
गंगापुर (टोंक)	२६ २९	७६ ४६	२२ ५६
गिराब	२६ २	७० ३५	४७ ४०
गागरिया	२५ ४४	७० ४२	४७ १२
गूढ़ा	२५ १२	७१ ४८	४२ ४८
घोटारू	२७ १८	७० ४	४९ ४४
चात्सू	२६ ३६	७५ ५९	२६ ४
चारनवाला	२७ ५३	७२ १०	४१ २०
चित्तौड़गढ़	२४ ५४	७४ ४०	३१ २०
चिरावा	२८ १५	७५ ३८	२७ २८
चीलो	२७ २२	७३ ३०	३६ ०
चूरू	२८ १९	७५ १	२१ ५६
चौगू	२७ ८	७५ ४७	२६ ५२
छबरा	२४ ४०	७६ ५०	२२ ४०
छोटी साढड़ी	२४ २४	७४ ४२	३१ १२

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर
जयपुर	२६ ५५	७५ ५२	२६ ३२
जसरासर	२७ ४५	७३ ५०	३४ ४०
जसवंत पुरा	२४ ४८	७२ ३०	४० ०
जहाजपुर	२५ ३८	७५ १२	२९ १२
जाएल	२७ १५	७४ १२	३३ १२
जालोर	२५ २२	७२ ३८	३९ २८
जैसलमेर	२६ ५५	७० ५४	४६ २४
जोधपुर	२६ १८	७३ ४	३७ ४४
जोधासर	२८ ७	७३ ५०	३४ ४०
झालरापाटन	२४ ३३	७६ १०	२५ २०
झालावाड़	२४ ३६	७६ ९	२५ २४
झुंझुनु	२८ ६	७५ २५	२८ २०
टोडगढ़	२५ ४२	७४ ०	३४ ०
टोड़ाराय सिंह	२६ ०	७५ २९	२८ ४
टौंक	२६ ११	७५ ५०	२६ ४०
डीन	२७ २८	७७ २०	२० ४०

राजस्थान के नगरों के अक्षांश, रेखांश [illegible] अन्तर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सै.
डीड़वाना	२७ २४	७४ ३४	३१ ४४	पीपार रोड़	२६ २७	७३ २७	३६ १२	मकराना	२७ ३	७४ ४३	३१ ८	शाहपुरा(भीलवाड़ा)	२५ ४०	७४ ५०	३० ४०
डूंगरपुर	२३ ५०	७३ ४३	३५ ८	पुनासर	२७ २	७३ २	३७ ५२	मण्डलगढ़	२५ १२	७५ ९	२९ २४	ग्रोओं	२६ ११	७१ १५	४५ ००
डेगाना	२६ ५०	७४ १८	३२ ४८	पुष्कर	२८ ३०	७४ ३३	३१ ४८	महला	२६ ५०	७५ ३०	२८ ०	शेरगढ़ (जोधपुर)	२६ २५	७२ २१	४० ३६
तिजारा	२७ ५५	७६ ५०	२२ ४०	पूगल	२८ ३१	७२ ४७	३८ ५२	महाजन	२८ ४८	७३ ५६	३४ १६	सेरगढ़(झालावाड़)	२४ ४०	७६ ३२	२३ ५२
थाना कस्बा	२५ १३	७७ २०	२० ४०	प्रसाद	२४ ११	७३ ४२	३५ १२	मांगरोल	२५ २०	७६ ३०	२४ ०	श्री गंगानगर	२९ ४९	७३ ५०	३४ ४०
थाना गाज़ी	२७ २५	७६ १९	२४ ४४	फतेहपुर	२८ ०	७५ ०	३० ०	मारवाड़ जंक्शन	२५ ४३	७३ ४५	३५ ०	श्री डूगरगढ़	२८ ६	७४ १	३३ ५६
दान्ता	२४ १२	७२ ४७	३८ ५२	फलौदी	२७ ९	७२ २२	४० ३२	मालपुरा	२६ १८	७५ २५	२८ २०	श्री माधोपुर	२७ २५	७५ ३२	२७ ५२
देओरा	२६ ३०	७० ४२	४७ १२	फुलेरा	२६ ५२	७५ १६	२८ ५६	मावली	२४ ४७	७३ ५८	३४ ८	श्री मोहनगढ़	२७ १७	७१ १२	४५ १२
देचू	२६ ४७	७२ २०	४० ४०	बड़ी सादड़ी	२४ २५	७४ २८	३२ ८	मेड़ता	२६ ३९	७४ ६	३३ ६	सम	२६ ५०	७० ३१	४७ ५६
देवलिया	२४ ३	७४ ४३	३१ ८	पोखरन	२६ ५५	७१ ५५	४२ २०	मेड़ता रोड़	२६ ४३	७३ ५५	३४ २०	समदरी	२५ ४९	७२ ३५	३९ ४०
देवली	२५ ४६	७५ २५	३८ २०	बनस्थली	२६ २३	७५ ५०	२६ ४०	मियालजर	२६ १८	७० २२	४८ ३२	सरदार शहर	२८ २७	७४ ३०	३२ ००
देवीकोट	२६ ४२	७१ १२	४५ १२	बयाना	२६ ५४	७७ १७	२० ५२	मुकन्दवाड़ा	२४ ४९	७५ ५९	२६ ४	सरवार	२६ २	७४ ५५	३० २०
देशनोक	२७ ४८	७३ २१	३६ ३६	बान्दनवाड़ा	२६ ९	७४ ४२	३१ १२	मुनबाओ	२५ ४३	७० १५	४९ ०	सरूप सर	२९ २२	७३ ३७	३५ ३२
देसुरी	२५ २०	७३ ३७	३५ ३२	बस्वा	२७ ६	७६ ३२	२३ ५२	मोदरी	२४ २५	७३ २५	३६ २०	सवाई माधोपुर	२५ ५८	७६ २५	२४ २०
धौलपुर	२६ ४२	७७ ५३	१८ २८	बान्दी कुई	२७ ३	७६ ३५	२३ ४४	मोहनगढ़	२७ १७	७१ १८	४४ ४८	सहारा	२५ १५	७४ १६	३२ ५६
नरैना	२६ ५०	७४ ११	३३ १६	बाड़मेर	२५ ४५	७१ २५	४४ २०	रतनगढ़	२८ ५	७४ ३९	३१ २४	सागवाड़ा	२३ ४१	७४ १	३३ ५६
नवलगढ़	२७ ५१	७५ १८	२८ ४८	बाड़ी	२६ ३९	७७ ३६	१९ ३६	राजगढ़	२८ ३९	७५ २६	२८ १६	सांगानेर	२६ ४९	७५ ४९	२६ ४४
नसीराबाद	२६ १८	७४ ४६	३० ५६	बाप	२७ २२	७२ २२	४० ३२	रानीवाड़ा	२४ ४५	७२ १३	४१ ८	सांगोद	२४ ५५	७६ २१	२४ ३६
नागौर	२७ ११	७३ ४४	३५ ४	बारन	२५ ६	७६ ३०	२४ ०	रामगढ़ (जयपुर)	२७ १५	७५ १०	२९ २०	सांचोर	२४ ४०	७१ ५०	४२ ४०
नाचना	२६ २९	७१ ४५	४३ १०	बांसवाड़ा	२३ ३०	७४ २४	३२ २४	रामगढ़(जैसलमेर)	२७ २०	७० ३०	४८ ०	साम्भर	२६ ५४	७५ १०	२९ २०
नाथद्वारा	२४ ५६	७३ ५०	३४ ४०	बाली	२५ ५०	७४ ५	३३ ४०	रामदेवरा	२७ ०	७१ ५२	४२ ३४	सादूलपुर	२८ ३८	७५ २४	२८ २४
निम्बाहेड़ा	२४ ३७	७४ ४५	३१ ०	बालोतरा	२५ ४९	७२ १४	४१ ४	रायसिंह नगर	२९ ३२	७३ २७	३६ १२	सिन्दरी	२५ ३३	७१ ५५	४२ २०
नीम का थाना	२७ ४४	७५ ४८	२६ ४८	बिरसलपुर	२८ १०	७२ १५	४१ ०	रिखभदेव	२४ ४	७३ ४०	३५ २०	सिरमुटरा	२६ ३१	७७ २२	२० ३२
नोखा	२७ ३५	७३ २९	३६ ४	बिलारा	२६ १०	७३ ४२	३५ १२	रींगस	२७ २१	७५ ३४	२७ ४४	सिरोही	२४ ५३	७२ ५४	३८ २४
नैनवा	२५ ४५	७५ ५७	२६ १२	बीकानेर	२८ १	७३ २०	३६ ४०	रूपनगर	२६ ४८	७४ ५४	३० २४	सिवाना	२५ ३६	७२ २७	४० १२
नोहर	२९ ११	७४ ४६	३० ५६	बून्दी	२५ २७	७५ ४०	२७ २०	रेनी	२८ ४१	७५ ५	२९ ४०	सीकर	२७ ३६	७५ ९	२९ २४
पचपदरा	२५ ५५	७२ २१	४० ३६	ब्यावर	२६ ६	७४ २०	३२ ४०	लछमनगढ़	२७ ४५	७५ ४	२९ ४४	सुजानगढ़	२७ ४२	७४ ३०	३२ ००
परतापगढ़	२४ २	७४ ४७	३० ५२	भरतपुर	२७ १५	७७ ३०	२० ०	लाठी	२७ ३	७१ ३०	४४ ००	सूरतगढ़	२९ १९	७३ ५७	३४ १२
पर्वतसर	२६ ५२	७४ ४७	३० ५२	भवारी	२५ ४३	७२ ५२	३८ ३२	लाडनूं	२७ ३९	७५ २३	३२ २८	सोजत	२५ ५६	७३ ४२	३५ १२
पल्लू	२८ ५६	७४ १३	३३ ८	भंवरगढ़	२५ ६	७६ ५०	२२ ४०	लालसोत	२६ ३४	७६ २३	२४ २८	हनुमानगढ़	२९ ३५	७४ २१	३२ ३६
पाली	२५ ४६	७३ २०	३६ ४०	भाद्रा	२९ १५	७५ २०	२८ ४०	लूनी	२६ ०	७२ ५२	३८ ३२	हिन्दौन	२६ ४३	७७ १	२१ ५६
पिपिलोदा	२३ ३५	७४ ५०	३० ४०	भीनमाल	२५ ०	७२ १९	४० ४४	लोहारिया	२३ ४८	७४ १५	३३ ००				
पिरावा	२४ १३	७६ ३	२५ ४८	भीम	२५ ३९	७४ ९	३३ २४	शाहगढ़	२७ ८	६९ ५७	५० १२				
पिलानी	२८ २३	७५ ३५	२७ ४०	भीलवाड़ा	२५ २१	७४ ४०	३१ २०	शाहपुरा (जयपुर)	२७ २३	७५ ५८	२६ ८				

दुनिया के कुछ देशों के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं.मि. को उस देश या प्रदेश के स्टैं. टा. में धन (+) ऋण (-) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा. स्टैं. टा. ज्ञात हो जाएगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर (घं. मि.)
अदन	-२।३०
अफगानिस्तान	-१।००
अर्जेण्टाइना	-८।३०
आस्ट्रेलिया	
कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+४।०
प.आस्ट्रेलिया	+२।३०
ऑस्ट्रिया	-४।३०
बेलजियम	-४।३०
बर्मा	+१।०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	-९।०*
एटलांटिक टाईम(A.T)	-९।३०*
ईस्टर्न टाईम(E.T)	-१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पैसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
सिलोन	०।०
चीन	+२।३०
कोलम्बिया	-१०।३०
क्युबा	-१०।३०*
चेकोस्लावाकिया	-४।३०*
डेन्मार्क	-४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	-३।३०*
इथोपिया	-३।३०
फिन्लैण्ड	-३।३०
फ्रांस	-४।३०
जर्मनी	-४।३०
घाना	-५।३०
ग्रीस	-३।३०
हांककांग	+२।३०
हंगरी	-४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा,जावा,बाली बांगका,बिलीटान	+१।३०
बोर्नियो, सेलीविस, टिमोर, फ्लोर्स	+२।३०
आरु, केई,टनिमबर मोलुकस,प०इरियन	+३।३०
ईरान(पर्सिया)	-२।०
ईराक	-२।३०
आयरलैण्ड (उ.)	-५।३०*
इजरायल	-३।३०
इटली, सिसली	-४।३०*
जापान	+३।३०
जार्डन	-३।३०
केन्या	-२।३०
कोरिया	+३।३०
कुवैत	-२।३०
मलेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+२।०
सरवक	+२।३०
मारिशस	-१।३०
मैक्सिको	
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०
नीदरलैण्ड्स(हालैण्ड)	-४।३०
न्यूजीलैण्ड	+६।३०
पाकिस्तान	-०।३०
बंगला देश	+०।३०
फिलिपाइन गणतन्त्र	+२।३०
पोलैण्ड	-४।३०*
पुर्त्तगाल	-४।३०
रोडेशिया,न्यासालैण्ड	-३।३०
रोमानिया	-३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	-२।३०
धहरान, कतर	-१।३०
सिंगापुर	+२।०
सोमाली लैण्ड,सोमालिया	-२।३०
साउथ अफ्रीकन गणतन्त्र	-३।३०
स्पेन	-४।३०
सूडान	-३।३०
स्वीडन	-४।३०
स्विट्जरलैण्ड	-४।३०
सीरिया	-३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+१।३०
टर्की	-३।३०*
युगांडा	-२।३०
इंग्लैण्ड	-५।३०*
अमेरिका(U.S.A)	
ईस्टर्न टाईम(E.T)	१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम(C.T)	-११।३०*
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम(M.T)	-१२।३०*
पेसिफिक टाईम(P.T)	-१३।३०*
रूस(U.S.S.R)	
मास्को	-२।३०
'ब्लैक सी, से कैस्पियन सी तक'	-१।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	-०।३०
ओमस्क,पू. कजक	+०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+१।३०
इर्कुत्स्क	+२।३०
याकुत्स्क,चितिन्स्क द. सकलिन	+३।३०
खबरोव्स्क, ब्लादिवोस्तक उ. सखलिन	+४।३०
मगदन	+५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+१।३०
दक्षिणी	+२।३०
वेनेजुएला	-९।३०
युगोस्लाविया	-४।३०
नेपाल	+०।१५
भूटान	०।०

*इन स्थलों पर Summer Time (ग्रीष्मकाल समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है।
जिन देशों में Summer Time प्रचलित है वहां गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी एक घण्टा आगे किए हुए टाईम को *Summer Time* कहा जाता है।

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखाओं की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ.प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचाग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे २९,३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी - पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिये। अन्तर के इन पलों को "सहायक सारणी" (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहले कालम में देखिये। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों उन्हे लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे "अभीष्ट घड़ी पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूढ़िये, जिन्हे "**सारणीस्थ घड़ी पल**" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिये गए घड़ी पलों का "सारणीस्थ घड़ी पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी पलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहाँ लिखें हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि अंशों मे जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनाँश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. स. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा., २ अंश ३७ क. ४७ वि. है। शिमला के अक्षांश ३१ अंश ६क. (उत्तर) हैं, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ. ५५ प. हैं, इन्हे अलग लिखा। सारणी में २ घ. ५५ प. के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ. २ प. लिखे हैं। इनका २ घ. ५५ पल. से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क. १७ वि. देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ प. लिखें हैं। इन्हे अलग लिखे २ घ. ५५ प. में जोड़ा और इष्ट काल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो ६१ घ. ४४ प. (६० घड़ी घटाने पर १ घ. ४४ प.) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १घ. ४४ प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम १ घ. ४० पल सारणी में देखें जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में २१ अंश लिखें है। इन ११ रा. २१ अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ. ४० प.) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ. ४६ प. का १ घ. ४० पल. से अन्तर ६ प. सारणीस्थ अन्तर है। "अभीष्ट घड़ी पल" (१ घ. ४४ प.) ओर सारणीस्थ घड़ी पल (१ घ. ४४ प.) का अन्तर ४ पल है। सहायक सारणी की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ प. के आगे ४० क. ० वि. लिखा है। इन्हे ११ रा. २१ अं. में जोड़ने पर ११ रा. और २१ अ. ४०क. ० वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे + १ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा. २१ अं. ४० क. ० वि. में जोड़ने पर ११ रा. २१ अं. ४१ क. ० वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि-इष्ट काल के घ .प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कुं. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कुं. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८

अंश →	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	.	१५
मी. घ	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९

अंश →	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधन का उदाहरणः- वि.सं. २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं.३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क.० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प.'अभीष्ट घड़ी-पल' हुए । "दशमलग्न सारणी" में इन " अभीष्ट घड़ी पलों " से कुछ कम घ.प. ४६। ४२'सारणीस्थ घ.पल'. धनु (८)राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं ।अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारिणी में ४६। ४२ के दाईं ओर(१७ अं. के नीचे) लिखे ४६। ५२ का ४६। ४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। "सारणीस्थ घड़ी पल" ४६। ४२ और अभीष्ट घड़ी पल ४६। ४७ का अन्तर ५पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३०क. ० वि. मिली, इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं.में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ०.वि.हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि.सं. २०२९ के आगे दिया गया, अयनांश संस्कार+१क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
६	१०। ०	२०। ०	३०। ०	४०। ०	५०। ०	६०। ०							
७	८ । ३४	१७। ९	२५। ४३	३४। १७	४२। ५१	५१ ।२६	६०।०						
८	७ । ३०	१५। ०	२२।३०	३०। ०	३७। ३०	४५। ०	५२।३०	६०। ०					
९	६। ४०	१३।२०	२०। ०	२६। ४०	३३। २०	४०। ०	४६।४०	५३। २०	६०। ०				
१०	६। ०	१२। ०	१८। ०	२४। ०	३०। ०	३६। ०	४२। ०	४८। ०	५४। ०	६०। ०			
११	५। २७	१०। ५५	१६।२२	२१। ४९	२७।१६	३२। ४४	३८। ११	४३।३८	४९। ५	५४।३३	६०। ०		
१२	५। ०	१०। ०	१५। ०	२०। ०	२५। ०	३०। ०	३५। ०	४०। ०	४५। ०	५०। ०	५५। ०	६०। ०	
१३	४। ३७	९ । १४	१३। ५१	१८।२८	२३। ५	२७। ४२	३२। १९	३६। ५६	४१ ।३३	४६। १०	५०। ४७	५५ ।२३	६०। ०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. सवंत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०२२	+ ७	२०२८	+२	२०३४	-३	२०४०	-८	२०४६	-१३	२०५२	-१८
२०२३	+ ७	२०२९	+१	२०३५	- ४	२०४१	-९	२०४७	-१३	२०५३	-१८
२०२४	+ ६	२०३०	+१	२०३६	- ४	२०४२	-९	२०४८	-१४	२०५४	-१९
२०२५	+ ५	२०३१	०	२०३७	- ५	२०४३	-१०	२०४९	-१५	२०५५	-२०
२०२६	+ ४	२०३२	-१	२०३८	- ६	२०४४	-११	२०५०	-१६	२०५६	-२१
२०२७	+ ३	२०३३	-२	२०३९	- ७	२०४५	-१२	२०५१	-१७	२०५७	-२२

किस देश ने अपने समरटाईम (D.S.T.) की प्रारम्भ व समाप्ति की तारीखें कब-कब बदलीं और अब वहां समरटाईम प्रतिवर्ष कब से कब तक चलता है ? " किस देश ने प्रथम-द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान कब से कब तक अपनी घड़ियां कितनी आगे चलाईं ?- इन प्रश्नों के उत्तर "विश्वलग्नसारणी" में आप विस्तार से पाएंगे। इस पुस्तक का विज्ञापन इस पंचांग के अन्तिम टाइटल पृष्ठ पर देखें।

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्टकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये ।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६)इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। **स्थानीयमध्यमकाल बनाने** के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्ठक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त –८ से. चिह्न के अनुसार घटाए , तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. , २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अत: स्टै. टा. में २४घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं . अं. से कम था अत: यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश–कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली । क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है । सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "**गणकमार्तण्ड**" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
१४ ३०	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि.से.	सन	घं. मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.	सन्	घं. मि.से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९५०	६ ३९ २७	१९५७	६ ४० ४०	१९६४	६ ३७ ५६	१९७१	६ ३९ ७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६।३९।५९
१९५१	६ ३८ ३०	१९५८	६ ३९ ४३	१९६५	६ ४० ५५	१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६।३९।०२
१९५२	६ ३७ ३३	१९५९	६ ३८ ४५	१९६६	६ ३९ ५७	१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६।४२।०१
१९५३	६ ४० ३३	१९६०	६ ३७ ४७	१९६७	६ ३९ ००	१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६।४१।०४
१९५४	६ ३९ ३५	१९६१	६ ४० ४७	१९६८	६ ३८ ३	१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६।४०।०७
१९५५	६ ३८ ३८	१९६२	६ ३९ ५०	१९६९	६ ४१ २	१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६।३९।१०
१९५६	६ ३७ ४१	१९६३	६ ३८ ५३	१९७०	६ ४० ५	१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६।४२।०९

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

ता.	जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०
२	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७
३	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३
४	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०
५	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६
६	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३
७	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०
८	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७
९	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३
१०	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०
११	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६
१२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३
१३	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९
१४	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६
१५	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२
१६	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९
१७	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६
१८	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३
१९	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९
२०	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६
२१	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२
२२	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९
२३	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५
२४	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२
२५	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८
२६	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५
२७	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१
२८	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८
२९	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४
३०	१३	४७	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११
३१	१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७
३२																२३	५९	३

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२९	२२ ५१ ५५	१९५३	२३ १२ २	१९७७	२३ ३२ ८
१९३०	२२ ५२ ४५	१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५८
१९३१	२२ ५३ ३६	१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४८
१९३२	२२ ५४ २६	१९५६	२३ १४ ३२	१९८०	२३ ३४ ३९
१९३३	२२ ५५ १६	१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९
१९३४	२२ ५६ ७	१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ १९
१९३५	२२ ५६ ५७	१९५९	२३ १७ ३	१९८३	२३ ३७ ९
१९३६	२२ ५७ ४७	१९६०	२३ १७ ५३	१९८४	२३ ३८ ०
१९३७	२२ ५८ ३७	१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५०
१९३८	२२ ५९ २८	१९६२	२३ १९ ३४	१९८६	२३ ३९ ४०
१९३९	२३ ० १८	१९६३	२३ २० २४	१९८७	२३ ४० ३०
१९४०	२३ १ ८	१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २०
१९४१	२३ १ ५८	१९६५	२३ २२ ५	१९८९	२३ ४२ ११
१९४२	२३ २ ४९	१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ १
१९४३	२३ ३ ३९	१९६७	२३ २३ ४५	१९९१	२३ ४३ ५२
१९४४	२३ ४ २९	१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२
१९४५	२३ ५ १९	१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३२
१९४६	२३ ६ १०	१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २२
१९४७	२३ ७ ०	१९७१	२३ २७ ६	१९९५	२३ ४७ १३
१९४८	२३ ७ ५०	१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३
१९४९	२३ ८ ४१	१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३।४८।५३
१९५०	२३ ९ ३१	१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३।४९।४४
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २७	१९९९	२३।५०।३४
१९५२	२३ ११ ११	१९७६	२३ ३१ १८	२०००	२३।५१।२४

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन				चंद्र दशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन				भौमदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रो. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन				गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन				शनि दशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन			
आर्द्रा स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पुष्य अनु. उ. भा			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं.	१	७	०
र.	०	१०	२४	च.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन				केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन				शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन			
आश्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अश्वि.				पू. फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	च.	१	८	०
र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	म.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रहा
आर्द्रा चि. श्र.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य. वि.श.	अश्वि.आश्ले.अनु.पू.भा	भ.म.ज्ये.उभा	कृ. पू. फा. मू.रे.	रो.उ.फा.पू.षा.	मृ. ह. उ.षा	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन।
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	म. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ ३ १०	उ ६ ०	सि. ९ १०	सं १३ १०	मं. २	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	स. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धांक घटी, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्ध पल होगें। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

वर्षकुंडली में तनु आदि भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ्	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाहन ला.	पुत्रलाभ	कष्टम्	सुखम्	रोग	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहु	शिरोर्ति	राजभी	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी:	कष्टम्	हानि	विजय.	सुलाभ.	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम	यश,अर्थ	पुष्टि	दुखम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योदय	राज्यप्रा.	लाभ	कष्टम्

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना- वेधसिद्धि वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५ पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्ष प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल साधन प्रकार:- (१.) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष, (गताब्द) जाने। स्मरण रहे, कि-मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्)। इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घटयादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग/देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२.) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्य तुल्य वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी बार नहीं मिलता। वहाँ पर बार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्न सारणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकार-** गताब्द संख्या में जन्म लग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना जो शेष बचे वह मुन्था जानना। यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा- गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनादि- सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१,राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६०,यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल- सूर्य वर्ष लग्नन से ९ चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि. १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल- सू. १।५ च. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गुरु. ९।१२।४, शु. २। ७।१२, श. १०।११।७, इन राशियों में ५ बल देते हैं। **पुरुषस्त्री-ग्रह- बल-** स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल-** दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	वृ.	चं.	दिनलग्नपति
वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नपति

वर्ष में दृष्टि ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से पांचवे ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल - कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ ओर जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। तीसरे , ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो , पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है । फल- शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से बैर , धन हानि , बनते काम को बिगाडना आदि फल होते है ।४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं । फल - कार्य बडी कठिनता से सफल हो , गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णय :- जन्म लग्नेश १ , वर्ष लग्नेश २ , मुन्थेश ३ त्रैराशींश ४ समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिसे राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी) इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखेंवह वर्षेश होगा, । यदि पाँचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से अधिक बलवान हो वही वर्षवेश्वर होगा । कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल. दृष्टि. अधिकार यह तीनों समान हो तो मुन्थेश ही वर्षेश हो । यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो ॥ फल - वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख शोक , चिन्ता , भय विशेष होगा । यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो ।

वर्ष में तबदीली का योग- वर्ष कुण्डली में लग्नेश - तृतीयेश वा चतर्थेश-नवमेश एक घर में हो या एक दुसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी । अगर वर्ष- लग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी ।

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से ३½ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश-सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं.मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं.टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे- मान लीजिए किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा.स्टैं. टा.) ८ घं. २० मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (२ वा.८घं.२० मि.)में सारणी से गताब्द ९ द्वारा प्राप्त वारादि काल ४ वा. ७घं. २२ मि. जोड़ने पर ६ वा. १५ घं. ४२ मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को १५ घं. ४२ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

ध्यान रहे- इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के १२ बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार का होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/३/०१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

-वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश -रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश-रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश-रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीन काल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से समझने के लिए 'सं २०५२ वि. के '"श्री मार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. ४१-४२ पर छपा मेरा लेख **"वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?"** पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब-जब जातक के जन्म-कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश,कला, विकलाओं पर आता है तब-तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मास प्रवेश)होता है। उदाहरणार्थ- यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य २ रा. १० अं. २५ क. ४० वि. है, तो जब जब वह (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों मे मेष आदि राशियों के १० अं. २५ क. ४० वि. पर पहुँचेगा, तब -तब जातक के तत्तद् वर्षों के मासों का प्रारम्भ माना जाएगा। सूर्य अमुक राशि के अमुक अं.क. वि. पर कब पहुँचेगा-इसका निर्णय सूर्य की मास-प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास-प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. २०५० वि. के "मार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ ४१ पर दिया गया मेरा लेख **"स्पष्टमान से मास प्रवेश काल"** पढ़ें।)

— प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं.मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श.शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं.श. गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. कं.	ध. मी.	वृष, तुला	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु.स्त्री.नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी, स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊपर	ऊपर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास-दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग - वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवे या सातवें पड़ा हो या पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है । मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवे हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है ।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग देना । लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना, यह मुंथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है ।

अरिष्ट योग :

यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न होऔर जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वहीं आ जाये तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है । वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ कष्ट भय होता है । वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा ।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य यह शास्त्र- सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गुरु शुक्रास्त में गया-गोदावरी यात्रा में नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु - शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां- १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र- तीनों उत्तरा मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। शुभ लग्न-जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न हो देखते हों,विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा ४,६,८,९,१४,१५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४,८,१२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी ५,९,१ लग्नों की आधी घड़ी ५,१,१५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी,६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निर्बल तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी,रेवती, मघा-नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यत्तिपात वैधृतियोग माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिध योग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भ मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त - यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु. रवि. मंगलवार को मृ, पुन, पु, ह, मूल और श्रवण नक्षत्रों में १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५,तिथियों में जब लग्न से १,४,५,७,९, और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तो तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध, और शुक्रवार भी शुभ है।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त - गर्भाधान के छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमन्त जातकदीनि प्राशनान्तानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा - गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार - बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुव स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त - रिक्तामा . भद्रा, व्यातिपात एवं वैधृति को छोडकर शुभ तिथियां हों . वार चं. बु. गु. शु. हों. नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हो. तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है ।

प्रसुता स्त्री के स्नान का मुहूर्त - रेवती तीनों उत्तरा . रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में. १.२.३.५.७.१०.११.१३.१५. तिथियां शुभ है । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य है। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम है।

प्रसुता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त - मास समाप्त होने पर बुध . गुरु या चन्द्रवार की ४.९.१४. तिथियों को छोडकर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है । परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र . पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त - संक्रान्ति का दिन. भद्रा और व्यतिपात को छोडकर १.२.३.५.७.१०.११.१२.१३ तिथयों में जन्मकाल से ११ वें या १२ वें दिन सोम. बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा . रो. ह. अश्विनी पुष्य . अभि . स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १,४,५,७,१० स्थनों में शुभग्रह तथा ३.६.११ स्थानों में पापग्रह हो तब शुभ होता है ।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुक्रवार में मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि . पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त हाने पर १।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६। ११वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है ।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

निष्क्रमण मुहूर्त - स्वा. अश्वि. पुन. ह.मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम . शनि को छोडकर अन्य वारों में, रिक्ता अमा. भद्रादि से रहित शुभ दिन मे, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त-पांचवे महीने में पृथ्वी वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा.रो.मृ.ज्ये.अनु.अश्वि.ह.पुष्य.अभि.इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र- बांध कर पृथ्वी पर बिठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र-''रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!'' इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त-जन्ममास से ६,८,१० या १२ वें मास में पुत्र का और ५,७,९ या ११वें मास में कन्या का भद्रादि- दोष रहित १,३,५,७,१०,१३,१५ तिथियों में सोम,बुध,गुरु ,और शुक्रवार को म.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पु.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष,वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में १,३,४,५,७,९,१० स्थानों में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो,३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह रहित हो ,१,६,८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है किसी-किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु.शत-तारिका और स्वाती अशुभ है।

कर्णवेध का मुहूर्त-चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक)जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४,९,१४ तिथियां, जन्मतारा क्षय तिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें दिन या १६वें दिन,६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम,बुध,गुरु ,शुक्रवार को श्र.ध.पुन.मृ.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो,१,४,५,७,९,१०,स्थानों में शुभ ग्रह हों,३,६,११,स्थानों में पाप ग्रह हों तुला,वृष,धनु,या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त-कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत.स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त-गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे,५ वे,७ वे वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी)चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र,बुध,गुरु,और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २,३,५,७,१०,११,१३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित)हो, ३,६,११,स्थानों में पापग्रह हो ज्ये.मृ.रे.चि.स्वा.पुन.श्र.ध.शत.ह.अश्वि.पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष-स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने-अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है। सो ''यथाकुलधर्म वः'' इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त-मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ है-वर्जित काल शनि.रवि.भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४,८,९,१४,१५,३, तिथियां संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में,यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन् के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल-यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रुपजीवी जैसे नट-भांड आदि किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार--ब्राह्मण को रविवार, क्षत्रिय सोमवार को,वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त-जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु,सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह.अश्वि.पुष्य.अभि.श्र.स्वा.रे.पुन. आर्द्रा.चित्रा.अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष,कर्क तुला,और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त-उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर)रवि,बुध,गुरु और शुक्रवार को २,३,५,६,१०,११,१२ तिथियों में म. आर्द्रा पुन., हस्त,चि.,स्वा. श्र.ध. शत.,अश्विनी ,म. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो. पुष्य, आश्ले, अनु. ,रेवती,नक्षत्रों में , जब लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त - सूर्य , भौम , शनिवार हों ,४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले, म. तीनों पूर्वा . भ.कृ.वि.आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ है ।

सीने पिरोने(सूचिकर्म)का मुहूर्त - अश्वि.पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र , सूर्य, बुध,चन्द्र,गु., श.ये वार ,१।२।३।४।५।६ ।७।८।९।१०।११ ।१३ ।१५-ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त - यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है देवताओं की पूजा, संगति(सम्मेलन या कान्फ्रेंस)और जिसमें दान हों , उसे यज्ञ कहते है । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देव पूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरूष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु- धागा - विशेष)यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्रह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वे. वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाये तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २५ तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते है। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रीय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किंतु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्राति दिन को तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु.गु.चं. और लग्नेश ६।८ स्थान में, चं., शु. १२वें स्थान में और १।५।८ वें, में, पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पाप ग्रह ३।६।११ स्थानों, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र, के बाल्य वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपन्यन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिये समय शुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किवां अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है-ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक [illegible] और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ $\frac{1}{2}$ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हो तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख ''पाद **वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति**'' पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक '**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**' में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -'**नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्**' (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। ध्यान रहे, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक ''**ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन**'' में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नूदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग', 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के	अ, इ,	क, ख, ग,	च,छ,ज,	ट,ठ,ड,	त,थ,द,	प, फ,ब,	य,र,	श,ष,
वर्ण	उ,ए	घ,ङ	झ,ञ	ढ,ण	ध,न	भ,म	ल,व	स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अं.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सिं.	सिं.	अ.	सिं.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक, म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग १)

कन्या \ वर		मेष अश्वि. १,२,३,४	मेष भर. १,२,३,४	मेष कृत्ति. १	वृष कृत्ति. २,३,४	वृष रोहि. १,२,३,४	वृष मृग. १,२	मिथुन मृग. ३,४	मिथुन आर्द्रा १,२,३,४	मिथुन पुन. १,२,३	कर्क पुन. ४	कर्क पुष्य १,२,३,४	कर्क आश्ले. १,२,३,४	सिंह मघा १,२,३,४	सिंह पू.फा. १,२,३,४	सिंह उ.फा. १	कन्या उ.फा. २,३,४	कन्या हस्त १,२,३,४	कन्या चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८½ त	१८½ ब भ त	२१½ ब भ त	२२½ ब भ त	२६ ब त र	१७ ब न त र	१९ बन त र	२३½ न त	३१½ त	२८ ग	२१ व भ ग	२५ व भ	१५½ व भ न त	११ ब भ न तर	९ तवभ यनर	१३ व भ त र
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२९ ग	१९ ब ग भ	२१½ ब भ त	१४½ ब भ तन	१८ न ब त र	२६ ब त र	२७ ब त र	३१½ त	२३½ न त	२५½ ग त	२० ग व भ	१८ व भ न	२६ व भ	२१½ ब भ र	२० ब भ त	४ बभग नतर
	कृत्ति. १	२७½ ग त	२९ ग	२८ न	१८ ब भ न	१० ग ब न भ	१६½ ग ब भ त	२० ग ब त	२० ग ब त	२१ ग ब त र	२५ ग त	२६½ ग त	२३½ न त	१६½ व भ न त	२० ग व भ	२० ग व भ	१५½ ग ब भ	१५½ ग ब भ र	१८ ब भ त
वृष	कृत्ति. २,३,४	१८½ ग भ त	२० ग भ	१९ भ न	२८ न	२० ग न	२६½ ग त	१७½ ग ब भ त	१७½ ब ग भ त	१८½ ग ब भ त	२२ ग त र	२३ ग त र	२० न त र	१८½ न व र त	२२ र व ग	२२ र व ग	२१ ग भ	२१ ग भ	२३½ भ त
	रोहि. १,२,३,४	२३½ भ त	२३½ भ त	११ ग भ न	२० ग न	२८ न	३६	२७ ब भ	२३½ ब भ त	२२½ भ ब त य	२६ त र य	२७ त र	१२ ग न तरय	१०½ स्वग नतय	२४½ र व त य	२७ र व	२६ भ	२६ भ	२० ग भ
	मृग. १,२	२३½ भ त	१४½ भ न त	१८½ भ त ग	२७½ त ग	३५	२८ न	१९ ब भ न	२४ ब भ	२२ ब भ त य	२६ त य र	१९ त र न	२१ त र य ग	१९ गरव तर	१५ र व नतय	२४ र व त	२३½ भ त	२६ भ	१३ भ न ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ त र	१८ न तर	२२ तर ग	१९½ भ ग त	२७ भ	२० भ न	२८ न	३३	३१ त य	१९ भ व तयर	१२ भ न वतर	१४ भवत यरग	२३½ व त य ग	१९½ व न त य	२८½ व त	३१½ त	३४	२१ न ग
	आर्द्रा १,२,३,४	१९ त र न	२७ त र	२१ त रग	१८½ ग भ त	२४½ भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२ भ न तयर	२० भ व त र	१३ गभर वतय	२३ ग त व	२९½ व त	२१½ न व त	२४½ न त	२४½ न त	२७ ग य
	पुन. १,२,३	२० न त र	२७ त र	२३ त र	२०½ भ त ग	२२½ भ त	२३½ भ त य	३१½ त य	२४ न य	२८ न	१५½ न भ व र	२२½ भ व र	१७ भ व तरग	२२½ य व त ग	२६½ य व त	२१½ न व त	२४½ न त	२५½ न त	२७½ त ग
कर्क	पुन. ४	२२½ ब न त	२९½ ब त	२५½ ब त ग	२२ ब ग त र	२४ ब त य र	२५ ब त य र	१८ बभव रतय	१० बभव नयर	१४ बभ रनत	२८ न	३५	२९½ त ग	१६½ बभय गत	२०½ ब भ त य	१५½ ब भ न त	१८ न ब त र	१९ न ब वतर	२१ ब ग वतर
	पुष्य १,२,३,४	३०½ ब त	२१½ ब न त	२६½ ब त ग	२३ ब त र ग	२५ ब त र	१८ ब न त र	११ बभन बतर	१८ बभ वतर	२१ ब भ व र	३५	२८ न	३० ग	१९½ व भ ग त	१५½ ब भ न त	२३½ ब भ त	२६ ब व त र	२७ ब व त र	१२ नबवय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ ब ग	२४½ ब ग त	२२½ न ब त	१९ न ब त र	११ गबत नयर	१९ गब तयर	१२ गबत भवयर	१२ गबभ वतयर	१५ गवत भवर	२८ ग त	२९ ग	२८ न	१५ य ब भ न	१५½ गबय भत	१८½ ग ब भ त	२१ ग ब वतर	२१ ग ब वतर	२६ बवत र
सिंह	मघा १,२,३,४	२० ग व भ	२० ग व भ	१६ वभ न त	१७ वब रनत	९ वबत गरनय	१७ वबत गरय	२१ वब गतय	२२ व ब ग त	२० वब गयत	१६ ग भ य त	१९ गभ त	१६ न भ य	२८ न	३० ग	२७ ग त	१६ व ब गभत	१६ व ब गभत	२१ व ब भत
	पू.फा. १,२,३,४	२६ वभ	१८ व भ न	२० ग व भ	२१ ब व र ग	२३ व ब रतय	१५ वबन रतय	१९ व ब नतय	२८ व ब त	२६ व ब त य	२२ य भ त	१७ भ न त	१६½ ग भ य त	३० ग	२८ न	३५	२४ व ब भ	२२ व ब भ त	७ वबत गनभ
	उ.फा. १	१६½ व भ न त	२६ वभ	२० व ग भ	२१ ब व ग र	२६ व ब र	२४ व ब र त	२८ व ब त	२० व ब न त	२१ व ब न त	१७ भ न त	२५ भ त	१९ गभ त	२७ ग त	३५	२८ न	१७ व ब भ न	१६ व ब भ न	१३ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भ न त र	२२ भ र	१६ ग भ र	२१ ग भ	२६ भ	२४ भ त	३१ ब त	२३ न ब त	२४ न ब त	२० न ब त र	२८ व त र	२२ ग व त र	१७ ग व भ त	२५ भ व	१८ व भ न	२८ न	२७ न	२४ य ग त
	हस्त १,२,३,४	१० य भ नतर	२० भ त र	१७ भ र ग	२२ भ ग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२ न ब त	२४ न ब त	२० न ब त र	२८ व त र	२३ व त र ग	१८ व भ त ग	२२ व भ त	१६ व भ न	२६ न	२८ न	२८ य ग
	चित्रा १,२	१३ भत य र	५ गभन तयर	१९ भ त य र	२३ भत य	२० ग भ	१२ ग भ न	१९ ग ब न	२६ ग ब य	२५ ग ब त	२१ ग ब त र	१२ गनव तयर	२७ व त र	२२ व भ त	८ ग व भनत	१४ व य गभत	२४ ग य त	२७ ग य	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग २)

कन्या	वर	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उषा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२,	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२२½ बय तग	२६½ बय त	२२½ तब यग	१८½ गभ तय	२५½ भ त	१४ भन ग	१३½ भन ग	२५ भ	२३½ भ त	२५ ब तर	२६ ब त र	२० ब त यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४½ नभ तय	२४½ भ त	२६ भ
	भर. १,२,३,४	१३½ बगन तय	२९½ ब त	२१½ ग ब तय	१७½ ग भ तय	१७½ न भ त	१९½ ग भ त	२० ग भ	१८ न भ	२६ भ	२७½ ब र	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बय गनतर	२० ग ब त र	२४ ब य तर	२२½ तभ य	१७½ नभ त	२६½ भ त
	कृत्ति. १	२७½ ब त य	१५½ ब ग न त	१९½ ब न त य	१५½ भ न त य	१९½ गभ त	२५½ भ त	२४½ भ त	१८ गभ य	१२ गभ न	१३½ बग नर	११½ ब य रगन	२५ बत यर	२५ ब त यर	२७ ब त र	१९ बग तयर	१७½ ग भ तय	१९½ गभ त	११½ गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२½ बभ तय	१०½ ग ब भनत	१४½ बभ तनय	२०½ न तय	२४½ ग त	३०½ त	२० भ तर	१३½ यग भर	७½ गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३½ भ तय	२९½ ब तय	३१½ ब त	२३½ गब तय	२० गत यर	२२ ग तर	१४ गन तर
	रोहि. १,२,३,४	१९ गब भ	१५½ बभ नत	९½ तबग नभ	१५½ गन त	२९½ त	२३½ ग त	१४ गभ तर	१९ रभ तय	११½ यभन र	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६½ गब	२४½ गब त	३०½ ब त	२७ तर	२७ तर	१९ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ न ग	२५ बभ	१८½ बभ तग	२४½ त ग	२१½ न त	२४½ तग	१५ भ तरग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१½ भय त	२५ भ य	१३ नभ ग	१९ ब गन	२७ बग	२९½ ब त	२६ त र	१८ न त र	२७ त र
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०½ भ तग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नतय र	२५ यतर	२० भय वत	२३½ भ यव	११½ नभ वग	१३ नभ ग	२१ भ ग	२३½ भ त	२५½ तव र	१७½ नव तर	२६½ वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३½ रगव भ य	१७ तभव यर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भ वत	२३ भ वत	१७½ गभ वय	१९ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१९ नर वय	२६½ वत र	२६½ वत र
	पुन. १,२,३	२०½ भ तग	२८ भ	२२ भ ग	१५½ वभ रग	२१½ वभ र	७ रगवभ नत	१४ यरतन ग	२७ तर	२७ तर	२२ व त भ	२३ वत भ	१७ व त भयग	१८½ भग त य	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन य व	२८ रव	२७½ वत र
कर्क	पुन. ४	२०½ बतर ग	२८ वरब	२२ वरय ग	२० गभ	२६ भ	११½ तग भन	८ वतब भगनय	२१ बभ वत	२१ बभ वत	२६ बत र	२७ बत र	२१ बगत यर	१२½ बभव तयगर	८ बभव नगर	१० बभर नवय	१६ नभ य	२६ भ	२५½ भ त
	पुष्य १,२,३,४	११½ गनबव तयर	२६½ ब वतर	२१ रबग वय	१९ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गवभ वत	११ यवभ तनव	२१ बभ वत	२६ ब तर	२५ बय तर	१३ गबन तयर	४½ भबगय वनतर	१४½ बवत रगभ	१८ बभ वयर	२४ भ य	१८ नभ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५½ बव तर	१२½ गबव तरन	१७½ नब वतर	१५½ नभ त	२० गभ	२६ भ	२२½ बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ बगत नर	२६ बत यर	१७½ बभव तरय	१९½ बभ वतर	११½ गबभ वतयर	१७½ गभ तय	२१ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा १,२,३,४	२४½ बव तर	११½ बवत रगन	१६½ बवत रन	२२½ नव त	२५½ गव त	३३ व	२५ भव	१९ गवभ	८½ वगभ नतय	३½ बरतय गभन	४½ बरत गभन	१८½ बरत भ	२४½ बव तर	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	१८½ गभ त	१९½ गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०½ बवत रगन	२५½ बव तर	१८½ बव रगत	२४½ गव त	२३½ नव त	२५½ गव त	१९ ग व भ	१७ भव न	२४ भव य	१७ बर भय	१८½ बर भत	४½ बरत गभन	१०½ बवत रगन	१९½ बव रगत	२४½ बव रत	२४½ भ त	१७½ नभ त	२५½ भत
	उ.फा. १	१६½ बवत यगर	२५½ बव तर	१६½ बवय गरत	२२½ य व गत	३१½ वत	१७½ गव नत	९½ गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११½ बरत गभय	१७½ बवत गरय	११½ बवत गनर	१५½ बवत नरय	१५½ नभ तय	२६½ भ त	२५½ भ त
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६½ गबय भत	२५½ बभ त	१६½ गबय भत	१८ यवत गर	२७ य तर	१३ गव तनर	१४ गन तर	२९½ र	२९½ र	२४½ भ व	२४½ भ व	१६ गभ वतय	१६½ गब भतय	१०½ गब नभत	१४½ बभ नतय	१७½ तनव यर	२८½ वतर	२७½ वतर
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६½ बभ त	१८½ बभ तयग	२० वग तयर	२६ वतर	१३ नयत रग	१५ नत रग	२७ तर	२८½ र	२३½ भव	२४½ भव	१८½ भग वर	१९ बभ यग	८½ बयभ नतग	१३½ बभ नतय	१६½ वनत यर	२६½ वतर	२७½ वतर
	चित्रा १,२	२० बभ न	१९ गब भय	२६½ बभ त	२८ य तर	११ गवन तयर	२५ वत यर	२१ त	१४ गन तर	२२ ग तर	१७ गभ त	१८½ गभ व	१५½ भ वनय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६½ गबत भय	१९½ गव तयर	१०½ गयव नतर	१९½ वगत यर

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=तारादोष । य=योनिदोष । र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भकूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ३)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३,४	२२½ ग तय	१४½ गन तय	२८½ तय	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	२१ गभ	१९½ गभ त	२०½ गर वत	११½ गनय वरत	२६½ वत र	२५½ वर त	११½ वर गनत	१७½ वय गरत	१७½ यग भत	२० गभ य	२१ भन
	स्वाती १,२,३,४	२७½ यत	२९½ त	१७½ न त	१२½ भन त	१५½ भन त	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२९ वर	२७½ व तर	१४½ नव तर	१३½ वन तग	२५½ वर त	२५½ वर त	२५½ भ त	२७½ भ त	२१ भ यग
	विशा. १,२,३	२२½ तय ग	२२½ तय ग	२०½ तय न	१५½ तभ नय	१०½ गभ तन	१८½ गभ त	१९½ गभ त	२० गभ य	२१ गभ	२२ ग वर	२१ ग तर	१८½ नव तर	१७½ वर तन	१९½ वर तग	१७½ वय रगत	१७½ यग भत	१८½ गभ तय	२७½ भ त
वृश्चिक	विशा. ४	१६½ बग भयत	१६½ बग भयत	१४½ बभ नयत	१९½ बन तय	१४½ बग नत	२२½ बग त	१२ बवर गभत	१२½ बबय गभर	१३½ बव गभर	१९ गभ	१८ गभ य	१५½ भन त	२१½ बव नत	२३½ बव गत	२१½ बव गयत	१७ तबव गयर	१८ बवग तयर	२७ बव तर
	अनु. १,२,३,४	२४½ बभ त	१५½ बभ नत	१९½ बभ तग	२४½ बत ग	२७½ ब त	२०½ बन त	१० बवत नभर	१५ तबव रभय	२०½ बव भर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४½ बव तग	२०½ बव तन	२९½ बव त	२५ बव तर	२६ बव त	११ बरव नतय
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१२ बग भन	१८½ बग तभ	२४½ बभ त	२९½ ब त	२२½ बग त	२२½ बग त	१२ तबव गभर	२ तबवय गभनर	५½ तबवर गभन	१०½ त गभन	२० ग भ	२६ भ	३१ बव	२३½ बव गत	१६½ तबव गन	१२ तबव गनर	१२ तबव गनर	२४ बव तयर
धनु	मूल १,२,३,४	१२ गभ न	२० गभ	२४½ भ त	१९ बभ तर	१३ बग तभर	१३ रबग तभ	२१ बग तर	१५ बगन तर	१२ रबग तनय	८ यगभ वनत	१७ गभ वत	२३½ भ वय	२५ वभ	१९ वग भ	९½ तवग भन	१३ तरब गन	१३ बग तनर	२६ रब तय
	पू.षा. १,२,३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभ य	१२½ बय गभर	१८ बभ तयर	१० रबभ तनय	१८ बन तयर	२७ ब तर	२७ ब तर	२३ भ वत	१३ यभन वत	१७ गभ वत	१९ वग भ	१७ वभ न	२५ वभ	२८½ ब र	२७ बत र	१३ तबग नर
	उ.षा. १	२४½ भत	२६ भ	१२ गभ न	६½ रगब भन	१०½ बयर भन	१७ बय तभर	२५ बय तर	२७ बत र	२७ बत र	२३ भ वत	२३ भ वत	९ गभ वनत	८½ तगव यभन	२४ वभ य	२५ वभ	२८½ ब र	२८½ ब र	२१ गब तर
मकर	उ.षा. २,३,४	२७ तर	२८½ र	१४½ गन र	१२ गभ न	१६ भन य	२२½ यभ त	२० बय तभ	२२ बभ त	२२ बभ वत	२८ त र	२८ तर	१४ गन तर	४½ तयर गभन	२० रभ य	२१ रभ	२४½ भ त	२४½ वभ	१७ गभ वत
	श्रव. १,२,३,४	२७ तर	२६ तर	१३½ यन र	११ यभ गन	१६ भन य	२५ भ य	२२½ बभ वय	२१ बभ वत	२२ बभ वत	२८ त	२६ यत र	१५ नत र	६½ तगर भन	१८½ रभ त	२० भर	२३½ भ व	२४½ भ व	१९½ भ व
	धनि. १,२	२० गत यर	११ यग नरत	२६ तय र	२३½ भ तय	२० गभ	१२ गभ न	९½ वबग भन	१६½ वयब गभ	१६ बग वतभ	२२ ग तर	१३ रगन तय	२८ तर	१९½ रभ त	५½ तगर भन	१२½ तयर गभ	१६ गभ वतय	१७½ गभ व	१५½ भन वय
कुंभ	धनि. ३,४	२० तग यर	११ यग तनर	२६ तय र	३०½ तय	२७ ग	१९ गन	१२ गभ न	१९ गभ य	१८½ गभ त	१३½ गभ वतर	४½ तयर गभनव	१९½ भव तर	२५½ वर त	११½ वतर गन	१८½ वर गतय	१७½ गभ तय	१९ गभ य	१७ यभ न
	शत. १,२,३,४	१५ गन तर	२१ ग तर	२८ तर	३२½ त	२५½ गत	२७ ग	२० गभ	१२ गभ न	१३ गभ न	८ गभ वनर	१४½ गभ वतर	२०½ वभ तर	२६½ वर त	२०½ वर गत	१२½ वरत गन	११½ तग नभ	८½ तयग भन	२५ भ य
	पू.भा. १,२,३	१८ नत यर	२५ य तर	२० गर तय	२४½ ग तय	३१½ त	३१½ त	२४½ भत	१७ भन य	१८ भन	१३ भन व	२० भर वय	१३½ गभ वतर	१९½ वर तग	२५½ वर त	१६½ वर यनत	१५½ भन त	१५½ भन तय	१७½ गभ तय
मीन	पू.भा. ४	१४½ बभ तनय	२१½ बय तभ	१६½ गब तभय	१९ गब तयर	२६ ब तर	२६ ब तर	२५½ बव तर	१८ बन वयर	१९ नब वर	१८ नभ	२५ भ य	१८½ गभ त	१७½ बग तभ	२३½ बभ त	१४½ बभ तनय	१६½ रबन वतय	१६½ रनब वतय	१८½ रबग वतय
	उ.भा. १,२,३,४	२४½ बभ त	१६½ बभ तन	१८½ गब तभ	२१ गब तर	२६ बत र	१८ नब तर	१७½ नब वतर	२५½ बर वत	२८ ब वर	२७ भ	१९ भन	२१ गभ	१८½ गब तभ	१६½ बभ न	२५½ बभ त	२७½ बव तर	२६½ बव तर	९½ वतर वयगन
	रेव. १,२,३,४	२५ बभ	२४½ बभ त	११½ तगब भन	१४ गबन तर	१७ वन तर	२६ ब तर	२५½ बर वत	२४½ रब वत	२६½ रब वत	२५½ भ त	२७ भ	१४ भन ग	१३ बभ गन	२३½ बभ त	२३½ बभ त	२५½ बर वत	२६½ बर वत	१९½ बयर वतग

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष । त=[illegible] र=राशीश दोष। ग=गणदोष। भ=भ कूट दोष। न=नाडी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग ४)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशा. १,२,३	विशा ४	अनु. १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उषा. २,३,४	श्रव. १,२,३,४	धनि. १,२	धनि. ३,४	शत. १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेव. १,२,३,४
तुला	चित्रा ३,४	२८ न	२७ गय	३४½ त	२३½ भव त	६½ य गवत नभ	२०½ भव तय	२७ तय र	१४ गभ तर	२२ गत र	२५ गत व	२६½ गव	२३½ नव य	१८ नभ य	२६ भय	१८½ गभ तय	१२½ गभव तयर	३½ वत यग भनर	१२ यर गभ वत
	स्वाती १,२,३,४	२८ यग	२८ न	२० नय ग	९ भवय नग	२१½ भव त	१६½ भव तग	२३ तर ग	२७ तर ग	१९ तन र	२२ नव त	२३ नव त	२६½ वय ग	२१ यग भ	२० गय भ	२५ यभ	१९ वभ यर	१९½ वत भर	१२½ वत भनर
	विशा. १,२,३	३४½ त	१९ गन य	२८ न	१७ भव न	१६ गव भय	२०½ भव तय	२७ तय र	२२ गत र	१४ गन तर	१७ गन वत	१७ गन वत	३० वत य	२४½ भत य	२६ भय	२० गभ य	१४ गभ वयर	१३ गय भतर	४½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. ४	२२½ बव भत	७ बवग नभय	१६ बव नभ	२८ न	२७ गय	३१½ तय	२१½ बव तयभ	१६½ बव गभत	८½ बवग नभत	१२ गबन तर	१२ बन गतर	२५ बत यर	२४ बव तयर	२५½ बव यर	१९½ बव गयर	१९ गभ य	१८ गय भ	९½ गभ नतय
	अनु. १,२,३,४	६½ बवत भयगन	२१½ बव भत	१६ बव भयग	२८ यग	२८ न	३१ ग	१५½ बवत गयभ	१३½ तबव नभ	२१½ बव तभ	२५ बत र	२६ बत र	१२ तयब नरग	११ तयब वनरग	२१ बव तरग	२४½ बव यर	२४ भय	१८ नभ	२७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१९½ बव तभय	१५½ तबव गभ	१९½ बव भतय	३१½ तय	३० ग	२८ न	१४ बव नभय	१६½ बव तगभ	१६½ बव तगभ	२० गब तर	२० गब तर	२५ बत यर	२४ बव तयर	१८ बव नरत	१० तबव यगनर	९½ गभ तनय	२१ गभ	२१ गभ
धनु	मूल १,२,३,४	२६ तब यर	२१ गब तर	२६ तब यर	२२½ भव तय	१५½ गव भयत	१५ यव नभ	२८ न	२८ ग	२६½ गत	१५ गब भवत	१५ गब भवत	२० बभव तय	२८½ बव य	२१½ ब नत	१४½ गन बतय	१६ गन वतय	२५ गव त	२६ गव
	पू.षा. १,२,३,४	१३ गब तनर	२७ बत र	२१ गब तर	१७½ गव भत	१५½ भव नत	१७½ गव भत	२८ ग	२८ न	३४	२२½ बभ व	२३ बभ वत	६ गबव भनतय	१४½ गब तनय	२३½ गब त	२८½ बत य	३० वत य	२३ नव त	३१ वत
	उ.षा. १	२१ गब तर	१९ नब तर	१३ गव नतर	९½ गव भनत	२३½ भव त	१७½ गव भत	२६½ गत	३४	२८ न	१६½ बभ वन	१४½ बभ वन	१५ गबव भत	२३½ गब त	२३½ गब त	२९½ ब त	३१ वत	३१ वत	२३ नव त
मकर	उ.षा. २,३,४	२४ गब त	२२ नब वत	१६ गब नत	१३ गन तर	२७ तर	२१ गत र	१६ गभ वत	२३½ भव	१७½ नभ व	२८ न	२६ न	२६½ गत	१७ गब भवत	१७ गबव भत	२३ बभ वत	३०½ त	३० त	२२½ नत
	श्रव. १,२,३,४	२६½ बव ग	२२ नब वत	१७ नब गवत	१४ नत र	२७ तर	२२ तर	१७ भव तग	२३ भव त	१४½ नभ व	२५ न	२८ न	२८ यग	१८½ बभ वयग	१८ बभव तग	२१ बभ वतय	२८½ तय	२९½ त	२२½ नत
	धनि. १,२	२२½ नब वय	२४½ गब वय	२९ बव तय	२६ तय र	१२ गन तयर	२६ तय र	२१ भव तय	७ गभय वनत	१६ गभ वत	२६½ गत	२७ गय	२८ न	१८½ बभ नव	२३½ बभ वय	१९ गब वतभ	२६½ गत	१५½ गन तय	२२½ गय त
कुम्भ	धनि. ३,४	१८ नभ य	२० गभ य	२४½ भत य	२५ तव यर	११ गवय तनर	२५ तव यर	२९½ तय	१५½ गत नय	२४½ तग	१८ गभ वत	१८½ गभ वय	१९½ भव न	२८ न	३३ य	२८½ गत	१८ गभ वत	७ तगभ वनय	१४ गयव भत
	शत. १,२,३,४	२६ भय	१९ भय ग	२६ भय	२६½ यव र	२१ गव तर	१९ नव तर	२२½ नत	२४½ गत	२४½ गत	१८ गभ वत	१८ गभ वत	२४½ भव य	३३ य	२८ न	१९ गन य	८½ गभ वनय	१७ गभ वत	१६ गभ वत
	पू.भा. १,२,३	१८½ गभ तय	२६ भय	२० गभ य	२०½ गव यर	२६½ वय र	११ गवत यनर	१५½ नग तय	२९½ तय	३०½ त	२४ भव त	२३ भव तय	२० भग वत	२८½ गत	१९ नग य	२८ न	१७½ न भव	२२½ भव य	२० भय वत
मीन	पू.भा. ४	११½ गबव भतयर	१९ बभ वयर	१३ गबव भयर	१९ गभ य	२५ भय	९½ गभ नतय	१५ गब तनय	२९ वव तय	३० बव त	२९½ बत	२८½ बत य	२५½ गब त	१७ गब भत	७½ गबय भतन	१६½ बभ तन	२८ न	३३ य	३० यत
	उ.भा. १,२,३,४	२½ यवबर गभनत	१९½ भवब तर	१२ गवर भयव	१८ गय भ	१९ नभ	२१ गभ	२४ गव वत	२२ नव वत	३० व वत	२९½ बत	२९½ बत	१४½ गब तनय	६ गबव नभतय	१६ गबव भत	२१½ बभ तय	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२½ बभव तयर	११½ बभत वनर	४½ बभवन तगयर	१०½ नभ तयग	२७ भ	२२ भग	२६ बग व	२९ वव त	२१ नव वत	२०½ नब त	२१½ नब त	२२½ बय तग	१४ बवय भतग	१६ बभ वतग	१८ बय भवत	२९½ यत	३४	२८ न

(ब=वर्णदोष। व=वश्यदोष। त=तारादोष। य=योनिदोष। र=गणीश दोष। [illegible] दोष। न=नाडी दोष।)

लग्न-गण्डान्त-कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और ... गण्डान्त होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासा : आचार्य चूड़ामणी-''माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या-संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र-पौष-विवर्जिताः ॥'' वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥ २ ॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः-सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न का दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः-जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो-एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग-अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः-ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय-दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें अर्थात् पहले कर लें और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करें मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करें । वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर लें । वहाँ छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच-साहे चिट्ठी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ ॥ मास कुल वालों के मरण से २२ ॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं । उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं । यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा - ऐसा कहना । इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं) शुद्धि प्रथम देखें। ''झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ (बृहस्पतिः) ॥ अत्यावश्यकता में '' द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽष्टम-स्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्य : चन्द्राद्दष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत् ॥

तुलाराशी अपूज्यः रविः-धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-अनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्य रवि परिहारः-गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावह ॥ (मु०प्र०सा०)।

विवाहाद त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१० ।६ ।३ ।१
श्रेष्ठगुरु :—९ ।५ ।११ ।२ ।७
नेष्टगुरु—४ ।८ ।१२
श्रेष्ठरविः—३ ।६ ।१० ।११
पूज्यरविः—२ ।५ ।९
विशेष पूज्य रविः—१ ।७
नेष्टरविः-४ ।८ ।१२
नेष्टचन्द्रः—४ ।८
श्रेष्ठचन्द्रः-१ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ ।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल्य सं.	७	१०	५	१	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि -रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त- वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३। ६। ९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है । इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुए हैं । इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं । उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा-सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वाँ हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जाने।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे	वि. नक्ष.	हर्षणवैधति साध्य
आर्द्रा	मृ	अ	कृ.	भ	कृ.	अ.	रो.	भ.	भ.	अ	सर्वापीड़ित नक्षत्र	व्यतिपात, गंड
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र.	आ.	ज्ये.	पुन.	श.	ज्ये		और शूल योगों का
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध.	उषा.	ध	श.	वि.	ध.		अन्त जिस नक्षत्र
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभ.	पुष्य.	पूभा.	श्ले.	वि.	उफा.	म.		में हो वह पात से
चि	म	ह	उ.भा.	स्वा.	ह.	पूषा.	मू.	ऽनु	पूफा.	पूफा		दूषित होता है। इन
मू.	ह	रे	पूभा.	म.	रे	पूफा.	उभा.	उषा.	मू.	स्वा.		नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३)युति :-जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू.मं.शु.श.रा.के. की युति दारिद्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोष चक्रम्

रो.	भ.	पु.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	पू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि	उषा	श्रवण	कृ.	उभा.	वि.	ज्ये.	पुन.	मृग.	पू.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ	म.	उ. फा	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	उ. षा.	उ. भा.	रे	वि. न.
अनु	ज्ये	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है। याने १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय हैं।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५ वे नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे.	वृ.	मि	कर्क	कन्या	तुला
सिंह.	म.	ध.	वृश्चि.	मी.	कुं

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(६) बाणज्ञान चक्रम्

बाण नाम	गतांशाःप्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृप सेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतःये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।-कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि-लता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बागर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरा प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथियो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहार-चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युति परिहार-स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ **अत्यावश्यके वेधपरिहारः**-पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैनेव कृत्स्नतः (नारद)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरण मात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥

अस्यापवादः-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। एकार्गलोपग्रह पात लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ने लग्ने यथार्कोऽभ्युदये तु दोषा॥ मु.चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न -शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	च. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				गोधूलौ त्याज्याः

लग्न भंग-योगा-व्यये शनि: खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता: । लग्नद् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादिवृद्धिद: ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद: ॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग: । बादरायण- मासशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादय: । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्तरी दोष:-लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च सा... सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्यो: । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्ति: ॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या । केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:-पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न ।।

दोषापवादा: ज्योतिर्निबन्धे-दोषाश्च बहव सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणै: सह ।। अपवादान्तरम्-उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु: । केन्द्र संस्थ: सितो वापि पन्नगानारुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग:शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्था: पक्षतिथ्यृक्षसम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य: सहस्रं लक्षमंगिरा: ॥ स्मरण रहे, कि- पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१।४। १०)ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११		लग्नं शुभं विवाहे स्याद् दशविंशोपकाधिकंम्
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार-लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग, माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं को धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा.आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्या दोषा:-कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिकं त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम् । अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के । अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने केपीछे । क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त :- कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च :- सूर्यभात् ४ । ११ । १८ । २५ संख्यकसाभिजिद्‌भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु: । अत्र तिथि- मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय: ।

वधू प्रवेश का मूहूर्त- जब वधू विवाह हाने पर पति केघर पहले आती है वह वधू प्रवेश कह ाजाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५,७,९वे दिन,इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एकवर्ष के भीतर विषम मास में एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५वेंवर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है ।५वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचागशुद्धि चन्द्रवल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्राति - तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे, अश्वि रो, मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३ , पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च बु. वृ. शु. श. इन वारों में १ । २ । ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । १० । ११। १२ । १३ । १५ तिथियों में ५ । ८ । ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

वधू-प्रवेश-समय- वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त: ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यान्त्रिविध: प्रवेश: ॥

विवाहत: प्रथम वर्षे वधू-निवास फलम् - विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को क्षय मास में अपने शरीर को ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त्त- प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवे वर्ष वृश्चिक कुंभ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह., अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रो., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., मृ., रे., चि., अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेषः— द्विरागमं षोडषवासरान्त एकादशाहे समवासरेषु । न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वार शुद्ध्यादि विचारणीयम्।

शुक्र के सम्मुख व दक्षिण में निषेध—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह-राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

विशेषः— सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ **अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः**— राजते वाथ सौवर्णे कांस्य पात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांवरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्री संगम मुहूर्त्त— रजोदर्शनानंतर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि., अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता - अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें। **मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य**—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें, और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक-दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंस आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नव वधु द्वारा पाक कर्म मुहूर्त्त— द्विरागमनोत्तरं मृ., उत्तरा.३, पुष्य, कृ., ज्ये.,श्रव., ध., श., रो., वि., रे., एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते) , रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८। ११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त — ह., चि., स्वा., अनु., धनि., रे., अश्वि., एषु भेषु, बु., गु., शु. वारेषु रिक्तामावस्या रहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्॥

चूड़ीचक्र में विशेष— सूर्य नक्षत्र से गणना ८ अशुभ। ३ शुभ । ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ । २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्र धारणे विशेषः— विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त—ह., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध.,श.,उत्तरा. ३, रो. एषु नक्षत्रेषुरिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्॥

दुकान खोलने का मुहूर्त्त — ह., चि., रो., रे., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४ । ९। १४ । ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २ । १० । ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८ । १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृ गृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त— पूर्वा., ३, भ., मू., म., ज्ये., आ., आश्ले., एतद्भिन्नेषु,चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त— भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र — सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक, नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त— अ.,मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र.,बु., बृ., शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १० । ११ सूर्ये -भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनिमैत्रायां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त- अश्वि., रो., मू., पुन.,पु., उत्तरा. 3, ह., चि., अनु.,श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ. श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्ट रहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त— पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्र., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४ ।७। १० लग्नेषु ९।८।५ शुद्धिरहिते द्रव्य प्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः॥

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल — मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, श्ले., उ. ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त— पुष्य, पू.भा., अनु., श्र., ह., म., स्वा., उत्तरा. ३, आश्ले., रे. एषु भेषु, सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्र., चि., वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है ।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू.फा., पू.षा., पू.भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोट — बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त — ४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अ., श्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	**नक्षत्र**	**फलम्**
मस्तके	७	**धनलाभः**
पृष्ठे	७	**हानिःनैस्वम्**
हृदये	७	**सुखलाभः**
पादे	७	**पर्यटनम्**

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई को परस्पर गुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना । गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही । ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है । अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है ।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें । शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा-एक हाथ लम्बा-एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है ।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखनें लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन-आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धननाश हो और जो अस्थि, राख,बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि-पीड़ा हो ।

गृहारम्भमुहूर्त्त — वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में ,रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में, पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना ।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष— पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ.फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है ।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्— "संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। १०/२१/२४ में षड्दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताघटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः"। **अन्यच्च** - सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग,वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता ।

गृहमध्य में कूपविचार

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्हिचक्र-विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद । ४ मस्तक के मृत्युप्रद । ८ बाहू के सुन्दर-सुख-भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक । २ चरण के नाशक । यह चुल्हिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभना:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग.) कार्तिक मासयो: ॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तारहित तिथियों में । चं., बृ., श. इन वारों में। २।५।८।११ लग्नों में, **अत्यावश्यके** ३। ६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६। ११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा, ८ वाँ स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र- तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण-पुष्पमाला युक्त कलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पत्ति का गृह प्रवेश शुभ है ।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त— पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै., श्रा., का., मार्गशीर्ष और फा. मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है ।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भाग: शुभदो भवेत्

राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य:	मी.,मेष, वृष	मि., क., सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य:	सिं.,क., तु.	वृश्चि.,ध., मकर	कुम्भ,मीन, मेष	वृष,मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्य:	म.,कुं., मी.	मे.,वृष, मिथुन	कर्क,सिंह, कन्या	तुला,वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति:
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा.	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश:
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त — अनु., ह., उत्तरा.३, रो., ध., श., म., पू.षा., रे., पुष्य, मृ. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है । यदि २।१०।४।११। १२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने.३ सुजल	ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल	वायव्य २ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रम:- मध्य-पूर्व -आग्नेय -दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्- अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। **तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानि:**। गणनाक्रम:—पूर्व, आग्नेय ,द.,नै.,प., वा., उ., ई. मध्य वारिवाह:।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ.,भ., कृ. मध्यजलम्	पूर्व पुन., पु., श्ले. जलाभाव:	आग्नेय म.,पू. फा.,उ. षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा.,उ.भा.,रे. मिष्ठजलम्	मध्य रो.,मृ.,आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह., चि.,स्वा. जलाभाव:
वायव्य श्र.,ध., श. क्षारजलम्	पश्चिम मू.,पू.षा.,उ षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि.,अनु.,ज्ये. बहुजलम्

जलाशयरामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥ मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा:। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥ अश्वि.,रो.,मृ.,पुष्य, ह., चि.,स्वा., अनु.,श्र., ध., श., उत्तरा. ३, रे. एषु भेषु कुजशनि-वर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११। १२।१३ तिथिषु शुक्ले १।२।३।५तिथिषु कृष्णे,गुरुशुक्रयो:नीचनिर्बलास्तादिरहित-काले, कर्तु: सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०॥९।५।२।११ स्थानेषु शुभै:, ६।११ सेन्दुभि: पापै: पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता-विशेषेण लग्नम्— सिंहे सूर्य: शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्य: स्त्रियां हरि:। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्य: स्थिरेऽखिला: ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तम: ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्त्त— श्र., ध., मृ., मू., अनु., रे., ह., चि., स्वा., उत्तरा. ३., पुन.,

वास्तुशान्तिमुहूर्त — श्र., ध., मृ., मू., अनु. [illegible]
पु., रो., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है— जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाय, (0 -शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए ।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रेव्रते ऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सराल ये अग्निचक्रम-वलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

पापग्रहमुखे-हवने कृते शान्तिः— क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्र मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी -धनी विचार— स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥ (अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर 8 का भाग देना। जिसका - शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है - यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त—मृ., रे., चि., अनु., रो., उत्तरा. ३, ह., अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., म., वि., एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्

सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें

३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फल

बीजवपने राहुचक्रम्

राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्तः— ह., अश्वि., पुष्य, उत्तरा. ३, चि., अनु., मृ., रे., स्वा., ध., म., मू., एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः— रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न-भक्षण-मुहूर्त्त —मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श. एवं विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा- रिक्ता तिथियों और पौष-चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त्त— अश्वि., पुन., पु., ह., वि., ज्ये., धनि., शत., रे. नक्षत्र में गौ लेना-बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. ३, ह., अनु., ज्ये., मू., धनि., रे. में लेना-बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक। फिर दो-दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्राथकर्म	सुख	
शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	फल

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त—मृ., रे., चि., अनु., उत्तरा. ३, रो., ह., पुष्य, अश्वि., श., मू., वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः**— तृण-काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ-मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषध का मुहूर्त्त— ह., अ., पुष्य, अभि., मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., श. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम-शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्त्तः

ह., म., श्र., अश्वि., पुष्य, पु., धनि., अनु., रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३ एषु भेषु मध्या; भ., कृ., आर्द्रा, आश्ले., म., चि., स्वा., वि., ज्ये. एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिका गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।२	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।६।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म. भ.

यात्रा में शुभाशुभ लग्न — जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है जब १।४।५।७।९ ।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। **अन्यच्च** -यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश-दशेश अस्त हों व मारक दशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरुशक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानायचक्रम् / नक्षत्रशूलचक्रम्

पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा.	पू.	द.	प.	उ.
चं.,श	चं.,बृ	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श	वार	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोषः ॥ १॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनवरि शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥ २॥

यात्रा में काल ज्ञान

शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ सम्मुखे
पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे नेष्टः

योगिनीवासचक्रम्

पू.	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चिम	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा
१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रा में बाँये ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। **समयशूल**-उषाकाल में पूर्व को,गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। **गर्ग-गुरु-अङ्गिरामत** - गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहें तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाये। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर, यात्रा करने से शुभ होता है। पंच-पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयःअष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयोभवेत्॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके- तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चद्रवासचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्— सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति॥ सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा-भगणदोषं, वार-संक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं, राहुकेत्वादिदोषं, हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग— शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़ कर तीन जगह रखें,क्रमशः ७।८।३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी, जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त्त- शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक

कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु-घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रक्खें। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्		रात्री चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शु., च., का., उ., अ., रो., ला.
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अ., रो., ला., शु., च., का., उ.
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	च., का., उ., अ., रो., ला., शु.
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रो., ला., शु., च., का., उ., अ.
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	का., उ., अ., रो., ला., शु., च.
शुभ, चर, काले, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	ला., शु., च., का., उ., अ., रो.
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उ., अ., रो., ला., शु., च., का.
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काले	३०	शु., च., का., उ., अ., रो., ला.

सूचना— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे ।

यात्रायां शुभशकुनानि— मृग बांये ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल ॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मल, वस्त्र, वाद्य , वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्त घट यात्रा के समय देखने में शुभ है । **अशुभ शकुनानि**- वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार, युद्ध, कुटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है ।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना । अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है ।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त्त:— चि., ह., पु., मृ., पूर्वा. ३, अनु., श्र., ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्त:— मृ., रे., अनु., रो., उत्तरा.३, ह.,अ., पुष्य, स्वा., श्र., ध. एषु भेषु चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।९। ११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभ; वि., कृ., पूर्वा. ३, भ., म., मू., ज्ये., आर्द्रा, आश्ले, नक्षत्राणि; ४।९।१४।६ १२।८।३० तिथयः ।सू., मं. वारौ, १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि ।मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :- प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् । नवमे जातु नो कुर्यादिने वारे विथाविति ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ	घात चन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	घात वार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्लेषा.	घात नक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्री चन्द्र घात
का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रावण	भाद्र.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्रीः	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है । "घाततिथिर्घा-वारघातनक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरवन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम -दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है । जो फल पल्लीपात का कहा है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने । सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है ।

अथाङ्गविभाग में पल्ली- (छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयः	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शनं	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि— यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं., बु., गु., शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु., अश्वि., रो., मू., पुन., उ.फा., ह., चि., स्वा., ध., रे., अनु., श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। **अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः ॥**

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म विधानम्— पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा-तिथि,भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है । उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है ।

छिक्का फलम्— छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है । **मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठि की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै;छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥ २॥ ऊंची छींक कहे जयकारी;नीची छींक होय भयकारी । अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥**

॥ कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का :— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने । वामांगे पृष्ठतश्चैव पट् छिक्कास्तु शुभावहाः । एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचारः — मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः, वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०६० वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, ५९/६ (अभिजित्), पंचकूला-१३४१०९

-: समय शुद्धि :-

शुक्र अस्त :- इसवर्ष शुक्र श्रावणकृष्ण १२, श. (२६ जुलाई '०३) से आश्वि. शुक्ल १०, र. (५ अक्तू. '०३) तक अस्त रहेगा।

गुरु अस्त :- इसवर्ष गुरु श्राव. शु. १०, गु. (७ अग. '०३) से भाद्र. शु. ५ चं. (१ सितं. '०३) तक अस्त रहेगा।

गुरु, शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्त से ३ दिन पूर्व वार्धक्यदोष के कारण तथा उदय होने के तीन दिन बाद भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

सिंहस्थगुरु- सिंहस्थगुरु का पूराकाल शुभकृत्यों में वर्जित नहीं हैं, अपितु वही काल वर्जित है जिसमें गुरु सिंहनवांश में (अर्थात् पू. फा. के प्रथम चरण में स्थित हो। इसी शास्त्रनिर्णयानुसार हमने विवाहादि सभी मुहूर्त्तों में सिंहस्थगुरु का वही काल वर्जित किया है जिसमें वह पू. फा. के १ म चरण में स्थित है। (विशेष स्पष्टीकरण के लिए देखें पृ.54)। इसवर्ष सिंहस्थ गुरु का पू.फा. के प्रथम चरण में संचार काल आश्विन. शु. ५ मं. (३० सितम्बर '०३ ई.) से कार्त्ति. कृ. ७ शु. (१७ अक्तू. '०३ ई.) तक रहेगा। इस अवधि में विवाहादि कोई भी शुभ कृत्य नहीं होगा।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त - सन् २००३ ई.

अक्षांश →	+१०°	+२०°	+३०°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	२६ जुलाई '०३	२६ जुलाई '०३	२६ जुलाई '०३	२५ जुलाई '०३
शुक्र पश्चिम में उदित	१६ सितम्बर '०३	२७ सितम्बर '०३	६ अक्तूबर '०३	११ अक्तूबर '०३
गुरु अस्त	११ अगस्त '०३	८ अगस्त '०३	७ अगस्त '०३	६ अगस्त '०३
गुरु उदय	३ सितम्बर '०३	३ सितम्बर '०३	२ सितम्बर '०३	२ सितम्बर '०३

ध्यान रहे - यहां नीचे दिए गए विवाहादि मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्त्तों का विचार करते समय स्थानीय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में गुरु-शुक्र के उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है।

मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया, (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्ति का सूक्ष्मकाल पृष्ठ 48 पर दिया गया है - वहां देखें।

यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ, चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रसानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान दें - यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं। जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६० वि.)

मास-तिथि-वार			प्रविष्टा	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
चैत्र शु.	१५	बु.	वैशा. ३	अप्रै. १६	चित्रा	तुला	मेष	कर्क	। ऽ । ऽ शु. । ऽअ.।ऽ ।।	ल. ११ (रा. दा.), शुक्र पादवेध नहीं है, गोधू. में शुक्र पादवेध,
वैशा. कृ.	१	गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	स्वा.	तुला	मेष	कर्क	।। ।। ऽसू.। ऽऽ ।।	ल. ११ (२७/२६ तक) (रा. दा.) (अत्यावश्यकता में),
वैशा. कृ.	४	र.	वैशा. ७	अप्रै. २०	मूल	धनु	मेष	कर्क	।। ।। ऽश्र. ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. १२,
वैशा. कृ.	५	चं.	वैशा. ८	अप्रै.२१	मूल	धनु	मेष	कर्क	।। ।। ऽश्र.। ऽऽ ।ऽ	ल. गोधू.,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६० वि.)

मास	तिथि	वार	प्रविष्ट	तारीख	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
वैशा. कृ.	७	बु.	वैशा. १०	अप्रै.२३	श्रव.	मकर	मेष	कर्क	ऽशु.। ।। ऽगु.। ऽऽ ।।	ल. १२,
वैशा. शु.	३	र.	वैशा. २१	मई ४	मृग.	वृष	मेष	कर्क	।। ऽश.।। ऽअ. ।। ।।	ल. १२,
वैशा. शु.	१०	र.	वैशा. २८	मई ११	उ.फा.	सिंह	मेष	कर्क	ऽश. ऽ। ।। ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ११ (चं. रा. दा.) (अत्यावश्यकता में),
वैशा. शु.	११	चं.	वैशा. २९	मई १२	उ.फा.	कन्या	मेष	कर्क	ऽश. ऽ। ।। ।। ऽ। ।	दि. ल. ५ (१२/३० तक),
वैशा. शु.	११	चं.	वैशा. २९	मई १२	हस्त	कन्या	मेष	कर्क	ऽसू.गु. ऽ ।। ।। ।। ।।	ल. १२ (चं. दा.),
ज्ये. कृ.	३	र.	ज्ये. ४	मई १८	मूल	धनु	वृष	कर्क	।। ।। ऽश. ऽअ. ऽ। ।।	दि.ल. ५ (१२/३२ तक), रा.ल. १२, १ (मं. दा.),
ज्ये. कृ.	११	चं.	ज्ये. १२	मई २६	रेव.	मीन	वृष	कर्क	।। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., १ (मं. दा.), (कुम्भलग्न निर्बल है।),
ज्ये. कृ.	१२	मं.	ज्ये. १३	मई २७	अश्वि.	मेष	वृष	कर्क	।। ।। ।। ।। ।।	ल. १२ (२६/२१ तक),
ज्ये. शु.	६	शु.	ज्ये. २३	जून ६	मघा	सिंह	वृष	कर्क	।। ।। ऽमं.। ऽऽ ।।	ल. गोधू., १,
ज्ये. शु.	८	र.	ज्ये. २५	जून ८	उ.फा.	कन्या	वृष	कर्क	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. गोधू., १२ (चं. शु. दा.),
ज्ये. शु.	११	बु.	ज्ये. २८	जून ११	स्वा.	तुला	वृष	कर्क	।। ।। ।ऽरो. ऽ। ।।	दि.ल. ६, गोधू.,
आषा. कृ.	३	मं.	आषा. ३	जून १७	श्रव.	मकर	मिथुन	कर्क	।। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., (कन्यालग्न में मृत्युबाण),
आषा. कृ.	७	श.	आषा. ७	जून २१	उ.भा.	मीन	मिथुन	कर्क	ऽमं.। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।ऽ	ल. गोधू., १,
आषा. कृ.	८	र.	आषा. ८	जून २२	उ.भा.	मीन	मिथुन	कर्क	ऽमं.। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।ऽ	दि. ल. ६ (चं. दा.) ,
आषा. कृ.	८	र.	आषा. ८	जून २२	रेव.	मीन	मिथुन	कर्क	ऽशु.। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., १,
आषा. कृ.	९	चं.	आषा. ९	जून २३	रेव.	मीन	मिथुन	कर्क	ऽशु.। ।। ।। ऽऽ ।।	दि. ल. ६ (चं. दा.) ,
आषा. कृ.	९	चं.	आषा. ९	जून २३	अश्वि.	मेष	मिथुन	कर्क	ऽशु. ।। ।। ऽरो. ।ऽ ।।	ल. १२ (शु. दा.) (२४/२६ तक),
आषा. कृ.	१०	मं.	आषा. १०	जून २४	अश्वि.	मेष	मिथुन	कर्क	ऽशु. ।। ।। ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
आषा. शु.	४	गु.	आषा. १९	जुला. ३	मघा	सिंह	मिथुन	कर्क	।। ।। ।ऽरो. ऽऽ ।।	ल. १ (शु. दा.) (२४/४७ बाद),
आषा. शु.	५	शु.	आषा. २०	जुला. ४	मघा	सिंह	मिथुन	कर्क	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि. ल. ६, ७ (१३/३२ तक),
आषा. शु.	८	चं.	आषा. २३	जुला. ७	चित्रा	कन्या/ तुला	मिथुन	कर्क	ऽगु. ।। ।। ऽअ. ।। ।ऽ	दि. ल. ७, गोधू., १२(चं. दा.) (२३/५४ तक), १ (चं. शु. दा.),
आषा. शु.	११	गु.	आषा. २६	जुला.१०	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	कर्क	।। ।। ऽरा. ।ऽ ।। ।	दि. ल. ६ (११/३६ बाद), ७, गोधू.(२०/३५ से २७/१४ तक क्रान्तिसाम्य),
श्राव. कृ.	१	चं.	आषा. ३०	जुला. १४	उ. षा.	मकर	मिथुन	कर्क	।ऽ ।। ऽसू. । ऽऽ ।।	दि. ल. ६ (११/१८ बाद) , ७, गोधू.,
श्राव. कृ.	१	चं.	आषा. ३०	जुला. १४	श्रव.	मकर	मिथुन	कर्क	।। ।। ऽबु. ।ऽ ।। ।	ल. १२ (२२/४६ से २३/५१ तक), (२३/५१ बाद मृत्युबाण),
श्राव. कृ.	६	श.	श्राव. ४	जुला. १९	उ. भा.	मीन	कर्क	कर्क	ऽमं. ।। ।। ऽअ. ऽ ।। ऽ	दि. ल. ६ (चं. दा.), गोधू.,
श्राव. कृ.	७	र.	श्राव. ५	जुला. २०	रेव.	मीन	कर्क	कर्क	ऽचं. । ।। ।। ऽऽ ।।	दि. ल. ६ (चं. दा.) (१०/२४ बाद), गोधू., १ (शु. दा.),

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०६० वि.)

मास - तिथि - वार			प्रविष्टा	तारीख	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
श्राव. कृ.	८	चं.	श्राव. ६	जुला. २१	अश्वि.	मेष	कर्क	कर्क	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ७ (चं. दा.), गोधू., १२,
कार्त्ति.कृ.	१०	मं.	कार्त्ति. ५	अक्तू. २१	मघा	सिंह	तुला	सिंह	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. ८, गोधू.,
कार्त्ति.शु.	५	बु.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	मूल	धनु	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	दि. ल. ८, गोधू.,
कार्त्ति.शु.	६	गु.	कार्त्ति. १४	अक्तू. ३०	उ. षा.	धनु	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	ल. ६ (शु. दा.) (अत्यावश्यकता में),
कार्त्ति.शु.	७	शु.	कार्त्ति. १५	अक्तू. ३१	उ. षा.	धनु/मकर	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	दि. ल. ८, गोधू.,
कार्त्ति.शु.	८	श.	कार्त्ति. १६	नवं. १	धनि.	मकर	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. ६ (शु. दा.) (अत्यावश्यकता में),
कार्त्ति.शु.	९	र.	कार्त्ति.१७	नवं. २	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि. ल. ८, गोधू.,
कार्त्ति. शु.	११	मं.	कार्त्ति. १९	नवं. २	उ. भा.	मीन	तुला	सिंह	ऽ सू.मं.। ।। ।। ऽ। ।।	ल. ६ (चं. शु. दा.) (२६/१० बाद) (अत्यावश्यकता में),
कार्त्ति. शु.	१२	बु.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	उ. भा.	मीन	तुला	सिंह	ऽ सू.मं.। ।। ।। ऽ। ।।	दि. ल. ८, गोधू., (कन्यालग्न में मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु.	१३	गु.	कार्त्ति. २१	नवं. ६	रेव.	मीन	तुला	सिंह	ऽ सू. ।। ।। ऽअ. ऽ। ।।	ल. ६ (अत्यावश्यकता में), (वृश्चिक और गोधू. में मृत्युबाण),
मार्ग. कृ.	३	बु.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	मृग.	मिथुन	तुला	सिंह	।। ।। ऽशु.। ।। ।।	ल. गोधू.,
मार्ग. कृ.	८	चं.	मार्ग. २	नवं. १७	मघा	सिंह	वृश्चिक	सिंह	ऽ रा.। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. गोधू., (कन्यालग्न में मृत्युबाण),
मार्ग. कृ.	११	गु.	मार्ग. ५	नवं. २०	हस्त	कन्या	वृश्चिक	सिंह	ऽश.। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. गोधू.,
मार्ग. शु.	२	मं.	मार्ग. १०	नवं. २५	मूल	धनु	वृश्चिक	सिंह	।। ऽशु.। ।। ऽऽ ।।	ल. ६,
मार्ग. शु.	४	गु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ. षा.	मकर	वृश्चिक	सिंह	।ऽ ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. ६, (गोधू. में मृत्युबाण),
मार्ग. शु.	५	शु.	मार्ग. १३	नवं. २८	श्रव.	मकर	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. गोधू., ६ (२५/५१ तक), (२५/५१ बाद क्रान्तिसाम्य),
मार्ग. शु.	९	मं.	मार्ग. १७	दिसं. २	उ. भा.	मीन	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. गोधू., ६ (चं. दा.),
पौष कृ.	१	मं.	मार्ग. २४	दिसं. ९	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	सिंह	।। ।। । ऽनृ. ऽ। ।।	दि. ल. ११ (गु. दा.) (अत्यावश्यकता में), गोधू.(१७/२५ बाद),
माघ कृ.	८	गु.	माघ २	जन. १५	चित्रा	तुला	मकर	सिंह	।। ।। ऽमं. ।। ऽ ।।	ल. गोधू.,
माघ शु.	१	गु.	माघ ९	जन. २२	श्रव.	मकर	मकर	सिंह	।। ।। । ऽरो. ऽ। ।।	ल. ८ (२८/०५ तक),
माघ शु.	५	चं.	माघ १३	जन. २६	उ. भा.	मीन	मकर	सिंह	।। ।। । ऽअ. ऽ। ।।	ल. गोधू.,
माघ शु.	६	मं.	माघ १४	जन. २७	रेव.	मीन	मकर	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ११ (गु. दा.), गोधू.,
माघ शु.	१०	श.	माघ १८	जन. ३१	रोहि.	वृष	मकर	सिंह	।। ।। । ऽरो.। ।। ।	ल. गोधू.,
माघ शु.	११	र.	माघ १९	फर. १	रोहि.	वृष	मकर	सिंह	।। ।। । ऽरो.। ।। ।	दि. ल. ११ (गु. दा.),
माघ शु.	११	र.	माघ १९	फर. १	मृग.	वृष	मकर	सिंह	।। । ऽबु. ।। ऽ ।। ।	ल. गोधू., (बुध का पादवेध नहीं है),
फाल्गु. कृ.	१	श.	माघ २५	फर. ७	मघा	सिंह	मकर	सिंह	ऽरा.। ।। ऽसू. ऽचौ. ऽऽ ।।	दि. ल. २, गोधू.,

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६० वि.)

मास - तिथि - वार			प्रविष्टा	तारीख	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न,ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)
						चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
फाल्गु. कृ.	३	चं.	माघ २७	फर. ६	उ.फा.	कन्या	मकर	सिंह	।। ।। । ऽरो. ऽ। ।।	दि. ल. २ (१३/२३ बाद), गोघू.,
फाल्गु. कृ.	४	मं.	माघ २८	फर. १०	हस्त	कन्या	मकर	सिंह	ऽश्न. ।। ऽशु. ऽशु. ऽरो.।ऽ ।।	दि. ल. २, (शुक्र पादवेध नहीं है।),
फाल्गु. कृ.	११	चं.	फाल्गु. ४	फर. १६	मूल	धनु	कुम्भ	सिंह	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	ल. गोघू.,
फाल्गु. कृ.	१२	मं.	फाल्गु. ५	फर. १७	उ. षा.	धनु	कुम्भ	सिंह	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	ल. गोघू. (१८/१० बाद),
फाल्गु. शु.	२	र.	फाल्गु. १०	फर. २२	उ. भा.	मीन	कुम्भ	सिंह	।ऽ ।। ।। ऽ। ।।	दि. ल. ४ (मं. श. दा.),
फाल्गु. शु.	४	मं.	फाल्गु. १२	फर. २४	अश्वि.	मेष	कुम्भ	सिंह	।। ।ऽगु. ।ऽअ. ऽऽ ।।	दि. ल. ४ (१६/०० बाद) (मं. श. दान), गोघू.(२०/५८ बाद क्रान्तिसाम्य और २१/४२ से २८/१३ तक गुरुपादवेध),
फाल्गु. शु.	५	बु.	फाल्गु. १३	फर. २५	अश्वि.	मेष	कुम्भ	सिंह	।। ।ऽगु. ।। ऽऽ ।।	दि. ल. २, ४(१६/०२ तक) (मं. श. दा.),
चैत्र कृ.	२	चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	हस्त	कन्या	कुम्भ	सिंह	ऽश्न. ऽ। ।। ऽचौ. ।। ।।	दि. ल. २ (१०/४८ बाद), ४ (मं. श. दा.) , गोघू.,
चैत्र कृ.	४	बु.	फाल्गु. २७	मार्च १०	स्वा.	तुला	कुम्भ	सिंह	।। ।। ऽशु. ऽरो.।ऽ ।ऽ	दि. ल. ४ (मं. श. दा.) , गोघू.,

सं. २०६१ में गुरु-शुक्रास्त- सं. २०६१ वि. में लगभग आषाढ़ कृ. २ शुक्रवार (४ जून '०४ ई.) से आषाढ़ कृ. १३ मंगलवार (१५ जून '०४ ई.) तक और माघ शु. ६ गुरुवार (१७ फर. '०५ ई.) से वर्षान्त तक शुक्र अस्त रहेगा। इसवर्ष लगभग भाद्र. कृ. ७ रविवार (५ सितं. '०४ ई.) से आश्वि.कृ. ५ रविवार (३ अक्तू. '०४ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा।

सं. २०६१ वि. में श्रावण अधिकमास होगा, अतः इसमास में विवाहादि शुभकृत्य नहीं होंगे।

लत्ता आदि दस दोष–रेखाएं

शुद्धविवाहलग्न बतलाने वाले ऊपर दिए गए कोष्ठक में "लत्ता आदि दस दोष रेखाएं" शीर्षक वाला एक स्तम्भ दिया रहता है। इसमें जो दस रेखाएं दी जाती हैं, उनका स्पष्टीकरण पाठकों के लिए नीचे दिया जा रहा है - शुद्ध विवाहकाल (लग्न) जानने के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, भद्रा, गुरु-शुक्रास्त, संक्रांति, अधिकमास आदि के विचार के अलावा (१) लत्ता, (२) पात, (३) युति, (४) वेध, (५) यामित्र, (६) बाण, (७) एकार्गल, (८) उपग्रह, (९) क्रान्तिसाम्य, (१०) दग्धातिथि- इन दस दोषों का विचार भी सूर्य आदि ग्रहों के नक्षत्रादि के आधार पर किया जाता है। ये दस रेखाएँ क्रमशः दस दोषों के भाव (अस्तित्व) एवं अभाव को विवाहलग्न के समय दर्शाती हैं। पहली रेखा लत्तादोष का, दूसरी पात का, तीसरी युति का, इसी प्रकार शेष चौथी आदि रेखाएं भी यथाक्रम वेध आदि दोषों का विवाहलग्न के समय भाव या अभाव बतलाती हैं। सीधी (।) रेखा दोष का अभाव और टेढी (ऽ) रेखा दोष का अस्तित्व प्रकट करती है। **जैसे** - इसवर्ष (सं. २०६० वि. में) कार्त्ति. शु. १३ गु. को रेवती वाले शुद्ध विवाहमुहूर्त्त में (पृष्ठ 267 पर) " लत्ता आदि दस दोष रेखाएं " इस प्रकार हैं- ऽसू.।। ।। ऽअ. ऽ ।।। , इस का अभिप्राय है कि इस विवाहमुहूर्त्त (लग्न) में लत्ता आदि दस दोषों में पहले (लता), छठे (बाण) और सातवें (एकार्गल) दोष को छोड़कर शेष कोई दोष नहीं है। **ध्यान रहे** - इन दस दोषों में पात, युति, वेध, बाण, क्रांतिसाम्य, और दग्धातिथि दोषों को अपेक्षाकृत अधिक अमंगलकारी माना गया है। इनमें से 'भुजंग' नामक पात, मृत्युनामक बाण और क्रांतिसाम्य दोषों का कोई परिहार नहीं है। जबकि क्रूरग्रह की युति, सौम्यग्रह के वेध एवं दग्धातिथि का परिहार कई ग्रह स्थितियों में हो जाता है। इनका परिहार हो जाने की स्थिति में विवाहमुहूर्त्त ग्राह्य माना जाता है। लेकिन इन परिहृत दोषों कि टेढ़ी रेखाओं को सीधी रेखाओं में बदलने की परम्परा नहीं है। अर्थात् दोष का परिहार हो जाने पर भी उस दोष की रेखा टेढ़ी ही रखी जाती है।

सं. २०६० वि. में भिन्न-भिन्न राशि

सं. २०६० वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६० वि. में कुल कितने विवाह मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्टक' दे रहे हैं। संवत् २०६० वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचाग में पृ.265पर दिए गए हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं-यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्टक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इसवर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्टक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्टक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इसवर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा'वाले दिन भी इस कोष्टक में दिए गए हैं।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६० वि. में मई (२००३ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है-यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्टक' देखें,-लड़के वाले कालम में मिथुन के आगे मई की केवल ४, ११ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में मेष के आगे मई की ४, ११, १२, १८, २६, २७, तारीखें है। **इसलिए यह समझना चाहिए कि मई में मिथुन राशि वाले लड़के और मेष राशि वाली लड़की का विवाह मई की केवल ४, ११ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि मई की केवल यही तारीखें, दोनों (वर-कन्या) की राशियों (मिथुन-मेष) में एक-सी मिलती हैं।** इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्र निर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है। ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ४, ६, ८, १०, १२वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उसे शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना गया है। **ध्यान दें-लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ४, ६, ८, १०, १२ वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना गया है।**

ध्यान रहे- इसवर्ष गुरु कर्क (स्वोच्च राशि) और सिंह (मित्रराशि) में रहेगा। अतः कन्या के लिए यह किसी भी स्थिति में पूज्य नहीं है। शास्त्रानुसार इसे शुभ ही माना गया है।

त्रिबल-शुद्धि कोष्टक (सं. २०६० वि.) (२ अप्रैल सन् २००३ ई. से २० मार्च सन् २००४ ई. तक)
(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, ११, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १४; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, ४, ५, ६, १२; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ९, १०, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ८, १०;	ज्येष्ठ, कार्तिक,	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, ११, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १४, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, १७, २०, २५, २८, दिसं. २, ९; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ९, १०, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ८, १०;	- -
वृष	मई २६, २७; जून ८, ११, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ७, १०, १४, १६, २०, २१; अक्तू. ३१ (८/३४ बाद); नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, २० २८; दिसं. २, ९; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ९, १०, २२, २४, २५; मार्च ८, १०;	ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,	अप्रै. १६, १७, २३; मई ४, १२, २६, २७; जून ८, ११, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ७, १०, १४, १६, २०, २१; अक्तू. ३१ (८/३४ बाद); नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, २०, २८, दिसं. २, ९ ; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ९, १०, २२, २४, २५; मार्च ८, १०;	- -
मिथुन	अप्रै. १६, १७, २०, २१; मई, ४, ११; जून २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, (२३/५४ बाद), १०, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१(८/३४ तक); नवं. २(१४/०६ बाद), ४, ५, ६, १२, १७, २५; दिसं. २, ९; फर. १६, १७, २२, २४, २५; मार्च १०;	आषाढ़, कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १६, १७, २०, २१, मई, ४, ११, १८, २६, २७; जून ६, ११, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७ (२३/५४ बाद), १०, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१ (८/३४ तक); नवं. २(१४/०६ बाद), ४, ५, ६, १२, १७, २५; दिसं. २, ९ ; जन. १५, २६, २७, ३१; फर. १, ७, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च १०;	- -
कर्क	अप्रै. २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८; जुला. १६, २०, २१; नवं. १७, २०, २५, २८; दिसं.२, ९; जन. २२, २६, २७, ३१; फर.१, ७, ९, १०,	माघ	अप्रै. २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७ (२३/५४ तक), १०, १४, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २(१४/०६ तक), ४, ५, ६, १२, १७, २०, २५, २८; दिसं.२, ९; जन. २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ९, १०, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ८;	- -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६० वि.) (२ अप्रैल सन् २००३ ई. से २० मार्च सन् २००४ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. य. है)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
सिंह	अप्रै.१६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २७, जून ६, ८, ११, १७, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १४; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, १२; जन. १५, २२, ३१; फर. १, ७, ६, १०, १६, १७, २४, २५; मार्च ८ , १०;	आश्विन, फाल्गुन	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २७; जून ६, ८, ११, १७, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १४, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, १२, १७, २०, २५, २८; दिसं. ६; जन. १५, २२, ३१; फर. १, ७, ६, १०, १६, १७, २४, २५; मार्च ८, १०;	- -
कन्या	मई २६; जून ६, ८, ११, १७, २१, २२, २३; जुला. ३, ४, ७, १०, १४, १६, २०; अक्तू. २१, ३१ (८/३४ बाद), नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, १७, २०, २८; दिसं. २, ६; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ६, १०, २२; मार्च ८, १०;	ज्येष्ठ , आश्विन कार्तिक , माघ	अप्रै. १६, १७, २३; मई ४, ११, १२, २६; जून ६, ८, ११, १७,२१, २२, २३; जुला. ३, ४, ७, १०, १४, १६, २०; अक्तू. २१, ३१ (८/३४ बाद); नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, १७, २०, २८; दिसं. २, ६; जन. १५, २०, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ६, १०, २२; मार्च ८, १०;	- -
तुला	अप्रै. १६, १७, २०, २१, मई ११, १२; जून २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १०, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१ (८/३४ तक); नवं. २ (१४/०६ बाद), ४, ५, ६, १२, १७, २०, २५; दिसं. २, ६ (१७/२५ बाद) ; फर. १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ८, १०;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन	अप्रै. १६, १७, २०, २१; मई ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, ११, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १०, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१ (८/३४ तक); नवं. २ (१४/०६ बाद), ४, ५, ६, १२, १७, २०, २५; दिसं. २, ६(१७/२५ बाद); जन. १५, २६, २७; फर. ७, ६, १०, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ८,१०;	- -
वृश्चिक	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, ११; जुला. १६, २०, २१; नवं. १७, २०, २५, २८; दिसं. २, ६(१७/२५ तक) ; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर.१, ७, ६, १० ;	ज्येष्ठ	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, ११, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १०, १४, १६, २० २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २(१४/०६ तक), ४, ५, ६, १७, २० २५, २८; दिसं. २, ६(१७/२५ तक); जन. १५, २२, २६, २७, ३१ ; फर. १, ७, ६, १०, १६, १७, २२, २४, २५ ; मार्च ८,१० ;	- -
धनु	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २७; जून ६, ८, ११, १७, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १०, १४; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, १२; जन. १५, २२, ३१; फर. १, ७, ६, १०, १६, १७, २४, २५; मार्च ८, १०;	आषाढ़ , माघ	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २७; जून ६, ८, ११, १७, २३, २४; जुला. ३, ४, ७, १०, १४, २१; अक्तू. २१, २४, २५, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, १२, १७, २०, २५, २८ दिसं. ६; जन. १५, २२, ३१; फर. १, ७, ६, १०, १६, १७, २४, २५; मार्च ८ , १०;	- -
मकर	मई १८, २६; जून ८, ११, १७, २१, २२, २३; जुला. ७, १०, १४, १६, २०; अक्तू. २६, ३०, ३१; नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, २०, २५, २८; दिसं. २, ६; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर. १, ६, १०, १६, १७, २२; मार्च ८, १०;	ज्येष्ठ , आश्विन माघ ,फाल्गुन	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ४, १२, १८, २६; जून ८, ११, १७, २१, २२, २३; जुला. ७, १०, १४, १६, २०; अक्तू. २६, ३०, ३१; नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, २०, २५, २८ ; दिसं. २, ६; जन. १५, २२, २६, २७, ३१; फर.१, ६, १०, १६, १७, २२; मार्च ८ , १०;	- -
कुम्भ	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ११; जून १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७ (२३/५४ बाद), १०, १४, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, १७, २५, २८; दिसं. २, ६(१७/२५ बाद) ; फर. १६, १७, २२, २४, २५; मार्च १०;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन	अप्रै. १६, १७, २०, २१, २३; मई ११, १८, २६, २७; जून ६, ११, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७ (२३/५४ बाद), १०, १४, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं. १, २, ४, ५, ६, १२, १७, २५, २८; दिसं. २, ६ (१७/२५ बाद); जन.१५, २२, २६, २७; फर. ७, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च १०;	- -
मीन	अप्रै. २०, २१, २३; मई, ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८; जुला. १६, २०, २१; नवं. १७, २०, २५, २८; दिसं. २, ६(१७/२५ तक) ; जन. २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ६, १०;	आश्विन	अप्रै. २०, २१, २३; मई ४, ११, १२, १८, २६, २७; जून ६, ८, १७, २१, २२, २३, २४; जुला. ३, ४, ७ (२३/५४ तक), १०, १४, १६, २०, २१; अक्तू. २१, २६, ३०, ३१; नवं.१, २, ४, ५, ६, १७, २०, २५, २८ ; दिसं. २, ६(१७/२५ तक) ; जन. २२, २६, २७, ३१; फर. १, ७, ६, १०, १६, १७, २२, २५; मार्च ८ ;	- -

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०६० वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्धविवाह मुहूर्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्तसम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि अमुक दिन या अमुक समय में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां लग्नाभावदोष लिखा गया है। *ध्यान रहे-* यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६० वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं,- प्रियव्रत शर्मा।

तिथि-वार	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र शु. ११ र.(१३ अप्रैल '०३ ई.) तक सूर्य मीनस्थ है।			
चैत्र शु. १३ मं.	अप्रै. १५	उ. फा.	लग्नाभाव,
चैत्र शु. १३ मं.	अप्रै. १५	हस्त	मृत्युबाण,
चैत्र शु. १५ बु.	अप्रै. १६	हस्त	भद्रा,
वैशा. कृ. १ गु.	अप्रै. १७	चित्रा	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. २ शु.	अप्रै. १८	अनु.	केतुयति,
वैशा. कृ. ३ श.	अप्रै. १९	अनु.	केतुयति,
वैशा. कृ. ६ मं.	अप्रै. २२	उ.षा.	भौमयुति अपरिहार्य, शनिवेध,
वैशा. कृ. ७ बु.	अप्रै. २३	उ.षा.	भौमयुति , शनिवेध,
वैशा. कृ. ९ गु.	अप्रै. २४	श्रव.	गोधू. में मृत्युबाण,
वैशा. कृ. ९ गु.	अप्रै. २४	धनि.	मृत्युबाण,
वैशा. कृ. ९ शु.	अप्रै. २५	धनि.	मृत्युबाण, लग्नाभाव,
वैशा. कृ. ११ र.	अप्रै. २७	उ.भा.	वैधृति,
वैशा. कृ. १२ चं.	अप्रै. २८	उ.भा.	वैधृति, क्षीणचन्द्र,
वैशा. कृ. १२ चं.	अप्रै. २८	रेव.	क्षीणचन्द्र,
वैशा. शु. २ श.	मई ३	रोहि.	कुम्भ-मीन लग्नों में मृत्युबाण,
वैशा. शु. ३ र.	मई ४	रोहि.	मृत्युबाण,
वैशा. शु. ४ चं.	मई ५	मृग.	लग्नाभाव,
वैशा. शु. ८ शु.	मई ९	मघा	भौमवेध,
वैशा. शु. ९ श.	मई १०	मघा	भौमवेध,
वैशा. शु. १२ मं.	मई १३	हस्त	मृत्युबाण,
वैशा. शु. १२ मं.	मई १३	चित्रा	मृत्युबाण,

तिथि-वार	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वैशा. शु. १३ बु.	मई १४	चित्रा	मासान्त,
वैशा. शु. १३ बु.	मई १४	स्वा.	मासान्त,
वैशा. शु. १४ गु.	मई १५	स्वा.	संक्रान्ति,
वैशा. शु. १५ शु.	मई १६	अनु.	केतुयति,
ज्ये. कृ. २ श.	मई १७	अनु.	केतुयति,
ज्ये. कृ. ४ चं.	मई १९	मूल	नक्षत्रान्त,
ज्ये. कृ. ४ चं.	मई १९	उ.षा.	शनिवेध,
ज्ये. कृ. ५ मं.	मई २०	उ.षा.	शनिवेध,
ज्ये. कृ. ५ मं.	मई २०	श्रव.	भौमयुति,
ज्ये. कृ. ६ बु.	मई २१	श्रव.	भौमयुति,
ज्ये. कृ. ६ बु.	मई २१	धनि.	भद्रा, भौमयुति,
ज्ये. कृ. ७ गु.	मई २२	धनि.	भौमयुति,
ज्ये. कृ. १० र.	मई २५	उ. भा.	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
ज्ये. कृ. ११ चं.	मई २६	उ. भा.	मृत्युबाण,
ज्ये. कृ. १२ मं.	मई २७	रेव.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १ र.	जून १	मृग.	ग्रहणशूल,
ज्ये. शु. ७ श.	जून ७	मघा	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ९ चं.	जून ९	उ. फा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ९ चं.	जून ९	हस्त	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १० मं.	जून १०	हस्त	नक्षत्रान्त,
ज्ये. शु. १० मं.	जून १०	चित्रा	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १० मं.	जून १०	स्वा.	भद्रा,

तिथि-वार	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये. शु. १३ गु.	जून १२	अनु.	केतुयति,
ज्ये. शु. १४ शु.	जून १३	अनु.	केतुयति,
ज्ये. शु. १५ श.	जून १४	मूल	मासान्त,
आषा. कृ. १ र.	जून १५	मूल	संक्रान्ति,
आषा. कृ. २ चं.	जून १६	उ.षा.	सूर्यवेध,
आषा. कृ. ३ मं.	जून १७	उ.षा.	सूर्यवेध,
आषा. कृ. ४ बु.	जून १८	श्रव.	वैधृति,
आषा. कृ. ४ बु.	जून १८	धनि.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ५ गु.	जून १९	धनि.	लग्नाभाव,
आषा. शु. ६ श.	जुला. ५	उ. फा.	मृत्युबाण,
आषा. शु. ७ र.	जुला. ६	उ. फा.	मृत्युबाण,
आषा. शु. ७ र.	जुला. ६	हस्त	परिघार्ध, भद्रा,
आषा. शु. ८ चं.	जुला. ७	हस्त	लग्नाभाव,
आषा. शु. ९ मं.	जुला. ८	चित्रा	लग्नाभाव,
आषा. शु. ९ मं.	जुला. ८	स्वा.	भौमवेध,
आषा. शु.१० बु.	जुला. ९	स्वा.	भौमवेध,
आषा. शु. १२ शु.	जुला. ११	अनु.	नक्षत्रान्त,
आषा. शु. १२ शु.	जुला. ११	मूल	सूर्यवेध,
आषा. शु. १३ श.	जुला. १२	मूल	सूर्यवेध,
आषा. शु. १५ र.	जुला. १३	उ. षा.	वैधृति,
श्राव. कृ. २ मं.	जुला. १५	श्रव.	मृत्युबाण,
श्राव. कृ. २ मं.	जुला. १५	धनि.	मासान्त,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६० वि.)

तिथि-वार	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव. कृ. ३ बु.	जुला. १६	धनि.	संक्रान्ति,
श्राव. कृ. ५ शु.	जुला. १८	उ. षा.	मेष लग्न में मृत्युबाण,
श्राव. कृ. ६ श.	जुला. १९	रेव.	भद्रा,
श्राव. कृ. ७ र.	जुला. २०	अश्वि.	लग्नाभाव,

शुक्रास्त- श्राव. कृ. १० बु., श्रावण ८ (२३ जुला. '०३ ई.) से आश्वि. शु. १४ गु., आश्वि. २३ (९ अक्तू. '०३ ई.) तक शुक्र का वार्धक्य, अस्त और बाल्यदोष।

गुरु अस्त- श्राव. शु. ७ चं., श्रावण २० (४ अग. '०३ ई.) से भाद्र. शु. १० शु., भाद्र. २० (५ सितं. '०३ ई.) तक गुरु का वार्धक्य, अस्त और बाल्यदोष।

सिंहस्थ गुरु सिंहनवांश (पू.फा. १म चरण) में:- आश्वि.शु. ५ मं., आश्वि. १४ (३० सितं., '०३ ई.) से कार्त्ति. कृ. ७ शु., कार्त्ति. १ (१७ अक्तू. '०३ ई.) तक गुरु पू.फा. के प्रथम चरण (सिंहराशि के सिंहनवांश) में रहेगा।

तिथि-वार	तारीख २००३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. कृ. ९ चं.	अक्तू. २०	मघा	भद्रा,
कार्त्ति. कृ. १२ बु.	अक्तू. २२	उ.फा.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. १ र.	अक्तू. २६	स्वा.	सूर्ययुति, भौमवेध,
कार्त्ति. शु. २ चं	अक्तू. २७	अनु.	लग्नाभाव, कन्यालग्न में मृत्युबाण,
कार्त्ति. शु. ३ मं.	अक्तू. २८	अनु.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. ७ शु.	अक्तू. ३१	श्रव.	भद्रा, भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ८ श.	नवं. १	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. १३ गु.	नवं. ६	उ.भा.	नक्षत्रान्त,
कार्त्ति. शु. १४ शु.	नवं. ७	रेव.	ग्रहणशूल,
कार्त्ति. शु. १४ शु.	नवं. ७	अश्वि.	ग्रहणशूल,
कार्त्ति. शु. १५ श.	नवं. ८	अश्वि.	ग्रहणशूल,
मार्ग. कृ. १ चं.	नवं. १०	रोहि.	ग्रहणशूल,
मार्ग. कृ. २ मं.	नवं. ११	रोहि.	ग्रहणशूल,
मार्ग. कृ. २ मं.	नवं. ११	मृग.	ग्रहणशूल,
मार्ग. कृ. ९ मं.	नवं. १८	मघा	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. १० बु.	नवं. १९	उ.फा.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. ११ गु.	नवं. २०	उ.फा.	नक्षत्रान्त,
मार्ग. कृ. ११ गु.	नवं. २०	चित्रा	भौमवेध,

तिथि-वार	तारीख २००३-०४ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. कृ. १२ शु.	नवं. २१	चित्रा	भौमवेध,
मार्ग. कृ. १२ शु.	नवं. २१	स्वा.	क्षीणचन्द्र,
मार्ग. शु. १ चं.	नवं. २४	अनु.	सूर्ययुति, राहुवेध,
मार्ग. शु. ३ बु.	नवं. २६	मूल	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ५ शु.	नवं. २८	उ.षा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ६ श.	नवं. २९	श्रव.	क्रान्तिसाम्य,
मार्ग. शु. ६ श.	नवं. २९	धनि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ७ र.	नवं. ३०	धनि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १० बु.	दिसं. ३	उ.भा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १० बु.	दिसं. ३	रेव.	व्यतीपात,
मार्ग. शु. ११ गु.	दिसं. ४	रेव.	भद्रा, व्यतीपात,
मार्ग. शु. ११ गु.	दिसं. ४	अश्वि.	लग्नाभाव, गोधू. में गुरु पादवेध,
मार्ग. शु. १२ शु.	दिसं. ५	अश्वि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १४ र.	दिसं. ७	रोहि.	भद्रा,
मार्ग. शु. १५ चं.	दिसं. ८	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. १५ चं.	दिसं. ८	मृग.	लग्नाभाव,
पौष कृ. ५ र.	दिसं. १४	मघा	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
पौष कृ. ६ चं.	दिसं. १५	मघा	मासान्त, मृत्युबाण,
माघ कृ. ८ गु.	जन. १५	स्वा.	लग्नाभाव, वृश्चिक लग्न में मृत्युबाण,
माघ कृ. ९ शु.	जन. १६	स्वा.	कुम्भ में मृत्युबाण,१२/०८ बाद शुक्रपादवेध,
माघ कृ. १० श.	जन. १७	अनु.	राहुवेध,
माघ कृ. ११ र.	जन. १८	अनु.	राहुवेध,
माघ कृ. १२ चं.	जन. १९	मूल	क्षीणचन्द्र,
माघ शु. १ गु.	जन. २२	धनि.	लग्नाभाव,
माघ शु. २ शु.	जन. २३	धनि.	लग्नाभाव,
माघ शु. ४ र.	जन. २५	उ.भा.	लग्नाभाव,
माघ शु. ५ चं.	जन. २६	रेव.	लग्नाभाव,
माघ शु. ६ मं.	जन. २७	अश्वि.	भौमयुति,
माघ शु. ७ बु.	जन. २८	अश्वि.	भौमयुति,

तिथि-वार	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु. ८ गु.	जन. २९	अश्वि.	नक्षत्रान्त,
माघ शु. ११ चं.	फर. २	मृग.	वैधृति,
माघ शु. १५ शु.	फर. ६	मघा	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. २ र.	फर. ८	उ.फा.	भद्रा,
फाल्गु. कृ. ३ चं.	फर. ९	हस्त	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ४ मं.	फर. १०	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	फर. ११	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	फर. ११	स्वा.	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ६ गु.	फर. १२	स्वा.	मासान्त, मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ७ शु.	फर. १३	अनु.	संक्रान्ति, राहुवेध,
फाल्गु. कृ. ९ श.	फर. १४	अनु.	राहुवेध,
फाल्गु. कृ. १० र.	फर. १५	मूल	लग्नाभाव,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फर. २३	उ.भा.	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फर. २३	रेव.	मृत्युबाण,
फाल्गु. शु. ४ मं.	फर. २४	रेव.	लग्नाभाव,
फाल्गु. शु. ७ शु.	फर. २७	रोहि.	वैधृति, भद्रा,

होलाष्टक:- फाल्गु. शु. ८ श., फाल्गु. १६(२८ फर. २००४ ई.) से फाल्गु. शु. १५ श., फाल्गु. २३(६ मार्च २००४ ई.) तक होलाष्टक।

तिथि-वार	तारीख २००४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
चैत्र कृ. १ र.	मार्च ७	उ.फा.	भुजंगपात,
चैत्र कृ. २ चं.	मार्च ८	उ.फा.	भुजंगपात,
चैत्र कृ. ३ मं.	मार्च ९	हस्त	क्रान्तिसाम्य,
चैत्र कृ. ३ मं.	मार्च ९	चित्रा	सूर्यविध,
चैत्र कृ. ४ बु.	मार्च १०	चित्रा	सूर्यविध
चैत्र कृ. ५ गु.	मार्च ११	स्वा.	नक्षत्रान्त,
चैत्र कृ. ५ गु.	मार्च ११	अनु.	राहुवेध,
चैत्र कृ. ६ शु.	मार्च १२	अनु.	राहुवेध,
चैत्र कृ. ७ श.	मार्च १३	मूल	मासान्त,

मीनस्थ रविः- चैत्र कृ. ८ र. (१४ मार्च २००४ ई.) से सूर्य मीन में।

मुण्डनादि मुहूर्त (सं.२०६० वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है)

इन सभी मुहूर्त्तों में भी सिंहस्थ गुरु का वही काल वर्जित किया गया है, जहां गुरु सिंहांशक (पू. फा. १म पाद) में है।

मुण्डन मुहूर्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ९ शु.	वैशा. १२	अप्रै. २५	धनि.	६/०३ से १८/२७ तक,
वैशा. शु. ७ गु	वैशा. २५	मई ८	पुष्य	८/३२ तक, १०/५६ बाद,
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. १२	मई २६	रेव.	१०/३६ बाद,
ज्ये. कृ. १३ बु.	ज्ये. १४	मई २८	अश्वि.	१५/३४ तक,
ज्ये. शु. ४ बु.	ज्ये. २१	जून ४	पुष्य	१५/३३ बाद,
आषा. कृ. ५ गु.	आषा. ५	जून १६	धनि.	६/३८ तक,
माघ शु. १३ बु.	माघ २२	फर. ४	पुन.	१२/३४ तक,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर. ११	चित्रा	११/१२ तक,
फाल्गु. शु. ५ बु.	फाल्गु. १३	फर. २५	अश्वि.	१५/०० तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	हस्त	१०/४८ बाद,

मुण्डन में विशेष- किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों, (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	स्वा.	७/३६ बाद,
वैशा. शु. ३ र.	वैशा. २१	मई ४	रोहि.	७/४२ तक, १०/०६ बाद,
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. २६	मई १२	उ.फा.	६/१० से १२/३० तक,
आषा. कृ. ५ गु.	आषा. ५	जून १६	धनि.	६/३८ तक,
माघ शु. ५ चं.	माघ १३	जन. २६	उ.भा.	
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर.११	चित्रा	११/१२ तक,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. ११	फर. २३	उ.भा.	
चैत्र कृ. १ र.	फाल्गु. २४	मार्च ७	उ.फा.	११/३२ बाद,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.फा.	६/ ३६ तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	हस्त	१०/४८ बाद,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ बु.	वैशा. २४	मई ७	पुन.	८/५७ तक, १०/५७ बाद,
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. १२	मई २६	रेव.	१०/३६ बाद,
ज्ये. शु. ११ बु.	ज्ये. २८	जून ११	स्वा.	१० ३५ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर. ११	चित्रा	१७/५६ तक,
फाल्गु. शु. ५ बु.	फाल्गु. १३	फर. २५	अश्वि.	१६/०२ तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	हस्त	१०/४८ बाद,
चैत्र कृ. ६ शु.	फाल्गु. २६	मार्च १२	अनु.	१७/४० तक,

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. ९ शु.	वैशा. १२	अप्रै. २५	धनि.	६/०३ बाद,
वैशा. कृ. ११ र.	वैशा. १४	अप्रै. २७	पू.भा.	
वैशा. शु. १० र.	वैशा. २८	मई ११	पू.फा.	
ज्ये. कृ. ३ र.	ज्ये. ४	मई १८	मूल	७/३४ से १२/३२ तक,
ज्ये. कृ. १० र.	ज्ये. ११	मई २५	पू.भा.	६/४७ तक,
आषा. कृ. ५ गु.	आषा. ५	जून १६	धनि.	११/१७ तक,
फाल्गु. कृ. २ र.	माघ २६	फर. ८	पू.फा.	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों —— का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षारम्भ के और संस्कृत,अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों —— का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
चैत्र शु. १५ बु.	वैशा. ३	अप्रै. १६	चित्रा	१४/५६ बाद,
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	चित्रा	६/२७ तक,
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	स्वा.	७/३६ से २७/२६ तक,
वैशा. कृ. ५ चं.	वैशा. ८	अप्रै. २१	मूल	८/५४ तक,
वैशा. कृ. ९ शु.	वैशा. १२	अप्रै. २५	धनि.	६/०३ से १८/२७ तक,
वैशा. शु. ७ गु.	वैशा. २५	मई ८	पुष्य	८/३२ तक, १०/५६ से २५/४६ तक,
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. २६	मई १२	हस्त	२३/३८ बाद,

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
मार्ग. कृ. ११ गु.	मार्ग. ५	नवं. २०	हस्त	१७/४० बाद,
मार्ग. शु. ३ बु.	मार्ग. ११	नवं. २६	मूल	१२/२६ तक,
मार्ग. शु. ४ गु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.षा.	१५/०४ बाद,
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. १३	नवं. २८	उ.षा.	८/४४ तक,
मार्ग. शु. १० बु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.भा.	११/५८ तक,
मार्ग. शु. १२ शु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	अश्वि.	१४/११ तक,
मार्ग. शु. १५ चं.	मार्ग. २३	दिसं. ८	रोहि.	१२/४८ से २६/४५ तक,
पौष कृ. ३ गु.	मार्ग. २६	दिसं. ११	पुन.	६/२८ से १६/४७ तक,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. ११	फर. २३	उ.भा.	१२/३६ तक,
फाल्गु. शु. ५ बु.	फाल्गु. १३	फर. २५	अश्वि.	१५/०० तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.फा.	६/३६ तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	हस्त	१०/४८ बाद,
चैत्र कृ. ४ बु.	फाल्गु. २७	मार्च १०	स्वा.	२३/५० बाद,

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	स्वा.	१४/३० बाद,
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. २६	मई १२	उ.फा.	१२/३० तक,
कार्ति. शु. १३ गु.	कार्ति. २१	नवं. ६	रेव.	७/१७ से ८/३१ तक, ९/४३ बाद,
मार्ग. शु. १० बु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.भा.	१०/०४ तक,
मार्ग. शु. १५ चं.	मार्ग. २३	दिसं. ८	रोहि.	१२/४८ बाद,

नूतन-गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १२ चं.	वैशा. १५	अप्रै. २८	रेव.	२८/३६ बाद,
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. २६	मई १२	उ.फा.	१२/३० तक,

नूतन-गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००३ -०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्या	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. १२	मई २६	उ.षा.	६/२७ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. १२	मई २६	रेव.	१०/३६ बाद,
माघ शु. ५ चं.	माघ १३	जन. २६	रेव.	२८/२६ बाद,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्या	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	चित्रा	६/२७ तक,
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	स्वा.	७/३६ बाद,
वैशा. कृ. ६ शु.	वैशा. १२	अप्रै. २५	धनि.	६/०३ से १८/२७ तक,
वैशा. कृ. १० श.	वैशा. १३	अप्रै. २६	शत.	७/०० से २२/२० तक,
वैशा. शु. २ श.	वैशा. २०	मई ३	रोहि.	१६/५२ बाद,
वैशा. शु. ७ गु.	वैशा. २५	मई ८	पुष्य	८/३२ तक, १०/५६ से २५/४६ तक
ज्ये. कृ. २ श.	ज्ये. ३	मई १७	अनु.	८/५१ तक,
ज्ये. कृ. ७ गु.	ज्ये. ८	मई २२	धनि.	५/४६ से २७/०३ तक,
ज्ये. कृ. ८ शु.	ज्ये. ६	मई २३	शत.	८/३७ तक,
ज्ये. शु. ४ बु.	ज्ये. २१	जून ४	पुष्य	१५/३३ बाद,
ज्ये. शु. ११ बु.	ज्ये. २८	जून ११	स्वा.	११/३५ से २४/३४ तक,
श्राव. कृ. १ चं.	आषा. ३०	जुला. १४	उ.षा.	११/१८ से २१/३७ तक,
श्राव. कृ. ४ गु.	श्राव. २	जुला. १७	शत.	१६/५० से २१/०३ तक,
श्राव. कृ. ६ श.	श्राव. ४	जुला. १६	उ.भा.	२१/३३ तक,
श्राव. कृ. १० गु.	श्राव. ६	जुला. २४	रोहि.	१३/०५ बाद,
श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. १०	जुला. २५	रोहि.	१४/३५ तक,
श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. १०	जुला. २५	मृग.	१५/४७ बाद,
श्राव. शु. ७ चं.	श्राव. २०	अग. ४	चित्रा	१५/२६ तक,
श्राव. शु. ७ चं.	श्राव. २०	अग. ४	स्वा.	१६/४१ से २६/०१ तक,
श्राव. शु. ६ बु.	श्राव. २२	अग. ६	अनु.	२१/४३ बाद,
श्राव. शु. १० गु.	श्राव. २३	अग. ७	अनु.	११/२४ तक,
कार्त्ति. कृ. ५ बु.	आश्वि. २६	अक्तू. १५	रोहि.	७/०८ से १४/१० तक,
कार्त्ति. कृ. ५ बु.	आश्वि. २६	अक्तू. १५	मृग.	१५/२२ बाद,
कार्त्ति. कृ. ८ श.	कार्त्ति. २	अक्तू. १८	पुष्य	२२/५४ बाद,
कार्त्ति. कृ.१२ बु	कार्त्ति. ६	अक्तू. २२	उ.फा.	२३/१० बाद,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. कृ. १३ गु.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २३	उ.फा.	२१/१३ तक,
कार्त्ति. शु. २ चं.	कार्त्ति. ११	अक्तू. २७	अनु.	११/०० बाद,
कार्त्ति. शु. ६ गु.	कार्त्ति. १४	अक्तू. ३०	उ.षा.	२६/४६ बाद,
कार्त्ति. शु. ७ शु.	कार्त्ति. १५	अक्तू. ३१	उ.षा.	१३/५५ तक, १५/५५ से २२/२६ तक,
कार्त्ति. शु. १० चं.	कार्त्ति. १८	नवं. ३	शत.	२६/२० तक,
कार्त्ति. शु. १२ बु.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	उ.भा.	३०/०५ तक,
कार्त्ति. शु. १३ गु.	कार्त्ति. २१	नवं. ६	रेव.	७/१७ से २६/०० तक,
मार्ग. कृ. ५ शु.	कार्त्ति. २६	नवं. १४	पुष्य	२६/५५ बाद,
मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. ४	नवं. १६	उ.फा.	१६/४५ बाद,
मार्ग. कृ. १२ शु.	मार्ग. ६	नवं. २१	चित्रा	२६/३७ तक,
मार्ग. कृ. १२ शु.	मार्ग. ६	नवं. २१	स्वा.	२७/४६ बाद,
मार्ग. कृ. १३ श.	मार्ग. ७	नवं. २२	स्वा.	११/४६ तक,
मार्ग. शु, १ चं.	मार्ग. ६	नवं. २४	अनु.	१८/०० तक,
मार्ग. शु, ४ गु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.षा.	१५/०४ बाद,
मार्ग. शु, ६ श.	मार्ग. १४	नवं. २६	धनि.	६/०४ से १५/४८ तक, १६/२४ बाद,
मार्ग. शु, ८ चं.	मार्ग. १६	दिसं. १	शत.	८/२७ तक,
मार्ग. शु, १० बु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.भा.	११/५८ तक,
मार्ग. शु, १५ चं.	मार्ग. २३	दिसं. ८	रोहि.	१२/४८ से २६/४५ तक,
मार्ग. शु, १५ चं.	मार्ग. २३	दिसं. ८	मृग.	२७/५७ बाद,
माघ कृ. २ शु.	पौष २५	जन. ६	पुष्य	१८/१५ तक,
माघ कृ. ८ गु.	माघ २	जन. १५	चित्रा	१६/५० तक,
माघ शु, १ गु.	माघ ६	जन. २२	धनि.	२६/१७ बाद,
माघ शु, २ शु.	माघ १०	जन. २३	धनि.	७/४६ तक,
माघ शु, ३ श.	माघ ११	जन. २४	शत.	२०/१६ तक,
माघ शु, ५ चं.	माघ १३	जन. २६	उ.भा.	२७/१७ तक,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर. ११	चित्रा	१७/५६ तक, २०/२३ से २५/१६ तक,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर. ११	स्वा.	२६/२८ बाद,
फाल्गु. शु. १ श.	फाल्गु. ६	फर. २१	शत.	१२/०५
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. ११	फर. २३	उ.भा.	१२/२६ तक,

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सन २००२-०३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. शु. १२ बु.	फाल्गु. २०	मार्च ३	पुष्य	६/३० बाद,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांसफर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा-कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त हैं। इन मुहूर्तों में गुरु-शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्त्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश-चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (२००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ. १ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १७	स्वा.	७/३६ बाद,
वैशा. कृ. ६ शु.	वैशा. १२	अप्रै. २५	धनि.	६/०३ बाद,
वैशा. शु. ३ र.	वैशा. २१	मई ४	रोहि.	७/४२ तक, १०/०६ बाद,
वैशा. शु. ६ बु.	वैशा. २४	मई ७	पुन.	८/५७ तक, १०/५७ बाद,
वैशा. शु. ७ गु.	वैशा. २५	मई ८	पुष्य	
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. २६	मई १२	उ.फा.	१२/३० तक,
ज्ये. कृ. ८ शु.	ज्ये. ६	मई २३	शत.	८/३७ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. १२	मई २६	उ.भा.	६/२७ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. १२	मई २६	रेव.	१०/३६ बाद,
ज्ये. कृ. १३ बु.	ज्ये. १४	मई २८	अश्वि.	
ज्ये. शु. ११ बु.	ज्ये. २८	जून ११	स्वा.	१०/३५ बाद,
आषा. कृ. ५ गु.	आषा. ५	जून १६	धनि.	११/१७ तक,
माघ कृ. ८ गु.	माघ २	जन. १५	चित्रा	
माघ कृ. ११ र.	माघ ५	जन. १८	अनु.	
माघ शु. १ गु.	माघ ६	जन. २२	श्रव.	
माघ शु. ५ चं.	माघ १३	जन. २६	उ.भा.	
माघ शु. ११ र.	माघ १६	फर. १	रोहि.	
माघ शु. १३ बु.	माघ २२	फर. ४	पुन.	
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर. ११	चित्रा	
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु.११	फर. २३	उ.भा.	
फाल्गु. शु. ५ बु.	फाल्गु.१३	फर. २५	अश्वि.	

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (२००४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.फा.	६/३६ तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	हस्त	१०/४८ बाद,
चैत्र कृ. ६ शु.	फाल्गु. २६	मार्च १२	अनु.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. कृ. ८ र.	आषा. ८	जून २२	उ.भा.	६/०७ तक,
आषा. कृ. १३ शु.	आषा. १३	जून २७	रोहि.	५/३५ बाद,
आषा. शु. ३ बु.	आषा. १८	जुला. २	पुष्य	
आषा. शु. ७ र.	आषा. २२	जुला. ६	उ.फा.	
आषा. शु. ८ चं.	आषा. २३	जुला. ७	हस्त	८/०२ बाद,
मार्ग. कृ. ५ शु.	कार्त्ति. २९	नवं. १४	पुन.	
मार्ग. कृ. ११ गु.	मार्ग. ५	नवं. २०	हस्त	७/५१ बाद,
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. १३	नवं. २८	उ.षा.	८/४४ तक,
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. १३	नवं. २८	श्रव.	६/५६ बाद,
मार्ग. शु. ८ चं.	मार्ग. १६	दिसं. १	शत.	८/२७ तक,
मार्ग. शु. १० बु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.भा.	११/५८ तक,
मार्ग. शु. १२ शु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	अश्वि.	
पौष कृ. ३ गु.	मार्ग. २६	दिसं.११	पुन.	६/२८ बाद,

देव प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्त्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां नीचे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी- देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें- गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त ——————— > के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदुनसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिव प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु-शुक्रास्त काल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु को वर्जित किया जाता है।

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ४ चं.	ज्ये. ५	मई १९		
आषा. कृ. ३ मं.	आषा. ३	जून १७		८/५२ बाद,
चैत्र कृ. ४ बु.	फाल्गु. २७	मार्च १०		

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ५ चं.	वैशा. ८	अप्रै. २१	मूल	७/०८ तक,
ज्ये. कृ. ३ र.	ज्ये. ४	मई १८	मूल	७/३४ से १२/३२ तक,
आषा. शु. ९ मं.	आषा. २४	जुला. ८		(दक्षिणायन)
मार्ग. शु. ९ मं.	मार्ग. १७	दिसं. २		(दक्षिणायन)
फाल्गु. कृ. ११ चं	फाल्गु. ४	फर. १६	मूल	

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ मं.	वैशा. २३	मई ६	आर्द्रा	
माघ कृ. १३ मं.	माघ ७	जन. २०		८/३८ तक,
माघ शु. १२ मं.	माघ २१	फर. ३	आर्द्रा	

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ र.	वैशा. २१	मई ४		
आषा. शु. ३ बु.	आषा. १८	जुला. २		
मार्ग. शु. ३ बु.	मार्ग. ११	नवं. २६		
माघ शु. ३ श.	माघ ११	जन. २४		

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २००३ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. ११	फर. २३		

विपणि मुहूर्त्त (सन् २००३-०४ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ र.	वैशा. २१	मई ४	रोहि.	७/४२ तक, १०/०६ से १८/३३ तक,
वैशा. शु. ७ गु.	वैशा. २५	मई ८	पुष्य	८/३२ तक, १०/५६ बाद,
ज्ये. कृ. १३ बु.	ज्ये. १४	मई २८	अश्वि.	१५/३४ तक,
ज्ये. शु. ४ बु.	ज्ये. २१	जून ४	पुष्य	१५/३३ बाद,
आषा. कृ. १३ शु.	आषा. १३	जून २७	रोहि.	५/३५ से १६/५० तक,
आष. शु. ३ बु.	आषा. १८	जुला. २	पुष्य	१३/०६ तक,
आषा. शु. ७ र.	आषा. २२	जुला. ६	उ.फा.	१२/२५ तक,
आषा. शु. ११ गु.	आषा. २६	जुला. १०	अनु.	११/३६ बाद,
श्राव. कृ. ७ र.	श्राव. ५	जुला. २०	रेव.	१०/२४ बाद,
कार्त्ति. शु. १२ बु.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	उ.भा.	
कार्त्ति. शु. १३ गु.	कार्त्ति. २१	नवं. ६	रेव.	७/१७ बाद,
मार्ग. शु. ४ गु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.षा.	१५/०४ बाद,
मार्ग. शु. १० बु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	उ.भा.	११/५८ तक,
मार्ग. शु. १२ शु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	अश्वि.	१४/११ तक,
माघ शु. ५ चं.	माघ १३	जन. २६	उ.भा.	
माघ शु. १० श.	माघ १८	जन. ३१	रोहि.	१४/४६ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ बु.	माघ २६	फर. ११	चित्रा	११/१२ तक,
फाल्गु. शु. २ र.	फाल्गु. १०	फर. २२	उ.भा.	१३/१३ बाद,
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. ११	फर. २३	उ.भा.	१२/३६ तक,
फाल्गु. शु. ५ बु.	फाल्गु. १३	फर. २५	अश्वि.	१६/०२ तक,
चैत्र कृ. २ चं.	फाल्गु. २५	मार्च ८	उ.फा.	६/३६ तक,

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति-प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी -अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्नकाल में बिना पंचांग-शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु-शुक्रास्तकाल में पड़े ,तब तो उस दिन मूर्ति-प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६० वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.	२००३-०४ ई.	घं. मि.	२००३-०४ ई.	घं. मि.
३ अप्रै.	सू. उ.	४ अप्रै.	४/३२	१४ जुला.	२२/१६	१५ जुला.	सू. उ.	३० सितं.	१/५४	३० सितं.	सू. उ.	(६ दिसं.	३/५७	६ दिसं.	सू. उ.) चं.
७ अप्रै.	सू. उ.	७ अप्रै.	१३/४३	२१ जुला.	४/०१	२१ जुला.	सू. उ.	४ अक्तू.	२०/१४	५ अक्तू.	सू. उ.	११ दिसं.	६/२८	१२ दिसं.	सू. उ.
१० अप्रै.	सू. उ.	१० अप्रै.	१६/१७	(२२ जुला.	सू. उ.	२२ जुला.	६/५८) मं.	१० अक्तू.	१/१०	१० अक्तू.	सू. उ.	१२ दिसं.	सू. उ.	१२ दिसं.	११/४७
१६ अप्रै.	सू. उ.	१६ अप्रै.	१०/३८	२३ जुला.	१०/०४	२४ जुला.	सू. उ.	(१० अक्तू.	सू. उ.	११ अक्तू.	३/२७) शु.	१७ दिसं.	१६/१०	१८ दिसं.	सू. उ.
२० अप्रै.	२१/३३	२१ अप्रै.	सू. उ.	२८ जुला.	२०/४०	२६ जुला.	सू. उ.	१४ अक्तू.	सू. उ.	१४ अक्तू.	१२/१२	२० दिसं.	सू. उ.	२० दिसं.	११/४७
२८ अप्रै.	१/५३	२८ अप्रै.	सू. उ.	२६ जुला.	२१/०८	३० जुला.	सू. उ.	१५ अक्तू.	सू. उ.	१६ अक्तू.	सू. उ.	२६ दिसं.	सू. उ.	२६ दिसं.	१८/३४
१ मई	सू. उ.	१ मई	१०/३६	१ अग.	सू. उ.	१ अग.	१६/५६	१७ अक्तू.	२०/५४	१८ अक्तू.	सू. उ.	३० दिसं.	सू. उ.	३० दिसं.	२०/०१
(३ मई	१६/५२	४ मई	सू. उ.) श.	(३ अग.	६/०१	३ अग.	१७/५४) र.	१६ अक्तू.	सू. उ.	२० अक्तू.	०/१०	१ जन.	सू. उ.	२ जन.	१/०६
(५ मई	सू. उ.	५ मई	२२/१६) चं.	(६ अग.	१४/००	७ अग.	सू. उ.) बु.	२५ अक्तू.	१६/३३	२६ अक्तू.	सू. उ.	५ जन.	सू. उ.	५ जन.	१०/३०
(८ मई	सू. उ.	६ मई	२/५८) गु.	७ अग.	सू. उ.	७ अग.	१२/३६	२७ अक्तू.	११/००	२८ अक्तू.	सू. उ.	(५ जन.	१०/३०	६ जन.	सू. उ.) चं.
१२ मई	१/२७	१२ मई	सू. उ.	१० अग.	८/३८	६ अग.	सू. उ.	१ नवं.	२/०४	१ नवं.	सू. उ.	८ जन.	सू. उ.	८ जन.	१७/४८
१८ मई	७/३४	१६ मई	सू. उ.	११ अग.	७/४०	१२ अग.	सू. उ.	१ नवं.	सू. उ.	२ नवं.	१/५६	(८ जन.	१७/४८	६ जन.	सू. उ.) गु.
२५ मई	७/५६	२६ मई	सू. उ.	१७ अग.	१२/११	१८ अग.	सू. उ.	५ नवं.	५/१०	५ नवं.	सू. उ.	१४ जन.	सू. उ.	१४ जन.	२१/४६
(२७ मई	१३/३८	२८ मई	सू. उ.) मं.	१६ अग.	१८/०१	२० सितं.	सू. उ.	६ नवं.	७/१७	७ नवं.	सू. उ.	२६ जन.	३/३०	२६ जन.	सू. उ.
(३१ मई	सू. उ.	१ जून	१/३६) श.	२० अग.	सू. उ.	२१ अग.	सू. उ.	(७ नवं.	सू. उ.	७ नवं.	६/४६) शु.	२६ जन.	सू. उ.	२६ जन.	८/४३
(५ जून	सू. उ.	५ जून	८/४५) गु.	२५ अग.	५/१२	२५ अग.	सू. उ.	७ नवं.	६/४६	८ नवं.	सू. उ.	(३१ जन.	१४/४६	१ फर.	६/१०) श.
८ जून	८/४४	६ जून	सू. उ.	२५ अग.	सू. उ.	२६ अग.	५/३४	१० नवं.	१८/४२	११ अ	सू. उ.	(२ फर.	सू. उ.	२ फर.	२०/४३) चं.
१२ जून	२३/१६	१३ जून	सू. उ.	२६ अग.	सू. उ.	२७ अग.	५/१७	१२ नवं.	सू. उ.	१३ नवं.	२/५०	(५ फर.	सू. उ.	६ फर.	२/२६) गु.
(१५ जून	सू. उ.	१५ जून	१६/००	(३ सितं.	सू. उ.	३ सितं.	७/०६) बु.	१४ नवं.	३/३४	१४ नवं.	सू. उ.	६ फर.	३/५२	६ फर.	सू. उ.
२२ जून	सू. उ.	२२ जून	१७/३२	७ सितं.	सू. उ.	७ सितं.	१४/४०	१४ नवं.	सू. उ.	१५ नवं.	५/५५	१५ फर.	२१/३१	१६ फर.	सू. उ.
(२४ जून	सू. उ.	२४ जून	२३/२६) मं.	८ सितं.	सू. उ.	८ सितं.	१४/२६	२२ नवं.	सू. उ.	२३ नवं.	१/०८	२२ फर.	१३/१३	२३ फर.	सू. उ.
२६ जून	२/३७	२६ जून	सू. उ.	(१२ सितं.	१८/०२	१३ सितं.	सू. उ.) शु.	२४ नवं.	सू. उ.	२४ नवं.	१६/१२	(२४ फर.	१५/१२	२५ फर.	सू. उ.) मं.
(२८ जून	सू. उ.	२८ जून	८/१४) श.	१४ सितं.	सू. उ.	१४ सितं.	२२/५१	२८ नवं.	६/३६	२६ नवं.	सू. उ.	(२८ फर.	सू. उ.	२६ फर.	१/५४) श.
४ जुला.	१४/४४	५ जुला.	सू. उ.	१६ सितं.	सू. उ.	१७ सितं.	४/५६	२६ नवं.	सू. उ.	२६ नवं.	६/०४	(४ मार्च	सू. उ.	४ मार्च	१०/५५) गु.
६ जुला.	सू. उ.	६ जुला.	१३/३७	१७ सितं.	सू. उ.	१८ सितं.	सू. उ.	२ दिसं.	११/०५	३ दिसं.	सू. उ.	७ मार्च	११/३२	८ मार्च	सू. उ.
(६ जुला.	१३/३७	७ जुला.	सू. उ.) र.	२१ सितं.	१४/२२	२२ सितं.	सू. उ.	४ दिसं.	सू. उ.	५ दिसं.	सू. उ.	१२ मार्च	५/४७	१२ मार्च	सू. उ.
१० जुला.	७/४४	८ जुला.	सू. उ.	२२ सितं.	सू. उ.	२२ सितं.	१५/०२	५ दिसं.	सू. उ.	५ दिसं.	१८/३६	१४ मार्च	सू. उ.	१५ मार्च	१/४२
१४ जुला.	०/०६	१४ जुला.	सू. उ.	२३ सितं.	सू. उ.	२३ सितं.	१४/४२	८ दिसं.	सू. उ.	६ दिसं.	३/५७				

रवियोग (सं. २०६० वि.)(भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.
५ अप्रै.	७/४२	६ अप्रै.	१०/४६
७ अप्रै.	१३/४३	८ अप्रै.	१६/४३
१० अप्रै.	१९/१७	१२ अप्रै.	१९/०७
१५ अप्रै.	१३/३७	१६ अप्रै.	१०/३८
२१ अप्रै.	२०/१३	२२ अप्रै.	१९/३२
४ मई	१९/४५	५ मई	२२/१९
७ मई	०/२८	८ मई	२/०३
१० मई	३/११	१२ मई	२३/३८
१४ मई	१८/३८	१५ मई	१५/४५
२१ मई	३/२४	२२ मई	३/२६
३ जून	६/०५	४ जून	७/४०
५ जून	८/४५	६ जून	९/१८
९ जून	७/३९	११ जून	४/०५
१२ जून	२३/१६	१३ जून	२०/४२
१९ जून	१२/२९	२० जून	१३/२७
२ जुला.	१४/२१	३ जुला.	१४/४५
४ जुला.	१४/४४	५ जुला.	१४/२१
८ जुला.	११/११	१० जुला.	७/४४
१२ जुला.	३/४६	१३ जुला.	१/५१
१८ जुला.	२३/३०	२० जुला.	१/२८
२० जुला.	१४/०५	२१ जुला.	४/०१
३१ जुला.	२०/४२	१ अग.	१९/५९
२ अग.	१९/०१	३ अग.	१२/५३
३ अग.	१७/५४	४ अग.	१६/४१
६ अग.	१४/००	८ अग.	११/११
१० अग.	८/३८	११ अग.	७/४०
१८ अग.	१४/५७	१९ अग.	१८/०१
३० अग.	१/४५	३१ अग.	०/०७

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.
३१ अग.	६/३२	३१ अग.	२२/२७
१ सितं.	२०/५१	२ सितं.	१९/२१
४ सितं.	१६/५१	६ सितं.	१५/०९
८ सितं.	१४/२९	९ सितं.	१४/४०
१७ सितं.	४/५९	१८ सितं.	८/०२
२९ सितं.	४/०१	३० सितं.	१/५४
१ अक्तू.	०/०१	१ अक्तू.	२२/२८
३ अक्तू.	२०/३३	५ अक्तू.	२०/२१
७ अक्तू.	२१/२३	८ अक्तू.	२३/१८
१६ अक्तू.	१८/२०	१७ अक्तू.	२०/५४
२८ अक्तू.	८/२३	२९ अक्तू.	६/०४
३० अक्तू.	४/११	३१ अक्तू.	२/४९
२ नवं.	१/५६	४ नवं.	३/३२
७ नवं.	९/४६	८ नवं.	१२/३४
१५ नवं.	५/५५	१६ नवं.	७/४३
२६ नवं.	१३/४१	२७ नवं.	११/३१
२८ नवं.	६/५६	२९ नवं.	९/०४
१ दिसं.	९/३९	४ दिसं.	१५/४४
६ दिसं.	२१/४५	८ दिसं.	०/५३
१४ दिसं.	१५/०९	१५ दिसं.	१६/०५
१६ दिसं.	१३/००	१६ दिसं.	१६/२६
२५ दिसं.	२०/१०	२६ दिसं.	१८/३४
२७ दिसं.	१७/४१	२८ दिसं.	१७/३७
२९ दिसं.	१५/०८	२९ दिसं.	१८/२५
३१ दिसं.	२२/२०	३ जन.	४/१५
(सन् २००४ ई.)			
५ जन.	१०/३०	६ जन.	१३/१८
१३ जन.	२२/०९	१४ जन.	२१/४९

प्रारम्भ		समाप्त	
२००४ ई.	घं. मि.	२००४ ई.	घं. मि.
२४ जन.	३/५८	२४ जन.	१९/२४
२५ जन.	३/२१	२६ जन.	३/३०
२७ जन.	४/२९	२८ जन.	६/१६
३० जन.	११/३८	१ फर.	१७/५२
३ फर.	२३/०८	५ फर.	१/०२
१२ फर.	२/२८	१३ फर.	१/३२
२३ फर.	१३/५१	२४ फर.	१५/१२
२५ फर.	१७/१४	२६ फर.	१९/५०
२६ फर.	१/५४	२ मार्च	७/२७
५ मार्च	११/४१	६ मार्च	११/५२
१२ मार्च	५/४७	१३ मार्च	४/२३

*सिद्धियोग(सं. २०६० वि.)(भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
१० अप्रै.	सू. उ.	१० अप्रै.	१९/१७
२० अप्रै.	२१/३३	२१ अप्रै.	सू. उ.
१८ मई	७/३४	१९ मई	सू. उ.
१५ जून	सू. उ.	१५ जून	१६/००
४ जुला.	१४/४४	५ जुला.	सू. उ.
१४ जुला.	२२/४९	१५ जुला.	सू. उ.
२३ जुला.	१०/०४	२४ जुला.	सू. उ.
१ अग.	सू. उ.	१ अग.	१९/५९
११ अग.	७/४०	१२ अग.	सू. उ.
२० अग.	सू. उ.	२० अग.	२१/०६
८ सितं.	सू. उ.	८ सितं.	१४/२९
२५ अक्तू.	१६/३३	२६ अक्तू.	सू. उ.
५ नवं.	५/१०	५ नवं.	सू. उ.
१४ नवं.	३/३४	१४ नवं.	सू. उ.
२२ नवं.	सू. उ.	२३ नवं.	१/०८

द्विपुष्कर योग(सं. २०६०वि.)सन् २००३-०४ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३-०४ ई.	घं. मि.	२००३-०४ ई.	घं. मि.
२ दिसं.	११/०५	३ दिसं.	सू. उ.
११ दिसं.	९/२८	१२ दिसं.	सू. उ.
२० दिसं.	सू. उ.	२० दिसं.	११/४७
३० दिसं.	सू. उ.	३० दिसं.	२०/०१
८ जन.	सू. उ.	८ जन.	१७/४८
१५ फर.	२१/३१	१६ फर.	सू. उ.
१४ मार्च	सू. उ.	१५ मार्च	१/४२

★ रविवार का मूल. चन्द्रवार का श्रव., मंगल का उ.भा; बुध का कृत्ति., गुरु का पुन., शुक्र का पू.फा. और शनिवार का स्वाती नक्षत्र से योग होने पर, जो सर्वार्थसिद्धि योग बनते हैं; उन्हीं को सिद्धियोग की संज्ञा दी गई है। इन्हें विशेष शुभफलप्रद माना गया है।

त्रिपुष्करयोग (सं. २०६० वि.) सन् २००३ ई.

प्रारम्भ		समाप्त	
२२ अप्रै.	१९/३२	२३ अप्रै.	सू. उ.
२७ अप्रै.	८/२९	२८ अप्रै.	१/५३
३ मई	सू. उ.	३ मई	१६/५२
२१ जून	सू. उ.	२१ जून	७/३३
१ जुला.	सू. उ.	१ जुला.	१३/३२
५ जुला.	२२/३६	६ जुला.	सू. उ.
६ जूला.	सू. उ.	६ जुला.	१३/३७
२४ अग.	४/०८	२४ अग.	सू. उ.
२४ अग.	सू. उ.	२५ अग.	१/३०
७ सितं.	०/१६	७ सितं.	सू. उ.
७ सितं.	सू. उ.	७ सितं.	१४/४०
२६ अक्तू.	१४/४७	२७ अक्तू.	सू. उ.
४ नवं.	२२/३८	५ नवं.	५/१०
२० दिसं.	११/४७	२१ दिसं.	१/४५

त्रिपुष्करयोग (सन् २००३-०४ ई.)(भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३-०४ ई.	घं. मि.	२००३-०४ ई.	घं. मि.
२६ दिसं.	२/२६	२६ दिसं.	सू. उ.
४ जन.	सू. उ.	४ जन.	७/२६
१७ फर.	१८/१०	१७ फर.	२१/०४
२१ फर.	१३/२६	२२ फर.	सू. उ.
२२ फर.	सू. उ.	२२ फर.	१२/४७
३ मार्च	४/२५	३ मार्च	सू. उ.
८ मार्च	३/२६	८ मार्च	सू. उ.

द्विपुष्करयोग(सन् २००३-०४ ई.)(भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
८ अप्रै.	१५/२५	८ अप्रै.	१६/१३
१ जून	११/५३	२ जून	४/०४
२६ जुला.	सू. उ.	२६ जुला.	१०/४२
४ अग.	४/०४	४ अग.	सू. उ.
२७ सितं.	८/३६	२८ सितं.	२/४१
३० नवं.	सू. उ.	३० नवं.	८/५८
१० दिसं.	४/३५	१०. दिसं.	६/५०

अमृतसिद्धियोग (सन् २००३ ई.)(भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
३ मई	१६/५२	४ मई	सू. उ. श.
५ मई	सू. उ.	५ मई	२२/१६ चं.
८ मई	सू. उ.	६ मई	२/५८ गु.
२७ मई	१३/३८	२८ मई	सू. उ. मं.
३१ मई	सू. उ.	१ जून	१/३६ श.
५ जून	सू. उ.	५ जून	८/४५ गु.
२४ जून	सू. उ.	२४ जून	२३/२६ मं.
२८ जून	सू. उ.	२८ जून	८/१४ श.
६ जुला.	१३/३७	७ जुला.	सू. उ. र.
२२ जुला.	सू. उ.	२२ जुला.	६/५८ मं.

अमृतसिद्धियोग (सन् २००३ ई.)(भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२००३ ई.	घं. मि.	२००३ ई.	घं. मि.
३ अग.	६/०१	३ अग.	१७/५४ र.
६ अग.	१४/००	७ अग.	सू. उ. बु.
३ सितं.	सू. उ.	३ सितं.	७/०६ बु.
१२ सितं.	१८/०२	१३ सितं.	सू. उ. शु.
१० अक्तू.	सू. उ.	११ अक्तू.	३/२७ शु.
७ नवं.	सू. उ.	७ नवं.	६/४६ शु.
६ दिसं.	३/५७	६ दिसं.	सू. उ. चं.
सन् २००४ ई.			
५ जन.	१०/३०	६ जन.	सू. उ. चं.
८ जन.	१७/४८	६ जन.	सू. उ. गु.
३१ जन.	१४/४६	१ फर.	६/१० श.
२ फर.	सू. उ.	२ फर.	२०/४३ चं.
५ फर.	सू. उ.	६ फर.	२/२६ गु.
२४ फर.	१५/१२	२५ फर.	सू. उ. मं.
२८ फर.	सू. उ.	२६ फर.	१/५४ श.
४ मार्च	सू. उ.	४ मार्च	१०/५५ गु.

अमृतसिद्धियोग

अमृतसिद्धियोग:- रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थसिद्धि योग बनता है, उसे 'अमृतसिद्धियोग योग' की विशेष संज्ञा दी गई है। अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां वर्जित मानी गई हैं, जिन्हें यहां दिए गए अमृतसिद्धि योगों के काल में से निकाल दिया गया है। अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। **ध्यान रहे- गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश, तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। अमृतसिद्धि योग के समय जो वार है, उसे दाईं ओर लिखा गया है।**

यद्यपि मुहूर्त-ग्रन्थों में गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग को छोड़कर शेष सभी सर्वार्थसिद्धि योगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता में ही इस योग में प्रणय विवाह आदि ही करना चाहिए- ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्न शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है। दिनमान का ३०वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। अभिजित् के काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

मार्त्तण्ड मौहूर्तिक (वर्ष 2004-2005)

लेखक: पण्डित सुबोध शर्मा, B.E. (ELECTRONICS), M.E. (ELECTRONICS) एवं पण्डित संजय शर्मा B.E. (ELECTRONICS), M.E. (COMPUTER SCIENCE)
दोनों लेखक स्व० पण्डित मुकुन्द वल्लभ (प्रवर्त्तक श्री मार्त्तण्ड पंचांग कुराली) के पौत्र हैं।
प्रणेता : दृक्सिद्धान्तभास्कर डा० शक्तिधर शर्मा M.Sc. Ph.D (Nuclear Physics) (U.S.A) F.R.A.S, (LONDON), M.A, सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (वाराणसी)

लग्न, वार, सूर्योदय, सूर्यास्त, एवं सूर्य केन्द्रिक ग्रहों के उदयास्त आदि अक्षांश एवं रेखांश पर निर्भर करते है। इस कारण महूर्त काल निर्णय स्थान पर निर्भर करता है। इस कारण मुहूर्त काल के क्षेत्र में ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के विद्वानों को विदेशी प्रवासी भारतीयों का मार्गदर्शन करने में काफी असुविधा होती है। इस संदर्भ में 'मार्त्तण्ड मौहूर्त्तिक' वार्षिक मुद्रित पुस्तक दैवज्ञों एवं कर्मकाण्ड के विद्वानों के लिए काफी सुविधाजनक सिद्ध होगी। इस वार्षिक पुस्तक में विवाह मुहूर्त, गृह प्रवेश, गृह आरम्भ, विद्यारम्भ, उपनयन आदि मुहूर्त्त कोष्ठक नं. 1 में दिए गए नगरों के लिए उपलब्ध होंगे।

मार्त्तण्ड व्रत पर्व निर्णय (वर्ष 2004-2005)

लेखक: पण्डित सुबोध शर्मा, B.E. (ELECTRONICS), M.E. (ELECTRONICS) एवं पण्डित संजय शर्मा B.E. (ELECTRONICS), M.E. (COMPUTER SCIENCE)
दोनों लेखक स्व० पण्डित मुकुन्द वल्लभ (प्रवर्त्तक श्री मार्त्तण्ड पंचांग कुराली) के पौत्र हैं।
प्रणेता : दृक्सिद्धान्तभास्कर डा० शक्तिधर शर्मा M.Sc. Ph.D (Nuclear Physics) (U.S.A) F.R.A.S, (LONDON), M.A, सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (वाराणसी)

लग्न, वार, सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रोदय, चन्द्रास्त आदि अक्षांश एवं रेखांश पर निर्भर करते है। इस कारण व्रत पर्वों का निर्णय स्थान पर निर्भर करता है। इस कारण व्रत पर्वों के क्षेत्र में, ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के विद्वानों को विदेशी प्रवासी भारतीयों का मार्गदर्शन करने में काफी असुविधा होती है। इस संदर्भ में 'मार्त्तण्ड व्रत पर्व निर्णय' वार्षिक मुद्रित पुस्तक दैवज्ञों एवं कर्मकाण्ड के विद्वानों के लिए काफी सुविधाजनक सिद्ध होगी। इस वार्षिक पुस्तक में हिन्दू व्रत-पर्व, सिख पर्व, जैन पर्व कोष्ठक नं. 1 में दिए गए नगरों के लिए उपलब्ध होंगे।

कोष्ठक नं. 1

	नगर	देश		नगर	देश
1.	न्यु जर्सी	अमेरिका	6.	लन्दन	इंग्लैंड
2.	कैलिफोर्निया	अमेरिका	7.	नैरोबी	कैन्या
3.	टेक्सास	अमेरिका	8.	पोर्ट लोइस	मारिशस
4	वैनकूवर	कैनेडा	9.	सिडनी	आस्ट्रेलिया
5.	टोरंटो	कैनेडा	10.	सुवा	फिजी

भूमण्डलीय लग्न सारणी (साम्पातिक काल के आधार पर)

(सरलतम विधि से अलपतम समय में जन्म कुण्डली एवं जन्म पत्री बनाने के लिए प्रकाशन)

लेखक : दृक्सिद्धान्तभास्कर डा० शक्तिधर शर्मा M.Sc. Ph.D (Nuclear Physics) (U.S.A) F.R.A.S, (LONDON), M.A, सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (वाराणसी)

जन्म पत्री बनाने के लिए विषय वस्तु (कुण्डली नवमांश सप्तमांश आदि के लिए):
- विश्व के हज़ारों नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा स्टैण्डर्ड अन्तर।
- 1900 ई० - 2100 ई० तक की साम्पातिक काल सारणियां।
- लग्न सारणियां।
- 1900 ई० - 2100 ई० तक की अयनांश सारणियां।
- 1970 ई० - 2040 ई० तक के सभी ग्रहों के राशि चार।

जन्म/ प्रश्न कुण्डली बनाने के लिए विषय वस्तु :
- लग्न समाप्ति काल (किसी भी समय किसी भी स्थान का लग्न ज्ञात करने की सारणियां)।

विशेष विषय वस्तु :
- संधि लग्न के विषय में भी विस्तार से विशेष विचार किया गया है।
- सूक्ष्मातिसूक्ष्म लग्न ज्ञात करने के लिए विशेष संस्कार एवं करण सूत्र सोदाहरण।
- चित्रों द्वारा लग्न, दशमलग्न, व्यावहारिक एवं साम्पातिक काल का विवेचन ।
- दशमलग्न सारणी।
- ऐसा करण सूत्र (ALGORITHM) भी दिया गया है कि अनुपात करना ही न पडे।

www.martand.com

कीमत, पत्र व्यावहार और अधिक जानकारी के लिए देखें पृष्ठ 288

www.martand.com

श्रीमार्तण्ड पंचांग एवं रुचिका ... के एकमात्र प्रमुख विक्रेता

एवं 'खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेंकटेश्वर प्रेस बम्बई' द्वारा प्रकाशित प्रामाणिक दुर्लभ ग्रन्थ, तुलसीकृत रामायण, ज्वाला प्रसाद मिश्र द्वारा संजीवनी टीका सहित, भागवत पुराण, श्रीमद्देवी भागवत पुराण, श्रीशिवमहापुराण, बाल्मीकी रामायण, हरिवंश पुराण, धर्मशास्त्र, वेदान्त, वैदिक मीमांसा, कर्मकाण्ड, माहात्म्य, इतिहास, व्याकरण, ज्योतिष ग्रन्थ, वैद्यक, नीति ग्रन्थ,, अलंकार ग्रन्थ, छन्द ग्रन्थ, कोषग्रन्थ, काव्य ग्रन्थ, बल्लभ मार्गीय ग्रन्थ, मंत्र शास्त्र ग्रन्थ, स्तोत्र ग्रन्थ, कबीर साहित्य, नाथ-नानक दादुपंथी ग्रन्थ आदि समस्त धार्मिक, ज्योतिष, आध्यात्मिक पुस्तकों के मिलने का एकमात्र प्रमुख स्थान-

अग्रवाल बुक डिपो, 460, खारी बावली, दिल्ली-6 Ph.- 3943254

दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं प्राचीन अप्राप्य ग्रन्थ

असली प्राचीन हस्तलिखित रावण संहिता	मूल्य- 2500/- रुपये
हस्तलिखित भृगु संहिता कुंडली रहस्य	मूल्य- 2500/- रुपये
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	मूल्य- 2500/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र-तंत्र-मंत्र महार्णव (यंत्र-तंत्र-मंत्र संबंधी जानकारी पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ)	मूल्य- 1700/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र महार्णव *यंत्रशास्त्र के आधार स्तंभ यंत्रों के प्रयोग और निर्माण का सचित्र विवेचन।*	मूल्य- 600/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित तंत्र महार्णव	मूल्य- 600/- रुपये
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव *प्राचीन शास्त्रों के सारभूत इस संकलन-ग्रन्थ में लौकिक कामनाओं की पूर्ति तथा पारलौकिक सुख प्रदान करने वाले चमत्कारिक मंत्रों का अद्भुत संग्रह है।*	मूल्य- 600/- रुपये
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र शिरोमणि *(दो खण्डों में)*	मूल्य- 650/- रुपये
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र महाशास्त्र	मूल्य- 500/- रुपये
लाल किताब *(तीन खण्डों में)*	मूल्य- 1700/- रुपये

नोट: डाक व्यय अलग। पुस्तक की कीमत की कम से कम आधी रकम पहले भेजें।

मंत्र तंत्र यंत्र महाशास्त्र	५००/-
मंत्र रहस्य	२५०/-
रावण संहिता	५००/-
मंत्र तंत्र और रत्न रहस्य	७५/-
चमत्कारी 55 पूजा यन्त्र	१२५/-
सिद्धि प्रदायक यंत्र संग्रह: रंगीन एलबम	५०/-
तांत्रिक तरंग	६०/-
तंत्र की काली किताब	१५०/-
बृहद् शाबर मंत्र शास्त्र	१५०/-
यंत्र विधान	११०/-
संकट मोचिनी कालिका सिद्धि	११०/-
यंत्र माला	४०/-
सिद्ध शाबर मंत्र	४५/-
महाविद्या तन्त्र- मन्त्र	३५/-
सचित्र तान्त्रिक जड़ी-बूटी दर्शन	४५/-
मायावी बृहद् इंद्रजाल	१२१/-
चमत्कारी हिप्नोटिज्म	१००/-

वास्तुकला सम्बन्धी पुस्तकें

वास्तुकला और भवन निर्माण	१५०/-
भारतीय वास्तु शास्त्र	१००/-
सचित्र विश्वकर्मा प्रकाश	१५०/-

धार्मिक और अध्यात्मिक

कुण्डलिनी संकेत विद्या	७५/-
पारसमणि	७५/-
आध्यात्मिक ज्ञान के 1100 स्वर्ण सूत्र	१००/-
गीता में सम्पूर्ण योग	७५/-
चमत्कारी ॐ महिमा एवं साधना	५०/-
मन को वश में कैसे करें	५०/-
प्रभु मिलेंगे कैसे	५०/-
श्री गुरुग्रन्थ साहिब की प्रमुख वाणियाँ	२५०/-
ध्यान साधना	७५/-
मन की अद्भुत शक्तियाँ	७५/-
ध्यान योग चिकित्सा	९०/-

राशि-रत्न + उपरत्न

हमारे यहाँ हर प्रकार के राशी रत्न+उपरत्न, शुद्ध चाँदी में बनी एक नग की राशी की अंगूठियां व नवरत्न अंगूठियां, पेन्डन इत्यादि 100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलते है।

मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें।

माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र-व्यवहार करें।

श्री पूरणमल कमलकिशोर ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, हल्दियों का रास्ता, मनीराम जी कोठी का रास्ता, कानोता हाउस, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

फोन: (दु.) 568446, (नि.) 634889 फैक्स: 91-141-568446 मोबाइल: 98280-19125

E-mail pmkkgems@yahoo.com Website: www.astralgems.com

वी०पी० द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता :- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली- 6 Ph.- 3943254, 3936116

दुर्लभ ज्योतिष ग्रन्थ वर्षों ... नवीन एवं उपयोगी ...

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्धगणित से बनाये जाते हैं, जिनमें आयु,रोग,सन्तान,स्त्री,धन एवं भाग्योदय , तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है ।

जन्मपत्र की फीस :- साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 451 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 551 रु.है । डाकव्यय अलग होगा । **विदेशी जन्मपत्र** कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं , गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो , उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 551 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिख कर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म, तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत् , जन्मटाईम , जन्मस्थान,जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 51 रु . है ।

वर्षफल की फीस - साधारणतया 151 रु.है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 201 रु. है। जिनकी जन्मकुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय ,तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र ,पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि इसवर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने की फीस 51 रु. है, और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 151 रु. है । जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी और पंजाबी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। **विशेष प्रश्न की फीस 101 रु. है । सर्वसाधारण प्रश्न फीस 51 रु. है।**

नोट- प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें । वी. पी. पी. नहीं की जाएगी । विना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा।

घर बैठे प्रश्न पूछने की रीति- यद्यपि सामने आकर प्रश्न पूछने से सब शंकाएं निवृत्त हो जाती हैं, फिर भी यदि कोई सज्जन किसी विशेष कारण से प्रत्यक्ष न मिल सकें, तो वह अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति, प्रश्न लिखने की तारीख एवं टाईम लिख दें। जो प्रश्न पूछना हो, उसे स्पष्ट शब्दों में खुलासा तौर पर लिखें।

व्यापारियों के लिए चांस -हम समय-समय पर रुई, बिनौला, सरसों,गुड़, खांड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं । वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं।

यदि आप भी लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप आज ही 500 रु. का मनीआर्डर भेजकर एक मास की रिपोर्ट प्राप्त करें । वर्ष भर की फीस 5000 रु. है। जो व्यापारी साल में प्रमुख- प्रमुख एक-दो चांस ही चाहते हैं, 500 रु. भेजकर रजि.में नाम दर्ज करा सकते हैं । जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगें ।

—: पण्डित जी से प्रत्यक्ष मिलने का समय :—

सर्दियों में- प्रातः 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में- प्रातः 8 से 1 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र द्वारा या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (पुत्रदाता दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है । इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य 500 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय सहित 550 रु.भेंजे । **वी. पी. पी. नहीं की जाएगी ।**

सिद्ध शनियन्त्र - विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता, आदि से मुक्ति मिलती है,अनुभव करें। भेंट-251 रु. है ।

श्री लक्ष्मी यन्त्र - अष्टगंधादि से विधिपूर्वक सिद्धमुहूर्त में बनाए गए इसयंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है , कोष में भारी बरकत रहती है, तुजुर्बा लें । भेंट 501 रु. डाक व्यय अलग ।

अठराहा नाशक यन्त्र - जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष , गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। इस विधिपूर्वक निर्मित यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैकड़ों माता-पिता को सुखी कर रहे हैं । तजुर्बा करके चमत्कार देखें । विधानपत्र यन्त्र के साथ भेजा जाता है। भेंट 251 रु. डाक व्यय पृथक्।

सिद्ध गोपाल यन्त्र - इससिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है । आर्डर देते समय स्त्री का नाम, जाति लिखें । विधानपत्र साथ भेजा जाएगा । भेंट 251रु. डाकखर्च पृथक्।

[गुरुवार को कार्यालय बन्द रहता है ।]

पत्र व्यवहार के लिए पता- पं.इन्दुशेखर शास्त्री , ज्योतिषाचार्य , एम. ए.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय
मु. पो. कुराली [रोपड़] पंजाब,
पिन कोड- 140103- फोन: (01888) 641277

Laser typesetting by Gyani Kartar Singh, at Kanwal Video Library & Photostat, - Kurali, Ph. 01888-641274

पृष्ठ सं.- 560

लग्नसारणी

साईज़- 'मार्त्तण्ड पंचांग' का

{विश्व के किसी भी स्थल का विकला तक सूक्ष्म लग्न केवल मौखिक जोड़-घटाव द्वारा बतलाने वाला अपूर्व प्रकाशन}

लेखक- प्रो. प्रियव्रत शर्मा

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 कलाओं और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 कलाओं के अन्तर पर बनाई गईं 332 पृष्ठों पर फैली लग्नसारणियां साम्पातिककाल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक लग्न 2–3 मिनटों में ही जाना जा सकता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ / समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयणलग्न का प्रारम्भ/समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) केवल दो मिनटों में ही मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा जाना जा सकता है। क्योंकि ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ/समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः ये सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न की समस्या का भी पूरा समाधान करती हैं।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिककाल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 से भी अधिक नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश /द्वीप/उपद्वीप आदि की स्टैं. मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं. टा. का G.M.T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) 20-20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्त तथा अभीष्ट लग्नारम्भ–समाप्तिकाल आसानी से जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) विश्व के देशों में 1 जनवरी 1941 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(X) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित-प्रक्रिया को छः छः, सात-सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

किञ्च– अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे। इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रण सम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। इसे हम ग्राहकों को दिसम्बर 2002 ई. के तृतीय सप्ताह से भेजना प्रारम्भ करेंगे। अब आप इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 725/- M.O. द्वारा हमें नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। 'अभिजित् प्रकाशन' के नाम D.D. (D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') भी भेजा जा सकता है। पुस्तक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजी जाएगी। **V.P.P. भेजने का नियम नहीं है।**

ध्यान रहे - यह पुस्तक केवल हमारे यहां से ही प्राप्त हो सकेगी। अन्य किसी पुस्तकविक्रेता से यह नहीं मिलेगी।

पुस्तक का साईज़ 24 X 18 सें. मी.
('मार्त्तण्डपंचांग' के बराबर)
बहुमूल्य चिरस्थायी पेपर पर मुद्रित,
सुदृढ़-आकर्षक टाईटल

मूल्य Rs. 675/- +
डाकव्यय Rs. 50/-

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,
' अभिजित् प्रकाशन,' 59/6 (अभिजित्),
पंचकूला- 134 109
Phone:- 0172-565303